

हिन्दी-असमीया कोश

(हिन्दी-असमीया-हिन्दी का एक मात्र शब्द कोश)

Not to be kept out,
REFERENCE



असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति



3 नवम्बर, 1965

प्रकाशक —

**असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
गुवाहाटी**

प्रथम संस्करण

तीन हजार

3 नवम्बर '65 .

मुद्रक —

**राष्ट्रभाषा प्रेस,
गुवाहाटी**

प्रकाशक की ओर से

भाषा शिक्षण और अध्यापन में कोश का महत्व बहुत अधिक है। विशेष तौर पर असम जैसे अहिन्दी प्रान्त में हिन्दी शिक्षण और अध्यापन में इसकी आवश्यकता अपरिमित है। इसी दृष्टिकोण से समिति ने बहुत पहले से ही कोश-निर्माण की योजना ले रखी है। परिस्थितिवश इस योजना को आगे बढ़ाने में समिति के सामने कितनी ही अड़चने आयी। फिर भी लम्बी प्रतीक्षा के बाद यह कोश प्रकाशित करने में समिति सफल हुई है। इसकी हमें प्रसन्नता है। इस हिन्दी असमीया-कोश के अलावा समिति की कोश-योजना के अन्तर्गत बृहत्-हिन्दी-असमीया-अंग्रेजी और असमीया-हिन्दी-कोश निर्माण की आयोजनाएँ भी हैं।

शब्दों का चुनाव

प्रस्तुत कोश में अहिन्दी भाषी हिन्दी विद्यार्थियों तथा विद्वानों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए हिन्दी-शब्दों का चुनाव किया गया है। इस दृष्टि से हिन्दी के प्राचीन व अर्वाचीन पाठ्य तथा व्यावहारिक शब्दों का ही संग्रह इसमें अधिकतर किया गया है। संस्कृत के कठिन शब्दों और हिन्दी तथा असमीया के समानार्थक बहु-प्रचलित शब्दों में बचने का प्रयत्न किया गया है। अरबी, फारसी और उर्दू के बोल चाल में आनेवाले शब्दों का चुनाव भी किया गया है। अर्थ स्पष्टीकरण के उद्देश्य से कुछ पारिभाषिक शब्दों के असमीया और हिन्दी अर्थों के अतिरिक्त देवनागरी-लिपि में अंग्रेजी प्रतिशब्द भी दिये गये हैं। अधिकतर हिन्दी शब्दों के समानार्थी असमाया प्रतिशब्द देने की कोशिश की गयी है; पर प्रति-शब्द के अभाव में कहीं कहीं व्याख्यात्मक रूप भी निरूपित करना पड़ा है।

[=]

लिंग निर्णय तथा मुहावरे आदि

शब्दों की व्युत्पत्ति और अर्थ विचार कोश निर्माण के महत्वपूर्ण अंग माने जाते हैं। पर आकार बढ़ने के ब्याल से इस कोश में उन दोनों अंगों को न देना ही ठीक जान पड़ा। वैसे हर भाषा के कोश में शब्द व्युत्पत्ति तो रहती ही है। पर कोश सम्पादन में पद-विन्यास की महत्ता और हिन्दी भाषा में लिंग विचार की विचित्रता को महसूस करते हुए पाठकों की सुगमता हेतु हर शब्द का पद-परिचय और प्रत्येक संज्ञा-शब्द का लिंग-निर्णय दिया गया है

कोश सम्पादन

कोश के सम्पादन में श्री नवरुण वर्मा ने हिन्दी-शब्दों का चुनाव किया तथा चुने हुए शब्दों के हिन्दी-अर्थ दिये। श्रीमेन्द्र नाथ शर्मा तथा श्रीपरेश चन्द्र देव शर्मा ने उनके अगम्यीया अर्थ और प्रति शब्द दिये। इन लगनशील सहयोगियों के प्रयत्न से ही यह कोश इतने थोड़े समय में प्रस्तुत हो सका है। इस हेतु हम उनके आभारी हैं।

कोश सम्पादन का यह हमारा पहला प्रयास है। इसलिये कुछ त्रुटियों का रहना असम्भव नहीं। विद्वानों से उनके संशोधन विषयक सुझाव प्राप्त कर हम आभार मानेंगे।

राष्ट्रभाषा भवन, गुवाहाटी

3 नवम्बर, 1965

समिति-प्रतिष्ठा दिवस

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

की ओर से

अहेश्वर अहन्त

साहित्य सचिव

REFERENCE
Not to be taken out,

संकेताक्षरों की सूची

| | |
|------------|-------------------|
| सं पुं— | संज्ञा पुंलिंग |
| सं स्त्री— | संज्ञा स्त्रीलिंग |
| क्रि वि— | क्रिया विशेषण |
| वि— | विशेषण |
| अव्य०— | अव्यय |
| प्रे रणा०— | प्रेरणार्थक |
| मु०— | मुहावरा |
| सर्व०— | सर्वनाम |
| क्रि स— | क्रिया सकर्मक |
| क्रि अ— | क्रिया अकर्मक |
| वि स्त्री— | विशेषण स्त्रीलिंग |
| विभ०— | विभक्ति चिह्न |
| प्रत्य०— | प्रत्यय |
| उप०— | उपसर्ग |
| अं०— | अंग्रेजी |

हिन्दी-असमीया कोश

अ

अ—नर्गसालान अंगन यथैव । यत्नात्,
अपकर्ष, नृगता ।
वर्णमाला का पहला अक्षर, अभाव,
अपकर्ष, न्यूनता ।

अंक—(सं पुं) छिछ, गन्ध्यान चिन,
डाग, दाग, नष्टिकन प्रविष्टिद,
कोला, पाप, छःथ ।
चिह्न, संख्याका चिह्न, भाग्य,
डिठोना, दाग, नाटक का परि-
च्छेद, गोद, पाप, एक प्रकार का
रूपक ।

अंक गणित—(सं पुं) प्राणिगणित

अंकटा—(सं पुं) गरुणिलुति
छोटा कंकड़, पत्थर का छोटा
टुकड़ा ।

अंकवार—(सं स्त्री) आलिङ्गन,
देना । आलिङ्गन, गोद ।

अंकुड़ा (सं पुं)

लेटर नमोवा नावि, पञ्चन
पेदेन नावि, डाङ्ग खोवा
अन्तल ।

लोहेका कोटा, पशुओं के पेट की
पीड़ा, मुड़ी हुई कील । (स्त्री-
अंकुटी)

अंकुर—(सं पुं) नटेक गन्धान
अलोवा नोखर छिटाकन वाग,
नोत्र, पानी ।

उगा हुआ नया बीज, नोक,
रोम, जल ।

अँचुरा—(सं पुं) हाथी चालना करा,
लोब आकारा नाबि, कन्ट्रोल,
निगहन ।

लोहे का कांटा जिससे हाथी को
बलाया जाता है । कंट्रोल प्रतिबंध ।

अंग—(सं पुं) शरीर, शरीरन अङ्ग
उ भाग, अंग, प्रकार भेद,
योग माधन ।

शरीर, अवयव, भाग, टुकड़ा,
भेद, योग के माधन ।

अंगड़ाई—(सं स्त्री) एडागुरि ।
जम्हाई के साथ अंग फैलाना ।

अंग रक्षक— सं पुं) गान्धीय
सेना ।

शरीर सुरक्षा के लिये रखे गये
सैनिक ।

अंग रखा—(सं पुं) एनिश दीपल
चोला, चापकन ।
मर्दाना पहनावा, चपकन ।

अंगाराग—(सं पुं) छन्न आदि
लेपन सुगन्धि अंगारन गामछी ।
अन्न, केशर आदि का उबटन ।

अंगार, अंगारा—(सं पुं) जूरेव
आडठा ।

अकला हुआ कोयला ।

अँगिया—(सं स्त्री) कौटिलि, बदिज ।
चोली, कंचुकी ।

अंगी—(वि.) शरीर, नेत्र, देहयुक्त,
नेत्र, (सं पुं) प्रधान
प्राज्ञ, गान्धक, भूषा वग ।

प्रधान पात्र, प्रधान रस ।

अंगोठी, अंगोठी—(सं पुं) जूरे वखा
प्राज्ञ, जूरेवाल ।

आग रन्धने का पात्र ।

अंगुली—(सं पुं) आङ्गुलि, हाथीर
कुटव आग भाग, एतो नदीर
नाग ।

उँगली, हाथी के मूँड का
अग्रभाग, एक नदी का नाम ।

अंगूठा—(सं पुं) गुण आङ्गुलि ।
तर्जनी के पास की सबसे मोटी
उँगली ।

अंगूठी—(सं स्त्री) आङ्गुठि ।
मुन्दगी, उँगली में पहनने का
आभूषण ।

अंगोछा—(सं पुं) गामोछा ;
तौलिया, गमछा ।

अँचरा—(सं पुं) बिना, भाड़ी,
चापव आदिब आँजल । भाँचल,
साड़ी, धोनी, दुपट्टे आदि का
छोर या छाती पर रहता है ।

अंचल—(सं. पुं) अरुल, कोनो
देश व सीमाखरडो अप्पेण वा
अरुल, आंचल ।
आंचल, प्रान्त या देश की सीमा
के समीप का हिस्सा,
किनारा ।

अंचवन, अचवन—(सं पुं)
आचमन्, शुचि हवव नावे हातव
उल्लुवात पानी लै तिनिराव
मुखत दि नाक, काण, चकू आदि
छोवा कार्य । पोराव पिछत
हात मुख शोवा कार्य ।
आचमन, खाने के बाद हाथ मुँह
धोना ।

अंजन—(सं. पुं) काजल, चिवाही ।
सुरमा, स्याही ।

अंजनी—(सं. स्त्री) हनुमानव
माक, एविथ उषव. माया.
आजिनाई, आचिनाई ।
हनुमान की माँ, एक ओपधि,
माया, आँख की पलकों पर होने
वाली फुन्सी ।

अंजल, अंजलि—(सं. स्त्री) आंजलि,
आंजलि व भित्तवत धका मानधी
गनुह ।
कर समुद्र, हयेलियों के बीच
आने वाला जल ।

अंजाम—(सं. पुं) फल, जवाबि)
परिणाम, समाप्ति ।

अंजीर—(सं. पुं) एविथ फल, डिमक
एक प्रकार का फल ।

अंजुमन—(सं. पुं) गडा. गङ्गी ।
समा, मंडली ।

अंजोर, अँजोरा—(सं. पुं) उज्जल.
आलोक, पोहव ।
उजाला, प्रकाश ।

अँटना—(क्रि. अ) आँटि-झुबि
योवा, सिमान लागे सिमान
होवा ।

समाना, पूरा होना, पूरा पड़ना ।

अंटा—[सं. पुं] डाड. डला, डाडव
कडी, बिलियार्ड खेल ।

बड़ी गोली; बड़ी कौड़ी; बिलि-
यार्ड का खेल ।

अंटाचित—[क्रि. वि] चि९ देह पवा,
सुष्ठित, मदव नागो वेष्टिटैक
लगा ।

पूरी तरह चित, स्तंभित, नशे में
चूर ।

अंटिया—[सं. स्त्री] बाँहव गङ्ग
बोझा । गैतोन आदि व सक मुठा ।

बास आदिका मुट्ठा, पुला, गट्टा

अंटी—[सं. स्त्री] आठुलि व बावव
काँक, गैठि, चूताव लेहवी ।

उंगलियों के बीच का स्थान,
कमर पर धोती की रुपेट, लच्छी
अंठी—[सं. स्त्री] आगुठि, गौठि,
गवीबर गङ्गिजन गौठि वा
छोवा। गुठली, गांठ, गिलटी

अंठली—[सं. स्त्री] गांठक्य नौनो-
न्नत प्रियाह ।

नवयौवना के उभरे हुए स्तन

अंठ—(सं. पुं) कणै, डिमा, अण्ड-
कोष, बिष अण्डाण्ड, कावदेव ।
अंडा, अंडकोश, विष्व ब्रह्माण्ड,
कामदेव

अंठज—(सं. पुं) कणैर प्रवा
उपपन्न प्राणी ।

अंडे से उत्पन्न प्राणी

अंठी—(सं. स्त्री) एवा अण्ड, एवा
अण्ड गौठि, एबी कांपोव ।

रेड का बीज, एरण्ड वृक्ष, एक
प्रकार का रेशमी वस्त्र

अंतक—(सं. पुं) नष्टकारी, यमराज,
शिव, गङ्गिपाठ अर ।

नाश करनेवाला, यमराज, शिव,
संक्षिपात

अंतही—(सं. पुं) अंत, पोतव
नाही ।

अंत अंत

अंतर—(सं. पुं) आर्षका, अंज, अण्ड,
अण्ड, अण्ड, अण्ड, अण्ड,
छाकनी ।

भेद, विभिन्नता, दूरी, मध्यवर्ती
समय, आह, परदा, हृदय

अंतर अयन—(सं. पुं) कोनो
तीर्थस्थानव भित्तवत धका ठाई
गमूहव पवित्रता, अमृतही ।
अन्तर्ग्रही, तीर्थ की विशेष
प्रकार की परिक्रमा ।

अंतरण—(सं. पुं) अण्डन यान
अण्डनक वड विक्री कवा क्रिया,
प्राधिकारीव विभाग पवित्रत ।
एक से दूसरे के हाथ बिकना,
किसी कार्यकर्ता या अधिकारी
का अन्य विभाग में बदली,
तवादला, धन का एक खाते से
दूसरे में जाना ।

अंतरतम—(सं. पुं) कोनो
वस्तु आटाईतक अमृतवत
अण्डन, अण्डन निवृत कोण,
किसी वस्तु का सबसे भीतरी
भाग, हृदय का भीतरी भाग,
अन्तःकरण,

अंतरस्थ—(वि.) भित्तवत,
भित्तवत धका

अंतर

अंतरा—(सं पुं) दूर, दूरव, बाह्यमान
कोना, अन्तर, नागा ।

अंतरा—(कि. वि) माखत, उठवत,
निकट, अतिविद्ध, पृथक्, बाह्य,
मध्य, पास, निकट, अतिरिक्त,
अलग, पृथक्, बिना ।

अंतराय—(सं पुं) बाधा-विघिनि
विघ्न-बाधा.

अंतराल—(सं. पुं) मध्यावर्ती ज्ञान
अथवा समय, अशुबाल ।

मध्यवर्ती समय या काल,
भीतर का भाग,

अंतरिक्ष—(सं. पुं) आकाश,
पृथिवी आकाश अथवा अंतरिक्ष
शालि ठाँह

पृथ्वी और अन्य ग्रहों के बीच
का स्थान, स्वर्गलोक,

अंतरिक्ष-विज्ञान—(सं पुं)
आकाश गुरुको विज्ञान ।

आकाश संबंधी विज्ञान,

अंतरित—(वि.) नुकाशित (नुकाई
थका) ; भित्तबले यथा वा
यना, नष्टे. अप्रुष्ट ।

भीतर रखा या छिपाया हुआ,
स्थानान्तरित ।

अंतरिम—(वि.) मध्यावर्ती ।
मध्यवर्ती ।

अंतरिम-काल—(सं. पुं) मध्यावर्ती
काल ।

मध्यवर्ती काल ।

अंतरीप—(सं. पुं) अन्तरीप ।

भूखंड का वह भाग जो समुद्र में
दूर तक बला गया हो ।

अंतरीय—(सं पुं) तलत पिछा
काटपाव,

भीतर का वस्त्र, बनियान

[वि.] भित्तबल । भीतर का,

अंतर्गत—(सं पुं) अन्तर्गत, अधीन,
भित्तबल सोमाई थका, रुदन्नत
हित ।

गामिल, भीतर समाया हुआ,
गुप्त, अधीन, हृदय में स्थित ।

अंतर्ज्योति—(सं पुं) पदमाज्ञा,
रुदन्नत ज्ञान ।

परमात्मा, हृदय का ज्ञान ।

अंतर्ज्ञान—(सं. पुं) दिवाज्ञान ।
दिव्य ज्ञान,

अंतर्दशा—(सं स्त्री) अश्व
यत्कर्त्तृता ।

ग्रह सम्बन्धी महा दशा के भीतर
की दशा ।

अंतर्दशीय—(वि.) देश
आन्तरिकीय भागव लगत गवर्द्धित ।

किसी देश के भीतरी भागों से सम्बन्धित ।

अंतर्धान—(वि.) अदृश्य होना ।
अप्राप्त होना ।

अदृश्य हो जाना ।

अंतर्निहित—(वि.) छिपित
लुकाई धका ।

अन्दर छिपा हुआ ।

अंतर्भाव—(सं. पुं) आशय, छिपित
धका अर्थ छिपाव ।

सम्मिलित या समाविष्ट होना,
भीतरी आशय नाश या अभाव ।

अंतर्भुक्त—(वि.) यत्नपूर्वक ।
अन्दर समाया हुआ ।

अंतर्गामी—(वि.) अन्तरगत
आनेवाला, अन्तरगत, अन्तर्गामी,
अन्तर्गत ।

सबके हृदय की बात जाननेवाला,
ईश्वर ।

अंतर्राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रिय—(वि.)
आन्तर्राष्ट्रिक ।

सब या कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धित

अन्तर्गत—(वि.) अन्तर्गत ।
अन्तर्गत ।

अंतर्वेदना—(सं. स्त्री) अन्तरगत
वेदना ।

हृदय में होनेवाली वेदना ।

अंतिम—(वि.) अन्तिम, अन्त,
अन्त ।

सबके पीछे का, सबके बाद का
अपरिवर्तनीय निर्णय ।

अंतेवासी—(सं. पुं) अन्तिम ।
अन्तिम ।

अंत्यज—(वि.) अन्तिम, अन्तिम ।
अन्तिम जातियाँ ।

अंत्येष्टि—(सं. स्त्री) अन्तिम-कर्म
(मृतका) अन्तिम कर्म ।

मरने के बाद का संस्कार ।

अंदर—(क्रि. वि.) अन्तर्गत, अन्तर्गत,
भीतर, में

अंदाज—(सं. पुं) अनुमान, आँकना ।
अनुमान ।

अनुमान मोहक ढंग ।

अंदेश—(सं. पुं) अन्तिम, अन्तिम,
अन्तिम, अन्तिम ।

अन्तिम, अन्तिम, अन्तिम ।

अंध, अंध—(सं. पुं) अंध, अंध,
अंध ।

अंध ।

अंध-विश्वास—(सं. पुं) अंध विश्वास,
अंध विश्वास ।

अंध विश्वास ।

अंध विश्वास—(सं. पुं) अंध विश्वास,
अंध विश्वास ।

अंध विश्वास ।

अंशा—(सं पुं) यक् ।

जिसे आँख से कुछ भी दिखाई नहीं देता ।

अंधा धुंध—[क्रि. वि.] नभदा-
निच्छिन्नाटेक ।

बिना सोचे समझे तेजी से करना,
बेहिमाब ।

अंधेर-[सं पुं] रत्ना, प्रणीति ।
 अन्याय, अत्याचार गडबडी,
 अव्यवस्था ।

অধেরা-[ম পু] অক্কাব, একাব,
নৈবাশ্য, উদাসীনতা ।

अन्धकार, परछाई, निराशा ।

अंब—[सं पुं] यान १७, आम का पेड़

अंबा—[मं स्त्री] ना, याहे, दुर्गा ।
माता, दुर्गा ।

अंबर-[सं पुं] काःपाद, आकाश,
नेत्र, त्रिभि माद्यव (पौरव) परा
उल्लास एतद्वि सुगन्धि उवा ।
कपड़ा, आकाश, बादल, वृक्ष
मच्छली की आँत से निकला
एक सुगन्धित द्रव्य ।

अंशार—[मं पुं] उ०प, बानि,
 चेव, प्रहूव ।
 राशि. डेर ।

अंबारी-[स' हरी] हाडीर बापति ।

हाथी का होदा ।

અંબુ—[મં પું] જાનો ।

जल ।

अंबुज-[वि.] पश्य कुल, नद्य,
वशा ।

कमल, शंख, ब्रह्मा ।

ଅଂଶ--[ମ' ପ'] ଅଂଶ, ଚତୁର୍ଥାଂଶ
 ଚନ୍ଦ୍ରବିଜା, ଭଗ୍ନାଂଶ ।

दुरुडा खंड भाग, चौथाई हिस्सा,
चौद का सोलहवा हिस्सा ।

अंशु—[सं पुं । दिव्य, कर्षाव
वर्णि ।

किरण, सूर्य की किरण

अंशुमाली—[सं पुं] ऋषा
सूर्य

अंक—[मं पुं] कटे इत्, शान्ति
कष्ट, दुःख, पाप ।

अकड़— [सं. स्त्री.] यशकाव
स्त्व० ७१, बाभियान

तनाव, ऐंठन. घमंड, अभिमान

अकड़ना—[क्रि अ.] अविद्या यवि कवा,
अशंका कवा, अकड़ि उठा,

नना, ऐठना, घमंड या हठ करना

अकथनीय—[वि] अकथा,
जो कहा न जा सके ।

अक-वक—(सं. स्त्री) याँटि गुवि
नोहोरा कथा, प्रलाप ।

व्यर्थ-वात, प्रलाप

अकरणीय : (वि) मकबिलगीया
जिसे करना ठीक नहीं ।

अकर्म—(सं पुं) निश्चितता, कूकर्म
वेया काय ।

कार्य का न होना, अनुचित काम

अकर्मण्य (वि) एलेह्वरा,
अयोध्या ।
निकम्मा ।

अकलंक—(वि) निकलक, निर्दोष ।
निर्मल, कलंकहीन ।

अकसर—(क्रि वि) अकले, प्राग,
गाथावर्णते ।
अकेले, प्रायः ।

अकसीर—(वि) अन्वर्थ गुण
विनिष्टे, गच्छीया वाङ्मय सम्पद
निष्ठिना कविव प्रवा प्रवा ।
अव्यर्थ गुणवाला, रसायन ।

अकस्मात्—(क्रि वि) इठाँय, उ'गा-
क्रमे, आचञ्चित कारण ।
अचानक, सहसा ।

अकाज—(सं पुं) वेया काय,
शानि, कति ।
अनुचित काम, हानि ।

अकाम—[वि] कामना बहित,
इच्छा-विहीन ।

कामना हीन ।

अकारण—(क्रि वि) अकारणे,
अनावश्यकरीय ।
बिना कारण ।

अकाल—(सं पुं) अ-गमय, अग्रप-
युक्त गमय, श्रुतिक, शान्त ।
असमय, जो ठीक या उचित
समय नहीं, दुर्भिक्ष, अविनश्वर ।

अकिचन—[वि] डाल-नविष्ट,
निष्ठला ।
दीन, दरिद्र, विलकुल मामूली ।
अकिंचित्—(वि) अति गामान्य,
गामा ।
नगण्य, तुच्छ ।

अकुंठ—(वि) तीक, चोका, विभाहीन
तीत्र तीसा, द्विवाहीन ।

अकुलाना—(क्रि अ) आकुल होरा,
विबल होरा, ख-ब-ब लथोरा ।
व्याकुल होना, ऊब जाना,
जल्दी करना ।

अकूत—(वि) अयोध, अयन्त्रा,
वेष्टि ।

अमोघ, असंख्य, अधिक ।
(क्रि वि) निष्टे निष्टे, इठाँय ।
आप से आप, अकस्मात् ।

अकृतज्ञ—(वि) अकृतज्ञ, अनाशी ।
कृतघ्न ।

अकेला—(वि) गङ्गीजीन, एकल-
गरीया ।
बिना किसी साथी के, अद्वितीय,
एकान्त ।

अकस्वड—(वि) डेढि, डम्बूवा ।
जिद्दी, भगडालू ।

अकल—(सं स्त्री) बुद्धि, ज्ञान ।
बुद्धि ज्ञान ।

अकलमंद—(वि) चट्टा, बुद्धिमान ।
बुद्धिमान, समझदारी ।

अकलमंदी—(स स्त्री) चट्टनी, निष्-
पत्ता विद्वत्ता ।
बुद्धिमत्ता समझदारी ।

अक्ष—(स पुं) पंथा खेत.
गाडीन चनाव धुवा, निबून
बेबाब छयोफालन दूरदमापक
अकदरथा, कद्राकद बीज,
जुआ खेलने का पासा, मेरु, धूरा,
पृथ्वी पर पड़ी समान्तर कल्पित
रेखाएँ, रुद्राक्ष के बीज ।

अक्षत—(वि.) नडडा. निश्चुँड,
निष्पृण, अक्षुण्ण ।
जिसे चोट न लगी है, अखंड,
पूरा ।

अक्षुभ—(वि) अशुभ, अपावर्ग ।
अशुभ, अयोग्य ।

अक्षय—(वि.) अविनाशी, शेष
नोशोवा, छिन्नकलीया ।
जिसका क्षय या नाश न हो ।

अक्षर—(स पुं) पावन, पात्रा,
ब्रह्म, योग्य ।
वर्ण, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष ।

(वि.) शान्त नित्य, अविनाशी ।
अक्षरशः—(क्रि. वि.) पावन
आश्रय ।

ज्यो का त्यो ।
अक्षुण्ण—(वि.) अक्षुण्ण, अक्षुण्ण,
अक्षुण्ण ।

ज्यो का त्यो, समूचा ।
अखंडित—(वि.) अखंडित,
अखंडित ।
पूरा, समूचा ।

अखबार—(स पुं) बाग्वि
काकत खबर कागज ।
समाचार पत्र ।

अखरना—(क्रि. अ.) भाग नलगा,
अच्छिन्न ब्रुलि अक्षीत होवा, नलक
आवात दिया ।
बुरा लगना, खलना ।

अखाड़ा—(स पुं) बगवान् थाला,
आखवा, आखा, आखू-गन्नागीक

दल ना गठे । नक्षत्राला, वृत्ता
शाला आदि ।

व्यायाम शाला, मानवों की
मन्त्री और निवास स्थान, मठ,
लोगों के कौशल दिखाने की
जगह ।

अखाडिया — [वि] कोशल
देखना उठा, प्रलोभन ।

कौशल दिखाने वाला, पहलवान ।

अखिल—(वि) सम्पूर्ण, जगहों, मिलि
जगै ।

सारा जग, समस्त ।

अखिधार —(मं पुं) अधिकार
अधिकार ।

अग —(वि.) हाव, गं प
अवल, टेढ़ा चढ़नेवाला, स्थावर ।

अगड़ बगड़—(वि) दर्शनीय, जागृता
न बा, निदर्शक ।

व्यर्थ का, उल्टा पल्टा ।

अगण्य — (वि.) अगंथा, ठूछ ।
असंख्य, तुच्छ ।

अगम—(वि) शर्म, कठिन, अथाउनि,
अगंथा ।

दुर्गम, कठिन, अथाह, विकट ।

अगम्य—[वि] शर्म, शर्त्सार ।
दुर्गम, दुर्बोध ।

अगर—[अव्य] यदि, यदि, जो
[सं पुं]—अगंता गत । अगरू वृक्ष

अगल-अगल—[क्रि वि] ऐकाल-
न, ऐल, आगं-आगं ।

ऊपर-ऊपर, आसपास ।

अगला—[वि] आगव, गन्धर्व,
अगमव, गुरुवि, आगामी, पिछव ।
आगे का, पहले का, पुराना, आने-
वाला, बाद का ।

अगवानी—[मं स्त्री] आपवनि ।
स्वागत ।

अगहन—[म पुं] आगहन (मांश) ।
कार्तिक के बाद का महीना ।

अगाऊ—[वि] अग्रिम, आगतीगाटेक ।
नेशगी, अग्रिम ।

अगाध—[वि] अथाउनि अगंभीर ।
बहुत गहरा, अथाह ।

अगिन—[मं स्त्री] झूठे, एविश
गन छाड़े, अग्रगन ।

आग, एक प्रकार की चिड़िया,
असंख्य ।

अगिथारी—[मं स्त्री] धूपव निठिना
आछुडि दिशा बड ।

धूप की तरह अग्नि में डालने
की वस्तुएँ ।

अगुआ—[सं पुं] आगवन्तुवा.
मुखियाल, पथ-प्रदर्शक ।

आगे चलने वाला, मुखिया, पथ-प्रदर्शक ।

अगेह—[वि] अघ्नी, शृङ्गीर ।
जिसका घर न हो ।

अगोचर—(वि) अछात, अगोचर,
हूकि नोपाना ।
जो देखा नहीं जा सके ।

अग्नि—(स स्त्री) ऊई, वेदव तिन
प्रथम देवतायें अतिबल एतद्ग,
दक्षिण पार्श्व पूर दिग्ग मालव
कोण, लठवानग ।
जलने पर प्रकाश युक्त नाप, अग्नि
देवता, भोजन पचाने की शक्ति,
दक्षिण और पूर्वके बीच का कोण ।

अग्नि-कर्म—(स पुं) शत्रु-नाश ।

मृत व्यक्ति को जलाने की क्रिया

अग्नि-परीक्षा—(सं स्त्री) कठिन
परीक्षा, अग्नि अथवा कवि
निष्क निष्कषी अग्नि कवा
(गौतम अग्नि परीक्षा) ।
कठिन परीक्षा, आग में बैठकर
निर्दोष बनने का प्रमाण ।

अग्नि-मांछ—(सं पुं) अजीर्ण रोग
हृत्त मल्लि क्त शोका अवस्था ।
अजीर्ण रोग ।

अग्र—(वि) आग, अथवा ।
आगे का, प्रधान ।

अग्रगण्य—(वि) आग अथवा
लोहा इय, सर्वश्रेष्ठ ।

जिसका नाम सबसे पहले आता
हो, सबसे श्रेष्ठ ।

अग्रगामी—(वि) आग अथवा
आग अथवा, नेता ।
सबके आगे चलने वाला ।

अग्रज—(सं पुं) ककाटे, श्रेष्ठ,
उद्भन ।
बड़ा भाई, श्रेष्ठ, उत्तम ।

अग्रणी—(सं पुं) नायक, नेता ।
नायक, नेता अग्रणी ।

अग्रदूत—(स पुं) आग-दूत
मिष्टुता, आग-दूत अथवा मिष्टुता ।
किसीसे पहले आकर आने
वाले की सूचना दे ।

अग्रसर—(वि) अग्रगण्य ।
प्रगतिशील ।

(सं पुं) नेता, आग-दूत । आगे
बड़ा हुआ, नेता, अग्रणी ।

अग्राम—(सं पुं) आग-दूत
आग अथवा अग्रगण्य आग ।
मान्य व्यक्ति के सम्मान के लिये
सबसे पहला आसन ।

अग्रिम—[वि] अग्रिम, आग-दूत ।
अग्रिम, पेशगी आगामी ।

अथ—[सं पुं] पाप, दुःख, शक्ति ।

पाप, दुःख, व्यसन ।

अथट्ट—[वि] यि घटो नाडे वा यि
एकेकनेई धाके, कठिन, यगिल,
कम नोहोवा ।

कठिन, जो घटे नहीं, जो एक
सा बना रहे, बेमेल, कम न
होनेवाला ।

अथाना—[क्रि अ] कोना नष्ट
हुं वणि पोराव नावे
अगल होना । तूट होना ।

कोई वस्तु अधिक गानेपर परम
प्रसन्न और मनुष्ट होना, तृप्त
होना, शकाना या शकना ।

अथोरी—[सं पु] लोहना वस्तु
गोरा लोह अथान मठलही
लोक, श्रुतिः । लोहोवा ।

अथोर पंथ के अनुयायी, चिनीनी
जीजे खाने पीनेवाले, वृत्तिन,
गन्दा ।

अथमा—[सं पुं] आश्चर्या, आच-
रित कथा ।

विस्मय, आश्चर्य की बात ।

अथकन—[सं स्त्री] एविश नीबल
छोला, चापकन ।

बड़ा कुरता सा एक लम्बा पहनावा ।

अथर—[वि] अलव-अचव, अठल ।

गति-रहित, स्थावर ।

अथरल्ल—[सं पुं] आचरित ।
आश्चर्य ।

अचल्ला—(सं स्त्री) गृथिनी ।
पृथ्वी (वि) अचल ढेह
थका ।

न चलनेवाली

अचवना—(क्रि स) थोराव
पिछत मुख धुई उकल होवा ।

आचमन करना, कुल्ली करना

अचानक—(क्रि वि) इठां ।
अकस्मात्

अचार—(सं पुं) आचार ।

तेल और ममालेमें डुबो कर रखी
स्वादिल वस्तु ।

अचितनीय—(वि) याव विषये
चिन्ता कबिब नोवानि, अग्र-
त्यागित, अज्ञेय ।

जिसका चिन्तन न हो सके,
अज्ञेय, अप्रत्याशित ।

अचूक—(वि) अवार्थ ।
अव्यर्थ ।

अचेत, अचेतन—(वि) अचेतन,
गच्छाशीन, मूर्खित, अह ।

संज्ञा रहित, बेहोश, अह ।

अच्छा—(वि) ভাল, উত্তম,
उत्तम, स्वस्थ
अच्छाई (सं स्त्री) अच्छापन (सं पुं)
—विशेषता, सुलभता ।
उत्तमता

अच्छे—(क्रि वि) ভাল সদণে,
ঠিক বকয়ে ।
ठीक तरह से । [सं पुं] डाँडर
लोक, डाँडरीया जन । बड़े
बादमी ।

अच्छुस—(वि) অটল, স্থির,
নিবিকার
अपने स्थान से न हटने वाला,
अटल । (सं पुं) पर्वतश्रव, विष्णु,
श्रीकृष्ण । ईश्वर, विष्णु, कृष्ण
अच्छुस—(वि) অশ্রব, অযোগ্য,
বাঞ্ছিত, অস্পৃশ্য ; অসুচি ।
न छूने योग्य, हरिजन, अंत्यज
अस्पृश्य ।

अच्छुसा—(वि) श्रुता बद्ध,
বাঁক বাঁধবার করা নাই, নতুন ।
बिना छुआ हुआ, कोरा,
नया ।

अछेद्य—(वि) अक्षेद्य ।
जिसे छेदा न जा सके ।

अज—(वि) अजया ; बाब अजये
नाई, बरबुर ; अजा ; ईश्वर

हागनो ।

जिसका जन्म नहीं हुआ, ईश्वर,
ब्रह्मा, बकरा ।

अजगर—(सं पुं) अजगर ; एविव
डाँडर गांप ।

एक प्रकार का बिपैला साँप

अजनबी—(वि) अपरिचित, अठिना,
विपेनी ।

अपरिचित, परदेशी ।

अजपा—(सं स्त्री) उनाह निनाह
लगे लगे करा नख-खप ।

एक मंत्र जिसका उच्चारण
नांसके भीतर बाहर आने जाने
मात्र से किया जाता है ।

अजब—(वि) अद्भुत, आचरित ।
अद्भुत, अनोखा ।

अजर—(वि) बुढ़ा नोशेवा, चिन
योदन, चिनचन ।

जरा रहित, जो सदा जवान रहे,
शाश्वत,

अजबायन, अजबाइन—(सं स्त्री)
आजनि ।

दवा और मसाले के काम में आने
वाला एक प्रकार का पौधा ।

अजहूँ(हूँ)—(क्रि वि) आजितैनरो ।
आज तक भी

अज्ञात—(वि) यां कश्च होरा
नाई, अज्ञान, अज्ञान, अवि-
कर्मित ।
जिसका जन्म नहीं हुआ । अवि-
कर्मित ।

अज्ञान—(वि) नजना, अचिन्ता
अधोष, अपरिचित
(स स्त्री) नमाज पढ़ने
बता' नाउ बा' जानगी ।
नमाज के समय में दी जानेवाली
पुकार

अज्ञायक-घर—(स पुं) याशुवर
ग. प्रहालय ।

संग्रहालय, [म्यूजियम]

अजिर—(स पुं) छात्र, बायू,
शरीर, डेकनी ।

आगन, वायु, शरीर, मेढक ।

अजी—(अव्य) (मान्यार्थ
वाचक) सम्बोधन सूचक
शब्द, हेबा ।

[सम्मानार्थ] सम्बोधन सूचक
शब्द ।

अजीव—(वि) विच्छिन्न, आन्तर्य
अकृत ।

विच्छिन्न, विच्छिन्न, अकृत ।

अजीवो गरीब—(वि) अचिन्तित,
अज्ञाप्य ।

अनोखा, दुष्प्राप्य

अजीर्ण—(सं पुं) अजीर्ण रोग,
यि प्रबल नश्य, नष्टन ।
बद-हजमी, अपच, जो पुराना न
हो गया ।

अजीव—(स पुं) निर्जीव, अचेतन
जड पदार्थ, अचेतन [वि] श्रुत । मृत

अजेय—(वि) जिगिर नोबाबा,
शुद्ध ।

जिसे कोई जीत न सके

अजौ—(क्रि. वि.) आदि ७, एतिया-
लैके ।

आज भी, अब तक ।

अज्ञ—(वि) मूर्ख ।

मूर्ख ।

अज्ञात—(वि) अज्ञात, नजना, अगोचर
विन जाना, गुप्त, अगोचर

अज्ञान—(सं. पुं) मूर्खता, ज्ञान
हीन

मूर्खता, ज्ञान का अभाव । (वि.)

मूर्ख, अवोध । मूर्ख, अवोध ।

अज्ञेय—(वि.) बुद्धि नोबाबा,
ज्ञानातीत ।

जो समझ में न आ सके ।

अटकना—(क्रि. अ.) बँधे योरा
(कथा कथिते अथवा पत्रि-

.. शीकोते) आबद्ध है. पना,

गलत पता ओलाई नहा ।

चलते चलते रुकना, फँसकर
रुकना ।

अटकल - (सं. स्त्री) अकुशल,
- मार ।

अंदाजा, अनुमान ।

अटकल पच्छू - (वि.) अकुशल,
अकुशलता, अकुशलाश्रित ।
अंदाजी, अटकल के सहारे ।

अटकाना - (क्रि. स.) बाधा दिना,
आरुह कनि नथा, अलग कनि
वथा ।

रोकना, फँसाना, देर लगाना ।

अटपट - (वि.) अनिश्चित मोहक,
कनि, लम्बा मोहक ।
वेठिकाने का, विकट, कठिन,
अमं बद्ध ।

अटक - (वि.) अटल, अलव-अचल,
निव ।

हड़, स्थिर, अवश्य होने वाला ।

अटारी - (सं. स्त्री) श्वर उपर
खोला । अटारिका ।

घर का ऊपरी भाग, कोठा,
अटारिका ।

अट्ट - (वि.) भाँड़, नोखा
दूध, नमक, अणु, अत्यधिक

न टूटने वाला, हड़, मजबूत,
अव्यंज, लगातार, बहुत अधिक ।

अटेरन - (सं. पुं) उषा वा चेबकी
यत् अत्ता लोवा इय ।
खोलाक बुझाकावे बुबोबाव
एर निवम ।

सूत की आँटी बनाने का एक
यंत्र, घोड़े को चक्कर देने की
रीति ।

अट्टहास - (सं. पुं) अट्टहास, अख्त खोला-
हास । बड़े जोर की हँसी, टहाका ।

अठखेली - (सं. स्त्री) खेल-धमाली
ठाटी-नकवा ।

विनोद, क्रीड़ा, छेड़-छेड़,
चपलता ।

अडंग - (सं. स्त्री) अतिनोष,
बाधा ।

हरावट, बाधा ।

अड - (सं. स्त्री) डिप, कोनो
कथात दूध, भावे लागि थका ।
जिद, दठ ।

अडचन - (सं. स्त्री) बाधा, गंकर
बाधा, कठिनाई ।

अडना - (क्रि. अ.) श्वरि बोरा,
आँकौव गजालिक कोनो
विधयत लागि थका ।
रुकना, हठ करना ।

अक्षर—(सं पुं) अक्षरम् अक्षर ।

अक्षर कुसुम ।

अक्षर—(क्रि स) आठक कवि

बधा, बाधा दिया ।

रोकना, बाधा देना ।

अक्षर—(सं पुं) अक्षर, अक्षर

आदिब धर्म वा अक्षर आदिब
दोकान ।

समूह, लकड़ी की ढेर या दूकान ।

अक्षर—(वि) अक्षरलिपि, अक्षर ।

अक्षर, अक्षरलिपि ।

अक्षर—(वि) अक्षर अक्षर

छलोता, अक्षर, अक्षर ।

चलते जलते रुक जानेवाला, सुस्त,
हठी ।

अक्षर—(सं पुं) अक्षर अक्षर ।

एक पौधा जिसके फूल और पत्ते
दवा के काम में आते हैं । अक्षर-
रुष ।

अक्षर-पक्षर—(सं पुं) अक्षर-
पक्षर ।

आसपास, करीब ।

अक्षर—(सं पुं) अक्षर अक्षर

अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर
अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर
अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर

अक्षर की अक्षर, अक्षर, अक्षर

अक्षरों के अक्षर के लिये बनाया

गया अक्षर, अक्षर की अक्षर, अक्षर

अक्षर—(सं पुं) अक्षर

अक्षर, अक्षर, अक्षर ।

अक्षर अक्षर, अक्षर

अक्षर—(सं पुं) अक्षर अक्षर

अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर

अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर

अक्षर—[वि] अक्षर अक्षर

अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर

अक्षर—[सं पुं] अक्षर । अक्षर ।

अक्षर—[वि] अक्षर, अक्षर-

अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर
अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर
अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर

अक्षर—[सं पुं] अक्षर अक्षर

अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर

अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर

अक्षर—[सं पुं] अक्षर, अक्षर, अक्षर

अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर
अक्षर अक्षर अक्षर अक्षर

वायु, आत्मा, अतसी के रेशों से
बना हुआ कपड़ा ।

अतसी—[सं स्त्री] नवपाटे ।

अलसी, पटसन ।

अता—[सं पुं] पान, वक्छि ।

दान, बख्शिश ।

अतिक्रमण—[सं पुं] लक्षण,

गौमां वशिष्ठ होवा कार्य ।

नियम-उल्लंघन, विपरीत
व्यवहार ।

अतिचार—[सं पुं] अतिक्रम,

एक राशिर् भोगकाल समाप्त
नोहोराटैक कोनो अह्न
आन ठाईतेल गमन ।

अपने अधिकार को पारकर अनु-
चित रूप से दूसरे को बाधा
पहुँचाना ।

अतिथि—(सं पुं) आलसी, अतिथि,

कोनो ठाईत एवातिउटैक
वेछि नथका गमनागी । अग्नि ।
यज्जत सोमलता आनोता ।

अभ्यागत, मेहमान, कहीं भी एक
रात से अधिक न ठहरनेवाला
संन्यासी, अग्नि, यज्ञ में सोमलता
लानेवाला ।

अतिदेव—(सं पुं) गुरुलो देव-
ताउटैक अष्ट देवता, निव, विष्णु ।

सब देवताओं से बड़ा देवता,
शिव, विष्णु ।

अतिपात—(सं पुं) अतिक्रम,

वाडीत शै घोवा, अतिमाया ।

अवावस्था, बाधा ।

अतिक्रम, व्यतीत हो जाना,

अव्यवस्था, बाधा ।

अतिपुरुष—[सं पुं] वीर पुरुष ।

वीर पुरुष ।

अतिमोदा—(सं स्त्री) अत्यन्त सुगन्धि,

नवमल्लिका फूल ।

अत्यधिक सुगन्धित, नवमल्लिका फूल

अति रंजन—(सं पुं) अत्यधिक,

अतिवर्द्धन ।

अत्युक्ति ।

अतिरिक्त—(वि) आवश्यकताके

वेछि, उपरबधि, अतिवर्द्ध,

उपेक्षा ।

जरूरत से अधिक बचा हुआ,

शेष, अलग, भिन्न, आवश्यकता-

नुसार नियमित से ज्यादा कुछ

जोड़ना, जैसे—अतिरिक्त कर ।

अतिरेक—(सं पुं) बाह्य, अना-

हक बुद्धि, अयोग्यताउटैक वेछि ।

अधिकता, ध्यर्थ की बुद्धि या

विस्तार, आवश्यकता से अधिक,

किसी बात पर अधिक गम्भीर होने का भाव ।

अति वृष्टि—(सं स्त्री) अतिशय, आवश्यकतसे अधिक बरसूष ।
बहुत अधिक वर्षा ।

अतिवेला—(सं स्त्री) अत्यन्त, अत्यन्त प्रायः देखा जाता ।
अबेर, वेला का अतिक्रम ।

अतिशय—(वि) खूब बेछि, अत्यधिक ।
बहुत ज्यादा, अत्यधिक ।

अतिशयोक्ति—(सं स्त्री) अति-वर्जित कथा, गतिताव एविव अर्थालंकार ।
बहुत बढ़ा चढ़ा कर कही हुई बात । एक अर्थालंकार ।

अतिसार—(सं पुं) अजीर्ण रोग, पेटिब अस्थ ।
अजीर्ण या दस्त सम्बन्धी रोग ।

अतीन्द्रिय—(वि) याव अशुद्ध इन्द्रिय-शक्ति शक्ति नश्य । अगोचर ।
अवाञ्छित ।
अगोचर ।

अतीत—(वि) अतीत देखा जाता, पूर्वनि काल, बेलग ।
गत । अतीत ।

अतीव—(वि) वर बेछि, अत्यधिक ।

बहुत ।

अतुल्य—(वि) अतुल्य, जिस छन्द के तुल्य न मिलते हों ।

अतुल्य—(वि) अतुल्य, याव तुल्य नाई ।

जिसकी तोर या अंशज न हो मके, असीम, बेजोड़ ।

अतुलनीय—(वि) याव तुल्य नाई, अतुल्य ।

अपरिमित, अनुपम ।

अतृप्त—[वि] अतृप्त, अतृप्त नपलाता ।

जो तृप्त या संतुष्ट न हो । भूखा ।

अत्यन्त—[वि] बहुत बेछि, अत्यधिक ।

बहुत अधिक ।

अत्यय—[सं पुं] श्रुत्य, विनाश, गीतार बाहिर देखा जाता, ह्रास होता ।

मृत्यु, नाश, सीमा के बाहर जाना, कम या ह्रास होना ।

अत्याचार—[सं पुं] अत्याचार, अन्याय, उत्पीड़न ।

जुलम, आचार का अतिक्रमण, उत्पीड़न ।

अत्युक्ति—[सं स्त्री] अट्टाङ्गि,
बड़ा है कोरा कथा । गहिताव
एविश अलङ्कार ।

कोई बात बढ़ा-चढ़ाकर कहना ।
बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात, एक
अलंकार ।

अथ—[अव्य] एतिश, ताव पोछत,
आवञ्च ।

अब, अनन्तर, प्रारंभ ।

अथक—[वि] अक्रान्त ।

जो न थके ।

अथाई—[सं स्त्री] वैठक, गोष्ठी,
गौरवांगी एकलंग होवा ठाई ।
बैठक, चौपाल, गोष्ठी ।

अथाइ—[वि] यथाउनि, वन द ।
जिसकी थाह न मिले, अगाध ।

अदंड—[वि] शास्त्रि अयोग्य,
कब वा मातूल गलगा, स्नेच्छाचारी
जो दंड देने के योग्य न हो,
निष्कर (भूमि), स्वेच्छाचारी ।

अदंस—[वि] कौठ शीन, कौठ
नगका, निड ।

जिसके दांत न हों, शिशु ।

अदत्त—[वि] निमिया (वञ्च) ।
जो दिया न गया हो ।

अदद—[सं स्त्री] वञ्चन गन्था,
गच्छत ।

संस्था, संस्था का चिह्न ।

अदना—[वि] ठुल्ल, गाथाव ।

बहुत ही साधारण ।

अदब—[सं पुं] मिथोचाव, मान-
गन्थान, नौति-नियम ।

शिष्टाचार, सम्मान ।

अदम्य—(वि) अदगा, अदवनीय,
अताञ्च अचल ।

जिसका दमन न होसके, बहुत प्रबल ।

अदय—(वि) निर्दय, निर्दूर ।

निर्दय, दयाहीन ।

अदरक—(सं पुं) आम ।

मसाले और दवा के काम आने
वाली एक पौधे की जड़ ।

अदराना—(क्रि अ) आदर
पाई अशंकावी होवा ।

आदर में इतराना या अहंकारी
होना ।

अदल-बदल—(सं पुं) गाल-गलनि,
अमल वमल, विनिमय ।

उलट-पुलट, परिवर्तन ।

अदला-बदली—(सं स्त्री) विनिमय,
एठाईव वञ्च अशेन ठाईत बथा ।

विनिमय, चीजों को हटाकर एक
दूसरी जगह रखना ।

अद्वितीय—(वि) निर्द्वनीय ।
बिना दकवाला ।

अवहन—(सं पुं) चाँडल, दाईल
आदि गिजाबटेल कबा गबन
पानी, उतला पानी ।
बाल, चाबल पकाने के लिये
उबलता हुआ पानी ।

अदा—(सं स्त्री) आनक मोहित
कबिबटेल कबा तिवोताब चाल-
चलन, स्त्रियों का हाव भाव, नखरे
(वि) आनाय दिया, पविशोध
कबा, पालन कबा, कबि देखुरा ।
बुकाया हुआ, पालन किया हुआ
करके दिखलाया हुआ ।

अद्याग—(वि) टेका नलगो, निरु-
लक्ष, बिभुद्ध, निर्दोष ।
जिसमें दाग न लगा हो, निष्क-
लंक, बिषुद्ध ।

अदायगी—(सं स्त्री) धन वा धार
पविशोध कबा क्रिया ।

ऋण बुकाने की क्रिया या भाव ।

अदायक—(सं स्त्री) न्यायालय,
आदालत ।
स्यायालय ।

अदायक—(सं स्त्री) नक्रता,
बिबोधिता ।
बान्नुता ।

अदिन—(सं पुं) इदिन ।
बुरा दिन, अभाग्य ।

अहीन—(वि) बि श्चीरा नश्य,
उग्र, निर्भीक, उदाब ।

दीनता रहित, उग्र, निडर, उदार

अदुजा—(वि) अवितीय ।

अद्वितीय ।

अदूरदर्शी—(वि) अदूरदर्शी, दूर-
भविष्यतब चिन्ता कबिब नोराबा ।
ओ दूरतक न सोचे, नासमझ ।

अदृश्य—(वि) यदृश्य, याक देखी
पोरा नायाय, यनिब नोराबा ।
जो दिखाई न दे, अगोचर, लुप्त ।

अदृष्ट—(वि) अदृष्ट, अज्ञात,
भागा ।

अदृश्य, अज्ञात, भाग्य ।

अदृष्ट-पूर्व—(वि) आगेये नेदेखी ।
जो पहले कभी न देखा गया हो ।
अदृष्ट ।

अदेय—(वि) दियाब अयोग्य, दिब
नोराबा । जो दिया न जा सके ।

अदोष—(वि) दोषशून्य, निबपबाब ।
दोष रहित, निरपराध ।

अद्य—(अद्य) आजि, आजिकानि,
एडिग ।

आज, आजकल, अब ।

अद्यापि—(कि वि) এই পর্যन्त ।
इत समय तक ।

अद्वयूत्थ—(वि) पाशावे नहर,
जायगूर्ण उपाये पोवा ।

जुए से नहीं, न्याय से प्राप्त ।

अद्रि—(सं पुं) पाशव, पर्वत ।
पहाड़, पर्वत ।

अद्वंद्व—(वि) वैबीविहीन ।
सानुताहीन ।

अद्वैत-वाद—(सं पुं) वेदान्त
एटा सिद्धान्त—आत्मा आरु पर-
मात्माक एकेबुलि शवि लेल एहे
गंगावधनक विधाया वा माया बुलि
कय ।

वेदान्तका बहु सिद्धान्त, जिसमें
आत्मा, परमात्मा को एक मानते
हुए संसार को मिथ्या या माया
माना जाता है ।

अधः—(अव्य) तलटेल ।
नीचे ।

अधःपतन—(सं पुं) तलटेल गमन,
अवनति, झुक्कना ।
नीचे की ओर गिरना, अवनति,
बुद्धिहा ।

अधकचरा—(वि) अपविपक,
कैटेनुवा, आधाबुला ।
अधूरा, अपूर्ण । अकुशल । आधा
कूटा या पीसा हुआ ।

अधकपारी—(सं स्त्री) आधकपानी,
नूबन विष ।

आधे सिर का दर्द ।

अधकहा—(वि) आधकनीश । आधा
कोवा कथा । पूरा न कहना, अस्पष्ट ।

अधखिला—(वि) आधाकुला ।
आधा खिला हुआ ।

अध-बुध—(वि) अज्ञानी ।
अर्द्धशिक्षित ।

अधम—(वि) अधम, नीच, अताछ
पापी ।

बिलकुल निकट, बहुत बड़ा पापी
या दुराचारी ।

अध-मरा—(वि) आधाबना,
मृतप्राय ।
मृत प्राय ।

अधमर्ण—(सं पुं) धक्का ।
कर्जदार ।

अधर—(सं पुं) ठठ, थालि ठाई,
कोनो गहाय नोहोवाटेक ।
होंठ, शुन्य या आकाश, बिना
किसी सहारे का । [वि]
नीच, बेग्रा ।

नीच, बुरा, घटिया ।

अधिकतर—(सं पुं) किवा बन्ध
डुलनात अधिक, कोनो बन्ध
अधिकतर ।

किसीकी अपेक्षा अधिक । किसीमें
का अधिक अंश ।

अधिकता—(सं स्त्री) अधिकता,
आधिका, शक्ति ।
बहुतायत, वृद्धि ।

अधिकर—(सं पुं) विशेष कर ।
विशिष्ट कर [अं-सुपर टैक्स]

अधिकरण—(सं पुं) आधार,
मुद्दाय । वाक्यवर्ण एता कारक ।
विशेष वक्त्रव विचारव कारणे
बहुवचन विचारानय ।
आधार, सहारा, व्याकरणमें कर्ता
और कर्म द्वारा क्रिया का
आधार । अदालत ।

अधिकार्ह—(सं स्त्री) आधिका ।
अधिकता ।

अधिकार—(सं पुं) कर्मता, अधि-
कार, आधिपत्या, शक्ति, शक्ति,
गर्वाङ्ग ।

विधि मर्यादा आदि के द्वारा प्राप्त
शक्ति (अं-अर्थो रिटी) प्रभुत्व,
शक्ति, वह शक्ति जिससे किसी पर
स्वामीत्व या प्रभुत्व प्राप्त हो । (अं-
राइट) किसी वस्तु पर स्वत्व
जताने का भाव (अं-क्लेम) पूरी
जानकारी, किसी वस्तु या सम्पत्ति

आदि पर होनेवाला स्वामीत्व (अं-
पोजेसन)

अधिकार-पत्र—(सं पुं) अधिकार
पत्र, यि पत्रव शब्द कोनो
कार्य करार अधिकार दिया
शय ।

वह पत्र जिससे किसी को कोई
कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो ।

अधिकारिक—(सं पुं) अधिकारी,
अधिकारी, [वि] अधिकारीव
शब्द कृत, अधिकार पूर्ण ।

अधिकारीद्वारा किया या कहा
हुआ । अधिकारपूर्ण, अधिकार
युक्त ।

अधिकारी—(सं पुं) अधिकारी,
मानिक, पदाधिकारी ।

प्रभु, स्वामी, वह जिसे कोई अधि-
कार या स्वत्व प्राप्त हो । अफसर ।
[वि] अधिकार बाधोता,
अधिकार रखनेवाला, जिसे कुछ
पाने या करने का अधिकार हो ।

अधिकृत—(वि) अधिकार कर्ता वृद्ध,
उपेक्षक, याक अधिकार दिया
है ।

जिसपर अधिकार कर लिया गया
हो । जो किसी के अधिकार

में हो, जिसको अधिकार दिया गया हो।

अधिक्षेत्र—(सं पुं) अधिकार क्षेत्र।

किसी के अधिकार या कार्य का क्षेत्र (अं-ज्यूरिसडिक्शन)

अधिगत—(सं पुं) प्राप्त, प्राप्त। प्राप्त, ज्ञात।

अधिगम—(सं पुं) परिगम, उपलब्धता या प्राप्त, निदानकर चरम सिद्धांत।

पहुँच, गति, उद्देश से प्राप्त ज्ञान। न्यायालय का वह निष्कर्ष जो पूरी सुनवाई के बाद प्राप्त हो। (अं-फाईंडिंग)

अधिग्रहण—(सं पुं) अधिकारपूर्वक कोना जप्ति या छीनना।

अधिकारपूर्वक किसी की सम्पत्ति या और कोई चीज ले लेना।

(अं-अक्विजिशन)

अधित्यका—(सं स्त्री) पालावर उपरब समतल भूमि।

पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि।

अधिनायक—(सं पुं) मुखिया, वरमुखी, गर्व प्रधान अधिकारी। सरदार, मुखिया, विशेष. अव-

स्थाओं में नियत पूर्ण अधिकार प्राप्त शासक। तानाशाह।

[अं-डिक्टेटर]

अधिनायक-तंत्र—[सं पुं] वर-मुखीय कथारत छला भागवत-तंत्र।

अधिनायक के आदेशानुसार होने वाला शासन। तानाशाही।

अधिनियम—[सं पुं] आदेशन नियम वा शास। विशेष अधि-स्थिति बना नियम।

वह नियम जो किसी विशेष आज्ञा या निश्चय के अनुसार किसी विशेष प्रकार की व्यवस्था के लिये बना हो। [अं-रेगुलेशन]

अधिपति—[सं पुं] अधिपति, बाई गवर्नर, स्वामी।

स्वामी, प्रधान अधिकारी, न्यायालय आदि का प्रधान विचारक या अधिकारी।

(अं-प्रिमाईजि अफसर)

अधिपत्र—[सं पुं] कोना काग-पत्रित दिय आदेश-पत्र।

वह पत्र जिसमें किसी को काम करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। [अं-वॉरंट]

अधिमूल्य—[सं पुं] विशेष परिस्थिति में लोवा अधिक मूल्य। विशेष परिस्थिति में लिया गया अधिक मूल्य।

अधिया—[सं पुं] आधि, उपपन्न वस्त्व आधा अंश लोवा दीति। आधा हिस्सा। एक रीति जिससे उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करने वाले को मिलता है।

अधियाना—[क्रि. स] गमाने गमाने भाग कबा। समान समान या आधा आधा बाटना।

अधियुक्त—[वि] वेतन वा पावित्र्यिक ले काम करेता। वेतन पर किसी काम में लगा हुआ। [अं-एमप्लायड]

अधिरक्षी—[सं पुं] पावोगा, पुलिठ कर्मचावी। पुलिस विभाग का वह कर्मचारी जिसके अधीन कुछ सिपाही होते हैं। दारोगा। [अं-हेड कास्टेबल]

अधिराज—[सं पुं] अधिराज, उपवर्कि बजा। महाराज।

अधिलाभ—[सं पुं] वेतनर उपवर्कि पञ्चा।

साधारण लाभार्थ या वेतन के अलावा मिलनेवाला लाभ का अंश। (अं-बोनस)

अधिवास—[सं कुं] वासस्थान, ध्वन ठाईव पवा अडेन ठाईत वगवाग कदा। स्थगक।

रहने का स्थान, एक देश से चल कर दूसरे देश में बस जाना। [अं-डोमिसाइल], सुगन्ध।

अधिवासी—[सं पुं] अधिवासी, वासिन्ना, अडेन देशत गै वग करेता।

निवासी, दूसरे देश में जाकर बसनेवाला [अं-डोमिसाइल]

अधिवेशन—[सं पुं] अधिवेशन, गडा वा मेल बहा कार्य।

सभा सम्मेलन आदि की बैठक। [सेशन]

अधिष्ठाता—[सं पुं] अध्यापक, मुखिया, भावप्राप्त कर्मचावी, देवव।

अध्यक्ष, प्रधान। वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो। ईश्वर।

अधिष्ठान—[सं पुं] वाग्वान्,
नगव, ज्विति, आश्रय, वनशुद्ध
वद्ध, शासन ।

वासस्थान, नगर, पड़ाव, सहारा,
वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप
हो । शासन । संस्था । व्यापार
आदि में लाभ के लिये धन
लगाना ।

अधिष्ठित—[वि] शापित, निशुद्ध ।
स्थापित, स्थित, नियुक्त ।

अधिसूचना—[सं स्त्री] कार्य-रीति
गवक्षीय जाननी ।

कार्य-रीति संबंधी सूचना ।
(अ-इन्स्ट्रक्शन)

अधीक्षक-- [सं पुं] विभागीय
अधिकारी ।

कर्मियों के कार्यों की देख भाल
करने वाला उच्च अधिकारी
(अ-सुपरिन्टेन्डेंट)

अधीन—[वि] अधीन, तलतीग्रा,
आश्रित, बगौडूत, वण देह थका,
निरुपाश ।

किसीके अधिकार, शासन, निरी-
क्षण या वश में रहनेवाला,
आश्रित, किसी नियम या निर्देश
से बंधा हुआ। बशीभूत। लाचार ।

अधीनता—[सं स्त्री] अधीनता,
आनव वण देह थका अवस्था ।
परतंत्रता ।

अधीर—[वि] अधीर, अश्विब, उद्विग्न,
आतुर ।

'धैर्य' रहित, उद्विग्न, बेचैन, आतुर ।

अधीश्वर—[सं पुं] गवाकी,
बजाव उपबब बजा ।

मालिक, राजा ।

अधुना—[क्रि. वि] एतिग्रा, वर्तमान ।
आजकल, वर्तमान समय में ।

अधूरा—[वि] यगम्पूर्ण, आश्रय ।
अपूर्ण, जो पूरा न हो ।

अधेह—[वि] वयगह ।
प्रौढ़ उम्रका ।

अधोगति—[सं स्त्री] पतन,
अवनति, दुर्दशा ।

पतन, अवनति, दुर्दशा ।

अधोमुख—[वि] तलमूला, उन्नी ।
नीचे मुंह किए हुए, उलटा ।

अध्यक्ष—[सं पुं] श्वामी, नायक,
अधिष्ठाता, गभा-समितिब-अध्यक्ष ।
स्वामी, नायक, अधिष्ठाता, सभा
समिति आदि का प्रधान ।

अध्ययन—[सं पुं] अध्यायन, पठन,
पाठ अध्ययन ।
पठन-पाठन ।

अध्यवसाय—[सं पुं] अथर्वशास्त्र,
निबन्धन चेट्टी, नेबानेपेरा
चेट्टी, उद्गाह ।

लगातार उद्योग, उत्साह ।

अध्यात्म—[सं पुं] आत्मा आरु
परमात्मा-विवेचन, ब्रह्म विचार,
परमात्मा सम्पर्कयोग ।
आत्मा और ब्रह्म का विवेचन,
आत्मज्ञान ।

अध्यादेश—[सं पुं] ठबकांबी
ठकरी घोषणा ।

राज्य द्वारा जारी किया हुआ
कोई आधिकारिक आदेश [अं०
आर्डिनेन्स]

अध्यापक—[सं पुं] अध्यापक,
शिक्षक, पढ़ावा उडा ।
शिक्षक ।

अध्याय—[सं पुं] अध्याय, अध्या,
प्रकरण, प्रथम अध्याय ।
पुस्तक का खण्ड या प्रकरण ।

अध्यास—[सं पुं] शिक्षाछान, धन,
वाक्छि, अगाथावनीय ।
मिथ्या ज्ञान, भ्रम ।

अनंग—[वि] अनगनी बिना देह
का [सं पुं] कामदेव, कामदेव ।

अनन्त—(वि) अनन्त, अनेक, अन्त
नन्का. ब्रह्म ।

बहुत अधिक या बहुत बड़ा ।
असीम । (सं पुं) विष्णु, शेष नाग
लक्ष्मण, एविश अलङ्कार ।
विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण, एक
गहना ।

अनन्तर—(क्रि वि) अनन्तर, पाछे,
एके लानिये, एके लेखाबिये
पीछे, बाद, लगातार ।

अनकड़ा—(वि) अकथित, नोकोरा ।
अर्काथत ।

अनक्षर—(वि) निबन्धन, बोवा
निरक्षर, गूंगा (पुं) गालि गाली

अनखाना—(क्रि अ) अं उठा,
विरक्त होवा ।

रुष्ट होना, खीझना (क्रि स)
अं तोला, विरक्त करा ।
रुष्ट करना, खीझना ।

अनखुला—(वि) नोखोला, बन्ध,
बिना खुला ।

अनगढ़—(वि) नगढ़ी, अगढ़, कूकप,
उदग ।

बिना गढ़ा हुआ । जिसे किसीने
न बनाया हो । बेढंगा । उजड़ ।

अनगिनत—(वि) अगणन, अगन्त ।
असंख्य ।

अनघ—(वि) निर्दोष, निष्पापी,
परिद्ध ।

निर्दोष, निष्पाप, पवित्र ।

अन-बहा—(वि) निविचवा, अक्षिप्त,
अनिश्चित ।

जिसकी चाह या इच्छा न की
गयी हो । अप्रिय, अनिश्चित ।

अन-ज्ञान—(वि) अज्ञानी, अवुद्ध,
अपरिचित, अछिनाकि ।

अज्ञानी, नासमझ, अपरिचित,
अज्ञात ।

अन-नस—(वि) चिन्हा, पान,
बिना झुका हुआ (क्रि वि)
अश्वेन ठाये ।

दूसरी जगह ।

अन-देखा—(वि) गेदेष्टा ।
न देखा हुआ ।

अनधिकार—(सं पुं) अनधिकार,
अवशीनता ।

अधिकार का न होना, लाचारी,
अयोग्यता ।

अनधिगत—(वि) अछाड, अप्राप्त
अज्ञात, अप्राप्त ।

अनधिगम्य—(वि) पाव नोवावा,
अप्राप्त, अल्लेख ।

पहुँच के बाहर, अप्राप्त, अज्ञेय ।

अननुमत—(वि) स्वीकृति नोपेक्षा,
अयोग्य ।

जिसकी स्वीकृति न मिली हो,
अयोग्य ।

अनन्य—(वि) अविश्व, एकनिष्ठ,
अन्य से सम्बन्ध न रखनेवाला,
एक निष्ठ ।

अनन्याश्रित—(वि) कावो आश्रय
नथका, आश्रित ।

जो किसी दूसरे के आश्रय में न
हो, स्वाधीन ।

अन-पच—(सं पुं) अजीर्ण, बद-
हजम ।

अजीर्ण, बद हजमी ।

अनपद—(वि) अपट्टुट्ट, निवर्द्ध ।
बे पद, निरक्षर ।

अनपत्य—(वि) निःसन्तान, उड-
वाधिकारी नथका बाङ्गि ।

सन्तानहीन, जिसका कोई उत्तरा-
धिकारी न हो ।

अनपेक्षित. अनपेक्ष्य—(वि) अप्र-
तागित, याव उपबत निर्ध
कवा नश्य ।

जिसकी चाह या परवाह न हो ।

अन-अन—(सं स्त्री) अनोमागिष्ठ,
विवाद ।

विरोध, (वि) अगि, विविध ।
 अनमेल, विविध ।
 अनवृत्त—(वि) अज्ञानी, अदृष्ट ।
 अज्ञानी, जो समझ में न आ सके ।
 अनव्याह—(वि) अविवाहित ।
 अविवाहित ।
 अनभल—(सं पुं) शानि, अहित ।
 बुराई, अहित ।
 अनभिज्ञ—(वि) अज्ञ, अनभिज्ञ, नचना ।
 अज्ञ, मूर्ख, अपरिचित ।
 अनभिप्रेत—(वि) उवा कथाव विवेकी, अनिष्ट, इच्छा नथक ।
 सोचे हुए के विरुद्ध, जो अभीष्ट नहीं ।
 अनभीष्ट—(वि) अनङ्गीष्ट, अवाञ्छित ।
 अवाञ्छित ।
 जो अभीष्ट न हो, अवाञ्छित ।
 अंनभ्यास—(वि) विष्टो अङ्गान कवा होवा नाई । विष्टे अङ्गान कवा नाई ।
 जिसका अभ्यास न किया गया हो । जिसने अभ्यास न किया हो ।
 अनभ्र—(वि) नभहीन ।
 बिना बादल का ।

अनमना—(वि) अग्रमनक, उनाग, अग्रही ।
 उदास, क्षिप्त, अस्वस्थ ।
 अनमिल, अनमेल—(वि') अगि ।
 बेमेल, असंबद्ध ।
 अनमोल—(वि) अमूला, अताञ्ज मूलावान ।
 अमूल्य, मूल्यवान ।
 अनथ—(सं पुं) अगल, विपद, अन्याय ।
 अमंगल, अन्याय, अनिति ।
 अनरीति—(सं स्त्री) कू-रीति, बेग्या आचरण ।
 बुरी रीति, अनुचित व्यवहार ।
 अनर्गल—(वि) अनर्गल, एकबादे, थकका नलगाटेक उलोवा ।
 वे रोक, अड-बंड, लगातार ।
 अनर्थ—(सं पुं) अनर्थ, उन्ठा अर्थ ।
 उल्टा अर्थ ।
 (वि) निरर्थक, अर्थहीन, अर्थहीन, भिन्न अर्थबुद्धि ।
 निरर्थक, भाग्यहीन, अर्थहीन, भिन्न अर्थवाला ।
 अनर्थक—(वि) अनर्थक, निरर्थक, वार्थ ।
 निरर्थक, व्यर्थ ।

अनल—(सं पुं) जूड़े ।

आग ।

अनलस—(वि) एनाश्शीन, तब-
बशीया, ठेठना ।

आलस्य रहित, चतन्य ।

अनलहक—(सं पुं) मय्येइ जक ।
मैं हक, अहं ब्रह्मास्मि ।

अनवकाश—(वि) विश्व बादे
कोनो श्रविषा वा श्रकण्डा नाई ।
जिसके लिये कोई गुंजाइश या
मौका न हो, अयोज्य, (सं पुं)
गम्य नथका । अवकाश का
अभाव, फुरसत का न होना ।

अनवगत—(वि) अछात, नखना ।
अज्ञात, न जाना हुआ ।

अनवच्छिन्न—(वि) अशङ्कित, अटूटे
अखंडित, अटूट, संयुक्त ।

अनवद्य—(वि) निर्दोष, निशुद्ध ।
दोष रहित, निर्दोष ।

अनवधान—(वि) असावधानता,
केवेल नकवा ।

असावधानी, लापरवाही ।

अनवरत—(क्रि वि) अकरोरत,
अनवरत, लगातार ।

लगातार, अविराम ।

अनरान—(सं पुं) अननन, उपवाग,
कोनो विशेष गुरु लै उप-

वाग कवा ।

उपवास, किसी विशेष संकल्प के
साथ आहार-त्याग ।

अनसाना—(क्रि अ) मने मने बेना
पोरा वा बं कवा ।

मन में नाराज होना, चिढ़ना ।

(क्रि स) आनक अगुष्टे कवा ।

किसी को अप्रसन्न या नाराज
करना ।

अनसुनी—(वि) श्रुतना, वि सुना नाई ।
न सुनी हुई ।

अनस्तमित—(वि) वि अस्त योरा नाई ।
जो अस्त न हुआ हो ।

अनास्तित्व—(सं पुं) अस्तित्व नथका ।
अस्तित्व का अभाव ।

अनहित—(सं पुं) अहित, अशुभ
कामना ।

बुराई, अशुभ कामना ।

अनहोनी—(सं स्त्री) अगुडावा,
अचटन, अलौकिक ।

न होनेवाली, अलौकिक ।

अनाक्रमण—(सं पुं) आक्रमण नकवा ।
आक्रमण न करना ।

अनागत—[वि] अनागत, उवि-
द्याडेल दवलगोश, अगविठित,
अनादि, अदृष्ट ।

जो न आया हो, भावी,

अपरिचित, अनादि, अद्भुत ।
(क्रि. वि.) शठां सहसा ।

अनाघ्रात—(वि.) याव आगेग्ले
झाण लोरा होरा नाई ।
जो सूँघा न गया हो ।

अनाचार—(सं. पुं.) अनाचार,
कुर्याद्वशात्, आचारव विरोधी ।
नीति या आचार के विरुद्ध,
दुराचार ।

अनाज—(सं. पुं.) शब्द ।
अन्न, धान्य ।

अनाड़ी—(वि.) अकुरा, अपट्टे,
अबुद्ध, अनभिज्ञ ।
नासमरू, मूर्ख, अनिपुण ।

अनाथालय—(सं. पुं.) अनाथाश्रम,
य'त पिङ्ग-मातृहीन निवाश्रम
शिशु सकलव पोषण पोषण हर ।
बहु स्थान जहां दीन-दुखियों का
पालन हो ।

अनादर—(सं. पुं.) अनादर, आठ-
हेला, एविष अलङ्कार ।
आदर न होना, अपमान, एक
अलंकार ।

अनादि—(वि.) अनादि, आदिहीन,
आँत-नोपेरा ।
जिसका आदि न हो, चिरन्तन ।

अनाप शनाप—(वि.) बकनि,
अवावत बका ।

व्यर्थ का उल्टा सीधा कथन ।

अनायास—(क्रि. वि.) अनायासे,
बिना परिश्रमे, आकस्मिक भावे
बिना आयास के । अकस्मात् ।

अनार—(सं. पुं.) डालिय ।
एक फल, दाड़िम ।

अनावृत—(वि.) अनावृत, नुकलि ।
जो ढका न हो, खुला हुआ ।

अनाश्रित—(वि.) अनाश्रित,
निवाश्रय ।
निराश्रित, जिसे सहारा न हो ।

अनासक्त—(वि.) अनासक्त, निनिष्ठ
बति बा अश्रुवाग नथका ।
जो आसक्त न हो, निरलित ।

अनाहृत—(वि.) आहृत
नोहोरा,
जिस पर आघात न हुआ हो ।
(सं. पुं.)—योगवत् अङ्गमादे
बुद्धा आङ्गुलिबे हृष्टा काण बद्ध
कविले सुना मन्त्र ।

योग में वह शब्द जो
दोनों कानों को अङ्गुठों से
बन्द करने से सुनायी देता है ।

अनाहार— (सं पुं) अनाशय,
निवाशय,
भोजन का त्याग, जिसने कुछ
खाया न हो ।

अनाहूत— (वि.) अनिमज्जित,
जो बुलाया न गया हो ।

अनिद्य—(वि.) अनिद्रागम्य, डाल ।
जो निद्रा के योग्य न हो, उत्तम ।

अनित्य—(वि.) अनित्य, क्लेशकीया,
अस्थायी, क्षण भङ्ग्य ।

जो सदा न रहे, नश्वर, अमत्य ।

अनिमिष, अनिमेष—(क्रि वि)
एकेशित्व, निवृत्त, अपलक ।
एकटक, लगातार ।

अनियारा—(वि) झोडा, टोका,
तीक ।
नुकीला, पैना ।

अनिवचनोय—(वि.) अनिर्वचनीय,
वर्णनाय अतीत ।
जो कहा न जा सके ।

अनिर्वाच्य—(वि) निर्वचनय
अतीत, वर्णनाय अतीत ।
जो बुना न जा सके, जो कहा
न जा सके ।

अनिल—(सं. पुं) बडाइ, बायु ।
वायु, हवा ।

अनिवार्य—(वि.) अनिवार्य, निवारक
कवि नोवावा, गलन कवि
नोवावा, अभावशायक ।
जिमका निवारण न हो,
अत्यावश्यक ।

अनिष्ट—(वि.) अनिष्ट, अपकारक
जो इष्ट न हो । (सं पुं) अप-
कार, शानि । अमंगल, हानि,

अनी—(सं स्त्री) आगडाग, झोड,
गमूह, गैह, लाज, श्रानि ।
अग्रभाग, नोक, समूह, सेना,
लज्जा, श्लानि ।

अनीक—(सं पुं) बोव, बिलाक,
गैह, शूँछ ।
समूह, सेना, युद्ध ।

अनीति—(सं स्त्री) अनौति, नीति
विरुद्ध आचरण, अठाठाव ।
नीति का न होना, अन्याय,
अत्याचार ।

अनुकंपा—(सं स्त्री) कृपा, अहृदय ।
दया, कृपा, अनुग्रह ।

अनुकरण—(सं पुं) अनुकरण,
आनक मेथि कवा बावशाव ।
नकल, पीछे चलने का भाव ।

अनुकारक—[वि] अनुकरणकारी ।
नकल करनेवाला ।

अनुकूल—[वि] अङ्कूल, शिड, गहाय गालेक, ठेपकाबी, ईष्ट अनुरूप, मुआफिक, सहायता करनेवाला, विचारों आदि में समान होने या मेल खानेवाला, प्रसन्न। [सं पुं] केवल एङ्गनी विवाहित। औब लगत गश्क बाँधोता, एविश अमङ्काव। एकही विवाहिता स्त्री से सम्बन्ध या प्रेम रखने वाला। एक अलंकार।

अनुकृति—(सं स्त्री) नकल, प्रतिकर, एविश अनङ्काव। नकल, किसी चीज को देखकर ज्यों की त्यों बनायी गयी चीज। एक अलंकार।

अनुक्त—(वि) नोकोवा, अकथित।
न कहा हुआ।

अनुक्रम—(सं पुं) अङ्गक्रम, मृथला, क्रयवक्र। सिलसिला, लगातार एक के बाद एक होने की क्रिया या भाव, क्रमबद्ध।

अनुगमन—(सं पुं) अङ्गगमन, अनुगमन, गतिव इङ्गुत गठी-बोवा एवा।

अनुसरण, समान आचरण, मृत पति के साथ जल मरना।

अनुगामी—[वि] अङ्गगामी, पाँछुत बोवा, 'गमआचरण कबोता, आङ्काकाबी।

पीछे चलनेवाला, समान आचरण करने वाला, आज्ञाकारी।

अनुचर—[सं पुं] अङ्गचर, गङ्गा, आम शवा
दास, साथी।

अनुच्छेद—(सं पुं) गविच्छेद अङ्गच्छेद।

लेख आदि का भाग या अंश, प्रस्तर, पैराग्राफ।

अनुज—(सं पुं) अङ्गज, गङ्गाई, छोटा भाई। (वि) वयगत गर।
जो पीछे जन्मा हो।

अनुज्ञा—[सं स्त्री] अङ्गज्ञा, अङ्गज्ञति, एविश अर्थाङ्काव।

आज्ञा, इजाजत, एक अर्थाङ्कार।

अनुज्ञा-पत्र—(सं पुं) अनुज्ञापत्र-पत्र।

वह पत्र जिसमें अधिकारी हैं किसी को कुछ करने या लेने की इजाजत मिली हो। (परमिट)

अनुताप—(सं पुं) अङ्गताप, बेरा काम पाँछुत क्वाङ्गीक, अङ्ग-

गोचना ।

दाह, जलन, दुःख, पछतावा ।

अनुत्तर—(वि.) अशुद्ध, निरुद्ध, उद्धव दिव नोवावि मने मने वका ।

जो उत्तर न दे सके ।

(सं पुं) उद्धव निद्रिया वा दिवटेल ईच्छा नकवा ।

उत्तर का अभाव, उत्तर या जबाब न देना ।

अनुत्तीर्ण—(वि.) अकृत कार्य, अशुद्धीर्ण

जो परीक्षामें उत्तीर्ण न हुआ हो ।

अनुदम—(वि.) टापव, कोयल, दुर्बल, निस्तुज ।

ऊँचा नहीं, कोमल, कमजोर, निस्तुज ।

अनुदास—(वि.) गरु, तलवापव, लघु (उच्चारण)

छोट्टा, लघु (उच्चारण)

अनुपम—(सं पुं) चवकाव वा अशुद्धीन, आदिब पवा कोनो बिषेब कामव बावे सहायता कपे पोवा वन ।

राज्य, स्यासन, संस्था आदि को ईकरी बिबेब कार्य के लिबे सहा-

यता के रूप में मिलने वाला वन । (श्राट)

अनुदार—(वि.) अशुद्ध, ठेक-मना, नोच-मना, कृपण ।

जो उदार न हो । कृपण, कंजूस ।

अनु-धावन—(सं पुं) अशुद्धव, पिछ्त गमि-पिठि चोवा कार्य, बिबेचन ।

पीछे चलना, अनुसरण करना ।

अनुनय—(सं पुं) अशुद्धव, विनय भाव प्रदर्शन, नम्रता, ठुठि, काकुति ।

प्रार्थना, रुठे हुए को मनाना ।

अनुनासिक—(वि.) अशुद्धानिक, नाकव साध्यायत उच्चारण कवा । नाक से उच्चरित ।

अनुपम—(वि.) अशुद्धव, यति अशुद्ध, याव तुलना नाई ।

उपमा रहित, बे-जोड़, बहुत अच्छा ।

अनुपयोगी—(वि.) अशुद्धयोगी, उपयोगी नोहोवा, अशुद्धवृद्ध । बे काम का ।

अनुपस्थित—(वि.) अशुद्धवृद्ध, यागंत नवका, अनाका ।

गैर-हाजिर ।

अनुप्रास—(वि) कतिपय नोदोदा,
नडम ।

अजत, कोरा, नया ।

अनुपास—(सं पुं) अशुपात, एक
भावीर गगत अशेन भावीर गगत,
द्वैवाधिक ।

गणित का त्रैराशिक नियम,
तुलनात्मक स्थिति ।

अनुपान—(सं पुं) अशुपान, नववर
न गगते विश्वाइ थोदा वड ।

बह वस्तु जो औषध के साथ या
ऊपर से खायी जाय ।

अनुपूरक—(वि) अशेनर गग है
पुवा कर्बोता, अति-विह्वलित
कावने पिछ्त गंगुळ (भक्त) ।

किसी के साथ मिलकर उसकी
पूर्ति करने वाला । छूट, त्रुटि
आदि की पूर्ति के लिये बाद में
लगाया, मिलाया, या बढ़ाया
गया ।

अनुप्राप्त—(वि) एकत्रित ।

इकट्ठा किया या उगाहा हुआ ।

अनुबंध—(सं पुं) अशुवक, बद्धन,
बाधाबाधकता, कोना काव
कविवरैल अशे पक्क राजत होदा
वत्तावत ।

बद्धन, कोई काव करने के लिये

दो पक्षों में समझौता, किसी
भावी कार्य के लिये होनेवाला
आपसी निर्णय, अनिष्ट पार-
स्परिक सम्बन्ध । (कनट्राक्ट)

अनुभव—(सं पुं) अशुभव, बोध,
उपलक्षि, अनुभित ज्ञान ।

प्रत्यक्ष ज्ञान, उपलब्धि ।

अनुभाव—(सं पुं) अनोभाव
अकाश कवाव अति-भक्ति ।

चित्त का भाव प्रकट करनेवाली
चेष्टाएँ ।

अनुभूति—(सं स्त्री) अशुभूति,
अशुभव, ज्ञान, बोध, उपलक्षि ।

अनुभव, मनमें होनेवाला ज्ञान ।

अनुमति—(सं स्त्री) अशुमति,
आज्ञा, आदेश, गम्यति ।

आज्ञा, अनुज्ञा, स्वीकृति ।

अनुमान—(सं पुं) अशुमान, आमांज,
मनेवे भावि ठिक कवा, युक्तिवे
कवा निर्णय—‘बोता देखि कवा

छुईर अशुमान’, छाबिनिध आश्रव
एविष ।

अंदाज, मोटा हिसाब, ज्ञाय के
बार मेरों में एक मेव ।

अनुमित—(वि) अशुमित, बिटो
अशुमान कवा हैदेह ।

जो अनुमान में सोका गया हो ।

अनुबोधन—(सं पुं) अनुबोधन,
गच्छे होवा, आज्ञा दिया ।
प्रसन्नता प्रकट करना, किसी के
किये काम या प्रस्तुत सुभाव को
सही मानकर स्वीकृति देना या
समर्थन करना ।

अनुयायी—(वि) अनुयायी, अनु-
गायी, पाछा होवा, अनुकरण,
अनुगमि ।
अनुगामी, अनुकरण करनेवाला,
किसी के सिद्धान्त को मानने या
उसके अनुसार चलनेवाला ।
(सं पुं) अनुचर, सेवक ।
अनुचर, सेवक ।

अनुरंजन—(सं पुं) अनुवाग ।
अनुराग, दिल बहलाव ।

अनुरक्त—(वि) अनुबद्ध, कोनो
वस्तु अतिरिक्त मन लगा,
आगच्छ, प्रेमिक ।
प्रेमी, आसक्त, वफादार ।

अनुरक्षण—(सं पुं) नक्ष, क्षति,
प्रतिक्षति ।
किसी चीज का बोलना या
बचना ।

अनुरूप—(वि) अनुकूल, अनु-
प्रा, बोधा, उपयुक्त, आनाप

वत्ते कवा परिवाण ।
तुल्य रूप का, समान, योग्य ।

अनुरोध—(सं पुं) राधा, अनुबोध
आठनि, विनम्रपूरुषिक आर्षना,
प्रेषणा ।

रुकावट, बाधा, प्रेरणा, आग्रह,
विनय पूर्वक हठ ।

अनुलक्षित—(वि) अपवादर अति-
योग्य विचारर अति निरूप-
लैके पदर पत्रा वर्धात्त ।
जो अन्तिम निर्णय तक के लिये
अपने कार्य या पद से हटा दिया
गया हो । मुञ्जत्तल ।

अनुलेख—[सं पुं] कोनो बचना
वा पत्रत निखर श्रीरुति आदि
लिखि ताव दायिह निखर
उपबत मोवा कार्य ।
किसी लेख या पत्र पर अपनी
सहमति लिखकर उसका उत्तर-
दायित्व अपने ऊपर लेना ।
(अं—एंडोर्समेंट)

अनुलेखन—(सं पुं) कोनो
बटनार अकृत विवरणर लेखन
कार्य, बटनार अविकल प्रति-
निधिकरण ।

बटना या कार्य का लेखा आदि
लिखन, अनुलेख ।

अनुसूची—(सं. पुं) अवबोधन,
उमल मरा कार्य, गहीतव
निग्न श्रव, निग्न वर्ण ।
उतार, संगीत में सुरों का उतार,
निम्न वर्ण ।

अनुवर्ती—(सं. पुं) अनुवर्ती, अपवर्त
मते चला, अनुवर्तन कावी,
कोनो कावव पविर्वाय श्रकपे
हवलगीया ।
अनुयायी, किसी काम के परि-
णाम स्वरूप होनेवाला ।

अनुवृत्ति—(स. स्त्री) अवगव प्राप्त
वर्ध्मजावीक दुःख कालत दिया
वेतनव अंश ।
अवसर प्राप्त कर्मचारी को वृद्धा-
वस्था में दिये जानेवाले वेतन का
भाग । (पेन्सन)

अनुशंसा—(सं. स्त्री) अनुकूल पवि-
वेश श्रद्धि कावणे कवा उक्ति,
उप कीर्तन ।
सिफारिश ।

अनुशासन—(सं. पुं) अनुशासन,
आदेश, उपदेश वा शिक्षा,
ठिक बकमे काम चलावितेन
कवा निर्देशन ।
आज्ञा, उपदेश, ठीक तरह से

कार्य करने को बाधित करनेवाला
विधान ।

अनुसरण—[सं. पुं] अनुसरण,
पाहल बोधा वा गयन, आछा
वा उपदेशवते चला ।
अनुकरण, कोई बात या निर्णय
मानकर उसके अनुसार काम
करना ।

अनुसार—[वि] अनुकूल, गद्वन ।
जो किसी के अनुकूल या अनु-
सरण पर हो ।
(क्रि. वि) अनुसावे, मते,
अनुयायी ।
किसी की तरह पर । वैसे
ही, जैसे कोई प्रस्तुत
या मामले हो ।

अनुसूची—[सं. स्त्री] तालिका,
रक ।
किसी सूचना, विवरण, नियमा
वली आदि के अन्त में रहनेवाली
कोष्ठक आदि के रूप में नामा-
वली । (अं-स्टेड्यूल)

अनुहार—(वि) गद्वन, गयान,
अनुगति ।
सहस्र समान, अनुहार,

[सं पुं] अकार, गङ्गा, अतिरुति
प्रकार, चेहरे की बनावट,
साहस्य, प्रतिकृति ।
अनूठा—[वि विच्छिन्न, अकूट,
आचरित, डाल, अगाधवर्ण ।
विचित्र, अद्भुत, अच्छा, असा-
धारण ।
अनूढा—[सं स्त्री] पुरुषवत् नगंठ
श्रेय कवा अविवाहित स्त्री ।
वह बिना व्याही स्त्री जो किसी
पुरुष से प्रेम रखती हो ।
अनूप—(सं पुं) अदूर पानीव
देश, सुखना स्थान ।
अधिक जल वाला देश ।
(वि) अरुण, सुख । जिसकी
उपमा न हो, सुन्दर ।
अनृत—[वि] मिथ्या, अमार्था,
विपरीत ।
मिथ्या, अमार्था, विपरीत ।
अनैक्य—[सं पुं] अनेकता, मतभेद,
एक नोशोरा, अविन ।
मतभेद, एकता न होना ।
अनैतिक—[वि] नीति विरुद्ध ।
नीति के विरुद्ध ।
अनोखा—(वि) विच्छिन्न, आचरित,
नटून, सुख ।
विचित्र, विलक्षण, नया, सुन्दर ।

अनौचित्य—(सं पुं) अशुचित
भाव ।
अनुचित होने का भाव ।
अन्न—(सं पुं) नगा, डाँठ, अन्न ।
पीधों से उत्पन्न [बाबल गेहूँ
आदि] दाने जो खाने के काममें
आते हैं ।
अन्न कूट—(सं पुं) काठि मांसव उन्न-
प्रतिपन्न होवा एविष उन्नव ।
कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होने
वाला एक उत्सव ।
अन्न-सन्न—[सं पुं] य'त श्वीया
डिकरक अन्न-पान दिया शय ।
जहाँ गरीबों को अन्न बाँटा या
खिलाया जाता है ।
अन्ना—(सं स्त्री) शई, शोड़ी ।
धाय, दाई ।
अन्यतम—(वि) अग्रतम्, विनिष्टे,
वह्तर डिउवत एवन ।
सर्वश्रेष्ठ, बहुतों में एक ।
अन्यन्न—(कि वि) अनाद्य, आन
ठाई ।
कहीं दूसरी जगह ।
अन्यथा—(अव्य) अनाथा, नटूवा
नहीं तो, दूसरी अवस्था में
[वि] विपरीत, अवचर, अदृश-नटव ।
विपरीत, मिथ्या, झूठ

अन्यमनस्क—(वि) अन्यमनस्क,
बाब मन आन विवशत बत ।
अन-मना, स्निग्ध ।

अन्योन्य—(सर्व) आन-आन, ईटो-
गिटो, परस्पर, अन्याना,
साहित्य एविष अलङ्कार ।
एक दूसरे के साथ, परस्पर, साहि-
त्यमें एक अलंकार ।

अन्यथ—(सं. पुं) अथ, परस्पर
गद्य, वाक्य कर्म, कर्त्ता, क्रिया-
दिब परस्पर गद्य, पर्याय ।
दो वस्तुओं के आपस का सम्बन्ध,
पद्य को गद्य की भाँति ठीक
कर बैठाने की प्रक्रिया । शब्दावली
के अनुसार किसी वाक्य का ठीक
और संगत अर्थ लगाना । कार्य
कारण का पारस्परिक संबंध ।

अन्यीक्षण—(सं. पुं) भालनदे छोटा वा
झुजि जोरा, विचार-धोठा, अज्ञान
भली भाँति देखना या सोचना
समझना, खोज, अनुसंधान ।

अन्वेषण—[सं. पुं] अन्वेषण, अन्वेष
अज्ञान, विचार कार्य ।
छानबीन करके बीती हुई बात
के तथ्य, इतिहास आदि का पता
लगाना ।

अन्वेषी—(वि) अन्वेषकारी ।

अन्वेषण करनेवाला ।

अपकर्ष—(सं. पुं) कृ-कर्ष, वेद्य
काम, अपकर्ष ।

बुरा अनुचित या निन्दनीय काम ।

अपकर्ष—(सं. पुं) अपकर्ष, तमले
छानि अना, शीनता, वेद्य है
बोरा ।

बीछे या नीचे खींचना, गुण योग्यता
आदि का कम होना ।

अपकर्षण—(सं. पुं) अवनति, पद-
वर्धना शानि, मूला दान ।
नीचे की ओर जाना, अवनति
प्राप्त होना, पदमर्दा बटना,
मूल्य आदि कम होना, किसी
वस्तु में से कुछ अंश कम हो
जाना ।

अपकार—[सं. पुं] . अपकार,
अनिष्ट, अहित, कति ।

हानि, अहित, नुकसान ।

अपकीर्ति—(सं. स्त्री) अपवर्ण,
अपकीर्ति, कूकीर्ति ।

अपयश, बदनामी ।

अपक्रमण—(सं. पुं) अगच्छते है
उलाहै बोरा ।

असन्तुष्ट होकर निकल जाना
(अ-बाँक आउट)

अपक—(वि.) अपक, नपका,
कैठा ।

कच्चा, जिसके ठीक होनेमें कसर
हो ।

अपगत—[वि] पृथक्, वृत्त, नष्ट ।

भागा या हटा हुआ, मृत, नष्ट ।

अपघात—(सं पुं) आघातता, अपघात,
अकम्पाय होना डाढ़र आघात
वा दुर्घटना, अटवध भावे हत्या
वा वध ।

आत्म हत्या, किसी को मार
डालना । हत्या, वध या हिंसा ।

अपच—(सं पुं) अजीर्ण ।

अजीर्ण ।

अपचय—(सं पुं) कम, हाग,
अपचय, अपवय्य ।

कम या थोड़ा होना । कमी, घटाव
या ह्रास । नाश । गंवाना ।

अपकार—(सं पुं) अशुचित काम,
निन्दा, अनधिकार प्रवेश,
आज्ञा शनिकर काम ।

अनुचित कार्य । निन्दा । बुराई ।
अनधिकार क्षेत्रमें प्रवेश । स्वास्थ्य
नष्ट करनेवाला काम ।

अपजस—[सं पुं] अपवर्ण, कलङ्क ।

अपवर्ण, कलङ्क ।

अपह—[वि] अनिकित, लेना-
पत्ता नबना, अपहूना ।

अनिकित ।

अपत—[वि] पात नथका, निगाह ।

जिसमें पत्ते न हों । निर्लज्ज,
बेहया । (सं. स्त्री) अपमान ।
अप्रतिष्ठा, बेइज्जती ।

अपत्य—[सं पुं] अपता, गन्तान
गन्तवि ।

सन्तान ।

अपनपौ—(सं पुं) आप्रीयता ।

मर्यादा, छान, अभिमान, अहंकार
आत्मीयता, सुध, ज्ञान, अभि-
मान ।

अपनयन—[सं पुं] दूरी करण,
एठादेव पना आन ठाईले ले
योरा क्रिया ।

दूर या अलग करना, एक स्थान
से दूसरे स्थान पर ले जाना,
किसी ओर भगा ले जाना ।

अपना—(सर्व) निजा । व्यक्तिगत ।

निजका, व्यक्तिगत ।

(सं पुं) आप्रीय । निजा गवकी ।

आत्मीय, स्वजन ।

अपनाना—(क्रि स) आपोान कवा,

निजव अधिकारले अना, निजव
कवा ।

अपना बनाना, अपने अधिकार,
स्वराज आदि में लेना ।

अपनावा—(सं पुं) आशीर्वाद ।
आत्मीयता ।

अपभ्रंश—(सं पुं) विकृत रूप,
मूल मन्त्र गान-गमनि शै शोवा
मन्त्र ।

पतन, विकृति, मूल शब्दसे विकृत
शब्द का नया रूप ।

(सं स्त्री) आकृत भाषा
एक । रूप, ।

हिन्दी के पहले और प्राकृत
भाषा के बाद की प्रचलित
भाषा ।

अपमान—(सं पुं) अपमान, अव-
मानना, मानव लाघव, मान वा
शोभन शानि ।

अनादर, बेइज्जती, वह काम या
या बात जिससे किसी का मान
या प्रतिष्ठा कम हो ।

अपमृत्यु—(सं स्त्री) अप-मृत्यु,
आकस्मिक मृत्यु । अन्धाधुनिक
मृत्यु ।

दुर्घटना आदि के कारण आक-
स्मिक मृत्यु ।

अपमृश—(सं पुं) अपमृश, कृ-
मान, कलङ्क, कूटना ।

अपकीर्ति, बदनामी ।

अपरंपार—[सं पुं] अगोचर, अत्य-
धिक, सब वेष्टि ।

असीम, बहुत अधिक, अनन्त ।

अपर—(वि) अधः, पिछ्छ, अन्त,
भित्त, वेगमग । आरु अधिक ।

पहले का, पिछला, अन्य, जितना
हुआ हो उससे और आगे या
अधिक ।

अपरा—(सं स्त्री) अपराविद्या
वादित्र अन्य विद्या । पश्चिम
दिक् ।

ब्रह्म विद्याके अलावा अन्य विद्याएँ
पदार्थ विद्या, पश्चिम दिशा ।

अपराग—(सं पुं) विवेक, अगच्छाव ।
वैर, द्वेष, असन्तोष ।

अपराध—(सं पुं) अपराध, अज्ञान,
दोष, पाप ।

कोई ऐसा अनुचित कार्य जिससे
किसी को हानि पहुँचे (अं—
आफेन्स) विधि विधान विरुद्ध
दंडनीय कार्य (क्राइम) पाप,
मूलचूक ।

अपराध—(सं पुं) अपराध, आवेजि,
पाह वेना, डाटवेना ।

दिनका तीसरा पहर ।

अपरिग्रह—(सं पुं) दान नोलोवा,
आवश्यकतक बेछि धन-त्याग ।

दान न लेना, आवश्यकता से
अधिक धन का त्याग ।

अपरिमित—(वि) अपरिमित,
बाब परिमाण नाई ।

असीम, असंख्य ।

अपरिमेय—(वि) अपरिमेय, बाब
परिमाण छुबिब नोवाबि ।

बेमन्दाज, असंख्य ।

अपरुष—(वि) नरम, कोमल, थं-
विशीन ।

क्रोधरहित, मृदुल ।

अपरूप—(वि) अपरूप, कुरूप,
अकूत, आश्चर्या ।

बद-सूरत, भद्दा । अद्भुत, अपूर्व ।

अपलक—[वि] एके थिबे ।

जिसकी पलकें न गिरें । (क्रि वि)

एक दृष्टिबे ब लागि चाई थका ।

एकटक ।

अपलाप—(सं पुं) अपलाप, बक्-
बकनि ।

व्यर्थ की बक-बक ।

अपवर्ग—(सं पुं) बोक, निर्वाण,
मुक्ति, कल ।

मोक्ष, निर्वाण ।

अपवाद—(सं पुं) विरोध, खंडन,
अपवाद, कलह बटा, चरित्र
सम्पर्के दोषाबोध, नियमब
बाहिब ।

विरोध या खंडन, बदनामी ।

दोष, पाप । व्यापक या सामान्य
नियम के विरुद्ध बात ।

अपव्यय—(सं पुं) अपव्यय, अपवि-
मित खंच, बेग्या कामत बा
अतिविज्ज खंच ।

व्यर्थ किया जानेवाला व्यय ।

अप-शकुन—[सं पुं] कुलकन,
अमङ्गलब चिन ।

बुरा शकुन, असुगुन ।

अपसरण—[सं पुं] दाखिष्टपूर्ण
काम एबि पलोवा ।

कार्य या उत्तरदायित्व छोड़
कर भाग जाना ।

अपहरण—[सं पुं] अपहरण ।
अग्राय कप बा बलपूर्वक पदब
बस्त ग्रहण ।

छीनकर या बलपूर्वक ले लेना ।

किसी व्यक्ति को बलपूर्वक उठा
ले जाना । छिपाव ।

अपार्ण—[वि] अक्षरीन, छत्र
कोण ।

जिसका कोई अंग टूटा हो या
न हो । आँस का कोना ।

अपाकरण(अपाकृति)—[सं पुं] अंग-
परिवर्तन ।

ऋण परिशोधन । (अं—लिवि-
डेशन आफ डेट)

अपादान—[सं पुं] पृथक्,
व्याकरण पर पक्ष का बके बुझावा
अर्थ ।

हटाना, अलग करना, व्याकरण
में पाँचवाँ कारक ।

अपान—(सं पुं) पाँचवाँ वा दशवाँ
आंगव एठा । यि उपाह ण्ड
बावेदि बाहिर करि दिया याय,
पाप । मंगवार, कटि, पोकर ।
पाँच या दस प्राणों में से एक,
वह वायु जो गुदा से निकले ।
गुदा-द्वार

अपाय—[सं पुं] पृथक्, अपाय,
अमङ्गल, शानि, विनाश, डबि
विहीन ।

अलगाव, नाश, अन्यथाचार, बिना
पैरका ।

अपारण—(वि) अपावग, अगवर्ध,
अवोर्ण, अक्य ।

जो पारगामी न हो । अवोर्ण,
असमर्थ ।

अपावन—[सं पुं] अपवित्र ।
अपवित्र ।

अपाहिज[अपाहज]--[वि] अक्षरीन,
अकामिला, एमेहवा ।
अंगहीन, काम करने के अयोग्य,
आलसी ।

अपितु—[अव्य] किङ्, वरः ।
किन्तु, बल्कि ।

अपील—[सं स्त्री] निवेदन,
पुनर्विचिन्ता के बावे आर्षना ।
पुनर्विचार-आर्षना-पत्र ।
निवेदन, विचारार्थ प्रार्थना, अभि-
योग । प्रार्थना-पत्र ।

अपूर्व—(वि) आगेग्ये नोहोवा,
अङ्कुर, आच्छा, उद्यम ।

जो पहले न रहा हो, अहमृत,
उत्तम ।

अपेक्षा—[सं स्त्री] अपेक्षा, आशा
कवि वै धका, डबवा, गवह,
डुलना ।

आकांक्षा, इच्छा, आवश्यकता,
भरोसा, आशा । कार्यकारण का
अन्योन्य संबंध, तुलना ।

अपेक्ष—(वि) निश्चयपूर्वक अपेक्षा,
अपेक्ष ।

न पीने योग्य ।

अप्रसिद्ध—(वि) जिसका कोना
दिने परिचय कविबलगीश
नहय ।

जिसे कभी चुकाना न पड़े
ऐसा ऋण ।

अप्रतिभ—(वि) निम्न, प्रतिभा-
हीन, उदात्त, निबान, मतिहीन ।
प्रतिभा क्षुब्ध, उदात्त, स्फूर्ति
रहित । मतिहीन ।

अप्रतिभ—(वि) अप्रतिभ, निरूपण,
अतुलनीय ।
अद्वितीय ।

अप्रतिष्ठा—[स' स्त्री] अनादर,
अपमान ।

अनादर, अपमान ।

अप्रत्यक्ष—(वि) अश्रुत्यक्ष, नेदृश,
अनुमानन पत्रा होवा, अनुमान-
सिद्ध ।

जो प्रत्यक्ष या सामने न हो,
जो प्रत्यक्ष रूप या सीधे मार्ग से
न हो कर किसी दूसरे मार्ग से
या हेरफेर से हो ।

अप्रमोह—(वि) अविष नोदोवा,
उत्कर्षे हृदि नोदोवा ।

जो माया न जा सके, अनन्द,
जो तर्क या प्रमाण से सिद्ध
न हो ।

अप्सर—[स' स्त्री] अर्धव नर्तकी,
परम रूपवती श्री, परी, अपे-
क्षी ।

स्वर्ग की नर्तकी, परम रूपवती
स्त्री, परी ।

अफरना—(क्रि अ) डोबनेवे
तुष्ट होवा, पेट उबधि उठा,
आरु अधिक पावन ईच्छा
नोदोवा ।

पेट पुरी तरह भर जाना, पेट
फूलना, और अधिक की इच्छा
न रहना ।

अफवाह—(सं स्त्री) उवा बातवि,
अनवर ।

उड़ती खबर, जनरव, किवदन्ति ।

अफसर—[सं पुं] विषय, प्रधान ।
प्रधान, अधिकारी, हाकिम ।

अफसोस—(सं पुं) आरुछोछ,
गोक, अहताप ।

शोक, दुःख, पश्चाताप, खेद ।

अफोम—(सं स्त्री) कानि, आकिं ।
पोस्त के पेड़ का गोंद जो मावक
और विष होता है ।

अक्षरमयी—[वि] कानीया ।

अक्षरमयी ज्ञानेवाला ।

अक्षर—(कि वि) अक्षर ।

इस समय ।

अक्षर—(वि) अवश्य, बंधन अयोग्य,

बाक कोनोसे भाविब नोबावे ।

जिसे मारना उचित नहीं, जिसे

प्राण दण्ड न दिया जा सके,

जिसे कोई मार न सके ।

अक्षर—[सं पुं] बालिचना, कैंचन

निचिना एविष कुटि-कुटीया बन्ध ।

कांच की तरह चमकीली तह

वाली एक धातु । एक प्रकार का

पत्थर ।

अक्षर—[सं स्त्री] अक्षर,

तिबोता ।

औरत, स्त्री ।

अक्षर—[वि] अक्षर, वाधा नथका,

अत्यधिक, पूर्ण ।

जिसके लिये कोई बाधा न हो,

बहुत अधिक, पूर्ण, परम ।

अक्षर—[वि] अक्षर, उच्छ्वसन,

हाक-बचन झुठना ।

जो रोका न जा सके । अनिवार्य ।

अक्षर—[सं पुं] फाट ।

रंगीन कुर्ण जिसे होली के अवसर

पर डाला जाता है ।

अक्षर—[अक्षर] देवा (जम्हरेन

गवांशन)

हे, अरे (छोटों के लिये संबोधन)

अक्षर—(सं स्त्री) पत्नी, विनय ।

विलम्ब ।

अक्षर—(वि) अवोध, अज्ञान,

अनजान, मूर्ख ।

(सं पुं) अवोध वा अज्ञान

माश्रय ।

अज्ञान, मूर्खता ।

अक्षर—[सं पुं] अक्षर, पञ्च, मन्त्र,

छन्द, ध्वजबो ।

जल से उत्पन्न वस्तु, कमल, शंख,

चन्द्रमा, अरब की संख्या ।

अक्षर—(सं पुं) बह्व, मेघ, आकाश ।

वर्ष, साल, मेघ, आकाश ।

अक्षर कोश—(सं पुं) अतिबहुत

प्रकाशित जानिव लगीया कथाब

गुंअहिउ गुंवि ।

जानने योग्य बातों का संग्रह

कर प्रति वर्ष प्रकाशित होने

वाला कोश । (अं—इयरबुक)

अक्षर—(सं पुं) गमूदा, गवांवन,

गाठ ।

समुद्र, सरोवर, सातकी संख्या ।

अक्षर—(वि) अक्षर, मछिब बोबार,

एविष अक्षर (कावा)

बलंड, वृणं, न मिटने वाला,
लगातार ।

अवश्य—(वि) अवका, अवकाश,
धोखाव अयोग्य ।

अवकाश, जिस वस्तुको खानेमें
निषेध हो ।

अभय—(वि) अभय, भय नथका ।
निर्भय, निडर ।

अभय-पद—(सं पुं) मुक्ति, भगवन्मुख
पौरा अवस्था ।
मुक्ति, मोक्ष ।

अभागा—(वि) शूर्कगोश, अभागीश,
शूर्कगलीश ।
भाग्यहीन, बदकिस्मत ।

अभाग्य—(सं पुं) अभागा,
भाग्यहीन अवस्था, शूर्कपाल ।
भाग्य हीनता, बदकिस्मती ।

अभिकरण—(सं पुं) कोनो
बाहुश्वर गवहके निश्चित प्रमाण
नथका लोवावोप । एवञ्जी ।
किसी ओर से अभिकर्ता के
रूपमें काम करना । वह स्थान
जहाँ अभिकर्ता रहता या काम
करता हो । (अं—एजेन्सी) ।

अभिकर्ता—(सं पुं) प्रतिनिधि ।
वह जो किसी व्यक्ति या संस्था
की ओर से प्रतिनिधि के रूप में

काम करने के लिये नियुक्त हो ।
(अं—एजेंट)

अभिगमन—(सं पुं) कोनो
वस्तुब काले पतिकरण, बडि-
क्रिया, त्रिबोताव गैतेत गुणुत
गर्गर्ग ।

पास जाना, सहवास, संभोग ।

अभिचार—(सं पुं) तन्त्र-यन्त्र
द्वारा अनिष्ट-नाशन ।

तंत्र-मंत्र द्वारा मारण आदि
हिंसा कर्म ।

अभिजात—(वि) अभिजात, ভাল
बंशत अन्ना, बुद्धिमान, योग्य,
उपयुक्त, माननीय, पुत्र, सुन्दर ।
अच्छे कुल में उत्पन्न, बुद्धिमान,
योग्य, मान्य, पूज्य, सुन्दर ।

अभिजात—तंत्र—(सं पुं) अभि-
जात-तन्त्र, उच्चवर्गीय लोक
चलोवा शासन-तन्त्र ।

वह शासन पद्धति जिसमें राज्यका
सारा प्रबन्ध थोड़े से उच्च कुल
के और सम्पन्न लोगों के हाथ
रहता है । (अं—एरिस्टोक्रैसी,
एलीगोर्की)

अभिज्ञ—(वि) अभिज्ञ, गवाक
ज्ञान थका, निपुण, मार्गड ।
आनकार, निपुण ।

अभिधान—(सं पुं) यात्र वस्तु
ठाक दिया ।

किसी की वस्तु उसके पास पहुँ-
चाना या देना (अं—डेलवरी)

अभिधा—(सं स्त्री) यथावथ अर्थ
प्रकाश करवा शक्ति ।
शब्दों की वह शक्ति जिससे
उनके नियत अर्थ ही प्रकट होते
हैं ।

अभिधान—(सं पुं) नाम, कोना
पदव विशेष नाम वा शब्द, अभि-
धान, शब्दार्थ-कोश ।
नाम, संज्ञा, किसी पदका विशेष
नाम या संज्ञा (अं—डेजिगनेशन)
शब्द कोश ।

अभिनन्दन—[सं पुं] आनन्द,
जन्मोत्सव, अभिनन्दन, मंगल,
विनीत निवेदन ।
आनन्द, सन्तोष, प्रशंसा, विनीत
प्रार्थना ।

अभिनय—[सं पुं] आनन्द धरण
करनेवाला अथवा नकल, नाट-
कत लिखी लोक विलास भाव
धरि—मेह विलास भाव,
कृत्य आचरण आदि देखूँगा
कार्य, अभिनय ।

दूसरे की चेष्टा का अनुकरण
करना, नकल, नाटक का खेल ।

अभिनय—[वि] अभिनय, एक-
बादे नटन ।
नया, ताजा ।

अभिनीत—[वि] उचित गन्धकित,
सूक्ष्मकित । भावना करि देखूँगा ।
निकट लाया हुआ, सुसज्जित,
जिसका अभिनय हुआ हो ।

अभिनेय—[वि] अभिनयव योग्य,
भावनार्थ योग्य ।
अभिनय करने योग्य ।

अभिप्राय—[सं पुं] आशय, तात्पर्य,
अर्थ, उद्देश्य, कोना छवि
आँकित निमित्त कर्ता काल्पनिक
वस्तु आकृति ।

आशय तात्पर्य, उद्देश्य, किसी
चित्रमें सजावट के लिये बनायी
जानेवाली प्राकृतिक या काल्पनिक
वस्तु, किसी रचना का विषय
जिसपर उसका ढाँचा बनता है ।

अभिप्रेत—(वि) अभिप्रेत, मनने
डवा वा इच्छा कर्ता, बुझाव
बोधा ।

अभिप्राय का विषय, अभिलषित ।

अभिभूत—(वि) अभिभूत, पराजित,
विह्वल, विचलित, बर्बाद, परा-

छूत, छक ।

पराजित, पीडित, बशीभूत, चकित ।

अभिमत—(वि) अभिमत, मत
मता ।

मनोनीत, वाञ्छित, सम्मत (सं पुं)
मत, कायना, ईष्ट, वाञ्छित,
भात ।

मत, राय, सम्मति, विचार,
मनचाही बात ।

अभिमान—(सं पुं) अभिमान, नष्ट
वर डान, गर्व, गर्व ।
अहंकार, गर्व, घमंड ।

अभिमुख—(क्रि वि) अभिमुख, मुख,
दिश ।

सामने, सम्मुख ।

अभियाचन—[सं पुं] दावी
(अधिकार श्रुति)
अधिकार बताते हुए कुछ मागना ।
मांग (अं—डिमांड)

अभियान—[सं पुं] युद्ध आदि
कारण जट्ट । आक्रमण ।
सैनिक कार्य के लिये दूनेवाली
यात्रा, आक्रमण ।

अभियुक्त—(सं पुं) अभियुक्त, जग
वा अजगत्त पत्ता ।
निरूपण अभियोग लगाया गया
हो, मुलजिम ।

अभियोग—(सं पुं) अभियोग,
गोचर, आपाततत्त अश्विन
विरुद्ध कवा आपाति,
मोक्षमा ।

फरियाद, अदालत में किसी के
अपराध की शिकायत, अभि
युक्त को दण्ड दिलाने के हेतु
अदालत में चलनेवाला वाद या
व्यवहार, किसी प्रकार की
नालिश या मुकदमा ।

अभिराम—(वि) अभिराम, सुन्दर,
वरा ।

मनोहर, सुन्दर ।

अभिरुचि—(सं स्त्री) अभिरुचि,
इच्छा, अशुद्धि ।
चाह, पसन्द ।

अभिलाषि—(वि) वाञ्छित,
आकाङ्क्षित ।
वाञ्छित, नाहा हुआ ।

अभिलाषा—(सं स्त्री) अभिलाष,
इच्छा ।
इच्छा । कामना, आकाक्षा ।

अभिलेख—[सं पुं] अभिलेख,
कोनो विषय लिखित विवरण ।
किसी विषय के सम्बन्ध में
लिखी सब बातें (अं—रेकार्ड)

अभिसंधान—(सं पुं) अणान, उडि,
अनःगा ।

प्रणाम, स्तुति, प्रशंसा ।

अभिवादन—(सं पुं) अभिवादन,
अणान, नमस्कार ।

प्रणाम, स्तुति ।

अभिव्यञ्जन—(सं पुं) भाव-
अकाश ।

भाव व्यक्त करना ।

अभिव्यक्ति—(सं स्त्री) अष्टीकरण,
अकाशन, अश्व वा अश्वत्थक फल
अष्टेभावे उलाई पत्रा (गुटिब
पत्रा गञ्जालि)

प्रकाशन, अप्रत्यक्ष कारण का
प्रत्यक्ष रूप से सामने आना ।

अभिशाप—(सं. पुं) अभिशाप,
भाउ, अपनि ।

गाप ।

अभिवेक—(सं पुं) तिउवा कर्य,
ज्ञान, परिवर्तन पानीवे विधिपूर्वक
गा-धुवाई बाजपाठित ज्ञान,
बाबी, लोटावर नलेवे निर-
लिखत उपवत पानी दिवा
कार्य ।

जलसे सींचना । स्नान । बाधा
ज्ञानि के लिये मन पढ़कर जल
खिचकना । राजगद्दी पर बैठना ।

घड़े के छिद्र से शिव लिंगपर
पानी टपकाना ।

अभिसंधि—(सं स्त्री) अभिगति,
अभिधात्र, बड़यह, कूयवण ।
घोसा, षडयंत्र ।

अभिसार—(सं पुं) आश्रय, अभि-
गाव, प्रेमिक-प्रेमिकाव गुप्त
ज्ञानले गमन करा कार्य ।

सहायता, सहारा, प्रियसे मिलने
के लिये संकेत स्थलपर जाना ।

अभिहार—(सं पुं) युद्ध घोषणा,
दण्ड ।

युद्ध घोषणा, दण्ड ।

अभी—(क्रि वि) अतिशय ।

इसी समय, इसीक्षण ।

अभीप्सा—(सं स्त्री) हेँप्साह ।
कुछ पाने की प्रबल इच्छा ।

अभोष्ट—(वि) अडीष्टे, बाधित,
आकाङ्क्षित, मनोनीत,
अभिधेय ।

बाधित, मनोनीत, अभिप्रेत ।

अभुक्त—(वि) वाक बोधा नाई,
नोबोधाटेक थका, नडका ।

जो न खाया या न भोगा गया
हो । जो सुनाया नहीं गया हो ।

(अ—अन कहें)

अभ्युत्थपूर्व—(वि) अद्भुतपूर्व,

आगेग्रे नोहोवा, अपूर्व ।

जो पहले न हुआ हो, अपूर्व ।

अभ्यन्तर—(सं पुं) अन्तःस्थ,

भित्त, अन्तःगुह, अन्तः, अन्तः ।

मध्य, बीच । हृदय ।

अभ्यर्थना—(सं स्त्री) आर्चना,

आपन, गणान ।

प्रार्थना, स्वागत, अगवानी ।

अभ्यर्पित—(वि) अर्पित ।

जो किसी को सौंप या दे दिया गया हो ।

अभ्यस्त—[वि] पुनः पुनः आच-

रण करि शिक्षित होवा, अभ्यास,

करोते करोते अन्तर्गत

होवा, निपुण, पारंगत ।

जिसका अभ्यास किया गया हो,

जिसने अभ्यास किया हो;

निपुण ।

अभ्यागत—(वि) अभ्यागत, अभ्युत्थ

उपस्थित, आनशी, आधु गन्नागी ।

सामने आया हुआ, अतिथि,

साधु-संन्यासी आदि ।

अभ्युत्थान—[सं पुं] अद्भुतान,

उठा, कार्य, उठने अह,

माहृहक अन्तः प्रेरणावर्ध अर्थ

आगनव परा उठा, कार्य, उन्नति,

अद्भुत, आनन्द, अद्भुत ।

उठना, खड़े होकर स्वागत

करना समृद्धि, आरंभ ।

अभ्युद्य—[सं पुं] अद्भुत,

उन्नति, प्रेरणा, अद्भुत

प्रवृत्ति, अद्भुत, नूतन उन्नति ।

इहाँ का उदय, उत्पत्ति, मनो-

रथ की सिद्धि, वृद्धि, नवीन

उन्नति ।

अभ्र—(सं पुं) मेघ, आकाश ।

बादल, आकाश ।

अमन—(सं पुं) शांति ।

शान्ति ।

अमर पद—(सं पुं) मुक्ति ।

मुक्ति ।

अमरबेल—(सं स्त्री) आकाशी

लता ।

आकाश बेल ।

अमराई—(सं स्त्री) आम-वागान ।

आमका बाग ।

अमर्ष—[सं पुं] क्रोध, अंग,

अमर्ष अमर्ष आनन्द कवि

नोवावात होवा अंग ।

क्रोध, वह द्वेष या दुःख जो

अमर्ष का अकार न कर सकने पर

हो ।

अमल—(वि) अवल गल नथका,
विशुद्ध, निर्मोघ । निर्मल, निर्दोष
(सं पुं) भांगन काल, निठा,
आचरण ।

शासन काल, नशा, व्यवहार,
कार्य ।

अमलादारी—(सं स्त्री) भांगन,
बाक्य काल ।

शासन, राज्यकाल ।

अमली—(सं स्त्री) लक्ष्मी ।
लक्ष्मी ।

अमली—(वि) कार्याकर्त्री ।

अमल या कार्य रूपमें

[सं पुं] मनाशी, मगनी, निचाहवा
नशेबाज ।

अमा—(सं स्त्री) छन्द बोल
कलाव प्रधान कला, धब,
मर्तुलोक ।

अमावस्या की कला, घर,
मर्त्यलोक ।

अमात्य—(सं पुं) अमात्य, मंत्री,
मन्त्रि ।

मंत्री, वजीर ।

अमान—[सं पुं] अथ-भाखि,
आश्रय ।

सुख शान्ति, आश्रय ।

अमानत—(सं स्त्री) वद्धक, वद्धकी
वद्ध ।

अपनी वस्तु दूसरे के पास
कुछ काल तक रखना, दूसरे के
पास रखी हुई वस्तु ।

अमानी—(वि) निवशकाव ।

अहंकार रहित ।

(सं स्त्री) चक्कावर अवीनउ थका
माछि, मग्य कम होरा काबल
दिवा थाकना-बेशाई, दिन
शाखिवा काम ।

सरकारी खास जमीन, लगान
की वह वसूली जिसमें
फसल के विचार से रियायत
हो, दैनिक मजदूरी का काम ।

अमावट—(सं स्त्री) पका आमब
बग सुकाई करा पिठा ।

आमके सुखाये रसकी परत या
तह ।

अमिट—[वि] मछिब नोवावा,
ह्वायी, अवच्छावी ।

जो न मिटे, स्थायी, अवश्य-
म्भावो ।

अमीर—[सं पुं] बिबवा, चक्काव,
छक्की, धनी, उपाव ।

सरदार, धनी व्यक्ति, उदार ।

अमूलक—(वि) निर्मूल, अमूलक, डिडिहीन ।

निर्मूल, मिथ्या ।

अमृत—(सं पुं) अमृत, याक बाले मरण नश्य, पानी, बिट्टे, बर गोब्राद बद्ध ।

बहु वस्तु जिसे पीने से जीव अमर हो जाता है, जल, घी, मीठी और स्वादिष्ट वस्तु ।

अमेय—(वि) अजीम, अट्टेय ।

असीम, अज्ञेय ।

अमोघ—(वि) अतोष, अवार्थ निष्फल नोहोरा ।

निष्फल न होने वाला, अव्यर्थ ।

अम्ल—[सं पुं] टेडा ।

खटाई, तेजाब ।

अम्लान—(वि) अग्नान, विवर्ण नोहोरा, निक ।

जो उदास न हो, निर्मल ।

अयन—[सं पुं] गति, चलन, श्रृंखला आरु छत्र उड्डर आरु दक्षिण कालटेन घोरा गति, आश्रय, श्रान, बर, काल ।

गति, चाल, सूर्य और चन्द्रमा की उत्तर और दक्षिण गति ।

आश्रम, स्थान, घर, काल, गाय-भैंस के घन का ऊपरी भाग ।

अयस्कान्त—(सं पुं) दूषक पाथेव चुम्बक ।

अयाल—[सं पुं] घोवा, गिःह आदिब काष्ठव छुलि, केनर ।

बोहे और सिंह आदि की गरदन के लम्बे बाल, केसर ।

अरक, — [सं पुं] कोनो वड्डव बगडांग, बाय ।

किसी वस्तु का रस तत्त्व । रस, पसीना ।

अरकाटी—(सं पुं) बड्डवा, बड्डवा बल्लोवड्ड कवि पठिड्डवा ठिकादाव मजदूर, कुली भेजने वाला ठीकेदार ।

अरगजा—(सं पुं) चमन ।

एक सुगन्धित द्रव्य ।

अरज, अर्ज—(सं स्त्री) निवेदन, पुतल ।

विनय, चौड़ाई ।

अरजी, अर्जी—(सं स्त्री) आवेदन पत्र, पत्रवाख, प्रार्थी ।

आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र । प्रार्थी ।

अरणी—(सं स्त्री) एविश गरु कौशेटीश पदव आडीश गड्ड ।

श्रृंखला । यज्जव कावणे छुई

डुमिरावले नवा एविश काठव यड्ड, टिड्डिबि काठ ।

एक प्रकार का वृक्ष, सूर्य,
काठ का एक यंत्र-जिससे वृक्ष
के लिये अग्नि निकालते थे ।

अरथी—(सं स्त्री) चाबू, बजा
मातृश कटिगाई निगा बाँधव
चाँडी ।

शाबाधार ।

अरहली—(सं स्त्री) श्रवरी,
अधिकारियों के साथ या उनके
दरवाजे पर रहने वाला अपराधी ।

अरना—(सं पुं) बनरौया मँह ।
जंगली भैंसा ।

अरब—[सं पुं] एक न कोटि,
बौंवा, ईज्र, आबव देश ।
सौ करोड़, घोड़ा, इन्द्र, अरब
देश ।

अरमान—(सं पुं) नानगा, ईष्ठा,
बागना ।

लालसा, चाह, वासना ।

अरविन्द—(सं पुं) नीला वा बड़ा
पद्म, गावः पक्षी, बिलू ।
कमल, सारस ।

अरसना-परसना—(क्रि. स)
आलिङ्गन कना ।
आलिङ्गन करना ।

अरसा—[सं पुं] मन्त्र, पल्लव ।
समय, काक, देर ।

अराजक—(वि) बजा नोहोरा वा
गोपाटिला शासन ।

जिसमें राजा वा शासन न हो ।

(सं पुं) बजा नाईवा
शासनक अड्डा निदिगा, उपद्रव
अनाखिब काल ।

जो राज्य या शासन का प्रभुत्व न
मानता हो । जो उपद्रव आदि
के द्वारा शासन व्यवस्था तोड़ता
हो । (अं०—अनाकिष्ट)

अराक—(वि) कूटिल, वैका ।
टेढ़ा, बक्र ।

(सं पुं) मूबव ठूलि ।
सिर के बाल ।

अरि—[सं पुं] अवि, शत्रु, अति-
बन्धी, चक्र, काम-क्रोध आदि,
ह्य गन्था ।

शत्रु, चक्र, चक्र, काम, क्रोध
आदि । अह की संख्या ।

अरिष्ट—[सं पुं] शत्रु-कष्ट, आपत्ति,
शुर्भाग्य, अनखल, हृष्ट अहव
योग, एविष मदा, भूविकल्प
आदि दुःप्राप्त

दुःख, कष्ट, आपत्ति, दुर्भाग्य,
अपराध, दुष्ट ग्रहों का मरण
कारक योग । एक प्रकार का
वृक्ष। मूक्य आदि अविष्ट उत्पात ।

अंकुषिमा—(सं स्त्री) नागिनी,
बछी वर्ण ।

लाली, लाल वर्ण ।

अरे—(अव्य) अं वा निम्ना कवि
माश्रयक यथा मात, आश्रया-
वोधक अक्ष ।

सम्बोधन का शब्द, आश्चर्य
बोधक ।

अर्क—[सं पुं] सूर्य, ऐश्वर्य, धान,
बिस्म, आरक, आकन, बार गंधा,
वस्त्र वग ।

सूर्य, इन्द्र, तांबा, विष्णु, आक,
बारह की संख्या । किसी वस्तु
का रस तत्त्व ।

अर्गला—(सं स्त्री) श्वाव-नाः, हाथी
बछा निकलिन, गुवा गंधुलिन
नाना वर्ण वेष, मांस ।

अगरी, व्योढा, किवाड़, अवरोध,
कल्लोल, प्रातः संध्या के रंग बिरंगे
बादल, मांस ।

अर्घ—(सं पुं) अर्घ्य, देवताटोल
जल अर्पण, दातव्यता पानी,
मुद्रा ।

एक पूजा-द्रव्य । देवता के सामने
जल गिराना, हाथ धोने का जल ।
मूल्य, वस्तु की उपयोगिता सूचक
तत्त्व । (अं०—वैद्यु)

अर्घ-पसन—(सं पुं) वृत्त-दाग ।

भाव का गिरना (अं-डेप्रिस्सिबेसन)

अर्चन—(सं पुं) पूजा, सेवा-गणकार ।
पूजा, आदर सत्कार ।

अर्जन—(सं पुं) उपार्जन,
गणेश ।

कमाना, संग्रह ।

अर्जित—(वि) उपार्जित,
गणेशीत ।

कमाया हुआ, संगृहीत ।

अर्थ—(सं पुं) अर्थ, मतलब, अतिप्राय,
नक्षत्रगत अतिप्राय, हेतु, वन-
गणपति, ठेका-पत्रिका ।

मतलब, माने । वह अभिप्राय जो
किसी शब्द से निकलता है ।
हेतु, वन सम्पत्ति, दौलत ।

अर्थ-विधि—(सं पुं) ठबकाव
ठबकाव पंवा जनताव अधिकार
वकाव कावण कवा आह्वन ।
वह विधि या कानून जो राज्य
की ओर से जनता के अधिकारों
की रक्षा के लिये बनाया गया
हो । (अं-सिविल ला)

अर्थ-शास्त्र—(सं पुं) वन विज्ञान,
व'त गणगावळ छलिवव उपार्जन
कथा निधा आह्व ।

वह शास्त्र जिसमें अर्थ या वन

सम्पत्ति की उत्पत्ति, उपयोग, विनिमय और वितरण का विवेचन होता है। राज्य के प्रबन्ध, वृद्धि आदि की विद्या। (अं-इकाना-मिक्स)

अर्धन—(सं पुं) पीड़ा, योधा, धोखा।

पीड़न, हिंसा, जाना, मांगना।

अर्द्धांग—(सं पुं) आधा अङ्ग, अर्धभागात् बोधः।

आधा अंग, पक्षाघात या लकवा रोग।

अर्द्धाङ्गिनी—(सं स्त्री) अर्द्धाङ्गिनी, गृहविनी, भार्या।

स्त्री, पत्नी।

अर्पण—(सं पुं) अर्पण, मोवाइ बा गठाइ दिश, उपहार।

देना, दान, भेंट, उपहार।

अर्मक—(वि) गरु, मुख, कौन।

छोटा, मूल, दुबला-पतला।

(सं पुं) नर्वा।

बालक।

अर्चमा—[सं पुं] गन्तव्य गन्तव्य करे वि, श्रव्य।

सूर्य।

अर्वाचीन—[वि] आधुनिक।

आधुनिक।

अलंकार—(सं पुं) अलंकार, आलंकार, भाषा शून्यता कविवर निम्न वा उपान्त, नायिकाव लोचनी-वर्धनकारी भाव-उत्थी।

आभूषण, साहित्य में वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आती है। नायिका के सौन्दर्य बढ़ाने वाले हाव भाव।

अलङ्क—(सं स्त्री) कणामत उल्लिखित छुनि, कैकोवा छुनि।

इधर उधर लटकते हुए सिर के बाल। केश, झल्लेदार बाल।

अलङ्क—(क)—[सं पुं] आलङ्क। अलङ्क, जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं।

अलङ्क—(सं पुं) नन्दन, अदृष्ट, अगोचर।

जो दिखाई न पड़े। अगोचर।

अलङ्ग—(वि) वेलेग, पृथक्, भिन्न।

जुदा, पृथक्, भिन्न।

अलङ्गनी—(सं स्त्री) डाव (कागोव आदि रेजि दिश बा धोवाव कारणे)

कपड़े टाँगने के लिये घर में बंधी रस्ती या बाँस।

अल-गरजो—(वि) शायी, अगारधान ।
स्वार्थी, लापरवाह ।

अलगाव—(सं पुं) पार्थक्य, बेलग
होरा। डार ।

पार्थक्य, अलग होनेका भाव ।

अलबत्ता—[अव्य] निश्चय, निःस-
न्देह, किन्तु ।

निस्संदेह, बहुत ठीक, लेकिन ।

अलबेला—(वि) गंङ्गि-काचि,
विचित्र, अलभ, निज ईच्छामते
करा काय ।

बना ठना, छैला, अनोखा, सुन्दर,
बेपरवाह ।

अलमस्त—[वि] मत्तलीश, उग्रउ,
बाहुल, अनिश्चित ।

मतवाला, निश्चित, बेफिक ।

अलसाना—(क्रि अ) एलाह वा
शिथिलता अशुभर कबा ।

शिथिलता अनुभव करना ।

अलहदा—(वि) बेमेग ।
अलग ।

अलहदी—(वि) एमेगदा ।
आलसी ।

अल्लास—[सं पुं] छूहे नागि धका
धवि ।

अलती हुई लकड़ी ।

अल्लान—[सं पुं] हाती बहा धूँटा
वा शिकनि, बहान ।

हाथी बाँधने का लूँटा या
सिक्कड़ । बन्धन ।

अल्लापना—(क्रि अ) कथा कै धका ।
बोलना ।

अल्लाव—(सं पुं) हात डवि गेकि-
बले चलोरा छूँट ।

तापने के लिये जलायी हुई
आग ।

अल्लावा—(क्रि वि) उपवि, बाशिरे ।
अतिरिक्त, सिवा ।

अल्लि—[सं पुं] डोनोबा, कुमि-
चबाई, बिहा ।

भोरा, कोयल, बिच्छू ।

अल्लोक—(वि) मिहा, यलोक,
अगार ।

मिथ्या, सारहीन ।

अल्लोना—(वि) लोण हीन ।
जिहमें नमक न पड़ा हो ।

अलहद—(वि) अगारधान, अल्लाचाबी
बेपरवाह, उदत ।

अवकाश—(सं पुं) बागी ठाई,
आकाश, अरगव गमय । आशवि,
विश्राम ।

आली अवह, आकाश, दूरी ।

अवकाश प्रहस्य—(सं पुं)—अवगन एवय ।

नीकरी या कार्य छोड़कर अलग होना ।

अवगत—(वि) अवगत, विदित, वृक्ष पोषा ।

विदित, नीचे गिरा हुआ ।

अवगाह—(वि) वर न, कठिन, टान. बहुत सहारा. कठिन ।

(सं पुं) पानीत नाभि गा धोवा कार्या । जल में उतर कर स्नान ।

अवगोहन—(सं पुं) पानीत गा धुबिशाई धोवा कार्या । स्नान ।

अवगुंठन—(सं पुं) षड्विंशति ।

बूँट, टुकड़ा ।

अवगुण—[सं पुं] बूँट, वेष्टागुण, पोष, कृति ।

दुर्गुण, दोष, बुराई ।

अवघट—[वि] दुर्गम, कठिन दुर्गम, मुश्किल ।

अवचेतन—[वि] आश्रित चेतनावृत्त, अवचेतन ।

जिसमें पूरी चेतना न हो ।

अवज्ञा—[सं स्त्री] अवज्ञा, अज्ञान, उलझा ।

किसी के प्रति उचित मान या आदर का अभाव ।

अवहार—[वि] बिना कारण अंगत वा अनुबद्ध हर्षता ।

अकारण प्रसन्न या अनुरक्त होने वाला ।

अवतंस—(सं पुं) अलङ्कार, मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति ।

भूषण, मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति ।

अवतरण—[सं पुं] नाभि अहा कार्या, पाव होवा कार्या, उद्भूति ।

उतरना, पार होना, उद्घरण ।

अवतरित—(वि) अवतारी, उद्भूत, उल्लिखित ।

जिसने अवतार धारण किया हो । उद्भूत ।

अवतार—(सं पुं) आशुर्भाव, अवबोधन ।

उतरना, शरीर धारण करना ।

अवदात—(वि) उज्ज्वल, निर्मल ।

उज्ज्वल, निर्मल ।

अवदान—(सं पुं) डाल काव, श्रुत, शक्ति, बबुल ।

अच्छा काम । संतन, शक्ति, देन ।

अवधान—(सं पुं) मनोव्यापकत्व ज्ञान ।

मनोयोग, देखरेख ।

अवधारण—(सं पुं) निर्धारण ।
अच्छी तरह विचार कर निर्णय करना ।

अवधि—(सं स्त्री) गीमा, मियाद, याद ।

सीमा, मियाद, काल ।

अवधूत—(सं पुं) गंगाव-गंगाशूल
लोक, गंगागौ ।

संन्यासी, योगी ।

अवनत—(वि) चापवा, पतित, नम्र ।

झुका हुआ, पतित, कम, नम्र ।

अवनति—(सं स्त्री) झग, अधो-
गति, नम्रता ।

घटती, हीन दशा, नम्रता ।

अवयव—(सं पुं) अंश, नवीन-
अङ्ग ।

अंश, शरीर का अंग ।

अवर—(वि) अलप तल शीघ्र, निकटे ।
कुछ नीचा या छोटा, अधम,
अन्य, और ।

अवरुद्ध—(वि) आवरु, वेदि बंधा ।
रुका हुआ, बन्द किया हुआ,
गुप्त ।

अवरोध—(सं पुं) बाधा, परिवे-
धन ।

बेरा, रुकावट, निरोध ।

अवलंबन—(सं पुं) आश्रय,
आधार ।

आश्रय, धारण ।

अवलोकन—(सं पुं) निरीक्षण,
अवलोकन ।

अच्छी तरह जांच पड़ताल के
लिये देखना ।

अवशेष—[वि] बाकी ।

बचा हुआ, समाप्त ।

अवश्यंभावी—(वि) अनिवार्य ।
अवश्य होनेवाला, अनिवार्य ।

अवश्य—(क्रि वि) निश्चय ।

जरूर ।

अवसन्न—(वि) विवाद अन्त ।

दुःखी, सुस्त ।

अवसर—[सं पुं] समय, अवसर ।
समय, सुयोग ।

अवसाद—[सं पुं] विवाद, भागव ।
विवाद, थकावट ।

अवसान—(सं पुं) विवाह, समाधि,
श्रद्धा ।

विराम, समाधि, मृत्यु ।

अवस्थान—(सं पुं) स्थिति ।
स्थान, ठहराव, स्थिति ।

अवहेलना—[सं स्त्री] अवहेलना ।
अवज्ञा, बे-परवाही ।

अव्ययसहित—[वि] अनार्थ ।

उपेक्षित ।

अव्ययंतर—[वि] यथावर्त ।

किसी के बीच में या अन्तर्गत होनेवाला ।

अविकारी—(वि) अपरिवर्तनशील जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो ।

अविचल—[वि] स्थिर ।

अचल ।

अविनय—[सं पुं] उद्धृत भाव । उद्धृता ।

अविनश्वर—(वि) अविनाशी । निरस्थायी ।

अविनाशी—(वि) अक्षय । जिसका नाश न हो ।

अविलम्ब—(कि वि) शीघ्र । तुरंत ।

अवेक्षा—[सं स्त्री] अज्ञान । जांच पड़ताल ।

अवेद्य—(वि) आदिन विरुद्ध । कानून या नियम विरुद्ध ।

अव्ययसहित—(वि) अव्ययसहित, विज्ञ । अनिर्वचनीय, अप्रत्यक्ष, विष्णु ।

अव्ययसहित—[वि] हर्ष ।

निर्वच, अव्ययसहित ।

अव्ययसहित—(वि) अनाथ ।

अनाथ ।

अशौच—[सं पुं] निम्न वा वंश परिवारगत गङ्गान उपजिले वा कोनोवा बिले पूजा लगी । अपवित्रता, अनुद्धता ।

अश्म—[सं पुं] पौषाव, गेव । पन्नाड, पत्थर, बादल ।

अश्रु—(सं पुं) छत्र-लो । आंसू ।

अश्व—[सं पुं] घोड़ा । घोडा ।

अश्वत्थ—[सं पुं] आहत गच्छ । पीपल ।

अश्वमेध—(सं पुं) घोड़ा बलि दिया यज्ञ ।

एक प्रकार का यज्ञ, जिसमें घोड़े की बलि दी जाती है ।

अश्वारोही—(वि) घोड़ा आरोही । घोड़े का सवार ।

अष्ट—(वि) आठ । आठ ।

अष्टांग—(सं पुं) शरीर आठ अङ्ग (दूई हात, दूई उर, दूई आँत्र, दूई आक कपाज) योग्य आठ विष निम्न ।

योग, आयुर्वेद आदि के आठ भाग
या अंग । शरीरके आठ अंग ।
असंग—(वि) अकलनवीया, कू-गङ्गा ।
अकेला, अलग, विरक्त ।
असंगत—(वि) युक्तिविरुद्ध ।
बे-ठीक, अनुचित, बे-मेल ।
असंदिग्ध—[वि] गणेश-शैल ।
जिसमें कोई सन्देह न हो ।
असंबद्ध—(वि) बेजलग ।
पृथक, बे-मेल ।
असबाब—[सं पुं] गाम्भी ।
सामग्री, सामान ।
असमंजस—(सं स्त्री) दोषाबाध-
नोब ।
द्विधा, अङ्गुली ।
असर—(सं पुं) अश्रु ।
प्रभाव ।
असल—[वि] पाठन ।
सच्चा, शुद्ध ।
असंशयित—[सं स्त्री] गङ्गा ।
वास्तविकता, तथ्य ।
अस्तु—(अव्य) अस्तु ।
चाहे जो हो । सैर ।
अस्तेय—(सं पुं) चोरा-कर्म-
जाग ।
चोरी न करना ।

अस्त्र—(सं पुं) कटा-छिडा, काट-बन
करा गङ्गुली वा यज्ञ, अस्त्र । काँड़,
बन्दूक आदि ।
जो हथियार शत्रु पर फेंक कर
चलाया जाता हो—जैसे बाण,
शक्ति, बन्दूक आदि ।
अस्त्रचिकित्सा—(सं स्त्री) व्याधि
काटि रोग छुटारा चिकि-
त्सा । अस्त्रापाठन ।
चोड़ फाड़ की चिकित्सा ।
अस्थि—(सं स्त्री) हाड ।
हड्डी ।
अम्पताल—(सं पुं) डाक्टराणां ।
चिकित्सालय, दवाखाना ।
अस्पृश्य—(वि) अशुचि ।
जिसे छूना नहीं चाहिये, अछूत ।
अस्वस्थ—(वि) अशुभ ।
रोगी, अनमना ।
अस्वीकार—(सं पुं) आगे-मडा;
निष्ठा नुति कोरा, अस्वीकार ।
इनकार ।
अहं—(सर्व) मैं । मैं ।
(सं पुं) मैं सब ठाव । अभिमान ।
अहंकार—(सं पुं) मैं सब ठाव ।
गर्व, अभिमान ।
अह—(सं पुं) भिन ।
भिन, सुँ ।

अहदी—(वि) अटमहवा ।
जालसी ।

अहरह—(क्रि वि) गप्ताय ।
प्रतिदिन, निरन्तर ।

अहता—[सं पुं] ठाविगीया ।
घेरा, चहारदीवारी ।

अहि—(सं पुं) गौ, गुर्या ।
साँप, सूर्य ।

अहिस—(सं पुं) अपकार ।
अपकार, शत्रु ।

अहिवास—(सं पुं) नाबीर जोडागा,
गश्वा । स्त्री का सौभाग्य, सोहाग ।

अहेर—[सं पुं] ठिकाव ।
शिकार, शिकार का जन्तु ।

अहोरात्र—[सं पुं] दिन-राति ।
दिन रात ।

अहोरिन—(सं स्त्री) एविश चबाई ।
एक प्रकार की चिड़िया ।

आ

आ—यव वर्णव चित्तीय आश्व ।
अणं माला का दूसरा अक्षर ।

आँक—(सं पुं) अक, गश्वाव चिन
अं, बेधा ।
अंक, संख्या का चिह्न, अंस,
रेखा ।

आँकड़ा—(सं पुं) गश्वाव चिन ।
संख्या का चिह्न ।

आँकड़े—(सं पुं) गश्वा आक
आन-आन आनि गश्वाव उधा-
वनी । अविगश्वा ।
किसी विषय या विमान की

स्थिति को सूचित करने वाली
संख्या या हिसाब । परिसंख्या
[अं—स्टेटिस्टिक्स]

आँकना—(क्रि सं) अंका, बोध-
करा, अनुमान करा ।
अंकन करना, जोड़ लगाना,
अनुमान करना ।

आँख—(सं स्त्री) चक्षु,
नेत्र, नयन, दृष्टि ।

—का कौटा = अक, बुद्धि ।

—की पुतली = अति नयन, परम
प्रिय ।

—का सारा=अथात्र शिथ, बहुत
प्यारा ।

—दिखाना=क्रोध मुखवि छाया,
क्रोध से देखना ।

—फेरना=रुपा दृष्टि हेरुवा,
कृपा या स्नेह दृष्टि न रखना ।

—लगना=टोपनि आशिव रवा,
धैर्य डार उपचा, नींद आना,
प्रेम होना ।

—लड़ना=पेक्षापेक्षि होवा, देखा-
देखी होना ।

आँख मिचौनी—(सं स्त्री) नुका-
डाकू ।
लड़कों का एक खेल ।

आँगन—(सं पुं) छाताल । घर
के सामने की खुली जगह, सहन ।

आँच—(वि) ताप, झूठे मित्र ।
गरमी । आग की लौ ।

आँचल, आँचर—(सं पुं) आँचल,
आगभांग ।
पल्ला, छोर ।

आँजन—(सं पुं) काजल ।
आँख में लगाने का सुरमा ।

आँजना—(क्रि स) काजल गना ।
आँख में अँजन लगाना ।

आँटी—[सं स्त्री] कोटा, बाँहव गक
आँटि, आँटाव लेवा, आँडि ।

बास का छोटा पुका । सूत का
लच्छा, बोती की टेंट ।

आँस—(सं स्त्री) नाड़ी ।
अंश ।

आँधी—(सं स्त्री) धुन्ध ।
अंधड़, तूफान ।

आँव—(सं पुं) गाँठ ।
पेचि का सफेद लस्सादार मल ।

आँवला—(सं पु) आनबी ।
आमलक फल ।

आँवाँ—(सं पुं) गाँठि पात्र
पोवा कूमाव ग्रीठ ।
वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी
के बरतन पकाते हैं ।

आँसू—(सं पुं) चक्रेला ।
आँखों से भरनेवाला पानी ।

—पोंछना=गाँवना मित्र ।
सांत्वना देना ।

आइन्दा—(क्रि वि) भविष्यते ।
भविष्य में ।

आकर—[सं पुं] शनि ।
खान, लजाना, प्रकार ।

आकलन—(सं पुं) अहण, गकव,
गणना ।

ग्रहण, संग्रह । गिनती करना ।

आकुल—[वि] आकुल, काठव
अव्य, बिह्वल ।

आक्षेप—(सं पुं) निष्केप, अग-
होष ।

फँकना, दोष लगाना, कटु उक्ति ।

आखिर—(वि) শেষ, पविनाश ।
अन्तिम, परिणाम, अन्त में ।

आखिरी—[वि] एकेवाक्ये শেষ ।
विलकुल अन्त का ।

आखेट—(सं पुं) ठिकार ।
शिकार ।

आख्यान—(सं पुं) वर्णना,
काहिनी ।
वर्णन, कथा ।

आख्यायिका—(सं स्त्री) काहिनी ।
कथा ।

आग—(सं स्त्री) झूह, जेह ।
अग्नि, ईर्ष्या ।
[वि] अजलित । जलता हुआ ।

आगम—(सं पुं) आगमन, भवि-
ष्यत्काल, वेद ।
आगमन, भविष्यत् काल,
वेदशास्त्र ।

आगम जानी—(वि) गववजान ।
भविष्य जानने वाला ।

आगार—(सं पुं) गमूह, डँबाल, घर,
समूह, सजाना, घर ।
[वि] अँधेरा, छतुर ।
अँधेरा, चतुर ।

आगा—(सं पुं) आग, दूध ।
अग्रभाग, मुँह ।

आगा पीछा—(सं पुं) आग,
छिछा, पविनाश ।
सोचविचार, परिणाम ।

आगामी—(वि) आगे ।
भावी, आनेवाला ।

आगार—(सं पुं) घर ।
घर, सजाना ।

आगे—(क्रि वि) गमूह, उ-
भविष्यत्, भविष्यत् ।
सामने, भविष्यमें, बादमें ।

आग्रह—(सं पुं) देप्राह ।
अनुरोध, जिद, जोर ।

आग्रही—(वि) उद्देगगी ।
आग्रह करनेवाला, जिद्दी ।

आचमन—(सं पुं) छुटि शव-
उद्देश्ये गच्छा पूजा आदि-
आगते शत दूध बोला कार्य ।
पूजाके समय मंत्रपूत जल पीना

आचरण—(सं पुं) व्यवहार ।
कोई कार्य करना, व्यवहार ।

आचार—(सं पुं) नियम-नीति
चाल चलन, चरित्र ।

आज—[क्रि वि] आजि ।
वर्तमान दिनमें ।

आजकल—[क्रि वि] आज कालि ।

इस समय वर्तमान दिनों में

आजमाइश—(सं स्त्री) परीक्षा ।
परीक्षा ।

आजमाना—(क्रि सं) परीक्षा
लोवा ।

परीक्षा करना ।

आजाद—(वि) आशिय ।
स्वतंत्र ।

आजादी—[सं स्त्री] आशियता
स्वतंत्रता ।

आज्ञा-पत्र—[सं पुं] आदेश पत्र
बहु पत्र जिसमें कोई आज्ञा
लिखी हो ।

आइ—[सं स्त्री] आँव, ढलू, ढल
ओट, आवरण, रक्षा, सहारा,
स्त्रियों के सिरपर का गहना ।

आइना—(क्रि स) बाँधा दिवा,
रोकना, मना करना ।

आइत—(सं स्त्री) पालाजी
माल की बिक्री कराने के एवज
में मिलनेवाला कमीशन ।

आतंक—(सं पुं) डर ।
रोब, भय ।

आसप—(सं पुं) बँध ।
धूप, गर्मी ।

आत्मज—[सं पुं] पुत्र, कामदेव
पुत्र, कामदेव ।

आत्मा—(सं स्त्री) जर्ब्यागी,
ढेठना, जीवात्मा, पबमात्मा
जीवात्मा, मन, हृदय ।

आत्मिक—(वि) आत्मा संबंधी
आत्मा संबंधी ।

आदत—(सं स्त्री) अड्डाग ।
स्वभाव ।

आदर—(सं पुं) भलाग, गडायन
सम्मान, प्रतिष्ठा ।

आदान-प्रदान—(सं पुं) लेन-देन
लेन-देन ।

आदाय—(वि) गाँधि उल्लिखित ।
प्राप्त ।

आदि—(वि) प्रथम, श्रुति ।
प्रथम, बिल्कुल ।
[अव्य] इत्यादि बगैरह ।

आदिवासी—(सं पुं) आदिम
अदिवासी ।

आदिम निवासी ।

आइ—(वि) अड्डा ।
अभ्यस्त ।

आधि—(सं स्त्री) मनव कष्ट, बहान ।
मानसिक रोग या चिन्ता
बन्धन ।

प्राप्त—(सं स्त्री) वर्षाणा, पण्ड ।

मर्यादा, शपथ ।

प्राप्त—(सं पुं) युध ।

युद्ध ।

प्राप्त-प्राप्त—[सं स्त्री] वयक-वयक ।

सज्जज, अंगभंगी ।

प्राप्त—[सं पुं] टकाव पूर्वनि

शिष्टाप नदे एटकाव बोल भागव
एडाग ।

रूपये का सोलहवाँ हिस्सा ।

[क्रि अ.] अश ।

आगमन करना ।

प्राप्तकानी—(सं स्त्री) आउकाण ।

न ध्यान देने का कार्य, टाल
मटोल ।

प्राप्त—[सर्व] आपुनि, निज ।

स्वयं । तुम और वे के आदरार्थक
प्रयोग ।

प्राप्त-प्राप्त—(सं पुं) शार्ध ।

स्वार्थ ।

प्राप्तकाल—(सं पुं) विपत्ति ।

विपत्ति, दुःसमय ।

प्राप्त—[सं स्त्री] आलौकिक ।

दुःख, इतराज ।

प्राप्त—[सं स्त्री] श्रुत, विपत्ति ।

दुःख, विपत्ति ।

प्राप्त—(सं पुं) इतिव कावण

गावणमता ।

आपत्काल के लिये किया कर्म ।

प्राप्त—(सं पुं) पवणव ।

माईचारा, परस्पर ।

प्राप्त—(सं पुं) अहङ्कार ।

अपनी सत्ता, अहङ्कार ।

प्राप्त—(सं पुं) पतन, आवृत्त,

आकस्मिक घटना ।

पतन, आरंभ, अकस्मात् उपस्थित
घटना या कार्य । [अं.-

इमर्जेन्सी]

प्राप्त-प्राप्त—[सं स्त्री] निज

शार्धव अति टना-आलौकिक ।

खीचा-तानी, अपने अपने स्वार्थ
की चिन्ता ।

प्राप्त—[वि] निर्भवनीय,

अपेक्षाकृत ।

सापेक्ष, अपेक्षा रखने वाला ।

प्राप्त—[वि] दक्ष,

प्राप्त कुशल [सं पुं] शक्ति ।

शक्ति, शब्द प्रमाण ।

प्राप्त—[सं स्त्री] विपत्ति

विपत्ति, कष्ट ।

प्राप्त—[सं स्त्री] चिकित्सिक,

शोभा ।

चमक, शोभा ।

आवकारी—[सं स्त्री] आवकारी
विभाग, यदव डाँटि ।
मावक वस्तुओं से सम्बन्ध रखने
वाला सरकारी विभाग । शराब
खाना ।

आव-दाना—[सं पुं] दाना-पानी,
जीविका ।
दाना पानी, जीविका ।

आव-दार—[वि] ज़रमकीया ।
चमकीला ।

आवनूस—[सं पुं] एविक्ष गछ ।
आवनूग काँठ
एक प्रकार का पेड़ जिसकी
लकड़ी बिलकुल काली होती है ।

आवरू—[सं स्त्री] आरुव ।
इज्जत, प्रतिष्ठा ।

आव हवा—(सं स्त्री) जल-वायु
जलवायु ।

आवाह—(वि) जन वगति थका, गाव्हा
बसा हुआ, उपजाऊ ।

आवादी—[सं स्त्री] गाँव, जनगणना,
रुग्णित गाँव ।
बस्ती, जनसंख्या, खेती लायक
जमीन ।

आवरण—[सं पुं] अनरकाव,
कानि-कागोव । उवन-गोवव ।
कहना, पालन-पोषण ।

आवा—(सं स्त्री) केवडि
चमक, भलक, हल्की वा ~~आवा~~
छाया [अ—वेड]

आभार—[सं पुं] कूडकूज
बोझ, एहसान, कृतज्ञता ।

आभारी—(वि) कूडकूज ।
उपकृत, कृतज्ञ ।

आभास—[सं पुं] इकिठ, गकड,
प्रतिबिम्ब, सकेत, मिथ्या ज्ञान ।

आभूषण—(सं पुं) अनरकाव ।
गहना ।

आभयन्तर—(वि) डिडव्हा ।
अन्दर का ।

आमद—(सं स्त्री) याय, अहा ।
आना, आय ।

आमदनो—(सं स्त्री) याय, वेदा-
वेगोवत आनदेशन पङ्क वड
अना कार्य ।
आय, आयात ।

आमना-सामना—(सं पुं) गूव-
गूवि, गाकाप ।
मुकाबला, भेंट ।

आमने-सामने—[कि वि] कूवरीन,
गदूथिंक ।
एक दूसरे के मुकाबले में ।

आयुध—(सं पुं) पाठनि ।

पुस्तक के आरंभ में दी जाने वाली भूमिका या प्रस्तावना ।

आनोद—(सं पुं) वः-क्षयानि ।

आनन्द, मन बहलाव ।

आयत—(वि) बहन, अंगत क्ख (ध्याति) ।

विस्तृत, चारो कोण समान वाला क्षेत्र ।

[सं पुं] कोबाण वा ईछिलव कौन वाक्य वा प्लोक ।

कुरान या इंजिल का कोई वाक्य ।

आयात—[सं पुं] बेहा-बेपावब कावण विदेशन पवा नगाई अना वस्तु, आनयानि ।

व्यापार के लिये विदेश से मंगायी गया माल [अं—इम्पोर्ट]

आयाम—[सं पुं] नैर्घता, निय-नाङ्गवृद्धिता ।

लम्बाई, नियमन ।

आयास—[सं पुं] छेटी, अथ ।

परिश्रम ।

आयुक्त—(वि) आयुक्त, कविचनाव,

कोनो आयोगनर अध्यापक ।

राज्य की अज्ञा से विशेष कार्य

के लिये नियुक्त व्यक्ति ।

[अं—कमिशनर]

आयुध—[सं पुं] अश्व-शस्त्र ।

हथियार ।

आयोग—[सं पुं] कोनो विवा-

दापिब मीनाःगाव कावण चव-

कावब हावा निमुक्त एअन वा

ततोधिक बाक्ति वर्ग । [कमिशन]

राज्य की आज्ञा से किसी

विशेष कार्य के लिये नियुक्त

व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह ।

(कमीशन)

आर—[सं स्त्री] जेद, विहार दःशन ।

जिद, बिच्छू आदि का डंक ।

[सं पुं] पार ।

किनारा

आरक्षक—[वि] शांति निग्रहण

गश्ती ।

पुलिस विभाग से संबंधित ।

आरक्षी—[सं पुं] पुलिस विभाग ।

पुलिस विभाग ।

आर-पार—(सं पुं) इच्छा पार ।

दोनों छोर ।

[क्रि. वि.] इच्छाव पवा

निपावटन ।

एक किनारे से दूसरे किनारे

तक ।

आरा, आरी—[सं पुं] कबड ।
लोहे की वह दाँतीदार पट्टरी
जिससे लकड़ी चीरी जाती है ।

आराम—(सं पुं) विश्राम, नाश्त,
वागिठा ।

विश्राम, चैन, बाग ।

[वि] आरवाग ।

आरोग्य ।

आरुढ़—(वि) आरुढ़ कबा,
दृढ़ ।

चढ़ा हुआ, दृढ़ ।

आरोप—(वि) श्रापित, अधिदेश,
स्थापित करना, अभियोग ।

आरोह—(सं पुं) उन्नत, उठा,
गङ्गाउन्नत, उन्नत, आक्रमण ।

ऊपर की ओर चढ़ना, आक्रमण,
संगीत का ऊँचा स्वर ।

आर्ष—[वि] श्रापित, विवशक ।

श्रापित संबंधी,

आलंब, आलंबन—[सं पुं] आलंब,
अलंब ।

आश्रय, सहारा ।

आलाजाल—(वि) श्रापित, दि गी
एवावब चढ़ी ।

व्यर्थ का ।

आलय—(सं पुं) घर ।

घर ।

आलाप—(सं पुं) कथोपकथन ।
कथोपकथन, तान ।

आली—(सं स्त्री) गरी ।
सखी ।

आलेख—(सं पुं) लेख, लिख-पत्र ।
लिखावट, प्राकृतिक व्यापार तथा
लौकिक व्यवहारों में समय समय
होनेवाले परिवर्तनों का रेखांकित
नक्सा ।—(अं०—ग्राफ)

आलेखक—[वि] लिख करनेवाला ।
समालोचना करनेवाला ।

आव-भाव—(सं स्त्री) आपस
गमन ।

आदर सत्कार ।

आवर्तक—(सं पुं) घूमने का
कार्य ।

निश्चित समय पर होनेवाले
परिवर्तन, चक्र ।

आवागमन—(सं पुं) अश-
वाग ।

आना जाना ।

आवाज—[सं स्त्री] गीत, ध्वनि ।
ध्वनि, बोली ।

आवारा—(वि) अकब ।
निकम्मा, बदमाश ।

आवाहन—[सं पुं] निवहन ।
बुलाना, निमंत्रित करना ।

आवेग—(सं पुं) बाहुल्य ।
चित्त की प्रबल वृत्ति, मनो-
विकार ।

आवेरा—(सं पुं) आवेवे डब-
नूव ऐ थका उल्लेखना ।

जोश, मनकी प्रेरणा, संचार ।

आशय—(सं पुं) अतिशय;
मत्त ।

अभिप्राय, उद्देश्य ।

आशिक—(वि) श्रेयिक ।
प्रेम करनेवाला, आसक्त ।

आसिष, आसीष—(सं स्त्री)
आनीर्षाण ।
आशीर्वाद ।

आशु—(क्रि वि) गीच्छे ।
शीघ्र ।

आशुलोष—(वि) लोभकाले
गच्छे हर्षता, ।
जल्दी प्रसन्न होनेवाला,
(सं पुं) महादेव ।
जिब ।

आश्वत्थ—(सं पुं) गांधना,
आश्विन ।

साधना, दिव्यता ।

आश्वत्थ—(वि) अश्वत्थ ।
अश्वत्थ, बोहिया ।

आसपास—(क्रि वि) आसपास,
आसपास ।

चारों ओर ।

आसमान—(सं पुं) आकाश ।
आकाश ।

आसरा—(सं पुं) आश्रय,
डबना ।

सहारा, भरोसा ।

आसब—(सं पुं) कलब पंवा
अच्छत मत्त ।

फल के रस से बननेवाली मदिरा
या औषधि ।

आसान—(वि) गच्छ, गबल ।
सहज, सरल ।

आसार—(सं पुं) लक्षण ।
लक्षण, चिह्न ।

आसीन—(वि) उपविष्ट, बहि थका ।
बैठा हुआ ।

आस्तीन—(सं स्त्री) टोलाव
शाब्द ।
कमीज की बांह ।

आसूट—(सं स्त्री) उद्विग्न मत्त ।
आने का शब्द, अव्ययि ।

आदिवा—(क्रि वि) आदिवा-
आदिवा ।
बोरे बोरे ।

इ

इ—यव वर्ण एडोइ आक्षर ।
 वर्णमाला का तीसरा स्वर ।
 इंगला—[सं स्त्री] इड़ा नाड़ी
 (इठवोग)
 इड़ा नामकी नाड़ी ।
 इंतजाम—[सं पुं] बन्नावल ।
 प्रबंध, व्यवस्था ।
 इंदिरा—[सं स्त्री] लक्ष्मी ।
 लक्ष्मी ।
 इन्दीवर—[सं पुं] नीला गह्वर
 नील कमल ।
 इंदु—[सं पुं] छत्र ।
 चन्द्रमा ।
 इंद्रजात—(सं पुं) डोलकी ।
 जादू विद्या ।
 इंद्र धनुष—(सं पुं) बान-रथ ।
 आकाश में दिखाई देनेवाला
 सात रंग का अर्धवृत्त ।
 इकट्ठा—(वि) एकजिंत ।
 एकत्र, जमा ।
 इकबाल—(सं पुं) अताल,
 बीनस ।
 प्रताप, वीरता ।
 इक्षर—(सं पुं) अधिकारी ।
 अधिकार, काम करने का अधिकार ।

इक्ष्वाकीस—(वि) एकलक्षिक ।
 इक्ष्मीस—(वि) एकजिन ।
 इक्ष्मीता—(वि) एकमात्र ।
 एक मात्र ।
 इक्ष्मि—(वि) एवाडि ।
 इक्ष्मि—(वि) एगडन ।
 इक्ष्मि—(वि) एकानटन ।
 इक्ष्मि—(वि) एवम-इक्षन ।
 नक्षत्र, दुर्गम ।
 इक्ष्मी—(वि) एवम ।
 इक्ष्मी—(वि) एकावन ।
 इक्ष्मी—(वि) एकानै ।
 इक्ष्मी—(सं पुं) अधिकार,
 अधिकार ।
 अधिकार, प्रमुख ।
 इक्ष्मी—(सं पुं) अधिकार, अधिकार ।
 अधिकार या अधिकार करना, काममें
 लावा ।
 इक्ष्मी—(सं पुं) अधिकार,
 अधिकार, अधिकार ।
 अधिकार, अधिकार ।
 इक्ष्मी—(सं पुं) अधिकार,
 अधिकार ।
 अधिकार, अधिकार ।

इकाजत—(सं स्त्री) आत्मन,
अव्यय ।

आज्ञा, स्वीकृति ।

इजाफा—(सं पुं) इफि, बढावा ।
बुद्धि ।

इजारा—(सं पुं) ठिका, अधिकार ।
ठेका, अधिकार ।

इज्जत—(सं स्त्री) मान, मर्यादा ।
मान-मर्यादा ।

इठकाना, इतराना—[कि अ] गप मवा ।
बमंड करना ।

इतना—(वि) इमान ।

इस मात्रा का ।

इतमीनान—[सं पुं] गढाव ।
सन्तोष ।

इत्तफाक—(सं पुं) निमन, भागा-
जटन ।

मेल, संयोग ।

इत्ताजा, इत्तिहा—(सं स्त्री)—
जाननी ।

सूचना ।

इत्र—(सं पुं) आउव ।
फूलों का सुगन्धित सार ।

इचर—(कि वि) एहकात्म ।
इस ओर ।

इकाज—(सं पुं) प्रवक्तव्य ।
पुरस्कार ।

इनेगिने—(वि) झुल्लियेय, लेखत
नवलगीदा ।

कतिपय, चुने चुने ।

इन्कार—(सं पुं) अन्वीकार ।
अस्वीकृति ।

इन्सान—(सं पुं) मानव ।
मनुष्य ।

इमली—[सं स्त्री] डेडेली ।
एक तरह की खटाईदार फल ।

इमाम—(सं पुं) नेता, पथ-
प्रदर्शक ।

अगुवा, पथ प्रदर्शक ।

इमारत—(सं स्त्री) अटोलिका ।
पक्का बड़ा मकान ।

इम्तहान—(सं पुं) परीक्षा ।
परीक्षा ।

इयत्ता—[सं स्त्री] जीना ।
सीमा ।

इरादा—(सं पुं) इरादा, उद्देश्य ।
विचार, संकल्प ।

इर्द गिर्द—(कि वि) आत्म-पाठ,
ठाविष्ठनिने ।

चारों ओर, बासबास ।

इकाजाम—(सं पुं) अडिवांग ।
अभियोग ।

इकाज—[सं पुं] टेक-बाजी ।
आकाश बाजी, टेकबाजी ।

इलाका—(सं पुं) एलाका ।
अंचल ।

इलाज—(सं पुं) चिकित्सा, उबध ।
चिकित्सा, दवा ।

इलायची—(सं स्त्री) एलाचि ।
एक प्रकार सुगंधित बीजवाला
मसाला ।

इलाही—(सं पुं) ऐलवी;
ईश्वर ।

इल्म—(सं स्त्री) विद्या ।
विद्या, ज्ञान ।

इल्लत—[सं स्त्री] बोझ, बोझ ।
बलान ।

रोग, भ्रंश ।

इशारा—[सं पुं] संकेत ।
संकेत ।

इश्क—[सं पुं] प्रेम । प्रेम ।

इस्ताहार—[सं पुं] घोषणा पत्र ।
विज्ञापन ।

इस्तीफा—[सं स्त्री] त्यागपत्र ।
त्यागपत्र ।

इस्तेमाल—[सं पुं] उपयोग ।
उपयोग ।

इ

ई—श्व वर्बव चतुर्थ अक्षर ।
वर्णमाला का चौथा अक्षर ।

ईंगुर—(सं पुं) गेनूर, गिन्नूर ।
सिन्दूर ।

ईंट—(सं स्त्री) शेठ ।
मिट्टी का पकाया हुआ चौकोर
टुकड़ा, धातु का चौकोर टुकड़ा ।

ईंधन—[सं पुं] धनि
जलावन ।

ईश—(सं स्त्री) ईश्वर ।
ब्रह्मा, ईश्वर ।

ईजाद—(सं स्त्री) आविष्कार ।
आविष्कार ।

ईसि—(सं स्त्री) उपद्रव ।
उपद्रव, बाधा ।

ईद—(सं स्त्री) एठो मुहलवान गर्ब
मुसलमानों का एक त्योहार ।

ईमान—(सं पुं) ईश्वरविश्वास, गम्-
बुद्धि, गठ ।

चर्मपर विश्वास, सद्बुद्धि, कर्म ।

लक्ष्मणद्वार—(वि) विवागी, विवेक-
नीम ।

अच्छी नीयत रखने वाला ।

लक्ष्मण—(सं स्त्री) छदन ।
भवन ।

लक्ष्मण—(सं पुं) शत्रु, केवल ।
स्वामी, ईश्वर, राजा ।

ईशान—(सं पुं) शत्रु, महादेव,
मैत्रान कोष ।

स्वामी, शिव, पुरब और उत्तर
के बीच का कोना ।

ईषत्—(वि) क्लिप्त ।

योड़ा, कुछ ।

ईस्वी—(वि) शीत गन्धीय, शृङ्गीय ।
ईसा से सम्बन्धित, ईसा की ।

ईसाई—(वि) शृङ्गीयान ।
ईसा के धर्म पर चलनेवाला,
क्रिस्तान ।

ईहा—(सं स्त्री) छटे ।
प्रयत्न, लोभ, इच्छा ।

ईहामृग—(सं पुं) गन्धुत कणक
(नाटक) व एक छेद ।

एक प्रकार का नाटक ।

उ

उ—एक वर्ण प्रकृत आश्रय ।
वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ण ।

उंगली—(सं स्त्री) आङ्गुलि, अंगुली,
उठाना—माहित कर्ता, लाञ्छित करना

—वर नमाना—हाथ प्रणमना कर्ता
लोभा, नाकत धवि पाकत
मुबोबा । इच्छानुसार काम
करवाना ।

उँचाई—(सं स्त्री) चोँचा-चंगव ।
गोँद ।

उछेदना—(क्रि स) छानि मित्र ।
तरल पदार्थ को ढालना ।

उँह—(अव्य) उँह, नश्य ।
अस्वीकार, घृणा, बेपरवाही सूचक
शब्द ।

उच्छृज—(वि) शृङ्गीय ।
क्षण मुक्त ।

उच्छटना, उच्छटना—(क्रि अ) छेदनि
मित्र ।

दही बात उभाटना. बोलना.

उपकार की बात कह कर ताना देना ।

उकड़—(सं पुं) आठ्ठकां बहा ।

घुटने के बल बैठने की मुद्रा

उकसाना—(क्रि अ) विबल होना ।

ऊबजाना, जल्दी मचाना ।

उकसना—(क्रि अ) झूटि ओलोवा, गंजालि देना ।

निकलना, अंकुरित होना ।

उकसाना—(क्रि स) उछोटाई क्रिया ।
उसाड़ना ।

उखड़ना—(क्रि अ) शिपावे गेटे उठाना ।

जमी हुई या गड़ी हुई चीज का अपने स्थान से अलग होना ।

उखलो, उखल—(सं स्त्री) उबाल ।

चावल आदि कूटने का काठ का बना हुआ पात्र ।

उयना—(क्रि अ) गंजालि देना ।

उदित होना, अंकुरित या उत्पन्न होना ।

उयासना—(क्रि स) उगाव बवा,

उथ कथा बेकत कवा ।

पेट की छापी हुई वस्तु मुँह से बाहर निकालना, गुप्त बात प्रकट कर देना ।

उगाड़ना—(क्रि स) धन पौढोना ।

धन आदि इकट्ठा करना, बसूल करना ।

उचक्का—(सं पुं) अंतावक, ठक ।

ठग, कोई चीज ले भागने वाला, चोर ।

उचाट—[सं पुं] उपागीनता ।

मन की विरक्ति, उदासीनता ।

उचाटन—[सं पुं] आन-बना ।

किसी का चित्त कहीं से हटाना ।
अनमनापन, विरक्ति ।

उच्छन्न—(वि) उछन, उब पवा ।

दबा हुआ, लुप्त ।

उच्छिन्न—(वि) कटा, नष्ट ।

कटा हुआ, नष्ट ।

उच्छ्वास—(सं पुं) उत्क्ष्वाग,

डाबेवे डबगुव ।

सांस, ऊपर को खींची हुई सांस ।

उच्छसकूद्—(सं स्त्री) लम्प-लम्प ।

लम्प-भम्प, खेलकूद ।

उछसना—(क्रि अ) जंजिउवा,

अताधिक आनणित होवा ।

कूबना, बहुत कुश होना ।

उछासना—(क्रि स) उणवेण

मणिउवा, ऊपर की ओर फेंकना ।

कीचड़ उछासना—

बपनाज कवा । बदबानी करना ।

उजड़ना—(क्रि अ) डाँडि-छिडि नष्ट होरा ।

. टूट फूट कर नष्ट होना ।

उजड़ु—[वि] जड़ामूर्ख ।

मूर्ख, असभ्य ।

उजड़क—[सं स्त्री] मूर्ख ।

मूर्ख ।

उजड़त—(सं स्त्री) पारिवर्त्मिक ।

पारिवर्त्मिक ।

उजड़ि—(वि) बग़ी, उखल ।

सफेद, साफ, निर्मल ।

उजड़ागर—(वि) उखल, अगिझ ।

प्रकाशित, प्रसिद्ध ।

उजड़ा—[सं पुं] छन पवि धरु ।

ठाँडे, निर्झन ।

उजड़ा हुआ स्थान, निर्जन, वन ।

उजड़ाना—(क्रि सं) क्षय कर्ना ।

ध्वस्त करना, नष्ट करना ।

उजाला, उजेला—(सं पुं) उजलता ।

पोश्व । प्रकाश, चांदनी ।

उज—(सं पुं) आपडि ।

आपत्ति ।

उठना—[क्रि, अ] उठ्ठा, थिय होरा,

जागि उठ्ठा ।

ऊँचा होना, खड़ा होना । जागना,

बैठा होना ।

उठ जाना—मरा, मर जाना ।

उठते बैठते—उठ्ठाउठ-बैठोउठ,

थाँउठ-रुथाँउठ । प्रतिक्षण ।

उड़न-खटोला—(सं पुं) उबा-

छायाक ।

उड़नेवाला खटोला, विमान ।

उड़न-छू—[वि] नाइकिया होरा ।

गायब ।

उड़ाई—(सं स्त्री) उबन ।

उड़ने की क्रिया, उड़ने का पारिवर्त्मिक ।

उड़ाका—(वि) उबगीया, निमान-

छालक ।

जां उड़ता हो । विमान चलाने वाला ।

उड़—(सं पुं) उबा, पक्षी ।

तारा, पक्षी ।

उड़पति—(सं पुं) ज्ञान ।

चन्द्रमा ।

उड़डयन—(सं पुं) उबन ।

उड़ना ।

उतरना—(वि) गिरान ।

उस मात्राका ।

उतरना—(क्रि अ) नाभि अश ।

ऊँचे स्थान से नीचेकी ओर आना

—चेहरा उतरना—उदाग होरा ।

उदासी आना ।

उतराना—[क्रि अ] पानीत झरि
धका ।

पानी के ऊपर आना ।

उतार—(सं पुं) अवरबोधन, कम ।

उतरने की क्रिया, घटाव, कमी ।

उतार-बढ़ाव—(सं पुं) कम-बेछि,
उध-छापव ।

कमी उतरने और कभी बढ़ने का
भाव ।

उतारू—(वि) उद्युत ।

किसी काम को करने के लिये
उद्यत ।

उतावला—[वि] वाय, उत्रावन ।

जल्दबाज, व्यग्र ।

उतावली—[सं स्त्री] श्व-ध्वना,

हाकू-बिहू ।

शीघ्रता, जल्दबाजी ।

उत्कंठा—(सं स्त्री) उच्छल-धुञ्जल ।

किसी बात की प्रबल इच्छा ।

उत्कट—(वि) तीव्र ।

तीव्र, उग्र ।

उत्तरदायी—(वि) पायी ।

जवाब देह, जिम्मेदार ।

उत्तरीय—[सं पुं] गालोचा ।

गमछा, दुपट्टा ।

उत्तुंग—(वि) वर उध ।

बहुत ऊँचा ।

उत्तेजक—[वि] उत्तेजक, उत्तेजना-
कारी, उत्प्रेषक ।

मनोवेगों को उभाड़ने या तीव्र
करनेवाला ।

उत्तेजना—(सं स्त्री) उत्प्रेषण,
उत्प्रेषण, प्रबलध्वनय ।

प्रेरणा, मनोवेगों को तीव्र करने
का भाव ।

उत्थान—(सं पुं) उठा, कार्या,
औद्योगिक ।

उठने का कार्य, उन्नति ।

उत्पल—(सं पुं) पद्म ।
कमल ।

उत्पीड़न—[सं पुं] यता'चाव,
उपेन्द्र ।

किसीको पीड़ा या कष्ट
पहुँचाना ।

उत्फुल्ल—(वि) प्रफुल्लित, विकसित ।
प्रमत्त, विकसित ।

उत्सर्ग—[सं पुं] गृह्यध्वनय कवा
पान, उत्सर्ग, भाग ।

किसी के नाम पर या किसी उद्दे-
श्य से छोड़ना । कुर्बानी, त्यागना ।

उत्साह—[सं पुं] उत्साह । कानव
अति होवा आग्रह । अछेष्ट ।

उत्थान ।

उमंग, प्रवेष्टा, उद्यम ।

उत्सुक—(वि) उत्साही, विनम्र
बह्वान, बाध ।

उत्कण्ठित ।

उत्थलना—(क्रि अ) धक्का-बक्का करना ।
उलट-पलट होना ।

डगमगाना, उलट पलट होना ।

उत्थल-पुथल—(सं स्त्री) उलट-
पलट ।

उलट पुलट, आमूल परिवर्तन ।

उत्थला—(वि) बाध ।

कम गहरा ।

उदक—[सं पुं] पानी ।
पानी ।

उद्गार—[सं पुं] अछबत धक्का
कथा प्रकाश होना । श्वांस,
आनन्द आदि अचक शब्द । वनि,
उगाव ।

मुँह से बाहर आना । वमन । उकार ।
दिल में भरी हुई बात बाहर
निकलना । कंठगर्जन । हर्ष, शोक
आदि सूचक शब्द ।

उद्गोजन—(सं पुं) हाईजोखेन ।
एक प्रकार का बाष्प ।
(अं-हाइड्रोजन)

उद्दिष्टि—(सं पुं) गागव, जेव ।
समुद्र, जेव ।

उदयाधल—(सं पुं) एधन कान्निक
पर्वतब नाम, व'व प'वा बाति
पूवा शूर्या उदय इय ।

एक पर्वत जहाँ से सूर्य का उदय
माना जाता है ।

उदात्त—(वि) ऊँच शब्द उच्चरित,
श्रेष्ठ, महान ।

ऊँचे स्वर से उच्चरित । ऊँचा ।
महान ।

उदार-चेता—(वि) उदार-चितीया ।
ऊँचे दिल का ।

उदास—(वि) विषय अति विबाग,
वैबाग्य, गम्याग ।
विरक्त तटस्थ, संन्यास ।

उदासी—(सं पुं) केवलीया डकत,
विरक्त, संन्यासी ।
(सं स्त्री) श्वांस-वेवाव ।
खिन्नता, दुःख

उदीची—(वि) उदय दिश ।
उत्तर दिशा ।

उदीच्य—(वि) उदयव, गववती
नदीव उदय पच्छिम दिश ।
उत्तर का, उत्तर का रहनेवाला,
सरस्वती नदी के उत्तर पश्चिम
का देश ।

उदुम्बर—(सं पुं) डिमर गछ,
नगुंसक ।

गूलर, नपुंसक ।

उद्—(वि) उच्छ्वल ।
अक्सड़, उद्धत ।

उद्दाम—[वि] बह्मशैव, निबद्ध,
गुरु, अगाधवन, डीवण ।
बन्धन रहित, निरंकुश, स्वतंत्र,
असाधारण, भयंकर ।

उद्दिष्ट—(वि) लक्षित, अभिप्रेत
अभीष्ट ।

दिखाया हुआ, अभिप्रेत, अभीष्ट ।

उद्दीपन—(सं पुं) उद्देजित करा
भाव, उद्योगि निम्न, आग्रह
करा आदि भाव ।

उत्तेजित करने की क्रिया या भाव

उद्धत—[वि] उत्तृष्ट ।
उग्र, प्रगल्भ ।

उद्धरण—(सं पुं) उपबटल उठावा
कार्य, उद्धृति ।
ऊपर उठना, उद्धृति ।
(अं—कोटेशन, एक्सट्रैक्ट)

उद्बुद्ध—(वि) विकसित, जाग्रत ।
विकसित । जाग्रत । चेतना युक्त ।

उद्बुद्ध—(वि) अवल, अर्थ, अर्थ ।
श्रवण, बह्म बड़ा, अर्थ ।

उद्भावना—[सं स्त्री] कल्पना,
उद्भावना ।

कल्पना, उत्पत्ति ।

उद्भात—(वि) उद्भातल, बाटे
शेखरा ।

उन्मत्त, चकित, भूला भटका हुआ ।

उद्यम—(सं पुं) उद्योग, वाद्यगान,
अच्छेष्ट ।

प्रयास, मेहनत, पेशा ।

उद्यमी—[वि] उद्योगी, पवित्र ।
प्रयत्नशील, परिश्रमी ।

उद्योग—(सं पुं) अच्छेष्ट, पुनर्वास,
उद्योग, निम्न

प्रयत्न, मेहनत, काम धंधा । शिल्प

उद्दिग्ध—[वि] उद्दिष्टित, चिह्नित ।
आकुल, धराया हुआ ।

उद्धृता—(क्रि अ) मुक्ति होवा,
उद्धार होवा ।
उद्धार होना ।

उद्धम, उद्धम—(सं पुं) शठगोल,
उद्भात, शशकाव ।
उपद्रव, उत्पात, शोरगुल ।

उद्धर—[क्रि वि] निकाले ।
उस ओर ।

उधार—(सं पुं) धार ।
कर्ष, ऋण ।

उपेक्ष-बुन—[सं स्त्री] डार-छिन्ना ।

सोच विचार, युक्ति बाधना ।

उनचास—(वि) उनपकाय ।

उनतालीस—(वि) उनछत्ति ।

उनसीस—(वि) उनत्रिंश ।

उनसठ—(वि) उनषाठि ।

उनहत्तर—(वि) उनगखर ।

उनीदा, उन्निद्र—[वि] निद्रा

आगबबब बाबे अबगाद अख
बा क्काख ।

बहुत जागने के कारण थका-सा ।

उन्नासी—(वि) उनासी ।

उन्नीस—(वि) उठेग ।

उन्मद्—(वि.) मत्तलीया, पागल,
उग्रउ कबा ।

मतवाला, पागल, उन्मत्त करने
वाला ।

उन्मन—[वि] अनामनक, उनामीन ।

अन्यमनस्क, उद्विग्न, उदास ।

उन्मीलन—(सं पुं) खोला, चकू-
बेला कार्य ।

खुलना (आँस का), विकसित
होना ।

उन्मीलित—(वि.) खोला, विकसित,

अखित, एविध काब्यालकाब

खुला हुआ, खिला हुआ, अंकित,

एक काब्यालंकार ।

उन्मूलन—(सं पुं) निमूल कबा,

उबीदेब भवा उडालि दिवा ।

जड़ से उखाड़ना, अस्तित्व मिटा
देना ।

उन्मेष—(सं पुं) चकूबेला, बिकाय,
भूबय ।

आँखों का खुलना, बिकास, स्फुरण ।

उपकरण—(सं पुं) गायत्री ।

सामग्री, साधन ।

उपक्षेप—[सं पुं] काबो अति

दलिउबा, चर्का, गच्छेउ, ईच्छित,

आत्कप, आबड, अडिनयब

आबडधिते नाटकब कथाबड

गच्छेपे कोबा कार्य ।

किसी की ओर फेंकना, चर्चा,

संकेत, आक्षेप, आरम्भ ।

उपक्षेपन—[सं पुं] दलिउबा, आत्कप
कबा ।

फेंकना, आक्षेप करना ।

उपगत—[वि] उचबले अहा,

बाटियोबा, अड्डूत होबा, आंथ,
बुड ।

पास आया, गया हुआ, घटित,

अनुभूत, प्राप्त, मृत ।

उपगुप्त (वि.) गूकोबा, बोझ भिन्न

अजन (अणोकर उबर)

छिपाया हुआ ।

उपग्रहण—[सं पुं] धवा, चञ्चला,
नियमयते वेदाध्ययन कवा,
बन्नी कवा ।

पकड़ना, सम्भालना, वेदाध्ययन
करना, कैद करना ।

उपचार—(सं पुं) वायुशब्द, ठिकि-
या, नैनवेद्या ।

व्यवहार, चिकित्सा, बाहरी
आचरण, पूजा के अंग ।

उपचेतना—(सं स्त्री) अष्टःसंज्ञा ।
अंतःसंज्ञा ।

उपज—(सं स्त्री) उत्पत्ति, उत्पन्न ।
उत्पत्ति, पैदावार, नयी मूल ।

उपजाऊ—(वि) जाकरा ।
उर्वर ।

उपटन—(सं पुं) प्रलेप ।
राग, शरीर पर मलने का
लेप ।

उपढौकन—(सं पुं) उपशान ।
उपहार, भेंट ।

उपहंरा—(सं पु) गर्मी बेनाव ;
ह्री गन्ध अनित बेगाव ।
लिग पर घाव पड़ जाने का रोग,
आतशक, फिरंग रोग ।

उपदान—(सं पुं) आनक गच्छे कवि-
बटेल प्रिया धन ।
बहु धन जो किसी को उसे संतुष्ट

या प्रसन्न करने के लिए दिया
जाय ।

उपधा—(सं स्त्री) छल, काकति
उपाधि, व्याकरण कोनो शब्द
शेष आश्रयों के आश्रय आश्रय ।
छल, घोषा, उपाधि, व्याकरण
में किसी शब्द के अन्तिम अक्षर
के पहले का अक्षर ।

उपधान—[सं पुं] गारु, विशेषज्ञ,
प्रेम ।

तकिया, विशेषता, प्रेम ।

उपधि—(सं पुं) छल, काकति, डग,
गन्ध ।
छल, कपट, डर, भय ।

उपनद्ध—(वि) बाकि धोरा , गाँठि
दि धोरा ।

बंधा हुआ, नथा हुआ ।

उपनयन—[सं पुं] लङ्ग दिग्नौ,
गुरु ७८वले निशा ।

यज्ञोपवीत संस्कार, गुरु के पास
ले जाना ।

उपनीत—(वि) ७८वले आना,
उपनयन देह धोरा ।

पास लाया हुआ, जिसका उप-
नयन हुआ हो ।

उपपत्ति—(सं पुं) - आनव विवा-
हिता पञ्चव जगत प्रेम कवः

पुरुष, विद्या नकवा वा देशाचार
मते नञ्वा आसी ।

दूसरे की विवाहिता पत्नी से प्रेम
करनेवाला पुरुष ।

उपपत्ति—(सं स्त्री) गिरावट ;
बुद्धि

युक्ति, सिद्धान्त, प्रतिपादन ।

उपपत्नी—(सं स्त्री) पति पुरुषवर्ग लगत
गृहक नञ्वा तिवोता ।

किसी पुरुष से फँसी हुई दूसरे
की पत्नी या स्त्री ।

उपपद—(सं पुं) गमाग विशेष, उप-
पद वा पूर्व पदवर्ग लगत रूपञ्च
पदवर्ग गमाग ।

एक प्रकार का समास, उपपद
या पूर्व पद के साथ कृदन्त पद का
समास ।

उपप्लव—(सं पुं) उल्पात; वानपानी,
भूमिकम्प ।

उत्पात, बाढ़, भूकम्प ।

उपवरत—[वि] विवञ्च
विरक्त ।

उपवरति—(सं स्त्री) उदासीनता,
छेदक-वागना शीन । बुद्ध । बुद्धि ।

किञ्च कसना के भोग से विराग ।

उपासीनता । मत्त, बुद्धि ।

उपलम्भ, उपलम्भन—(सं पुं)

लाभ, प्राप्ति, ज्ञान, अनुभव ।

लाभ, प्राप्ति, ज्ञान, अनुभव ।

उपल—(सं पुं) मिल, वञ्च ।

पत्थर, ओला, रत्न ।

उपल्ला—(सं पुं) कुकान गौवर्ग,
याक खवि हिचापे व्यवहार
कवा इत्य ।

कंडा, सूखा गोबर ।

उपवेशन—(सं पुं) वश ।

बैठना, स्थित होना ।

उपवेष्टित—(सं पुं) आकांक्षालि
धवा, मेबाई धवा ।

लिपटा हुआ, घिरा हुआ ।

उपशम—(सं पुं) ऐच्छिय निवृत्ति,
शांति, चिकित्सा ।

इन्द्रिय-निवृत्ति, शान्ति, इलाज ।

उपहत—(वि) विनष्ट, नष्ट होना,
आघात पोना, वञ्चपात पना
जन ।

नष्ट या बरबाद किया हुआ ।

घायल । जिसपर वञ्चपात हुआ हो ।

उपांग—(सं पुं) गरु अङ्ग । दाढ़ि,
गौरव, छुलि, नञ् ।

अंगका भाग, अवयव ।

उपादान—(सं पुं) कोनो वञ्चव
कल कानन वा गानकी वा

पदार्थ, ग्रहण, आश्रि, शीकाव
 कवा ।
 प्राप्ति, ग्रहण, किसी वस्तुके निर्माण
 में लगनेवाली सामग्री ।
उपादेय—(वि) उपयुक्त, ग्रहण कवा
 उपयोगी ।
 उत्तम, ग्रहण करने योग्य ।
उपानह—(सं पुं) छोता ।
 जूता ।
उपालंभ—(सं पुं) निम्न । अभियोग ।
 शिकायत, निन्दा ।
उपास—(वि) उपवाग, निवाशावे
 थका ।
 उपवास, फाका ।
उपोद्घात—(सं पुं) किताब
 पाठनि, उद्घाशन ।
 पुस्तक की भूमिका, कोई काम
 आरंभ करने का कृत्य ।
उफान—(सं पुं) उठना ।
 भरकर या गरमी पाकर ऊपर
 उठना । जोश में भगकर ऊपर
 उठना ।
उषटन—(सं पुं) गरीबत शंखिव
 कावने कवा गबिग्रह, तिल
 आदिब लेप । अलेप ।
 शरीर पर मलने के लिये सुगंधित
 लेप ।

उबरना—(क्रि अ) उछाव पोवा ।
 उदार पाना, शेष रहना ।
 (क्रि स) उछाव कवा ।
 उदार करना । उबारना ।
उबलना—(क्रि अ) उतलि उठा,
 थं उठा ।
 उत्तम तरल पदार्थ का उफनना,
 क्रोधित होना ।
उबालना—(क्रि स) उतलोवा ।
 तरल पदार्थ को खोलना ।
उभङ्गना—(क्रि अ) झुंकि दि
 उठा. उठतनि पोवा ।
 ऊपर निकलना, उत्तेजित होना ।
उभाङ्गना—(क्रि अ) उछाई दिगा,
 गवन वड्ड उपनये होला ।
 भागी वम्नु ऊपर उठाना, उत्ते-
 जित करना ।
उभंग—(सं स्त्री) उल्लाग, यागन् ।
 उल्लास, उत्साह ।
उभङ्गना—(क्रि अ) प्रविष्ट होवा ।
 उत्तगकर या भरकर बह चलना,
 ऊपर उठकर फैलना ।
उभर, उभ्र—(सं स्त्री) न ग ।
 अवस्था, आयु ।
उभस—(सं स्त्री) बडाश नबलिजे
 होवा उन वा गवन ।
 हुवा न चलने की गरमी ।

जोड़ना—(कि अ) जोड़ना दिया ।

एँठना, मरोड़ना ।

जुंदा—(वि) डाल ।

अच्छा, भला ।

जुम्मीद, जुम्मेद—(सं पुं) आशा ।

आशा, भरोसा ।

जुम्मेदवार—(सं पुं) प्रार्थी ।

आशा रखनेवाला, पदके लिये
प्रार्थी ।

जुर—(सं पुं) डक, झग ।

झाती ।

जुरद—[सं पुं] गाँठि नाच ।

एक प्रकार की दाल, माष ।

जुरमाल—[सं पुं] क्कमाल ।

क्कमाल ।

जुरसिज—[सं पुं] जिगाइ, जुन ।

स्तन ।

जुरु—(सं पुं) कबड्डी ।

जाघ ।

(वि) डण्डव दीखल ।

लम्बा चोटा ।

जुरोज—(सं पुं) जिगाइ, जुन ।

स्तन, कुच ।

जुर्वी—[सं स्त्री] पृथिवी ।

पृथ्वी ।

जुल्लाना—[सं स्त्री] आँक, गौँठि,

गमगा ।

अटकाव, गाँठ, समस्या ।

जुल्लाना—(कि स) पाकत

पेलोवा ।

फँसाना, लगाये रखना ।

जुलटना—[कि अ] उलटोवा,

नष्ट होवा ।

पलटना, मुडना, वरबाद होना,
गिरना ।

[कि स] उल-उपब कवा,

पेलोइ दिया ।

ऊपर-नीचे करना, मोडना,

गिराना ।

जुलट-पुलट (पलट)—(सं स्त्री)

उलट-पौलट, गोल गलनि ।

अदल बदल, अव्यवस्था ।

जुलट-फेर—(सं पु) शेव-फेर,

परिवर्तन ।

परिवर्तन, हेर फेर ।

जुलटा-पुलटा—(वि) ईकाल-निकाल ।

डहर का उधर ।

जुलटे—[कि वि] विपरीत कपे ।

विपरीत क्रम से ।

जुल्लाना—(सं पुं) आपत्ति, त्रिब-

काव, कटूँडि प्रयोग ।

शिकायत. उपालम्भ ।

उत्पीचना—[क्रि स] पानी छूँटा, पानी जिँटा ।

पानी उछालकर फेंकना ।

उत्पन्ना—(सं पुं) अश्वत्थ ।

अनुवाद, भाषान्तर ।

उत्पन्ना—(सं स्त्री) उछाँप ।

गरमी, ताप ।

उत्पन्ना—[सं स्त्री] गर्भ, शं ।

गरमी, गुप्ता ।

उत्पन्न—[सं पुं] छुनिय ।

दुःख का दीर्घ श्वास ।

उत्पन्ना—[सं पुं] चोखल ।

छाजन, घर के सामने का हिस्सा ।

उत्पन्न—(सं पुं) गिह्वा ।

सिद्धांत ।

उत्पन्न—(सं पुं) उछाँप, पण्डित ।

गुरु, पण्डित ।

(वि) छत्र, धूर्त ।

चालाक, धूर्त ।

उत्पन्न—[सं पुं] लेश ।

वही (प्राचीन प्रयोग) ।

ऊ

ऊ—श्व वर्ण वृद्ध यांश्च ।

वर्णमाला का छठा अक्षर ।

(सं पुं) शिव, चन्द्रमा, रक्षक ।

शिव, चन्द्रमा, रक्षक ।

ऊँचना—(क्रि अ) टोपनिया, कला ।

श्रुति अथ ।

नीद में भ्रमना ।

ऊँच, ऊँचा—(वि) उथ ।

उठा हुआ, उन्नत ।

ऊँचनीच—(वि) उथ-चापव । उछ-

नीच छात्र । छोटी जाति और

बड़ी जाति का, भला बुरा ।

ऊँचाई—(सं स्त्री) उछता ।

उच्चता, गौरव ।

ऊँछड़—[सं पुं] पाशव नागनिब

उकान गाँव ।

पहाड़ के नीचे की गूमी भूमि ।

कल्ल—[सं पुं] उबाल ।

ओसली ।

ऊषड—[वि] जनश्रीने शून्य ।

वीरान ।

ऊट पटांग—[वि] अग्नय, निबर्धक

अटपट, टेढ़ा मेढ़ा, निरर्थक ।

ऊत—(वि) पुत्रशून्य, मूर्ख ।

निपूता, बेवकूफ ।

ऊद, ऊद बिलाव—[सं पुं] उद् ।

एक तरह का जन्तु ।

ऊषम—(सं पुं) शौलमान, शशकाव,

उष्पात ।

शोरगुल, हंगामा, उत्पात ।

ऊपर—(क्रि वि) उपर ।

ऊँचे स्थान में, सहारे पर ।

ऊपरी—[वि] उपर, उपर

ऊपर का ।

ऊष—(सं स्त्री) आशनि ।

उद्देग, घबराहट, उकताना ।

ऊषड-छाषड—(वि) खना-बना

ऊँचा नीचा ।

ऊषना—(क्रि अ) व्याकूल होना ।

घबराना, अकुलाना ।

ऊमस—[सं स्त्री] बाबकाश नटान

बाबे अलुडर होना गबन ।

हवा न चलने से मालूम होनेवाली

गरमी ।

ऊर्ज—(वि) बलवान, शक्ति, उद्देश ।

शक्तिमान, शक्ति, उद्देश ।

ऊर्जस्वित—(वि) आकर्ष, भविष्यका ।

चढा हुआ ।

ऊर्ध्व, ऊर्ध्व—(क्रि वि) उपर

ऊपर ।

ऊर्ध्वरेता—(वि) नैष्ठिक ब्रह्मचारी,

जितेन्द्रिय ।

वीर्यपात न होने देनेवाला नैष्ठिक

ब्रह्मचारी ।

ऊर्ध्ववास—(सं पुं) उर्ध्वबाग । अतिशय

पवित्र वा लव श्रुत उभातु

होना ।

ऊपर को चढनेवाली साँस, उलटी

साँस ।

ऊर्मि—(सं स्त्री) लो ।

तरंग, पीड़ा ।

ऊर्मिल—(वि) कम्पित, लो डबा ।

तरंगित ।

ऊल जल्ल—(वि) अग्नय,

असंबद्ध, बाहियात ।

ऊष, ऊसर—(सं पुं) शक्ति अलुप-

योगी अधिक बालि धका नाटि

लेती के अयोग्य, अनुर्वर जमीन ।

ऊह—(सं पुं) परिवर्धन, गङ्गाव,
अश्वान, तर्क-शुद्धि ।
परिवर्त्तन, सुधार, अनुमान, तर्क-
युक्ति ।

ऊहापोह—(सं पुं) तर्क-वितर्क,
विवेचना ।
सोच विचार ।

ऋ

ऋ—श्रवणवर्ग गण्य वर्ण ।
(सं पुं) अदिति, उपहास, निन्दा ।
वर्णमाला का सातवाँ वर्ण ।
अदिति, उपहास, निन्दा ।

ऋक—वेद-मन्त्र ।
वेदों की ऋचा ।

ऋक्ष—[सं पुं] भानुक, उवा ।
भालू, तारा ।

ऋजु—(वि) पौनपौषा, गवल,
रूटिलताहीन ।
सीधा, सरल ।

ऋत—(सं पुं) गता, अज्ञा, कर्म-
फल, अश्वकूल कथा ।
सत्य, सृष्टि का आदि और
धारक तत्त्व, ब्रह्म, अनुकूल बचन ।

ऋत्विज—[सं पुं] यज्ञ कर्ता, उता,
शक्तिवर्ग गङ्गा १७ जन । ताव
डिडवत होता, अश्वकूल,
उत्पत्ता आरु अज्ञाई युवा ।
यज्ञ करानेवाला ।

ऋद्धि—[सं स्त्री) सम्पन्नता,
गौरव, सकलता ।

सम्पन्नता, वृद्धि, गौरव, सफलता ।

ऋयकेतु—(सं पुं) अनिकट, कामदेव ।
अनिकट, कामदेव ।

ऋज्य, ऋज्य—[सं पुं] एक अकारव
शक्ति । एक तरह का हिरण ।

एतराज, (इतराज) — [सं पुं] आपछि ।
आपत्ति । विरोध ।

एलची — (सं पुं) बाजदूत ।
राजदूत ।

एषज — (सं पुं) गान-गलनि,
प्रविबर्धन, प्रतिष्ठा ।
प्रतिफल, बदला ।

एषणा — (सं पुं) ईच्छा, प्रावटेल
करा अछट्टे ।
इच्छा, चाह । पानेका यत्न करता ।

एहतियात — [सं स्त्री] गाबसान,
बकाप्रवा ।

परहेज, बचाव, होशियार ।

एहसान — (सं पुं) कृत्तता,
उपकार ।

कृतज्ञता, नेकी, उपकार ।

एहसान-फरामोश — (वि) कृत्त ।

एहसान भूल जानेवाला ।

एहसान-मंद — (वि) कृत्त ।
कृतज्ञ ।

ऐ

ऐ — वर्णमालाव नवम अक्षर ।

वर्णमालाका नवौ अक्षर ।

ऐचा-साना — (वि) टेरा-वेँका,
कबाशीटेक ।

टेरा देखनेवाला । भेंगा ।

ऐचा-सानो — (सं स्त्री) टेना-टेनि ।
खींचातान ।

ऐठ, ऐठना — (सं स्त्री) गर्क,
अशंकाव ।

ऐठने की क्रिया या भाव, अकड़,
सर्ब ।

ऐठना — (कि स) पेंच मिया,
पेंच लगाइ दि लोवा ।

मरोड़ना । दबाव डालकर लेना ।

ऐह — (सं स्त्री) गर्क ।
गवं ।

ऐन — (वि) ठिक ।

ठीक । बिलकुल ।

ऐनक — (सं स्त्री) छपना । चपना ।

ऐनस — (सं पुं) प्राप । पाव ।

ऐश—(सं पुं) शेष, लाहना ।

दोष, अवगुण ।

ऐश्वर्य—(सं पुं) ठड्ड, ठग, बुद्ध ।

चालाक । वेश बदलकर बिलक्षण

कार्य करनेवाला ।

ऐशाश—[वि] बिलागी ।

बहुत ऐश या आराम करनेवाला ।

विषयी, लम्पट ।

ऐरा-गौरा—(वि) अपविच्छिन्न, तुच्छ

[नाश]

अजनबी, तुच्छ (आदमी) ।

ऐश—[सं पुं] आनन्द-अनन्द,

भोग-बिलास ।

आराम, भोगविलास ।

ऐसा—[वि] एनेकदा ।

इस प्रकार का ।

ऐहिक—(वि) सांसारिक,

जागतिक ।

लौकिक, सांसारिक ।

ओ

ओ—शब बर्बल पक्षि आश्रय, जम्हा,

जम्हावन नृत्तक गङ्ग ।

वर्णमालाका दसवाँ अक्षर । ब्रह्मा,

सम्बोधन सूचक शब्द ।

ओठ, होठ—(सं पुं) ठुंठ, ठोठ ।

मुँह के बाहर का अंश ।

ओह—(सं पुं) शर, आश्रय, बिलास ।

घर, आश्रय, बिलास ।

ओकाई—(सं स्त्री) बनि, वांति ।

बमन । बमनका भाव ।

ओखली—[सं स्त्री] उबाल, उखल ।

ओघ—[सं पुं] गर्वग्रुह, अवाह,

प्रावन ।

समूह, धारा, फलावन ।

ओझा—(वि) नगण्य, अगतीव,

पातल ।

तुच्छ, छिछला, हलका ।

ओज—(सं पुं) तेज, बल, कवि-

तात वीर्य वा उत्साहवर्धक

गुण ।

प्रताप, उजाला । कविता में
वीरता, उत्साह वाला गुण ।
ओजस्वी—(वि) शक्तिशाली,
प्रभावशाली ।
शक्तिशाली, प्रभावशाली, तेजपूर्ण ।
ओझल—(सं पुं) खोब ।
ओट, आड़ ।
ओट—[सं स्त्री] वादधान; प्रवाद ।
व्यवधान, शरण ।
ओटना—(क्रि सं) कपाड़व प्रवा
शुटि शूटोवा ।
चरखी में रुई और बिनीले अलग
करना । बराबर अपनी बात कहते
जाना ।
ओटनी—[सं स्त्री] नेउठनी ।
कपाससे बिनीले अलग करनेका यंत्र
ओढ़ना—[क्रि सं] परिवधान कवा,
पिका, उवनि, दाखिइ प्रश्न कवा
शरीर के किसी भाग को कपड़े से
ढंकना, अपने जिम्मे लेना ।
(सं पुं) ढेलः काटोब ।
चादर ।
ओढ़नी—(सं स्त्री) उवनि, ढेलः
काटोब । चादर ।
ओढ़ा—[वि] डिजा, तिता, सेमेका ।
गीला ।

ओझरना—[क्रि सं] बिहा कवा,
नटे कवा ।
विदीर्ण करना, नष्ट करना ।
ओनामासी—(सं स्त्री) अकबावड,
आवड, ['उं नमः गिह्म' व विह्म
कप]
अक्षरारम्भ, आरम्भ ।
ओष—(सं स्त्री) छाक- चिका,
चिकमिकनि ।
चमक, शोभा ।
ओबरी—(सं स्त्री) थोठोनी ।
कोठरी ।
ओर—[सं स्त्री] काल ।
तरफ, दिशा, पक्ष ।
(सं पुं) पाब, तीब ।
किनारा, छोर ।
ओल—(सं पुं) उल-कटू, आँब,
आश्रय, कोना ।
जिमीकन्द, सूरन । आड़, आश्रय,
गोद ।
ओलसी—(सं स्त्री) पानी पठा वा
पानी पठा ।
छप्पर का किनारा ।
ओला—(सं पुं) बबपूव निन,
डूबाव ।
बर्षा में गिरते हुए जलके जमे
गोले । बिनीरी । (वि) बबपूव

निठिना ठेठा । ओलेके
समान ठंडा ।

ओषधि.ओषधी—(सं स्त्री) वनस्पति ।
लता—पता, बनोषधि ।
वनस्पति, जड़ी बूटी ।

ओष्ण—(सं पुं) कुश्मीश, अमप-
गवय ।
थोड़ा गरम, कुनकुना ।

ओस—(सं स्त्री) निम्ब, शिम ।
शबनम, शिशिर-बिन्दु ।

ओसाना—[क्रि स] धानर बा
भगाव पतान आदि छुटोवा ।

अनाजसे भूसा अलग करना ।

ओहदा—(सं पुं) पद, चाकरी ।
अधिकारी का पद ।

ओहदेदार—(सं पुं) पदाधिकारी ।
पदाधिकारी ।

ओहार—(सं पुं) पाकौ, गारु, जेप
आदिब ग्लिप ।

पालकी, तकिया, रजाई आदि
के ऊपर आड़ का कपड़ा ।

ओ

औ—अवर्गव एकान्त आश्व,
अनरु नाग ।
वर्णमाला का ग्यारहवाँ वर्ण,
क्षेपनाग ।

औटना, औटना—(क्रि स) पंगोवा,
गवय कवा ।

दूध आदि तरल पदार्थ आगपर
उबालकर गाढ़ा करना ।

औधना—(क्रि अ) बूटिखोवा,
उलट जाना [क्रि स] बूटिश्राई
प्रिया । उलट देना ।

औधा—(वि) उठो ।
उलटा, पट ।

औकान—(सं स्त्री) गवय, घोड़ा,
गवर्षा ।

समय, हैसियत, अर्थ-सामर्थ्य ।

औषट—(वि) कठिन, दुर्गम, दुर्गम-
पथ ।

कठिन, दुर्गम, दुर्गम-मार्ग ।

औजार—[सं पुं] यन्त्र-प्राति,
यन्त्रादि (निक्षेप) ।
हथियार, उपकरण ।

औद्वाहिक—(वि) विया गश्कीय,
वियांठ पौरा ।

विवाह सम्बन्धी, विवाह में
मिला हुआ ।

औपचारिक—(वि) नियम, गौण,
देशुदावर बावे ।

उपचार सम्बन्धी, रस्मी, दिखाऊ,
गौण ।

औपल—(वि) शिला गश्कीय,
शिलानेव ठेकावी । शिलर बावे
पौरा शांजना ।

प्रस्तर सम्बन्धी, पत्थर का बना
हुआ, पत्थर से मिलनेवाला (कर)

औपस्थिका—(सं स्त्री) बेग्या ।
वेश्या, बारांगना ।

औपस्थ—(सं पुं) गश्वाग, जोग ।
सहवास, भोग ।

और—(अव्य) आर,
तथा । (वि) डिन रेलनग । दूसरा ।
मिन्न ।

औरत—[सं स्त्री] डिबोडा ।
स्त्री, पत्नी ।

औरस—(वि) उबग, विवाहिता
डिबोडाव गर्भ उद्गम । वैश
विवाहिता स्त्रीसे उत्पन्न (संतान)

औलाद—(सं स्त्री) गञ्जान ।
सन्तान ।

औलिया—[सं पुं] शुचलमान ककिर ।
मुमलमान फकीर या मन्त ।

औवल, औवल—(वि) गर्क प्रथम
पहला, प्रधान, सर्व श्रेष्ठ ।

औसत—(सं पुं) अक्षपात ।
वावर का परता । सामान्य
(अं—एबरेज)

(वि) गश्जान श्रेणी ।

मध्यम कोटिका । साधारण ।

औहस—(सं स्त्री) अपगुह ।
अपमृत्यु, कुणति ।

क

क—वाङ्मय वर्णमालाव अथम आश्रव ।

वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण ।

कंकड़—(सं पुं) गरु गरु मिलिगुटि ।

पत्थर का छोटा टुकड़ा, तम्बाकू का सूखा पत्ता ।

कंकड़ीला, कंकरीला—(वि) मिलिगुटि भंका, मिलिगुटिशुल ।

जिसमें कंकड़ हो ।

कंकण, कंगन—(सं पुं) शंकर ।

हाथ में पहनने का एक गहना ।

कंकाल—(सं पुं) खंका, कंकाल ।

अस्थि पंजर ।

कंगाल—(वि) कङाल, श्रुश्रीश, पविष्ट ।

दरिद्र, बहुत ही गरीब ।

कंगूरा—(सं पुं) कृडा, टिंग ।

बोटी, किले का ऊँचा हिस्सा ।

कंधा—(सं पुं) कैंटेक, कनि ।

सिर के बाल सवारने की चीज ।

कंधी (सं स्त्री) ।

कंचन, कंचन—[सं पुं] लोण, धन, धनुबा ।

सौना, धन, धतूरा ।

कंचनी—(सं स्त्री) वेण्या ।

वेश्या ।

कंचुक—[सं पुं] चांगकन, कवच ।

चोली, वस्त्र, कवच, (सं स्त्री-कंचुकी)

कंचुकी—[सं पुं] अल्लःश्रुव-वक्क ।

अन्तःपुर का रक्षक ।

कंज—[सं पुं] जम्बा, पशु, दूनि ।

ब्रह्मा, कमल, केश ।

कंजूस—(वि) कृपण ।

कृपण ।

कैंटिया—[सं स्त्री] गरु कैंडिटे, बंशी ।

छोटा काँटा, बंशी ।

कंठा—[सं पुं] गल-पत्र ।

गले की हँसली, एक गहना ।

कंठा—[सं पुं] उकान गोवद-याक
श्वि शिछापे बावशव कवा श्व,
गोवद-उठा ।

उपला, सूखा मल ।

कंडील, कंदील—(सं स्त्री) एक
अकावव टाकि ।

एक प्रकार की बत्ती ।

कंत, कंध, कांत—(सं पुं) पति,
शायी ।

पति, स्वामी ।

कंद—(सं पुं) आलू आदि गन्ध
मूल, जैव ।

मोटी और गूदेवाली जड़, बादल ।

कंदरा—(सं स्त्री) गुहा, गश्ब ।
गुफा ।

कंदुक—(सं पुं) बल, टूट्टूवा गोरु ।
गेंद, छोटा गोल तकिया ।

कंधा—(सं पुं) कान्ध ।

गले और बांह के बीच का भाग ।

कंभस्त, कम्बस्त—[वि] शूर्ङगीया,
अडांगी ।

अभागा, भाग्यहीन ।

कई—(वि) अनेक ।

एक से अधिक, अनेक ।

ककडी—(सं स्त्री) काकडी । त्रिशूँह
निठिना गोबान्धव एविश दीव-
लीया फल ।

एक प्रकार का लम्बा फल ।

कक्षा—[सं स्त्री] अक्ष-नक्षत्र पथ,
श्रेणी, सेव ।

घेरा, ग्रहों का मार्ग, श्रेणी ।

कगारा—(सं पुं) ठिग्न गवा, उथ
टिला ।

ऊँचा किनारा, नदी का कगारा,
टीला ।

कच—(सं पुं) कूज, नल, जैव ।
बाल, कुण्ड, बादल ।

कचनार—(सं पुं) एविश कुल ।

एक प्रकार का फूल ।

कचपची—[सं स्त्री] कृत्तिका नक्षत्र-
इशाउ इशाटा उवा गोट बाई
थाके ।

कृत्तिका नक्षत्र ।

कचर-कूट—(सं पुं) धुव गांव-धव,
पोंट-भूबाई डोजन ।

खूब मारना-पीटना, इच्छा
भोजन ।

कचरा—(सं पुं) जावव-जोथव ।
केठा काकडी ।

कूड़ा करकट, कचची ककडी ।

कचहरी—(सं स्त्री) आदामठ,
काश्ची ।

जमावड़ा, दरबार, न्यायालय ।

कचालू—[सं पुं] एविश आलू वा
कूट, आलूवा टाटेनि ।

एक प्रकार की अरबी या कचनू ।

आलू की चाट ।

कचूमर—(सं पुं) डबिरे पिहि
उवा कवा ।

कुचला हुआ ।

—निकालना—छूना कवा, डबि
खुना ।

चूर चूर करना ।

कथा—(वि) कैठा, अपट्ट (लिखा-पठात) ।

जो पका न हो । अपुष्ट, कमजोर ।

कथा बिट्टा—(सं पुं) गुष्ठ बहगा ।
थचा हिचाव ।

गुप्त भेद, आय-व्ययका बिना जाँचा लेखा ।

कथी बही—(सं स्त्री) हिचाप-पत्रव
गाथावण बही ।

वह बही जिसमें ऐसा हिसाब
लिखा हो जो पूर्ण रूप से
निश्चित न हो ।

कठजू—(सं पुं) कठू ।
अरई, बंडा ।

कठार—(सं पुं) गागर वा गदीव,
पावन लेमका ठाई ।
नदी या समुद्र के तट की तर
और नीची भूमि ।

कछुवा, कच्छप—[सं पुं] काछ ।
एक जल जन्तु ।

कजलारा—[वि] काजल गना
(चक्र), कंला ।
काजल लगा हुआ (नेत्र), काला ।

कजली, कजरी—(सं स्त्री) कजला,
बाविश कालत गोवा एक-
अदावण गीत ।

कालिख । एक तरह का बरसाती
गीत ।

कजिया—[सं पुं] काजिया ।
भगड़ा ।

कट—(सं पुं) हाथीर गण्डवान ;
मवाण ।
हाथी का गण्डस्थल, खस की
टट्टी, लाश ।

कटक—(सं पुं) टैना ।
सेना, राजशिविर ।

कटकटाना—[क्रि अ] थडते दाँत
कागुरि उठा ।
क्रोध में दाँत पीसना ।

कटघरा—[सं पुं] पिँछवा वा
काँठव घब ।

बड़ा पिजड़ा, काठ का वह कमरा
जिसमें खिड़की लगी हो ।

कटनी—(सं स्त्री) ना, कटा क्रिया ।
काटने का औजार, काटने का
काम ।

कटहा—(वि) दर्शनकाबी ।
काटखानेवाला ।

कटाई—[सं स्त्री] धान आदि
कटाव मछुरि ।

फसल काटने की मजदूरी ।

कटार—(सं स्त्री) छई काले धाव
थका छुरी वा डेगाव ।

लगभग एक बित्ते का दुधारा
हथियार ।

कटाव—[सं पुं] कठो ।

काट छाँट, बाढ से जमीन का
कटना ।

कटाह—[सं पुं] केवाही, गश्ब
पोवालि ।

कडाही, भेंस का पाडा ।

कटिबन्ध—(सं पुं) ढिडालि वा
कँकालि । डलवांगू अन्नगबि
श्रुथिवीव एक नडल ।

कमरबन्ध, कमर में बाँधने का
कपडा । सरदी गरमी के विचार
से पृथ्वी के विभागों में से एक ।

कटिबद्ध—(वि) दूज गस्कन्न ।
तैयार, दृढ संकल्प ।

कटोरा—(सं पुं) वाकि ।
एक प्रकार का बरतन । प्याला ।
(स्त्री कटोरी)

कटौती—[सं स्त्री] कर्छुन । पंगडा
आनि दिडँट कटोवा ।

कोई रकम देने हुए किमी कारण
बश कुछ अंश निकाल देना ।

कट्टर—(वि) गोडा, अक्विनामी ।
अन्धविश्वासी, दुराग्रही ।

कट्टा—(सं पुं) कठा (बाटिब
शिठाप)

जमीन की माप ।

कठपुतली—(सं स्त्री) काँठब पूतला ।
आनन डेगितबट चलाना नान्न ।
काठ की गुडिया । दूसरों के
इशारे पर चलनेवाला ।

कड़क—(सं स्त्री) कड्, कड्, नक ।
ठिकठिकनि (बिडुली) ।
कडकने की क्रिया या भाव ।
डपट, पीडा ।

कड़कना—[क्रि अ] कड कड नक
होवा, बिडुली-कटवकान ।
कड कड शब्द होना ।

कड़वा, कड़ुवा—[वि] तिडा ।
स्वाद में उग्र और अप्रिय ।
(स्त्री-कडवी)

कड़ा—(सं पुं) वाला (शतठ वा
भविठ पिक्का) हाथ या पैर में
पहनने का गहना । [वि] कठिन,
तेज । कठोर, कठिन, उग्र, दृढ ।

कड़ाई—(सं स्त्री) कठोरता, दृढता
कठोरता, दृढता ।

कड़ाहा—(सं पुं) केवाही । एक प्रकार
का लोह का बरतन । (स्त्री-कड़ाही)

कड़ी—(सं स्त्री) छिंछिविब आडूठि,
शीतब पद ।

सिकड़ी का छल्ला, गीत का एक पद ।

कड़ना—(क्रि अ) उपय होना ।
निकलना, उदय होना ।

कड़ाई—[सं स्त्री] केबाशी,
कापोरब कुल तोला ।
कपड़े पर बेल बूटे बनाना ।

कड़ु—(सं स्त्री) बूटे, माश आर
मैव बोलेवे तैयार करा
एनिश आञ्जा ।

बेसन की बनी गाढी दाल ।

कतरन—(सं पुं) कागजब टुकुरा ।
कागज के कटे टुकड़े ।

कतरना—(क्रि स) कैंटीवे कटो ।
कैंची आदि से काटना ।

कतरा—(सं पुं) कटो टुकुरा,
टोपाल ।

कटा हुआ टुकड़ा ।

बूंद ।

कतरान—(क्रि अ) कालबि कटो ।

किसी वस्तु या व्यक्ति को
बचाकर किनारे से निकल
जाना ।

कतल, कत्ल—[सं पुं] शत्रु ।
बध । हत्या ।

कतलाम, कत्लेधाम—[सं पुं]

गायूधिक शत्रुकाण्ड, नव-अंशव
जनसाधारण की हत्या ।

कताई—(मं स्त्री) झूठा कटो
कार्य ।

सूत कातने की क्रिया, भाव या
मजदूरी ।

कतार—(सं स्त्री) शारी ।
पक्ति, श्रेणी ।

कथ कड़—(वि) माधुकथा-कण्ठता ।
कथा कहनेवाला ।

कथनी—[सं स्त्री] कथा, मान-
नर्माण ।

कथन, हुज्जत, बकवाद ।

कथरी—(सं स्त्री) कैंथा (कटो
कापोरवेवे तैयारी) ।

गुदडी ।

कथानक—(सं पुं) कथा वञ्च ।
मूल कथा ।

कद—(मं पुं) आकार उछता, ।
आकार, ऊँचाई ।

(सं स्त्री)—शिंशा-द्वेष ।

द्वेष, हठ ।

कदम—[सं पुं] कदम गञ्ज, शोष ।
कदम्ब का पेड़ । पैर की फाल ।

कढ़—(सं स्त्री) माछा, शक्ति ।
मात्रा, मान प्रतिष्ठा, आदर ।

कदरदान, कदरदौ—(वि) यान
कदवाँडा, गुणवांशी ।

गुण ग्राहक ।

कदाकार—(वि) कूणगित,
कदाकार ।

बुरे आकार का ।

कदापि—(क्रि वि) केशिशाओ ।
कमी, हरगीज ।

कद्—[सं पुं] पानी लाटे ।
लौकी ।

कनकटा—[वि] काणकटा, झट्टे,
ठग ।

जिसका कान कटा हो, ठग ।

कन-कौआ—(सं पुं) ठिला
(काणखव) ।

कागज की पतंग ।

कनखजूरा—(सं पुं) बिछा ।

एक प्रकार का कीड़ा । गोजर ।

कनखी—(सं स्त्री) केबाहिँके चोरा ।

तिरछी नजर, आँख का इशारा ।

कन-टोप—(सं पुं) काण-टका-
टुँगी, वागव टुँगी ।

कान तक ढँकनेवाला टोप ।

कनपटी—(सं स्त्री) कूज,
काण टेश ।

कान और आँख के बीच का
स्थान ।

कनस्तर—(सं पुं) लिन, छापा ।
टीन का बड़ा पात्र ।

कनास—(सं स्त्री) डाँठ पोखर
पबदा ।

घेरे वाला बड़ा परदा ।

कनी—[सं स्त्री] टुकूबा, कथा ।
छोटा टुकड़ा, हीरे का बहुत
छोटा टुकड़ा ।

कनेठो—[सं स्त्री] कानयला ।
कान मड़ोरने की सजा ।

कपड़ा—(सं पुं) कापोख ।
वस्त्र ।

कपाट—[सं पुं] झराव ।
दरवाजा ।

कपाल-क्रिया—(सं स्त्री) ख दाख
गमसत नूब कुटोरा काथ ।
सिर फोड़ डालना ।

कपास—[सं स्त्री] कपाइ गछ ।
रूई का पौधा ।

कपिजल—[सं पुं] छातक, पानी
पिशा चवाई, पिपा चवाई
[कानकप]

चातक, पपीहा ।

कपिला—[सं स्त्री] बगी गछे ।
सफेद रंग की गाय ।

कपूत—(सं पुं) कू-पूत ।
बुरा लड़का ।

कपूर—[सं पुं] कथूर ।

सफेद रंग का सुगंधित द्रव्य ।

कपोत—[सं पुं] कपो छाई ।

कबूतर । (स्त्री-कपोती)

कपोल—(सं पुं) गोल ।

गाल ।

कपोल-कल्पना—(सं स्त्री) मन-

गती कथा ।

मनगढन्त या बनावटी बात ।

कफन—[सं पुं] शवका कापोर ।

शवाच्छादन ।

कबंध—[सं पुं] मूब नथका गाँबि,

मेथ ।

बिना सिर का धड़, बादल ।

कब—[क्रि वि] केतिया ।

किस समय ।

कबरी—(सं स्त्री) खोपा ।

स्त्रियों के सिर की चोटी ।

(वि) चितकबरी ।

कबाड़—[सं पुं] भड्डा-छिछा वस्तु ।

काम में न आनेवाली चीजे ।

व्यर्थ का काम ।

कबाड़—[सं पुं] जञ्जाल ।

भ्रम ।

कबाड़िया, कबाड़ी—(वि) धूर्तवा

वस्तु बेचा बेपारी, धूर्तवा ।

दूदी फूटी चीजे बेचनेवाला ।

भगड़ालु ।

कबाब—(सं पुं) भजा मांस ।

भूना हुआ मांस ।

कबायली—(सं पुं) प्राशरी खाति

पहाड़ी जाति ।

कबीला—(सं पुं) दल, कोना,

वंश लोकरकल ।

भुंड । एकवश के लोगों का

वर्ग ।

कबूल—(सं पुं) शीकाब ।

स्वीकार ।

कबूलना—(क्रि सं) शीकाब कबा ।

स्वीकार करना ।

कबाजा—(सं पुं) अधिकार । बाक,

छुराब-थिडिकी आदि नगोरा

लो वा पिठल कबा ।

अधिकार, इस्तिवार, पीतल या

लोहे का सन्दूक या किवाड़ में

लगाने का पेच ।

कबिजयत—[सं स्त्री] शौच

खोलोछा नोशोरा ।

पाखाना साफ न आना ।

कज—[सं स्त्री] कवव ।

जिस गड्ढे में शव गाड़ा जाता

है ।

कभी— (क्रि. वि.] कृत्रिमता ।

किसी समय ।

कमंडल— (सं. पुं) कण्डू ।

सन्यासियों का जलपात्र ।

कमखाब— (सं. पुं) अविश्व वेचनी

कादमी ।

एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

कमजोर— (वि.) शर्बल ।

दुर्बल ।

कमजोरी— (सं. स्त्री) शर्बलता ।

दुर्बलता ।

कमनीय— (वि.) सुमन ।

सुन्दर ।

कमर-बन्द— [सं. पुं] पेशी,

सैन्धवि ।

कमर पर बाँधने की पेट्टी या कपड़ा ।

कमरा— [सं. पुं] कोठा,

गोठाली ।

कोठरी,

कमल-नाल— [सं. पुं] अश्वत्थ

वृक्ष ।

मृणाल ।

कमली— (सं. स्त्री) गङ्गा कदम्ब ।

छोटा कदम्ब ।

कमाई— (सं. स्त्री) आय ।

कमाया हुआ धन । कमाने का काम ।

कमाऊ— [सं. पुं] उपार्जन

करवाता ।

कमाने वाला ।

कमान— (सं. स्त्री) धनुष ।

धनुष, फौजी आज्ञा ।

कमाना— (क्रि. अ.) यर्ज ।

उपार्जन करना ।

कमानो— (सं. स्त्री) धडी यापित

स्थिर ।

लोहे की लचीली तीली ।

कमाल— (सं. पुं) आनन्दविता,

आश्चर्य ।

निपुणता, अनोखा काम ।

कमीना— (वि.) नीच ।

नीच ।

कयाम— [सं. पुं] आश्रय स्थल,

निष्ठ ।

ठहरने की जगह, निश्चय ।

कयामत— (सं. पुं)

अष्टवि अक्षय दिन, अलम्ब ।

सृष्टि का अन्तिम दिन, प्रलय ।

कयास— (सं. पुं) अश्मान ।

अनुमान ।

करकट—(सं पुं) खाव ।

कूड़ा ।

करका—(सं पुं) गिल-नवयुग ।

ओला, गिलावृष्टि ।

करघा—(सं पुं) उषा-छेदकी ।

कपड़ा बुनने का यन्त्र ।

करतब—(सं पुं) कार्य, कर्तव्य ।

कार्य, कला ।

करतार-कर्तार—(सं पुं) जेवर ।

ईश्वर ।

करतूत—(सं स्त्री) काम, शङ्खविद्या ।

कर्म, करनी, हुनर ।

करघनी—(सं स्त्री) कर्कनि, सोपव

वा कपड़ ककालत पिंका शव ।

कमर में पहनने का एक गहना ।

करनी—(सं स्त्री) काम, श्रुतक-

संस्कार, वाङ्मिश्राव एविश
शुभी ।

कार्य, मृतक संस्कार, एक
औजार ।

करभ—(सं पुं) शतव पाछ-

तमूदा, शती वा उठेब पोवालि
हथेली के पीछे का भाग, ऊँट या
हाथी का बच्चा ।

करम-कल्ला—(सं पुं) बंश कवि ।

बंश गोभी ।

करवट—(सं स्त्री) काठिक

गोवा भूजा ।

हाथ या पार्श्व के बल लेटने की
स्थिति या मुद्रा ।

करवत—(सं पुं) कवत् ।

आरा ।

करवाल—(सं पुं) नख, उवावागल

नाखून, तलवार ।

करवीर—[सं पुं] कबवीर गछ,

उवावागल, अंगान ।

कनेर का पेड़, तलवार. श्मशान ।

करश्मा, करिश्मा—(सं पुं)

आचरित काम ।

अद्भुत काम । करामात ।

करामात—(सं स्त्री) चमत्कार,

आलौकिक कार्य ।

चमत्कार, अलौकिक कार्य ।

करार—(सं पुं) श्रिबता, वैश्या ।

स्थिरता, धैर्य, वादा ।

करार—(वि) कटोब, पृष्ठ ।

कठोर, तेज, बहुत कड़ा ।

कराहना—(क्रि अ) कैका ।

व्यथा सूचक शब्द करना ।

करि—[सं पुं] शती ।

हाथी । [स्त्री-करिणी]

करीना—(सं पुं) शव, उपाय ।

डंग, तरीका ।

करीब— (क्रि वि) ७८८, आश ।

समीप, लगभग ।

करेजा, कलेजा— (सं पुं) कलिषा

हृदय, हृदपिण्ड ।

करैस— [सं पुं] एविष विवाह

गोप । केटीगोप ।

काल' साँप ।

करोड़— (वि) करोड़ ।

सो लाख की संख्या ।

कर्ज— [सं पुं] शान, श्रव ।

ऋण ।

कर्तरी— (सं स्त्री) कैटि ।

कैची, कटारी ।

कर्दम— [सं पुं] बोका ।

कीचड़, पाप ।

कर्मकार— [सं पुं] कमाव ।

लोहे का काम करनेवाला, नौकर

कर्षक— (सं पुं) खेतिग्रक ।

किसान, (विन) खींचनेवाला ।

कलंदर— (सं पुं) शूचनमान गांधू,

डानूक, वानव आदि नट्टाउता ।

मुसलमान फकीर, भालू और

बन्दर नचाने वाला ।

कल— (सं पुं) मधुव श्वनि, कालि

मधुर ध्वनि ।

कलई— [सं स्त्री] बगिताव ।

मुलम्मा, चमक-दमक ।

कल-कंठ— (सं पुं) झुलि चबाई

कोयल, हंस [वि] कलकल ।

मीठी ध्वनि करनेवाला ।

कलगी— [सं स्त्री] टूपी, पाणवी

आमिर लंगोटा चबाईव पांवि ।

टोपी, पगड़ी आदि में लगाया

जानेवाला पक्षियों के पर या

गुच्छे ।

कलदार— (सं पुं) पौंछ थका, टका

जिसमें कल या पेंच लगा हो ।

रुपया ।

कलधौत— (सं पुं) गोप-रूप ।

सोना, चाँदी ।

कलप— (सं पुं) गृह्य शास्त्र,

गोपब गोपि ।

कलफ, सिजाब ।

कलमुँहा— (वि) कलकित ।

कलंकित, अभागा ।

कलारव— [सं पुं] मधुव श्वनि ;

झुलि चबाई ।

मधुर शब्द, कोयल ।

कलवार— (सं पुं) एक गद बारगात्री

धाति ।

एक जाति जो शराब बनाती

और बेचती है ।

कलस, कलसा—[सं पुं] कलश,
मणिबन हुआ ।

घड़ा, मन्दिर का शिखर ।

कलई—[सं पुं] काजिया ।
भगड़ा ।

कला—(सं स्त्री) अंश, छत्रब बोल
भागब एभाग; कोशल, निपु-
नता, विद्वति ।

अंश, चन्द्रमा या सूर्य का भाग,
कोशल, निपुणता, विभूति,
कीर्तक ।

कलाई—(सं स्त्री) आखिन, मणिबन
हाथ का गढ़ा । मणि बंध ।

कलाकंद—(सं पुं) बबकौ, एबिध
मिठाई । बरफी मिठाई ।

कलाधर—(सं पुं) ध्यान, छत्रमा ।
चन्द्रमा ।

कलाप—(सं पुं) गमूश, गदूब
पांथि, तूनीर ।

समूह, मोर की पूँछ, तूनीर ।

कलापी—(सं स्त्री) गदूब, कुलि
चवाई ।

मोर, कोयल ।

कलाम—(सं पुं) बाक्य, कटवाप-
कथन, आगति ।

वाक्य, बातचीत, एतराज ।

कलावा—(सं पुं) शूतार लेहा,
लेहेवा, शतीर गल ।

सूत का लच्छा, हाथी की गरदन

कलि—(सं पुं) काजिया, यूँज,
कलियुग ।

कलह, पाप, संग्राम, कलियुग ।

कलिया—(सं पुं) मांगव आञ्जा ।
पकाया हुआ मांस ।

कली—(सं स्त्री) कुलब कलि ।
बिना खिला फूल ।

कलुष—(सं पुं) पाप, अधर्म ।
मलीनता, पाप, क्रोध (वि) मलिन,
वैद्य । मलिन, बुरा ।

कलेजी—(सं पुं) हांगलीर कलि-
जाब मांग ।

बकरे के कलेजे का मांस ।

कलेवर—[सं पुं] देह, शरीर,
आकृति, आकार ।

शरीर, ढाँचा, आकृति ।

कलेवा—(सं पुं) जलपान ।

जलपान, विवाह का एक रस्म ।

कलैया—(सं स्त्री) कूडी ।
कलाबाजी ।

कलोल—(सं पुं) आनन्द-अनन्द ।
आमोद प्रमोद ।

कलौजी—(सं पुं) कालजिवा, विनैव
धरण बहा उबकाबी ।

मंगलीर, भूनी हुई मसालेदार
तम्कारी ।

कल्प—(सं पुं) गमयत्र विभाग, जम्माव
एदिन याक एवाति अर्थात् १०००
शृंग वा ४,७२०,०००,००० बछर ।
विधान; वेदों के छ अंगों में से
एक, काल का एक विभाग ।

कल्पांत—[सं पुं] अन्त्य ।
प्रलय ।

कल्मश—(सं पुं) पाप, मल ।
पाप, मल ।

कल्लर—(सं पुं) नृगोश गान्ति ।
लोनी मिट्टी, ऊसर भूमि ।

कल्लोल—[सं पुं] लो, वः-क्षेपालि ।
तरंग, आमोद-प्रमोद ।

कवच—(सं पुं) बन्धुवाइ गात्र पिक्का
लोब-आवरण, मादली, ताविछ ।
किमी चीज का ऊपरी कड़ा
आवरण, लोहे का वह आवरण
जो योद्धा पहनते, ताबीज ।

कवर—(सं पुं) ठूलिब धोपा । आच्छा-
दन । केश पाश, गुच्छा,
आवरण ।

कवक्षित—(वि) अग्नित, कवलत
परि थका ।

खाया या निगला हुआ ।

कवायद—(सं स्त्री) नियम, वाक्वच,
कूट-कावाड ।

नियम, व्याकरण, सैनिकों के
युद्ध अभ्यास की क्रिया ।

कश [सं पुं] चाबुक, मोश, कार्श ।
चाबुक; खिचाव, हुक्के या चिलम
का दम ।

कशा—(सं स्त्री) जवि, चाबुक ।
कोडा ।

कप—(सं पुं) गन्, कषाति ।
मान कलौटी, जांच ।

कस—(सं पुं) गेगा-गेनि, बिदेचना
खीच-तान, जांच बम, रोक ।

कसक—(सं स्त्री) मृत्-व दमाबाण,
द्वेष, भडिलास ।

हलका सा दर्द, दुःख, अभिलाषा ।

कसकना—[क्रि अ] दिन्-विमटेक
विदेखावा ।

हलका दर्द करना ।

कसना—(क्रि अ) थुन गेनि बका,
हेंचि हेंचि डःपवा ।

खींचकर बांधना, ठूसकर भरना ।

कसबा, कसबा—(सं पुं) डाडव उन्नत
गाँव ।

शहर से छोटी और गाँव से
बड़ी वस्ती ।

कसर—[सं स्त्री] ङाति ।

न्यूनता, अभाव ।

कसरत—(सं स्त्री) व्यायाम ।

व्यायाम ।

कसार—[सं पुं] पिठाशुबिब लाडू ।

चावल-चूर्ण का बना लड्डू ।

कसीदा—(सं पुं) काटोवत कूज

ढोला काग ।

कपड़े पर बेल वृटे का काम ।

कसूर—[सं पुं] दोष, जगन ।

अपराध, दोष ।

कसेरा—[सं पुं] केशव ।

कासे का बरतन बनाने वाला ।

कसैला—(वि) केश ।

जिमके स्वाद में कसा-पन हो ।

कसैली—(सं स्त्री) दूपावि ।

सुपारी ।

कसौटी—(सं स्त्री) कसाटि, पर्वीक

एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की उत्तमता परखते हैं । जांच, परख का तत्व

कहूँ—[क्रि. वि] क'त ।

कहाँ ।

कहना—(क्रि सं) कोढ़ा ।

बोलना । सूचना देना ।

कहर—(सं पुं) विपत्ति ।

विपत्ति (वि) डीयन ।

भीषण, अपार ।

कहवा—(सं पुं) यथेष्ट ।

काफी ।

कहाँ—(क्रि. वि) क'त ।

किस जगह ।

कहानी—(सं स्त्री) गन्न ।

कथा, झूठी मनगढ़न्त बात ।

कहार—(सं पुं) एक नीच जाति ।

एक नीच जाति ।

कहावत—(सं स्त्री) किश्मिती,

कथित कथा ।

लोकोक्ति, कही हुई बात ।

कहा-सुनी—[सं स्त्री] वाद-विवाद ।

वाद-विवाद ।

कही—[सं स्त्री] उपदेश, कोढ़ा

कथा ।

उपदेश, कथन ।

कौइयाँ—(वि) छट्ठ ।

चालाक, धूर्त ।

कौख—(सं स्त्री) काबलति ।

बगल ।

कौखना—(क्र अ) झूठे उद्देश-

याह कबा ।

श्रम या पीड़ा से उँह-आँह आदि

शब्द करना ।

कॉष—[सं स्त्री] धुँडोव गूठ ।
घोती का वह भाग जो पीछे
खोस जाता है । (सं पुं)
आँछि । शीशा ।

काँची—(सं स्त्री) शूशुछा ।
करधनी, घुँघची ।

काँजी—[सं स्त्री] पैर पानो
वा धोत ।
पीसी राई आदि डालकर बनाया
गया खट्टा रस । मट्ठा ।

काँटा—(सं पुं) काँशेट, गजान ।
कंटक, लोहे की कील, लम्बी
नुकीली वस्तु ।

कांड—(सं पुं) माथा, थुँ ।
पोर, वृक्ष का तना, गाखा,
भगड़ा, विवाद ।

कांत—(सं पुं) पति, ज्ञान, एक
प्रकार का लो ।
पति, चन्द्रमा, एक प्रकार का
लोहा (वि.) खूबसूरत । सुन्दर,
प्रिय ।

कांवा—(सं स्त्री) खूबसूरत बगै,
पत्नी ।

सुन्दरी स्त्री, पत्नी ।

कांतार—(सं पुं) शक्ति ।
वन ।

कांति—[सं स्त्री] शक्ति, लोभा ।
दीप्ति, शोभा ।

कांपना—(क्रि अ) कंपना ।
कंपित होना ।

काँवर—(सं स्त्री) बाँकुरा ।
बहेंगी ।

काँस—[सं स्त्री] कून् ।
एक प्रकार की लम्बी घास ।

काँसा—[सं पुं] काँश, तिन,
आकृति तान मिशलाई कबा
एविध शब्द ।
एक प्रकार की मिश्र धातु ।

कांस्य—[वि] काँशट्टे टैडवाबी ।
काँस का बना हुआ ।

का—(धि) गद्यक कारक वा शब्दों
विभक्ति का चिह्न ।
सम्बन्ध कारक का चिह्न ।

काई—(सं स्त्री) शेरूटै ।
पानी में होनेवाली एक प्रकार
छोटी घास, मैल । सं पुं काँडेबी.कोवा

काक-तालीय—(वि) काका
पविन, डालो गबिल ।
केवल संयोगवश होनेवाला ।

काक-पक्ष—(सं पुं) शरीर
लिखित देखा योवा नक्षत्र उपवत्
लिखित कबा चिन, काग अंत ।

कान के ऊपर रखे जानेवाले बाल के पट्टे ।

काकु—(सं पुं) बाघ ।

व्यंग्य, वक्रोक्ति ।

काङ्क—(सं स्त्री) काँच, कैकालव तलव पत्र। डूबगैलके किछु अंश । क्षुब्ध लेशति । पेडु ओर जाँघ तथा उसके नीचे का भाग । धोती का पीछे खोसा जानेवाला भाग ।

काछना—(क्रि.सं) उबल पदार्थ हाटते या बलि मारि डेठार। तरल पदार्थ हाथ से पोछकर उठाना ।

काट—(सं पुं) काटन ।
काटने की क्रिया या भाव ।

काटना—(क्रि.सं) ठूँसि आपिदे ठूँसवा ठूँसवि ठेक कठो । छूरी आदि से खड खंड करना ।

काठी—(सं स्त्री) चौड़ाव औन । घोड़े की जीन ।

काढ़ना—(क्रि.सं) टानि डेलिउरा, काटपावत बेजि शूतावे कुल डोल ।

निकालना, बेलबूटे कपड़े पर बनाना

काढ़ा—[सं पुं] कष्ट, वग ।
क्याथ । रस ।

कातना—(क्रि.अ) शूता कठो । चरखे, तकली आदि पर सूत बनाना ।

कातिब—(वि) लिखक ।
लेखक ।

कासिल—(वि) शूताकादी ।
घातक, हत्यारा, भयंकर ।

कादंबरी—(सं स्त्री) कुलि चबाई, गवश्चडी, यद ।
कोथल, सरस्वती, मदिरा ।

कादंबिनी—(सं स्त्री) कंला डानव ।
काले बादलो का समूह ।

काना—(वि) कथा ।
जिसकी एक आँख फूट गयी हो ।

काना-फूसी [सं स्त्री] कुच-कुठनि कानो मे धीरे कही गयी बात ।

कानि—[सं स्त्री] लोकलाष ।
लोक लज्जा ।

कानून—[सं पुं] जाइन ।
राज नियम, विधि ।

कानून दौं—(वि) जाइनछ ।
कानून का ज्ञाता ।

कापी—(सं स्त्री) अतिलिपि, नशी नकल, प्रतिलिपि लिखने की बही

काफिया—(सं पुं) मिल. विद्यान्वी
पदार्थ ।

तुक ।

काफिर—(वि) विश्वर्षी, नास्तिक ।
विधर्मी, नास्तिक ।

काफिला—(सं पुं) यात्रीव जल ।
यात्रियों का दल ।

काफी—(वि) यथेष्टे ।
यथेष्ट, पूरा ।

काबिल—(वि) श्रेष्ठयोग्य ।
योग्य, विद्वान् ।

काबू—(सं पुं) वश ।
वश, अधिकार ।

काम-चलाऊ—(वि) निपटाने वाला ।
जिससे किसी भी काम निकल
सके ।

काम-चोर—(वि) धनचोर ।
आलसी ।

कामदार—[सं पुं] कर्मचारी,
कर्मचारी, अमला (वि) कुल
तोना काटनेवाला । बेल-बूटे वाला
(कपड़ा)

कामयाब—(वि) गफल ।
सफल ।

कामयाबी—(सं स्त्री) गफलता,
कृतकार्यता । सफलता ।

कामर, कामरी—(सं स्त्री) कपल ।
कम्बल ।

कामला—(सं पुं) पाण्डु-रोग ।
कमल या पाण्डु रोग ।

कामांध—(वि) काम-वासना भक्त ।
जिसे काम वासना में भले बुरे
का ज्ञान न हो ।

कामायिनी—(सं स्त्री) अम्बा ।
श्रद्धा ।

कामारि—(सं पुं) महादेव ।
शिव ।

कामिल—(वि) पूर्ण ।
पूरा योग्य ।

कायदा—[सं पुं] कोशल, वीति ।
विधि, चाल, रीति ।

कायम—स्थापित, निर्धारित ।
स्थिर, स्थापित, निर्धारित ।

कायर—(वि) डीक ।
डरपोक, भीरु ।

कायल—(वि) नश्वर शीकाव
करवाता ।

जिसने प्रभावित होकर बात
मान ली हो ।

काया—(सं स्त्री) नवीन, काश ।
शरीर ।

काथापलट—(सं पुं) आमोन
परिवर्तन ।

बहुत बड़ा परिवर्तन ।

कार-कुन—(सं पुं) कार्य-कर्त्ता ।
प्रबंध कर्ता, कारिन्दा ।

कारगुजार—(वि) अनिगुण ।
अच्छी तरह काम पूरा करनेवाला ।
कारणिक—(वि) कावण गश्की ।
कारण संबंधी ।

कारतूस—(सं पुं) टोटा, बन्दूकब
छलि ।
बन्दूक की गोली ।

कारवाई—(सं स्त्री) कार्य-
उपपत्ति, कर्म, कोनो
आडयोगब विचारत गनुचित
पहु विधान ।
काम, कृत्य, कार्य तत्परता, चाल,
किसी अभियोग पर विचार कर
उचित विधान करना ।

कार-साज—(वि) चालाक-छद्म ।
बिगडा काम बनाने की युक्ति
निकालनेवाला ।

कारस्तामी—(सं स्त्री) अडावण ।
कारसाजी, चालबाजी ।

कारा—(सं स्त्री) बहन, काबागाव,
दुःख-कष्ट ।

बन्धन, कारागार, पीड़ा ।

कारागार, कारागृह—(सं पुं) बन्दी-
शाल, काटक ।

बन्दी गृह ।

कारावास—[सं पुं] बन्दी शै
थका, अवस्था काबागाव ।
बन्दी रहना ।

कारिन्दा—[सं पुं] गोमछा,
कर्मचारी ।
गुमास्ता ।

कारीगर—(सं स्त्री) काबिकब, शिल्प
कार (वि) निम्न कार्यात निगु-
णता । हस्त शिल्प में निपुण ।

कारु—[सं पुं] निम्नी ।
शिल्पी ।

कारुणिक—[वि] पद्माशू ।
जिसे देखकर करुणा उत्पन्न हो,
कृपालु ।

कारु—(सं पुं) धनी, किछु रूपव ।
बहुत बड़ा धनी, पर कंत्रूस
[मु] कारु का खजाना अडुल-
गम्पछि । अनन्त सम्पत्ति ।

कार्मुक—(सं पुं) धेशू, बाव-
धेशू ।
धनुष, इन्द्र-धनुष ।

कार्यवाही—(सं पुं) कोनो
कावब पाशिक लउता ।
कार्य का उत्तर दायित्व लेनेवाला

(सं स्त्री) कार्याविधि । कोई कार्य करनेकी प्रक्रिया [अं-प्रोसीडिंग] ।
कार्यान्वित—(वि) कायत लागि थका, कायत पविणत करा ।
 कार्य या काममें लगा हुआ ।
 (अं-एन फोर्ड) प्रत्यक्ष कार्य के रूपमें किया हुआ (अं-कैरिड बाउट) ।
कालकूट—[सं पुं] गबल, याक खाले आण याय ।
 भयंकर विष ।
काल-कोठरी—(सं स्त्री) कावा-गोबर गरु कोठा ।
 जेल खाने की छोटी कोठरी ।
काल-चक्र—[सं पुं] कालच चक्रि काल (श्रुत्य) कप अश्रु ।
 समय का हेर फेर, एक अस्त्र ।
काल-बंजर—[सं पुं] शुन्याष्टि ।
 वह भूमि जो बहुत दिनों से जोती न गयी हो ।
काल-रात्रि—(सं स्त्री) यक्षकाव, उग्रवद, बाति, जम्माव बाति ।
 अन्वेरी और भयावनी रात, ब्रह्मा की रात ।
काला—(वि) क'ला ।
 कौयले के रंग का ।

काला-कलुटा—(वि) जलजल क'ला ।
 बहुत ही काला ।
कालापानी—[सं पुं] निर्वागन पण, मण ।
 देश निकाले का दण्ड, शराब ।
काला भुजंग—(वि) रव क'ला ।
 बहुत काला ।
कालिंदी—[सं स्त्री] यमुना नदी, आकिं ।
 यमुना नदी, अफीम ।
कालिका—(सं स्त्री) काली गोगानौ ।
 काली देवी ।
कालिख—(सं स्त्री) छियाँझो, एलाझू, धूएँ के जमने से बनने वाला काला अंश ।
कालिमा—(सं स्त्री) कलक ।
 कालापन, अन्धेरा, कलंक ।
कालीन—(सं पुं) गमग, दलिछा ।
 गलीचा ।
कालीमिर्च—खानूक ।
 गोल मिर्च ।
काश—(सं पुं) कूश, शैति ।
 एक प्रकार की घास, खासी ।
काशी-फल—(सं पुं) कोशोवा ।
 कुम्हड़ा ।

काश्त—(सं स्त्री) खेति, खसि-
पावक बाँटना जि खेति
कराव अधिकार ।
खेती, जमींदार को लगान देकर
उसकी जमीन पर खेती करने
का स्वत्व ।

कास्तकार—(सं पुं) खेतिग्रह ।
किसान, काश्त लेने वाला ।

काषाय—[वि] गेरुआ ।
गेरुआ ।

कासा—(सं पुं) बाँति, माधु
गनाशोब नाबिकलब खोला ।
प्याला, फकीरों का नारियल का
पात्र ।

काहिल—(वि) श्रवण ।
मुसुन ।

काहु, काहू—(सर्व) कोटना ।
किसी, किसी को ।

काहे—(क्रि वि) क्रिय ?
क्यों ? किसलिये ।

किंकर—(सं पुं) दाग ।
दास, राक्षसों का एक वर्ग ।

किंकिणी—(सं स्त्री) कर्कनि,
सोप वा कपड ककालत पिछा
शव ।

छोटी घंटिका, करघनी ।

किंगरी—(सं पुं) पोतावा ।
छोटी सारंगी ।

किंजल्क—(सं पुं) पशुमव, केसर
कमल का केसर, कमल (वि)
पशुम ववगीया । कमल के केसर
के रंग का ।

किंशुक—(सं पुं) पलाश ।
पलाश ।

कि—(सर्व) क्रिय, केनेटके ।
क्या, किस प्रकार ।

(अव्यय) ये नाइवा ।

एक संयोजक शब्द जो
कहना, देखना आदि क्रियाओं के
बाद विषय वर्णन के पहले
आता है । इतने में, या ।

किच किच—(सं स्त्री) अनर्थक
बाक्-विडु ।
व्यर्थ का बाद-बिवाद ।

किचड़ाना—(क्रि अ) चकूत केटाव
[केँचकूवि] पवा ।
आँख कीच से भरजांना ।

किट किटाना—[क्रि अ] खंडते
झाँत काटोवा ।
क्रोध से दाँत पीसना ।

किट्ट—(सं पुं) गलि ।
मैल ।

कितना—(वि) कितान ।

किस परिमाण,—मात्रा या संख्या का, अधिक (क्रि वि) किस परिमाण-मात्रा या संख्या में ? अधिक ।

किता—(सं पुं) ठिलाई कबिबटेल कोठा काटोवा, शबल, गश्ता ।
सिलाई के लिये कपड़े की काट ।
ढंग, संख्या ।

किताब—(सं स्त्री) किताप ।
पुस्तक ।

किताबी—(वि) कितापव आकारन,
किताप गश्कीय ।
किताब के आकार का, किताब सम्बन्धी ।

कितिक, कितेक, केतिक—(वि)
कितान । कितना ।

किधर—[क्रि वि] कोन फाले ?
किम ओर ?

किधौ—[अव्य] नाथेवा, किछानि ।
अथवा, न-जाने ।

किन—[सर्व] कोनबोव, । किस शक्य बलवचन । 'किस' का बहु वचन । (क्रि वि) किम नश्य, यदि । क्यों नहीं, चाहे ।

किनारदार—[वि] भाविबूछ ।

जिसमें किनारा बना हो ।

किनारा—(सं पुं) पाव, डोले ।
किसी वस्तु का अन्तिम सिरा, तट ।

किनारे—(क्रि वि) पावड ।
सिरे पर, तट पर ।

किन्नर—(सं पुं) कूटवव पाविषन,
प्रेमलोकव प्रायन ।
एक प्रकार के देवता, गाने वजाने वाली एक जाति ।

किफायत—(सं स्त्री) मि ७नाय ।
मितव्यय ।

किफायती—(वि) मिठवायी ।
मित व्ययी, मस्ता ।

कियारी, क्यारी—(सं स्त्री) शम्पा ।
खेत की पोथे रोपे जानेवाली पंक्ति ।

किरकिरा—(वि) शब्द-शनीशा,
कदकबीया ।

जिममें महीन ओर कड़े बालू के रवे पड़े हों ।

किर-किगी—(सं स्त्री) कूठा, कलि-कणा ।

धूल या तिनके के कण । अपमान ।

किरच, किरचा—[सं स्त्री] अविश दोषल तबोदाज ।

एक प्रकार की सीधी तलवार ।

छोटा नुकीला टुकड़ा ।

किरणमाळी—(सं पुं) श्रृंखला ।

सूर्य ।

किरमिच—(सं पुं) एविश डाँठ कापोब (इयादेब खोता, तबू आदि डैय्याब कबा हय) ।

एक प्रकार का मोटा कपड़ा (अ—कन्वस)

किराना—(सं पुं) शालबी, जल-कौशा, निमख आदि मछली । हन्दी, मिचं आदि मसाले ।

किराया—(सं पुं) भाड़ा । भाड़ा ।

किरायेदार—(सं पुं) भाड़ात बन्ध लउंठा ।

किराये पर कोई चीज लेनेवाला ।

किरिया—(सं पुं) मपत । मपथ ।

किरीट—(सं पुं) किरीटि । सिरपर पहनने का एक आभूषण ।

किलकना—(क्रि. अ) श्व'क्षनि कवा हर्षं ध्वनि करना ।

किलकारी—(सं स्त्री) श्व'क्षनि । हर्षं ध्वनि ।

किलानी—(सं पुं) ठिक्का ।

पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक छोटा कीड़ा ।

किला—(सं पुं) शर्ग । दुर्ग ।

किलेबन्दी—(सं स्त्री) शर्ग गवा काम ।

किले बनाने का काम ।

किल्लत—[सं स्त्री] कम । कमी, तंगी ।

किल्ली—(सं स्त्री) खूँटो ; खिला । खूँटी, सितकिनी ।

किबाड़—(सं पुं) श्वाब । दरवाजा ।

किशलय—(सं पुं) गह्वर कूँशिबात । नये कोमल पत्ते ।

किशती—[सं स्त्री] नाउ, किछि दबब जिहा पीछ । नौका ।

किस—(सर्व) कान । 'कौन' और 'क्या' का विभक्ति युक्त रूप ।

किसान—(सं पुं) खेतिग्रक । खेतिहर ।

किसी—(सर्व) कानो । 'कोई' का विभक्ति युक्त रूप ।

किस्त—(सं स्त्री) किछि ।

कई बार करके ऋण आदि
चुकाने का ढंग । ऋण का वह
भाग जो इस तरह चुकाया जाय ।

किस्म—(सं स्त्री) प्रकार ।

प्रकार, ढंग ।

किस्मत—(सं स्त्री) भाग्य ।

भाग्य ।

किस्सा—[सं पुं] कहानी, बृत्तान्त ।

कहानी, वृत्तान्त ।

कीचड़—(सं पुं) बोक ।

पंक, किसी चीज का गाढा मैल ।

कीड़ा—(सं पुं) पोक, गाय ।

कीट, साँप ।

कीमत—[सं स्त्री] दाम ।

मूल्य, महत्व ।

कीमती—(वि) मूल्यवान् ।

बहुमूल्य ।

कीमिया—(सं स्त्री) रसायन ।

रसायन ।

कीर—(सं पुं) भाँटो ।

तोता ।

कीड़ा—(सं स्त्री) गण्ड ।

लोहे या काठ का बना काँटा ।

कीलास—[सं पुं] पानी, तैल,
अशुद्ध ।

पानी, रक्त, अमृत ।

कीली—[सं स्त्री] शिल ।

चक्र के बीच की कील । ब्योड़ा ।

कीश—(सं पुं) वानर ।

बन्दर ।

कुँआरा, कुँआरी—(वि) अविवाहित ।

अविवाहित ।

कुँकुम—(सं पुं) काँधीव पेशत

घोरा । एविष सूत्रकि शालबीजा

कुलव डकान केनव बा गुवि ।

केसर, गेली ।

कुँजड़ा—(सं पुं) गाँव-पेठानि

वेठा जातव माशुष्ट ।

तरकारी बेचनेवाली एक जाति ।

कुँजर, कुँजल—(सं पुं) शडी ।

हाथी ।

[वि] श्रेष्ठ ।

श्रेष्ठ ।

कुँजी—(सं स्त्री) चानि निगाव पूषि ।

चावी, टीका-मुस्तक ।

कुँडल—(सं पुं) कंठिका । काँध

पिका अलहाद

कान में पहनने का गहना ।

वृत्त का घेरा

कुंडली—(सं स्त्री) अश्व शिखि-
शृङ्ख चक्र, जौदबगौ, जाटप
रुधरा मेकम्पाई थका भूजा ।
ग्रह-स्थिति सूचक चक्र । साँप के
गोलाकार बैठने की मुद्रा ।

कुंडा—(सं पुं) डाँडर नाटिब
कलश । शिकलि ।

बड़ा मटका, दरवाजे की चौखट
में सांकल लगाने का कौंठा ।

कुंठल [सं पुं] मूब रूलि ।
सिर के बाल ।

कुंद्—(सं पुं) थविका जौंटे, पंथम ।
जूती की तरह का एक पौधा,
कमल, (वि) कुठित ।
कुंठित ।

कुंदन—(सं पुं) विशुद्ध सोण ।
शुद्ध सोना ।

(वि) निबोत्र । नी रोग ।

कुंभ—(सं पुं) नाटिब कलश ।
मिट्टी का घड़ा ।

कुंभी पाक—[सं पुं] गबरु ।
नरक ।

कुंवर, कुंअर—(सं पुं) कौंदर ।
लडका, पुत्र राजपुत्र ।

कुंकुर मुत्ता—(सं पुं) काँठकुला ।
बेच्छता ।

एक प्रकार की बदबूदार खमी ।

कुक्कुट—(सं पुं) कूकुरा ।
मुरगा ।

कुक्कुर—(सं पुं) कूकुर ।
कुत्ता ।

कुक्षि—(सं स्त्री) पेट ।
पेट, उदर ।

कु-घात—(वि) कू-अरगव, बेगाटेक
आशुत ।

बेमौका, बुरी तरह से किया
हुआ घात ।

कुच—[सं पुं] थियाइ, खन ।
छाती, स्तन ।

कुचक्र—[सं पुं] षड्यज्ञ ।
षड्यन्त्र ।

कुचलना—(क्रि अ) डविबे गचकि
पेलोवा ।

पैर से रौदना ।

कुचाल—(सं स्त्री) अगए आचरण ।
बुरा आचरण, शरारत ।

कुचैला—(वि) लेटववा, मलिशन ।
मैले कपड़ोवाला, मैला ।

कुछ—(वि) किछुमान, अनपमान ।
थोड़ी संख्या या मात्रा का ।

थोड़ा-सा । मान्य ।

(सर्व) कोनावा । कोई ।

कुजाति—(सं स्त्री) अजाति ।
बरी जाति ।

[सं पुं] जवातिब वा जाति
वशिष्ठ मांशु । बुरी जाति
का या जातिसे बहिष्कृत आदमी ।

कुट- (सं पुं) श्व, दुर्ग, कलश ।
घर, गढ़, कलस । कूटकर बनाया
हुआ खंड ।
(सं स्त्री) एविश शृङ्खल पुलि ।
एक पौधा ।

कुटना- [क्रि अ] धूक-धूकटेक नको ।
कूटा जाना (सं पुं)
धूलनि बाबि, ठेकी
ठोना ।
कूटने का ओजार ।

कुटनी, कुटनी- (सं स्त्री) वेष्टाद
पालान; थबिगाल लंगोरा
डिबोडा ।
स्त्रियों को बहकाकर परपुरुषसे
मिलानेवाली । भगड़ा कराने
वाली ।

कुटिया, कुटी, कुटीर- (सं स्त्री)
कूतिन, पंजा श्व ।
भोंपड़ी ।

कुटिलार्ह- (सं स्त्री) कुटिलता ।
कुटिलता ।

कुटेव- (सं स्त्री) वेष्टा अभाज ।
बुरी आदत ।

कुट्टी- (सं स्त्री) कूठा बाँश । कठो
कागव-पत्र ।
चारेके छोटे छोटे टुकड़े । कूटा और
सड़ाया हुआ कागज ।

कुठला(स्त्री-कुठली)- (सं पुं) डूलि ।
अनाज रखनेका मिट्टी का बड़ा
बरतन

कुठाँव- [सं स्त्री] यथल ।
बुरी ठौर ।

कुठाली- (सं स्त्री) यथी । गोगाबीर
गोग, कप अग्नि शलाका
पात्र । सोना चाँदी गलाने की
मिट्टी की घरिया ।

कुठौर- (सं पुं) देगा ठाँह;
कूजवगव ।
बुरी जगह, बेमौका ।

कु-डौल- (सं पुं) कूकप ।
वेडंगा ।

कु-डंग- (सं पुं) वेष्टा गठ-गति;
कूकठ ।
बुरा डंग ।

कु-डंगा- (वि) वेष्टा श्वगव; कूकठ ।
जो काम करने का डंग न
जानता हो, भद्दा ।

कु-डंगी- (वि) कू-वाचवगव ।
बुरे चाल चलन का ।

कुड़(न)—(सं पुं) अछनब आला ।
मन ही मन होनेवाला दुःख ।

कुड़ना—(कि. अ) छितवि छितवि
अलि-पुवि बबा ।
मन ही मन दुख करना या
खीझना ।

कुटरना—(कि स) दाँठवे कूटे ।
दाँतों से छोटा टुकड़ा काटना ।

कुतुष—[सं पुं] अर-तबा ।
धुवतारा ।

कुतुषनुमा—(सं पुं) दिग्दर्शकयज्ञ ।
दिग्दर्शक यन्त्र ।

कुतूहल—(सं पुं) कोतूहल, नेदधे
बच्च देखिवेले वा श्रुतना कथा
अनिबटेल ईच्छा ।

किसी चीज का देखने या सुनने
की प्रबल इच्छा । आश्चर्य ।

कुत्सा—(सं स्त्री) निन्दा ।
निन्दा ।

कुदरत—(सं स्त्री) अकृति; ऐश्वरिक
शक्ति ।

प्रकृति, शक्ति । ईश्वरी शक्ति ।

कुदान—(सं पुं) वेद्या दान ।
बुरा दान ।

(सं स्त्री) अपिठवा कार्य ।

कूदने की क्रिया या भाव ।

कुधर—(सं पुं) पाशव, अनख नाग ।
पहाड़, शेषनाग ।

कुनबा—(सं पुं) यात्रीय अजन ।
कुटुम्ब; परिवार ।

कु-पथ—[सं पुं] कू-पथ ।
बुरा मार्ग, बुरा मत ।

कु-पात्र—(वि) कू-पात्र; अनाशक;
अपात्र ।
बुरा पात्र, नालायक ।

कुप्पा—(सं पुं) तेल, बिटे आदि
बन्धी बाटन—कूपा ।
घी, तेल रखने का बरतन ।

कुफ—(सं पुं) ईशलात्र भिन्न मत ।
इस्लाम से भिन्न मत ।

कुबड़ा—(वि) कूँड़ा ।
जिसकी पीठ टेढ़ी या मुकी
हुई हो ।

कुबड़ी—[सं स्त्री] जाँकोबा टोकोन ।
वह छड़ी जिसका सिरा मुका
हुआ हो ।

कु-बोल—(सं पुं) अशुभ-कथा ।
बुरी, अनुचित या अशुभ बात ।

कुभाव—[सं पुं] कू-छिछा ।
बुरा या दुष्ट भाव ।

कुमक—[सं स्त्री] गहायता ।
सहायता, सैनिक कार्य के लिये

या सैनिक आदि के रूप में मिलनेवाली सहायता ।

कुमाच—[सं पुं] एविष वेशमी काटपाव ।

एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

कुमार्ग, कुमारग — (सं पुं) अपथ ।

बुरा मार्ग, अधम ।

कुमुद—[सं पुं] डेढूँट फूल ।

कमल जो रातको खिलता है

कुम्हलाना—(क्रि अ) मरहि सोदा ।

मुरझाना, सूखने पर होना, कांति हीन होना ।

कुम्हार—(वि) कुंआव ।

मिट्टी के बरतन बनानेवाला ।

कुरंग—(सं पुं) उविष ।

हिरन ।

कुरकुरा—(वि) शीघ्रत शोदा मन्-मन् शब्द ।

जिसे खाने पर कुरकुर शब्द हो ।

कुरता—(सं पुं) काविज ।

कमीज ।

कुरबान, कुर्बान—(वि) उद्गर्ग । निछावर ।

कुरबानी, कुर्बानी—(सं स्त्री) बलिदान, यात्रादान ।

बलिदान ।

कुररी—(सं स्त्री) एविष छाई ।

एक पक्षी ।

कुरसी—(सं स्त्री) टकौ ।

बैठने की चौकी ।

कुराह—(सं स्त्री) कू-अथ, अगपथ बुरी राह ।

कुरेदना—(क्रि अ) थान्न ।

खुरचना, खोदना ।

कुर्क—(वि) कुरम्क, कोढाक ।

जिसकी कुर्की हुई हो । जन्त ।

कुर्की—(सं स्त्री) कोढाकौ, कुरम्कौ ।

ऋण आदि न चुकाने पर राज्य द्वारा होनेवाला किसी की सम्पत्ति पर अधिकार ।

कुर्मी, कुरमी—(सं पुं) कृषिजीवी एक जाति ।

तरकारी बोलनेवाली एक जाति ।

कुल—(सं पुं) जाति वंश, गमूद । वंश, जाति, समूह ।

(वि) गर्वग्रूठ । समस्त, सारा ।

कुल-कानि—[सं स्त्री] कूल-मर्यादा ।

कुल की मर्यादा ।

कुलटा—(वि स्त्री) अगप-याचवण काविनी । बदचलन । (सं स्त्री)

वेश्या । कई पुरुषों से प्रेम रखनेवाली, वेश्या ।

कुल-तारन—(वि) वंश गौरव
वर्धनकावी ।

वंश गौरव बढ़ानेवाला ।

कुलथी—(सं स्त्री) बड़ा माह,
लेहवा माह ।

एक प्रकार के उर्द का अन्न ।

कुलफो—(सं स्त्री) फिनब गक
पात्रत डबाई बरकर गस्यागत
गोट मबोरा एविश गाथीबब
गोरापब मिठाई ।

बर्फ की तरह जमाया दूध या
शरबत ।

कुलबुलाना—(क्रि अ) लबछ
कवा, ठूचवि बोवा ।

कीड़ो का इधर उधर हिलना-
डुलना । चंचल होना ।

कुलबोरन—(वि) वंश मर्यादा-
विनष्टकावी ।

वंश मर्यादा नष्ट करनेवाला ।

कुलाचार—(सं पुं) वंशत प्रचलित
वीति ।

वंश में प्रचलित आचार ।

कुलिश—(सं पुं) शीवा, बख,
कूठाव ।

हीरा, बज्र, कुठार ।

कुलीन—(वि) उदय-कूलजात ।

उत्तम कुल में उत्पन्न ।

कुला, (स्त्री कुल्ली) (सं पुं)—मुखत
पानी 'डबाई कूल-कूल कवा
कार्य ।

मुँह साफ करने के लिये पानी
मुँह में लेकर फेकने की क्रिया ।

कुल्हड़—(सं पुं) माटिब गलाठ ।
मिट्टी का गिलास जैसा पात्र ।

कुल्हाड़ा, —(सं पुं) कूठाव
कुठार ।

[सं स्त्री] कुल्हाड़ी ।

कुवलय—[सं पुं] नीला पद्म,
डू-मडल ।

नील कमल, भू-मंडल ।

कु-विचार—(सं पुं) अविचार ।
बुरा विचार ।

कुश—[सं पुं] कुश वन, जीवाश्चल्य
पूत्र ।

एक तरह की घास ।

कुराल-क्षेम—[सं पुं] कुशल
गङ्गल ।

राजी-खुशी ।

कुरालाई, कुरालात, कुसलाई, कुस-
लाई, कुसलात— (सं स्त्री) निम्न-

गता, कूशल मञ्जल ।

कुशलता ।

कुशाग्र—[वि] शूरोक, टोका ।

कुश के अग्र भाग की तरह तीव्र,
तेज ।

कुसंगति—(सं स्त्री) भूगच्छ ।

बुरों का संग या साथ ।

कुसगुन—[सं पुं] यगच्छा । लक्षण ।

बुरा सगुन ।

कु-समय—[सं पुं] यगमय ।

बुरा समय ।

कु-साइत—(सं स्त्री) यड्ड

शूद्ध ।

अशुभ मुहूर्त ।

कुसुंभ—(सं पुं) कुल ।

कुसुम, केसर ।

कुसुंभो—[वि] बड ।

कुसुम के रंग का । केसरिया,
लाल ।

कुसुम बाण, कुसुमशर, कुसुमायुध-

[सं पुं] कामदेव ।

कामदेव ।

कुसुमाकर—[सं पुं] नमस्त्व श्वर,

कुलब वाणिज्य ।

वसन्त ऋतु, फुलवारी ।

कुसेस[य]—(सं पुं) अश्म ।

कमल ।

कुहक, कुहुक—(सं पुं) नागा, ठेग ।

माया, धन, जादूगर

(सं स्त्री) कुलिव गाँठ ।

कोयल की कूक ।

कुहर—[सं पुं] विका ।

छेद मृगम ।

कुहराम—(सं पुं) विलाप; उद्वेग-

वाचन ।

विलाप, हलचल ।

कूँचना—(क्रि स) भटक दिना ।

कुचल देना ।

कूँचा [स्त्री कूँची] —(सं पुं)

नागौ कुलिका ।

भाङ्ग, तुलिका ।

कूक—(सं स्त्री) कुलिका गाँठ ।

कोयल का कूजन ।

कूच—(सं पुं) अश्म, गाढ़ा ।

प्रस्थान, रवाना ।

कूचा—(सं पुं) अश्म वाट ।

मंका गहना, गली ।

कूजन—(सं पुं) मृगम उद्वेग ।

मधुर शब्द (पक्षियों का)

कूट—(सं पुं) शूद्र, अश्वत्थ गिर, फल ।

पहाड़ की ऊँची चोटी । जानवर

का सींग । डेर । छल, रहस्य ।

कूटना—(क्रि स) बुझा, मरा ।

किसी भारी चीजसे आघात कर,
चूर चूर करना । मारना ।

कूड़ा, कूरा—(सं पुं) आवब-
जोश्व ।

आवर्जना, रद्दी चीज ।

कूव—[सं स्त्री] आकाशमंड
कवा शिष्टा ।

अन्दाज से हिसाब लगाने की
क्रिया या भाव ।

कूतना—(क्रि स) अश्रुमान कवा ।
अनुमान करना ।

कूद—[सं स्त्री] जूँप ।
कूदने की क्रिया या भाव ।

कूदना—(क्रि अ) जूँपि उवा ।
उछलना, फाँदना ।

कूनना, कुनना—(क्रि अ) याँटावा ।
खराँचना ।

कूबड़—(सं स्त्री) कूँड ।
पीठ का टेढ़ापन ।

कूर—(वि.) निर्धूव, मूर्ख ।
कूर । जड़, मूर्ख ।

कूरी [सं स्त्री] जरू टिला ।
छोटा टीला ।

कूलहा—(सं पुं) तपिना-शाड ।
कमर के दोनों ओर निकली हुई
हड्डियाँ ।

कूबत—[सं स्त्री] नक्ति ।
शक्ति ।

कृतयुग—(सं पुं) गतायुग ।
सत्य युग ।

कृवांत—(सं पुं) यमवज्रा ।
यमराज ।

कृत्य—(सं पुं) धार्मिक कार्या, कार्य ।
कार्य, धार्मिक कार्य ।

कृपया—(क्रि वि) अश्रुवश कवि ।
अनुग्रह पूर्वक ।

कृपाण—(सं पुं) तलवार ।
तलवार ।

कृश, कृशित—(वि) क्षीण ।
दुबला पतला ।

कृशान, कृशानु—(सं पुं) जूँहे ।
अग्नि ।

कृष्णाभिसारिका—[सं स्त्री]
गंभीर आकाश बाति निर्दिष्ट
ज्ञानत श्रेयिकक लग प्रावटेन
योवा नायिका ।
अंधेरी रात में प्रेमी से मिलने के
लिये संकेतस्थान पर जानेवाली
नायिका ।

कंचुआ—(सं पुं) कैटू ।
सूत की तरह लम्बा एक कीड़ा ।

केंचुली, केंचुल—(सं स्त्री)

मोटे, चकना ।

सर्प आदि के शरीर का ऊपरी चमड़ा जो हर साल उतर जाता है ।

के—(वि भ) गवक्ष कावक्ष बहुवचन चिन ।

सम्बन्ध सूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप ।

(सर्व) कान । कौन ।

केकड़ा—[सं पुं] केँकोरा ।

पानी में रहनेवाला एक छोटा जन्तु ।

केकी—(सं स्त्री) मयूर ।

मयूर ।

केल—(सं पुं) शब, ठाँड़े, पताका ।

घर, स्थान, पताका ।

केतन (सं पुं) निगमन ;

पताका ।

निमंत्रण, ध्वजा ।

केतु—(सं पुं) छान; पताका, नेछाल तथा ।

ज्ञान, ध्वजा, एक राक्षस, पुच्छल तारा ।

केयूर—(सं पुं) बाजू ।

बाजू बन्द ।

केर—(प्रत्य) यव ।

का ।

(क्रि वि) निठिना

की तरह ।

केराव—(सं पुं) मटवमाश ।

मटर ।

केरी—(प्रत्य) यव ।

की ।

(सं स्त्री) आमब कूँड़ि ।

आम का छोटा कच्चा फल ।

केला—(सं पुं) कल ।

एक प्रकार का फल ।

केवट—[सं पुं] केवडे, नादवीरा ।

मल्लाह ।

केवल-ज्ञानी—[सं पुं] श्रेष्ठ-

ज्ञानी ।

विशुद्ध ज्ञानी ।

केवा—(सं पुं) पशु, केतकी ।

कमल, केतकी, बहाना ।

केश-बाश—[सं पुं] ठूलिन कोश ।

बालों की लट ।

केशर, केसर—[सं पुं] केशव,

कुलव नाज्जत थका गद ठूलि

वा अँइ । यौबा, गिइ यादिब

डिडिब गोन ।

फूलों के बीच के पतले सीके ।

एक पौधा जिसके फूलों के सींके
सुगन्धित होते हैं। घोड़े, सिंह
आदिके अयाल।

केसरिया—(वि) शैव-
युक्त।

केसर के रंग का। गेहआ, जिनमें
केसर पड़ा हो।

केसरी—(सं पुं) सिंह, शैव।
सिंह, घोड़ा।

केहि—(वि) कः।
किसको, किसे।

केहू—(सर्व) कोणा।
कोई।

केंचा—(वि) बेका-बेकी।
ऐचा-ताना।
(सं पुं) डाढ़व केंची।
बड़ी केंची।

केंची—[सं स्त्री] केंची।
कतरनी, आड़ी, तिरछी रखी हुई
दो तिलियां या खूंटियां।

कै—(वि) कैसे। कितना,
कई। [अव्य] नाइवा। या, अथवा
(सं स्त्री) बाँठि।
वमन।

कैतव—(सं पुं) काकि, छुवा,।
धोखा, जूना।

(वि) ठग, छुवाबी।
धोखेबाज, जुआरी।

कैथी—(सं स्त्री) विशावत
अचलित-अविश लिपि।
विहार में प्रचलित एक लिपि।

कैद—(सं पुं) वकन, कारावाग।
बन्धन, कारावास।

कैद-खाना—(सं पुं) बन्दोखान।
कारागार।

कैदी—(वि) बन्दी।
बन्दी।

कैधों—(अव्य) नाइवा।
या।

कैरव—(सं पुं) वगैरा प्रश्न, शङ्क,
छुवाबी।
सफेद कमल, शत्रु।

कैवल्य—(सं पुं) मोक्ष।
मुक्ति।

कैसा, कैसी—(वि) केनकूबा।
किस प्रकार का, किसी प्रकार का
नही (प्रश्नमें निषेधार्थक), जैसा

कैसे—[क्रि वि] केनके।
किस प्रकार से।

कौचना—(क्रि अ) बिक्री प्रिया।
नुकीली बाज गड़ाना।

कौदा—[सं पुं] शैकोटो ।

धातु का वह कड़ा या छल्ला
जिस को बाँस या लड़ीपर
लटकाया जाय ।

कौपल—(सं स्त्री) कूडिपात ।

नयी और मुलायम पत्ती, अंकुर ।

कौहड़ा—(सं पुं) बड़ा लाटे ।

कुम्हड़ा ।

कौहार—(सं पुं) कुम्हार ।

कुम्हार ।

को—[विभ] 'यक' । कर्त्तृ याक
गन्धवान काबरक चिम ।

कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति ।

कोआ, कोया—(सं पु) एवी पञ्चव

मोति : कर्णालव कौश ।

रेशम के कीड़े का कोश, कटहल
के पके बीज-कोष, आँखका डेला ।

कोइरी—[सं पुं] एक जाति ।

एक जाति ।

कोइली—(सं स्त्री) यामरू ।

आमकी गुठली ।

कोई, (कोउ, कोऊ, कोय)—[सर्व]

(वि) कोटोवा :

ऐसा, जो अज्ञात हो । न जाने
कौन सा, बहुतों में चाहे जो, एक
भी ।

[कि वि] श्राय । लगभग ।

कोक—(सं पुं) छकोवा छाई ;

भेकूनी ।

चकवा, मेंढक ।

कोकनद—(सं पुं) बड़ी-अश्व ।

लाल कमल ।

कोकशास्त्र—(सं पुं) कामशास्त्र ।

काम शास्त्र ।

कोकाबेली—(सं स्त्री) नीला-

डेंटकुल ।

नीली कुमुदिनी

कोको—(सं स्त्री) काटेबी ।

मादा कोवा

कोख—[सं स्त्री] पेटि : गर्भाशय ।

उदर, पेटके दोनों तरफ का स्थान,
गर्भाशय ।

कोगी—(सं पुं) कूकुर निठिना

एविष ठिकावी जङ्ग ।

एक प्रकार का जानवर ।

कोच—(सं पुं) छावि चकद एविष

धुनीया बौवा गाड़ी, कोयल
गादीयूक पालन वा चकी ।

एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी ।

गद्देदार पलंग या कुरमी ।

कोचवान—[सं पुं] बौवा-गाड़ी

चालक ।

घोड़ा गाड़ी हाँकने वाला ।

कोजागर—(सं पुं) शबल-पूणिमा,
लक्ष्मी-पूणिमा ।
शरद पूणिमा ।

कोट—(सं पुं) दुर्ग; महल; गमूह; एविश
छोला ।
दुर्ग, प्राचीर, महल, समूह, एक
पहनावा ।

कोटर—(सं पुं) गछन धोबोः ।
पेड़का खोखला भाग ।

कोटि—(सं स्त्री) शस्त्र मूत्र, अश्रुव
धोः, श्रेणी ।
घनप का सिरा, अस्त्र की नोक,
वर्ग, श्रेणी । उत्कृष्टता ।

कोटि-बंध—[सं पुं] श्रेणी ।
निष्कासन ।
कोटिया स्थिर करना ।
(अं—प्रदेशन)

कोटिशः—[क्रि. वि.] अनेक
उपाय ।
अनेक प्रकार से ।
(वि) अत्यधिक ।
बहुत अधिक ।

कोठ—(वि) टेढ़ाव कावण मुखत
दिव नोवावा ।
ऐसा लड़ा जो चबाया न जा सके ।
बासों की कोठी ।

कोठरी—(सं स्त्री) थोछोटी ।
छोटा कमरा ।

कोठार—[सं स्त्री] भाण्डार ।
भंडार ।

कोठी—(सं स्त्री) हाउली, डांडर
दोकानधर; डुलि ।
हवेली, बड़ी दूकान, अनाज रखने
का कुठला ।

कोड़ना—(क्रि स) माटि धन्ना ।
मिट्टी खोदना ।

कोड़ा—(सं पुं) चाबुक, उत्तेजना
डबा कथा ।
चाबुक, उत्तेजक या मर्मस्पर्शी
बात ।

कोढ़—(सं पुं) कृष्ट रोग ।
कुष्ठ रोग ।

कोढ़ी—[वि] कृष्ट रोगी ।
कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति ।

कोतवाल—(सं पुं) नाबोंगा ।
पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी ।

कोतवाली—[सं स्त्री] थाना, पदवी ।
कोतवाल का पद या काम या
कार्यालय ।

कोता, कोताह—(वि) अलप, गरु ।
थोड़ा, छोटा ।

कोटाही—(सं स्त्री) ङाँटि ।

त्रुटि ।

कोदंड—(सं पुं) शस्त्र ।

घनुष ।

कोदों—[सं पुं] एविश निरुद्धे
शगा ।

एक प्रकार का मोटा अनाज ।

कोना—(सं पुं) कोन, कोण ।

दो रेखाओं के मिलन बिन्दु के
बीच का स्थान । एकान्त स्थान ।

कोप—(सं पुं) शत्रु ।

क्रोध ।

कोप-भवन—(सं पुं) बोस-घर ।

वह स्थान जहाँ कोई रुठ कर
पड़ा रहे ।

कोपोन, कौपोन—(सं पुं) गन्ना-
गौर लोण्टि ।

संन्यासियों आदि के पहनने की
लंगोटी ।

कोयर—(सं पुं) लेडोबीरा बाँह ।
हरा चारा ।

कोयल, (पुं कोकिल)—(सं स्त्री)
कूलि चबाई ।

एक काला पक्षी ।

कोर—(सं स्त्री) नुब, कोण,
घर. अन्नव बाव ।

सिरा, कोना, द्वेष, हथियार की
घार ।

कोरक—(सं पुं) क'लि ।

कली ।

कोर-कसर—(सं स्त्री) दोष-
ङ्गाँटि ।

दोष-त्रुटि ।

कोरमा—(सं पुं) डकल नांग ।

भुना हुआ मांस ।

कोरा—(वि) यवावृक्ष; गड़न ।
जो काम में नहीं लगाया गया
हो । नया ।

(क्रि वि) केवल । केवल ।

(सं पुं) प्रावि गंधका श्रुति ।
बिना किनारे की धोती ।

कोल्हू—[सं पुं] शानौ, डेल-शाल ।
बीजों का तेल या रस निकालने
का यंत्र ।

कोषिद्—(वि) परिचित, जानौ ।
पंडित, विद्वान ।

कोश, कोष—कबी, डंबान, आडधान,
आवरण ।

अंडा, गोलक, संचित धन, अभि-
धान, खजाना, आवरण ।

कोशिश—[सं स्त्री] छेटी ।
प्रयत्न. चेष्टा

कोष्ठ—[सं पुं] पाकशुली ।

पेटका भीतरी भाग । कोठरी,
अन्न, भंडार ।

कोष्ठक—(सं पुं) रक्षनी ।

खाना, कोठा ।

कोस—(सं पुं) क्रोश ।

दो मील की दूरी ।

कोसना—[क्रि. स] अभिशाप दिया ।

शापके रूपमें गालियाँ देना ।

कोह—(सं स्त्री) पौष्टिक, थर ।

पहाड़, क्रोध ।

कोहनी—(सं स्त्री) किलाकूटि ।

हाथके बीच का जोड़ ।

कोहबर—(सं पुं) पौष्टिक ।

वह स्थान जहाँ विवाह के समय
कुल देवता स्थापित किये जाते हैं ।

कोहरा—(सं पुं) कूँबली ।

कुहासा

कोहान—(सं पुं) उट्टेन पिठिब कूँज ।

ऊँट की पीठ का कुबड़ ।

कौंधना—[क्रि. अ] बिछुरनी चिक्-चिक्
करना ।

बिजली का चमकना ।

कौआ, कौबा—[सं पुं] काउव ।

एक प्रकार का काला पक्षी ।

कौड़ा—[सं पुं] डांडव कड़ि ।

बड़ी कौड़ी ।

कौड़ी—[सं स्त्री] धन, टैका-कड़ि ।

धन, रुपया पैसा, । एक कीड़ा
या उसका अस्थिकोश ।

कौतुक—[सं पुं] कोतूहल ; वं-

धेनालि ।

कुतूहल, अचंभा, खेल-तमाशा ।

कौतुकी—(वि) वं-ताम्रता कर्बोता ।

कौतुक करनेवाला ।

कौन—(सर्व) कौन ।

एक प्रश्न वाचक सर्वनाम जो
अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की
जिज्ञासा करता है ।

कौम—(सं स्त्री) जाति ।

जाति ।

कौमी—(वि) जातीय, राष्ट्रीय ।

जातीय, राष्ट्रीय ।

कौमुदी—(सं स्त्री) ज्ञानव

पौष्टिक ।

चांदनी ।

कौद—(सं पुं) धवाह ।

ग्रास ।

कौल—[सं पुं] उड्डम वंशव,

अतिष्ठा ।

उत्तमकुल का, दाम मार्गी ।

कौवाली—[सं स्त्री] एविश गीत ।

एक प्रकार का, गीत ।

कौषेय—(वि) पाटब, बेगमी ।

रेशम का, रेशमी ।

क्या—(सर्व) कि ?

कोनसी वस्तु या बात ?

(वि) किशन ?

कितना ?

[क्रि वि] किश ?

क्यों ? किस लिये ?

[अव्य] अत्रद्रोशक शब्द ।

प्रश्न सूचक शब्द ।

क्यारी—(सं स्त्री) खन्ना, टाप ।

खेतों, बगीचों आदि में पौधे रोपने की पंक्तियाँ ।

क्यों—(क्रि वि) कि कारण,

किश ?

किस लिये ?

क्रतु—(सं पुं) यत्न, निश्चय ।

यत्न, निश्चय ।

क्रमेलक—(सं पुं) उटे ।

ऊँट ।

क्रांत—(वि) आवृत्त, अतिवृत्त ।

दबा या ढँका हुआ, अभिभूत ।

क्रान्ति—(सं स्त्री) गति, विप्लव,

क्रांति ।

गति, विप्लव ।

क्रान्तिकारी—(वि) विप्लवी ।

विप्लवी, सम्पूर्ण उलट फेर कर देनेवाला ।

क्रियात्मक—(वि) वादशक्ति ।

क्रियायुक्त, व्यावहारिक ।

क्रिस्तान—(सं पुं) इष्टान,

श्वश्रुशान ।

ईसाई ।

क्रोड़ पत्र—(सं पुं) अतिविद्ध-

पत्र; पविमिष्ट ।

अतिरिक्त पत्र [अं सप्लिमेंट]

क्रोशिया—[सं पुं] छूबेटाव

आदि बोवा शला ।

गंजी-मोजे आदि बुनने की तीली

या सलाई ।

क्रौंच—(सं पुं) क्रोश पक्षी ।

एक पक्षी ।

क्लिष्ट—(धि) दुःखी, कठिन ।

दुखी, कठिन, जिसका अर्थ

कठिनता से निकले ।

क्लीव—[वि] नपुंसक । डीक ।

नपुंसक, डरपोक ।

क्लेद—(सं पुं) डिङ्गा, डिङ्गा,

बाग ।

गोलापन, पसीना ।

क्वणित—(वि) बाधि शब्द ।

बजता हुआ ।

क्याथ—[सं पुं] कथ् ।

काढ़ा, गाढ़ा रस ।

क्षणदा—(सं स्त्री) बाति ।

रात ।

क्षति-पूर्वि—(सं स्त्री) कतिपूर्व ।

क्षति को पूर्ण करने का काम या धन ।

क्षत्रप—(सं पुं) आठौन शक बड़ा

मकनव उपाधि ।

प्राचीन शक राजाओं की उपाधि ।

क्षपणक—(वि) निनाक ।

निलंज्ज ।

(सं पुं) नाडठे गम्यागौ ।

नंगा रहनेवाला संन्यासी ।

क्षपा—(सं स्त्री) बाति ।

रात ।

क्षयो—(वि) शीनाई योरा ।

क्षय बाग ।

क्षीण होनेवाला, क्षय रोगी ।

[सं पुं] ज्ञान ।

चन्द्रमा ।

क्षर—(वि) यि नष्टे श्य ।

नष्ट होनेवाला ।

(सं पुं) पानी ।

जल, अज्ञान ।

क्षाम—[वि] शीत ।

दबला-पतला ।

क्षार—[सं पुं] खार ।

राख का नमक, खार ।

क्षालन—(सं पुं) अक्षानन ।

घोना ।

क्षितिज—[सं पुं] दिगन्त आकाश,

गच्छन-वृद्ध, छवि पत्रा उ९पत्र ।

दिगन्त, मंगल ग्रह, भूमिसे उत्पन्न

क्षीर—[सं पुं] गाथीर; पानी ।

दूध, जल, स्त्री ।

क्षुण्ण—(वि) अछात्र, शङ्कित,

अगच्छे ।

अभ्यस्त, खंडित, असन्तुष्ट ।

क्षुधा—(सं स्त्री) भोक ।

भूख ।

क्षुर—(सं पुं) खुर, जडव ठेठव

खुरा ।

छुरा । पशुओं के पाँव का छुर ।

क्षेत्रज—(वि) क्षेत्र पत्रा उ९पत्र ।

जो क्षेत्र में या क्षेत्र से उत्पन्न हो ।

(सं पुं) पत्र-पुरुष पत्रा

उ९पत्र होरा ।

दूसरे पुरुषके संयोगसे उत्पन्न पुत्र ।

क्षेत्रिक—(वि) क्षेत्र गच्छीय ।

क्षेत्र सम्बन्धी ।

क्षेप, क्षेपण—[सं पुं] निक्षेप ।

फेंकना, गिराना, बिताना ।

क्षेपक—(वि) निष्केप करवाता ।
फेंकनेवाला ।

(सं पुं) अक्षय अक्षिप्त भाग ।
मूलग्रन्थ में बाद में जोड़ा वा
मिलाया हुआ ।

क्षेम—(सं पुं) विघ्नद्वय शांत
गवा, सुख-सम्पन्न ।
संकट से बचाना । कुशल-मंगल,
सुख ।

क्षोणि—(सं स्त्री) गृहिणी ।
पृथ्वी ।

क्षौम—[सं पुं] पांटेब कापान ।
(विशेषरूपेण नव शूतार)
सन आदिसे बुना हुआ एक प्रकार
का कपड़ा ।

क्षौर—[सं पुं] डाढ़-भूष आदि
शूरोवा कार्य, क्षौरकर्त ।
हजामत ।

ख

ख—वाञ्छन वर्णमालाब द्वितीय
आक्षेप ।
व्यंजन वर्णों में दूसरा अक्षर ।

खंग, खड्ग, खड्ग—(सं पुं)
तलवारवा ।
तलवार, गेंडा ।

खंगालना—(क्रि स) पानीसे धोवा,
शालि कवा ।
धोना, सब कुछ उड़ा ले जाना ।

खँचिया, खँची—(सं स्त्री)
श्वेदि, पांछि ।
टोकरी । (सं पुं—खँचा)

खंज—(सं पुं) शंखन चवाई ।
खंजन पक्षी ।
(वि) खोबा ।
लंगड़ा ।

खंजर—(सं पुं) कटावी ।
कटार ।

खंजरी—(सं स्त्री) शंखरी, एक-
प्रकारका वाद्य ।
एक तरह का बाजा ।

खंड—[सं पुं] दोधन, विभाज,
आदिनर धारा-उपधावाब वच्छ
अंश विशेष । ५७ ।

दुकड़ा, कुछ विशेष कार्यके लिये व्यवस्थित रूपसे किया हुआ विभाग, विधि विधान में कोई धारा या उपधारा का स्वतन्त्र अंग ।

(वि) विभाजित, यांत्रिक ।
खंडित, छोटा ।

खंड-पाल—(सं पुं) मिठाईवाला ।
हलवाई ।

खंड-प्रलय—(सं पुं) क्षुद्र प्रलय ।
एक चतुर्युगी के अन्त में होने वाला प्रलय ।

खंडहर—(सं पुं) उध्वस्तगृह ।
टूटे या गिरे हुए मकान का बचा अंश ।

खंडिवा—(सं स्त्री) गेहे तिवोता
याव श्यामी आन तिवोताव
लगत बाति कटोई पुवा
तेडुँव उचवटेल आश ।

वह स्त्री जिसका नायक किसी अन्य स्त्री के पास रहकर सबेरे उसके पास आवे ।

खंडी—(सं स्त्री) बाज्र ।
राज कर ।

खंसा—(सं पुं) खंसा, शुर्पी
जमीन खोदने के लिये लोहे का
लम्बा औज़ार । (सं स्त्री-खंती)

खंडक, खाई—(सं स्त्री) गड़-
खाँद ।

वह छोटी नहर जो किलेके चारों ओर रक्षा के लिये बनायी जाती है ।

खँधना—(क्रि अ) नाटि खना ।
मिट्टी खोदना ।

खंधार—(सं पुं) छाँटनि, तबू ।
छावनी, डेरा ।

खभ. खंभा—(सं पुं) खड्ड, आधार ।
स्तंभ, आश्रय, आधार ।

खँभार—(सं पुं) ड्य, आशंका ।
आशंका, घबराहट ।

खखार—(सं पुं) थँकाव ।
खाँसी से निकलनेवाला कफ ।

खखारना—(क्रि अ) गल थँकावि-
मवा ।
गले से शब्द करते हुए थूक या
कफ बाहर निकालना ।

खग—(सं पुं) छाँशे, वाण, अश,
तवा आनि ।

पक्षी, वाण, ग्रह-तारे आदि ।

खगेश, खगनाथ—(सं पुं) गरुड ।
गरुड ।

खगोल—(सं पुं) आकाश-मण्डल ।
आकाश मंडल ।

खगोल-विद्या—[सं स्त्री] ज्योतिष-
शास्त्र ।

ज्योतिष शास्त्र ।

खग्रास—(सं पुं) पूर्ण ग्रहण ।
वह ग्रहण जिसमें चन्द्र या सूर्य
का पूरा बिम्ब ढँक जाय ।

खचरा—(वि) खेचरा, अड्ड ।
दुष्ट ।

खचाखच—(क्रि. वि) ठाँश्-
खाँड़े भवि थका ।
पूरा कस कर भरा हुआ ।

खचेरना—(क्रि स) खोब खबर-
मछिटके वन कबा ।
दबाकर वन में करना ।

खखर—[सं पुं] शब्द ।
एक पशु ।

खजानची—(सं पुं) धन-उबाली ।
खजाने का अधिकारी ।

खजाना, खजोना—(सं पुं)
खाजना, बाखश ।
धन आदि का कोष । राजस्व ।

खजूर—[सं स्त्री] खजूब ।
एक प्रकार का फल ।

खट—(सं पुं) डाँडि वा झुन्ना
खाँड़े होवा शब्द ।
टूटने या टकराने का शब्द

खटसे—[यु.]—उत्पत्त्या ।
तुरन्त ।

खटक—(सं स्त्री) मनब गट्ठाठ
डाँव ।
मन की बेदना, खेद आदि ।
आशंका ।

खटकना—(क्रि अ) मनत पीड़ा-
होवा । गट्ठेश होवा, काखिया
होवा ।
रह रह कर हल्की पीड़ा होना ।
खलना । भगड़ा होना ।

खटका—(सं पुं) आशंका ।
आशंका, फिक ।

खट खट—(सं स्त्री) खँह-खँह शब्द ।
शाँड़े काखिया ।
ठोकने पीटने का शब्द । बखेड़ा ।
लडाई भगडा ।

खट खटाना—(क्रि म) खँह-खँह
शब्द कबा ।

खट खट शब्द करना ।

खटाना—(क्रि स) धन उपार्जन
कबा ।

धन कमाना ।

(क्रि अ) अविलम्ब कबा ।

काममें लगना । परिश्रम करना ।

खटपट—(सं स्त्री) काखिया ।
भगड़ा ।

खटमल—(सं पुं) डेवर ।

एक कीड़ा जो खाटों, कुसियों आदि में रहता है ।

खटराग—[सं पुं] काजिरा—
पेठान ।

भगड़ा । भंफट ।

खटाई—(सं स्त्री) टेडाङ्ग, टेडा
बड ।

खट्टापन । खट्टी चीज ।

खटाखट—(क्रि वि) तडा-टेड्राटिक ।
जल्दी जल्दी ।

खटाना—(क्रि स) बंटोना ।
परिश्रम का काम करवाना ।
(क्रि अ) टेडा होना ।
खट्टा करना ।

खटिक—(सं पुं) शक-पाठनि
बेठा एठा छाति ।
तरकारी बेचनेवाली एक जाति ।

खाट, खटोला—(सं पुं) बाटे ।

चारपाई । (सं स्त्री-खटिया)

खट्टा—(वि) टेडा ।
अम्ल ।

खड़खड़िया—[सं स्त्री] अविब
पेना ।
पाकड़ी ।

खड़ा—(क्रि वि) थिर, जाडू ।
ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ ।
प्रस्तुत ।

खड़ाऊ—[सं स्त्री] थंय ।
पादुका ।

खड़िया—(सं स्त्री) थड़ीयाँटि ।
एक प्रकार की सफेद मिट्टी ।

खड़ीबोली—(सं स्त्री) बडवान
गाहितिक शिन्नीर पूर्व-कप ।
वर्तमान साहित्यिक हिन्दी का
पूर्व रूप ।

खड्ड—(सं पुं) गौड ।
गड्डा ।

खत—[सं पुं] श, छिठि ।
भाव । जरूम । चिट्ठी ।

खतम, खत्म—(वि) शेष ।
समाप्त ।

खतरा—[सं पुं] विपद ।
आशंका । भय ।

खता—(सं स्त्री) शोब, काकि,
डूल ।
कसूर, घोला, भूल ।

खसियाना—(क्रि स) थडियनि ।
अलग अलग खातों या मर्हों में
हिसाब लिखना ।

खत्ता—[सं पुं] ग्रीड । गंगा बहा
ठांई ।

गङ्गा । अन्न रखने का स्थान ।

खदेड़ना (रना)—(क्रि अ) डाँदि-
धक्क जि बेदि दिया ।

डरा धमका कर दूर हटाना ।

खहर (ड)—(सं पुं) खम्बर ।
खादी ।

खद्योत—(सं पुं) ज्ञानाकी
प्रकाश ।

जुगनू ।

खपखी—(सं स्त्री) काँठ वा बाँधव गन्ध
छेदनेवाला वस्त्र ।

पतली तीली ।

खपड़ा, खपरा—[सं पुं] धातुवि ।
मिट्टी का पका टुकड़ा जो छप्पर
छाने के काम में आता है ।

खपत—[सं स्त्री] बिक्री, खर्च
मालकी कटती या बिक्री ।
गुंजाइश ।

खपना—(क्रि अ) कायत लगी ।

काम में आना या लगना ।

गुजारा होना ।

खपाना—(क्रि स) कायत लगाना ।
काम में लगाना ।

खप्पर—[सं पुं] डिक्रा-प्राज्ञ,
भाँडे-खाला ।

मिक्का पात्र । बरे हुए प्राणी की
खोपड़ी ।

खफा—(वि) चगड़टे, क्रुद्ध ।
अप्रसन्न, क्रुद्ध ।

खफीफ—(वि) चलन, कम ।
थोड़ा, हलका ।

खबरदार—(वि) गारुशान ।
सावधान ।

खबीस—(सं पुं) डग़बन, झूठे ।
पुराना दुष्ट ।

खब्त—(वि) नागनाशि ।
सनक ।

खम—(सं पुं) टेबेटीया ।
टेढापन, झुकाव ।

खमीर—(सं पुं) गांध नागि उठा
फेन ।

गूथे हुए भाटे या फल आदि का
सड़ाव ।

खयानत—(सं स्त्री) निबलग्रीशाउटेक
कम दिया ।

घरोह या अमानत में से कुछ
दबा रखना ।

खयाल—[सं पुं] ध्यान, मर्ना-
योग ।

ध्यान, स्मृति, मत । एक प्रकार
का संगीत ।

खर—(सं पुं) गाव, बाँह ।

गवा, तुण ।

खरक—(सं पुं) गोशालि ।

पशुओं को रखने का बाड़ा ।

खरका—(सं पुं) उण ।

तिनका ।

खरगोश, खरहा—(सं पुं)

मशमह ।

एक जन्तु । शशक

खरदुक—(सं पुं) एविश पोशाक ।

एक प्रकार की पोशाक ।

खरब—[सं पुं] एक शब्द का अर्थ ।

सो अरबकी संख्या ।

खरबूजा—(सं पुं) खरूजा ।

एक प्रकार का फल ।

खर-भास, खरबोस—(सं पुं) ग्रह

आर्य ठ'उ माह येतिश शूर्य

शश आर्य मौन बानित थाके ।

पुस या चेत के महीने ।

खरल—(सं पुं) किलि ।

पत्थर की खल ।

खरसान—(सं स्त्री) सान ।

हथियार तेज करने की सान ।

खरा—[वि] डाल, बिडक, नगद ।

अच्छा, विशुद्ध, नगद ।

खराद—[सं स्त्री] कृम ।

बात, लकड़ी आदि चिकना करने

का एक औजार ।

खराब—(वि) बेश ।

बुरा, पतित ।

खरी खोटी—(सं स्त्री) गानि-

नपनि ।

गुस्ते में कही जानेवाली कटु

बातें ।

खरीता, खलीता—[सं पुं] थैला ।

थैली । जेब । बड़ा लिफाफा ।

खरीफ—(सं स्त्री) वर्षा आर्य नव

कालके होवा थैति ।

आसाद से अगहन तक काटी

जानेवाली फसल ।

खरोचना, खरोचना—(क्रि स)

चौटाव ।

नाखून से नोचना ।

खर्चीला—(वि) अभिवाश्री ।

बहुत खर्च करनेवाला ।

खरौटा—(सं पुं) नाकब चोर्धो-

बनि ।

सोते समय नाक से विकलनेवाला

शब्द ।

खल—[वि] ठूँटेकाश, नोच ।

क्रूर, नीच, दुष्ट ।

खलक—[सं पुं] गंगाव ।

सृष्टिके प्राणी या लोग । दुनिया ।

खलकत—(सं स्त्री) गंगाबन गमल
आगो ।

संसार के सब लोग । जनसमूह ।

खलबली—(सं स्त्री) तोल-पाव,
उथल गथल ।

हलचल, घबराहट ।

खलल—(सं पुं) बाधा विधिनि ।
विघ्न । बाधा ।

खलास—[वि] भुक्त ।

छूटा हुआ । समाप्त ।

खलासी—(सं पुं) खानाछो । बेल-
आशाष आश्रित काम करवा कुलौ ।
जहाज पर छोटे मोटे काम करने
वाला कर्मचारी ।

खलियान (हान)—[सं पुं] भंग-
डबान ।

वह स्थान जहाँ फमल काटकर
रखी जाती है ।

खली, खरी—(सं स्त्री) खलिदेश ।
तेल निकल जानेपर बची हुई
तेलहन की सीठी ।

खलीफा—[सं पुं] यथारू, पछी,
नापित ।

अध्यक्ष । दरजी । नाई

खलबाट—(सं पुं) उपा होवा
बेबाव ।

गंजा रोग ।

(वि) उपा ।

जो गंजा हो ।

खवास—[सं पुं] बका-धमिपाव
बाँट छूटा ।

राजाओं और रईसों के खिदमत-
गार ।

खवैया—(सं पुं) डक्क ।
खानेवाला ।

खस—(सं स्त्री) एविश बाँशव अगकि
शिपा ।

गोंडर घास की सुगंधित जड़ ।

खसकना—[क्रि अ] आँठबि
योवा ।

सरकना ।

खस खस—(सं पुं) पेष्टी-गुट्टी ।
पोस्ते का दाना ।

खसम—(सं पु) आगो ।
पति, स्वामी ।

खसरा—[सं पुं] शिछाप-पत्रब
पातुलिपि । लोँछा बाँग ।

हिसाब का कच्चा चिट्ठा । एक
प्रकार की खुजली ।

खसाना—(क्रि स) पेलाई दिमा ।
नीचे गिराना ।

ख डोटना—[क्रि. स] टना आटकार
करा ।

नोचना, छीनना ।

खस्ता—(वि) टूटका ।

भुर भुरा ।

खस्सी, खसी, खसिया—(सं पुं)
बांशी ।

बधिया किया हुआ बकरा ।

खॉग—(सं पुं) कांशटे ।

कांटा । गंडे का सींग ।

(सं स्त्री) जगटि ।

गुटि ।

खॉचना—[क्रि स] खोज दिया ।

थंबटेक लिखा ।

चिह्न बनाना । जल्दी जल्दी
लिखना ।

खॉचा—(सं पुं) पाछि, खंभाशी ।

बड़ा टोकरा ।

खॉड़—(सं स्त्री) अपविष्टाव चेनि
बिना साफ की हुई चीनी ।

खॉसना—[क्रि अ] गलब पना
कफ उलियावटेल जोबेबे
गल खंकावा ।

गले से कफ आदि निकालने के
लिये जोर से हवा निकालना ।

खॉसी—(सं स्त्री) काश ।

काश रोग । खॉसने का शब्द या
भाव ।

खाक—(सं स्त्री) गांठि, धूलि-
वालि ।

मिट्टी । धूल । राख ।

खाकसार—(वि) नख, नगना ।
धूलमें मिला हुआ । तुच्छ ।

खाका—(सं पुं) शव, मठा-विदा ।
ढाँचा, मसौदा ।

खाज—(सं स्त्री) खजूबडि ।
खुजली ।

खाड़ी—(सं स्त्री) उपनागव ।
उपसागर ।

खातमा—(सं पुं) शेष ।
अन्त ।

खाता—[सं पुं] जमा-खचव वही ।
आय व्यय का अलग लेखा ।

खातिर—(सं स्त्री) आदर ।
आदर ।
[अव्य] कारण ।
वास्ते ।

खातिरजमा—(सं स्त्री) गच्छाव ।
संतोष ।

खातिरदारी—[सं स्त्री] आतिथ्य
गणकार ।
आये हुए का सम्मान ।

खाद—[सं स्त्री] गाव ।

उर्वरक ।

खादर—[सं पुं] चापव ठाँह ।

नीची जमीन ।

खान—(सं पुं) भोजन ।

भोजन ।

[सं स्त्री] थनि ।

आकर । जहाँ कोई चीज अधिकता से पायी जाती हो ।

खानगी—(वि) खरवा, निखा, पबन्धव ।

घरेलू । अपना । आपस का ।

(सं स्त्री) नटि । कसबी ।

खानदान—[सं पुं] वंश ।

वंश, कुल ।

खानपान—(सं पु) खाना-पान ।

खाना-पीना ।

खाना—(क्रि सं) खाना ।

भोजन करना, हड़प जाना ।

(सं पुं) घर, स्थान ।

घर, स्थान ।

खाना तलासो—(सं स्त्री) खाना-तलाश ।

खोई हुई या चुराई हुई चीज किसी के घर खोजना ।

खाना-बदोश—(वि) अशुद्ध ।

यायावर ।

खामखाह—(क्रि वि) विहाते,

एनेने, थामबिगामिटेक ।

व्ययं ।

खामोश—(वि) निष्ठक, दूष ।

मौन, चुप ।

खार—(सं पुं) खार, धूलि, जैरा ।

सज्जी, रेह, डाह ।

खारा—(वि) खारवा ।

नमक के स्वाद का ।

खारिज—(वि) बाहिल, बप ।

बहिष्कृत ।

खाला—(वि) चापव ।

नीचा ।

(सं स्त्री) बाही ।

मोसी ।

खालिस—(वि) निष्ठक ।

विशुद्ध ।

खाबिद—(सं पुं) गवाकी ।

पति, मालिक ।

खास—(वि) विशेष, निखा,

विशुद्ध ।

विशेष प्रधान, निजका, विशुद्ध ।

खासियत—[सं स्त्री] विशेषता, गुण ।

विशेषता, स्वभाव, गुण ।

खिचना—[क्रि अ] टना, आक-

वित होना ।

घसीटा जाना । आकृष्ट होना ।

खिचड़ी—(सं स्त्री) बिचिरी ।

एकलक्ष होवा बख ।

दाल, चावल एक ही में मिलाकर
पकाया भोजन । एक ही में मिले
हुए पदार्थ ।

खिजलाना—[क्रि अ] खोका ।

चिढ़ना ।

खिताब—(सं पुं) बिताप, खाति ।
पदवी, उपाधि ।

खिदमत—(सं पुं) याल-पैठान ।
सेवा ।

खिदमतगार—(सं पुं) याल-
पैठान खटाँडा ।

छोटी सेवाएँ करनेवाला । सेवक

खिन्न—(वि) उदासीन ।

उदासीन । अप्रसन्न ।

खियाना—(क्रि अ) कस योवा ।

घिसकर क्षय होना ।

खिलकत, खलकत—(सं स्त्री)

जट्टे, नशवा खाति ।

सृष्टि, भीड़ ।

खिलखिलाना—(क्रि अ) खिल-
खिलाई ईश ।

जोर से हँसना ।

खिलना—(क्रि अ) अङ्कुरित

होवा । अग्न होवा,

फूल का विकसित होना । प्रसन्न
होना ।

खिलवत—(सं स्त्री) निर्वर्ण ठाँह
एकान्त स्थान ।

खिलवाड़, खेलवाड़—(सं पुं)

खेल, ठाँही-गढ़वा ।

खेल । दिल्ली । तुच्छ या साधारण
दंग से किया हुआ काम ।

खिलाड़ी, खेलाड़ी, खेलवाड़ी—[वि]

खेनूदेव, याशुकर ।

खेलनेवाला, बाजीगर ।

खिलाना—(क्रि स) खूँवा । अग्न
कटोरा ।

भोजन कराना । प्रसन्न करना ।

खिलाफ—(वि) विपरीत ।

विरुद्ध, प्रतिकूल ।

[क्रि वि] तुलनात ।

तुलना में । मुकाबले में ।

खिलौना—(सं पुं) पूतला । खेलन

गँझुलि । खेलनेकी चीज ।

खिल्ली—[सं स्त्री] इतिकिं ।

खिजिपान ।

हँसी-ठट्टा । दिल्ली । गानका बीड़ा ।

खिसकना—(क्रि अ) आँतवि योवा

सरकना । माग जाना ।

खिसाना, खिसियाना— (क्रि अ)

लाज पोवा । अजखुटे होवा ।

लज्जित होना । नाराज होना ।

खीच-तान, खीचातानी— [सं स्त्री]

टैना-टैनि ।

व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग । शब्द या वाक्य का जब-दंस्ती भिन्न अर्थ करना ।

खीचना— (क्रि स) टैना । अँका ।

बलपूर्वक अपनी तरफ खाना ।

लकीरोसे आकार या रूप बनाना ।

खीजना— (क्रि अ) थं कवा ।

दुखी होकर क्रोध करना ।

खील— (सं स्त्री) आटेथ ।

भुना हुआ घान । लावा ।

खीस— (सं स्त्री) खोडा दोषन

मौत । अजखुटे ।

नुकीले लम्बे दाँत । अप्रसन्नता, क्रोध ।

खुकख— (वि) माल पवित्र ।

परम निर्धन ।

खुखड़ी— (सं स्त्री) थूकवी, ठाकवीठ

लोवा शूठा । नेपाली छुरा । तकुए

पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत ।

खुजलाना— [क्रि स] थंखुवा ।

खुजली मिटाने के लिये अंग रगड़ना ।

[क्रि अ] थंखुवति ।

खुजली मालूम होना ।

खुजली— (सं स्त्री) चर्ग बाग ।

खुजलाहट का रोग ।

खुट चाल— (सं स्त्री) बिठिडालि ।

दुष्टता । खराब चाल चलन ।

खुद— (अव्य) निज, स्वयं ।

स्वयं । आप ।

खुद-काश्त— (सं स्त्री) गवाकीये

निखे खेति कवा गाँठि ।

वह जमीन जिसका मालिक उसे स्वयं जोते ।

खुद-गारज— (वि) शार्थपन ।

स्वार्थी ।

खुद-मुख्तार— (वि) शारीन ।

स्वतन्त्र ।

खुदरा— (सं पुं) थूकवा ।

फुटकर चीजें ।

(वि) जो छोटे छोटे टुकड़ों या अंशों के रूप में हो ।

खुदाई— [सं स्त्री] थनन काबाँ,

रुष्टि ।

खोदे जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी । ईश्वरता । सृष्टि ।

(वि) ऐश्वर्यिक ।

ईश्वरीय ।

खुराबंद—(सं पुं) पबमेखन ।

मशमन ।

ईश्वर । हुशूर ।

खुरी—(सं स्त्री) नई वन भाव ।

अहंकार ।

खुरिया—(वि) गुष्ठ, गुष्ठचव ।

गुस । छिपा हुआ । जासूस ।

खुमारी—(सं स्त्री) निचा । निचाव

पवा होवा क्लाछि ।

नशा । नशा उतरने और रात जगने
की थकावट ।

खुरचन—(सं स्त्री) चोबोका वस्तु ।

खुरच कर निकाली हुई वस्तु ।

गाड़ी रबड़ी ।

खुराक—(सं स्त्री) खोवाक ।

भोजन । मात्रा ।

खुराफान—(सं स्त्री) अमूलक वा

बुद्धिविहीन कथा । काबिग्या ।

बेहूदा और बाहियात बात ।

फनड़ा ।

खुराट—[वि] बुढ़ा, अशुभवी, छडून

बूढ़ा । अनुभवी, चालाक ।

खुराना—[क्रि अ] खोला, मुकलि

होवा, डेद भाडि योवा ।

बन्द न रहना । फटना । प्रचलित

होना । रहस्य प्रकट होना ।

खुरा—(वि) खोला, उमूक,

चादवशीन ।

आवरण हीन । अवरोधहीन ।

प्रकट ।

खुरासा—(सं पुं) गावांश ।

सारांश ।

(वि) खोलोछा ।

साफ । अवरोध रहित ।

खुरम खुरा—(क्रि वि) अकाण्ये

प्रकाश्य रूप से ।

खुरा—[वि] आनन्तित ।

आनन्दित, अच्छा ।

खुराखबरी—[सं स्त्री] खुराबाद ।

शुभ समाचार ।

खुराबू—(सं स्त्री) खुरक ।

सुगन्ध ।

खुरामद—(सं स्त्री) तोबाबोद ।

चापलूसी ।

खुरामदी—(वि) तोबाबोद—

काबी ।

खुरामद करनेवाला ।

खुरी—(सं स्त्री) अशुभता ।

प्रसन्नता ।

खुरक—(वि) गुकान, नीबन ।

सूखा, नीरस ।

खूँट—[सं पुं] पांव, कोण

सिरा. कोना ।

[सं स्त्री] कंभा-त्राकवि ।
 कान का जेल ।
 खूँटा—[सं पुं] शूँटि ।
 खंभा । [सं स्त्री-खूँटी]
 खूँदना—(क्रि व) खंटा ।
 पैरों से रौंदकर खराब करना ।
 खून—(सं पुं) देह, शरीर ।
 रक्त, हत्या ।
 खून-खराबी—(सं स्त्री) कटो-काँटि ।
 मारकाट ।
 खूब—(वि) धुन, बहुत ।
 अच्छा, बहुत ।
 खूब-सूरत—(वि) सुनीय ।
 सुन्दर ।
 खूबसूरती—(सं स्त्री) वनगौरव ।
 गोमर्ष ।
 सुन्दरता ।
 खूबी—(सं स्त्री) विशेष ।
 भलाई, गुण, विशेषता ।
 खूँसट—(सं पुं) कैंठा ।
 उल्लू ।
 (वि) खूँ ।
 अरसिक । मूर्ख ।
 खेँबर—(सं पुं) बाँस-छत्र ।
 आकाश चारी ।
 खेटक—(सं पुं) ठिकार ।
 शिकार ।

खेत—(सं पुं) पधाव, वृक्षकृत्र ।
 क्षेत्र । समतल भूमि, युद्धभूमि ।
 खेतिहर—(सं पुं) वैतिग्रक ।
 किसान ।
 खेड़ा—[सं पुं] ठिकार ।
 शिकार ।
 खेना—(क्रि स) नाँव बोधा ।
 अधिवाहित कना ।
 डाँडों से नाव चलाना । समय
 बिताना ।
 खेमा—[सं पुं] तन्तु, शिविर ।
 तन्तु, शिविर ।
 खेवनहार—(सं पुं) बाँटे, बाँटो-
 डाल । पाव कबोता ।
 मल्लाह । संकटसे पार करनेवाला ।
 खेबा—(सं पुं) नदी आदि
 पाव कना भाड़ा वा कार्य ।
 वैप ।
 नाव का किराया । नाव द्वारा
 नदी पार करने का काम । बार ।
 खेस—(सं पुं) मोटा जूताव चादर ।
 मोटे सूत की एक प्रकार की
 लम्बी चादर ।
 खेह (र)—(सं स्त्री) शै, धूलि ।
 राख, धूल ।
 खैनी—(सं स्त्री) छूँव लगत
 गिरि-बोधा छापागोत्र कना ।

मलकर खाया जानेवाला तम्बाकू
के पत्ते का चूर्ण ।

खैर—(सं पुं) शैवा गच्छ
बगव श्वा ठेठशाव करा कथ ।
कत्था । एक प्रकार का बबूल ।
(सं स्त्री) कुशल-मङ्गल ।
कुशल क्षेम ।
[अव्य] वाक्य, यि नशुक ।
कुछ चिन्ता या परवाह नहीं,
जो हो ।

खैरखाह—(वि) शुभाकांक्षी ।
शुभ चिन्तक ।

खैरात—(सं स्त्री) पान ।
दान ।

खैरियत—(सं स्त्री) कुशल, मङ्गल ।
कुशल क्षेम, भलाई ।

खोंच—(सं स्त्री) खोंच । खोंचा-
शायि काटोबाब कला । खोना ।
खरोंच । काटे आदि में लगकर
कपड़े का फट जाना । झोली ।

खोंचा—(सं पुं) दीवाल दीश्व
छबाई श्वा कागल ।
चिड़िया फँसाने का लम्बा बाँस ।

खोंकर—(सं पुं) गच्छ खोटाः ।
वृक्ष का कोटर ।

खोंकना—(क्रि अ) खोजि, दिशा,

धुँटि दिशा ।

जोरसे गड़ाना ।

खोंपा—(सं पुं) खोपा ।

बालों का बंधा जूड़ा ।

खोंसना—(क्रि अ) खोंश गाव्,
अटकाना ।

खोआ, खोया—(सं पुं) पगाई

डाँठ करा गांधी ।

गाढ़ा किया हुआ दूध ।

खोई—[सं स्त्री] आटे ।

भुने धान आदि की खील ।

खोखला—(वि) खोखोला ।

खून्य । पोला ।

खोज—(सं स्त्री) खोजि खोख ।

अश्रुगदान ।

पैर का चिह्न । अनुसंधान । पता ।

खोजना—(क्रि स) खिचवा ।

अनुसंधान करना ।

खोजा—(सं पुं) खोजाश्व काटोउत

थका नशुंगक छाकर । छवदाव ।

मुसलमानी महलों में रहने वाला

नपुंसक नौकर । सरदार ।

खोजी, खोजू—(वि) अश्रुगदान-

काशी ।

पता लगानेवाला ।

खोट—(सं स्त्री) दोष ।

दोष, बुराई ।

खोटा—(वि) बेग़ा ।

बुरा ।

खोटार्ह—(सं स्त्री) झूठागि,
धूर्छालि ।

बुराई । दुष्टता । छल ।

खोदना—(क्रि स) ग़ाँठ ख़ना,
धोमि़त क़बा ।

गड्ढा खनना । नक्काशी करना ।

खोना—(क्रि स) छेक़ण्णवा, नष्ट
क़बा ।

गवांन। नष्ट करना ।

खोन्खा, खोमचा—[सं पुं]

मिठाई विक्रेताब मिठाईवे
पविश्रूर्ण डाड़व थान ।

बड़ी परात या थाल जिसमें रख
कर फेरीवाले मिठाई वाले मिठाई
आदि बेचते हैं ।

खोपड़ी—(सं स्त्री) (ग़ुब) नाउ-
थोला । ग़ुब, ग़ग़ज्जु ।

सिरकी हड्डी । सिर । गोलाकार
कठिन आवरण ।

खोमार—[सं पुं] द्रवनि, द्रवा-
पातनि ।

कूड़ा करकट फेंकने का गड्ढा ।

खोर—(सं स्त्री) ग़रुवाट, ठेक
ठाई ।

संकरी गली । स्नान ।

(वि) बेग़ा, अकामिला,
पेट्रुक ।

खराब । निकम्मा । खानेवाला ।

खोल—(सं पुं) आवरण ।

आवरण, ऊपरी चमड़ा । मोटी
चादर ।

खोलना—(क्रि स) खुलि मिग़ा
डेलडाडि दिग़ा ।

ढँकने, बाँधने, जोड़ने या रोकने
वाली वस्तु को हटाना
गुप्त या गुह्य बात प्रकट कर देना ।

खोली—(सं स्त्री) आवरण, पँजा
आवरण । झोपड़ी ।

खोह—(सं स्त्री) गुहा ।
गुफा ।

खौफ—(सं पुं) डर, आशङ्का ।
डर, आशङ्का ।

खौफनाक—(वि) डरावब ।
भयंकर ।

खौरा—(सं पुं) पशुब बोध
विशेष ।

पशुओं का एक रोग जिसमें बाल
झड़ जाते हैं ।

खौलना—(क्रि अ) उठनावा ।
उबलना ।

ख्यात—(सं पुं) खेल-खेलांगी,
ध्यान-धावना ।

खेल । दिल्ली । ध्यान ।

ख्याजा—(सं पुं) गवाकी ।
मुचलमान । कस्बि ।

मालिक । सरबार । मुसलमान
फकीर ।

खबार—(वि) देखा । तिरस्कृत ।
खराब, तिरस्कृत ।

खबारी—(सं स्त्री) देखा । गुण, दुर्ग ।
खराबी । दुर्दशा ।

ख्याह—(अव्य) नाईबा, वा ।
या ।

ख्याह मख्याह—(अव्य)
एनेये, वनपूर्वक ।

जबर्दस्ती ।

ख्याहिश—(सं स्त्री) ईश्वा
वांछा, आकांक्षा ।

इच्छा, आकांक्षा ।

ग

ग—वाङ्मय वर्णमालाव तृतीय आश्रव ।
व्यंजन वर्ण का तासरा अक्षर ।

गंग—(सं स्त्री) गङ्गा नदी ।
गंगा नदी ।

गंगा गति, गंगायात्रा,—[सं स्त्री]
शुद्ध ।
मृत्यु । (सं पुं—गंगाक्षाम)

गंगा-जमनी—[वि] गङ्गा, गङ्गानिध ।
मिला जुका ।

गंगोदक—(सं पुं) गङ्गा-जल ।
गंगा जल ।

गंजन—(सं पुं) अवज्ञा, पीड़ा ।
अवज्ञा, पीड़ा ।

गंजा—(वि) मुर तपा होवा बेमार
जिसके सिर के बाल झड़ गये हों ।

गंजीफा—(सं पुं) फाट खेल ।
तास का खेल ।

गँजेही—(वि) गँजा, उठूबा ।
गंजा पीनेवाला ।

गंठ जोड़ा (बंघन)-(सं पुं) ल०७

गौंठि ।

विवाह की एक रीति । दो चीजों
या व्यक्तियों का प्रायः बना
रहने वाला साथ ।

गंड—[सं पुं] गाल ।

गाल ।

गंडा—(सं पुं) गौंठि । एक गंठा

गंठ । चार का समूह ।

गँदासा—[सं पुं] बाँह काटो प ।

फरसे की भाँति का एक औजार ।

गंदगी—(सं स्त्री) लैटुता । अप-
वित्रता ।

मलीनता, अपवित्रता ।

गंदला, गंदा—(वि) मलिन, अशुद्ध

मैला, अशुद्ध ।

गंदुमी—[वि] गोम धानेबे ठेठारी

वा गोम धानव ववणव ।

गेहूँ का बना, गेहूँआ ।

गंधवह—(सं पुं) वायु ।

वायु ।

गंधाना—[क्रि अ] धूर्गक कवा ।

दुर्गंध करना ।

गंधई—[सं स्त्री] धूबि, गरु गाँठ ।

छोटा ग्राम ।

(वि) गाँव गंधकीश ।

ग्राम सम्बन्धी ।

(सं पुं) गाँवलोश ।

देहाती ।

गँवाना, गमाना—[क्रि स] शेरक उठा,
खोना ।

गँवार—[सं स्त्री] शेरक । गाँवलोश,
मूख ।

देहाती, असभ्य, मूख ।

गँवारी—(सं स्त्री) मूखीति ।

गाँवव ।

मूखता । गाँव का, भद्दा ।

गँवारू—[वि] मूख, गाँवव ।
देहाती । मूख ।

गऊ—[सं स्त्री] गाँधे ।

गाय ।

गगन-धूल—(सं पुं) एतित्थ काठ-
कुला ।

एक प्रकार का कुकुर मुत्ता ।

गगरा—(सं पुं) बागरी, गाँवरी ।
कलसा ।

गघ—[सं स्त्री] पका मज्जिना ।
विजाती भाँति आरु बालि मिश्रि
मछना ।

पक्का फल । चूने सुर्खीका मशाला

गछना—(क्रि अ) जग बधा ।
गच्छित रखना ।

गजक—(सं स्त्री) छाटैनि, जलपान
शराब के साथ खाई जानेवाली
कबाब आदि । जलपान ।

गजब—(सं पुं) शं । आचरित कथा ।
आपछि ।

कोप, बिलक्षण बात, आपत्ति ।

गजमणि—(सं स्त्री) गजमुखा
(शांतीव मूब पत्रा उ०पन्न
मणि)

हाथियों के मस्तक से निकलने
वाली मणि । [सं पुं] गजमोती

गजर-दम—[क्रि वि] प्रभाव,
प्रातःकाल ।

प्रभात के समय ।

गजरा—(सं पुं) बगटेक गँठा
कुलब माला । एविश शांति
अलङ्कार ।

फूलों की बड़ी माला ।

गमिन—[वि] डाँठ, बग ।

सघन वृक्ष हुआ ।

गटकना—[क्रि स] थिलिथोरना,
आश्वासन करना ।

निगलना, हड़पना ।

गट-पट—[सं स्त्री] बनिष्ठता, गहवाग
घनिष्ठता, सहवास ।

गट्टा—(सं पुं) आस्थि ।
कलाई ।

गट्टर, गट्टा—[सं पुं] छोटोपाना ।
बड़ी गठरी ।

गठना—(क्रि स) गँठा ।
जुड़ना ।

गठरी—[सं स्त्री] छोटोपाना, बख ।
बड़ी पोटली, माल ।

गठिया—(सं स्त्री) गँठिया-बात ।
सूजन का एक रोग ।

गठीला—(वि) गँठियुक्त, दृढ़ ।
गठा हुआ, मजबूत ।

गड़गड़ा—(सं पुं) होका ।
बड़ा हुक्का ।

गड़गड़ाना—[क्रि स] गब्-गब्
शब्द होना ।

गड़गड़ शब्द होना ।

गड़दार—(सं पुं) मूँठ ।

महावत । हाथी के साथ माला
लेकर चलने वाला रक्षक ।

गड़ना—(क्रि अ) बिक्री योरा,
शुद्ध पोरा, गाँठि दिवा ।
चुभना, दुखना, मिट्टी के नीचे
दबना ।

गड़बड़—(वि) बिगड़ना ।
अव्यवस्थित । (सं स्त्री) गड़बड़ी ।

गड़रिया, गड़ेरिया, गड़हरी—
(सं पं) छेड़ा आंगक आदि,

गवैया ।

भेंड़ पालनेवाली एक जाति ।

गढ़ाना—(क्रि अ) बिक्री दिया ।

चुभाना ।

गढ़ारी—[सं स्त्री] शिला । घुबगैया
बेशी ।

घिरनीगो ; लघेग या गहरी लकीर

गढ़ुआ—(सं पुं) बाबी ।

टोटीदार लोटा ।

गड्ड-मड्ड—(सं पुं) यत्रिल,
गान-मिश्रिल ।

वे-मेलकी मिलावट ।

गदन्त—(वि) रुग्णित ।
कल्पित ।

गदू—(सं पुं) गड, थोटेर ।
दुर्ग, खाई ।

गढ़ना—(क्रि स) गढ़ोढ़ा, गढ़
दिया । कथा गाखि कोढ़ा ।

रचना करना । सुडोल बनाना ।
बात बनाना ।

गढ़ी—(सं स्त्री) गरु दुर्ग ।
छोटा किला ।

गणिका—[सं स्त्री] बेवशा ।
बेव्या ।

गतका, गदका—(सं पुं) छाटा
खेल । टो-छाटि खेल ।

एक प्रकार का खेल । वह उड़ता
जिससे यह खेल खेला जाता है ।

गत्ता—(सं पुं) काठ-बकना ।
कागज की दफती ।

गत्यबरोध—[सं पुं] बुझा-बुझिब
कैलजत बांधा ।

समझीते की बात-चीत में बाधा
पड़ना ।

गथ—(सं पुं) पूँछि, माल-बड्ड ।
पूँजी, माल ।

गदर—[सं पुं] ऐथल माथल,
विद्रोह ।
खलबली, विद्रोह ।

गढ़राना—(क्रि अ) आधा प्रका,
बोबगत अछ पूछे होवा ।
पकने पर होना, जवानी के समय
अंगों का भरना ।

गदहा, गधा—[सं पुं] गाध,
गृध ।
एक जानवर ।

गदला, गद्दा—(सं पुं) गान्नी ।
मोटी तोशक ।

गद्दर—(वि) पेश-पेशी, बिद्वाग-
वाटिक ।

देश-द्रोही, विश्वास घात ।

गहारी—(सं स्त्री) देशद्रोहिता ।
विभाग बाँटकता ।

. देशद्रोहिता । विश्वासघात ।

गद्दी—(सं स्त्री) गरु गाँदी,
बोंबान जीन, गिंशागन ।
छोटा गद्दा । घोड़े आदि की जीन ।
सिंहासन, बड़ा पद ।

गद्दी-नशोन—(वि) गिंशागनत
अविष्ठित उल्लेखिकादी ।
“सिंहासन पर बैठा हुआ । किसी
का उत्तराधिकारी ।

गनगनाना—(क्रि म) थक् थक्टेक
कंपा । बोझाकित होना ।
जाड़े से काँपना । रोमांचित होना ।
गनना, गिनना—(क्रि स) गिनाप
कना । गणना कना ।

गिनती करना ।

गनीम—[सं पुं] डकाईत, शत्रु ।
डाकू, शत्रु ।

गनीमत—(सं स्त्री) खूब कथा ।
आजीविका । एतेनये पौदा वस्तु ।
लूट का माल, मुफ्त का माल ।

गन्ना—(सं पुं) कुँहियाव ।
ईस ।

गपकना—(क्रि स) टप कवे
गिलि खोना ।

चटपट झाँ जाना ।

गपोड़ा—(सं पुं) मिष्टा कथा,
बाज कथा ।

मिथ्या बात, गप ।

गप्प—(सं स्त्री) गप ।
गप ।

गप्पो—(वि) गपान, अशक्तादी ।
गप मारने वाला ।

गफलत—(सं स्त्री) गाकिलि, झूल ।
बेपरवाही, भूल ।

गघन—(सं पुं) आनन गम्पडि
आज्ञागाँ कना कार्य ।
दूसरे का धन हड़प लेना ।

गढवर—(वि) अशक्तादी, दात्री ।
घमंडी, कीमती ।

गभस्ति—[सं पुं] किरण ।
किरण ।

गभस्तिमान्—(सं पुं) सूर्य ।
सूर्य ।

गम—(सं स्त्री) अवस्था ; गति ।
प्रवेश, गति ।

(सं पुं) द्रुत, आजाग ।
दुख, शोक । फिक

गमक—(सं पुं) गाँठता ।
जानेवाला ।

(सं स्त्री) गोक । उबलाव
शक् ।

तबले की आवाज, सुगन्ध ।

गमकना—(सं पुं) गोकुल उल्लास ।

महकना ।

गम-खोर—(वि) गश्किल ।

सहनशील ।

गमी—(सं स्त्री) बूढ़ा शोक ।

मृत्यु-शोक

गया-बीता—(वि) अलायक ।

नालायक ।

गरक, गर्क—[वि] छूटने का शक ।

वेग ।

हूबा हुआ । नष्ट ।

गरजना—(क्रि अ) तर्जन गर्जन करना ।

गर्जन करना ।

गरज मंद, गरजी, गरजू—[वि]

जडावत प्रवा ।

जिसे गरज या आवश्यकता हो ।

गरद, गर्द—(मं स्त्री) छाई ।

धूलि ।

धूल, राख ।

गरदन—[सं स्त्री] गल । डिडि ।

गला । बरतन आदि में गले के

नीचे का भाग ।

गरदनियाँ—(सं स्त्री) गर्त । गर्ति ।

गरदन पकड़ कर धक्का देना ।

गरदा—(सं पुं) छाई ।

धूल, गुबार ।

गरबीला—(वि) बर्बल । अशुकावी ।

धमंडी ।

गरमाई, गरमी, गरमाहट—[सं स्त्री]

उष्णता । बं । आदेश ।

उष्णता, क्रोध, जोश ।

गरमाना—[क्रि अ] गरम होना ।

गरम होना ।

(क्रि स) गरम करना ।

गरम करना ।

गराँब—(सं पुं) प्रवा ।

पगहा ।

गरारा—[वि] अशुकावी । प्रवल ।

गर्व युक्त, प्रवल ।

(सं पुं) कुलकुलिया । डाडब

लाना ।

कुल्ला । बडा थैला ।

गरियाना—[क्रि अ] गालि दिया ।

गालियाँ देना ।

गरियार—(वि) अलेश्वर ।

सुस्त ।

गरी—(सं स्त्री) नाबिकलब भाँश ।

नारियल फल के अन्दरका गूदा ।

गरीब—[वि] शूथीया ।

निधन ।

गरीब-निवाज—(वि) दयागु ।

दयालु ।

गरीब परवर—(वि) पवित्र-वृत्ति-
पालक ।

दीन-प्रतिपालक ।

गरीबी—[सं स्त्री] पवित्रता ।
दरिद्रता ।

गुरुआना—(क्रि अ) गंधूब होरा
भारी होना ।

गुरुता, गुरुवाई—(सं स्त्री) गंधूबता
गुरुता ।

गुह्य—(सं पुं) अश्कव ।
घमण्ड ।

गुरेरा—(सं पुं) वेढ़ ।
वेरा ।

(वि) घिला ।

चक्ररदार ।

गर्द-गुबार—(सं स्त्री) धूलि-शक्ति
धूल-मिट्टी ।

गर्दिश—(सं स्त्री) विपाक, विपत्ति
धुमाव, विपत्ति ।

गंभीरक—(सं पुं) नाटकक अक्षर
एक दृश्य ।

एक नाटक में किसी अंक का
दृश्य ।

गर्विष्ट—(वि) अश्कवी ।
घमण्डी ।

गर्हण—(वि) गविशण ।
निन्दा ।

गलकंधल—(सं पुं) गल-विठनी ।
गो के गले के नीचे की झालर ।

गलका—(सं पुं) एविश कौश ।
एक प्रकार का फोड़ा ।

गलगंज—(सं पुं) शई-उकमि ।
शोर गुल ।

गलगलाना—(क्रि अ) डाकूप मवा ।
आनन्दित होरा ।

डींग मारना । हर्षित होना ।

गलत—(वि) अशुद्ध, अगत्य ।
अशुद्ध, असत्य ।

गलसी—(सं स्त्री) अशुक्ति, डूल ।
अशुद्धि, भूल ।

गलना—(क्रि अ) गला वा द्रवित
होरा । अकामिला होरा ।

द्रव या कोमल होना । क्षीण
होना । बेकाम होना ।

गलफड़ा—(सं पुं) अशुद्ध उगाह
लोरा इच्छि । गलब छाल ।
जल जन्तुओं के सांस लेने का
अवयव । गलका चमड़ा ।

गलबहियाँ (बाँही)—(सं स्त्री)
आलिखन ।
आलिखन ।

गलगुच्छा, गल-मुच्छा—(सं पुं)
डिडित होरा दीवल नोव ।
गलों पर के बड़े हुए बाल ।

गलशुंही--[सं स्त्री] जिझाव गुबिब
शक्ति ।

जीभ की जड़ के पास की छोटी
घंटी ।

गलही--(सं स्त्री) नाउव कट्टी ।

नावका अगला उठा हुआ कोना ।

गला--(सं पुं) डिडि, गल ।

कर्णश्रव ।

कण्ठ । कण्ठ का स्वर ।

गलियारा--[सं पुं] ठेक बाड़ा ।

छोटी गली की तरह तंग रास्ता ।

गलीचा--(सं पुं) दलिया ।

कालीन नामक मोटा बिछोना ।

गलीज--(वि) लोटना, यत्न ।

गंदा । अशुद्ध ।

[सं पुं] लोटवा ।

गन्दगी ।

गले-बाज--(सं पुं) ओकाइडाः

गावि कथा कोरा गाथ ।

असफल गीयक ।

बहुत बढ़ चढ़कर बातें करने
वाला । वह गवैया जिनके गाने
में रस कम हो ।

गलेबाजी--(सं स्त्री) ओकाइडाः ।

डींग । गाना गाते समय ज्यादा

ताने बादि लेना ।

गल्ला--[सं पुं] पञ्चव चाक,

गेना-गाल, शया ।

पशुओं का झुण्ड । अनाज ।

गवन--[सं पुं] गवन, अज्ञान ।

गमन ।

गवना, गौना--[सं पुं] प्रतिश्रुष्टेन

प्रथम बाड़ा ।

द्विरागमन ।

गवारा--(सं पुं) गगःपूत गथा ।

मन भाता । अनुकूल । गद्य ।

गवाह--(सं पुं) गायी, (गायक) ।

माक्षी, प्रत्यक्षदर्शी ।

गवाही--[सं स्त्री] गायक ।

साक्ष्य ।

गवैया--(वि) गायक ।

गायक ।

गरा--(सं पुं) मूर्च्छा ।

मूर्च्छा, बेहोशी ।

गश्त--[सं पुं] ट्रेडल मि थका ।

टहलना । पहरा देने के लिये

चक्कर देना ।

गश्ती--(वि) घूमि कुर्वाता,

वागवाहन ।

घूमने वाला । चलता फिरता

हुआ ।

गस्सा—(सं पुं) गवाश ।

ग्रास, कौर ।

गह—(सं स्त्री) शवा कार्या ।

पकड़ । हथियार की मूठ ।

गह गह्रा—(वि) अकुल्लित; धूमधामके

बड़ा ढोल, नागवा आदि ।

उमंग से भरा हुआ । धूमधाम
वाला बाजा ।

गह गहे—(क्रि वि) अगन्न मनेवे,
धुत्के ।

बहुत प्रसन्नता से । धूम से ।

गहना—(क्रि स) शवा, अश्व
कवा ।

पकड़ना । ग्रहण करना ।

गौजना—(क्रि स) म'न लगोवा ।

ढेर लगाना ।

गौजा—(सं पुं) गौजा, भाः ।

एक नशीला द्रव्य ।

गौठ—(सं स्त्री) गौठवि ।

गिरह ।

गौठना—(क्रि स) गौथा, ज़ोवा

दिया । मिलोवा ।

जोड़ना, मिलाना । गूँथना ।

गौसना—(क्रि स) गौथा, वन

कवि वधा ।

गूँथना, छेदना । वश या शासन

में रखना ।

गौसी—(सं स्त्री) धूलूशव, वल्लव

आदिब ज़ाः, गौंठि, कपट ।

हथियार और तीर आदि की
नोक । गौंठ, कपट ।

गागर—(सं पुं) डाँडव बागबी ।

बड़ी गगरी ।

गाज—(सं स्त्री) वज्र, बिज्रुली ।

गर्जन ।

वज्र । बिजली । गर्जन ।

गाजना—(क्रि अ) गर्जन कवा,

अगन्न होवा ।

गरजना, प्रसन्न होना ।

गाजा-बाजा—(सं पुं) गाना

बकमव बाज यज्ञ ।

अनेक प्रकार के बाजों का समूह ।

गाजी—(सं पुं) वीव प्रकृष ।

बहादुर, वीर ।

गाड़ना—(क्रि स) पूति थोवा ।

खूँटा आदि माटित गौंठत

पूति थिय कवा ।

गड्ढा खोद कर कोई चीज मिट्टी से

ढँकना । खंभा आदि का एक

सिरा गड्ढे में जमाकर खड़ा

करना ।

गाड़ीवान—[सं पुं] गाड़ोवान ।

गाड़ी हाँकने वा ।

गाढ़—(वि) दृढ़ ।

मजबूत । गाढ़ा । विकट (स्थिति)

गाढ़ा—(वि) घन वा डाँठ, घनिष्ठ ।

घना, घनिष्ठ ।

गात—[सं पुं] गवीर, गा ।

शरीर ।

गातो—[सं स्त्री] गीति । गलत

उलोमाइ लोदा चादव ।

वह चादर जो गले में बाँधी जाती है ।

गाथ—(सं पुं) यथगता, सूत्रगति ।

यथा, प्रशंसा ।

गाढ़—(सं स्त्री) गेद ।

गाढ़ी मेल ।

गाढ़ा—(सं पुं) अना पका भग्य ।

अधपकी फसल ।

गादुर—(सं पुं) बाइलि ।

चमगादर ।

गाफिल—(वि) गीफिलि ।

बेसुध, असावधान ।

गाभा—(सं पुं) कुँशिपाठ ।

कोमल नया पत्ता । कोपल ।

गामो—[वि] गाँउता । गच्छाग

कटोता ।

चलनेवाला संभोग करनेवाला ।

गाय—(सं स्त्री) गाई । जबलगाइह ।

गो । सीधा मनुष्य ।

गाय-गोठ—(सं पुं) गोशाला ।

गोशाला ।

गायब—[सं स्त्री] गूथ ।

लुप्त ।

गारद—(सं स्त्री) पशवा । थाना ।

पुलिस-पहरा । पुलिस चौकी ।

गारना—(सं स्त्री) आँटि पेलोबा ।

निचोड़ना ।

गारा—(सं पुं) छूग छूकीं मिशलाबा

लेउ । छिमेक-बालि मिशलाबा

गछला ।

ईंटे जोडने का सिमेंट आदि का

मसाला ।

गारुडी—(वि) जापद उडा ।

मंत्र से साँपका विष उतारनेवाला

गालन—(सं पुं) गलोबा कार्य ।

गलाने की क्रिया ।

गाला—(सं पुं) कपाइव गोजि ।

रूई का पूनी ।

गाव-तकिया—(सं पुं) दोबल गोरु ।

कल गोरु ।

लम्बा ओर मोटा तकिया ।

गावदी—(वि) अकबा ।

अबोध ।

गाहक, गाँहक—(सं पुं) आहक ।

खरीददार ।

गाहना—[क्रि स] थाउनि पोदा । बथ्
थाह लेना । मथना ।

गिंजना—[क्रि अ] मठनि-गमनि
बेया कबा ।

किमी चीज के उलट पलटकर या
मानकर खराब करना ।

गिच पिच—[वि.] प्रपष्टे ।
अस्पष्ट ।

गिज गिजा—(वि) गेटनका ।
बहुत ही गीला जो खाने में
अच्छा न लगे ।

गिट पिट—(सं स्त्री) आं-बां ।
निरर्थक शब्द ।

गिट्टा—(सं स्त्री) गढ़ गिलछाट ।
पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े ।

गिड़गिड़ाना—(सं स्त्री) यश्नय
कना ।
अत्यन्त नम्र होकर कोई बात
कहना ।

गिद्ध—(सं पुं) गण्ड ।
एक पक्षी । गृद्ध ।

गिनती—[सं स्त्री] गणना शिष्टाप ।
गणना, संख्या ।

गिरगिट—(सं पुं) तेजप्रिया ।
छिपकली की भाँति एक प्राणी ।

गिरना—(क्रि अ) पबिबोरा । दाग
होना । अवनति होना ।

ऊपर से नीचे आ जाना । जमीन
पर पड़ या लेट जाना । अवनति
होना । मून्य का ह्रास होना ।

गिरफ्त—(सं स्त्री) शवण । दोष
वा यपवायन अशुभकान कबा बीति ।
पकड़, दोष या भूल का पता
लगाने का ढंग ।

गिरफ्तार—(वि) श्रेष्ठार । खा-
पबा ।

पकड़ा हुआ । बन्दी ।

गिरफ्तारी—(सं स्त्री) अतदाश ।
श्रेष्ठारी । बन्दीकरण ।

गिरफ्तार होनेकी क्रिया या भाव

गिरखान—[सं पुं] गल । डिडि ।
गर्दन ।

गिरमिट—(सं पुं) गिम्बिट, प्राक-
भोहद, छुड्डि ।
बड़ा वरमा । शर्तनामा ।

गिरवी—(वि) नक्क
बन्धक ।

गिरह—[सं स्त्री] टोपोला । गिबा
एक गजब बोझ भागब एभाग
गाँठ । एक गज का सोलहवां
भाग ।

गिरहकट—(वि) जेपकटा चोब ।
पाकिटभार ।

गिरा—(सं स्त्री) वाक्पङ्क्ति । छिडा ।

बाणी ।

वाणी । जिह्वा । सरस्वती ।

गिराना—(क्रि सं) पेलोवा । मूल
कम कबा ।

किसी चीज को नीचे डाल देना ।

मूल्य आदि घटाना ।

गिरावट—[सं स्त्री] पतन । झाग ।
पतन । ह्रास ।

गिरि—[सं पुं] पहाड़ । एटा
उपाधि ।

पहाड़ । एक उपाधि ।

गिरिजा—(सं स्त्री) पार्वती,
गङ्गा ।

पार्वती, गंगा ।

गिरी—[सं स्त्री] गुट्टिब भित्तबर
शाय ।

बीजके अन्दर का गूदा ।

गिर्द—(अव्य) आगे-प्रागे,
चाबिङ्काले ।

आसपास । चारों ओर ।

गिलकार—(वि) कुल कटा मिश्रणी ।
गारे से दीवारों पर बेलबूटे बनाने
वाला कारीगर ।

गिलटी—(सं स्त्री) टेम्बेका,
ठेयूना ।

शरीर के अन्दर की छोटी गोल
गांठ । (ग्लैंड) ।

गिलइरी—(सं स्त्री) केर्कटूबा ।
चूहे की तरह मोटी रोयेदार
पूँछवाला एक जन्तु ।

गिला—(मं पुं) आपत्ति, निम्ना ।
निकायत । निम्ना ।

गिलाफ—[सं पुं] गिलिप, शीप ।
लिहाफ आदि की खोल । म्यान ।

गिलास—(सं पुं) गिलाच ।
एक प्रकार का बर्तन ।

गीतकार—(सं पुं) गौतिक'न ।
गीत लिखने वाला ।

गीदड़—(सं पुं) गिगल
शृगाल ।

गीध—[सं पुं] गङ्गण ।
गिद्ध ।

गीर्वाण—(सं पुं) देवता ।
देवता ।

गीला—(वि) भिजा, भिजा ।
भीगा हुआ ।

गुंजाइश—(सं स्त्री) अवकाश,
सुविधा ।

अवकाश । सुविधा ।

गुंजार—(सं पुं) डोबोबाब
गुञ्जन ।

भौरों की गुंज ।

गुंई, गुंढापन—(सं स्त्री) उडावि ।

ढुंढे सा-आचरण और व्यवहार ।

गुँथना, गुथना—(क्रि अ) गँथ ।

उलझना ।

गुंधना—(क्रि स) मण्डित होना,

आँछो-मन्नदा आदि गना ।

माड़ा या गुँथा हुआ आटा ।

गुंफन— [सं पुं] गोंठा ।

गुँथना ।

गुंज (इ)—(सं पुं) । उधज मन्दिर

आदिब उपबब कलचौर निठिना
अर्थ ।

गोल । ऊँची और उभरी हुई
छत ।

गुग्गुल—(सं पुं) गवल शृङ्ग ।

एक पेड़ जिसकी गोंद सुगन्ध के
लिये जलाते हैं ।

गुच्छा—(सं पुं) थोपा, गोश्च,
कोश्च ।

एकमें लगे या बँधे हुए पत्तों
और फूलों का, या सूत और
छोटी वस्तुओं का समूह ।

गुजर, गुजरान, गुजारा—(सं पुं)

निर्वाह । ठूँक पोना ।

निर्वाह । निकास । पहुँच ।

गुजरना—(क्रि अ) अतिवाहित

होना । मरा ।

बीतना या कटना । *मरना ।

गुजर-बसर—(सं पुं) निर्वाह ।

निर्वाह ।

गुजारना—(सं स्त्री) अतिवाहित

करा, दाखिल करा ।

बिताना, पेश करना ।

गुजारिश—(सं स्त्री) आदेदन,

प्रार्थना ।

निवेदन । प्रार्थना ।

गुझिया—(सं स्त्री) एविष मिठाई ।

एक प्रकार का पकवान या
मिठाई ।

गुट, गुट्ट—(सं पुं) गमूश, दल ।

समूह, दल ।

गुटकना—(क्रि स) गिलि थोना ।

निगलना ।

(क्रि अ) पाव चवायेब पदे

दुक दूक करा ।

कबूरत की तरह गुटरगू करना ।

गुटका—(सं पुं) श्रुष्टिका ।

छोटे आकार की पुस्तक ।

गुठली—(सं स्त्री) ग्रांथि ।

आम आदि फलों के बड़े बीज ।

गुड़गुड़ाना—[क्रि अ] गोब-गोबनि

नश होना ।

गुड़ गुड़ शब्द होना ।

(क्रि स) गोंब-गोंब भक्ष
करा ।

गुड़ गुड़ शब्द करना ।

गुड़गुड़ी—(सं स्त्री) शोका ।
हुका ।

गुड़िया—(सं स्त्री) काटपाव
पूतला ।
कपड़े की पुतली ।

गुड़डा—(सं पुं) काटपाव
पूतला ।

कपड़े का बना हुआ पुतला ।

गुड़डी—(सं स्त्री) टिला ।
कागज की पतंग, कन कौआ ।

गुणग्राहक, गुणग्राही—(वि) गुण
वा गुणैव यथं गौडा ।
गुण या गुणियों का आदर करने
वाला ।

गुत्थम-गुत्था—(सं पुं) आँटल,
शताशति ।

उलझाव, हाथाबाही ।

गुत्थी—(सं स्त्री) आँटल । गमगा ।
गाँठि ।

उलझन । समस्या । गाँठ ।

गुदगुदा—(वि) गडगड । कोमल ।
मांस से भरा हुआ । मुलायम ।

गुदगुदाना—[क्रि स] काँडेकूति
वा डाकूटेकूति दिशा ।

किसी को हँसाने के लिये बगल
आदि सहलाना ।

गुदगुदी—(सं स्त्री) काँडेकूति ।
डाकूटेकूति ।

बगल आदि कोमल अंगों को
सहलाने से होने वाला कोमल
अनुभव । उमंग ।

गुदडी—[सं स्त्री] काँधा ।
चियड़ों का बना कन्या ।

गुदा—(सं स्त्री) गुशवाव । गोठवाव ।
मलद्वार ।

गुदाना—(सं स्त्री) टिका वा छिटा
दिया ।

गोदने का काम करना ।

गुदारा—(सं पुं) नावदेव नदी
पाव करवा काया ।

नाव से नदी पार करनेका काम ।

गुदी—(सं स्त्री) गुट्टिवा शीश ।
पाँछ-मूत्र ।

बीज के अन्दर का गुदा । सिर
का पिछला भाग ।

गुनगुना—(वि) कूल्शोया ।
जरा सा गर्म ।

गुन-गुनाना—(क्रि अ) गुणगुण भक्ष
करा ।

अस्पष्ट स्वर में गाना या शब्द करना ।

गुलना—(क्रि स) गुल वा गूलन कर्त्ता ।
गुलन कर्त्ता ।

गुणा करना । मानना । रटना ।

गुलहगार—(वि) प्राणी । यशवासी ।
पापी, अपराधी ।

गुना—(सं पुं) गुण, वाद ।
संख्या का उतनी बार सूचित करनेवाला एक प्रत्यय ।

गुनावन—(सं स्त्री) डना-टिक्का ।
सोच विचार ।

गुनाह—(सं पुं) प्राण । यशवाध
पाप । अपराध ।

गुपचुप—(क्रि. वि) गोपयन ।
गुप्त रूप से । चुपचाप ।

गुप्ती—(सं स्त्री) छिपेबत तबोबाल
लोभाई बका लाठी ।
वह छड़ी जिसके अन्दर किंच या
नलवार छिपी हो ।

गुफा—(सं स्त्री) गुहा ।
गुहा ।

गुहार—(सं पुं) गुलि । मनव
धर वा धूँ ।
मर्द, धूल । मन का क्रोध, दुख
आदि ।

गुब्बारा—(सं पुं) वेगून ।
बैलून ।

गुम—[वि] गुंथ । गूँथ ।
छिपा हुआ । अप्रसिद्ध । खोया
हुआ ।

गुमटा—(सं पुं) मूबत बुल्ला बाई
टेमका साक्षि उठा ।
सिर पर चोट लगने से होनेवाली
सूजन ।

गुमटो—(सं स्त्री) गरु कोठा ।
छोटा कमरा या घर ।

गुमना—[क्रि अ] देबाई योडा ।
खो जाना ।

गुमनाम—(वि) अज्ञात ।
अज्ञात ।

गुमर—(सं पुं) अश्काब ।
घमंड ।

गुमराह—(वि) पथशायी । विपथ-
गात्री । पथबध्ते ।

रास्ता मूला हुआ । कुमार्ग गात्री ।

गुमान—[सं पुं] अश्काब ।
अशुमान ।

घमंड । अनुमान ।

गुमानो—(वि) अश्कारी
घमण्डी ।

गुर—(सं पुं) उपाय । बुद्धि ।
उपाय, युक्ति ।

गुरगा—(सं पुं) ङकव । ङकव ।

चेला । जामूस ।

गुरबी—[सं स्त्री] ङाटोवा ।

आडेल ।

निकुड़न । उलभन ।

गुरदा—(सं पुं) मूत्रावाव । मूत्र-

द्वनी । गाइग ।

कलेजे के पाम का एक भीतरी
अंग । साहस ।

गुरमुख, गुरुमुख—(वि) दौकित ।

जिसने गुरुमे धार्मिक दीक्षा
ली हो ।

गुरमुखी, गुरुमुखी—(सं स्त्री)

ङक नानक अवहित्त एक अकावब
आश्व आक भावा ।

पंजाब में प्रचलित एक लिपि ।

गुराई, गोरआई—(सं स्त्री) वगा

ङक विनिष्टे ।

गोरापन ।

गुरिया—(सं स्त्री) दानागणि ।

माइ वा मांगन टुकूवा ।

माला में का मनका या दाना ।

मछली, मांस का टुकड़ा ।

गुरुआई—[सं स्त्री] ङकव पद ।

छाकूची ।

गुरुका पद । चालाकी ।

गुरुकुल—[सं पुं] ङकव आश्व वा

ङकव वंश ।

गुरुका आश्रम । गुरुका वंश ।

गुरुब—(सं स्त्री) एविध केश

लता ।

एक प्रकार की कड़वी लता ।

गुरुडम—[सं पुं] ङक-अङ्कव ।

स्वयं गुरु बनकर दूसरों से अपनी
पूजा करवाना । आडम्बर ।

गुरुत्वाकर्षण—(सं पुं)

नाशार्कर्षण ।

पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति ।

गुरुद्वारा—(सं पुं) शिथलकलक

धर्म-मन्दिर ।

सिखों का धर्म मन्दिर ।

गुरेरना—(क्रि स) ङकव टोवा ।

क्रोध से देखना ।

गुर्जर—[सं पुं] ङकवाट । ङकव

जाति ।

गुजरात । गुजर जाति ।

गुराना—(क्रि अ) गेटेबिया ।

कुत्ते आदि का-घुर घुर बोलना ।

क्रोध में बोलना ।

गुल—[सं पुं] कुल गोलानप ।

फूल । गुलाब का फूल ।

गुल-गपाड़ा—[सं पुं] गोल-गोल ।

शोर गुल ।

गुलगुला—[सं पुं] एविष
मिठाई ।

एक प्रकार का मीठा पकवान ।

गुलशा—(सं पु) मयते गीत
धनविधवा ।

प्रेम पूर्वक गालों पर किया घीमा
आघात ।

गुलछरी—(सं पुं) भोगविनाग ।
स्वच्छन्दता पूर्वक किया जानेवाला
भोग विलास ।

गुलजार—(सं पुं) बागिचा ।
बाग ।

(वि) उष्कूल ।

हरा भरा । आनन्द पूर्ण ।

गुलदस्ता—[सं पुं] कुलब धोपा ।
फूलों का गुच्छा ।

गुलदान—(सं पुं) कुल-दानो
फूलों का गुच्छा रखने का पात्र ।

गुलनार—[सं पुं] डालिमर कुल ।
अनार का फूल ।

गुल-बकावली—[सं स्त्री] एविषकुल
एक प्रकारका फूल ।

गुल-बदन—(सं पुं) एविष पाट-
काशोब । गोलाशर निठिना शरीर ।

एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

गुलशन—(सं पुं) बागिचा ।
बाग ।

गुलाब—(सं पुं) गोलाप ।

एक प्रकार का सुगंधित फूल ।

गुलाब-जल—(सं पुं) गोलाप
जल ।

गुलाब के फूलों का अर्क ।

गुलाबी—(वि) गोलापी । गोलाप-
जवकोय ।

गुलाब के रंग का । गुलाब
सम्बन्धी ।

गुलाम—(सं पुं) क्रीतदास,
बांका, चाकर ।

क्रीत दास । नीकर ।

गुलामी—(सं स्त्री) दास्य, परा-
धीनता ।

दासता । पराधीनता ।

गुलाल—[सं पुं] काकू ।

एक प्रकार का लाल चूर्ण ।

गुलिस्ती—(सं पु.) बागिचा ।
बाग ।

गुलबंद—(सं पुं) गल-बन्दा ।
गलत शिक्षा अलङ्कार ।

सिर पर या गले में लपेटने की
एक लम्बी पट्टी ।

गुलेल—(सं स्त्री) बाटिलू, गुल्लिया
धनु ।

छोटा धनुष जिससे मिट्टी की
गोलियाँ चलाई जाती हैं ।

गुल्फ—(सं पुं) खाँच ग्रीठि ।

एडी पर की गाँठ ।

गुल्म—(सं पुं) झाँपोश गंछ ।

ढेगछ मल ।

एक जइसे कई तनों के रूप में
निकलने वाला पीघा । सेना की
हुकड़ी ।

गुल्ली-डंडा—(सं पुं) डोटाछाँटि

वा टाँछाँटि खेल ।

लडकों का एक खेल ।

गुस्ताख—(वि) अनिष्टे, शूटे, अड्ड ।

घृष्ट । अ-शालीन ।

गुस्ताखी—(सं स्त्री) शूटेडा ।

उद्दण्डता ।

गुस्सा—(सं पुं) खं ।

क्रोध ।

गुस्सैल—(वि) खंडाल ।

क्रोधी ।

गुह—(सं पुं) काष्ठिक, खोबा, बिखूब

एठा नाम, शूरा, क्षत्र, मणि ।

कार्तिकेय । घोड़ा । बिष्णु ।

एक निषाद । गुफा । हृदय ।

मल, मेला ।

गुहना—[क्रि स] गंधा ।

गूँथना ।

गुहराना—[क्रि स] छिछवि गडा ।

पुकारना ।

गुहांजनी, गुहेरी—(सं स्त्री)

आठिनाइ (आचनि) ।

बाँख की पलक पर होनेवाली

फुत्सी ।

गुहा—[सं स्त्री] शूरा, गंखव ।

कन्दरा । गुफा ।

गुहारना—(क्रि स) बकाब काबतप

छिछवा ।

रक्षा के लिये प्रकार मचाना ।

गुह्य—(वि) शूथ, गोपनीय ।

छिपाने योग्य । गोपनीय ।

गूँगा—[वि] बोबा ।

जिसमें बोलने की शक्ति न हो ।

गूँज—(सं स्त्री) गुण्-गुनि ।

भीरों के गंजने का शब्द ।

गुंजार । प्रतिध्वनि । छोटे छोटे

छल्ले के रूप में लगेटा या घुमाया

हुआ तार ।

गूँजना—[क्रि अ] गुण गुण

करा । अतिक्षमिष्ठ शोभा ।

भीरों का मधुर ध्वनि करना ।

प्रतिध्वनि से व्याप्त होना या

भरना ।

गूँथना—(क्रि स) गंधा । आठा बाबा ।

बाटा अच्छी तरह मड़िना । सूद

पिरोकर बाका बाबि बनाया ।

गूजर—(सं पुं) गुवान ।

ग्वाला [सं स्त्री—गूजरी]

गूढ़—(वि) छुप्त, छिछका, कठिन ।

छिपा हुआ । गहरे या गम्भीर आशयवाला, जिसका आशय समझना कठिन हो ।

गूढ़क—[सं पुं] कठोकाणि ।

फट्टे पुराने कपड़े । चिथड़ा ।

गूदा—(सं पुं) फलव गाह ।

फल के भीतर का खाद्य अंश । खोपड़ी का सार भाग । नारियल आदि की गिरि ।

गूल—(सं स्त्री) नाँउ टेना खरि । नाव खींचने की रस्ती ।

गूलर—(सं पुं) डिक्क फल । एक प्रकार का फल । उदुंबर ।

गूह—(सं पुं) खलि विठा । विष्टा । मेठा ।

गूज—(सं पुं) गूजन । गिद्ध पत्नी ।

गूहपति—(सं पुं) बरब ब्रवाकी । खूँडे ।

खर का मालिक । बगिन ।

गूही—(सं पुं) गूहच, बाखी । गूहस्थ । बाणी ।

गूह—(वि) बर गवकीय ।

गूह सम्बन्धी ।

गेंडुआ, गेंदुआ—[सं पुं] गोल गाक । ब'ल ।

गोल तकिया । गेंद ।

गेंदुरी—(सं स्त्री) कधवा, आधावि । गोल चक्र । कुण्डली ।

गेंद, गेंदुक—(सं पुं) ब'ल । कपड़े, चमड़े आदि का गोला । कन्दुक ।

गेंदा—(सं पुं) गेहेबानडी कुल ।

पीले रंग का एक फूल ।

गेड़ना—(क्रि स) बोड़ बरा । लकौर आदि से घेरना । परिक्रमा करना । खेत की मेड़ बनाना । रहट चलाना ।

गेय—(वि) गोवाब उपयोगी । गाने के योग्य ।

गेरना—(क्रि स) पेलाबा, पेलाये दिशा, भिका ।

गिराना । डालना । बहनना ।

गेह—(सं पुं) बर । खर । मकान ।

गेहुँअन—(सं पुं) गोब गौँअ । एक जहरीला साँप ।

गेहूँ—(वि) बेहूँ बरगौरा ।

गेहूँ के रंग का ।

गेहूँ—[सं पुं] बेहू ।

एक अनाज जिसके आटे की रोटी बनती है ।

गेहूँ, गेहूँ—(सं पुं) गेहूँ ।

भैंसे के आकार का एक जंगली पशु ।

गेहूँ—(सं पुं) गेहूँ ।

परोक्ष ।

गेहूँ—(सं पुं) गेहूँ ।

एक बेहूँ ।

बड़ा हाथी । एक प्रकार की चिड़िया ।

गेहूँ—(सं स्त्री) गेहूँ ।

गाय ।

गेहूँ—(वि) गेहूँ, गेहूँ ।

अन्य । दूसरा ।

गेहूँजिम्मेदार—(वि) गेहूँजिम्मेदार ।

अपनी जिम्मेदारी न निभानेवाला ।

गेहूँ—(सं स्त्री) गेहूँ ।

लज्जा । शरम ।

गेहूँ मामूली—[वि] गेहूँ ।

असाधारण ।

गेहूँनासिब, गेहूँबाजिब—(वि)

अशुचित ।

अशुचित ।

गेहूँ सरकारी—(वि) गेहूँ सरकारी ।

जो सरकारी न हो ।

गेहूँबाजिब—(वि) अशुचित ।

अनुचित ।

गेहूँबाजिरी—(सं स्त्री) अशुचित ।

अशुचित ।

अनुचित ।

गेहूँ—(वि) गेहूँ ।

गेहूँ । गेहूँ रंगा हुआ ।

गेहूँ—(सं स्त्री) गेहूँ ।

छोटा रास्ता ।

गेहूँ—[सं स्त्री] गेहूँ ।

गेहूँ । गेहूँ ।

कमर पर बोली की लपेट ।

गेहूँ—[सं पुं] गेहूँ ।

बनवीरा ।

मध्य प्रदेश की एक जंगली जाति ।

गेहूँ—(सं पुं) गेहूँ ।

गेहूँ के तनों से निकला हुआ

चिपचिपा या लसदार साब ।

रुखा ।

गेहूँ—(सं स्त्री) गेहूँ ।

पानी में होनेवाली एक बास या

उस बास की बनी चटाई ।

गेहूँ—[सं स्त्री] गेहूँ ।

गेहूँ । गेहूँ ।

गाय । किरण । बृष राशि ।
इन्द्रिय । वाणी । सरस्वती ।
अक्षि । बिजली । दिशा । माता ।
जीभ । दूध देनेवाले पशु ।
(सं पु) गन्ध, नानी, चूँचा,
छत्र, बाग । चोँचा ।
बैल । नन्दी । बोड़ा । सूर्य ।
चन्द्रमा । बाण ।
(अव्य) यदि ।
यद्यपि ।

गोहँठा—(सं पु) श्रोत्रवर्धक ।
उपला ।

गोईदा—(सं पु) गुच्छत्र, चोबा-
चोबा ।
गुलचर । जासूस ।

गोइयाँ—(सं पु) गन्धी, लंग ।
साथी ।
(सं स्त्री) गन्धी ।
सखी । सहेली ।

गोई—(सं स्त्री) बलद गन्धर्व
शाल । गन्धी ।
गाड़ी, हल आदि में जोतने की
बैलों की जोड़ी । सखी ।

गोऊ—(वि) गुकाँठ ।
झिपानेवाला ।

गोऊर्ण—(वि) गन्धर्व निहिता
काय बुरु ।

गो के से लम्बे कानों वाला ।

गोकुल—(सं पु) गन्धर्व दल,
गोपीगण ।

गायों का मुण्ड । गोशाला ।

गोखरु—(सं पु) काँइटीया लता ।
एक कंटीले फलवाली झाड़ी ।
कपड़ों पर लगाने वाला एक
साज । एक गहना ।

गोचर—(सं पु) ऐन्द्रियेन द्रष्ट
प्राप्य ।

जिसका ज्ञान इन्द्रियोंसे हो सके ।

गोचर—(सं पु) चवगैया पंथाव ।
चरागाह ।

गोजर—[सं पु] बिछा ।
कन खजूरा कीड़ा ।

गोजी—(सं स्त्री) डांडव लाठी ।
बड़ी लाठी ।

गोट—(सं स्त्री) कपव गुणाव भावि ।
गुलजी । गोष्ठी । पाशाखेजव गुट्टि ।
बहु पट्टी जो कपड़े के किनारे पर
लगाई जाती है । मंडली । गोष्ठी ।
चोपड़ आदि खेलनेका मोहरा ।

गोटा—(सं स्त्री) कपव गुणाव भावि ।
बनिश । बचना । नाबिकपव ।

बादले का वह पतला कीता जो
कपड़ों पर लगाया जाता है ।
घनिष्ठा । नारियल की गरी ।
सूखा हुआ मल ।
गोटी—(सं स्त्री) लंबा-छोटा नीचे
बेल बेलाला कबा गिनछुटि ।
पत्थर या मिट्टी का छोटा टुकड़ा ।
चौपड़ खेलनेका मोहरा । गोटियों
का खेल । लाम का योग ।
गोठ—(सं स्त्री) भौनाना, बगलौ,
झंझा । बगल ।
गोशाला । गोष्ठी । बड़ा । संर
गोड़—(सं पुं) डबि ।
पेर ।
गोड़हत—(सं पुं) गँवत पशुवा
दिशा ठकियाव ।
गाँवमें पहरा देनेवाला चौकीदार ।
गोड़ना—(क्रि स) गश्त भूमि
छुवि खुँचवि दिशा ।
पौधे के बढ़ने के लिये चारों ओर
की मिट्टी कोड़ना ।
गोड़ा—(सं पुं) फाँटे आदिब खुँवा ।
पलंग आदि का पाया ।
गोड़ाई—(सं स्त्री) खुँचवि दिशा
कार्य वा ठाँव बानठ ।
गोड़ने की क्रिया, भाव या
मजदूरी ।

गोड़ा पाई—(सं स्त्री) बटन बटन
आइ-आइ ।
बार बार आना जाना ।
गोड़ारी—(सं स्त्री) खोता ।
डबि पथान । पैताना । जूता ।
गोत—(सं पुं) गोत्र, वंश ।
गमूह ।
खानदान । वंश । समूह । जत्था ।
गोतना—(क्रि स) छूँवावा ।
पानीमें डुबाना । नीचे की तरफ
ले जाना ।
[क्रि अ] तनटन फौं खुँडा,
छोपनि नाइवा तज्जा मगा ।
नीचेकी तरफ झुकना । निद्रा,
तंद्रा आदिके बधमें होना ।
गोता—[सं पुं] छूँव ।
डुबकी ।
गोताखोर—(सं पुं) पानीत
छूँव दि बड बिठादोँठा ।
पानीमें डुबकी लगानेवाला । पब
डुब्बी नाव ।
गोतिया, गोती—(सं पुं) गम-
गोत्रोय ।
गोत्रीय । भाई बन्द ।
गोत्र—(सं पुं) गखान, नाँव,
बधाव छव, दम, वंश ।

सन्तान । नाम । राजाका छत्र ।
 दल । वंश ।
 गोद, गोदी—(सं स्त्री) कोना ।
 उछंग । क्रोड़ ।
 —लेना—ठोमनीया पो ।
 किसीको अपना दत्तक पुत्र
 बनाना ।
 गोदना—(क्रि स) बिक्री दिया,
 उछटाई दिया, विक्रय कबा ।
 बुमाना । उसकाना । ताना देना ।
 गोदान—(सं पुं) आत्मनः कर
 पान कबा कार्य, छूटाकरन ।
 ब्राह्मण को गाव दान करने की
 क्रिया । मुण्डन संस्कार ।
 गोदाम—(सं पुं) भण्डार, बख
 गोटाई बनी बर । बख बोवा
 डवाल ।
 वह स्थान जहाँ बहुत सा माल
 या सामान इकट्ठा रखा जाता है ।
 गोधन—(सं पुं) गन्धबोव, गोकर्षी
 जम्बडि । गोवर्द्धन पर्वत ।
 गोएँ गो रूपी सम्पत्ति । गोव-
 र्द्धन पर्वत ।
 गोधूम—(सं पुं) बेह ।
 गेहूँ ।
 गोना—(क्रि स) गूँकोवा ।
 छिपाना ।

गोप—[सं पुं] गन्ध बन्धक,
 गोवान । डिडिड पिन्ना अन-
 डार ।
 गो का रक्षक । ग्वाला । गले में
 पहनने का एक गहना ।
 गोपना—[क्रि स] गोपन कबा ।
 गूँकोवा ।
 छिपाना ।
 गोपांगना, गोपी—[सं स्त्री]
 ग्वालिनी वा ग्वाजनी ।
 ग्वालिनी । गोप पत्नी ।
 गोपी चन्दन—[सं पुं] एविष
 शालबीया गाँठि ।
 एक प्रकार की पीली मिट्टी ।
 गोप्ता—(वि) बन्धक ।
 रक्षक ।
 गोप्य—(वि) गोपन कविब
 लगीया ।
 छिपाने योग्य ।
 गोबर गोपेश—[सं पुं] कूकन,
 गूँ ।
 महा । मुख ।
 गोष्ठी—(सं स्त्री) कवि ।
 एक प्रकारकी घास । एक प्रकार
 का फूल या पत्तेदार गोला जो
 तरकारी के रूपमें खाया जाता
 है ।

गो मुख—(सं पुं) गन्ध ब्रू ।

एविश बाण यज्ञ ।

गोका मुँह । एक प्रकार का बाजा ।

गोमुखी—(सं स्त्री) माला अभि-

वटेल मोना ।

माला जपने की थैली ।

गोमेद (क)—(सं पुं) एविश बड़ ।

एक प्रकार का रत्न ।

गोमेध—(सं पुं) यि यज्ञत गन्ध

बलि दिया शय ।

एक प्रकार का यज्ञ जिसमें गो की बलि दी जाती थी ।

गोया—(क्रि वि) धेन वा येन ।

मानो । जैसा ।

गोर—(वि) वशा ।

गोरा ।

(सं स्त्री) कवच ।

कवच ।

गोरख धंधा—[सं पुं] इन्द्रजाल,

खिजाल ।

इन्द्रजाल । बहुत उलझन की कोई बात या काम जिसे समझना या करना कठिन हो ।

गोरख पंथ—[सं पुं] गोवध

नाथ व शिव अर्वाचित पंथ ।

गोरखनाथ का चलाया हुआ

एक सम्प्रदाय ।

गोरखा—[सं पुं] नेपालव जङ्ग-

र्गक नाम प्रान्त वा डार बागिना ।

नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश वा वहाँ का निवासी ।

गो रज—[सं पुं] गोशूलि,

गन्ध बूबाव पना उवा शूलि ।

गोओं के खुरसे उड़नेवाली धूल ।

गोरस—[सं पुं] गाथीन । पै ।

गा का दूध । दही । मठा ।

इन्द्रियों का सुख ।

गोरा—(वि) वशा ।

गोर वर्ण का ।

[सं पुं] खिबिछी ।

फिरंगी ।

गोराई—(सं स्त्री) वशा वृष

विशिष्ट । गोमर्ष ।

गोरापन । सुन्दरता ।

गोरिखा—[सं पुं] गबिला ।

एक प्रकार का वन-मानुस ।

गोरी—(सं स्त्री) कपवती जी ।

रूपवती स्त्री ।

गोरू—[सं पुं] छाविठडीया वृष ।

मवेशी ।

कोरीचन—[सं पुं] एविश शन-
शोरा वरवर श्रृंगि जरा ।

एक पीला सुगन्धित द्रव्य ।

गोळदाख [सं पुं] कानान
छलावा टैगळ । गोललाख ।

तोप चलानेवाला । तोपची ।

गोळक—[सं पुं] घुबवैश वख ।
छकून गळन । कोटन ।

गोल पिंड । आंख का डेला ।

गुंबद ।

गोळगप्पा—[सं पुं] एविश गिठा ।
एक प्रकार की छोटी फुलकी

(पूरी) ।

गोळमिच—[सं स्त्री] जानूक ।
काली मिर्च ।

गोळा—(सं पुं) गोलाकार वख ।
खुनि ।

बड़ी गोल चीज । लोहे का गोल

पिंड जो तोपों से शत्रुओं पर

फेंका जाता है । रस्सी, सूत

आदि की लपेटी हुई गोल पिंडी ।

गोळाई—(सं स्त्री) गोलाकार ।
गोलापन ।

गोळा बारूद—(सं पुं) शर-
बारूद ।

युद्धमें काम आनेवाले अस्त्र अस्त्र
आदि ।

गोळाई—(सं पुं) गृथिवीर
आधाभाग ।

पृथ्वी का आधा भाग ।

गोली—(सं स्त्री) खुनि ।

छोटा गोलाकार पिंड । औषध की

बटिका । मिट्टी, कांच आदि का

छोटा गोल पिंड । बन्दूक में भर

कर छोड़ने की सीसे की गोल

पिंडी ।

गो-लोक—(सं पुं) वैकुण्ठ,
गोलोक शय ।

वैकुण्ठ ।

गोश—(सं पुं) काण ।
कान ।

गोशबारा—(सं पुं) काण-कूल,
कंबिया, कुलाय पाशुरि ।

कान का बाला । कुण्डल । सिर

पेच ।

गोशा—[सं पुं] कोण, दूर,
धनुष जोडा मूर ।

कोना । नोक । धनुषकी क्लोटि ।

गोशत—(सं पुं) मांस ।
मांस ।

गोष्ठी—[सं स्त्री] गणनी, कथा-
वतवा, प्रवार्ण ।

सभा । बात-चीत । परामर्श ।

गोसाईं—(सं पुं) गोशायी,
क्षेत्र, गाधू-गन्नागो, गवाकी ।
गोओंका स्वामी । ईश्वर । विरक्त
साधु । मालिक । प्रभु ।

गोह—[सं स्त्री] छुँई ।
छिपकली की तरह का एक
जानवर ।

गोहरा—(सं पुं) छुकान गोबर ।
सुखाया हुआ गोबर ।

गोहराना—(क्रि स) मठा ।
पुकारना ।

गोहार—(सं स्त्री) रक्तार्ध
चिह्न । गोलमाल ।
रक्षा या सहायता के लिये
चिल्लाना ।

गौं—[सं स्त्री] श्रद्धांग, अभिधाय,
शार्ध ।
मीका । सुयोग । प्रबोजन । गरज ।
हंग । तरह ।

गौख—[सं स्त्री] जानी, बाबाग ।
गवाक्ष । खिड़की । आला ।
ताक ।

गौगा—[सं पुं] शई-ऊरुमि ।
उबा-बातवि ।

शोर । गुल गपाड़ा । अफवाह ।

गौड़ी—(सं स्त्री) छुड़ब पत्रा
देखावी नद ।

गुड़ से बनी शराब । काव्य में,
एक रीति ।

गौन—[सं पुं] गवन ।
गमन ।

गौनहर—[सं पुं] कशेनाब यडक ;
गान ग्राई छीबिका अर्जन
करा डिबोडा ।

वह स्त्री जो बधू के साथ उसके
ससुराल जाती है । गानेका पेक्षा
करनेवाली स्त्री ।

गौना—(सं पुं) विशाव कशेना
अना अथा ।
द्विरागमन ।

गौर—(वि) वशा ।

गोरा । सफेद ।

(सं पुं) बडा वरण छज्ज,
गोध, डाव-छिह्ना ।

लाल रंग । पीला रंग । चंद्रमा ।
सोना । केसर । सोच-विचार ।
खयाल ।

गौरा—(सं पुं) मठा रूम्बा
छबाई ।

मादा गोरैया पक्षी ।

गौरिया—(सं स्त्री) माछ-बोका
छबाई । माटिब गरु होका ।

एक काला जल पक्षी । मिट्टी का
छोटा हुका ।

गौरी—[सं स्त्री] पार्वती । आठ
बच्चीया कछा । डूलगौ । बगौ
गौशे ।

पार्वती । आठ-नर्य की कन्या ।
तुलसी । मफेद गौ ।

गौरीया—(सं पुं) कूकड़ा छांटे ।
चटक या चिडा नामक पक्षी ।

गौहर—[सं पुं] गूँझ ।
मोती

ग्यारह—(सं स्त्री) एकादशी तिथि ।
एकादशी तिथि ।

ग्रंथन—[सं पुं] गर एठा लगाई
छोवा लगेवा । गेंथा ।
गोंद लगाकर चिपकाना, जोड़ना
या बाँधना । गूँथना ।

ग्रंथि—(सं स्त्री) गौंठि, बाँक,
बाँधाबाँध ।
गौंठ । बन्धन । मायाजाल ।

ग्रंथित, ग्रंथित—(वि) गौंठि लगा ।
आनर लगत गूँझ ।
जिसमें गौंठ लगी या लगाई गयी
हो । किसी के साथ गूँथा हुआ ।

ग्रंथि बन्धन—(सं पुं) लकड़
गौंठि ।
गौंठ-बन्धन ।

ग्रसना, ग्रासना—(क्रि स) आग
करा । आक्रान्तकरा करा ।

ऊँगीडन करा ।

निगलना । बुरी तरह से पक-
डना । मताना ।

ग्रहित प्रस्त—(वि) अष्ट गौंठित ।
पकड़ा हुआ । पीड़ित । खाया
हुआ ।

ग्रह दशा—(सं स्त्री) अश-नशा ।
अश्व स्थिति अश्ववि नाश्वद
भाल-वेया प्रणा ।
ग्रहोंकी स्थिति के अनुसार किसी
मनुष्य की अच्छी या बुरी दशा ।
अभाग्य ।

ग्रांडील—[वि] उध ।
ऊँचे कद का ।

ग्रामदेवता—(सं पुं) गाँव बचक
अकप अथान देवता ।
किसी ग्रामका रक्षक माना जाने
वाला प्रधान देवता ।

ग्राम-सुधार—(सं पुं) गाँव शिष्ट-
कर काय । ग्राम गंङ्गाव ।
गाँवों की अवस्था सुधारने का
काम ।

ग्रामीण—(वि) गाँववासी ।
देहाती ।

ग्राव—(सं पुं) गिल । बरबूत
गिल । ग्राशव ।
पत्थर । मोला । पहाड़ ।

ग्राह—(सं पुं) वर्षिमान् । अश्न, धवा ।

मगर, घड़ियाल । ग्रहण । पकड़ना ।

ग्राहना—[क्रि स] लोका । लेना ।

ग्राह्य—(वि) अश्नैश्च वा अश्नव योऽग्य । मानिव लग्नैश्च ।

लेने योग्य । मानने योग्य ।

ग्रीवा—[सं स्त्री] गल वा ङडि । गर्दन ।

ग्रीष्मावकाश—[सं पुं] गर्व वक्ष । गरमी की छुट्टी ।

ग्वार—(सं स्त्री) वक्षः । कुलधी । (सं पुं) गुवान् । ग्वाला ।

ग्वार पाठा—(सं पुं) द्रुतकुमारी नामव गच्छ ।

घी कुवार । धृत कुमारी का पौधा ।

ग्वाला—[सं पुं] गुवान्, अश्वि । अहीर ।

ग्वालिन (स्त्री सं) गुवालिनौ । ग्वालिन ।

घ

घ—वर्णमालाव चतुर्थ आक्षर ।

वर्णमाला का चौथा व्यंजन वर्ण ।

घँघोना, घँघोरना, घँघोलना—(क्रि स) घोसान् ।

पानीमें हिलौकर घोलना या मिलाना । पानी को हिलाकर मिला करना ।

घंट—(सं पुं) शाटिब घटे ।

वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल में बाँधा जाता है ।

घंटा—[सं पुं] घटो । घटो कोबाई दिशा खाननी । दिन बातिब इह अश्न ।

बड़ियाल । बड़ियाल बजाकर बी
हुई सूचना । दिन रात का खीची-
सर्वा माग ।

घंटिका—(सं स्त्री) गरु शक्ती,
शुद्धता ।

छोटा घंटा । घुंघरू । कमरमें
पहनने की करघनी ।

घंटी—(सं स्त्री) गरु शक्ती ।
वेग वा मानवीश ।

पीतल या फूल की छोटी लुटिया ।
छोटा घंटा । घंटा बजनेका
शब्द । गरदन की आगे निकली
हुई हड्डी । गलेके अन्दर जीम
की जड़के पास उभरा हुआ
मांस ।

घई—(सं स्त्री) आनीव घुबनेश
गोठ । टोका ।

पानी का चक्कर । भँवर । धुनी
या टेक ।
बहुत गहरा ।

घट—(सं पुं) टेकेलि, शरीर,
मन वा श्मश ।

घड़ा । शरीर । मन या हृदय ।

(वि) निहटे ।

घंटा हुआ । कम ।

घटक—[सं पुं] बनाव याक्ति,
माणान, छत्र याक्ति ।

मध्यस्थ । विवाह सम्बन्ध ठीक
कराने वाला । दलाल । चतुर
व्यक्ति ।

घटका—[सं पुं] शूद्राव गमश्रव
गलब घेव् घेववि ।

मरने के समय की गले की घर-
घराहट ।

घट-घाट—(वि) घाँटि, आशम्भ ।
घटकर ।

घटसी—(सं स्त्री) घाँटि ।
नूनता ।

न्यूनता । कमी ।

घट-बढ़—(सं स्त्री) बढ़ा-कूँठा,
अविवर्धन ।

परिवर्तन । कमी बेसी ।

घटवार(ल)—(सं पुं) बाटोवाग ।
घाटका महसूल लेनेवाला । मल्लाह ।

घटा—[सं स्त्री] येषवाणि ।

मेवोंका घना समूह । मेघ-माला ।

घटाई—[सं स्त्री] शीनता, अक्ष-
तिष्ठता, अवर्गगता ।

हीनता । अप्रतिष्ठता । बेइज्जती ।

घटा-टोप—(सं पुं) शोच अक्षकार ।
आजकी आदि छात्रिवर

काटोब ।

घनघोर घटा । गाड़ी या पालकी
को ठँकने का परदा ।

घटाना—(क्रि स) कटोबा ।

कम करना । बाकी निकालना ।
प्रतिष्ठा कम करना । घटित
करना ।

घटाव—(सं पुं) बाँटि, अवनति ।
न्यूनता । अवनति । नदी के पानी
का उतार ।

घटिया—(वि) निकटे, गच्छा, डूब ।
अपेक्षाकृत खराब या सस्ता ।
तुच्छ ।

घटी—(सं स्त्री) २४ मिनिट
गमन, घड़ी ।

चौबीस मिनट का समय । घड़ी ।
कमी । हानि । मूल्य या महत्व
आदि में होनेवाली कमी ।

घटोत्कच—(सं पुं) भीमसेन का पुत्र ।

घट्ट—[सं पुं] नदीव घाटे ।
नदी का घाट ।

घट्टा—(सं पुं) खूना बाई
टेमका बाँझि उठा, गरीबत
थका माह तिन आदिब चिन ।
किसी चीज की रगड़ से शरीर
पर उभरा हुआ कड़ा चिह्न ।

घड़घड़ाना—(सं स्त्री) घेब-घेब
नच कवा ।

घड़घड़ शब्द करना ।

घड़घड़ाहट—[क्रि अ] घेब-घेब
नच । घेब-घेबवि ।

बारबार घड़घड़ शब्द होने की
क्रिया या भाव ।

घड़नई—(सं स्त्री) गाँठि
कलशेबे गछा डेल ।

बासोंमें घड़े बाँध कर बनाया हुआ
ठाँचा जिसपर चढ़कर नदियाँ
पार करते हैं ।

घड़ा—(सं पुं) डाँडव कनह ।
बड़ी गगरी ।

घड़ियाल—(सं पुं) डाँडव घण्टा ।
घँबियाल ।

बड़ा घंटा । ग्राह ।

घड़ी—(सं स्त्री) घड़ी । दिन
बातिब बाँझि भागब एभाग गमन ।
अवगब । गमन निकपक यद्ध ।
दिन रात का साठवाँ भाग ।
समय । अवसर । समय का पता
देनेवाला यंत्र । कपड़ों आदिमें
लगायी जानैवाली सह ।

घड़ीसाज—(सं पुं) घड़ी मेवा-
मत कबोता ।

घड़ी मरम्मत करनेवाला ।

धड़ोला—[सं पुं] डाँडर कलह ।

बड़ा धड़ा ।

धड़ौबी—(सं स्त्री) कध्वा ।

आधावि ।

घड़ा रखनेका आधार ।

धलियाना—(क्रि स) बाँटत थाप
दि थका, चोबां भावे वा
लुकाई अना ।

अपनी घात या दाँव में लाना ।

चुराया छिपाकर लेना ।

धन—[सं पुं] वेध, कमावर

एकाउ हातुवि । धन पदार्थ ।

बादल । लोहारोंका बड़ा हथौड़ा ।

समूह । कपूर । लम्बाई, चौड़ाई

और ऊँचाई का सम्मिलित

विस्तार । शरीर ।

(वि) धन, बोनिक, गूँ,

वेछि ।

धना । ठोस । दृढ़ । ज्यादा ।

धनक—(सं स्त्री) गिब-गिबनि ।

गड़गड़ाहट ।

धनकना—(क्रि अ) गबजि उठा,

गिब-गिबाई उठा ।

गरजना ।

धनधनाना—(क्रि अ) बटौव निठिना

नक्क होवा ।

घंटे की ध्वनि निकलना ।

(क्रि स) टें टें नक्क कवा ।

धन धन शब्द करना ।

धनघोर—(सं पुं) वेधव गिब-
गिबनि ।

बादल की गरज । मीषण ध्वनि ।

(वि) अत्यन्त डाँठ वा गंभीर,
डीषण ।

बहुत धना या गहरा । मीषण ।

धन चक्कर—[सं पुं] चक्कल मति ।

मूर्ख, अकर्म, काम-धन नकवि

गा बेलाई कुवा लोक ।

चंचल बुद्धिवाला । मूर्ख । आबार

धनत्त—(सं पुं) धनत्त, डाँठ,

धन वा चबवा ।

धनता । धना होने का भाव ।

धन-श्याम—(सं पुं) कला वेध,

श्रीकृष्ण ।

काला बाबल । कृष्ण ।

धनसागर, धनसागर—(सं पुं)

कपूर ।

कपूर ।

धना—(वि) डाँठ, निकटे, निक-

टेवडी, अत्यधिक ।

सधन । बहुत पास का । पास पास

बसा हुआ । बहुत अधिक ।

घनाली—(सं स्त्री) मेघवाणि ।

बादलों की पंक्ति या समूह ।

घने—(वि) बल्लेता ।

एक साथ बहुत से ।

घनेरा—(वि) बल्लत, अधिक, डाँठ ।

बहुत । अधिक । घना ।

घपका—[सं पुं] कोना क्रम

नोहोराटेक कवा मिल ।

गोलमाल ।

बिना क्रम की मिलावट ।

गोलमाल ।

घपलेबाजी—(सं स्त्री) कोना

परिपाटि नोहोराटेक कवा

काम ।

घपला या गड़बड़ी उत्पन्न करने

की क्रिया या भाव ।

घबराना—(क्रि अ) व्याकुल होना ।

डग्न पोना । मन नलगा ।

व्याकुल होना । भीचका होना ।

मन न लगना ।

(क्रि स) व्याकुल कवा,

वातिवाउ कवा ।

व्याकुल या अधीर करना । हैरान

करना ।

घबराना—(सं स्त्री) व्याकुलता,

उद्विग्नता, उड्डन-बुड्डन ।

व्याकुलता, उद्विग्नता । उतावली ।

घमंड—(सं पुं) अडिमान, गौरव,

अहंकार ।

अभिमान । बेसी । किसी का

भरोसा ।

घमंडी—(वि) अहंकारी । अडि-

मानी ।

अभिमान करनेवाला । अभिमानी ।

घमकना—(क्रि अ) धून-धून नच,

होना, गड्डीव नच होना ।

गंभीर शब्द होना ।

(क्रि स) डूक नवा ।

धूँसा मारना ।

घमघमाना—(क्रि अ क्रि स)

धून-धून नच होना वा धून-

धुनके किलोना ।

घम घम शब्द होना या घमघम

शब्द करके मारना ।

घमर—(सं पुं) नागेवा, ढोल,

आदिध धून-धून नच ।

नगाड़े, ढोल आदि का धोर शब्द ।

घमस—(सं स्त्री) बुला बाई

होना नच । डाग, डेन ।

किसी चीज के बजने का शब्द ।

गरमी की ऊमस ।

घमाका—(सं पुं) गदाव अंशव ।

डीवण बुला बाई होना नच ।

गदा या घूँसे का प्रहार । भारी
आघात का शब्द ।

धमाधम—(सं स्त्री) धूम-धूम शब्द,
'धूम-धाम' ।

धमधम की ध्वनि । धूमधाम ।

[क्रि वि] धूम-धाट्यन्व ।

धमधम आवाज के साथ ।

धमासान—(वि) अचञ्, उग्र
मन्त्रा (.व०) ।

बहुत गहरा या भीषण ।

घर-घालक—(वि) निष्कर वा
आनर सब उछार करवाता ।
अपना या दूसरों का घर बिगाड़ने
वाला ।

घरदारी—(सं स्त्री) गृहस्त्री
गकलना काय काज ।
गृहस्थी के सब काम धन्धे ।

घरनी—(सं स्त्री) गङ्गी, ऐनो ।
पत्नी । गृहिणी ।

घर-फोरा—(सं पुं) शकुनि । सब
ठाँड़ि . कुब। मन्त्र ।
दूसरों के परिवार में कलह फैलाने
वाला ।

घरबार—(सं पुं) सब-बाबी ।
" निवास स्थान । गृहस्थी ।

घरवाला—(सं पुं) गिबिईण्ड,
गंवाकी । गानिक ।

घर का स्वामी । मालिक ।

घरसा—(सं पुं) बंशनि ।
रगड़ ।

घरासी—[सं पुं] कन्याश्रम ।
विवाहमें कन्या पक्षके लोग ।

घराना—(सं पुं) बंश, गोष्ठी ।
खानदान । वंश ।

घरिया—(सं स्त्री) गार्नि बार्नि ।
मिट्टी का प्याला । वह पात्र
जिसमें रखकर सोना चाँदी आदि
गलाते हैं ।

घरीक—[क्रि वि] कलक । अनप
पव ।
घड़ी भर । थोड़ी देर ।

घरू, घरेलू—(वि) गम्वा, सबगीश,
पोशनीया । कुटिब गिग गबकीश ।
घरसे सम्बन्ध रखनेवाला । पालतू
घर का । घरमें बना हुआ या होने
वाला ।

घरौंदा (धा)—(सं पुं) गार्नि
आपिदे गका गक सब—बंठ
गवा-छोवालोय खेला करे ।
मिट्टी आदि का छोटा घर जिससे
बच्चे खेलते हैं ।

घर्म—(सं पुं) शय, बंद ।

धूप । पसीना ।

घर्मा—[सं पुं] गलब घेब-घेबनि,

घेब-घेबटेक होवा शक ।

गले की घरघराहट । जेलमें कोल्हू

पेरने और कुएँ से चरसा खींचने

का कठिन काम ।

घर्षित—[वि] घर्षण होवा ।

रगड़ा हुआ । रगड़ खाया हुआ ।

घडाबली—[सं स्त्री] मरा-मवि,

कटा-कटि ।

मारकाट । खून खराबी ।

घलुभा (वा)—(सं पुं) किनोते

उज्जनतटेक अधिक पोवा वस्तु ।

खरीदने में तौलसे कुछ अधिक

मिली हुई वस्तु ।

घसखुदा—(सं पुं) घाँस काटोता,

मूर्ख ।

घसियारा । मूर्ख ।

घसना—(क्रि अ) घर्षि वा मिहि

दिग्ग ।

घिसना ।

घसिटना—(क्रि अ) निष्के टानि वा

ठेलि बाहिब होवा ।

घसीटा जाना ।

घसियारा—(वि) घाँस डोलोता ।

घास छीलकर बेचनेवाला ।

घसीटना—[क्रि अ] टोलोवाइ । नशा ।

बंद-बंदटेक अण्ठे भावे मिथा,

टानि आखुवि लग कवा ।

किसी वस्तु को इस तरह खींचना

जिससे वह भूमि से रगड़ खाती

हुई आवे । जल्दी जल्दी अस्पष्ट

लिखना । किसी काममें बलपूर्वक

शामिल करना ।

घहराना—[क्रि अ] डीबण शक

कवा । धुयटेक प्रवा, हठाँ

उपस्थित होवा ।

गंभीर ध्वनि करना । भारी

आवाज के साथ गिरना । सहसा

उपस्थित होना ।

घाँटी—[सं स्त्री] घाँटिका, डिडि ।

गले के नीचे की घटी । गला ।

(क्रि वि) घाँटि, आधकम्वा ।

अपेक्षाकृत कम । घट कर ।

घाई—(सं स्त्री) कान, ग्रांठि,

पानोब टाकटनवा ।

ओर । तरफ । जोड़ । बार ।

पानी का अँवर ।

घाई—(सं स्त्री) छेइ आङ्गुनिब

वाखब ठाई, वा, फाकि ।

उंगलियों के बीच की जगह ।

घाव । घोक्या ।

घाघ—(सं पुं) अति चालाक ।
भारी चालाक ।

घाघरा—[सं स्त्री] गबयू नदी ।
सरयू नदी ।

घाघस—(सं पुं) एविश कूकुरा
छाई ।
एक प्रकार की मुरगी ।

घाट—(सं पुं) नदी आदिब घाटे,
ऊँठा नमा कबा पोशानी घाटे,
काल, तबोबानव धाव, झुनता ।
घाटि ।

नदी या मरोवर के नट का वह
स्थान जहाँ लोग पानी भरते,
नहाते या नावपर चढ़ते हैं ।
उतार चढ़ाव का पहाड़ी मार्ग ।
ओर । रंग-ढंग । तलवार की
घार ग्यूनता । कमी ।

[वि.] अनप, वेग्रा, निरुष्टे ।
थोड़ा । घटिया । दूसरेकी अपेक्षा
कम या हलका ।

घाटा—(सं पुं) घाटि, शानि ।
घटने की क्रिया या भाव । हानि ।

घाटि—(वि) घाटि ।
घटकर ।

(सं स्त्री) नीच काम, पाप ।
नीच कर्म । पाप ।

घाटी—[सं स्त्री] झूँई पर्वतब
नाखब ठेक बास्ता । उगताका
दर्ता । दो पर्वतों के बीच का
रास्ता ।

घात—(सं पुं) अशान, नश, आहत ।
प्रहार । वध । आहान ।
(सं स्त्री) अशोष, टना-
आजोबा ।

सुयोग । दाँव-पेंच ।

घाती—(वि) घातक, नाश करनेवाला,
कपटे ।

घातक । नाश करनेवाला । छली ।

घान—(सं पुं) घानी,
विशानखिनि एबावत दाक्षिब बा
तेग्राव कनि पबा याग्न ।
जितना एक बार कोल्हू में डाल
कर पेरा या चक्कीमें पीसा जाय,
उतना अंश । जितना एक बारमें
पकाया या बनाया जाय, उतना
अंश ।

घानी—[सं स्त्री] घानी ।
कोल्हू ।

घाम—(सं स्त्री) नंद, कष्ट ।
धू । कष्ट ।

घामड़—(वि) बंदत झुग्ला, मूर्ख ।
घाम या धूपसे व्याकुल (चोपाया)
मख ।

घायल—(वि) आहत ।

आहत । जस्मी ।

घाल—(सं पुं) बिना मूलाई

पोरा बख, किनोते उखन-

तटेक बेछि, पोरा बख ।

बिना मूल्य की मिली चीज ।

बलुआ ।

घालना—(क्रि अ) नाश कबा,

बखा, पेलोरा, अन्न खादि

छलोरा, भाबि पेलोरा ।

नाश करना । रखना । फेंकना ।

अस्त्रादि चलाना । मार डालना ।

घाल-मेल—(सं पुं) खेलि-मेलि,

मिलाप्रीति ।

गडु-मडु । गड़बड़ी । मेल-जोल ।

घाव—(सं पुं) घा, आघात,

खून-अथंय ।

चोट । आघात । क्षत ।

घास—(सं स्त्री) घाँस । तृण ।

घासलेट—(सं पुं) केबाछिन, माछिग्रा

तेल ।

तुछ, निम्ननीय वा अत्राख पदार्थ ।

मिट्टी का तेल । तुछ, निन्दनीय

या अप्राह्य पदार्थ ।

घासलेटी—(वि) तुछ, उलथापन,

अनील ।

तुछ । निम्न कोटिका । अस्लील ।

घिघी—(सं स्त्री) शिकंठि । शिक-

ठिब कानधे कथा कहुते बाबा

पबा ।

हिचकी । डर के कारण बोलनेमें

रुकावट ।

घिघियाना—(क्रि अ) अन्नग्र

कबा ।

गिड़गिड़ाना । कण्ठ स्वर में

प्रार्थना करना ।

घिचपिच—(सं स्त्री) हैँचा-हैँचि ।

थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं

का जमाव ।

(वि) अण्णष्टे लिखनि ।

वह लिखावट जो अत्याधिक

अस्पष्ट हो ।

घिनाना—(क्रि अ) घृणा कबा ।

घृणा करना ।

घिनौना—(वि) घृणनीय ।

जिसे देखने से मनमें घृणा उत्पन्न हो ।

घिरना—(क्रि अ) घेबि शबा,

छाबिउ फालब पबा आछबि

शबा ।

आवृत्त होना । चारों ओरसे एक

साथ आना ।

घिरनी—(सं स्त्री) टाकूबी ।

गराड़ी । चरखी ।

घिराई—(सं स्त्री) बेचि बरा
कार्य बहुत। छटोबा बानठ ।
बेरने की क्रिया या भाव । पशुओं
को चराने की मजदूरी ।

घिस घिस—(सं स्त्री) कार्यात्
निधिलता वा अशुचित भवन ।
कार्य में शिथिलता या अनुचित
विलम्ब ।

घिसना—(क्रि. स) बहनि खोवा,
बहनि खाई कम योवा ।
रगड़ना । रगड़ खाकर कम होना ।

घिसपिस—(सं स्त्री) अत्यधिक
त्रिनायैति वा पावम्भिक
गश्क ।

बहुत अधिक मेल-जोल या
पारस्परिक सम्बन्ध ।

घिसाई—[सं स्त्री] बहनि खोवा
कार्य ।

घिसनेकी क्रिया, भाव या मजदूरी

घी—(सं पुं) घिटे ।

तपाया हुआ मक्खन ।

घी-कुँआर—(सं पुं) घृत कुशावी
नामक गृह ।

घृतकुमारी का पोषा ।

घीया—[सं स्त्री] गानी नाउ ।
कड़ू ।

घीयतोरी—(सं स्त्री) तोल ।

एक प्रकार की तोरी या फली ।

घुँघनी—(सं स्त्री) तिराई डबा
बूट-बाह आदि ।

भीगोकर तला हुआ चना, मटर
आदि ।

घुँघराखा—(वि) केँकोवा (रुलि) ।

धूमा हुआ और बल खाया हुआ ।

घुँघरू—(सं पुं) नूपुर, घुँघुवा ।
नूपुर । मंजीर ।

घुँडी—(सं स्त्री) कापोरब
घुँघरीया बूटोम, टूणुवा गौंठि ।
कपड़े का गोल बटन । कोई
गोल गाँठ ।

घुग्घू घुघुआ—(सं पुं) केठा ।
उल्लू पक्षी ।

घुटना—(सं पुं) आँठूब जोवा ।
टांग और जाँघ के बीचकी गाँठ ।

(क्रि अ) उगाह बक होवा,
आवक होवा, अत्यन्त बनिष्ठ
होवा ।

सांस रुकना । फंस जाना । बहुत
बनिष्ठता होना ।

घुटाई—(सं स्त्री) मोशारि पिशा,
कार्य वा तार बानठ ।

घोटने की क्रिया या भाव या
मजदूरी ।

घुटहथन—(क्रि वि) आठू काढ़ि ।

घुटनों के बल ।

घुट्टी, घूँटी—(सं स्त्री) नवजात
निष्ठक खुँडा ठोस ।

बच्चों को पिलाई जानेवाली
जनम घूँटी ।

घुड़कना—(क्रि स) शक्ति दिना ।
कड़क कर डाँटना ।

घुड़की—(सं स्त्री) डाँकि-धमकि ।
डाँट-डपट । फटकार ।

घुड़दौड़—(सं स्त्री) घोड़ा दोब,
प्रतियोगिता ।

घोड़ों की दौड़ की प्रतियोगिता ।

घुड़-सवार—(सं पुं) अश्वारोही ।
अश्वारोही ।

घुड़साल—[सं पुं] घोड़ा साल ।
अश्वशाला ।

घुनना—(क्रि स) घुने धरा; भित्तबे
भित्तबे क्रीष होवा ।

घुन लगना । अन्दरसे क्षीण होना ।

घुमकड़—[वि] वयणकारी ।
बहुत घूमनेवाला ।

घुमटा—(सं पुं) मूब कूबनि । मूब
विष ।

सिर का चक्कर ।

घुमड़ना—[क्रि अ] बेषाच्छन्न
होवा ।

बादलों का घिरना ।

घुमड़ी, घुमरी—(सं स्त्री) मूब
विष ।

सिर का चक्कर ।

घुमाना—(क्रि स) कूबावा,
घूबावा ।

चारों ओर फिराना । सैर कराना ।
मोड़ना ।

घुमाव—[सं पुं] डाँच ।
चक्कर । मोड़ ।

घुरना—(क्रि अ) क्रीषाई होवा,
कृष होवा, कूबा ।

क्षीण होना । शब्द होना । घूमना
(अक्षि) भ्रमकना ।

(क्रि स) कृष कवा ।

शब्द उत्पन्न करना ।

घुलना—(क्रि अ) डाल दबे
मिश्रि होवा । प्रकि गुल-गुलीया
होवा । दुर्बल होवा ।

किसी द्रव वस्तुमें अच्छी तरह
मिल जाना । हल होना । पिघ-

लना । पक कर घुलघुला होना ।
रोग या चिन्ता से दुर्बल होना ।

(क्रि स)—घुलाना ।

घुसड़ना, घुसना—(क्रि अ) अवेश
कवा । अनधिकार अवेश ।

प्रवेश करना । बिना अधिकारके

कहीं पहुँचना । बात की तह तक
 पहुँचना ।
 (क्रि स) घुसाना ।
घुस-पैठ—(सं स्त्री) अवेश ।
 पहुँच । प्रवेश ।
घूँघट—(सं पुं) उबधि, अदृष्टान ।
 साड़ी का वह भाग जो मुँह ठँके
 रहता है । परदा ।
घूँट—(सं पुं) घोंट, टोक ।
 उतना द्रव पदार्थ जितना एकबार
 में गले के नीचे उतारा जाय ।
घूँसा—(सं पुं) घोंसा, झुका ।
 मारने के लिये तानी हुई मुट्ठी ।
 मुट्ठी का प्रहार ।
घूमना—(क्रि अ) घुमि कूबा,
 घूमना ।
 चारों ओर फिरना । किसी ओर
 मुड़ना । टहलना । यात्रा करना ।
घूर, घूरा—(सं पुं) आवबन म'म ।
 कूड़े का ढेर ।
घूरना—[क्रि अ] कुञ्जविश्रामेव
 दृष्टिपात कबा ।
 बुरे भाव से आँख गड़ाकर देखना ।
घूस—(सं स्त्री) निगनि खाडीय
 धातु । लोह ।
 लूहे की तरह का एक जन्तु ।
 रिश्त ।

घेंडी—(सं स्त्री) चिटे बन्धी बाँधन ।
 घी रखने का बरतन ।
घेघा—(सं पुं) डिडिब नली,
 डिडि, उबधि, उठा
 बेसाब ।
 गले की नली । गला फूलने
 का रोग ।
घेर घार—[सं स्त्री] घेबि धवा
 कार्या, घेब, घेँचि धवि कोना
 काम कबिबले बांधा कबा ।
 घेरने की क्रिया या भाव । घेरा ।
 दबाव डालकर कोई काम करने
 के लिये विवश करना ।
घेरना—(क्रि स) टोपाणे घेबी
 धवा । टोपाणोण कबा ।
 चारों ओर से रोकना या घेरे में
 लाना । बहुत आग्रह या खुशामद
 करना ।
घेरा—(सं पुं) टाबिगीमा, पविधि.
 गैगुब बाबा धूर्ज आदि
 अवबोध ।
 किसी चीज को घेरने वाली रेखा
 या कोई चीज । सीमा या परिधि
 का मान, घिरा हुआ स्थान । सेना
 द्वारा दुर्ग आदि घेरना ।
घेला—(सं पुं) गाँव कलश ।
 मिट्टी का घड़ा ।

घोंघा—(सं पु) शायक ।

शम्बुक ।

(वि) अगाध, मूर्ख ।

जिसमें कुछ सार न हो । मूर्ख ।

घोंघा-बसन्त—(वि) गन्ध मूर्ख ।

परम मूर्ख ।

घोंघी, घोघी—(सं स्त्री) ज्ञापि,

पानाल, शायकद खाला ।

पत्तों का बना हुआ, छाता ।

दलाल । घोघे का ऊपरी छिलका ।

घोंसला—(सं पु) छाईव बाह ।

पक्षी का नीड़ ।

घोखना—(क्रि स) मूर्ख कबा ।

रटना ।

घोटना—(क्रि स) पिछि दिया,

बंछि दिया, अज्ञात कबा,

टैट्टे टैपि धवा, खुदबखुद मूब

खुबोरा ।

रगड़ना । महीन पीसना । हल

करना । अभ्यास करना । गला

दबाकर सांस रोक देना । उस्तरे

से बाल साफ करना ।

[सं पु] घोटेपि ।

चीज घोटने का औजार ।

घोटाला—(सं पु) विमृशाल ।

गड़बड़ी ।

घोड़ा—(सं पु) घोँवा, बन्दूक

घोंवा, पवा-खेलव घोँवा ।

अस्व । बन्दूक का वह सटका

जिसे दबाने से गोली छूटती है ।

शतरंज का एक मोहरा ।

घोरिला—[सं पु] लवा-छोरा-

लौखे खेल कबा काठव

घोंवा ।

खेलने का काठ का घोड़ा ।

घोल—(सं पु) किवाकिवि बख

मिशलि पानी । ढेढ पानी ।

वह पानी जिसमें कोई चीज घोली

गयी हो, मट्टा ।

घोलना—[क्रि स] मिशलोरा ।

पानी या अन्य तरल पदार्थ में

चूर्ण आदि अच्छी तरह मिलाना ।

घोष—(सं पु) गुबान, शक, मात,

बोवणा ।

अहीर । शब्द । चिल्लाहट या घोर

गर्जन । नारा ।

घौद, घौर—(सं पु) थोपा ।

एक इण्ठल में फलने वाले बहुतसे

फलों का गुच्छा ।

घ्राण—[सं पु] गोंक, नाक ।

सूँघने की शक्ति । नाक ।

सुगन्ध ।

ड

ड—वाङ्मन वर्णमालाव प्रथम आक्षर । वर्ण माला का पौचवौ व्यंजन ।

च

च—वाङ्मन वर्णमालाव षष्ठ आक्षर ।
वर्णमाला का छठा व्यंजन ।

चक—(सं पुं) • गकलो, पूरा ।
सारा । पूरा ।

चंग—(सं स्त्री) चञ्चवैव निचिन ।
किञ्च तातकै डाडव एविष
वापा । कागखर चिला, वमनाम ।
एक प्रकार का बाजा । कागज
की पतंग । बदनामी ।

चंगा—(वि) सूख, डाल ।
नीरोग । अच्छा ।

चंगुल—(सं पुं) हाडोवा,
शामोच ।
पशुओं या पक्षियों का मुड़ा हुआ
पंजा । हाथ से पकड़ने की
मुद्रा । कोटा ।

चंगेर, चंगेली—[सं स्त्री] प्राप्ति ।
बांसकी टोकरी ।

चंचरी—(सं स्त्री) गधेकी डोमोवा,
एविष ह्म ।
अमरी । एक प्रकार का छन्द ।

चंचरीक—[सं पुं] डोमोवा ।
भौरा ।

चंचला—[सं स्त्री] लक्ष्मी, विष्णुकी ।
लक्ष्मी । बिजली ।

चंचु—[सं पुं] शबिष, ठोठ ।
मृग । चिड़ियोंकी चोंच ।

चंट—(वि) चट्टर, टेडर ।
चालाक । धूर्त ।

चंड—(वि) चोका, उध, कठोर,
खंडाल ।
तेज । उग्र । कठोर । क्रोधी ।
(सं पुं) उडाप, एठा पैडाव
नाम ।
ताप । एक दैत्य का नाम ।

चंडकर, चंडाशु—[सं पुं] शूर्य ।
सूर्य ।

चंडालिका—[सं स्त्री] एविष
वीणा । चडी वा शूर्पा ।
एक प्रकार की वाणा । दुर्गा ।

चंद्र—[सं पुं] कानिब टिकिवा ।
तम्बाकू की भाँति पीयी जाने
वाली अफीम ।

चंद्रखाना—(सं पुं) कानिब अड्डा ।
वह स्थान जहाँ लोग चंद्र पीते हैं ।

चंद्रल—[सं पुं] जथा मूर्ख,
एविश चबाई ।

परम मूर्ख । एक चिड़िया ।

चंद्र—[सं पुं] छल ।

चन्द्र ।

(वि) अलग, किछुवान ।

थोड़े से । कुछ ।

चंदन गिरि—(सं पुं) शालग्रपर्वत
मलय पर्वत ।

चंदला—(वि) तपा ।
गंजा ।

चंदवा, चँदोआ—(सं पुं) छल-
ताप, छल्पावाव ।

कपड़े फूलों आदि का छोटा
मंडप ।

चंदा—(सं पुं) छल, चाम्पा,
बबडनि ।

चन्द्रमा । दान रूपमें ली गयी
आर्थिक सहायता । पत्र पत्रिका का
वार्षिक मूल्य । सदस्योसे नियमित
मिलनेवाला धन ।

चन्द्रकांत—(सं पुं) एविश मणि ।
एक मणि ।

चन्द्रचूड़, चन्द्रभाल, चन्द्रमौली,
चन्द्र शेखर—(सं पुं) मशामेव ।
शिव ।

चन्द्रतप—(सं पुं) छानाक, छलताप ।
चाँदनी । चँदवा ।

चंपई—(वि) चम्पा कुल बबगैया ।
चम्पाके फूलके रंग का ।

चंपत—(वि) अशुर्कान ।
गायब । अन्तर्धान ।

चंपाकली—(सं स्त्री) एविश
डिङ्गित पिका अलकाव ।

गले में पहनने का एक आमूषण ।

चंपू—(सं पुं) गद्य-पद्य मिश्रित
काव्य ।

गद्य पद्य मिश्रित एक काव्य ।

चँवर—(सं पुं) चौराव, चावर ।
सुरा गाय की पूँछके बालों का
गुच्छा जं: राजाओं या देवमूर्तियों
पर डुलाया जाता है । झालर ।

चक्र—(सं पुं) चाटेक चबाई, चका,
चूबि ।

चक्रवा पक्षी । जमीन का बड़ा
टुकड़ा ।

(वि) डबधूब, यथेष्ट, चकित ।
 भरपूर । यथेष्ट । चकित ।
चकई—(सं स्त्री) गडा चाटेक
 चबाई, एविध पूतना ।
 मादा चकवा । गड़ारी के आकार
 का एक खिलौना ।
चकसी—(सं स्त्री) टायवा,
 कापोव आदिब टूकवा ।
 चमड़े, कपड़े आदि का टुकड़ा ।
 पैबन्द ।
चकता—[सं पु] डेखव दोषव
 गबीरवत गवा माग । वादनाह ।
 शरीर पर पड़नेवाला गोल दाग
 या सूजन । बहुत बड़ा राजा ।
 बादशाह ।
चकनाचूर—(वि) टूबयाव, अतालु
 क्राञ्च । चूरचूर । बहुतथका हुआ ।
चक बन्दी—[सं स्त्री] गान्तिव गरुगर
 टूकवा गालगलनि कवि ब्रह्म
 कवा कार्य ।
 आस पास के कई खेतोंको एकमें
 मिलाकर बड़ा चक बनाना ।
चकमा—[सं पु] चाकि ।
 बोला । भुलावा ।
चकराना—(क्रि अ) गुर 'आछाई
 कवा । गुर घुवा । गति-धम होवा ।

चकर खाना या घूमना । धोखे
 में पड़ना । चकित होना ।
चकरी—[सं स्त्री] गरु जाँत ।
 एक प्रकार की छोटी चक्की ।
चकला—(सं पु) बेनून, डूमि-
 थंउ, वेण्णाव बजाव ।
 रोटी, पूरी बेलनेका गोल पाटा ।
 भूमिखंड । वेश्याओंका बाजार ।
चकलस—[सं स्त्री] जञ्जाल, गाञ्जा-
 धुवि गन्न ।
 बखेडा । भंभट । मित्रोंमें बैठकर
 गप्पें उड़ाना ।
चकवा—(सं पं) टकोवा चबाई ।
 चक्रवाक पक्षी ।
चका चक—(वि) आनन्मजनक ।
 चटकीला । मजेदार ।
 (क्रि वि) चिक् मिकाई । गव-
 शटेक ।
 बहुत । भरपूर ।
चकाचौध—(सं स्त्री) चिक्-
 मिकवि, डिबविबवि ।
 तेज चमक से आँखों में होनेवाली
 भ्रमक । तिलमिली ।
चकित—(वि) विस्मित, शक्ति ।
 विस्मित । सशंकित ।

चकेवा—(क्रि अ) चकोरा ।

चकवा ।

चकैया—(वि) कुशावर चाकर
निठिना घुबगैया ।

चाक या चकई की तरह गोल ।

चकोटना—(क्रि स) चिकूटि दिया ।

चुटकी या चिकोटी काटना ।

चकोर—[सं पुं] डबिक जातीय
एविश चबाई ; ई खोनाक डाल
पाय ।

एक प्रकार का पक्षी ।

चक—(सं पुं) चाटेक-चकोरा ।

कुशावर चाक, दिश ।

चक्रवाक पक्षी । कुम्हारका चाक ।
दिशा ।

चकर—(सं पु) पाक, घुबन ।

चकाव पदे घुवा, हायबाण ।

चाक । मंडल । घुमना । पहिये
की तरह घुमना, हैरानी ।

चक्का—[सं पुं] चका ।

पहिया ।

चक्की—(सं स्त्री) जाँठ ।

आटा आदि पीसनेका यंत्र ।
जाँता ।

चक्रक्रम—(सं पुं) चक्राकार
निर्द्धारित क्रम ।

चक्की तरह घूमकर आनेवाला
क्रम ।

चक्रधर, चक्राणि—(सं पुं) बिस्म,
रुक्म ।

विष्णु, कृष्ण ।

चक्रवाक—(सं पुं) चाटेक चकोरा ।

चकवा पक्षी ।

चक्रवात—(सं पुं) वा'नाबलि ।
बवंडर ।

चक्षु—(सं पुं) चकू ।

आँख ।

चख-चख—(सं स्त्री) काखिया ।

कलह । भगड़ा ।

चखना—(क्रि स) चाकि चोरा ।

थोड़ा खाकर स्वाद लेना ।

चखाचखी—(सं स्त्री) अतिथो-

गिता, अविद्या-अवि ।

प्रतिबोधिता । भगड़ा ।

चखाना—[क्रि स] सोदाप लव

दिया ।

स्वाद का परिचय कराना ।

चचा, चाचा—(सं पुं) बूवा ।

पिता के छोटे भाई ।

चचेरा—(वि) बूवाव पंवा उ०पन्न ।

चाचा से उत्पन्न ।

चट—(क्रि वि) गोनकाले,
 डूबछे ।
 जल्दी से । तुरंत
 (वि) चलेकि थोड़े नाईकिया कबा ।
 चाट पोंछ कर खाया हुआ ।
चटक—(सं पुं) सबठिबिका पक्षी ।
 गौरैया पक्षी ।
 (सं स्त्री) चाक-चमक, फुडि-
 बाग, बैरी ।
 चमकु-दमक । फुटीला । तेजी ।
 (वि) खूबाश ।
 स्वादिष्ट ।
चटक-मटक—(सं स्त्री) धून-
 पोच, अछ गङ्गालन ।
 बनाव मृंगार । नाज नखरा ।
चटकीला—(वि) आक-अयक पूर्ण ।
 भङ्गकीला रंगवाला । चमकीला ।
 चटपटा ।
चटनी—(सं स्त्री) चाट्नी ।
 चाट कर खायी जानेवाली चीज ।
 अबलेह ।
चटपट—(क्रि वि) गोनकाले ।
 तुरंत ।
चटाई—(सं स्त्री) चावि, कठ ।
 फूस, सींक आदि का बना
 बिछावन ।

चटाना—(क्रि स) चलेका ।
 थोड़ा थोड़ा खिलाना ।
चटावन—[सं पुं] अन्न आशन ।
 अन्न-प्राशन ।
चटुल—(वि) चखल । मधुर भावी ।
 चंचल । मधुर भाषी ।
चटोरा—[वि] भूडोश ।
 स्वाद-लोलुप ।
चट्टान—[सं स्त्री] डाउब शिल ।
 भारी और बड़ा पत्थर ।
चट्टाबट्टा—(सं पुं) एबिध काठब
 गूठना । एकदमबगब बागुइ ।
 एक प्रकार का काठका खिलौना ।
 एकही तरहके लोग ।
चट्टी—(सं स्त्री) चटि-झोठा ।
 पड़ाव । चप्पल ।
चढ़ना—[क्रि अ] आबोशण कबा ।
 उठा ।
 ऊपर की ओर जाना । सवार
 होना । उन्नति करना ।
चढ़ाई—(सं स्त्री) ऊपर ओथ
 ठाई । एचलीया ठाई । आक्रमण ।
 ऊंचाई की ओर जानेवाली भूमि,
 आक्रमण ।
चढ़ा-ऊपरी—(सं स्त्री) हेठा-
 उपवा ।
 प्रतियोगिता । होड़ ।

चढ़ाना—(क्रि स) उठावा, उठाना,
उन्नति कवा, गम्भीर कवा ।
ऊपर की ओर ले जाना । सवार
करना । उन्नति करवाना । भेट
के रूपमें देना । अभिमान उत्पन्न
करना ।

चढ़ाव—[सं पुं] आवोहन,
वृद्धि । नैन उखान
चढ़ने या चढ़ाने की क्रिया या
भाव । महंगी । वृद्धि । वह दिशा
जिधर से नदी की घारा बहकर
आती हो ।

चढ़ावा—(सं पुं) ज़ोवन । गम-
पित अर्था ।
विवाह के दिन दुलहिन को दिये
जाने वाले गहने । पूजा-द्रव्य,
उत्तेजना ।

चतुरंग—(सं पुं) छठ्ठस सेना-
मल-शांओ, शौबा, बथ आरु
पनातिक । मवा-खेल ।
सेना के हाथी, घोडे, रथ, पैदल
ये चार अंग । शतरंज ।

चतुराई—(सं स्त्री) चातुर्य, चालाकि ।
चतुरता । चालाकी ।

चतुर्मुख—[सं पुं] जम्मा ।
ब्रह्मा ।

(क्रि वि) चाबिउ काले ।
चारो ओर ।

चतुर्वर्ग—(सं पुं) धर्म, अर्थ,
काम आरु मोक्ष एहे चाबि
पदार्थ ।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों
पदार्थ ।

चतुष्पथ—(सं पुं) चाबि बल्लव
गमूह ।

चार चीजो का समूह ।

चत्वर—(सं पुं) छक् ।

चौराहा । चबूतरा ।

चना—(सं पुं) दुटे-माश ।
एक अन्न । बूट ।

चपकन—(सं स्त्री) चापकन-एविश
दीषल टोलान ।
अंगरखा ।

चपड़ा—(सं पुं) नाब चपरा ।
लाल का पत्तर ।

चपत्त—(सं पुं) चब (गोलत मवा)।
आधिक डानि ।
तमाचा । आर्थिक हानि ।

चपल्ला—(वि) लच्ची, बिजुली ।
लक्ष्मी । बिजली ।

चपासी—(सं स्त्री) पाउन कगिट ।
पतली रोटी ।

चपेट—(सं स्त्री) चापब, शेंछा,
चाप ।

थप्पड़ । भोंका । संकट । [सं पुं-
चपेटा]

चप्पल—[सं स्त्री] चट्टि ज़ोता,
चेठेल ।

ऊपर खुला हुआ एक प्रकार का
जूता, चट्टी ।

चप्पा—(सं पुं) पोवा । गरु
डू-थु ।

थोड़ा या छोटा भाग । छोटा
भूवण्ड ।

चबाना—(क्रि स) चबोवा ।

दाँतों से कुचलना या कुचल कर
खाना ।

चबूतरा—(सं पुं) प्रिबानी, गङ्ग ।

बैठने की चौरस ऊँची जगह ।

चबेना—[सं पुं] भज्जा चाँडेल,
बूटे-यादि ।

भूना हुआ अनाज ।

चमक—[सं स्त्री] ज़ेउति,

पोशव, मोँचका ।

प्रकाश । आभा । कमर या पीठमें

अचानक उठा दर्द ।

चमक-इमक—(सं स्त्री) बः-छः,
गाख-गब्बा ।

आभा । तड़क-भड़क ।

चमकना—[क्रि अ] उजलि उठा,
जक-मकाइ उठा ।

जगमगाना । उन्नति करना ।
चौकना ।

चमकीला—(वि) उज्ज्वल, फट्-
फटाया ।

जिसमें चमक हो ।

चमगादड़—(सं पुं) बाश्ली ।
एक प्रकार उड़नेवाला जन्तु ।

चमड़ा—(सं पुं) छाल, बाकलि ।
ऊपरी आवरण । चर्म । त्वचा ।

चमन—(सं पुं) बागिचा, फूल-
बाड़ी ।

हरी क्यारी । बगीचा ।

चमार—[सं पुं] मुछियाब ।
एक जाति ।

चमू—(सं स्त्री) गेना ।
सेना ।

चमेली—[सं स्त्री] गालती लता ।
सुगंधित फूलोंवाला एक पौधा ।

चमोटी—(सं स्त्री) चाबूक,
दैत ।

चाबुक । बेंत ।

चम्मच—(सं पुं) चायुट ।

हलकी छोटी सी कलछी ।

चय—[सं पुं] बोर, बिलाक,
गकल ।

समूह ।

चयन—(सं पुं) गच्छ, गच्छ ।
संग्रह या चुनने का काम ।

चर—[सं पुं] चव, दूत, बालि-
चव ।

भेदिया । जामूस । दूत । नदियों
के बीच का टापू ।

(वि) चवि कुबिब पवा ।

चलनेवाला ।

चरका—(सं पुं) यलप घा, शनि,
काकि ।

हलका घाव या जलम । हानि ।
घोखा ।

चरहा—(सं पुं) यँतव, अटिल
काश ।

घूमने वाला बड़ागोल चक्रर । मूत
कातने का एक यंत्र । भंभट का
काम ।

चरखी—(सं स्त्री) चकवि, गरु
यँतव, शिला (कुँदाव पानी
डुलिवटेल) ।

छाटा चरवा । कपास ओटने का

यंत्र, कुएँ से पानी खींचने की
गडारी ।

चरबा—(सं स्त्री) चर्का, आलो-
चना ।

चर्चा । आलोचना ।

चरण-दासी—(सं स्त्री) पत्नी,
जोता ।

पत्नी । जूता ।

चरण पादुका—[सं स्त्री] खबब ।
खडार्क ।

चरणोदक—(सं पुं) पद्म-जल ।
चरणामृत ।

चरना—(क्रि अ) चवि कुवा ।
पशुओं का उगी हुई घास आदि
खाना ।

चरपरा—[वि] तिता, बेज-
नेजीया, जला ।
तीक्ष्ण स्वाद वाला । तीता ।

चरपराहट—[सं स्त्री] मोदादब
तीक्ष्णता । ईर्ष्या ।
स्वाद की तीक्ष्णता । ईर्ष्या ।

चरबाँक—(वि) चतुब, उद्धत ।
चतुर । उद्धत ।

चरबी—(सं स्त्री) चर्बी, तेल ।
मेर । बसा ।

चरमराना—(क्रि अ) चबू-चबू शक
होवा ।

चरमर शब्द होना या करना ।

चरबाहा—[सं पुं] शबशीला ।

गाय, भेंस, आदि चरानेवाला ।

चरस—(सं स्त्री) पानी तोला
चासबाब डाडब मोना । गँजा ।

कुएँ से पानी निकालने का चमड़े
का बहुत बड़ा थैला । मोटा ।

गण्डि के पेड़का गोंद या चेप ।

चरागाह—(सं पुं) चरगैश पंथाब ।
पशुओं के चरने का मैदान ।

चराना—(क्रि स) चबा, कथादे
झुलनावा ।

चरने के लिये छोड़ना । बहकाना ।

चरी—[सं स्त्री] चरगैश पंथाब ।
चरागाह ।

चरु—[सं पुं] शबिसर भात ।
शबिसर भात बका टो ।

हविष्यान । हविष्यान पकाने
का पात्र ।

चरपट—(सं पुं) चापब (गोलत),
चब ।

तमाचा । थप्पड़ ।

चर्मकार—[सं पुं] मुठिशार ।
चमार जाति ।

चर्म-पादुका—(सं स्त्री) जोता ।
जूता ।

चर्या—(सं स्त्री) आचरण, इत्ति,
लेवा ।

कार्य । आचरण । रहन-सहन,
वृत्ति । सेवा ।

चराना—(क्रि अ) पिब पिबोवा,
गाब चबू-चवि उठा ।

टूटने के समय चर चर शब्द
होना । इच्छा प्रबल होना ।

चरी—(सं स्त्री) वाक पूर्ण उक्ति ।
व्यंग्य पूर्ण उक्ति ।

चल - (वि) गतिगैल ।

अस्थिर । एक स्थानसे दूसरे
स्थान पर जानेवाला ।

चलता, चलतू—[वि] चलि शक,
अचलित ।

गति युक्त । प्रचलित ।

चलन - (सं पुं) गति, अथा ।
चाल । प्रथा ।

चलन-सार—(वि) अचलित, वि
टिके ।

व्यवहार में प्रचलित । टिकाऊ ।

चलनी—(सं स्त्री) चालनी ।
आटा आदि चालने की छाननी ।

चलविचल—(वि) विन्धन ,
अश्वि ।

अस्त व्यस्त । अस्थिर ।

[सं पुं] नियम क्रम-छल ।

नियम या क्रम का भंग ।

चल संपत्ति—(सं स्त्री) अश्वावर
गण्पति ।

अस्थावर सम्पत्ति ।

चलाऊ—[वि] काम चल ।

चलने वाला । टिकनेवाला

चलान, चालान—[सं स्त्री] चालान,
पट्टावा कार्य ।

माल आदि भेजे जाने का कार्य ।

अपराधी का न्याय के लिये
भेजा जाना ।

चलावा—(सं पुं) बौति, अथ ।
रीति । रिवाज ।

चवाई—(सं पुं) निन्दक ।
निन्दक ।

चश्म, चश्म—(सं स्त्री) चक्र ।
आँख ।

चश्मदीद—(वि) चक्रदे देखा ।
आँख से देखा हुआ ।

चसका, चस्का—[सं पुं] चबौन,
अड्याग ।

शोक । आदत ।

चस्पाँ—(वि) नागि शक ।

चिपका हुआ ।

चह—(सं पुं) नाउत उठिबेल
अश्वी भावे गवा गाँव ।

नाव पर चढ़ने के लिये तटपर
बना चबूतरा । नदी पर बना
अस्थायी पुल ।

चहक—(सं स्त्री) कलबद ।

पक्षियों का कलरव ।

चहकना—(क्रि अ) चिंछिन्न,ि,
कलबद, किनिनि पना ।

पक्षियों का मधुर कलरव करना ।
प्रसन्न होकर खूब बोलना ।

चहचहाना—(क्रि अ) चहचह
किनिनिउवा ।

पक्षियों का चह चह शब्द
करना ।

चह-बल्ला—[सं पुं] चोवाळा ।
पानी जमा करने का हौज ।

चहल—[सं स्त्री] उलश-गालश ।
पक्षीव कलबद ।

आनन्द की घूम । पक्षियों का
कलरव ।

चहल कदमी—(सं स्त्री) नाट्य
नाट्य कूबा ।

धीरे धीरे टहलना ।

चहल पहल—(सं स्त्री) धूमधाम,
आलस्य ।

धूम धाम । रौनक ।

चाहार-दीवारी—[सं स्त्री] आठोव,
शेठा वा गाँठिब गढ़, वेव ।

प्राचीर । दीवार । घेरा ।

चहुँ, चहुँ—(वि) चारि ।
चारो ।

चहेता—(वि) अग्र, आपोान ।
प्यारा । प्रिय ।

चाई—[सं पुं] ठग, धूर्त ।
ठग । उचक्का ।

चाँटा—[सं पुं] चापन ।
थप्पड़ ।

चाँड़—(वि) अरुन, अचञ्च ।
प्रवल । उद्दंड । प्रचंड ।

चाँना—(क्रि स) जोखेवे
उठाला वा टना ।

जोर से उखाड़ना या बबाना ।

चाँड़ [सं पुं] छत्र ।
चन्द्रमा ।

(सं स्त्री) मूबन यात्र भाग ।
लोपड़ी का बिचला भाग ।

चाँदनी (सं स्त्री) खोनाक,
छत्रतांग. छन्दोवाव ।

चन्द्रमा का प्रकाश, बिछाने
या ऊपर तानने की चादर ।

चाँदी—(सं स्त्री) रूप ।
रजत धातु ।

चाँपना—(क्रि स) हँटा दिया ।
दबाना ।

चाक—(सं पुं) कुमाव चार,
चका ।

कुम्हार का बर्तन बनाने का
पहिया । पहिया । दरार ।
(वि) दुः, रुष्ट-गुष्ट ।
दड़ । हूष्ट पुष्ट ।

चाक चक—(वि) मजबूत ।
मजबूत ।

चाक-चका—[सं पुं] जाक-जमक,
गोकर्या ।

चमक दमक । सुन्दरता ।

चाखना—(क्रि स) चाकि चोबा,
सोबाप पबोका कबा ।

चखना ।

चाचर (रि)—(सं स्त्री) शोबीन
शैत । कोलाशन ।

होली का एक गीत । हल्लागुल्ला ।

चाट—(सं स्त्री) छला याक ठेठा
मिशलि एविश भजा वस्तु । चब ।

खानेकी चटपटी और नमकीन
चीजें । शीक । लत ।

चाटुकार—(सं पुं) तोषामोद-
कारी ।

खुशामदी ।

चाटुकारी—(सं स्त्री) तोषामोद
खुशामद ।

चातुरी—(सं स्त्री) चातुर्य,
चालाकी ।

चतुरता । चालाकी ।

चातुर्मास्य—[सं पुं] आश्विन शुक्ल
श्राद्धशौच पर्व कातिव शुक्ल
श्राद्धशौच कर्त्ता एक व्रत ।
वर्षा कालमें किया जाने वाला
एक व्रत ।

चार—[सं पुं] चतु, चतुर् पवित्रि ।
घनुष । वृत्तकी परिधि का
भाग । घर का मेहराब ।
(सं स्त्री) चाप, हैछा, डबिब
शक ।

दबाव । पैर की आहट ।

चापलूस—(वि) तोषामोदी ।
खुशामदी ।

चापलूसी—(सं स्त्री) तोषा-
मोद ।

खुशामद ।

चाभना—(क्रि. स) खोना ।
खाना ।

चाम—(सं पुं) चाखा, छाल ।
चमड़ा ।

चाय—(सं स्त्री) चाह ।

एक प्रकार का पीछा । उसकी
पत्तियों से बना पेय पदार्थ ।

चार-कर्म—(सं पुं) चोराःचोरा-
गिरी ।

जामूसी ।

चारदीवारी—(सं स्त्री) प्राचीन,
वेव ।

प्राचीर । दीवार ।

चारपाई—(सं स्त्री) खाँट, चाल-
गोवा ।

छोटा पलंग । खाट ।

चारा—(सं पुं) चोश, चेंच,
उपाय ।

पशुओं का खाना । उपाय ।

चाराजोई—(सं स्त्री) गोचर ।
फरियाद ।

चाल—(सं स्त्री) गाँठ, आठ-
बग, प्रथा, उपाय ।

गति । आचरण । प्रथा ।

तरकीब ।

चाह-चलन—(सं पुं) आचार-
वावहार ।

आचरण । व्यवहार ।

बाल-ढाल—(सं स्त्री) आचरण ।
आचरण ।

बालबाज—(वि) शूर्छ, ठग,
कपट ।
धूर्त । छली ।

बालबाजी—(सं स्त्री) शूर्छानि,
चालाकी ।
धूर्तता । चालाकी ।

बालीस—(वि) चमिग ।

बालू—(वि) चलि थका, थक-
लित ।

प्रचलित । जो चल रहा हो ।

बाव—(सं पुं) बागना, अश्रुबाग,
छथ ।

वासना । अनुराग । शौक ।
उमंग ।

बाशनी—(सं स्त्री) पगई घन
रुबा छेनि, गुड़ आदिब बग ।
आँच पर गाढ़ा किया हुआ चीनी,
गुड़ आदि का रस ।

बाह—(सं स्त्री) इच्छा, औति,
आदर ।
इच्छा । प्रीति । आदर ।

बाहिए, बाहिये—(अव्य) उठित,
मागे ।
उचित है । आवश्यक है ।

बाहे—(अव्य) यदि, अथवा,
नाइबा, बा, लागिले ।

यदि इच्छा हो । अथवा । या

बिआँ—(सं पुं) ठेंठेलीब गुँटि ।
इमली का बीज ।

बिचूँटी, च्यूँटी—(सं स्त्री)
भिंपबा ।

पिपिलिका ।

बिघाड़ना—[क्रि अ] शरीर
चिक्कब ।

हाथी का बोलना । चीखना ।

बिचिना—(क्रि अ) छिछा कर ।
चिन्तन या ध्यान करना ।

बिंदी—(सं स्त्री) अढाङ्ग गर
ट्रुक्का ।

बहुत छोटा टुकड़ा ।

बिक्—(सं स्त्री) पद ।।
परदा । चिलमन ।

बिक्कट—(वि) मलिन ।
मैल से गंदा ।

बिक्कना—(वि) चिक्कन, मिशि ।
साफ और बराबर । जो खुर-
दुरा न हो ।

बिक्कनाई—[सं स्त्री] चिक्कनता,
मिशिक्कन ।
बिक्कनाहट ।

चिकनाना—[क्रि स] ठिकूण करा ।

ठोबामोद करा । कथा गाझि-
काचि कोरा ।

चिकना बनाना । खुशामद
करना । बनाबटी बातें करना ।

[क्रि अ] शकत होरा ।
मोटा होना ।

चिकनाहट—[सं स्त्री] ठिकूण
होरा भार ।

चिकना होने का भाव ।

चिकरना—[क्रि स] चिढ़ावा ।
चिघाड़ना ।

चिकार—(सं पुं) चिढ़ाव-वाक्य ।
चिघाड़ ।

चिकुर—(सं पुं) ठूलि, गाप
आदि गरीश्वप ।

केश । बाल । साँप आदि
सरीसृप ।

चिकोटी—(सं स्त्री) चिकोटी ।
चुटकी ।

चिट—(सं स्त्री) कागज वा
कापेबब टूटूबा ।
कागज का छोटा टुकड़ा जिसमें
कुछ लिखा जाय ।

चिटकना—(क्रि अ) गर-गर गर
कवि डडा । कुलर कलि कुलि
उठा ।

चिट् आवाज कर टूटना ।
कली का खिलना ।

चिट-नबीस, चिटनीस—(सं पुं)
निर्धक, निपिकाव ।

लेखक । लिपिक ।

चिट्टा—[वि] बग ।

सफेद ।

[सं पुं] अवश्यक वृद्धि ।

भूठा बढ़ावा ।

चिट्ठा—(सं पुं) जमा-बबखर वही ।
आय व्यय का हिसाब ।

चिट्ठी—(सं स्त्री) चिठि ।
पत्र । खत ।

चिट्ठी-पत्री—(सं स्त्री) चिठि-पत्र,
पत्र व्यवहार ।

चिट्ठी-रसाँ—[सं पुं] डाकोबाल,
डाक-पियन ।
डाकिया ।

खिड़चिड़ा—(वि) शिंशिडीया ।

जरा सी बात पर चिढ़ जाने
वाला ।

चिड़वा—(सं पुं) चिवा ।
चिड़हा ।

चिड़ा—[सं पुं] बनचिबिका ।
गौरैया पक्षी ।

चिड़िया—(सं स्त्री) चबाई ।

पक्षी ।

चिड़िया खाना—(सं पुं) प्रक्ष-
अक्षीय मण्डल, चिड़ियाखाना ।

वह स्थान जहाँ बहुत से पशु-पक्षी
देखने के लिये रखे जाते हैं ।

चिड़िहार, चिड़ीमार—[सं पुं]
चबाई-ठिकारी, व्याध ।

बहेलिया । व्याध ।

चिड़ना—[क्रि अ] अधगम होना ।
अप्रसन्न होना ।

चिड़ाना—(क्रि स) अधगम करना,
विरुद्ध करना ।

ऐसा काम करना जिससे कोई
चिढ़े ।

चित्—[सं पुं] चैतन्य, ज्ञान ।
चैतन्य, ज्ञान ।

चित—[सं पुं] चित्त, मन ।
चित्त । मन ।

चितकबरा, चितला—(वि) प्रथवा ।
भिन्न भिन्न रंगों के धब्बों वाला

चित चोर—(सं पुं) चित्र, मन-
चोरा ।
प्यारा ।

चितवन—(सं स्त्री) दृष्टि, चारुति ।
दृष्टि ।

चिताना—(सं स्त्री) गावधान बागी
उत्तारा, उत्प्रेषण दिया ।

सावधान या होशियार करना ।
उपदेश देना ।

चितावनी—[सं स्त्री] गतर्कवाणी ।
चेतावनी ।

चिति—(सं स्त्री) चित्ता, मनुष्य,
चैतन्य ।

चिता । समूह । चैतन्य । चित्
शक्ति ।

चितेरा—[सं पुं] चित्रकार ।
चित्रकार ।

चित्ती—(सं स्त्री) चैता ।
छोटा धब्बा ।

चित्रसारी—(सं स्त्री) चित्रगाला,
चित्र विज्ञा, अट्गोप-डवन ।
चित्रशाला । चित्रकारी । विलास
महल ।

चित्राचार—(सं पुं) एलवान,
चित्र मण्डल ।
अलबम । चित्र-संग्रह ।

चित्रिका—(सं पुं) कटा-चित्ता
काटपाव ।
फटा पुराना कपड़ा ।

चित्ररूप—(सं पुं) ज्ञानरूप
प्रवशात्रा ।
ज्ञानरूप परमात्मा ।

चिदुल्लास—(सं पुं) छेउछ

क्षेत्रब नाया ।

चैतन्य ईश्वर की माया ।

चिनगारी—(सं स्त्री) किविडति,

भुलनछ ।

आग का छोटा कण । स्फुलिंग ।

चिनगी—(सं स्त्री) किविडति ।

चिनगारी ।

चिनिया बदाम—(सं पुं) टौना-

बाणाम ।

मूंगफली ।

चिन्हानी—[सं स्त्री] आवक,

चिन ।

याद दिलाने वाली वस्तु ।

चिन्हारी—(सं स्त्री) अविद्य ।

परिचय ।

चिपकना—(क्रि अ) नागि थका ।

गोंद आदि से जुड़ना ।

लिपटना ।

चिपकाना—(क्रि स) आठा

नगोरा ।

लसीली वस्तु से जोड़ना ।

चिपचिपा—(वि) एठा-एठि,

आनतीया ।

लसीला ।

चिपटा—[वि] छेउछे ।

दबा हुआ । जिसकी सतह

उठी हुई न हो ।

चिप्पी—(सं स्त्री) ठोपनि ।

कागज, रबर आदि का छोटा

टुकड़ा जो किसी वस्तु पर

चिपकाया जाय ।

चिबुक—(सं पुं) धूँतवि ।

ठोढ़ी ।

चिमटना—(क्रि अ) काटना

थाड़े नागि थका ।

चिपकना । कसकर लिपटना ।

पीछा न छोड़ना ।

चिमटा—(सं पुं) छिगो ।

दबाकर पकड़ने या उठाने का

एक औजार ।

चिमनी—[सं स्त्री] छुडि, छिन्नि ।

मकान का धुआँ निकालनेवाला

छेद । लालटेन का शीशा ।

चिरकुट—(सं पुं) कटो-काटोना ।

चिथड़ा ।

चिरना—(क्रि अ) छिब, कला ।

सीधे में फटना ।

चिरमिटो, चिरमो—(सं स्त्री)

एविष देनजातीय कल ।

धूँधुची ।

चिरवाना—[क्रि स] पौन-
पौन फलवाना ।

सीधे में फडवाना ।

चिराई—[सं स्त्री] छिवा वा कर्मा
वाना ।

चीरने की मजदूरी ।

चिराग—(सं पुं) टाकि ।
दीपक ।

चिराग दान—(सं पुं) गश्ता ।
दीयट ।

चिरायँक—(सं स्त्री) चामबा,
छुलि, बबब आदि पूबिले
ओलारा शूर्गक ।

चमडा, बाल, माँस आदि जलने
की दुर्गंध ।

चिरौरी—(सं स्त्री) दीनता-
पूर्वक कबा प्रार्थना ।
दीनता पूर्वक की जाननेवाली
प्रार्थना ।

चिलकना—(क्रि अ) बै-बै
उकलि उठा । बिबोरा ।
रह-रहकर चमकना । दंद
होना ।

चिलगोजा—(सं पुं) एविश
फल ।
एक प्रकार का फल ।

चिलबिला (झा)—(वि) चकल ।
चंचल । चपल ।

चिलम—(सं स्त्री) चिलिय ।
तम्बाकू पीने के लिये मिट्टी की
नलीदार कटोरी ।

चिलमन—[सं स्त्री] पद ।
चिक । परदा ।

चिल्लड़ (र)—(सं पुं) एविश बग़ा
ओकरी । जूँके आकार या एक
सफेद कीड़ा ।

चिल्ल-पों—[सं पुं] चिश्ब-बाथब ।
चिल्लाहट । शोरगुल ।

चिल्लाना—(क्रि अ) चिश्बा ।
चीखना । हल्ला करना ।

चिल्लाहट—(सं पुं) चिश्ब ।
चिल्लाने की क्रिया या भाव ।

चिल्ली—(सं स्त्री) जिली । बिजली ।
भीगुर नाम का कीड़ा । बिजली ।

चिहुँकना—(क्रि अ) उछपखाई उठा,
भियँवि उठा ।
चौकना ।

ची-चपड़—(सं स्त्री) इश्टावे
बिबोध करि कोरा कथा ।
विरोध में बहुत दबते हुए कुछ
कहना ।

बीटो—(सं स्त्री) पकड़ा ।

ब्यूटी ।

बीकट—(सं पुं) ठेल छिकटि ।

तेल की मेल ।

बीख—[सं स्त्री] छिऌब, आटाश ।

चिल्लाहट ।

बीखना—(क्रि स) छिऌबा ।

चिल्लाना ।

बीज—[सं स्त्री] बख ।

वस्तु । सामान ।

बीड़—(स पुं) गवल गछ ।

एक प्रकार का पेड़ ।

बीता—[सं पुं] नाशव कूटका

बाष ।

एक हिंसक जंगली पशु ।

(वि) बगन-डवा ।

मन में सोचा हुआ ।

बीनो—[सं स्त्री] छेनि ।

शक्कर ।

[वि] चीन देश का ।

चीन देश का ।

बीनी मिट्टी—[सं स्त्री] चीनी-माटि ।

एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसके बरतन आदि बनते हैं ।

बीर—[सं पुं] काटपाब । कटो-

कानि । वस्त्र । चिथड़ा ।

[सं स्त्री] बिनीर्ष कबा कार्या

वा कला अर्थ ।

बीरने की क्रिया । बीरने से बनी

हुई दरार ।

बीरना—(क्रि स) बिनीर्ष कबा ।

तेज धारवाले हथियार से बीचमें से काटना ।

बीरफाड़—[सं स्त्री] अट्ठापठाव ।

अस्त्र चिकित्सा । आपरेशन ।

बील—[सं स्त्री] छिला ।

एक तरह की चिड़िया ।

बीवर—(सं पुं) गमगागी, भिक्कू

आदिब वस्त्र ।

संन्यासियों, भिक्षुओं के पहनने

का कपड़ा ।

चुंगी—[सं स्त्री] आमपानी कब ।

बाहर से आनेवाले माल पर लगने

वाला महसूल ।

चुंदी—(सं स्त्री) टिकनि ।

शिक्षा । चोटी ।

चुकंदर—[सं पुं] बीटो-पाल ।

गाजर का तरह का एक कन्द ।

चुकता (ती)—(वि) आनाश ।

जो चुका दिया गया हो ।

चुकना—(क्रि अ) बाकी नबना ।

बाकी न रहना । निपटना ।

चुक्राना—(क्रि स) आनाश्र दिया ।
बाकी न रखना । निपटाना ।

चुक्र—(स' पु') नातिन गब
शिला ।
मिट्टी का छोटा गिलास ।

चुगना—(क्रि स) ठोठेव बूठल
खोवा ।

चिड़ियों का चोच से दाने आदि
उठाकर खाना ।

चुगलखोर—[स' पु'] फूटकीया ।
चुगली खानेवाला या शिकायत
करनेवाला ।

चुगली—(स स्त्री) टोटेक, लथनीया
कथा ।

परोक्षमें की जानेवाली शिकायत ।

चुटकना—(क्रि स) थूथानावि
छिडा, गाएन थूटि उवा ।

चुटकी से तोड़ना । साँप का
काटना ।

चुटकी—(सं स्त्री) छिमठा ।

पकड़ने के लिये अंगूठे और
तर्जनी का योग ।

चुटकी लेना— शैशि उम्ब्राइ
दिया ।
हँसी उड़ाना ।

चुटकुला—(स' पु') शैशि उठा,
कि० उपदेश मूलक कथा ।
उपेक्ष अयोधब गावलीया बावडा ।
चमत्कार पूर्ण हँसी की या छोटी
मजेदार बात । दबा का छोटा
और गुणकारी नुमला ।

चुटिया—(सं स्त्री) टिकनि ।
शिखा । चोटी ।

चुड़िहारा—[स पु'] रूबी वा
शंक वेठोठा ।
चूड़ियों का व्यापारी ।

चुड़ल—(सं स्त्री) डाकिनी, दम्बूरी
जिवाडा ।

डायन । क्रूर और लड़ाकी स्त्री ।

चुनचुनाना—(क्रि अ) टेक्-
टेकनि उठा । कुछ जलन
लिये हलकी खुजली होना ।

चुनट, चुनन—(स' पु') डौण ।
कपड़े आदिमें बनाई हुई सिलबट ।

चुनना—(क्रि स) निर्याचन कबा,
बुठला, डालव पवा बेयाक
पृथक कबा ।

चयन करना । छोटी-छोटी चीजों
को हाथ आदि से उठाकर संग्रह
करना । निर्वाचित करना ।
अच्छी चीज में से खराब चीज
निकालना । कपड़ेमें तह लगाना ।

चुनरो, चुनरी— (सं स्त्री) कुल
वशा एविथ उबनि कापोर ।
स्त्रियों के पहनने या ओढ़ने का
एक रंगीन कपड़ा ।

चुनाव— [सं पु] वाङ्मनि ।
निर्वाचन ।

चुनिदा— (वि) बाङ्कबनोय ।
चुना हुआ । बढ़िया ।

चुनौती— (सं स्त्री) बणीशान,
बण-छङ्काव ।

शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी को दी जाने
वाली ललकार । आह्वान ।

चुन्नी— (सं स्त्री) चुन, कण नङ्कण ।
बहुत छोटा रत्न । अनाज या
लकड़ी का चूरा ।

चुप— (वि) अवाक, मौन ।
अवाक । मौन ।

चुपचाप— (वि) मन-मन, शाउत
गावे भविष्य गावे ।

बिना कुछ कहे सुने । छिपे-छिपे ।

चुपड़ना— (क्रि स) मालिठ करा,
मिठा कथा कोरा ।
लेप करना । चिकनी चुपड़ी
बातें कहना ।

चुप्पी— [सं स्त्री] निष्ठकता ।
मौन ।

चुभना— (क्रि स) बिकि बोरा,
मनउ कष्ट पोरा ।

गड़ना । घँसना । बुरा लगना ।
मनमें दुख लगना ।

चुभाना— (क्रि स) बिकि मिया ।
मनउ यासाउ मिया ।

घँसना । मनमें कष्ट लगनेवाली
बातें या काम करना ।

चुमकारना— [क्रि स] निरूकोरा ।
प्रेमपूर्वक पुचकारना ।

चुम्मा— [सं पु] चूमा ।
चुम्बन ।

चुरसुरा— (वि) ताजा, वि
ठनब के डाडि याय ।

ताजा । चुरचुर शब्द करके टूटने
वाला ।

चुराना— [क्रि स] चोर करा ।
चोरी करना ।

चुलचुलाना— (क्रि अ) अलप
खड्गति ।

हलकी खुजली होना ।

चुलचुलाना— (वि) चङ्गल, उँपतीया ।
चंचल । नटखट ।

चुल्लू— [सं पु] चनू, आँखलि ।
अंजुलि ।

बुसकी—[सं स्त्री] पोश ।
 सुरक कर पीनेकी क्रिया । घूँट ।
बुसना—(क्रि अ) पोश या बि
 थोवा । बगहीन होवा ।
 बूसा जाना । रसहीन होना ।
बुस्त—[वि] आटे थोवा, फूडि-
 बान, नोदोका ।
 कसा हुआ । फुरतीला । मजबूत ।
बुस्ती—[सं स्त्री] फूडि, दृढ़ता ।
 फुरती । कसाबट । दृढ़ता ।
बुहबुहाना—[क्रि अ] आनन्दते
 बबटेक कथा कोवा ।
 चटकीला होना । सरस होना ।
बुहड़ा—[सं पुं] म्रेतव, डोम ।
 भंगी । चांडाल ।
बुहल, बुहल—[सं स्त्री] शैशि
 क्षेयानि ।
 हंसी । ठठोली ।
बुहिया—(सं स्त्री) माइको निगनि ।
 मादा चूहा ।
बूँ—(सं स्त्री) ठौं छियनि ।
 छोटी चिड़ियों की बोली ।
 धीमा शब्द ।
बूँकि—[क्रि वि] सिधेछु, किसना ।
 क्योंकि ।

चूक—(सं स्त्री) झूल, बाडि ।
 मूल । गलती । गलतीसे छुटा या
 हुआ काम ।
 [वि] अताधिक टेडा ।
 बहुत अधिक सट्टा ।
चूकना—[क्रि अ] झूल कबा,
 झूझाग नटे कबा ।
 मूल करना । अवसर सौ देना ।
चूचो—(सं स्त्री) छन ।
 स्तन ।
चूजा—(सं पुं) कुझरा पोवालिन ।
 मुरगी का बच्चा ।
चूड़ा—(सं स्त्री) शैर्ष ।
 चोटी । शिक्षा । मोरकी कलंगी ।
 (सं पुं) शंकर ।
 हाथमें पहनने का कड़ा ।
चूड़ाकर्म—(सं पुं) छड़ा कबण ।
 मुण्डन संस्कार ।
चूड़ी—[सं स्त्री] शंकर ।
 हाथमें पहनने का गहना । वृत्ता-
 कार वस्तु ।
चूतड़—(सं पुं) तपिना, निताड ।
 नितंब ।
चून—(सं पुं) आटा-गुड़ि ।
 चूर्ण । आटा ।

चूना—(सं पुं) छ्म ।

एक सफेद क्षार ।

(क्रि अ) ढोपान शवि भवा ।

बूँद बूँद गिरना ।

चूसना—(क्रि स) छ्म खाँदा ।

चुम्बन करना ।

चूर, चूरा—[सं पुं] छ्म ।

चूर्ण ।

(वि) झाँस ।

थका हुआ ।

चूरन—(सं पुं) छ्म ।

चूर्ण ।

चूरना—(क्रि स) छ्म कबा ।

चूर्ण करना ।

चूल्हा—(सं पुं) छोका, आखा ।

आग का वह पात्र जिसपर भोजन पकाते हैं ।

चूसना—(क्रि स) छ्म खाँदा,

अशुचित भावे ढेका आदाय कबा ।

कोई चीज मुँहमें दबाकर उसका रस पीना । अनुचित रूप से रुपये बसूल करना ।

चूहा—(सं पुं) एन्ध्र ।

मूसा ।

चूहेदानी—[सं स्त्री] एन्ध्र नवा

काल ।

चूहा फँसाने का पिंजड़ा ।

चेचक—[सं स्त्री] बगसु बोग ।

शीतला रोग ।

चेट—(सं पुं) दाग, पति ।

दास । पति ।

चेटक—[सं पुं] दाग, दूत ।

दास । दूत । जादू ।

चेटी—(सं स्त्री) दागी ।

दासी ।

चेत—[सं पुं] छेतना, ज्ञान, श्रुति ।

चेतना । ज्ञान । स्मृति ।

चेतक—(वि) छेतना प्रदायक ।

चेतना उत्पन्न करनेवाला ।

चेता—(वि) छेतनशील ।

चेतना वाला ।

चेताना—(क्रि स) गतर्क कवि दिया,

उपदेश दिया ।

सावधान या होशियार करना ।

उपदेश देना ।

चेतावनी—[सं स्त्री] गतर्कवाणी ।

सावधान करने के लिये कही जानेवाली बात । उपदेश ।

चेहरा—[सं पुं] छेश्वा, आकृति ।

मुख । बदन ।

चैत—[सं पुं] ष'त मास ।
चैत्र महीना ।

चैती—[सं स्त्री] ष'तत काटिब
लश्रीय। गन्ध, एविष ग्रीत ।
चैतमें कटनेवाली फसल । एक
गाना ।

[वि] ष'त मास गश्क्रीय ।
चैत्र सम्बन्धी ।

चैत्य—[सं पुं] यन, देवताव
मन्त्रिब, बोद्ध नठ ।
मकान । देव मन्दिर । बौद्ध मठ ।

चैन—[सं पुं] शाब्धि, सूत्र ।
आराम । सुख ।

चोंच—[सं स्त्री] छाँट ।
पक्षी का मुँह ।

चोंचना—(क्रि स) आँटोना,
छोँटना ।

नोचना । खसोटना ।

चोआ—[सं पुं] केवाविष अगक्षि
द्रवाव जावडाग ।
सुगन्धित वस्तुओं का सार या
रस ।

चोकर—[सं पुं] टोकोना ।
गेहूँ आदि की मूसी ।

चोखा—(वि) उद्ध, उठव,
टोका ।

शुद्ध । उत्तम । पैना ।

[सं पुं] झूठे त्रुवि वा पानीत
उशई लोण तेल आदि जालि
कवा एविष तबकारी ।

आलू आदि का भरता ।

चोगा—(सं पुं) छापकण ।
पैरों तक लटकता ढिला अंगा ।

चोचला—(स पु) लाइ-विलाइ ।
जवानी की उमंग की चेष्टाएँ ।

चोट—[सं स्त्री] आघात ,
आघात पाई टोटा अनिष्टे ।
आघात । आघात से होनेवाला
अनिष्ट । जखम ।

चोटी—(सं स्त्री) टिकनि, बेगौ,
कूकुराव मूबव थोपा । पर्वतव टिं
शिखर । एकमें गुँथे स्त्रियों के
सिर के बाल । मुर्गों की कलगी ।

चोब—[सं स्त्री] बडाव थँटा,
टोलगावि ।

शामियाने का बड़ा खम्भा ।
नगाड़ा बजाने की लकड़ी ।

चोबदार—(सं पुं) श्वरी ।
द्वारपाल । नौकर ।

चोर दरवाजा—(सं पुं) छुश्-

झुगार ।

गुप्त द्वार ।

चोर बाजार—(सं पुं) चोरा-

बजार ।

वह स्थान जहाँ चोरी से वस्तु अधिक मूल्य पर बेची जाती है ।

चोर बाजारी—(सं स्त्री) चोरा-

बजारी ।

चोरी से कोई चीज ज्यादा या कम दामपर बेचना ।

चोरा चोरी (क्रि वि) चोरापटन,

भटन-भटन ।

छिने छिने । चुपके चुपके ।

चोल—(सं पुं) चिला चोला,

कदर ।

ढीला कुरता । कवच । चोली ।

चोला—(सं पुं) गांधू गन्नाग्रीव

शूलो चोला वा तेने काटणीव, शरीर ।

साधुओं का लम्बा कुरते सा पहनावा । शरीर ।

चोली—(सं पुं) कौल्लि ।

अग्निया की तरह का स्त्रियों एक पहनावा ।

चौकना—[क्रि अ] चक्कि उठा,

चोका चोका ।

भय आदि से अचानक कांप

उठना । चकित होना ।

चौध—(सं स्त्री) चमक ।

चमक ।

चौधियाना—[क्रि अ] चक्कू चाँटे

यावि धरा ।

तेज चमक के सामने आँखें झिल-मिलाना । चकाचौध होना ।

चौ—(वि) चाँवि ।

चार ।

चौक—[सं पुं] चक, चौताल ।

चौकोर खुली भूमि । आंगन ।

वह स्थान जहाँ कई रास्ते मिलते हैं ।

चौकड़ी—(सं स्त्री) चौप वा

लाक, गड्ढी ।

छलाग । मंडली या गुट ।

चौकड़ा—(वि) गावधान ।

सावधान चौका हुआ ।

चौकस—[वि] गावधान, उपयुक्त ।

सावधान । ठीक ।

चौकसी—(सं स्त्री) गतर्कता,

बशीश ।

सावधानी । रखवाली ।

चौका—(सं पुं) चाँकुरीश

गिल, चोका, आधा ।

पत्थर का चौकोर टुकड़ा ।

चोई का स्थान ।

चौका बरतन—[सं पुं] डाउ
बक्का पिछुत ढाका आदि
प्रबिक्काव कवा क्रिया ।
रसोई के बाद बरतन आदि
साफ करने का काम ।

चौकी—[सं स्त्री] ढकौ, पंश्वा
दिया ठाई ।

छोटा तल्लत । पडाव । रक्षाके
लिये सिपाहियों के रहने का
स्थान । पहरा ।

चौकीदार—[सं पुं] पंश्वादाव,
ढकौदाव ।
पहरा देनेवाला ।

चौकोर—(वि) ढाबिठूकीया ।
जिसके चारों कोण बराबर हो ।

चौखट—[सं स्त्री] श्वाव डलि ।
देहली ।

चौखटा—[सं पुं] आयना वा
फटो। ध्रुवावटेल क्रेश ।
चित्र या शीशा जड़ने का चौकोर
ढांचा ।

चौगान—[सं पुं] पल्लोत्थल वा
पल्लो खेल-पंथाव ।
गेंद बल्ले का खेल या उसका
मैदान ।

चौगुना—[वि] ढाबिठुण ।
चतुर्गुण ।

चौगोड़ा—[सं पुं] ढाबिठुडीया
जुह, पंशपह ।

चतुष्पद जन्तु, खरगोश ।

चौड़ा—[वि] बहल ।

जिसमें चौड़ाई हो । विस्तृत ।

चौड़ाई—[सं स्त्री] पंथानि ।
पनहा ।

चौताल—[सं पुं] होलीव ग्रीत,
ब्रुदखव एविश ताल ।
होली में गाये जानेवाला एक
गीत । एक प्रकार का ताल ।

चौथ—(सं पुं) ढतुर्थी तिथि ।
चतुर्थी तिथि ।

चौथाई—(वि) एक ढतुर्थांश ।
चौथा भाग ।

चौपट—[क्रि वि] ढाबिठु फाले ।
चारों ओर से ।
(वि) क्षत्ण ।
बरबाद ।

चौपड़—[सं स्त्री] एविश खेल ।
चौसर नामक खेल ।

चौपाई—[सं स्त्री] एविश छन ।
एक प्रकार का छंद ।

चौपाया—[सं पुं] ढाबि ठेडीया
जुह ।
चार पैरों वाला पशु ।

चौपास—[सं पुं] गडा बर ।

कुला हुआ बैठक खाना ।

चौमास, चौमासा— (सं पुं)

वर्षा कालव चाबिठा माह—

आश्विन, भाद्रपद, आश्विन ।

वर्षा जलकाल एविश गौत ।

वर्षा ऋतु के चार महोने ।

वर्षा सम्बन्धी गीत ।

(वि) चाबि मशीन । चाबि

माहव अस्तव अस्तव ।

हर चार महोने पर होनेवाला ।

चौमुहानी— (सं स्त्री) चाबि-

आलिब छद् ।

चौराहा । चौरास्ता ।

चौरंगा—[वि] चाबि बडीया ।

चार रंगोंवाला ।

चौरस—(वि) समान, समान ।

चारों ओर से समान वस्तु ।

समतल ।

चौरा—(सं पुं) मरु । कोनो देव-

देवीव नामक मरु देवी ।

चबूतरा । किसी देवा देवता के

नाम पर बनाया हुआ चबूतरा ।

चौराई, चौलाई— (सं पुं) बुढ़वा

नाक ।

एक प्रकार का साथ ।

चौरासी—[सं पुं] चौरासी ।

बस्ती और चार की संख्या ।

चौराहा—[सं पुं] चाबि आलिब

छद् ।

चौमुहानी ।

चौरसर—[सं पुं] पल्लो खेन ।

गोटियों से खेला जानेवाला एक

खेल । चौपड़ ।

चौहटा—[सं पुं] बजाव । चाबि

आलिब मूव ।

बाजार । चौमुहानी ।

चौहडो—(सं स्त्री) छोड़प ।

चार सीमा ।

चौहरा—(वि) चाबि डबनीया ।

चार तहोंवाला ।

च्यूटा, च्यूटी— [सं पुं] उँह,

भिंभरा ।

चौटी । पिपिलिका ।

छ

छ—वाङ्मन वर्णमालाव गथंय आशंव ।
देवनागरी वर्णमाला में चवगं
का दूसरा वर्ण ।

छँटना—[क्रि अ] बाप दिशा ।
विच्छिन्न होना ।
चुनकर अलग कर लिया जाना ।
छिन्न होना ।

छँटना—[सं स्त्री] वाङ्मन ।
छँटाई । कमियों या मजदूरों को
हटाने के लिये छांटने का काम ।

छँटा—[सं पुं] पवित्र, शुद्ध,
छुब ।
साफ । धूर्त । चालाक ।

छँटाई—[सं स्त्री] वाङ्मन ।
चुनकर अलग करने का काम ।
छांटने की मजदूरी ।

छः, छह—[वि] छत्र ।

छकड़ा—[सं पु.] बलद गाड़ी ।
बैलगाड़ी ।

छकना—[क्रि अ] ठूठ होना,
ठग होना ।

खा पीकर या सोन्दर्य देखकर
तृप्त होना । धोखा खाना ।

छकाना—[क्रि स] ठगोना । काकि
दिशा ।
धोखा देना ।

छछुन्दर—[सं पुं] ठका ।
चूहे की तरह का एक जन्तु ।

छज्जा—[सं पुं] आठना ? आग-
छालि ।
कोठे का दीवार से बाहर निकला
हुआ भाग ।

छटकना—[क्रि अ] छिटकि होना,
बेलगे धका, छँगियाई
होना ।

किसी वस्तु का वेग से दूर जाना ।
अलग रहना । कूद जाना ।

छटपटाना—(क्रि अ) धर-धर
करा । अश्वि होना ।
तड़फड़ाना । बेचैन होना ।

छटपटी—(सं स्त्री) अश्विबता,

आकुलता ।

बेचैनी । आकुलता ।

छटा—[सं स्त्री] शोभा, विछूनी

शोभा । बिजली ।

छठा—(वि) बर्ष ।

षष्ठ ।

छठी—[सं स्त्री] अथर्व बर्ष दिना

कवा विशेष अनुष्ठान ।

बालक के जन्म के छठे दिन होनेवाले कृत्य ।

छद्—[सं पुं] शक्ति, शला ।

धातु, लकड़ी का पतला लम्बा टुकड़ा ।

छत्त—[सं पुं] पकौयबब टाल ।

उपबब^१ आशुत भाग ।

चूने, कंकड़ आदि से बना घर

का छाजन । ऊपर का ढँकाभाग ।

छतरी—(सं स्त्री) छाति ।

छाता । पैराशूट ।

छत्तीसा—(वि) छठ्ठ, शूर्ष ।

चालाक । धूर्त ।

छत्ता—(सं पुं) चोटाक, छाति ।

मधुमक्खी का घर । छाता ।

कमल का बीजकोष ।

छत्रक—[सं पुं] वे-श्टा । नो-

टाक ।

कुकुरमुत्ता । मधुमक्खियों का

छत्ता ।

छत्री—(सं पुं) काज्य । छाति ।

छत्रिय जाति ।

छद्—(सं पुं) आवरण । छात्र ।

प्राप्ति ।

आवरण । चिड़ियों का पंख ।

छनकना—(क्रि अ) छेग-छेन शब्द

होना । छग-छेन होना ।

चौकन्ना होकर भागना । छन् ।

छन् भागना ।

छनक-मनक—(सं स्त्री) गाछ-

गच्छा । अलङ्कार अन्जननि,

लाह-बिलाह ।

सज-धज । गहनों की झंकार ।

नखरा ।

छनना—(क्रि अ) छेक । छेक

होना । मिलायीति होना ।

किसी चूर्ण या तरल पदार्थ का

कपड़े आदि से इस प्रकार गिरना

जिससे मैल ऊपर रह जाय ।

लड़ाई होना । मेलजोल होना ।

छपका—(सं पुं) छिट्कनि ।

पानी का छीटा ।

उपमा—(क्रि अ) दृष्टोत्पत्ति ।

बुद्धित होना । चिह्नित या
अंकित होना ।

उपाई—(सं स्त्री) दूषण, हानि-
बन्ध ।

छापने या छपाने की क्रिया ।
मुद्रण । छापने की मजदूरी ।

उपाका—(सं पुं) क्षुण्ण करने
हेतुवा पत्र ।

पानी पर जोरसे गिरनेका शब्द ।

उपपर—(सं पुं) बरब झल ।
फूस आदि की छाजन ।

छबिमान, छबोखा—[वि] स्मर, धूनीश ।

सुन्दर । छबिवाला ।

छमकना—[(क्रि अ) बुध्बान
पत्र । झिलझिल उठना । आनन्द
नटना ।

धुँधुधुओं की झंकार होना ।
चमकना । खुशी से नाचना ।

छसा छम—(क्रि वि) धन-धननि ।
जोर से छम छम शब्द करते हुए ।

छमासी—(सं स्त्री) क्षयवांशिली
आद्य ।

मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला
आद्य ।

(वि) हल गरीब ।

छः महीने का ।

छट-छटाना—(क्रि अ) छट-छट
करना ।

बाध पर नमक आदि लगने से
जलन या चुनचुनी होना ।

छरहरा—(वि) गी-पातल । ख-
डकीश ।

दुबला पतला और हलका ।
तेज ।

छरी—(सं पुं) बुध्, कण, बन्धूक
गन्धुलि ।

कंकड़ी या कण । बन्धूक की
छोटी गोली ।

छल—[सं पुं] छलना, कपट,
कैकि ।

कपट । धोखा । बहाना ।

[वि] छलना । काल्पनिक ।
नकली ।

छलकना—(क्रि अ) उछाल धाई
पना, झलक धाई पना ।

तरल पदार्थ का उछलकर बाहर
गिरना । भरे होने के कारण
उमड़ना ।

छल-कपट, छलछिद्र—[सं पुं]

छल, छलना, छलना ।
बोखेबाजी ।

छद्मछद्माना—(कि न) ठगति
पना ।

भर जाने के कारण पानी गिरने
को होना ।

छद्मना—[कि स] ठगोवा ,
थडावना कना ।

घोखे में डालना । मोहित करना ।
(वि) कैकि ।

घोखा ।

छद्मानी—(सं स्त्री) छाननी ।
चलनी ।

छद्मांग—(सं स्त्री) छाँग, नाक ।
कूदान ।

छद्मावा—(सं पुं) छेड़खान वा
याशुविष्ठा ।

इन्द्रजाल या जादू । मून प्रेत
आदि की छाया ।

छक्षिया, छली—[वि] कण्ठा ,
झलाही ।

घोखेबाज ।

छद्मा—[सं पुं] धूँगीया बख,
आठठि ।

मंडलाकार वस्तु । बलब ।

छद्माई—[सं स्त्री] छान छेडा
बानछ ।

छप्पर आदि छाने या छवाने की
मजदूरी ।

छवि—[सं स्त्री] चोटा, धेडैति ।
सोमा । कान्ति ।

छवी—[सं स्त्री] निबगकनव
गरु तबोवान । कपोप ।

सिक्ख लोगों का छोटा कृपाण ।

छहरना—(कि न) गिटवति दे
पना ।

बिखरना ।

छाँट—(सं स्त्री) बाह्नि, काँटि-
पेगोवा कागधव ठूँझवा ।

छाँटने या चुनकर अलग करने
की क्रिया । छाँटकर अलग की
हुई बेकार वस्तु ।

छाँटना—[कि स] काँटि उणिउवा,
छानि बावि उणिउवा ।

काटकर अलग करना । अनाज
में से कण या मूसी कूटकर अलग
करना । अच्छी या काम की
चीजें चुनना । जानकारा का
अहंकार करना । कै करना ।

छाँदना—[कि स] कुलावे धान
धवा, पविताग कना ।

सूप से अनाज फटकना । कै
करना । छोड़ना ।

छाँदना—(कि स) बहा ।
बाँचना ।

छाँदा—(सं पुं) ढोख आदिब
परा कैंशीठ डबाई बढेन
निग्रा आशर, अश्रु ।

भोज आदि से थाली में परोसकर
अपने घर ले जाया जानेवाला
भोजन । हिस्सा ।

छाँव—(सं स्त्री) छाँ, छाया ।
छाँह । छाया ।

छाँह—(सं स्त्री) छाँ, आश्रय ।
छाया । ऊपर से छाया हुआ
स्थान । आश्रय ।

छाक—(सं स्त्री) छुंछि, छुपबीशर
जलपान, नापकता ।
तृप्ति । दोपहर का जलपान ।
गराब के साथ खायी जानेवाली
चटपटी चीजें । मस्ती ।

छाग—(सं पुं) छागनी ।
बकरा ।

छाछ—(सं स्त्री) छैब धोल ।
मट्टा ।

छाज—[सं पुं] कुल । बब
छल । गजापरा ।

सूप । छप्पर । सजावट । स्वांग ।

छाजन—(सं पुं) काटोब ।

कपड़ा ।

(सं स्त्री) छान छेवा काव वा
बानछ ।

छानेका काम या मजदूरी । छाया
के लिये ऊपकी बनावट ।

छासा—(सं पुं) छाति ।
छतरी ।

छाती—[सं स्त्री] बूझ, क्षम,
छन, गाश्ज ।

वक्षःस्थल । हृदय । स्तन । साहस ।

छादन—[सं पुं] आवरण, काटोब ।
आवरण । छिपाव । कपड़ा ।

छाननी—(क्रि स) छेका, छानि-
आदि छोड़ा ।

चलनी से तरल पदार्थ वा चूर्ण
चालना । परखना । कोई चीज
ढूँढने के लिये अच्छी तरह
देखना भालना । नशा पीना ।

छानना—(सं स्त्री) छाननी ।
चलनी ।

छानबीन—(सं स्त्री) विचार-
बौछब, अश्मकान ।

अच्छी तरह जाँच पड़ताल ।
गहरी खोज ।

छाना—(क्रि स) छानन दिशा ।
ढकना । छाया के लिये कोई

वस्तु तानना या फैलाना ।

[क्रि अ] बिगनि परा, तबू
डबि थका ।

फैलना । डेरा डालकर रहना ।

छानो—(सं स्त्री) छागना ।

छप्पर ।

छाप—(सं पुं) छाव, छिड़,

मनव उपरत अछाव ।

मुद्रा । छापने से पड़ा हुआ चिह्न ।

मन पर प्रभाव । निशान, चिह्न ।

कविता के अन्त में रहनेवाला
कवि का उपनाम ।

छापना—(क्रि स) छपा कृता ।

मुद्रित करना छप्पे से निशान
डालना ।

छापा—(सं पुं) गोंठ, मोहर,

अतकिते होवा आक्रमण ।

ठप्पा । मुहर । छप्पे या मुहर से

अंकित चिह्न । अचानक बेखबर
लोगों पर होनेवाला आक्रमण ।

छाणमार—[सं पुं] अतकिते

आक्रमणकारी ।

अचानक हमला करनेवाला ।

छाबड़ी—[सं स्त्री] मिठाईवानाव

डांडव काँशी ।

खोमचा ।

छायापथ—(सं पुं) शशीपति ।

आकाश गंगा ।

छायाबाद—[सं पुं] दिनी कविताव

एटि शारा ।

हिन्दी कविता की वह धारा

जिसमें प्रकृति में चेतनता का

दर्शन करते हुए उससे अवलम्ब

आत्मीय सम्बन्ध की स्थापना हो ।

छार—(सं पुं) छाई, शार, कना-

शार ।

राख । खारा नमक । वनस्पतियों

या वातुओं की राख का नमक ।

धूल ।

छाल—[सं स्त्री] शृङ्ख वाकनि ।

वृक्ष का बल्कल ।

छाला—(सं पुं) शशि छाल ।

शानी बाला ।

ऊपरी छाल या चमड़ा ।

फफोला ।

छाबनी—[सं स्त्री] शरव छान,

गैनाव शोडेनि ।

छप्पर । पड़ाव । सैनिक पड़ाव

या अड्डा ।

छि, छो—[अव्य] छिः छिः

[घृणा शृटक शब्द]

घृणा तिरस्कार आदि सूचक

शब्द ।

छिगुनी—(सं स्त्री) केका आङ्गनि

कनिष्ठिका उँगली ।

छिछला—[वि] उवाः, अगडीव ।

कम गहरा । उथला ।

छिछोरा—(वि) झूझ, गंकीर्ण,
लोडी ।

झुझ । ओछा । लालची ।

छिटकना—(क्रि अ) गिँटवति दे
थका, छिटकि पवा ।

बिसरना ।

(क्रि स) गिँटवति करि
दिया ।

बिसेरना ।

छिड़कनु—(क्रि स) छटियाई
दिया ।

पानी आदि के छीटे डालना ।

छिड़काव—(सं पुं) छिटिकनि,
गिँकन ।

पानी आदि छिड़कने की क्रिया
या भाव ।

छिड़ना—(क्रि अ) आवञ्च होवा ।
आरम्भ होना ।

छितराना—[क्रि अ] गिँटवित
होवा ।

बिसरना ।

(क्रि स) बिगनि पाई पेलावा ।
फैलाना ।

छिड़ना—[क्रि अ] छिड़ कवा,
बिछा कवा, झूटोवा ।

छेदा जाना । धायल होना ।

धुसना ।

छिनकना—[क्रि स] गेडून
पेलावा ।

जोर से सांस छोड़कर नाक साफ
कड़ना ।

छिनाक—(वि) बाँझाबिनी, बेन्ना ।
व्यभिचारिणी । कुलटा । व्यभि-
चारी ।

छिनाका—[सं पुं] बाँझाव ।
व्यभिचार ।

छिपकली—(सं स्त्री) जेठो ।
छोटा गिरगिट । विस्तुइया ।

छिपना—(क्रि अ) नुकाई थका ।
दिसाई न पड़ना ।

छिपाना—(क्रि स) नुकाई थोवा ।
गुप्त करना ।

छिपाव—(सं पुं) नुकाई थोवा
कार्य ।

छिपाने की क्रिया या भाव ।

छिलका—(सं पुं) बाकनि ।
फल आदि का आवरण । ऊपरी
परत ।

छिलना—(क्रि अ) बाकनि एबोवा ।
छिलका अलग होना । ऊपरी
चमड़ा उठ जाना ।

छीक—[सं स्त्री] शींठि ।

नाक में कुछ अटकने पर वायु का
जोर से निकलने की क्रिया ।

झीकना—(क्रि स) शैछि बरा ।

झीक निकालना ।

झीका—[सं पुं] निक्किआ, मुक्क-
बरा ।

सिकहर । बैलों के मुंहपर बंधा

जानेवाला जाल ।

झोंटा—[सं पुं] पानीर कपिका,

मांसावरण बरगुण, बाइ कथा ।

जल-कण । हलकी वृष्टि ।

व्यंगपूर्ण उक्ति । बूंद की तरह

दाग ।

झींभी—[सं स्त्री] मटबर छेँई ।

मटर की फली ।

झीझालेदर—(सं स्त्री) झुदगा,

लटि-वाटि ।

दुर्दशा ।

झीजना—(क्रि अ) यहेनि थाई

कय होबा ।

काम में आने या रगड़ खाने से

वस्तु का कम होना ।

झीनना—(क्रि स) काछि लोबा ।

जबर्दस्ती लेना । हरण करना ।

झीनाझपटी—[सं स्त्री] टना

आँखाबा ।

लीन कर लेने की क्रिया या

माद्य ।

झीपा—(सं पुं) बाहर डाडक

वावि, गछर डाल ।

बांस आदिका बड़ा डला । थाली ।

झीर—[सं पुं] बीर, गाबीर,

पानी ।

झीर । दूध । जल ।

झीलना—[क्रि झ] बाकलि

छुटोबा ।

झिलका उतारना ।

छुड़ाना—(क्रि स) नर्ण करोबा ।

छुलाना स्थान करवाना ।

छुट—[अव्य] बाहिरे, बाजे ।

छोड़कर । सिवा ।

छुटकारा—(सं पुं) बेशाई, मुक्ति ।

रिहाई । छुट्टी ।

छुट्टा—[वि] मुकलि, अकल-

नबीया, खुदूबा ।

जो बंधा न हो । अकेला ।

स्वतंत्र ।

छुट्टी—(सं स्त्री) छुटि, आखवि,

बद्ध दिन ।

छुटकारा । अवकाश । काम बन्द

रहने का दिन ।

छुड़वाना—[क्रि स] अगवा ।

छोड़ने में प्रवृत्त करना ।

छुबाना—[क्रि अ] गम्बाई जना,
गंदछात कबा, दिउँते कय
कबा ।

बंधन या उलझन से मुक्त करना ।
साफ करना । पद या अधिकार
से अलग करना । कुछ देते समय
उसमें कमी कराना ।

छुतहा—(बि) गंक्रामक ।
संक्रामक (रोग) ।

छुतिहा—[बि] गंक्रामक, अस्पृश्य ।
संक्रामक । अस्पृश्य ।

छुपना—[क्रि अ] नुकोबा ।
छिपना ।

छुटा—(सं पुं) डाँडव छुरी, खुर ।
बड़ी छुरी । उस्तरा ।

छुटी—(सं स्त्री) छुरी ।
चाकू ।

छुलाना, छुबाना—[क्रि स]
स्पर्श कबा ।
स्पर्श कराना ।

छुहारा—(सं पुं) एविध डाँडव
धेछुर ।
एक प्रकार का खजूर ।

छू—[सं पुं] मञ्ज माति कू माबोते
होवा शब्द ।
मञ्ज पढ़कर फूँ मारनेका शब्द ।

छूआ-छूत—(सं स्त्री) अस्पृश्यता ।
अस्पृश्यता ।

छूई मूई—[सं स्त्री] नाछुकी-
मता ।
लज्जावती नामक पोषा ।

छूछा—(वि) शूणा, जगाव ।
खाली । निरमार । निर्धन ।

छूट—(सं स्त्री) मुक्ति, बेहाई,
डून कोनो काबने पोबा
शाहीनता ।

छुटकारा । गलती, चूक । किसी
बात या कार्य की स्वतन्त्रता ।
रियासत ।

छूटना—(क्रि स) मुछ होबा,
पृथक होबा, अबांशति
पोबा ।

मुक्त होना । अलग होना ।

छूत—(सं स्त्री) गंगर्ग, अस्पृश्य,
गंगर्ग वा लोँछबा बाग ।
स्पर्श । गन्दी रस्तु या रोग का
संस्पर्श ।

छूना—(क्रि स) स्पर्श होबा ।
स्पर्श होना ।
(क्रि स) स्पर्श कबा ।
स्पर्श कराना ।

छेकना—(क्रि. स.) चोट खना ।

आगछि खना ।

स्थान घेरना । न जाने देना ।

छेड़—(सं. स्त्री) आगनि, रूपता-
रूपति ।

किसी को चिढ़ानेवाली बात ।

भगड़ा । कोई कार्य आरम्भ
करना ।

छेड़खानी, छेड़धाड़—(सं. स्त्री)
रूपता-रूपति । डेढ़ छानि ।

किसी को छेड़ने या चिढ़ाने की
क्रिया या भाव ।

छेड़ना—(क्रि. स.) आगनि दिना ।
ठाँठो करना ।

तंग करना । विरोधी को
चिढ़ाना । मजाक करना ।

छेत्र—(सं. पुं) क्षेत्र, पथार ।
क्षेत्र । खेत ।

छेद—[सं. पुं] छेदन, विनाश,
विका, पोष ।
छेदन । विनाश । छिद्र । बिल ।
दोष ।

छेदना—(क्रि. सं.) विका करना, वा
करना, कटो ।
छेद करना । घाव कर देना ।
काटना ।

छेना—(सं. पुं) छेना ।

फाड़ा गया दूध जिससे पानी
निकाल कर मिठाईयाँ बनती है ।

छेनी—[सं. स्त्री] गिन, मो,
आदि काटिबब अन्न ।

पत्थर, लोहा आदि काटनेका एक
औजार ।

छेरी—(सं. स्त्री) छागली ।
बकरी ।

छेब—(सं. पुं) धून-बखम ।
क्षत । नाश । जोखिम ।

छेह—(सं. पुं) क्षरण, विघ्न,
अस्तु ।

ध्वंस । वियोग । अन्त ।

छैल, छैल-चिकनिया, छल छबीला,
छैला—(सं. पुं) आटक धूनीया
लोक ।

बना ठना सुन्दर युवक ।

छैलाना—(क्रि. अ.) बाल-मूलभ
बावशाव करना ।
लड़कों का कोई चीज लेने के
लिये हठ करना ।

छोकरा, छोकड़ा—(सं. पुं) लंबा ।
लड़का ।

छोकरी, छोकड़ी—(सं. स्त्री)
छोबाली ।
लड़की ।

छोटा-- (वि) गुरु ।

क्षुद्र । आकार में कम । उम्रमें कम ।

छोड़ना--(क्रि स) एवि दिया ।

पवित्राग करा । बन्दूक मरा आदि

बंधन से मुक्त करना । परित्याग

करना । न लेना । चल पड़ना ।

गोला दागना ।

छोड़वाना, छोड़ाना--[क्रि स] मुक्त

करवाना । पवित्राग करवाना ।

बन्दूक आदि मरवाना ।

मुक्त करवाना । परित्याग कर-

वाना । गोला दागवाना ।

छोपना--[क्रि स] डाँठ बन्द

अलपे दिया ।

गाढ़ा वस्तु लेप करना ।

छोमना-- [क्रि अ] छूक वा छूक

होना ।

क्षुब्ध होना ।

(क्रि स) थं डोला ।

क्षुब्ध करना ।

छोर--(सं पुं) पाव, मूव, कैलि ।

सिरा । किनारा । नोक ।

छोरा-छोरी-- (सं स्त्री) टना-

बाँझोवा । . . .

झीना-झपटी ।

छोह--(सं पुं) धेय, पया ।

प्रेम । दया ।

छौंकना--[क्रि स] डेलनि मरा ।

गड्ढार दिया ।

तेल आदि से बघारना ।

[क्रि अ] आक्रमण हेतु अपिमाई

परा ।

वार करने के लिये झपटना ।

छौना--(सं पुं) जडवर पोतानि ।

पशु का बच्चा ।

छौलदारो--(सं स्त्री) एविथ गुरु

डबू ।

एक प्रकार का छोटा तम्बु ।

छौर-- (सं पुं) कोव-कर्म, मुण्डन ।

छौर क्रिया । मुण्डन ।

ज

ज—वाञ्छन वर्णमालाव अष्टम आक्षर ।

ष वर्ग का तीसरा अक्षर ।

जंग—[सं स्त्री] युद्ध ।

युद्ध ।

(सं पुं) गायक ।

लोहे का मुरचा ।

जंगम—(वि) अश्वत्थ, छत्र ।

चलने फिरनेवाला ।

जंगला—(सं पुं) बिड़की ।

सिड़की ।

जंगली—(वि) वनबीश ।

जंगलमें रहनेवाला या होनेवाला ।

जिसमें जंगल हो ।

जंगी—(वि) युद्ध गश्कीय, गायबिक ।

लड़ाई से सम्बन्ध रखनेवाला ।

फौजी ।

जंघा—(सं स्त्री) कूबड ।

जाँघ ।

जँचना—(क्रि ज) निरीक्षण

करा, मनउ मगा ।

जाँचा जाना । अच्छा लगना ।

जंजाली—(वि) आश्चर्योद्गा ।

भ्रंश उत्पन्न करनेवाला ।

जंजीर—[सं स्त्री] शिकल ।

कड़ियों की लड़ी, बेड़ी, सिकड़ी ।

जंतर—[सं पुं] यज्ञ, ताविल ।

यन्त्र । गले या हाथ में पहनने

का पीतल आदि की छोटी सी

डिब्बी जिसमें तांत्रिक विधि की

कोई चीज भरी रहती हो ।

जंतर-मंतर—(सं पुं) यज्ञ-यज्ञ,

याशुविद्या ।

यन्त्र-मन्त्र । जादू-टोना । बेध-

शाला ।

जँसरी—(सं स्त्री) गोपाविन

एविष अन्न, अक्षिका ।

पतला तार खींचने का औजार ।

पंचाग ।

जँतसार—(सं पुं) जँड थका

ठाँड़े ।

वह स्थान जहाँ जाता गड़ा रहता

है ।

अं—(सं पुं) कावटी धर्म अं ।

पारसियों का धर्म ग्रन्थ ।

अंबु, अंबू—(सं पुं) आमु ।

जामुन ।

अंबुक—(सं पु) डांडव आमु,

भियाल ।

बड़ा जामुन । शृगाल ।

अंबूरा—[सं पु] एविश शिटेन,

एविश अश्रु ।

एक प्रकार की छोटी तोप ।

चिमटी की तरह का एक

औजार ।

जँभाई—(सं स्त्री) शनि ।

उबासी ।

जँभाना—(क्रि अ) शमिषा ।

जँभाई लेना ।

जई—(सं स्त्री) यव धान ।

जौ की तरह का एक पौधा ।

जकड़—[सं स्त्री] टोनि बद्धा

कार्य ।

जकड़ने की क्रिया या भाव ।

जकड़ना [क्रि स] टोनि बद्धा ।

कसकर बाँधना या पकड़ना ।

(क्रि अ) जठर होना ।

अंगों में तनाव होना ।

अक्कात—(सं स्त्री) दान, कर ।

दान । कर ।

अक्कमी—(वि) चाशत ।

चायल ।

अक्कीरा—(सं पुं) गन्धु, गन्धटे ।

ढेर । समुह ।

अग—(सं पुं) अगत ।

संसार ।

(वि) आशत ।

आगत ।

अगत—(सं पुं) गन्ध, गन्धि ।

संसार ।

(सं स्त्री) नादर उपरब

चाल ।

कुएँ के ऊपर का चबूतरा ।

अगना—[क्रि अ] गाव पोवा,

गावधान होना, ठक् बाई उठा ।

जागना । सावधान होना ।

चमकना ।

अगमग (१)—(वि) अक-अकीश

चमकीला ।

अगमगाना—(क्रि वि) अक-अक

करा ।

खुब चमकना ।

अगह—(सं स्त्री) ठाँह, अविष,

पद ।

स्थान । मोका । पद ।

जगाना—(क्रि. स) जगोवा,

जगोई दिया ।

जाग्रत करना ।

जघन—(सं पुं) निभ, तलपेट ।

पेड़ । चूतड़ ।

जच्छा—(सं स्त्री) अश्रुति ।

प्रसूता स्त्री ।

जजिया - [सं पुं] पण, जिजिया
कर ।

दण्ड । मुसलमानी राज में अन्य
धर्मावलम्बियों पर लगानेवाला
एक प्रकार का कर ।

जटना—[क्रि अ] ठगोवा ।

ठगना ।

(क्रि स) बांध बंटावा, बंछित
करा ।

जड़ना ।

जठर—(सं पुं) पेट ।

पेट का भीतरी भाग ।

[वि] बुझा, कठिन ।

बुढ़ा । कठिन ।

जठराग्नि—(सं स्त्री) पेट के अंग
वस्तु को जलानेवाला अग्नि ।

पेट की अन्न पचानेवाली गरमी ।

जड़कना—[क्रि अ] खूब होवा ।

स्तब्ध हो जाना ।

जड़ना—(क्रि स) बंछित करा ।

एक चीज में दूसरी चीज इस
तरह बैठाना जिससे वह जल्दी
उखड़ या निकल न सके ।
मारना । चुगली खाना ।

जड़ाई—(सं स्त्री) बंछित करा

बागवत बानस ।

जड़ने की मजदूरी ।

जड़ाऊ—(वि) बांध वा बंध बंछित

जिसपर नगीने या रत्न जड़े हों ।

जड़ी—(सं स्त्री) द्रव्य वा वस्तु

लता, शिंपा आदि ।

वनस्पति की वह जड़ जो ओषधि
के काम आती हो ।

जड़ोभूत—(वि) अचानक होवा,

छेदबंटा लगा ।

जो जड़के समान हो गया हो ।

जड़ैया—[सं स्त्री] मेलबोया ।

कंपि कंपि उठा खड़ा ।

शीत लगकर मानेवाला बुखार ।
मलेरिया ।

जतलाना, जताना—(क्रि स)

कोवा, जनाई थोवा ।

बतलाना । पहले से सूचना देना ।

जत्था—(सं पुं) मनुष्य, मल ।

मनुष्यों का झुंड । दल ।

कहुराई (स) — (सं पुं) जन्म ।

जीकृष्ण ।

जनसा — (वि) नपुंसक ।

नपुंसक ।

जनना — (क्रि स) अन्न दिया ।

जन्म देना ।

जनमना — (क्रि स) अन्न लोवा ।

जन्म लेना ।

जनम-संघाती — (सं पुं) अन्नगर्भ ।

जन्मसाथी ।

जनबासा — (सं पुं) अतिथिना ।

लोगोंके या बरातियों के ठहरने

या टिकने का स्थान ।

जनस्थान — (सं पुं) दण्डकावण,

वगति भूमि ।

दण्डकारण्य । मनुष्यों का निवास

स्थान ।

जनाजा — [सं पुं] मवा न निरा

ठाडी ।

अरथी । शंवाधार ।

जनानखाना — (सं पुं) अस्त्रगुह ।

अन्तःपुर ।

जनाना — (क्रि स) अन्न कबोवा,

जाननी दिया ।

सन्तान प्रसव कराना । सूचना

देना ।

(वि .) आ गच्छीय ।

ह्वा-सम्बन्धी ।

(सं पुं) नपुंसक, अस्त्रगुह,

पञ्जी ।

नपुंसक । अन्तःपुर । पत्नी

जनाब — (सं पुं) महोदय ।

महोदय ।

जनु — (क्रि वि) येन ।

मानो ।

जनून — (सं पुं) पागलपत,

उन्मादना ।

पागलपत । उन्माद ।

जनेऊ — (सं पुं) लक्षण ।

यज्ञोपवीत ।

जन्म-कुंडली, जन्म पत्री — (सं स्त्री)

अन्नपत्र, कोष्ठी ।

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

सूचक चक्र ।

जन्म पंजी — [सं स्त्री] अन्न गन्थाव

शिष्टाप-वशी ।

जन्म का हिमाव दर्ज करने की

पंजी ।

जन्म सिद्ध — (वि) आकृतिक, अन्ना-मात्रे

आप्त । जन्म मात्र में प्राप्त ।

अन्य — (सं पुं) राष्ट्र, जन-गोशाल ।

राष्ट्र । साधारण मनुष्य ।

(वि) राष्ट्रीय, जनगोशाल-

जन्मकीय ।

जनसम्बन्धी । राष्ट्रीय । किसीसे उद्भूत ।

जपना—(क्रि स) जप करना ।

जप करना ।

जपनी—(सं स्त्री) जप माला ।

जपमाला

जपा—(सं स्त्री) जवा कूल ।

मड़हुल ।

(सं पुं) जप-कबोता ।

जपनेवाला ।

जब—(क्रि वि) যেতিয়া ।

जिस समय ।

जबड़ा—(सं पुं) ग़ातब आनू ।

मुंह में ऊपर नीचे की वे हड्डियाँ

जिसमें दाँत लगे रहते हैं ।

जबरदस्त—(वि) बलवान, मजबूत

बलवान । मजबूत ।

जबरदस्ती—(सं स्त्री) ज़ोर-पूर्वक

करा काम । बलकाब ।

बलप्रयोग । अत्याचार ।

(क्रि वि) ज़ोर पूर्वक ।

बलप्रयोग करते-हुए ।

जबड़—(सं पुं) शाला ।

गला काटकर प्राण लेनेकी क्रिया ।

जबान—(सं स्त्री) जिह्वा, कथा,

भाषा ।

जीम । बात । भाषा ।

जबान दराज—(वि) कपकपी, कपडा
छकी ।

बढ़ चढ़कर बातें करनेवाला ।

जबानी—[वि] मौखिक ।

मौखिक ।

जब्त—(वि) बाधेशांश, आटेक ।

सरकार द्वारा छीना हुआ ।

जब्तो—[सं स्त्री] बाधेशांश करा

कार्य ।

जब्त होने की क्रिया या भाव ।

जभी—[क्रि वि] যেতিয়াই ।

जिस समय ही । ज्योंही ।

जमघट—(सं पुं) ग़ाज़ब ग़मा-

ग़म, लोकाबया ।

मनुष्यों की भीड़-भाड़ ।

जमना—[क्रि अ] गोटे मवा । गोटे

धोवा, झुलने में ग़माया होवा ।

तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा

हो जाना । स्थिर या निश्चल

होना । जमा होना । काम अच्छी

तरह सम्पन्न होना ।

[क्रि अ] अक़ुबित होवा ।

उगना । उपजना ।

जमाई—(सं पुं) ज़ोराई ।

दामाद ।

[सं स्त्री] गोटे मवावा कार्य

वा प्राविश्रमिक ।
जमाने की क्रिया या मजदूरी ।
जमात— [सं स्त्री] जन-गमूह,
धनी ।
मनुष्यों का समूह । श्रेणी ।
जमानत [सं स्त्री] जामिन ।
जामिन होने की क्रिया या धन ।
जमाना— [क्रि स] जमावा, गौंटे-
गवावा ।
'जमाना' का प्रेरणार्थक ।
(सं पुं) गमन, काल, युग ।
समय । काल । मुद्दत । गौरव
के दिन ।
जमीन— [सं स्त्री] गाँटि ।
पृथ्वी । भूमि । आधार पृष्ठ ।
जमुझाना— [क्रि अ] शमिशा ।
जम्हाई लेना ।
जमोगना [क्रि स] आग्र-वाग्र
निवीक्षण कर्ता ।
आय व्यय की जाँच करना ।
जमीआ (वि) सूता वा ऊनव
(कबल विशेष)
सूत-या ऊन जमाकर बनाया हुआ
[कम्बल आदि ।]
जुझाना— [क्रि स] शमिशा ।
जम्हाई लेना ।

जयमात— [सं स्त्री] जय माला,
वव-माला ।
विजय माला ।
जरठ— (वि) ऋठाव, बूढ़ा, पुराना
कठोर । बुढ़ा । पुराना ।
जरद, जर्द— (वि) शानक्षीया ।
पीला । पीत ।
जरब— (सं स्त्री) आघात, बा
धन ।
आघात । चोट । गुणा ।
जरबीला— (वि) धुनीया, सूठाव ।
भड़कीला ।
जरर— (सं पुं) शनि ।
हानि । आघात ।
जरा— (सं स्त्री) युद्ध-काल ।
बुढ़ापा ।
[वि] अलप ।
थोड़ा । कम ।
जरूरत— [सं स्त्री] आवश्यकता ।
आवश्यकता ।
जर्जर (वि) जर्ज्वित, क्षीर्ण,
वृद्ध ।
जीर्ण । क्षण्डित । वृद्ध ।
जल-कर— (सं पुं) पानीत उत्पन्न
वस्तु व उपवत नगोवा कर्ता ।
पानीमें उत्पन्न होनेवाले वस्तुओं
पर का कर ।

जल-उमरु मध्य—(सं पुं)

श्वाली ।

दो समुद्रों या खा : के बीच
की प्रणाली ।

जलतरंग—(सं पुं) एविश वादा
यज्ञ ।

एक प्रकार का बाजा ।

जलद—(सं पुं) येष । इतांश्च
अलपान क्रिया करेता वंशज ।
मेघ । वाला वंशज ।

जलधि, जलनिधि—(सं पुं)
गार्गन ।

समुद्र ।

जलन—(सं पुं) दाह, पोषण ।

दाह । ईर्ष्या के कारण मानसिक
कष्ट ।

जलना—[क्रि अ] दग्ध होना,
क्षीणित होना ।

दग्ध होना । अग्निमें अंग भुलस
जाना । ईर्ष्या के कारण मनमें
दुखी होना ।

जलपना—[क्रि अ] वक् वक् कना ।
बकवाद करना ।

जलमार्ग—(सं पुं) जल पथ ।
नदियों, नहरों आदि के रूपमें
बना हुआ रास्ता ।

जलयान—(सं पुं) नाव, वाहक
आदि ।

जलमें चलनेवाला यान ।

जलयाना—[क्रि स] दग्ध करना ।
दग्ध करवाना ।

जल विहार—(सं पुं) खेल-
केलि ।

जल क्रीड़ा ।

जल-समाधि—(सं स्त्री) पानीत
द्रवि भवा ।

पानी में डूबकर मर जाना ।

जलसा—(सं पुं) विच्छिन्नार्थान ।
गाने बजाने का समारोह । समा-
समिति का बड़ा अधिवेशन ।

जलसाई—(सं पुं) श्रमण ।
श्मशान ।

जलसेना—(सं स्त्री) नौ-
सेना ।

समुद्र में जहाजों पर से लड़ने
वाली फौज ।

जलांक—[सं पुं] कागधत
पानीत अङ्कित चित्र
अंकित चित्र ।

जलकी सहायता से कागज पर
बनाया विशिष्ट प्रकार का चित्र
या अंकन ।

अज्ञातक—[सं पुं] बन डीठि ।
बलिग्न बुरबुर, निग्नान आशिरे
धोबाब पना होबा बोत्र ।
पानी देखकर डर लगनेवाली
बीमारी जो कुरोके काटने से होती
है ।

अज्ञाना—[क्रि स] बध्द करा ।
अञ्जलित करा, बैरा अग्नावा ।
दुग्ध करना । प्रज्वलित करना ।
मनमें सन्ताप या ईर्ष्या उत्पन्न
करना ।

अज्ञावन—[सं पुं] धवि ।
ईधन ।

अज्ञावर्त—[सं पुं] प्राणीव टाक-
नैया ।
पानी का भँवर । नाल ।

अज्ञस, जुद्धस—[सं पुं] शोभा-
यात्रा ।
शोभा यात्रा ।

अज्ञेयी—(सं स्त्री) जिलापि ।
एक प्रकार की मिठाई । कुंडली ।

अज्ञोदर—[सं पुं] शोथ, एविष
पेटिव वेमार ।
पेट की एक बीमारी ।

अज्ञौका—[सं पुं] ज्ञोक ।
जोंक ।

अज्ञु, अज्ञी—(सं पुं)

उठाटेडरा ।

धीघता ।

(क्रि वि.) शोणकाले, तडा-
तेडाटेक ।

धीघ । तेजीसे ।

अल्प—(सं पुं) कथकी, कथा-
छरकी ।

बहुत अधिक बोलना । बकवाद ।
प्रलाप ।

अवान—(वि) डुरक, वीर ।
युवा । वीर ।

अवानी—[सं स्त्री] योवन ।
योवन ।

अवाब—(सं पुं) उडव, डुलना,
टाकवि योवाब आछा ।
उत्तर । तुलना । जोड़ ।

अवाबदेह—(वि) उडववाग्नी ।
उत्तरदायी । जिम्मेदार ।

अवाबी—[वि] अवाबख ।
अवाब का ।

अवारा—(सं पुं) यदधानव
गैषालि ।
जो के नये निकले अंकुर ।

अवाल—(सं पुं) अवनति,
अज्ञान ।
अवनति । अज्ञान । अंशट ।

जवाहर—(सं पुं) वस्त्र, यन्त्र ।

रत्न । मणि ।

जवाहरास—[सं पुं] वस्त्रवाणि ।

रत्नों का समूह ।

ज्वरान—(सं पुं) विच्छिन्नाशुक्रान् ।

नृत्य गीत का समारोह । जलसा ।

जसोदा—(सं स्त्री) यशोदा, नल

बच्चाव प्रेमी ।

यशोदा ।

जँह, जहाँ—(क्रि वि) यत्, वि

ठाईत ।

जिस स्थानपर । जिस जगह ।

जहँङना—[क्रि अ] लोकछान

होना । ठँग बीबा ।

घाटा उठाना । ठगा जाना ।

[क्रि स] ठेगोना, कैंकि दिया ।

घोला देना । ठगना ।

जहविया—[सं पुं] कब आकाश

करेगा ।

जगात या कर वसूल करनेवाला ।

जहङ्गुम—[सं पुं] नबरक ।

नरक ।

जहमत—[सं स्त्री] विपद, विटन ।

मुसीबत । झंझट ।

जहर—(सं स्त्री) विष ।

विष । बहुत अधिक अश्रिय

बात या काम ।

(वि) बाढक, शनिकारक ।

बातक । बहुत हानि पहुँचानेवाला ।

जहरबाद्—(सं पुं) कौशेबा ।

एक तरह का फोड़ा ।

जहरी (झा)—(वि) विबाध ।

विषेला ।

जहाजी—(वि) वाशेष गश्कीय ।

बहाज सम्बन्धी ।

जहाद्, जिहाद्—[वि.] धर्म युद्ध ।

धर्मयुद्ध ।

जहान—[सं पुं] जगत् ।

संसार ।

जहीं—(अ व्य) बँटतेई ।

बहाँ ही ।

जौगर—[सं पुं] भावीक भक्ति ।

शरीर का बल, बूता ।

जौंच—(सं स्त्री) कबड्डी ।

जंघा । राव ।

जौंचिया—[सं पुं] जाडिया ।

काष्ठा । पेंट ।

जौंच—(सं स्त्री) प्रवीक ।

विबीकष, अन्नगन्धान ।

जौंचने की क्रिया या भाव ।

अनुसन्धान । परीक्षा । खानबीन ।

जौंचक—[सं पुं] प्रवीक ।

जांच या परीक्षा करनेवाला ।

जौबना—(क्रि स) गवौका करा ।

ठिका करा ।

परीक्षा करना । मांगना ।

जौता—[सं पुं] खात ।

आटा पीसने की बड़ी चक्री ।

जा—[सं स्त्री] जा । देवरानी ।

(वि) उ९पन्न, गच्छत, नाड-
पायक ।

उत्पन्न । संभूत । मुनासिब ।

(सर्व) वि ।

जिस ।

जाग—[सं पुं] यज्ञ ।

यज्ञ ।

(सं स्त्री) ठाँड़े, जागबग ।

जगह । जागने की क्रिया या
भाव । जागरण ।

जागना—[क्रि अ] जाग्रत होना,
जगाग होना ।

जाग्रत होना । सजग या सावधान
होना ।

जाजिम—[सं स्त्री] कुलार पणिठा ।

कशं पर बिछानेकी छपी चादर ।

जाट—[सं पुं] एटा जाति ।

एक जाति ।

जाठ—(सं पुं) कुँशियाव पाल

आगिर मोटा काँठर चकवि ;

गुग्गुलीव नामक पौधा छाडर

धूँटा ।

वह मोटा डंडा जो कोल्हू की
कूँडी में लगा रहता है । तालाबके
बीच गड़ा हुआ मोटा डंडा ।

जाड़ा—[सं पुं] जाबकानि
जाब ।

शीतकाल । शीत ।

जातक—[सं पुं] शिष्य, ब्रूह-
जातक ।

बच्चा । बुद्धदेव के पूर्व जन्म
सम्बन्धी कथाएँ ।

जात-पाँत, जाति पाँति—[सं स्त्री]

जातिभेद ।

जाति भेद ।

जातरूप—[सं पुं] गोप ।
सोना ।

जाती—[सं स्त्री] एविष कुल ।

एक तरह का चमेली फूल ।

(वि) ब्राह्मण ।

व्यक्तिगत ।

जातुधान—(सं पुं) वाक्पत्र ।
राक्षस ।

जाड़ा—[वि] गङ्गान कपे अथा ।

सन्ताप के रूपमें उत्पन्न ।

जादूगर—(सं पुं) यादूकर ।

वह जो जादूके खेल करता हो ।

जादूगरी— (सं स्त्री) शास्त्रब
विद्या ।

जादूगर का काम या उसकी वृत्ति ।

जान— (सं स्त्री) जीवन, ज्ञान,
परिचय, गाव-पदार्थ ।

ज्ञान । परिचय । प्राण । सार,
तत्त्व ।

जानकार—[वि] छाता, विज्ञ ।
जाननेवाला । विज्ञ ।

जानदार— [वि] गजौद, बलवान ।
जिसमें जान हो । बलवान ।

जानना— (क्रि स) जना, बुझा ।
ज्ञान प्राप्त करना । समझना ।

जानवर—(सं पुं) प्राणी, पशु ।
प्राणी । पशु ।

जानहु—[अव्य] येन ।
मानो ।

जाना— (क्रि अ) यात्रा, बूझ
होना ।

गमन करना । गायब होना ।
नष्ट होना ।

[क्रि स] जन्म दित्ता ।
जन्म देना ।

जानी—[वि] आधार जीवनर जगत
गच्छ वात्सीता ।

जान का । जान से सम्बन्ध
रखनेवाला ।

जानु—(सं पुं) जाँटू, कबड्डी ।
घुटना । जाँघ ।

जापो—(सं पुं) जर्णोता ।
जपनेवाला ।

जान्ना—(सं पुं) नियम, कायदा-
कौशल ।

नियम । कायदा ।

जाम—[सं पुं] अश्व, शिग्रमा,
जायू ।

प्रहर । प्याला । एक प्रकार का
फल ।

(वि) गोटो गवा, गेन पत्ता ।
जमा हुआ । भीड़ के कारण बंद ।
मैल आदि के कारण दृढ़तापूर्वक
जमा हुआ ।

जामा—(सं पुं) पोशाक, शरीर ।
पोशाक । शरीर ।

जामाता—(सं पुं) जेठाई ।
दामाद ।

जामुन—(सं पुं) जायू ।
बैंगनी या काला रंग का एक
प्रकार का फल ।

जायका—(सं पुं) सोदाप ।
स्वाद ।

जायज—[वि] उचित ।
उचित । मुनासिब ।

आयजा—(सं पुं) चून्ना पर्वीका ।

उपहिंसि ।

जांच पड़ताल । हाजिरी ।

आयदाह—[सं स्त्री] गम्पडि ।

सम्पत्ति ।

आया—(सं स्त्री) पत्नी ।

पत्नी ।

(सं पुं) प्रुख ।

बेटा ।

आर—[सं पुं] पत्र-क्षीर जगत्

अशुचित गश्क बाटौता ।

पर स्त्री से अनुचित सम्बन्ध

रखनेवाला पुरुष ।

आरज—(सं पुं) अश्वा गछान ।

पर पुरुष से उत्पन्न सन्तान ।

आरण—(सं पुं) अटनावा ।

जलाना ।

आरन—(सं पुं) अरि ।

जलाने की लकड़ी । हंघन ।

आरी—[वि] अवाशित, अचलित ।

बहता हुआ । प्रचलित । चलता

हुआ ।

(सं स्त्री) शुक्रविजा स्त्री ।

दुश्चरित्रा स्त्री ।

आससाज, जासिया—[सं पुं]

अवकक, जान ।

घोखा देने के लिये झूठी कारंवाई करनेवाला ।

आस-साजी—(सं स्त्री) अवकना

रुबाव ढेष्टी ।

घोखा देने के लिये झूठी कारंवाई

करना या लेख तैयार करना ।

आसा—[सं पुं] मकबाब जान ।

कूत जान वक्ता । गाँठि डोण्ड कनह

मकड़ी का जाल । आस का एक

रोग । पानी रखने का मिट्टी का

बड़ा घड़ा ।

आसिम—[वि] अठाठाबी ।

जुलम या अत्याचार करनेवाला ।

आलो—(सं स्त्री) आनी ।

जाल जैसा छेदवाला कपड़ा या

चीज ।

[वि] नकली, ढेडजान ।

नकली । बनाबट्टी ।

जासु—(वि) याक ।

जिसको ।

जासूस—(सं पुं) गुश्तचर ।

गुश्तचर ।

जासूसी—(सं स्त्री) गुश्तचर

काव ।

जासूस का काम या भाव ।

(वि) गुश्तचर गश्कौश ।

जासूस का । जासूस सम्बन्धी ।

जाहिर—(वि) अकामित, अचाबित ।

प्रकट । स्पष्ट । विदित । प्रसिद्ध ।

जाहिरा—[क्रि वि] अकाण्ड ।

प्रकट रूपसे । प्रत्यक्ष में ।

जाहिरा—[वि] अत्यक्त, अकट ।

प्रकट ।

जाहिल—[वि] मूर्ख, अज्ञान ।

मूर्ख । अनपढ़ ।

जिद्गानी, जिद्गी—[सं स्त्री]

औदन ।

जीवन । आयु ।

जिदा—(वि) औचित ।

जीवित ।

जिदा-दिल—(वि) बडिगाल, बां-

छानी ।

सदा प्रसन्न रहने और हँसने-
हँसानेवाला ।

जिअरा, जियरा—(सं पुं)

शमय, अक्षुब ।

हृदय । प्राण ।

जिउतिया, जिताष्टमी—(सं स्त्री)

एक उठ ।

एक व्रत ।

जिफ्र—[सं पुं] उल्लेख ।

वर्षा ।

जिगर—[सं पुं] कनिष्ठा,

गाश्र ।

कलेजा । चित्त । साहस ।

जिगरी—[वि] आसुविक, नल-

गलेन गरी ।

आन्तरिक । अभिन्न । हृदय ।

जिब (ब)—[सं स्त्री] निरुपाय

अवस्था ।

बेबसी । समकाले का मार्ग
बन्द होना ।

[वि] निरुपाय ।

विवश । मजबूर ।

जितबा—(वि) विमान ।

जिस मात्रा या परिमाण का ।

(क्रि वि) विमानदेक ।

जिस मात्रा या परिमाण में ।

जिहो—(वि) जाँकोब-गोवा,

डेमाकि ।

हठी । दुराग्रही ।

जिघर—(क्रि वि) शिकाले ।

जिस ओर । जिस तरफ ।

जिन—(वि, सर्व) यि विनाक ।

‘जिस’ का बहु वचन ।

(सं पुं) जैन धर्म

तीर्थङ्कर, ब्रह्म, विष्णु,

भूतप्रेत ।

जैनों के तीर्थंकर । विष्णु । बुद्ध ।
 भूत, प्रेत ।
 जिनिस, जिन्स—[सं स्त्री] थकाव,
 बख, मन्त्र ।
 प्रकार । चीज । सामान ।
 अनाज ।
 जिप्सी—(सं पुं) एठो जाति ।
 एक यायावर जाति ।
 जिमाना—(क्रि स) डोहन
 कम्पावा ।
 भोजन कराना ।
 जिमि—(क्रि वि) येनटेक ।
 जैसे ।
 जिम्मा—(सं पुं) दायित्व, टोबा-
 येना ।
 दायित्व । देख-रेख । संरक्षा ।
 जिम्मेदार [बार]—[सं पुं] उखबदायी ।
 उत्तरदायी ।
 जियान—[सं पुं] शनि, लोकछान ।
 हानि । नुकसान ।
 जियारी—(सं स्त्री) जीवन,
 जीविका ।
 जिन्दगी । जीविका । वृत्ति ।
 जिरह—[सं स्त्री] जेबा, रुच ।
 हुज्जत । सत्यता की जाँच के

लिये की जानेवाली पूछ-ताछ ।
 कवच । बस्तर ।
 जिल्लाना—[क्रि स] जीवित
 कबा ।
 जीवित करना । पालन ।
 जिल्द—(सं स्त्री) रकबा, किठा-
 पत्र खण्ड ।
 चमड़ा । पुस्तकका मोटा आव-
 रण । पुस्तकका भाग या खण्ड ।
 जिल्द-बंद—(सं पुं) पथरी ।
 पुस्तकों का जिल्द बाँधनेवाला ।
 जिल्लत—(सं स्त्री) अपमान,
 झुमना ।
 अपमान । दुर्दशा ।
 जिस—(वि, सर्व) यि ।
 'जो' का विभक्ति युक्त रूप ।
 जिस्म—(सं पुं) शरीर ।
 शरीर ।
 जिहाद—(सं पुं) शर्म-शूक ।
 धर्म युद्ध ।
 जिह्वा—(सं स्त्री) जिह्वा ।
 जीभ ।
 जी—(सं पुं) मन, क्षय, आशय,
 गह्वर ।
 मन । दिल । हिम्मत । संकल्प ।
 (अव्य) वशाशय ।
 आदर सूचक शब्द ।

मुहा०—अच्छा होना—शरीर

सुस्थ होना ।

शरीर स्वस्थ होना ।

-खट्टा होना—विरक्ति भाव

जन्मा ।

मन में विरक्ति होना ।

-खलना—इच्छा होना ।

इच्छा होना ।

-दुखना—गनत कष्ट पोंना ।

मनमें कष्ट होना ।

-भरना—गठोरा पोंना, हेपाह

पल्लोरा ।

संतोष होना ।

जीजा—(सं पुं) भिनही ।

बड़ी बहन का पति ।

जीजी—(सं स्त्री) बाईदेउ ।

बड़ी बहन ।

जीत—[सं स्त्री] विजय, लाभ ।

विजय । लाभ ।

जीतना—(क्रि स) जयनाभ कवा ।

विजय प्राप्त करना । प्रतियोगिता

में विजयी होना ।

जीवा—(वि) जीवित । जीवित ।

जीन—(सं स्त्री) जेवाव जीन ।

बोटा कापोर ।

घोड़े की पीठ पर की गद्दी ।

एक प्रकारका मोटा सूती कपड़ा ।

जीना—(क्रि अ) जीराई थका ।

जीवित रहना ।

जीम—(सं स्त्री) जिभा ।

जिह्वा ।

मु०—खलना—सोबास चाबव ईच्छा

होना, कथा गजाई-पबाई

कोरा ।

स्वाद लेने की इच्छा होना ।

बढ़ चढ़ कर बार्ते निकलना ।

-हिलाना—कै पेलोरा ।

मुँह से कुछ कहना ।

-पकड़ना—मुथ चञ्चालि कथा

कोरा ।

बोलने न देना ।

जीमना—(क्रि स) भोजन कवा ।

भोजन करना ।

जीवट—(सं पुं) गायन ।

साहस । हिम्मत ।

जीवधारी—[सं पुं] प्राणी ।

प्राणी ।

जीवन-बूटी, जीवन मूरी—(सं स्त्री)

बृत्त गळोवनी ।

संजीवनी ।

जीवनोपाय—(सं पुं) जीविका

उपाय ।

आजीविका ।

जीवन्मुक्त—(वि) गंगावर बहव
पवा झुक ।

आत्मज्ञान होने के कारण संसार-
बन्धनों से मुक्त ।

जीवन्मुक्त—(वि) जीवित बलिष्ठ
शुद्ध मन ।

जीवित रहने पर भी मरे के
समान ।

जीवावशेष, जीवाश्म—[सं पुं]
आगैव ध्वस्तबिभूत अक्ष विधेय ।
जमीन के अन्दर प्राचीन युग के
प्राणियों के अवशेष ।

जीवी—(वि) किरा चरगाएँ कृषि
जीवाइ खाँकौता— कृषिजीवी,
चाकवि-जीवी ।

किसी जीविका से अन्न संस्थान
करनेवाला । प्राणधारी ।

जुकाम—(सं पुं) पानी नगी अन्ध ।
सर्दी ।

जुग—(सं पुं) घोड़ा, शूरा वा कान ।
जोड़ा । युग ।

जुग जुग—(कि वि) केवा शूरादेन,
छिदकान्देन ।

अनेक युगों तक । चिरकाल तक ।

जुगजुगाना—(कि अ) छिदक-
छाया कवा ।

टिम टिमाना । उमरना ।

जुगत—[सं स्त्री] शूरात, अंगवारण ।
बन्धी युक्ति ।

जुगती—[सं पुं] पवायर्णपाठा,
छत्र ।

युक्तियाँ निकालनेवाला ।
बालाक ।

जुगनूँ—[सं पुं] जोवाकी पम्पा ।
खद्योत ।

जुगवना, जुगाना— (कि. स)
गोठोवा, गरम कवा । गारवाने
बधा ।

संचित या इकट्ठा करना ।
सम्भाल कर रखना ।

जुगाली—[सं स्त्री] गोलना, बोरहन ।
पागुर ।

जुगुप्सा—(सं स्त्री) निम्ना, अक्षका,
शूरा ।

निन्दा । अक्षदा । घृणा ।

जुज—(सं पुं) अक्ष, अंग ।
अंन । अक्ष । कागज का पुरा
तस्ता ।

जुझाऊ— (वि) शूरा गवक्षीय ।
लैमिक ।

युद्ध सम्बन्धी । सैनिक ।

जुझार—[सं पुं] बोझा, शूरा ।
बोझा । लड़ाकू । युद्ध ।

जुटना—(क्रि व) नश्र नशी, एकत्र होना । एकावनतिराटक कामत धरा ।

जुड़ना । लिपटना । एकत्र होना । मिलना । दृढ़ता पूर्वक काम में लगना ।

जुटाना—(क्रि स) नश्र नशोवा, एकत्र करा ।

जोड़ना । लिपटाना । एकत्र करना । मिलाना । दृढ़ता पूर्वक काम में लगाना ।

जुठारना—(क्रि स) ठूरा करा । अपरिच्छिन्न करा ।

जुठा या उच्छिष्ट करना ।

जुड़ना—(क्रि अ) संयुक्त होना ।

एकत्र होना । ठेठा होना । संबद्ध होना । एकत्र होना । मिलना । ठंडा होना ।

जुड़वाँ—[वि] यँ ।

यमज (बन्ने)

जुड़वाना—[क्रि स] ठेठा करवाना ।

योवा दिठवा । योव करवाना । ठंडा करना । शान्त और सुखी करना ।

जुड़ाना—(क्रि अ) ठेठा होना ।

शान्त होना । छुब पना ।

ठंडा होना । शान्त होना ।

तुत होना ।

(क्रि स) योवा धिरा ।

जोड़ने का काम करना ।

जुतना—[क्रि अ] छूवि धिरा ।

गाढूवि धिरा ।

बैठ नादि का गाड़ी आदि में जोता जाना । किसी काम में परिश्रम पूर्वक लगना ।

जुतियाना—[क्रि स] जोतावे मरा, अनादर करा ।

जूते से मारना । अनादर करना ।

जुहा—[वि] बेलग, पृथक ।

बलग । भिन्न ।

जुहाई—(सं स्त्री) पार्षक्य ।

बलगाव । वियोग ।

जुन्हाई—[सं स्त्री] खान ।

चांदनी । चन्द्रमा ।

जुमला—[वि] गकला ।

सब ।

(सं पुं) सम्पूर्ण वाक्य ।

पूरा वाक्य ।

जुरमाना—(सं पुं) कविमना ।

अर्थ दंड ।

जुर्म—(सं पुं) अपराध ।

अपराध ।

जुरा—(सं पुं) वाज ठवाइ ।

शिकारी नरबाज पक्षी ।

जुर्गव—[सं स्त्री] बोजा, पात्र-
काया । मोजा । पायजामा ।
जुल्लाव, जुल्लाव—[सं पुं] छुलाप ।
गौलाप कूल ।
गुलाब । दस्तावर दवा ।
जुल्लाहा—[सं पुं] ठाँडी ।
कपड़ा बुननेवाला ।
जुल्फ, जुल्फी—[सं स्त्री] दीबल
हूनि ।
सिर के लम्बे बाल । पट्टा ।
जुल्म—[सं स्त्री] छद्म ।
अत्याचार ।
जुल्मी—[वि] छद्म वाक्य ।
अत्याचारी ।
जुलाना—[क्रि स] गच्छ्य करा ।
संचित करना । संयोजन ।
जुहार—(सं स्त्री) अडिवादन,
अपीन ।
अभिवादन । प्रणाम ।
जू—(सं स्त्री) उकनौ ।
बालों में होनेवाला एक कीड़ा ।
जू—[अव्य] मशानय ।
जी (सम्मान सूचक) ।
(वि) बि, वे ।
जो ।
[क्रि बि] घेनटेक ।
छेते ।

जूआ—[सं पुं] घुबलि, छूटाटन ।
बैलों के कन्धे पर रहनेवाली
गाड़ी आदि की लकड़ी । खूत
क्रीड़ा ।
जूजू—[सं पुं] कान्तेशावा ।
[शिखर उग्र बुढ़ा नाम]
एक कल्पित जीव ।
जूमना—[क्रि अ] काँझिया करा ।
लड़ना ।
जूट—(सं पुं) मूबर जटो, मवापाटे ।
जटा बंधन । लट । पटसन ।
जूठन—(सं स्त्री) उच्छिष्ट वा
एवशा आहार ।
उच्छिष्ट भोजन ।
जूठा—(वि) एवशा, दूरा, दूक ।
उच्छिष्ट । मुक्त ।
जूड़ा, जूरा—(सं पुं) शोपा,
ठिकनि ।
लपेट कर बँधी हुई सिर का
चोटी । पूला ।
जूड़ी—(सं स्त्री) नेलेबिया खर ।
मलेरिया बुलार ।
जूटी—[सं स्त्री] छेण्डल ।
चप्पल ।
जून—(सं पुं) गवत्र, बाँह ।
सम्ब । पास ।

जूष—(सं पुं) छूष, गमूश ।

यूथ । समूह ।

जूरना—(क्रि स) घोषा आक्रमण
करा ।

गड्डी या थाक लगाना ।

जूस—अं(सं पुं) खोल नग ।

पकी हुई चीज का रस । रसा ।

जूसी—(सं स्त्री) लाली ।

ईख के रस की गाढी तलछट ।

जूही—(सं स्त्री) युति कुल ।

एक सुगन्धित फूल ।

जूष—[सं पुं] शशि ।

जम्माई ।

जैवना—(क्रि स) आशय कबा,
आश्चर्य कबा ।

भोजन करना । हड़पना ।

जै—(सर्व) यिवोव ।

‘जो’ का बहु वचन ।

जेह, जेड़े, जो—(सर्व) यि ।

एक सम्बन्ध वाचक सर्वनाम ।

(अव्य) यदि ।

यदि ।

जेठ—(सं पुं) जेठ मास, जेठा-
देठे ।

ज्येष्ठ महीना । पतिका बड़ा भाई ।

जेठा—(वि) अव्यय, गर्वोद्धत ।

अग्रज । सबसे अच्छा ।

जेठानी—(सं स्त्री) जाडव-वा ।

पतिके बड़े भाई की पत्नी ।

जेतिक, जेतो—[क्रि वि] यिमान ।
जितना ।

जेते—(वि) यिमानवोव ।

जितने ।

जेब—(सं स्त्री) जेप, मोना ।

कुरते आदि की पाकिट ।

जेब कट—(सं पुं) जेप-कटा-
छाव ।

पाकिटसार ।

जेबी—[वि] जेपत लव पवा
(गक) ।

जेब में रखने लायक छोटा चीज ।

जेर—(वि) पवाउ ।

परास्त । दबाया हुआ आदमी ।

जेबर—(सं पुं) अलकाव ।

गहना ।

जेहन—[सं पुं] बुक्ति, बुझा शक्ति ।
बुद्धि । समझ ।

जेहि—[सर्व] शक, शक शक ।

जिमको । जिससे ।

जैनी—[सं पुं] जैन मतान्वयी ।
जैन मतावलम्बी ।

जैसा—(वि) येनकुरा, तुल्यार्थत ।

जिम प्रकार का । जितना ।

तुल्य ।

(क्रि वि) विमान ।
जितना ।

जैसे—(क्रि वि) बि पट्ट ।
जिस तरह ।

जोंक—(सं स्त्री) षोकर ।
पानी में रहनेवाला खून, नुसने
वाला एक कीड़ा ।

जोड़—[सं स्त्री] पत्नी ।
पत्नी ।
[स्त्री] बि ।
जो ।

जोखना—[क्रि अ] जोखी, ढंखन
करा ।

तोलना । जाँचना ।

जोखिम—(सं स्त्री) आशंका ।
विषय ।

खतरा । खतरे की सम्भावना
की स्थिति ।

जोग—(सं पुं) योग-ध्यान ।
योग ।

[अव्य] उचरत ।
को । के निकट ।

जोगड़ा—[सं पुं] डण्ड बोझ ।
पाखंडी । नकली योगी या साधु ।

जोगिन, जोगिनी—[सं स्त्री]
गन्नागिनी ।

साधुनी । पिताचिनी ।

जोगी—(सं पुं) साधु, बाबाजी ।
साधु ।

जोट, जोटा—[सं पुं] बोबा
अतिपत्नी ।

जोड़ा । प्रतिपत्नी ।

जोड़—(सं पुं) योबा, गर्वभूट,
ग्रीठि, गवानडा ।

जोड़ने की क्रिया । ठीक । कुल
योग । सन्धि स्थान । बराबरी ।
दांव पेंच ।

जोड़-तोड़—(सं पुं) खेवपाक,
उपाय ।

दांव पेंच । तरकीब ।

जोड़ना—[क्रि स] गन्धोग
करा, गन्ध करे, योगफल
उनिठवा ।

दो वस्तुओं को मिलाकर एक
करना । संचित या इकट्ठा
करना । योगफल निकालना ।

जोड़ा—(सं पुं) योब, दम्पति ।
एक ही तरह की दो चीजें ।

स्त्री और पुरुष या नर और मादा
का जोड़ा ।

जोड़ाई—(सं स्त्री) जोबा दिशा
काय बा डार बांनठ ।

जोड़ने की या दीवार आदि बनाने

में ईंटों पर ईंटें रखने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।
जोड़ो—(सं स्त्री) योद्धा, युद्ध ।
 जोड़ा । युग्म ।
जोत—[सं स्त्री] ज्योति, नाटिक मालिकी शब्द ज्योतिनि ।
 ज्योति । जोतने, बोलनेवाले को भूमि का अधिकार । तराजू में बँधे हुए धागे ।
जोतना—(क्रि स) जोड़ना । गड़बड़ । बलवान कामत लक्षणा ।
 छोड़े, घेले आदि को गाड़ी, हल आदि में बाँधना । जबरदस्ती कटी मिहनत कगना । खेत में हल चलाना ।
जोन्ह(नगई), जोन्हैया—[सं स्त्री] ज्योति ।
 ज्योति । चांदनी ।
जो-पे—(अव्य) यदि, यदि ।
 यदि । यद्यपि ।
जोबन—(सं पु) योद्धा, युद्ध ।
 योवन । स्त्रियों का स्तन । बहार ।
जोम—(सं पु) उलाह, आनन्द ।
 अतिमान ।
 उर्मंग । जोश । अभिमान ।

जोरदार—(वि) बलवान ।
 बलवान ।
जोर-शोर—[सं पु] बल-शक्ति, शक्ति-शान्ति ।
 बहुत अधिक प्रबलता या तेजी ।
जोरावर—(वि) बलवान ।
 बलवान ।
जोह—(सं स्त्री) पत्नी ।
 पत्नी ।
जोलाहा, जोंडाहा—(सं पु) जोंगी ।
 जुलाहा ।
जोश—[सं पु] जादू, जादू, उद्वेग ।
 उफान । मनोवेग । उगे जना ।
जोशोना—(वि) उद्वेग ।
 जादू, जादू ।
 जोशवाला । आदेश पूर्ण ।
जोपिता (१)—(सं स्त्री) नारी ।
 नारी ।
जोहना—(क्रि ग) जोना । नका-कबा, अलंकरण कबा ।
 देखना । पता लगाना । प्रतीक्षा करना ।
जोरां-भौरा—(सं पु) बाज अष्टा-निकाश नाटिक तलत धका-
 गुंथ बनव डवान ।

राज महलों या किलों में खजाना
रखने का तहखाना ।

जौ—[सं पुं] यद्वान् ।

गेहूँ की तरह का एक पौधा ।
एक तौल ।

(अव्य) यदि ।

यदि ।

[क्रि वि] येतिग्रा ।

जब ।

जौक—(सं पुं) सेना, दल ।

सेना । झुण्ड ।

जौ-यै—[अव्य] यदि ।

यदि ।

जौहर—[सं पुं] बर, गारभाग,
विनयक, देवशिष्टे । अश्वखट ।

रत्न । सार, तत्व । हथियार की
चमक, धार । उत्तमता । सम्मान
की रक्षा के लिये चिता में जल
मरने का व्रत ।

जौहरी—(सं पुं) अश्वी ।

रत्न परखने या बेचने वाला ।

गुण दोष की परीक्षा करनेवाला ।

ज्ञा—[प्रत्यय] ज्ञाता, जानता ।

ज्ञाता ।

ज्ञप्त—(वि) जना-कुना ।

• जाना हुआ ।

ज्ञापक—(वि) सूचक, बातवि
दिउंठा ।

सूचक । जतानेवाला ।

ज्या—(स स्त्री) शूबर डोल,
शूबर छाया, पृथिवी ।

धनुष की डोरी । किसी वृत्तचाप
के एक सिरे से दूसरे सिरे तक
की रेखा । पृथ्वी ।

ज्यादती—[सं स्त्री] आशिका,
अताछाव ।

अधिकता । अत्याचार ।

ज्यादा—[वि] अधिक, बहुत ।

अधिक । बहुत ।

ज्यू—[अव्य] येनेटक ।

ज्यों । जैसे ।

ज्यों—[क्रि वि] सिद्धते, यि अकारते,
यि अणत ।

जिस प्रकार । जिस ढंग से ।

जिस क्षण ।

[अव्य] येन ।

मानो । जैसे ।

ज्योतिर्लिंग—(सं पुं) धोनाकी
प्रकृति ।

जुगनू ।

ज्योतिर्लिंग—[सं पुं] ब्रह्मदेव ।

शिव । शिव के प्रधान लिंग ।

व्योत्पत्ति—[सं स्त्री] ज्ञान ।
चांदनी ।

व्योनार—(सं स्त्री) डोब,
बका-बड़ा ।
भोज । रसोई ।

व्यलन—[सं पुं] नाश, ज्वर ।
जलने की क्रिया या भाव । दाह ।

व्वार—[सं स्त्री] बच्चा, घोड़ा ।
एक प्रकार के अनाज का पोधा ।
'भाटा' का उलटा ।

व्वार-भाटा—[सं पुं] छाया-
छाँटा ।

समुद्र के जल का लहराते हुए
'आगे बढ़ना' और पीछे हटना ।

भ

भ—वाङ्मन वर्णमाला नवम आक्षर ।
वर्णमाला का नवाँ व्यंजन ।

भंकारना, भनकारना—[क्रि अ क्रिस्]
अन्धन् भक्त कदा वा शोवा ।
भन भन शब्द होना या करना ।

भंखना—(क्रि अ) अश्रुताप कदा,
श्रु कदा ।
पछताना और कुढ़ना । अपना
दुःखड़ा रोना ।

भंखाड़—(सं पुं) केशेटीया
जोपोशा, जाववन म'य ।
कटिदार पीधों की भाड़ी ।
आवर्जना का समूह ।

भंसट—[सं स्त्री] अज्ञान, लोठ ।
बलेड़ा । प्रपंच ।

भंसरी—[सं स्त्री] जालि-कटा-
सूखड़ा ।
छोटे छोटे छेदों वाली जाली ।
भरोखा ।

भंशा—(सं स्त्री) धूसर ।
तेज आँधी ।

भंशोड़ना—(क्रि स) जोकावि
मिया ।

भकभोरना ।

भंडा—(सं पुं) पताका ।
ध्वजा ।

झंडा फहराना (मु०)—अधिकार
करा ।

किसी स्थान पर अपना अधिकार
जमाना ।

झंडे के नीचे आना [मु०]—आधिपत्य
श्रीकाव करा ।

अनुयायी बनना ।

झंडो—[सं स्त्री] गर प्रताका ।
छोटा झंडा ।

झप—[स पुं] झप, लाक ।
उछाल । कूद ।

झंपना—(क्रि अ) झप छोड़ा,
झपिठवा ।

आड़ में होना । कूदना । दृष्ट
पड़ना । झंपना ।

झंपोला—[सं पुं] गर प्र'ति ।
छोटा भावा या टोकरी ।

झँवराना—[क्रि ज] नलिनग
होना, गवशि पोना ।

कुम्हलाना । फीका या मंद
पड़ना ।

झँवाना—(क्रि अ) खोना लगी,
निम्न-नामांकक जलि थका ।

कुछ काला पड़ना । आग का
मंद होकर बुझने को होना ।

(क्रि स) क'ना पना, काखि-
शोन शोना ।

काला पड़ना । चमक या आभा
का घटना ।

झक—[सं स्त्री] ज'क ।
सनक ।

(वि) 'छक्छकीया ।
चमकीला ।

झक-झक—[सं स्त्री] काखिया,
गोलागोली ।

भगड़ा । तकरार । बकवाद ।

झकझोरना—(क्रि स) झोकावि
लटव'वा ।

कोई चीज झटके से हिलाना ।

झकना—(क्रि अ) दक्क करा ।
बकवाद करना ।

झकोरना—(क्रि अ) झोकाव
प्रे'वा ।

हवा का भोंका मारना ।

झकोरा—[सं पुं] बताइ छाँटि ।
हवा का भोंका ।

झको—[वि] उतझा ।
सनकी ।

झखना, झोखना—[क्रि अ]
अश्रुताप करा, शोक करा ।

पछताना और कुढ़ना । अपना
दुखड़ा रोना ।

श्लक्ष्मारी—(सं स्त्री) यक्षुताप्रव
भाव ।

भल मारने की क्रिया या भाव ।

श्लक्ष्मना—[क्रि अ] काखड़ा
कबा ।

भगड़ा करना ।

श्लक्ष्माळ, श्लक्ष्म, श्लक्ष्मरू—[वि]
दम्बूबा ।

हमेशा भगड़नेवाला ।

श्लक्ष्मक—(सं स्त्री) जंक ।
भुंभलाहट ।

श्लक्ष्मकना—(क्रि अ) छ कि उठा ।
ठिठकना । भुंभलाना ।

श्लक्ष्म—(क्रि वि) ७९९९९, गौछे ।
तत्काल । भट पट ।
उसी समय ।

श्लक्ष्मकना—[क्रि स] ज़ोबटेक बुन्ना
मबा । शायुह दि वड निश ।
जोरसे भटका देना । घोखा देकर
कुछ चीज ले लेना ।
(क्रि अ) शीनाई योडा ।
दुबला होना ।

श्लक्ष्मका—(सं पुं) बुन्ना, मनःकटे,
पञ्च आदि एके बाटप
कठो कार्य ।
हलका घका । आपत्ति, शोक

आदि का आघात । पशुको एक
ही बारमें काट डालनेकी क्रिया ।

श्लक्ष्म-पट—(अव्य) ७९९९९९,
तुवच्छे ।
बहुत शीघ्र । तुरन्त ।

श्लक्ष्मना—(क्रि अ) निजवि पंवा,
खावि ज़ोकावि पंविवा कबा ।
किसी चीज के अंश का टूट-टूट
कर गिरना । भाड़कर साफ
किया जाना ।

श्लक्ष्मप—(सं स्त्री) गांधारण काजिया ।
सामान्य भगड़ा या तकरार ।

श्लक्ष्मपना—(क्रि अ) गाँउत कवे
आक्रमण कबा ।
वेगसे किसीपर आक्रमण करना ।

श्लक्ष्मबाना—(क्रि स) खबा-कूका
कवि ज़ूत-थेत थेंदा ।
भूत-प्रेत को मंत्र आदि से
उतरवाना ।

श्लक्ष्मी—[सं स्त्री] लानि, गँठा
[ववयुव] ।

लगातार भरने की क्रिया । लगा-
तार होनेवाली वर्षा । बहुत सी
बार्ते करना ।

श्लक्ष्मकना—(क्रि अ) वन्धनाई उठा,
थंडते हाँठ छवि आकलित्वा ।

भनकार का शब्द करना । क्रोध
में हाथ पैर पटकना ।
ज्ञन-ज्ञानाना—(क्रि अ क्रि स) खन्खन्
शब्द करना वा शोर ।
भन भन शब्द करना या होना ।
झप—(क्रि वि) गोथकाले ।
जल्दी से ।
झपकना—(क्रि अ) निमिष पंवा,
छिलमिल टोपनि अश ।
चलक गिरना । झपकी लेना ।
झपकी—(सं स्त्री) छिलमिलीया
टोपनि ।
हलकी नींद । आँख झपकने की
क्रिया या भाव ।
झपटना—(क्रि अ) शक्रब उपबत
अभियाइ पंवा ।
आक्रमण करने के लिये तेजी से
आगे बढ़ना ।
झपट्टा—[सं पुं] अभियाइ पंवा
क्रिया ।
झपटने की क्रिया ।
झपना—(क्रि अ) निमिष पंवा,
शवांशालि शोर ।
पलक गिरना । झुकना । हैरान
या परेशान होना ।
झपाका—[सं पुं] नैखडा ।
शीघ्रता ।

(क्रि वि) नैखडा ।
चटपट ।
झपाटा—(सं पुं) यौखडा ।
झपट । चपेट ।
झपेटना—(क्रि स) शोप यन् ।
दबोचना । झिड़कना ।
झपेटा—(सं पुं) शोप, गविशना ।
चपेट । भून-प्रेतादि की बाधा ।
झिड़की ।
झबरा—(वि) डोवोवा ।
बहुत लम्बे लम्बे बिलेरे बालों
वाला ।
झबिया—(सं स्त्री) नृडाव नेठा ।
छोटा झब्बा ।
झब्बा—[सं पुं] जँठा ।
तारों या सूतों का गुच्छा जो
गहनों में शोभाके लिये लगाते हैं ।
झमकना—[क्रि अ] त्रिबिवाइ उँठा,
अश्रुब छिक्किनि ।
रह रह कर चमकना । भनकार
होना । अश्रुओं का चमकना ।
झमकीला—(वि) डेखल, छकल ।
चमकीला । चंचल ।
झमाका—[सं पुं] छन्छन् शब्द ।
भम भम शब्द । नलरा ।
झमेला—(सं पुं) आपन, अजान ।
बलेड़ा । झंझट । भीड़-भाड़ ।

झरकना— [क्रि अ] लोडित
होवा, गालि दिया ।

झलकना । झिड़कना ।

झरना—[क्रि अ] निखरि पवा,
गवि पवा ।

ऊँची जगह से पानी या और
कोई चीज लगातार नीचे गिरना ।
झड़ना ।

(सं पुं) झूँति, निबंवा ।

सोता । निर्भर ।

(वि) निखरि निखरि पवि
थका । भरनेवाला ।

झरप—(सं स्त्री) उथना-उथनि,
क्रिप्रता ।

झकोर । तेजी । झड़प ।

झरपना— [क्रि अ] पानी वा शब-
बबबोवा । तिवकाव कवा ।

बोछार मारना । झड़पना ।

झरा झर—(क्रि वि) जब्जब् शक्केवे ।
गदाग । बेगोई ।

भरभर शब्दके साथ । लगातार ।
वेगपूर्वक ।

झरी—(सं स्त्री) निबंवा, शॉट-
बल्लाबव दैनिक-कव ।

निर्भर । भरना । हाट बाजार
का दैनिक कर ।

झरोखा—(सं पुं) वेवव झूठा,
गंवाक ।

जालीदार छोटी खिड़की ।
गवाक्ष ।

झलक— (सं स्त्री) झिजिकनि,
छकायकाटैक देखा । आभा
चमक । प्रतिबिम्ब । क्षणिक
दर्शन । आभा ।

झलकना—[क्रि अ] झिजिकि उठा,
आरंभिक प्रकाश होवा ।

चमकना । कुछ कुछ प्रकट होना ।
आभास होना ।

झलझलाहट—(सं स्त्री) छरमकनि,
नौछि ।

झल झलाने की क्रिया या भाव ।

झलना— [क्रि स] विचनीदेव वा
दिया ।

पंखे आदि से हवा करना ।

(क्रि अ) विचनीव वा लोवा ।
इकाल-गिकाल कवा ।

भेलना । इधर उधर हिलना ।

झलझलाना—(क्रि अ) झिलझिलाई
थका ।

रह रहकर चमकना । प्रकाश को
हिलाना-डोलाना ।

झलराना—(क्रि अ) गठि लगेवा ।
झालर के रूप में फैलना ।

(क्रि स) पीठि आकावत
लगाव ।
भालर जैसे फैलाना ।
झल—(सं स्त्री) पीगलामि ।
पागलपन ।
झलाना—[क्रि अ] झंकि उठा ।
खंडत मुखत यि आदे ताके
कोवा ।
क्रुद्ध या खिन्न होकर बोलना ।
झष—(सं पुं) माछ, शरियल ।
मछली । मगर ।
झषकेतु—(सं पुं) कामदेव ।
कामदेव ।
झरझगाई—[क्रि अ] झब्-झब
शब्द कवा । शिथिल होवा ।
छिन्न वांश कवा ।
भर भर शब्द करना । शिथिल
या ढीला होना । झलाना ।
झाई—(सं स्त्री) अतिष्ठात्रा,
अक्षर ।
परछाई । अन्धेरा । छल ।
झाँकना—(क्रि अ) झुमि ढोवा ।
कुछ झुक या झिपकर देखना ।
झाँकी—(सं स्त्री) झुमि ढोवा
कार्य । झुमकि ।
झाँकने की क्रिया या भाव ।
दर्शन । दृश्य ।

झाँखर—[सं पुं] आवर ।
आवर्जना ।
झाँझ—[सं स्त्री] थूँटि ताल ।
बड़े मंजीरे की भाँति एक प्रकार
का वाद्य ।
झाँप—[सं स्त्री] टांकनी, गँफब,
काणव अलङ्कार ।
ढँकनेका ऊपरी आवरण । झपकी ।
कान का एक गहना ।
झाँपना—[क्रि स] झपाई थोवा ।
ताकि थोवा, लाज कवा ।
ढँकना । लजाना । दबोचना ।
झाँबला—(वि) मनिग्रन, जेब९
क'ला ।
कुछ कुछ काला । कुम्हलाया
हुआ । मैला । मन्द ।
झाँवली—[सं स्त्री] झिनिकनि,
छक्र ठाव ।
भलक । आँखों से किया हुआ
संकेत ।
झावाँ, झामा—(सं पुं) पोवा
शेठे ।
जली हुई ईंट ।
झाँसा—[सं पुं] कैंकि ।
घोसा ।

भा—(सं पुं) उखा, एठा जातिब
उपाधि ।

बोभा । एक जाति की उपाधि ।

भाग—[सं पुं] खेन ।

गाज । फेन ।

भाड़—[सं पुं] ज़ोपोश गश् ।

छोटा घनी डालियोंवाला पेड़ ।

(सं स्त्री) जावि-जोकावि
पेलोरा क्रिया, जबा-कुं का
कवा कार्य । तिवकाव ।

भाड़ने की क्रिया या भाव ।
फटकार । मंत्र पढ़कर फूँकने
की क्रिया ।

भाड़-झंखाड़—(सं पुं) कैंडेठनि,
आवर्जन ।

कांटेदार या व्यर्थ के पेड़ पौधोंका
समूह । निकम्मी टूटी फूटी चीजें ।

भाड़ना, झारना—(क्रि स)

पविकाव कवा । जावि-जोकावि
पेलोरा । अनर्गल कवा
कोरा । डाकोप कवा ।

साफ करना । ऊपर पड़ी हुई
धूल आदि को झटके से गिराना ।
गड़ गड़कर बातें करना । धन
एँठना । फटकारना । प्रहार के
लिये चलाना ।

भाड़-फानूस—(सं पुं) पाइनाब
कलश, उलोमाइ बथा नौपाबाव ।

शीशे की हाँडियाँ, भाड़ आदि
जो शोभा के लिये टंगे जाते हैं ।

भाड़-फूँक—[सं स्त्री] जबा-कुं का
कवा कार्य ।

मंत्र पढ़कर भाड़ना फूँकना ।

भाड़ा—(सं पुं) जबा-कुं का,
शौच ।

भाड़ फूँक । तलाशी । मल ।

भाड़ी—[सं स्त्री] गक गश् ।
गुलि ।

छोटा भाड़ या पोधा ।

भाड़ू—(सं पुं) बाढ़नी ।
कूचा । बुहारी ।

भापड़—(सं पुं) टापव ।
थप्पड़ ।

भाबा—(सं पुं) बां ।
टोकरा ।

भार—(वि) केवल, गकलो ।
केवल । समस्त ।

(सं पुं) गबूह, अछेष्टे ।
समूह । प्रयत्न ।

भारी—[सं स्त्री] जाबी वा बाबी ।
पानी रखने का टोंटीदार बर्तन ।

भास—(सं पुं) धूँँ डाल ।
भाँक ।

(सं स्त्री) जला, जल, जलन,
जेष ।

तीतापन । तरंग । जलन ।
ईर्ष्या । वर्षा की झड़ी ।

झालर—(सं स्त्री) शोभाशुद्ध पट्टि ।
शोभाके लिये बनाया या लगाया
गया किनारा ।

झिझक—[सं स्त्री] झूझ-ठागक ।
भय आदि के कारण संकोच ।

झिड़कना—(क्रि स) गविशना
दिया ।

अवज्ञा पूर्वक कड़ी बात कहना ।

झिड़की—(सं स्त्री) गविशना,
गोलि ।

डॉट । फटकार ।

झिरना—(क्रि अ) निखरि पना ।
भरना ।

झिलम—(सं स्त्री) युद्ध गमयउ
पिका लोच ठूँगी । युद्ध के समय
पहनी जानेवाली लोहे की टोपी ।

झिलमिला—(वि) झिल-मिल ।
चमकता हुआ । जो बहुत स्पष्ट
न हो ।

झिलमिलाना—(क्रि अ) झिलमिलाई
थका ।

रह रह कर चमकना । प्रकाश
का रह रह कर हिलना ।

झिल्ली—[सं स्त्री] झिल्ली, डेरे
ठिबिडा पठला, विनविना ।

भीगुर । ऐसी पतली तह जिसके
आर पार वस्तुएँ दिखाई दे ।

झींगुर—(सं पु) झिल्ली ।

भी भी करनेवाला एक कीड़ा ।

झोसी—(सं स्त्री) पानीब डेश ।
दर्पा की धीमी फुहार ।

झोखना—(क्रि अ) अशुभाप कबा,
उथ कबा ।

पछताना । कुटना । अपना दुखड़ा
रोना ।

झोना—[वि] फिब-फिबिया, वन-
मिशि, लेबेबल ।

बहुत महीन । भँभरा । दुर्बल ।

झोछ—(सं स्त्री) गढावर ।

लम्बा चोडा प्राकृतिक जलाशय ।

झुँझलाना—[क्रि अ] झुँझति बरा ।
झिझलाना । चिड़चिड़ाना ।

झुँड—(सं पु) ढल ।
गिरोह ।

झुकना—(क्रि अ) जेउ बना, शब
बना । गठशोदा ।

नत होना । हार मानना । मनका
किसी ओर प्रवृत्त होना ।

झुकाना—(क्रि स) नड कबा,
अशुभ कबा ।

नवाना । प्रवृत्त करना । विनीत बनाना । बात मनवाना ।

मुकाब—(सं पुं) लाल, अशुद्धि । झुकने की क्रिया या भाव । मन का आकर्षण । प्रवृत्ति ।

मुटपुटा—[सं पुं] काल-गङ्गा । ऐसा समय जबकि कुछ अन्धेरा और कुछ प्रकाश हो ।

मुठलाना—(क्रि स) गंठाक मिष्टान्न बूनि कोढ़ा । मिष्टान्न कथादे ठेठगाढ़ा ।

सच्चे को मूठा ठहराना । मूठा कहकर धोखा देना ।

मुठाई—(सं स्त्री) अगठता । मूठापन ।

मुनमुनाना—(क्रि अ क्रि स) खून-खून बँक कबाँ बाँ शेबा । मुन मुन शब्द उत्पन्न होना या करना ।

मुनमुनी—(सं स्त्री) खून-खून । हाथ या पैर में रक्त संचार रुकने से उत्पन्न सनसनाहट ।

मुमका—(सं पुं) कानन अलङ्कार । कान का एक गहना ।

मुरना—(क्रि अ) उल्टोबा । मनोउल्टा कबा ।

सूखना । मन ही मन अफसोस करना ।

मुरमुट—(सं पुं) छोटोपाश गच्छ । प्रल ।

आस पास उगे हुए कई भाइयों का समूह । गिरोह, दल ।

मुरी—(सं स्त्री) गोटिया, कौँठ । चमड़े की मिकुड़न ।

मुलसना, झौंसना—(क्रि अ क्रि स) लेबलि प्रवाँ बाँ मबशि योबा । शरीर या किसी चीज के ऊपरी भाग का जलकर काला होना । जलाकर काला कर देना ।

मुलाना—(क्रि स) नूलनि दिग्रा । विद्याबाधन । अनिष्ट ।

झुलने में प्रवृत्त करना । आश्वासन देकर किसी काम को पूरा न करना या बारबार आदमी को दोड़ाना । [अ-पेडिंग]

मुल्ला—[सं पुं] एक बकसब कामिज ।

एक प्रकार की कुरती ।

मूठ—(सं पुं) मिष्टान्न, अगठता । मिथ्या । असत्य ।

मूठ-मूठ—(क्रि वि) मिष्टान्न-मिष्टान्न, अथवा ।

बिना किसी आधार के । यों ही ।

झूठा— [वि] मिश्रा, मिश्रीया, नकली ।

असत्य । मिथ्यावादी । बनावटी ।

झूमक, झूमर— [मं पुं] एविश लोकगीत । एविश गलकाव ।

एक प्रकारका गीत । एक गहना ।

झूमना— (क्रि अ) झूलनि लोरा । झोके खाना । मस्ती में शरीर हिलाना ।

झूर, झूरा— [वि] झुकान, नीबग । सूखा । नीरस ।

(सं पुं) खराब बतब । झुकान गाँटि ।

अनावृष्टि । सूखी जमीन ।

झूलन— [सं पुं] झूलनि । झूलन यात्रा ।

हिंडोला । झूलनोत्सव ।

झूलना— [क्रि. अ] झूलनि लोरा । लटकी हुई चीज का बार बार हिलना । किसी काम के आवसान में बारबार दौड़धूप करना ।

(वि) झूलनि लड़ता ।

झूलनेवाला ।

झूला— (सं पुं) झोलन ।

हिंडोला । झूलनेवाला पुल ।

झोंपना— (क्रि अ) लाजते झुंक्क योरा, लाज कबा ।

लज्जित होना । शरमाना ।

झेलना— (क्रि स) गह कबा । गोंताबोते पानी काँटि योरा कार्य ।

सहना । तरने समय हाथ पेरसे पानी हटाना ।

(क्रि अ) पानी बाई पाद होरा । पानी में उतरकर पार करना ।

झेलाझेलो— (सं स्त्री) टना-आँछोरा ।

खीच तान । आवागमन ।

झोंक— [सं स्त्री] छाल, बोझा, क्लिष्टता ।

झुकाव । बोझ । तेजी ।

झोंकना— (क्रि स) झुंहेत पेलोरा । उधाई-मुधाई खंच कबा ।

कोई वस्तु जलाने के लिये आगमें फेंकना । अन्धाधुन्ध खंच करना ।

झोंका— (सं पुं) बताइ-झाँटि । बरसुणब पानीब गोंत ।

झटका । हवा के कारण वर्षा की धारा का झर उधर जाना ।

झोंकी— (सं स्त्री) नात्रिष ।

उत्तरदायित्व । (अं-रिस्क)

शोश—[सं स्त्री] चवाईव बाह,
कोलाशल ।

पक्षियों का घोंमल । कोलाहल ।

शोटा—(सं पुं) छुलित कोछा ।

स्त्रियों के बड़े बड़े वालों का
गुच्छ ।

शोटाशोटी—[सं स्त्री] छुलिशा-छुलि ।

आपस में बाल खींचकर लड़ाई ।

शोपड़ा—(सं पुं) झुपुगी, कूटौव,
कुटी । पर्णशाला । (सं स्त्री-भोपड़ी)

शोपा—(सं पुं) कोछा ।

फल आदि का गुच्छ ।

शोटिंग—(सं पुं) ब्रूत-प्रेत
आदि ।

भूत-प्रेत या पिशाच आदि ।

शोरना—(क्रि स) छोबेबे
छोकावे दिना ।

कोई चीज भटका देकर जोरसे
हिलाना ।

शोरा, शोला—(सं पुं) थूना, टो,
चाश्वला, मोना, गोलोक-
टोलोक टोला ।

भटका । पक्का । लहर । दुबिधा ।
चंचलता । थैला । ढीला कुरता ।
पक्षाघात रोग ।

शोल—[सं पुं] छोल, भन्ग, टिला,
पोष । गर्डावण ।

शोरबा । भस्म, राख । भंभट
या बखेड़े की बात । ढिलाई ।
दोष । आंचल । गर्भकी भिल्ली ।

शोलदार—[वि] झूलोशा, गोलोक-
टोलोक ।

जिसमें भोल या रमा हो । मुल-
म्मेदार । ढीला ढाला [कपड़ा] ।

शोली—(सं स्त्री) चाना, छाई ।
धैली । पानी सीचने का चमड़े
का पुग । राख ।

शोर—(सं पुं) झार, झूलव (थोपा) ।
भुण्ड । फूलों या फलोंका गुच्छ ।

शौरना—[क्रि अ] छुन-छुन कवा ।
गूँजना । भपटकर पकड़ना ।

शौरा—[सं पुं] झार ।
भुण्ड ।

शौराना—[क्रि अ] लव-कद कवा,
कला पवि योवा । बिबर्ण
होना ।

भूमना । रंग काला पड़ जाना ।
कुम्हलाना ।

(क्रि स) आनक छुलनि दिशात
अशत कवा ।

किसी को हिलने या भूमने में

प्रवृत्त करना । रंगतमें कालापन
लाना । मुरझानेमें प्रवृत्त करना ।
झौआ—(सं पुं) थार ।
खँचिया ।
झौर—[सं पुं] काजिया, गालि-
मपनि ।
हुज्जत । झगड़ा । डाँट फटकार ।

झौरे—(क्रि वि) गरीब, कमठ ।
समीप । साथ ।
झौहाना—(क्रि व्य) बँडते तिल-
मिलाई उठा ।
बहुत क्रोध से या बिगड़कर कुछ
कहना ।

ज

ज्य—वाङ्मय वर्णमालाब दशम आक्षर । वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन वर्ण ।

ट

ट—वाङ्मय वर्णमालाब एकदश
आक्षर ।
वर्ण मालाका ग्यारहवाँ व्यंजन
वर्ण ।
टंक—(सं पुं) एक तोलाब एक
तृतीयांश डब, हेना, कूठाब ,
अस्त्रागा । पुखुवी । टेक

एक तोल । सिक्का । छेनी ।
कुल्हाड़ी । सुहागा । तालाब ।
टंक ।
टंकक—(सं पुं) छिलाई काम
करेबौता, टाईप करेबौता
आदि ।

वह जो टंकण का काम करता
हो (अं-टाइपिस्ट)

टंकण—(सं पुं) खूबागी. ठाईअ
कबा कार्या, भूछा देउशाब कबा
कार्या ।

सुहागा । धातु का चीज में
जाड लगाना । टंकण यंत्र से
मुद्रित करने का काम । सिक्के
बनाने की क्रिया ।

टंकण-यंत्र—(सं पुं) ठाईअ कबा
यंत्र ।

छापेका एक यंत्र(अं-टाइप राइटर)

टंकना—[क्रि अ] ठिलाई कबा (बुटे
बूहेके कठो) छाउ, पंता छुटि ।

सी कर अटकाया जाना । दर्ज
किया जाना । सिल, चक्की
आदि कुटना ।

टंकशाला—(सं स्त्री) ठोकशाल,
यंत भूछा देउशाब कबा श्य ।
टंकशाल । जहाँ सिक्के बनते हैं ।

टंकाई—(सं स्त्री) ठिलाई नागड ।

टंकने का भाव या मजदूरी ।

टंकारना—[क्रि स] धेशूत ठेकाव
मिया । धनुष की डोरी खींचकर
शब्द उत्पन्न करना ।

टंकी—(सं स्त्री) थाली, कूड ।

पानी रखने का बड़ा कुंड या
पात्र ।

टंगना—(क्रि अ) उलोभाई-
थोवा ।

टांगा या लटकाया जाना ।

(सं पुं) डाव । कांताव
त्रलि-दिशा बटि ।

वह रस्सी जिस पर कपड़े टंगि
जाते हैं । कपड़े टंगने के लिये
काठ की अलगनी ।

टंगागी—(सं स्त्री) कूठाव ।
कुल्हाड़ी ।

टट-घट—(सं पुं) भूछा पीतलब
आयोछन । वेशा बख्त ।

पूजा पाठ आदि का आहम्बर ।
रही सामान ।

टंटा—(सं पुं) खजाल, काछिया ।
व्यर्थ की भ्रष्ट । उपद्रव ।
भगड़ा ।

टंटैल—[सं पुं] बख्खाव नायक ।
मजदूरों का सरदार ।

टक—(सं स्त्री) एकबिबे छोटा ।
स्थिर दृष्टि ।

टकटका—[सं पुं] अपनक दृष्टि ।
स्थिर दृष्टि । (सं स्त्री - टकटकी)

टफटफाना - [क्रि स] एकस्थित

ठाई थाका ।

स्थिर दृष्टि से देखना ।

टफराना—(क्रि अ) थुका थोड़ा,

थो-थेलाई कुवा ।

जोर से भिड़ना, टक्करें खाना ।

व्यर्थ इधर उधर घूमना ।

[क्रि स] थुका मवा ।

टक्कर मारना ।

टकसाल—[सं स्त्री] टोकशाल

स'त भूझा ठेकाव शय ।

जहाँ सिकके ढलते हैं ।

टकसाली—(वि) भूझा गरीबी,

विश्रुत, आमागिक ।

टकमाल सम्बन्धी । खरा ।

ग्रामाणिक ।

[सं पुं] टोकशालव गरीबी ।

टकमाल का अधिकारी ।

टका—[सं पुं] श्रेष्ठ श्रेष्ठ

एक सिक्का । अधवनी ।

टकाही—[सं स्त्री] कू-चबिज्रव

तिबेता ।

दुश्चरित्रा स्त्री ।

टकुमा—(सं पुं) डांडव टोकूरी ।

• तकला ।

टकोर—(सं स्त्री) टोकव, टकाव ।

गवग गैक ।

हलकी चोट या आघात । ठेस ।

टंकार किसी अंग पर गर्म सेंक ।

टकर—(सं स्त्री) गर्श्व । कति

दो वस्तुओं के वेगपूर्वक भिड़ने

से होनेवाला आघात । मुकाबला ।

घाटा ।

टखना—[सं पुं] थाव ग्रांथि ।

पैर के नीचे के हिस्से का गुल्फ ।

टखरना—(क्रि अ) थलि दगावा ।

पिघलना ।

टटटा—[वि] टिट्टिका, नडून ।

ताजा ।

टटोलना, टटोड़ना—(क्रि स)

थेजिगई डोवा, उदामिड

लोवा ।

मात्तुम करने के लिये उंगलियों

से छूना । ढँढ़ने के लिये हाथ

फैलाना । थाह लेना

टट्टर—(सं पुं) बेब, छिलिछि ।

बांस की पट्टियाँ जोड़कर बनाया

हुवा ढाँचा या परदा ।

टट्टी, टाटी—[सं स्त्री] मोठ,

छिलिछि ।

हलका और छोटा टट्टर । पतली

दीवार । पाखाना ।

टटू—[सं पुं] टोट्टे खोबा, गरु खोबा ।

छोटा घोड़ा ।

टनकना—(क्रि अ) टं-टं शब्द होना, मूब टिं-टिं करना ।

टन टन शब्द करना । सिर में दर्द होना ।

टनटनाना—[क्रि स] टं-टं शब्द करना ।

टन् टन् शब्द उत्पन्न करना ।

टनमना—(वि) झुञ्झ ।

स्वस्थ ।

टप—(सं पुं) टाकनी, डाँड बलश, काणकुल ।

किसी चीज के ऊपरका छाजन ।

पानी रखने का बड़ा बरतन ।

कानमें पहनने का फूल ।

(सं स्त्री) टप्-टप्-टैक पंवा शब्द ।

बूँद बूँद गिरने का शब्द ।

टपकना—(क्रि अ) टोपा-टोपे पंवा । अकम्पाए गवि पंवा । वप् करे मनत पंवा । वै वै बिबोबा छत आदि का चुना या बूँद बूँद पानी गिरना । ऊपर से आकर सहसा पड़ना । कोई भाव प्रकट होना । रह रह कर बर्द होना ।

टपका—(सं पुं) टोपोल ।

टपकी हुई वस्तु या टपका हुआ फल ।

टपकाना—(क्रि स) टोपा-टोपे पेलोबा ।

बूँद बूँद गिरना । चुआना ।

टपना—(क्रि स) टेबाई योबा । लाधना । कूदना ।

टपरी—(सं स्त्री) पंजा शब । भोंपड़ी ।

टपाटप—(क्रि वि) टपवाइ ।

लगातार टप टप शब्द के साथ [गिरना] । जल्दी जल्दी ।

टपाना—(क्रि स) अनाशक कटे मिया । पीब करवाबा ।

व्यर्थ आसरे में रखकर कष्ट देना । पार कराना ।

टप्पा—(सं पुं) आछा, मूब, एविश ग्रीत ।

उछाल । दो स्थानों के बीच का मैदान । फर्क । एक प्रकार का गाना ।

टप—[सं पुं] थाली । पानी बाँध-बटेल वश मूब पंवा ।

पानी रखने का बड़ा बरतन ।

टमाटम—(सं स्त्री) शूकीया

बोवा-गाड़ी ।

एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी ।

टमाटर—(सं पुं) विनाशो वेष्टेन ।

विलायती बैंगन ।

टरकाना—[क्रि स] धेदि दिया ।

किसी को हटाना या टालना ।

टरटराना [क्रि अ] टोर्-टो-

बोबी । केटबाई मता ।

टर टर शब्द करना । कठोर शब्द कहना ।

टरी [वि] श्रे, उन्नत ।

उद्धत

टरीना—(क्रि अ) कर्तुवा मात

मता ।

कठोर उत्तर देना ।

टलना—(क्रि अ) आंठबि बोबा,

अतिबाधित होना । श्रुति होना,

सामने से हटना । जगहसे हटना ।

स्थ गत, होना । [किसी आदेश

का] न माना जाना । समय

बीतना ।

टसकना—[क्रि अ] जब-ठब कबा। चिबि-

चिबि-टेक बिटबाबा । जेन एबिनिग्रा

टलना रह रह कर दद करना ।

हठ छोड़ना ।

टसकाना—(क्रि स) आंठबाई

निया ।

खिसकाना ।

टसर—(सं पुं) एबिथ डाठ

पाँठ का पोख ।

एक प्रकार का रेशम ।

टसुआ—(सं पुं) चकूला ।

माँस ।

टहकना—[क्रि अ] बै बै बिबोबा,

गलि बोबा ।

रह रहकर दद करना । पिघ-

लना ।

टहनी—(सं स्त्री) गक ठान,

ठानी ।

पेड़ की छोटी डाली ।

टहल—(सं स्त्री) पबिचर्या, आल-

पैचान ।

छोटी और हीन सेवा, खिदमत ।

टहलना—(क्रि अ) कुबा ।

व्यायाम या मन बहलाव के लिये

धीरे धीरे चलना ।

टहलनी—[सं स्त्री] पबिचरिका ।

दासी ।

टहलना—(क्रि स) कुबोबा ।

धीरे धीरे घुमाना या चलाना ।

ଦାହଲୁଆ—(ସଂ ପୁଂ) ପରିଚାବକ ,
 ସେବକ ।

सेवक । दास ।

ਟਾੱਕਨਾ—(ਕ੍ਰਿ ਸ) ਟਿਲਾਏ ਕਰਾ,
ਟੁੱਕਿ ਥੋਰਾ, ਮਰਾ ਮਰਾ ।

मूई डोरे से कोई छोटी चीज
किसी बड़े चीज से जोड़ना ।
कोई बात याद रखने के लिये
लिख लेना । खाते में चढ़ाना ।

টাকা—(সং পু') গিয়নি, টাপলি,
খিলা । পানী খোঁড়া টৌ ।

वह चीज जो दो चीजों को जोड़
कर एक करती हो। पैबन्द।
सिलाई। पानी रखने का बड़ा
बरतन।

टाँकी—(सं श्रो) छेना ।
पत्थर काटने की छेनी ।

ଡାଙ୍ଗ—(ସଂ ସ୍ତ୍ରୀ) ଭବି ।
ପୈର ।

ढाँगना-(क्रि स) ढुलागाई थोरा,
काँच दिया ।

लटकाना । फाँसी पर चढ़ाना ।

টাঙ্গা—[সং পুং] এবিধ ছচকায়া
ঘোঁবা গাড়ী ।

एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी ।

टांगी—(सं स्त्री) कुंठा ।
कुल्हाडी ।

टाँचना—(क्रि स) छिनाई करा,
छाँत यादित नाब दिया ।

टाँकना । ठीक करने के लिये
काटना या छीलना । काटकर
कुछ अंश निकाल लेना ।

[ক্রি অ) আনন্দতে অধীৰ
হোৱা।

बहुत प्रसन्न होकर फूले फूले
फिरना ।

टाँड़, टाड़—(सं स्त्री) याचना,
कोनो वस्तु धोवा यतन ।
चीजें रखने के लिये बनायी हुई
पाटन । (अं-रैक)

ढाँडा—(सं पुं) वागवान गदागब ।
 एडाक प्रलु, कूट्रग ।
 व्यापारियोंका काफिला । बिक्रीके
 माल की खेप । कटुम्ब । पशुओंका झुंड

टाँयटाँय [सं स्त्री] कठूना गाठ,
केटेबा गाठ ।

कर्कश शब्द । व्यर्थ की बकवाद ।

टाट — [सं पं] थैला, छत व आभार ।
पाट का मोटा सा कपड़ा । जिससे
बोरे बिछावन आदि बनते हैं ।

‘महाजन की गद्दी ।

दान—[सं स्त्री] टना कार्य। आकर्षण ।
तानने की क्रिया । आकर्षण ।
मुद्रण यंत्र में कागज हर बार छापे
जाने का भाव । (अं—इम्प्रेसन)

दानना—(क्रि स) टना, छपोना ।
तानना । खींचना । छापना ।

टाप—(सं स्त्री) षोँबाब खुवा,
षोँबाब खुवाब शब्द ।

छोड़े के पैर का अग्रभाग, खुर ।
घोड़े के पैर पड़ने का शब्द ।

टापना—[क्रि अ] षोँबाई खुवाबे
करा खै—खै शब्द । छँपिउवा ।
आनाउ थाकि कटे भोग करा ।
घोड़े का खड़ा खड़ा पैर पटकना ।
व्यर्थ आसरेमें रहकर कष्ट पाना ।

टापा—(सं पुं) आश्ल-वश्ल
पशुव, टाकनी ब्रुछ पीठि ।
लम्बा चौड़ा मैदान । ढक्कनवाला
टोकरा ।

टापू—(सं पुं) दीप, माछुली ।
दीप ।

टारन—(वि) नापकारी ।
दूर करनेवाला ।

टाक—(सं स्त्री) दम, छुप,
दोकान ।
लकड़ी आदि की ढेर या दूकान ।
टालने का भाव ।

टाक—टूक, टाक-मटोल—[सं स्त्री]
कौंकि, झड़े, अश्वीकृति ।

टालने के लिये बहाना ।

टाकना—(क्रि स) छुटोना,
आँठबोना, अंगित बंधा, किवा
अछूनाउ देखुवाई गाँ आनादिना ।
हटाना । मिटाना । स्थगित
करना । बहाना करके पीछा
छुड़ाना ।

टाकी—(सं स्त्री) गन्ध गलठ
आदि दिया शब्द । माछुबि ।
बैल आदि के गले में बाँधने की
घण्टी । बछिया ।

टिफठी, टिखटो—(सं स्त्री)
कौंकि काँठ, छाडी । शब्द आश्वार
अपराधी पर कोड़े लगाने लिये
या फाँसी का फँदा गलेमें डालनेके
लिये बनाया गया काठका ढाँचा ।
अरथी ।

टिफड़ा—(सं पुं) बुरगैया छेपेटा
बन्ध । छूहेत गेकि ठेयार
करा कौंकि ।

चिपटा गोल टुकड़ा । आग पर
सँकी रोटी ।

टिफना—[क्रि अ] टिकि थका,
किछु गनसटेल बिबेबे थका ।
कुछ समय के लिये रुकना या

ठहरना । कुछ दिनों तक काम देना । स्थित रहना ।

टिकरी—(सं स्त्री) एविश नूयैश विठाई, टिकिवा ।
एक प्रकार का नमकीन पकवान । टिकिया ।

टिकली, टिकुली—(सं स्त्री) बवि, गक टिकिवा । एठावे कपागत नगाव पवा । घुबगैश । गक फोटे ।
छोटी टिकिया । औरतों के माथे पर लगाने की काँच आदि की बिंदी ।

टिकाऊ—(वि) दृढ़, शायी ।
मजबूत । ज्यादा दिन चलनेवाला ।

टिकान—[सं पुं] टिकि थका कार्य, खिबनि सब ।
टिकने की क्रिया या भाव । पड़ाव ।

टिकाना—(क्रि स) आश्रय दिय़ा ।
ठहराना । आश्रय देना ।

टिकाव—(सं पुं) आश्रय, श्रिति, शायिश ।
ठहराव । स्थिति । स्थायित्व ।

टिकिया—(सं स्त्री) टिकिवा ।
गोल और बिपटा छोटा टुकड़ा ।

टिकोरा—(सं पुं) आवब कलि ।
आम का छोटा कच्चा फल ।

टिकड़—(सं पुं) झुईत सेका डाँठ कटि । डाँडव टिकिवा ।
सँको हुई मोटी रोटी । बड़ी टिकिया ।

टिघलना—(क्रि अ) गलि बोरा ।
पिघलना ।

टिघन—(वि) तेय़ाब, उछत, ठिक ।
तैयार । उद्यत । ठीक ।

टिटकारना—(क्रि स) टेकलियाई थेपा (गक-म'श आदि)
टिक, टिक करके हाँकना ।

टिटिहरी—[सं स्त्री] नबियाल वा तिडियलि चबाई ।
एक छोटी चिड़िया । टिटिम पक्षी ।

टिटो, टोड़ी—(सं स्त्री) काकडि कविः ।
एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा (अं-लोकस्ट)

टिपाई—[सं स्त्री] टिपि दिय़ा वा गालिठ कवा कार्य । टोका काबव वानछ ।
टिपने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

टिपारा—(सं पुं) एविश ट्रेनी ।

एक प्रकार की तिकोनी टोपी ।

टिप्पस [सं स्त्री] छेकता, मशखुलि ।

काम निकालने के लिये लगाई जानेवाली सहज युक्ति ।

टिमटिमाना—[क्रि अ] टिमिक-

तायाकटैक जलि थका ।

[दीपक का] मन्द रूपसे जलना ।

बुझने पर होकर फिर जल उठना ।

टीक—(सं स्त्री) गलपता ।

गलेमें पहनने का एक गहना ।

टीकना [क्रि स] तिनक नगोवा,

देखांकित कबा ।

टीका या तिलक लगाना । चिह्न

या रेखा बनाना ।

टीका—[सं पुं] तिनक, श्रेष्ठ पुरुष ।

बोराग अतिवैधक छिटे ।

तिलक । श्रेष्ठ पुरुष । सब बातों

में बढ़ा चढ़ा । राज तिलक ।

किसी रोग का प्रतिषेधक चमड़े

को चीरकर अन्दर प्रविष्ट करने

की क्रिया ।

(सं स्त्री) टीका-टिङ्गनी, डाया,

चिन ।

गूढ़ शास्त्रों की व्याख्या । गुण

दोष के सम्बन्ध में प्रकट किया

जानेवाला मत ।

टीकाकार—(सं पुं) टीका लिखक ।

टीका लिखनेवाला ।

टीप—(सं स्त्री) ट्रेकि तथा कार्या,

टिपि मिश्रा कार्या, गच्छीउब

कोनो प्रीषण खूब मंकेतेवे

लिखा कार्या ।

टिपने की क्रिया या भाव ।

दबाव । संगीत की लम्बी तान

भटपट संकेतसे लिख लेनेका

काम ।

टीपटाप—[सं स्त्री] आड़बद, रुखिब

भूदाव ।

आडम्बर । बनावटी शृंगार ।

टीपना—[क्रि स] टिपि मिश्रा देखि

मिश्रा, ट्रेकि तथा ।

दबाना । याद रखने के लिये

टाँक लेना ।

टीस-टाम—(सं स्त्री) गाजन-

काठन ।

बनाव शृंगार ।

टीला—[सं पुं] टिला, उब ठाँई ।

मिट्टी पत्थर का उभरा हुआ ऊँचा

भूभाग । छोटी पहाड़ी ।

टीस—(सं स्त्री) टिं-टिङ्गिया विष,

जोड बेगना ।

रह रहकर उठनेवाला दर्द ।

ढुंढा—(सं पुं) गवा गछ, शत
कठा माशुह ।

ढूँठ । लूला आदमी ।

ढुक—(वि) अलग, कम ।
जरा ।

ढुकड़खोर, ढुकड़तोड़—(सं पुं)
पराश्रित । नगण्य माशुह ।
पराश्रित । तुच्छ व्यक्ति ।

ढुकड़-गढ़ाई—(सं पुं) डिक्रह,
डिखारी ।
भिखारी ।

ढुकड़ा, ढुका, ढूक—(सं पुं)
ढूकना, थग ।
खंड । भाग ।

ढुकड़ी—(सं स्त्री) गरु ढूकना । दल ।
छोटा ढुकड़ा । दल ।

ढुक्का—(वि) ठुण्ड, गंकीर्ण ।
तुच्छ । ओछा ।

ढुट-पुँजिया—(वि) याटम-
टोकाबी ।
जिसके पास बहुत थोड़ी पूंजी हो ।

ढूंगना—(क्रि स) टोकि-टूकि खोरा ।
थोड़ा थोड़ा काटकर खाना ।

ढूँड़—[सं पुं] पकड़ाव उः ।
कीड़ो के मुँहपर की पतली लम्बी
नली । लम्बी पतली नोक ।

ढूटना—[क्रि अ] डग़ा वा झिंझा,
अतिक्रिडे आक्रमण करा ।

खण्डित होना । अचानक हमला
करना । पृथक होना । शरीरमें
ऐठन सहित पीड़ा होना ।

ढूस—(सं स्त्री) गहना, काज्र
मृणाल ।
गहना । बनाव मृंगार ।

ढेंट—(सं स्त्री) कंकालत मेढेरा
धुतीर अंग विशेष ।
कमरमें घोंती की लपेट ।

ढेंटी—(सं स्त्री) एविश काशेटिका
गछ ।
करैल का पीछा या फल ।

[सं पुं] उक्रुत भावे कथा
कउँता ।

उद्दण्डता पूर्वक बकवाद करने
वाला ।

[वि] उक्रुत, उक्रुत ।
चपल । उद्दण्ड ।

ढें ढें—[सं स्त्री] भाटकीर मात,
फेक-फेकनि ।

तोते की बोली । व्यथ की
बकवाद ।

ढेक—(सं स्त्री) टोका, ठेका,
आश्रय, गकल, ग्रीतन अथवा
छवण ।

भारी वस्तु टिकाये रखनेकी थूनी ।
सहारा । संकल्प । हठ । गीत
का पहला पद ।

ढेकना—(वि) आश्रय लोवा वा
छेका दिया । आघात गश कबा ।
सहारा लेना या ढासना लगा
देना । पकड़ना । (आघात) रोकना
या सहना ।

ढेकान [सं स्त्री] छेका । छिबनि
गई ।

थूनी । विश्राम का स्थान ।

ढेकी—(सं पुं) दृढ़गना, डाँठ गना ।
हठी ।

ढेकुआ—(सं पुं) डाँठव टाकूरी ।
बड़ी तकली ।

ढेकुरी—[सं स्त्री] टाकूरी । लोशार कटा
तकली । लोहे का एक औजार ।

ढेढ़—(सं स्त्री) डाँड़ लगा ।
बक्रता ।

ढेढ़ा—[वि] देवका, ड बीया, कठिन,
टेरेबीया, उद्धत श्रवण ।
बक्र । तिरछा । कठिन, मुश्किल ।
उद्धत प्रकृति का ।

ढेढ़ाई—(सं स्त्री) डाँड़, जटि-
लता ।
बक्रता ।

ढेढ़े—(क्रि वि) अकाड़े-अकाड़े ।
घुमाव फिराव के साथ ।

ढेना—(क्रि स) धाँबावा वा धाव
दिया वा टोका कबा ।
तेज करने के लिये पत्थर आदिपर
हथियार आदि रगड़ना । मूँछ
उमेठना ।

ढेम—(सं स्त्री) झूझ शिखा, दीप-
शिखा ।
दीपशिखा ।

ढेर—(सं स्त्री) उक्काछ श्रव, छिन्न,
आटाश ।
गानेमें ऊँचा स्वर । ऊँचे स्वर से
पुकार ।

ढेव—(सं स्त्री) अभाग ।
आदत । एक लोकगीत ।

ढेवा—(सं पुं) कोष्ठी, जन्म-पञ्जिका ।
जन्म कुंडली ।

ढेसू—[सं पुं] पलाश कुल । शाव-
दीय नव बाव्रित होवा उँगव
वा सेई उँगवत गोवा गीत ।
पलास । एक लोग-गीत ।

ढोंचना—[क्रि स] चिलाई कबा,
बिक्री दिया ।
सिलाई करना । बुभाना ।

ढोंढा—(सं पुं) ढोंढा, नल ।
कारतूस । पानी गिरने के लिये
बरतन में लगाया नल ।

ढोंढी—[सं स्त्री] गरु नली ।
तरल पदार्थ गिरने के लिये नल
में लगाया छोटा मुँह ।

ढोकना—[क्रि स] बांश दिया ।
काम कबाब बाँधते बाँध दिया ।
किसी काम करते बक्त किसी से
बीच में पुछना या रोकना ।
(सं पुं) ढाडव पाँचि वा
बाँचन ।
बड़ा टोकरा या बरतन ।

ढोकरा—[सं पुं] पाँचि, बंवाहि ।
बाँस का बना हुआ बड़ा और
गोल पात्र ।

ढोकरी—[सं स्त्री] गरु पाँचि ।
छोटा टोकरा ।

ढोका—[सं पुं] खोर । काँधोवर
बाँचन ।
सिरा । नोक । कपड़े आदिका पल्ला ।

ढोट—(सं स्त्री) खोँचि, बिछूँचि ।
कमी । त्रुटि ।

ढोटका—[सं पुं] खरा-कूका,
उझ-मझ ।
किसी अलौकिक शक्ति या मूल-

प्रत पर विश्वास कर किया जाने
वाला प्रयोग । जादू । टोना ।

ढोडिक—(सं पुं) बंक्रुवा ।
पेट्ट ।

ढोडिस—[वि] शूँष्ट, उँपतीया ।
शरारती

ढोडी—[सं पुं] नीच अशुद्धि
वा श ।

नीच और तुच्छ वृत्तिका मनुष्य ।
ढोड़ी—(सं स्त्री) एक बाग
विशेष ।
एक रागिनी ।

ढोना—(सं पुं) बाँध । अविश विवाह
गीत ।

जादू । एक विवाह गीत ।

ढोप—(सं पुं) छाँशवीं ठूँगी ।
बड़ी टोपी । (जं-हैट)

ढोपो—[सं स्त्री] ठूँगी ।
सिर का एक परिधान । घातु की
पतली और गहरी ढकनी ।

ढोख—(सं स्त्री) गत्रिधि, गड्ढी,
गड्ढानी ।

मण्डली । पाठशाला ।

[सं पुं] बाँधीव गुणवत नगोवा
विशेष कब ।

यात्रियों पर लगानेवाला विशेष
कर ।

टोका—(सं पुं) पीटि, पीका,
टूटवी ।

महल्ला ।

टोली-(स्त्री)—(सं स्त्री) गक
टूटवी । पल ।

छोटा महल्ला । समूह, दल ।

टोह—[सं स्त्री] अमृगकान,
बातवि, ठिकना ।

खोज । खबर, पता ।

टोहना—[क्रि अ] डू-लोवा,
अमृगकान कबा ।

पता लगाना ।

टोही—(वि) डू-लउंठा ।
पता लगानेवाला ।

टौरना—(क्रि स) बिचार कबा,
अमृगकान कबा ।

जाँच करना । पता लगाना ।

ठ

ठ—वाञ्छन वर्णमालाब शपथ आश्रय ।
वर्णमाला का बारहवाँ व्यंजन
वर्ण ।

ठंठ—(वि) लठा ।
ठूँठा (पेड़)

ठंढ—(सं स्त्री) जाव, शीत ।
शीत । सरदी ।

ठंढई, ठंढाई—[सं स्त्री] चूँछो, झूबनि ।
वे मसाले या शरबत जिनसे शरीर
की गरमी शान्त होती और शीत-
लता आती है । पिसी हुई भांग ।

ठंढक—(सं स्त्री) शीत, जाव,
गच्छाव, छुंछि ।

शीत । जाड़ा । सन्तोष । तृप्ति ।

ठंढा(डा)—(वि) ठंछा, शीतल । शीत
सदं । शीतल । धीर । शान्त ।

ठंढा-युद्ध—[सं पुं] शीतल युद्ध ।
शीत युद्ध (अं-कोल्डवार)

ठकुर-सुहाती—(सं स्त्री) तोबा-
बोप ।

खुशामद ।

ठकुराइट[यत]-(सं स्त्री) अड्डा । अका
'ठाकुर' होने का भाव । बड़ों के
प्रति होनेवाली श्रद्धा या प्रीति ।

ठकुराइन—(सं स्त्री) गवाकिनी,
ठाकुर बा ठाकुर पत्नी ।

ठकुरानी । ठाकुर की पत्नी ।

ठकुराई—(सं स्त्री) अड्डा, ठाकुर बा
पद, गहनालि ।

ठाकुर का अधिकार, पद या
भाव । सरदारी । प्रधानता । बड़-
प्पन ।

ठगना—(क्रि सं) ठगना ।

धोखा देकर माल ले लेना ।
धोखा देना ।

(क्रि अ) ठगना, आचरित
होना ।

धोखा खाना । चकित रह जाना ।

ठग-पना—(सं पुं) धूर्तलि ।

धूर्तता ।

ठग-विद्या—(सं स्त्री) धूर्तलि,

ठग-अशक्ति ।

धूर्तता ।

ठगाना—[क्रि अ] ठगना ।

ठगा जाना ।

ठगिन (नी)—(सं स्त्री) ठगिनी ।

लुटेरिन । धोखा देकर लूटनेवाली
स्त्री ।

ठगो—(सं स्त्री) धूर्तलि, ठागाकि ।
धूर्तता । चालबाजी ।

ठगोरी, ठगोरी—(सं स्त्री) ठग-
विद्या, याशुविद्या ।

ठगनेकी विद्या । जादू ।

ठठा—[सं पुं] ठाठा-नक्का ।

परिहास । हँसी मजाक ।

ठठ—(सं पुं) जगजगद्, जगजगद् ।
बहुत सी वस्तुओं का व्यक्तियों
या समूह । ठाठ ।

ठठकीला—(वि) अर्थशाली ।
ठाठारा ।

ठठना—[क्रि स] बधा, गठना,
एकाग्रत कर्ता ।

उहराना । सजाना । समूह या
दल बनाना ।

(क्रि अ) थमकि बोधा, अलङ्कृत
कर्ता ।

अड़ना । ठाठ बनाना ।

ठठरी—(सं स्त्री) जर्क, गाँठ ।

हड्डियों का ढाँचा । किसी वस्तु
का ढाँचा । अस्थि ।

ठठाना—[क्रि स] बधा, किलावा ।
मारना । पीटना ।

(क्रि अ) थिल-थिलाई दर्श ।
जोर से हँसना ।

ठटेरा—(सं पुं) कैशब ।

बरतन बनानेवाला ।

ठठेरी—(सं स्त्री) कैशबरनी, कैशबर
बाबगाय ।

ठठेरे की स्त्री । ठठेरे का काम ।

[वि] कैशब-गश्करीय ।

ठठेरों का ।

ठठेरी—(सं स्त्री) ठाठो-गद्गवा ।
हँसी-दिल्लीगी ।

ठनक—[सं स्त्री] टोलब शक,
मनउ भूहि बथा बैदी भाव वा झूथ
चमड़े से मड़े हुए बाजेका शब्द ।
टीस । कसक ।

ठनकना—(क्रि अ) ठन्-ठन् शब्द
होवा । अलप अलप बिबोवा ।
ठन ठन शब्द होना । हलकी
पीड़ा होना ।

ठन ठन गोपाल—(सं पुं) अका-
बिला । झूथीया माझर, ठन-ठन
मदन गोपाल ।

निःसार वस्तु । निर्धन मनुष्य ।

ठनना—(क्रि अ) आबख होवा,
झुक लगी, टेडगार होवा ।
कोई काम तत्परता से आरम्भ
किया जाना । (लड़ाई) छिड़ना
पक्का होना । उद्यत या तैयार
होना ।

ठप—(वि) थमकि बोवा ।

जो चलता चलता किसी कारण
बहा रुक गया हो ।

ठप्पा—(सं पुं) गँछ, गँछठ
कटा मठा-फूल आदि ।

सांचा । सांचेसे बनाये बेल बूटे
आदि की छाप ।

ठमकना—[क्रि अ] छेउ धवा,
थमकि बोवा ।

ठिठकना । कुछ रुकना ।

ठमकाना (कारना)—[क्रि स]
थमोवा ।

चलते हुए को रोकना ।

ठरना—[क्रि अ] जाबत ठक्-ठक्-
कै कैपा ।

सरदी से अकड़ना या सुन्न होना ।

ठरा—[सं पुं] बब थोठा झूठा,
निकरुई मद ।

बहुत मोटा सूत । निकुष्ठ
शराब ।

ठवन—(सं स्त्री) थिन्न होवा वा
बहाव कार्या वा भाव ।

खड़े होने या बैठने का भाव ।

ठस—(वि) डाँठ, नखबूत, गंभीर,
एलेखवा, कपण ।

ठीस । कड़ा । मजबूत । भारी ।

आकसी । कंजूस ।

ठसक—(सं स्त्री) ठंइ, अडिमान,
लठगठनि ।

गवंपूर्ण चेष्टा । नखरा । ठाट-
बाट ।

ठसका—[सं पुं] टका, धूना ।
धक्का । ठोकर ।

ठसाठस—(क्रि वि) ठांइ थांइ
(भवि धका) ।

खूब कसकर भरा हुआ ।

ठहर—(सं पुं) ठांइ, पाक-बब ।
स्थान । रसोई का स्थान ।

ठहरना—(क्रि ज) बोधा । छांउनि
गधा, थितापि लगा, धैर्ब्य
धवा । 'होवा' धाव ।

चलते चलते कुछ रुकना । डेरा
डालना । स्थित रहना । टिकाऊ
होना । धैर्य रखना । "है" का
भाव ।

ठहराना—(क्रि स) बधावा,
छांउनि गछावा, थिबां रवा ।
चलने से रोकना । डेरा देना ।
टिकाना । त करना ।

ठहराव—(सं पुं) द्विषता, निम्न-
ग्रता, निर्बल ।

ठहरने की क्रिया या भाव ।
स्थिरता । समझौता ।

ठहरौनी—(सं स्त्री) थोड़क
आदिब परिवारा निर्यावण ।

विवाह में दहेज आदि का निश्चय
या करार ।

ठहाका—(सं पुं) थिज-थिजनि,
अठेशाञ्च ।

जोरकी हँसी अट्टहास ।

ठाँई—(सं स्त्री) ठांइ ।
स्थान ।

[वि] ठाव, काव ।
समीप । पास ।

ठाँठ—(वि) गीबज, उकान ।
नीरस । सूखा हुआ ।

ठाँय—(सं पुं, सं स्त्री) ठांइ ।
स्थान ।

[अव्य] ठाव ।
समीप ।

(सं स्त्री) बन्दूक शब्द ।
बन्दूक छूटने का शब्द ।

ठाँव, ठाँव—(सं पुं) ठांइ,
निर्यावित ठांइ ।

स्थान । ठिकाना ।

ठाँसना—[क्रि स] हँचि हँचि
धवावा ।

ठूँस ठूँस कर भरना ।

ठाकुर—[सं पुं] धैर्य, सेवताव
भूति, जावन, धनिताव । काव्य,

आरु माण्डव डेपाधि ।

देव मूर्ति । भगवान । पूज्य

व्यक्ति । जमींदार । क्षत्रियों

और नाइयोंकी उपाधि ।

ठाकुर-द्वारा—[सं पुं] देवताव

मन्दि । जगन्नाथ मन्दि ।

देव मन्दिर । पुरीका जगन्नाथ मन्दिर ।

ठाकुर-बाड़ी—(सं स्त्री) देवालय,

मन्दिर ।

देव स्थान । मन्दिर ।

ठाकुरा—[सं स्त्री] अन्न, आग्नि,

शायन ।

स्वामित्व । शासन । ठकुराई ।

ठाठ—(सं पुं) गँठ, गाजन-काठन,

आड़ब । दल ।

लकड़ी या बाँस का बना हुआ

ढाँचा (अं—फेम) । शृंगार ।

सजावट । आडम्बर । ढंग ।

सामग्री । समूह, अधिकता ।

ठाठ-बाट—[सं पुं] गाजन-काठन,

आड़ब ।

सजावट । तड़क-भड़क ।

ठाठर—(सं पुं) वांशव छिन्नि,

खँका, आवर-वाह ।

बाँस की टट्टा । अस्थि पंजर ।

कबूतर खाना । ठाट-बाट ।

ठानना—[क्रि स] गंल्ल कबा,

आबछ कबा ।

अनुष्ठित करना । पक्का करना ।

दृढ़ संकल्प करना ।

ठाम—[सं पुं] ज्ञान, गुज्ञा ।

स्थान मुद्रा ।

ठार—[सं पुं] अत्यधिक ज़ाब,

बबर ।

बहुत अधिक जाड़ा । हिम ।

ठाला—(सं पुं) निवश्रवा अदृष्ट ।

रोजगार का न हाना । बिलकुल

अभाव ।

(वि) निवश्रवा । एलेश्रवा ।

बेकार या निठल्ला ।

ठाली—[वि] निवश्रवा । शूण, शान्ति ।

जिसे कुछ काम-धाम न हो ।

निठल्ला । खाली । रिक्त ।

ठाहना—(क्रि स) गंल्ल कबा,

निर्गम कबा ।

संकल्प करना । मनमें विचार

पक्का करना ।

ठिंगना—(वि) छूटि चापब ।

नाटे कद या आकृति का ।

ठिकाना—(सं पुं) ठिकना, वाग-

ज्ञान । ज़िबता ।

जगह । निवास स्थान । स्थिरता

ठिठकना—(क्रि अ) धक्कि बोरा,

खड्डित होरा ।

चलते चलते अचानक रुक जाना ।

स्तब्ध होना ।

ठिठरना, ठिठुरना—(क्रि अ) डारते

कंपा, ठँठँवा लगना ।

सरदी से एठना या सिकुड़ना ।

ठिनकना—(क्रि अ) टेंव-टेंव करना ।

रुक रुककर रोना ।

ठिलिया—[मं स्त्री] गाँटिब

टैकलि ।

मिट्टी का छोटा घड़ा ।

ठिलुआ—[वि] निवशुआ । एललुआ

निठल्ला ।

ठिल्ला—[सं पुं] गाँटिब कलश ।

मिट्टी का घड़ा ।

ठीक—[वि] ठिक, उचित, उपयुक्त ।

यथार्थ । उपयुक्त सही । शुद्ध ।

(क्रि वि) उचित भावे ।

उचित रूप से ।

(सं पुं) पक्का बल्लोबल्ल ।

पक्की बात । स्थिर प्रबन्ध ।

ठीक-ठाक—[सं पुं] निश्चित

बादशहा ।

निश्चित प्रबन्ध ।

(वि) ভাল बकमे गाझु ।

शुश्रूषित ।

अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार ।

ठीकरा—(सं पुं) थैलाकान्ति, डिक्का-

झुलि । गणना बख ।

मिट्टी के बरतन का टुकड़ा ।

भिक्षा पात्र । तुच्छ वस्तु ।

ठीका—(सं पुं) ठिका शिष्टाप ।

धन आदि के बदलेमें कोई

काम करने की जिम्मेदारी लेना ।

इजारा । पट्टा ।

ठीका-पत्र—(सं पुं) ठिका-पत्र ।

ठीके के सम्बन्धमें लिखी शर्तों

वाला पत्र या कागज ।

ठीकेदार—(सं पुं) ठिकानाब ।

ठीका लेनेवाला ।

ठीबन—(सं पुं) थु वा थुई ।

थूक ।

ठीहा—(सं पुं) भीना वा गौदी ।

गीमा ।

बैठने के लिये ऊँचा स्थान या

गद्दी । सीमा ।

ठुकरना—[क्रि अ] मचा देना (गजाल

आदि) । आशिक कति होरा ।

ठाँसा जाना । आशिक हानि

होना ।

ठुकराना—[क्रि स] लथि उठा,

थनादब कवा ।

ठोकर लगाना । तुच्छ समझकर
दूर हटाना ।

ठुमकना—[क्रि अ] धुक-धंरुटेक
धोख कड़ा । झुंझुवा बाकि
नछा ।

बच्चों का उमंग पैर पटकते हुए
चलना । नाच में धुधरू बजाते
हुए चलना ।

ठुमकी—(स' स्त्री) थंयकि थंयकि
धोवा । एविध नूनौश कूठा ।
रुक रुककर चलने की क्रिया या
भाव । छोटी नमकीन पूरी ।

ठुमरी—[स' स्त्री] ए'वध-गौत ।
एक प्रकार का संगीत ।

ठुसना—[क्रि अ] हैँचि हैँचि
डबोवा ।
कस कर भरा जाना ।

ठुसाना—(क्रि स) पेटे पूराई
खुंझा । ठाँहि डबोवा ।
पेट भर खिलाना । कसकर
भरवाना ।

ठूँठ—(स' पुं) ठुकान गछ, नवा
गछ । हात कटो मांश ।
सूखा पेड़ । जिसका हाथ कटा
हो ।

ठूँठा—[वि] मठा । हात कटो मांश
बाजि ठाँहि । बिना पसियों

और टहनियों का (पेड़) । कटा
हाथवाला । खाली ।

ठूँसना, ठूसना—[क्रि स] पेटे पूराई
धोवा, हैँचि हैँचि डबोवा । खूब
कसकर भरना । पेट भर खाना ।

ठंगा—[स' पुं] बुड़ा आड़ूनि ।
अंगूठा ।

ठंठी—(स' स्त्री) कनामाकवि । बोतल
आदित नगोवा टिपा । कान की
मेल । बोतल आदि की डाट ।

ठेक—[सं स्त्री] ठेका । वाचनव
तिल । रौंवाव एविध चाल ।
चाँड़ । सहारे की टेक । पेंदा ।
घोड़ों की एक चाल ।

ठेकना—(क्रि स) ठेका दिया ।
सहारा लगाना ।
(क्रि अ) टिकि थका । बैर थका ।
टिकना । ठहरना ।

ठेका—[स' पुं] ठेका, आश्रय स्थल ।
तबलाव ताल । ठिका । आवाडा
सहारे की वस्तु । ठहरने या
रुकने की जगह । तबले की
ताल । ठोकर । ठीका ।

ठेठ—(वि) गकलो, बिडुल,
अकाद्वय, आबड ।
बिलकुल । खालिस । अकृत्रिम ।
शुद्ध । शुद्ध ।

[सं स्त्री] गश्क जबल भाषा ।

सीधी सादी बोली ।

ठेसना— (क्रि स) ठेलि निशा ।

निखर दाखिखर बोझा आनक
दिशा ।

घक्का देकर आगे बढ़ाना । अपना
दायित्व दूसरे पर रखना ।

[क्रि अ] बलपूर्वक कबा ।

बल प्रयोग या जबरदस्ती करना ।

ठेसा— (सं पुं) ठेना क्रिया ।

ठेना गांभी, ठेना-ठेलि ।

ठेलने की क्रिया या भाव ।

ठेलकर चलाई जानेवाली गाड़ी ।

घक्का । भीड़-भाड़ ।

ठेस—[सं स्त्री] आघात ।

हलका आघात ।

ठोंकना—(क्रि स) मबा (गञ्जाल
आदि) ; कोबोबा ।

अन्दर घँसाने के लिये ऊपर से
चोट लगाना । प्रहार करना ।

ठोंक-पीट—(सं स्त्री)(गञ्जाल आदि)

मबा क्रिया ।

ठोंकने, पीटने या मारने की क्रिया
या भाव ।

ठोंकर—[सं स्त्री] ठेछूटि, गोबर ।

कंकड़ पत्थर आदि से पैर में
लगनेवाली आघात । जूते के
अग्रभाग से किया जानेवाला
आघात ।

ठोंड़ी (ढ़ी)—(सं स्त्री) धूँडवी,
गांठि ।

चिबुक । दाढ़ी ।

ठौर—(सं पुं) एविष निर्ठाई ।
छराहेब ठाँठ ।

एक प्रकार की मीठी पकवान ।
पझियों की चोंच ।

ठोस—(वि) भोलिक, दृढ़, मजबूत ।
जो खोलला न हो, दृढ़ ।
मजबूत ।

ठौर—(सं पुं) ठाँइ, झविषा ।
जगह । मौका ।

ठौर-ठिकाना—[सं पुं] निदिष्टे
स्थान । (कथा) दृढ़ता वा
निश्चयता ।

रक्षित रूपसे रहनेका कोई स्थान ।
(बात में) दृढ़ता या निश्चय ।

ड

ड—वाङ्मन वर्णमालाब ज्ञानोपपन्न
आश्रय ।

वर्णमालाका तेरहवाँ व्यंजन वर्ण ।

डङ्क—(सं पुं) डुः (विष्ठा, योगास्थि,
अपस्वि) । नाट्यवत् ।

बिच्छू, मधुमक्खी आदिका कांटा
जिसे शरीर में घुसा कर वे जहर
फैलाते हैं । डंका ।

डंकना—[क्रि. अ] गर्जन करना ।
गरजना ।

डंका—(सं पुं) नाट्यवत् ।
एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा ।

डंकाकन—[सं स्त्री] डाइनेनी ।
डाकिनी ।

डंगर—(सं पुं) पशु, शक-यश ।
चोपाया । पशु ।

डंगी—(सं स्त्री) बाड़ी, जातीय कल,
डाइनेनी । ककड़ी । डायन ।

डंगू ज्वर—(सं पुं) एविस
ज्वर ।

एक प्रकार का ज्वर ।

डंठल—(सं पुं) ठानि वा ठानि ।
छोटे पौधों को पेड़ी और शाखा ।

डंठो—(सं स्त्री) ठानि वा ठानि ।
डंठल । किसी चीजमें लगा हुआ
कोई लम्बा अंश ।

डंड—[सं पुं] डोंब, ब्याघ्राय,
अर्थ दण्ड ।

डंडा । बाँह । एक प्रकार की
कसरत । अर्थ दण्ड ।

डंडवत—(सं पुं) दण्डवत्,
बाटित दोषल दि पदि कवा
येव ।

साष्टांग प्रणाम ।

डंडा—[सं पुं] लाठी, टोकरान ।
मोटी लाठी ।

डंडिया—[सं स्त्री] एविश शादी ।
एक प्रकार की साड़ी ।

[सं पुं] कब आपाशकाबी ।
कर बसूल करनेवाला ।

डंडी—[सं स्त्री] डार, डुलाचनिक
बावि, पशुन ठानि ।

छोटी लम्बी पतली लकड़ी ।

हूया । तराजू की ढाँड़ी । कमल
आदि की लम्बी नाल ।

[वि] ठूँकेकीया ।

चुगलखोर ।

हँडोरना—[क्रि स] बिछरा ।
बोजना ।

हंफना—[क्रि स] छिन्नवा वा बिछि-
याई मठा आटाश पावा ।
जोरसे जिल्लाना या 'रोना ।

हम्बर—[सं पु] आड़ब, बिछाव,
एविश छछताप ।
आहम्बर । विस्तार । एक प्रकार
का चंदोवा ।

हंस, डाँस—(सं पु) डाँश ।
मस्ती जैसा एक प्रकार का
मच्छर ।

हक—(सं पु) पाल उबि दिया
कापोब, झांझब डेक ।
जहाजों के पाल का टाट । एक
प्रकार का मोटा कपड़ा । जहाज
की ऊपरी छत ।

हकरना—[क्रि अ] शेरबलिया ।
बैल या भैंसे का बोलना ।

हकारना—(क्रि स) उगीब, गर्जन ।
खाने के बाद पेट की वायु शब्द
पूर्वक निकालना । किसी की

चीज हड़प लेना । खेर आदिका
बहाड़ना ।

डकैत—(सं पु) डकाइत ।
डाकू ।

डग—(सं पु) थोका ।
फाल । कदम ।

डगडगाना, डगडोलना डग—
मगाना—(क्रि अ) धक्-वक् करा ।
लड़खड़ाना । विचलित होना ।
(क्रि स) ऐकाल गिकाल
लबोरा, बिचलित करा ।
इधर उधर हिलाना या भूलना ।
विचलित करना ।

डगर—[सं स्त्री] बाटे ।
मार्ग ।

डगरा—[सं पु] कबनि ।
बाँस की पट्टियों का बना छिछला
पात्र ।

डगाना, डिगाना—(क्रि स)
आउटोवा, बिचलित करा ।
खिसकाना । विचलित करना ।
हिलाना ।

डटना—(क्रि अ) दृढ़तासे धिय दि-
थका ।
जमकर खड़ा होना । अपनी
जगह पर अड़ना ।

(क्रि स) ढोढा ।

देखना ।

ढढारा—[वि] ड़ोरा, वीर ।

लम्बी दाढ़ीवाला । वीर ।

ढढ़ना—(क्रि स) ढथ होना ।

झँझना । जलना ।

ढढ़ार (1), ढढ़ियल, ढढ्योरा—

(वि) ड़ोरा ।

जिसकी डाढ़ें हों । जिसकी दाढ़ी हो ।

ढपटना, ढपेटना—(क्रि स) गालि

दिया, डाँवि वा थपक दिया ।

डाँटना । घुड़कना ।

ढपोर शंख—[सं पुं] ओकाइड़ा;

माँढाँडा, कोढाँडाडुनी ।

डींग मारनेवाला । बड़े डील डील का, पर मूर्ख ।

ढफ—[सं पुं] ढाँग ।

चमड़ा मड़ा एक प्रकार का बड़ा बाजा ।

ढफली—(सं स्त्री) गरु ढाँग ।

छोटी ढफ ।

ढफाली, ढफफाली—(सं पुं) ड़नीरा ।

ढफ आदि बजानेवाला ।

ढढकना—[क्रि अ] बिब उठना, चक-

ना उठना ।

पीड़ा करना । टीस मारना ।

आँखों में आँसू आना ।

ढबढबाना—(क्रि अ) चकू चल-

चनीरा होना ।

आँसू से आँखें भर आना ।

ढबरा—(सं पुं) ढोवा ।

पानी का छिछला गड़वा ।

ढबल-रोटी—[सं स्त्री] पावरुटि ।

पावरोटी ।

ढग्गा—(सं पुं) ढेगा, बेगगाड़ीव

ढवा ।

ढकनदार गहरा बरतन । रेलगाड़ी

में की एक गाड़ी ।

ढमकना—[क्रि अ] छूबुबिगा, चकू

चल-चनीरा होना ।

पानी में डूबना, उतराना । आँखों में जल भर आना ।

ढमरू—[सं पुं] डवरक ।

एक प्रकार का चमड़ा मड़ा हुआ छोटा बाजा ।

ढमरू-मध्य—[सं पुं] अनाजी,

बोझक ।

जल या स्थल का वह पतला

भाग जो दो बड़े खण्डों को आपस में मिलाता है ।

डर—[सं पुं] डर ।

भय । आशंका ।

डरना, डरपना—(क्रि अ) डर
करना ।

भयभीत होना । आशंका करना ।

डरपाना, डरवाना, डराना—

[क्रि स] डर देखुंवा ।

भयभीत करना ।

डरपोक—(वि) डोक, कागुक्क ।

भीर । कायर ।

डरावना—(वि) डयानक, डयडव ।

भयानक । भयंकर ।

डरावा—(सं पुं) डय नगा कथा ।

डराने के लिये कही हुई बात ।

डल्ला—[सं पुं] डंठ । ठगवा । ठूँसवा ।

खण्ड । डेला । टोकरा ।

डलिया—[सं स्त्री] डल ।

छोटी टोकरी । एक प्रकार की
तस्तरि ।

डल्ली—(सं स्त्री) कटे डालान । डंठ ।

कटी हुई सुपारी । खण्ड ।

डसना, (डँसना)—(क्रि अ)

दंशन करना ।

दंशन करना ।

डसाना—[क्रि स] दंशन करवावा ।

बिछना पावि दिवा । बिछाना ।

दशन करवाना ।

डहकना—(क्रि स) ठगोवा ।

ठगना ।

(क्रि अ) ठग बोवा, बिनाग
करा, विग्रभि पवा ।

घोखा खाना । विलाप करना ।
फैलना ।

डहकाना—[क्रि अ] ठग बोवा ।

ठगा जाना ।

(क्रि स) ठगोवा, दिम दिम
बुलि निदिवा ।

ठग लेना । कोई वस्तु ललचा
कर न देना ।

डहडहा—(वि) डवगुव, अगग ।

हरा भरा । प्रसन्न । ताजा ।

डह डहाना—[क्रि सं] नदन-बदन

होवा, आवलित होवा ।

पेड़ पौधों का हराभरा या ताजा
होना । प्रसन्न या आनन्दित होना ।

डहना—(क्रि अ) दक होवा,

केश करना ।

जलना । वृष करना ।

(क्रि स) दक करा, कटे दिवा ।

जलाना । कष्ट पहुँचाना ।

डहर—[सं स्त्री] बाटे, शती पाँटे ।

रास्ता । बाकाश-गंगा ।

डहरना—(क्रि अ) गति करना ।

चलना ।

डॉक—(सं स्त्री) एविश डेवल

शाडू । बधि वा बाँधि ।

एक प्रकार का चमकीला पत्तर जो नगीनों की चमक बढ़ाने के लिये उनके नीचे लगाया जाता है या सजावट के लिये फूल आदि में लगाया जाता है। कै या वमन।

डॉकना—(क्रि स) डेर मेलि लग पोरा।

लाचना।

(क्रि अ) बनि करा, बैतिउवा।
कै करना।

डॉगर—(सं पुं) पशु, मूर्ख।
पशु। मूर्ख।

[वि] जेबेला, थीव।
दुबला-मतला।

डॉट-डपट, डॉटफटकार—
(सं स्त्री) डावि-धमकि।
क्रोधपूर्वक और डॉट कर कही जानेवाली बात।

डॉटना—[क्रि स] धमकि दिया।
घुड़कना।

डॉड़, डॉड़ा—[सं पुं] छत्री, जीमा,
अर्धपङ्क।
डण्डा। नाव खेलने का बल्ला।
सीमा। अर्थ डंड।

डॉड़ी—(सं स्त्री) आँठ, बेधा,
नखवीया, बर्बादा।

लकीड़। डाँड खेनेवाला आदमी।

मर्यादा।

डॉवों डोल—(वि) अश्वि।
अस्थिर।

डाइन, डायन—(सं स्त्री) डाइनी,
डूडूनौ, याश्विष्ठा बना तिरवाता।
मूतनी। कुहष्टि या जाडू टोने
वाली औरत।

डाकखाना—(सं पुं) डाक-घर।
डाकघर।

डाकना—[क्रि अ] जँपियाइ पाव
होवा।
कूदकर लाचना।

डाकर—(सं पुं) नदीव छव।
नदी के किनारे की वह भूमि
जहाँ नदी द्वारा लायी मिट्टी जमी
रहती है।

डाका—(सं पुं) डकाइति, नूटे-
पाटे।
बटमारी। लूट।

डाका-जनी—(सं स्त्री) नूटे-पाटे
क्रिया।

डाका डालने का काम।

डाकिनी—(सं स्त्री) डाइनी।
डाइन।

डाकू—[सं पुं] डकाइत ।

डाका डालनेवाला ।

डाकोर—(सं पुं) ठाकुर, भगवान,
विष्णु ।

ठाकुर । विष्णु भगवान ।

डाग—(सं स्त्री) ढोलब गादि ।

ढोल आदि बजाने की लकड़ी ।

डाट—(सं स्त्री) ठिंला, सोपा ।

बोतल आदि बन्द करने की
लकड़ी आदि की छिप्पी ।

डाटना—(क्रि स) सोपा दिया,

पेटे-पूबाई खोदा ।

एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कस
कर बैठाना । छेद या मुँह बन्द
करना । पेटभर खाना ।

[क्रि अ] निगड़ोछा भावे
गम्भीरत आगम ग्रहण कवा ।

डटकर सामने बैठना ।

डाढ़—(सं स्त्री) जामि फाँत ।

चवाने के चौड़े दाँत । दाढ़ ।

डाढ़ना—(क्रि सं) दृक् कवा, दृक्
वा कष्ट दिया ।

जलाना । संतप्त या दुखी करना ।

डाढ़ा—[सं स्त्री] दावानल, छूहे ।

दावानल । आग ।

(सं पुं) दीधन डाढ़ि थका

माझर ।

बड़ी दाढ़ीवाला ।

डाढ़ी—[सं स्त्री] डाढ़ि ।

दाढ़ी ।

डाबर—[सं पुं] डवा ।

गन्दा पानी जमा हुआ गद्दा ।

डाम—(सं पुं) कुश, आम्र ईश-
पात, डार नाबिकल ।

कुश । आम का मञ्जरी । कच्चा
नारियल ।

डामर—(सं पुं) शिव-उल्ल, शै-
छे, आङ्गूर । शालग्राम एठा ।

शिव-तन्त्र । हलचल । आङ्गूर ।

साल वृक्ष का गोंद ।

डामल—[सं पु] आधीन कावा-
बाग, निर्वागन । दण्ड ।

आजीवन कारावास । निर्वासन
दण्ड ।

डामाडोल, डाँवाडोल—' वि)

अश्वि, विचलित ।

चञ्चल । विचलित ।

डायरी—(गं स्त्री) दिन पञ्जी ।
दैनिकी ।

डार—[सं स्त्री] ठानि, डला ।

डाल । बाँसकी डलिया ।

डाह—[सं स्त्री] ठानि, डला,
विवाशदित बावहृत गहल

डना ।

पेड़ की शाखा । तलवार का फल । बाँस की डलिया । विवाह में डलिया में सजाकर दी जाने वाली दहेज आदि की वस्तु ।

डालना—(क्रि सं) फेंलाना, गिलाना विखुद कना ।
किसी चीज में गिराना या छोड़ना । मिलाना । फैलाना । बिखाना ।

डाहनी—(सं स्त्री) डना, उपहार, छवा-डना ।
बाँस की डलिया । उपहार की वस्तु । अनाज को भूसे से अलग करने की क्रिया या भाव ।

डाहना—[सं पुं] बेटा ।
बेटा ।

डाहना—(क्रि सं) पीछे दिश, प्रक्षेप कना ।
बिखाना । डेंसना ।
(सं पुं) बिछना ।
बिस्तर ।

डाह—(सं स्त्री) दाह ।
ईर्ष्या ।

डाहना—[क्रि सं] आनन बनत प्रेषण करि कना ।

किसी के मन में दाह या ईर्ष्या उत्पन्न करना । कष्ट पहुँचाना ।

डाही—(वि) दाहकबीज ।

दाह या ईर्ष्या करनेवाला ।

डिंगर—(सं पुं) शकत बाइश, नौचमाइश, डलाम, दाग ।

मोटा आदमी । पाजी । गुलाम ।

डिंगल—[वि] गीठ ।

नीच ।

[सं स्त्री] बाजस्थानर डाटे आरु छावण कवि गरुल दावदाव कना डावा ।
राजस्थानी भाषा ।

डिंडम—[सं पुं] डशक ।
डुग-डुगी ।

डिंब—(सं पुं) डिभा, कगी, कला-कठा, गुंज ।

जीव जन्तुओं में स्त्री जातिका वह जीवाणु जो वीर्य के संयोग से बच्चों का रूप धारण करता है ।
अंडा । रोना घोना । दंगा ।

डिंभ—(सं पुं) केहूवा, गुर्ध, आडश्व, अभिमान ।

छोटा बच्चा । मूर्ख । आडम्बर ।
अभिमान ।

डिक्री, डिगरी—[सं स्त्री] शरीरकार
उपाधि, अंश, डिग्री
परीक्षाओं की उपाधि । अंश,
कला । दीवानी अदालत का
वादी के पक्ष में जयपत्र ।

डिठौना, डिठौरा—[सं पुं] नखब
नालागिबटेल केरूदाब कपालत
दिग्ग फोटे ।
बच्चों के मस्तक पर लगाया
जानेवाले काला काजल का टीका ।

डिबिया—[सं स्त्री] टेया वा
टेयी ।
छोटा डिब्बा ।

डिमडिमी—(सं स्त्री) टोलोक,
डूल्कि ।
डुगो बाजा ।

डीग—(सं स्त्री) उकाइडां ।
घमण्ड में कहीं जानेवाली बात ।

डोठ—[सं स्त्री] दृष्टि, नखब ।
दृष्टि । बुरी नजर ।

डीठना—(क्रि अ) दृष्टिगोचर
होना ।
दिखाई देना ।

(क्रि अ) चोरा, नखब कबा ।
देखना । नजर लगाना ।

डोल—[सं पुं] आगैब शरीरब आकृति ।
प्राणिबों के शरीर की आकृति ।

डोह—(सं पुं) आय-देवता ।
ग्रामदेवता ।

डुंड, डुगडुगी, डुगी—[सं स्त्री]
धंखरी नाईवा डबक ।

चमड़ा मड़ा हुआ एक छोटा
बाजा ।

डुक, डुका—(सं पुं) डूक ।
मुका ।

डुबकी—[सं स्त्री] डूब, डूब ।
पानीमें डूबने की क्रिया या भाव ।
गोता ।

डुबाना, डुबोना—(क्रि अ) डूबोना,
नष्ट कबा ।

पानी या तरल पदार्थ में समूचा
डालना । नष्ट करना ।

डुबाव—[सं पुं] डूब नाबिब पना
गंभीरता ।

डूबने भर की गहराई ।

डुलाना—[क्रि स] लबोना, उटोना ।
डोलने में प्रवृत्त करना । हटाना ।

डूंगर, डूंगा—(सं पुं)

पाशव, गाँव ।

छोटी पहाड़ी । बस्ती ।

डूबना—(क्रि अ) डूब दिना, अस्त

होना, नष्ट होना । तल्लो

होना ।

पानी या किसी तरल पदार्थ में पूरा समा जाना । सूर्य चन्द्र आदि का अस्त होना । नष्ट होना ।

तल्लो होना ।

डेंडसी—(सं स्त्री) शुष्क, गिलाखि ।

ककड़ी जातीय सब्जी ।

डेढ़हा, डोरहा—(सं पुं) ढोबा-

गा ।

पानी में रहनेवाला एक विषहीन सर्प ।

डेढ़—(वि) डेव ।

एक ओर उसका आधा ।

डेढ़ा, डेवड़ा, ड्योढ़ा—(वि) डेव

गुण ।

डेढ़ गुना ।

डेरा—(सं पुं) छाँनी, डूँ ।

टिकान । पड़ाव । खेमा ।

(वि) बाँकुल ।

बाँया ।

डेराणा—[क्रि अ] डर पोना ।

डरना ।

(क्रि स) डर डूँडा ।

किसी को डर दिखाना ।

डेला—(सं पुं) चक्र कोत,

कोनो बस्तुब टूँकुवा, टपवा ।

आँख का कोया । किसी चीजका

टुकड़ा । डेला ।

डेहरो—(सं स्त्री) डाँत धवनै

गुरु वाचन । वाँच'वा ।

अन्न रखने का छोटा बरतन ।

घर की दहलीज ।

डेन, डैना—[सं पुं] डेडका,

पाथि ।

चिड़ियों का पंख ।

डोंगर—(सं पुं) गुरु पाशव,

टिला ।

पहाड़ी । टीला ।

डोंगा—[सं पुं] डिङ्गा, डाँड

नाँव ।

बड़ी नाव ।

डोंगी—(सं स्त्री) गुरु नाँव ।

छोटी नाव ।

डोई—(सं स्त्री) हैँता, कबच ।

बी निकालने या चासनी चलाने

की करछी ।

डोकी—(सं स्त्री) काठव बाँटि ।

काठ की कटोरी ।

डोम, डोमड़ा—[सं पुं] डोम,

छाड़ान ।

एक जाति का नाम ।

डोमनी—[सं स्त्री] डूमनी ।

डोम जातीया स्त्री ।

डोर—[सं स्त्री] गरु शूठा, गद्दाश ।

पतला धागा । सहारा ।

डोरा—(सं पुं) डबि, श्लेषपाश,

काठजब बेथा ।

मोटा धागा । स्नेह-सूत्र । काजल

या सुरमें की रेखा ।

डोरी—[सं स्त्री] बटि, बरुन ।

रम्मी । वन्धन ।

डोरे—(क्रि वि) लगते ।

साथ । संग ।

डोल—(सं पुं) लवचव कवा कार्या,

छलछूल, डाउन कलह ।

हिलने डोलने की क्रिया या भाव ।

हलचल । पानी रखने का बड़ा

बरतन । झूला । पालकी ।

(वि) चरुल ।

चंचल ।

डोलची—(सं स्त्री) गरु पाख ।

छोटा डोल ।

डोलना—(क्रि स) गति कवा,

लवचव कवा, विचलित होना ।

गति होना । हिलना । चलना ।

विचलित होना ।

डोला—(सं पुं) ढोला ।

बड़ी पालकी । झूले का झोंका ।

डोलाना—(क्रि स) झूलनि दिया,

लबावा ।

डोलनेमें प्रवृत्त करना । हिलाना ।

डोली—(सं स्त्री) गरु ढोला ।

छोटी पालकी ।

डौँडो—(सं स्त्री) दवा बाण्ड,

घोषणा ।

डुग डुगी । घोषणा ।

डौल—(सं पुं) आकृति, गँठ,

युक्ति तर्क ।

आकृति । ठाँवा । युक्ति ।

डौलियाना—(क्रि स) कुलिया,

गँठ दिया ।

फुसलाकर अपने अनुकूल बनाना ।

गड़कर ठोक करना ।

ड्योड़ी—[सं स्त्री] झुदाव-डलि ।

फाटक । बाहरी दरवाजा ।

ड्योड़ीदार—(सं पुं) झुबो, पह-

बदाव ।

फाटक पर रहनेवाला । पहरेदार ।

दरवान ।

ढ

ढ—वाञ्छन वर्णमालाव चतुर्थ अक्षर ।
वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन
वर्ण ।

ढँकना, ढाँकना—(क्रि स) ढाकनि
दिया ।

ऊपर से कोई वस्तु रसकर ओट
में करना ।

ढँख—(सं पुं) गलागंध भूलि ।
ढाक या पकास का पोषा ।

ढंग—(सं पुं) श्रवण, ठाँठ,
आचरण ।
कोई काम करने की शैली । कोई
काम करने का प्रकार । रचना ।
युक्ति । चाल—चलन ।

ढँगलाना—(क्रि स) वगबाइ
पेलोवा ।
लुढ़काना ।

ढँगी—(वि) कैंकिदाव, चड्ड ।
चालबाज । चतुर ।

ढँदोरना—(क्रि स) बिठवा ।
भूँदना ।

ढँदोरा—(सं पुं) ढोल, ढोल-
पिठि सुनोवा बोलवा ।

ढोल । डौडी । ढोल बजाकर की
जानेवाली घोषणा ।

ढँदोरिया—(सं पुं) ढोलपिठि
जाननी दिउँठा ।
मुनादी करनेवाला ।

ढँपना, ढकना, ढपना—(क्रि अ)
ढाकबाइ थका ।

किसी वस्तु के नीचे या आड़में
होने से दिखाई न पड़ना ।

[सं पुं] ढाकनि ।
ढकन ।

[क्रि स] ढाकनि दिया ।
ढाँकना ।

ढखनी—(सं स्त्री) ढाकनि ।
ढाँकने की वस्तु । ढकन ।

ढकेलना—[क्रि स] ढकिगाइ
निग्रा ।

धक्के से या ठेक कर आगे
गिराना या बढ़ाना ।

ढकोसला— (सं पुं) कोमल,
आड़बल । बाहिरे बः-छः
डितरे कोवाडाडूबी ।
कौशल । आडम्बर ।

ढकन— (सं पुं) टाकनि ।
ढाकने की वस्तु ।

ढका— [सं पुं] टाक-टोल ।
बड़ा ढोल ।

ढकर— [सं पुं] बखाल, आड़बल ।
भ्रमट । आडम्बर ।

ढडढा— (वि) कुण्डलित, जड्डनि
आवश्यकता से अधिक बड़ा और
बेढंगा ।

[सं पुं] शबल, गाज-गज्ज ।
ढाँचा । आडम्बर ।

ढपोर शंख— [सं पुं] धूर्छ, आड़बल-
पूर्ण ।
धूर्त । आडम्बर धारी ।

ढब— [सं पुं] शबल, अंघानी,
शुभाव ।

कोई काम करने की विशेष
प्रक्रिया । तरीका । बनावट ।
उपाय । स्वभाव । आदत ।

ढरकना, ढलकना, दुलकना—
(क्रि स) छानि पना । बागबि

पना ।

ढलकना । लेटना ।

ढरका— (सं पुं) पञ्चक उवध आदि
खुबाबले बाहल छुडा ।
चौपायों को दवा आदि पिलाने के
लिये बाँस का चोंगा ।

ढरकाना, ढलकाना, दुलकाना—
[क्रि स] छानि दिना । बोझाई
दिना ।
ढलकने में प्रवृत्त करना ।

ढरकी— (सं स्त्री) बाटका ।

करवे का वह अंग जिससे सूत ताने
के आरपार आता जाता है ।

ढर कौहा— (वि) बागबि बाँडुता ।
ढरकने या ढलनेवाला ।

ढरनि— [सं स्त्री] बागबि योवा
क्रिया । शानि-जालि पना
क्रिया । छान, दशानु ७७ ।
ढलने की क्रिया या भाव ।
हिलने डोलने की क्रिया ।
कुकाव । दयालुता ।

ढरहरा, ढरारा— [वि] अछनीया ।
ढालुवा ।

ढरिआना— (क्रि अ) छानि दिना ।
बगवाई दिना । छरुना ढाँका ।

ढालना, गिराना या बहाना ।
 आँसू बहाना ।
ढर्रा— (सं पुं) श्वन, पक्षि,
 आचरण ।
 काम करने की बँधी हुई शैली ।
 पद्धति । आचरण ।
ढलकना— [क्रि अ] वै पवा वा
 बागवि पवा । कृपादृष्टि
 होना ।
 तरल पदार्थ का आधारसे नीचे
 की ओर जाना । लुढ़कना ।
 किसी पर कृपालु होना ।
ढलका— (सं पुं) गदाय चक्र
 पवा पानी वै थका बेबाव ।
 आँखों से पानी बहने का रोग ।
ढलना— (क्रि अ) वै बोवा ।
 पाव है बोवा । आनन प्रति
 आकृष्ट होवा । गँछत चला ।
 बहना । विगत होना । उतार पर
 होना । किसी की ओर आकृष्ट
 या प्रवृत्त होना । सचि में ढाला
 जाना ।
ढलवाँ, ढालुआँ, ढालू— (वि)
 एचनीया, गँछत कटा ।
 जिसमें ढाल या नीचे की ओर
 उतार हो । सचि में ढालकर
 बनाया हुआ ।

ढलवाना—(क्रि स) चालना ।
 ढालने में प्रवृत्त करना ।
ढलाई—[सं स्त्री] चला कार्य वा
 डाव वानछ ।
 ढालने की क्रिया, भाव या
 मजदूरी ।
ढलैत— (सं पुं) चाल वावशाव
 कवा गैनिक ।
 ढाल रखने वाला सिपाही ।
ढवरी—(सं स्त्री) झूझ भिखा,
 आगछि ।
 ली । लगन ।
ढहना—(क्रि अ) बागवि पवा,
 नष्ट होवा ।
 (मकान आदि का) गिर पड़ना ।
 नष्ट होना ।
ढहरना—(क्रि अ) चलि पवा, आकृष्ट
 होवा ।
 ढलना । आकर्षित होना ।
ढहाना—(क्रि स) बगवोवा,
 श्वन कवोवा ।
 किसी से ढाने का काम कराना ।
 ध्वस्त कराना ।
ढाँचा—[सं पुं] गँछ, जँका,
 गः ।
 कोई चीज बनाने के पहले उसके

अंगों को जोड़कर तैयार किया
हुआ पूर्व रूप । पंजर । गढ़न ।

ढाँड़ा—(सं पुं) गुरु ईश्वर ।
छोटा कुँआ ।

ढाँसी—(सं स्त्री) डकान काठ ।
सूखी खाँसी ।

ढाक—[सं पुं] पलाशव गृह, युक्त
बालावाँ टोल ।
पलाश का पेड़ । लड़ाई का
ढोल ।

ढाड़—(सं स्त्री) छिन्न, आटाश ।
चिन्हाड । चिल्लाहट ।

ढाढ़स, ढाढ़स—(सं पुं) गाँवना,
आशय ।
सात्वना । आश्वासन । हिम्मत ।

ढाना, ढाढ़ना—(क्रि स) ख
आदि बगवोरा ।
मकान आदि गिराना । गिराना ।

ढारना, ढाढ़ना—(क्रि अ) टालि
प्रिया, नद खोरा, गौछत कटो ।
पानी या कोई तरल पदार्थ नीचे
गिराना । शराब पीना । बेचना ।
साँचे में ढालना ।

ढाला—(सं स्त्री) टाल, एलनीश ।
तलवार आदि का बार रोकने का

चमड़े का उपकरण । उतार ।
ढंग । ढालने की क्रिया या
भाव ।

ढासना—(सं पुं) आउलिन पना
बख, आशय ।
वह चीज जिमपर पीठ का
सहारा लगाया जाय । सहारा ।

ढिंढोरा—[सं पुं] घोषणाव नावे
वाला टोल ।
वह ढोल जिसे बजाकर किसी
बात की घोषणा की जाती है ।

ढिग—(क्रि वि) उचवत ।
पास ।
[सं स्त्री] गाँधीपा ।
निकटता । किनारा ।

ढिठाई—(सं स्त्री) शृङ्खला, अकुचित
गाइज ।
धृष्टता । अनुचित साहस ।

ढिबरी—[सं स्त्री] गाँव टाकि ।
रुबिया के आकार का दीपक ।

ढिलाई—[सं स्त्री] ढिला, निश्चिन्
भाव ।
ढंला होने का भाव ।
निश्चिन्ता ।

ढिसरना—[क्रि अ] पिछ्नि पना,
अशुद्ध होना ।

फिसल या सरक पड़ना । प्रवृत्त होना ।

ढींगर—(सं पुं) शकत-आवड, माइश, पछि वा उपपछि ।

हट्टा कट्टा आदमी । पति । उप-पति ।

ढीढ़ा—(सं पुं) ँलमि पंवा पेट, गर्ड ।

निकला हुआ पेट । गर्भ ।

ढीठ—(वि) निलाऊ, निर्डीक । घुष्ट । बे-अदब । निडर ।

ढील—[सं स्त्री] ँकवि, टिला । सिर के बालों का कीड़ा । ढिलाई ।

(वि) सोलोक-टोलोक । ढीला ।

ढीलना—[क्रि म] टिला कवा ।

ढील करना । बन्धन से अलग करना । थोड़ी स्वतंत्रता देना ।

ढीला—(वि) टिला, ढिळा, मइब, एलेइवा ।

ओ कसा हुआ या तना हुआ न हो । गीला । धीमा । सुस्त, आलसी ।

ढीलापन—[सं पुं] शिथिलता । शिथिलता ।

ढुँइवाना—(क्रि स) बिचबोवा । संधान करवाना ।

ढुक्ना—(क्रि अ) सोमोवा, अँपियाई पंवा, उपस्थित होवा ।

घुसना । टूट पड़ना । किसी के पास पहुँचाना ।

ढुकाना—(क्रि स) आनर थावा सोमोवा । घुसाना ।

ढुरकना, ढुलकना—(क्रि अ) मूर आछाई कवि बागवि पंवा, अमूरक होवा ।

चक्कर खाते हुए नीचे गिरना । लुढ़कना । किसी पर अनुरक्त होना ।

ढुलाना—[क्रि अ]

मूर आछाई कवा, कठियाई निशा ।

ढुलकना । ढोया जाना ।

ढुल्लई—(सं स्त्री) कठिवा वानठ ।

ढोने या ढुलाने का भाव वा मजदूरी ।

दुखना—(क्रि स) बगबोरा, नड
कवा, अगम कवा, आनब बाबा
कड़िउवा ।

लुढ़काना । झुकाना । प्रसन्न
करना । ठोने का काम दूसरे से
कराना ।

दूँड़ना—[क्रि स] विठना ।
पता लगाना । खोजना ।

दूइ—[सं पुं] टिला, छूप ।
ढेर । टीला । मिट्टी का ऊँचा
स्तूप ।

ढेंकली, ढेंकी—[सं स्त्री]
ढेंकी ।
सिचाई के लिये कुएँ से पानी
निकालने का एक यंत्र । धान
कूटने का एक यंत्र ।

ढेंढर—(सं पुं) आछिनाई वा
आछिनाई ।

आँख के डेलेपर उमरा हुआ
मांस । (आँख का एक रोग)

ढेंढ़ी—(सं स्त्री) कपाश आदिब कब ।
कपास, रामतरोई आदि का
बीज ।

ढेर—(सं पुं) ढेर, ढ'न ।
एक जगह रखी हुई बहुत सी

बस्तुओंका ऊँचा समूह ।

[वि] बहूत, बेहि ।

बहुत । ज्यादा ।

ढेरी—[सं स्त्री] ढ'न ।

ढेर । राशि ।

ढेला—(सं पुं) छपवा, डोखव ।

मिट्टी, ईंट आदि का छोटा
टुकड़ा । टुकड़ा । एक प्रकार का
धान या चावल ।

ढैया—(सं पुं) आटेछ लेवी
ढगी ।

ढाई सेर का बटखारा ।

ढोंका—(सं पुं) गिल आदिब
डाँडव फूँकना ।

पत्थर या और किसी चीज का
बड़ा अलगद टुकड़ा ।

ढोंग—[सं पुं] आड़ब, धूर्तता ।
ढकोसला । पाखंड ।

ढोंगी—(वि) भाँउ कबौंठा ।

ढोंग रचनेवाला । पाखंडी ।

ढोंढ़ी—[सं स्त्री] नाई वा
नाभि । कपाश आदिब गुँठि ।
नाभि । कपास, पोस्ते आदि का
डोडा ।

ढोटा—(सं पुं) नेटा, न'वा ।
बेटा । लड़का ।

ढोना—(क्रि स) काढ़ना ।

सिर या पीठ पर बोझ लाद कर
ले जाना । दुसरे दिन काटना ।

ढोर—(सं पुं) भृश ।

चोपाया । पशु ।

ढोरना—(क्रि स) ढोवना आदि
वा दिना । बगबाई दिना ।

ढुलकाना । लुढ़काना । (चेंबर
आदि) डुलाना ।

(क्रि अ) माटित बागबा ।

अश्रुवर्ष करना ।

जमीन पर लोटना या लुढ़कना ।

किसी का अनुयायी बनकर पीछे
चलना ।

ढोलक—[सं पुं] गरु ढोल ।

छोटा ढोल ।

ढोलकिया—[वि] हूनीया ।

ढोल बजाने वाला ।

ढोलकी—[सं स्त्री] गरु ढोल ।

ढोलक ।

ढोलन—(सं पुं) भक्ति, दया,

वच ।

पात । वर ।

ढोलना—(सं पुं) ढोलन निठिना

माझि ।

ढोलक जैसा जंतर ।

(क्रि स) ढालि दिना ।

ढालना । ढोलाना ।

ढोला—[सं पुं] अविश गरु कीटा ।

जीवात्मका शरीर, प्रियतम ।

अविश शीत ।

एक प्रकार का छोटा कीड़ा ।

सीमा चिह्न । शरीर । प्रियतम ।

एक प्रकार का गीत ।

ढोली—(सं स्त्री) दूधेश शिला पानक

शुठ ।

दो सो पानों की गड्डी ।

ढोवा—(सं पुं) काढ़ाई निपा क्रिया ।

बझा वा चवपावक दिना

उपशान ।

ढोये जाने की क्रिया या भाव ।

दूसरे का माल उठा ले जाना ।

राजा या सरदार को प्रदत्त भेंट ।

ढोर—(सं पुं) वरव ।

ढंग ।

ढौरना—(क्रि स) शेफाल-जिकाले

बूढावा ।

इधर उधर घुमाना ।

ढौरी—[सं स्त्री] गुरुकृति ।

रट । घुन । ढंग या तरीका ।

ण

ण—व्यञ्जन वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यंजन वर्ण ।

त

स—व्यञ्जन वर्णमाला का सठ्ठम अक्षर ।
वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन ।

तंग—[वि] गङ्गीर्ण, ठेक, विरल ।
सँकरा । सकुंचित । कसा ।
परेशान ।

तंगी—(सं स्त्री) गङ्गीर्णता' निश्चि-
नता, नाटिनि ।
तंग होनेका भाव । संकरापन ।
आर्थिक कष्ट । कमी ।

तंजेब—[सं स्त्री] एविश मखनल ।
एक प्रकार की मलमल ।

तंडुल, तंदुल—(सं पुं) छाउन ।
चावल ।

तंत—[सं पुं] तंत, तड, तड्ड ।
तन्तु । तत्व । तंत्र ।

तंतु—(सं पुं) श्रुता, गच्छान,
विद्या, तंत ।
सूत । सन्तान । विस्तार । तांत ।

तंतुवाय—[सं पुं] तंत ।
जुलाहा ।

तंत्रकार—(सं पुं) वाद्य वादक ।
बाजा बजाने वाला ।

तंदुरुस्त—(वि) नोबोशी ।
नीरोग ।

तंदुरुस्ती—(सं स्त्री) श्रुत्या ।
स्वास्थ्य ।

तंदूर—[सं पुं] कटि ठेस्राव कदा
डाडर चोका ।
रोटी पकाने की बड़ी भट्टी ।

तंदेही—(सं स्त्री) अविश्रुत, छेटी,
गतरुवाणी ।
मेहनत । कोशिश । ताकीद ।
तल्लीनता ।

तंबाकू, तमाकू—(सं पुं) शर्णात ।
शुरती । शुरती से बना हुआ

चिलमपर रखकर पीया जानेवाला
गिला पदार्थ ।

। सँबीह—(सं स्त्री) निर्दिष्ट, उप-
पन्न ।

नसीहत । चेतावनी ।

सँबूर—(सं पुं) गुरु चोल ।
एक प्रकारका ढोल ।

सँबूरा—(सं पुं) तान-गुना ।
तानपुरा ।

सई—(प्रत्यय) पंथा, प्रति ।
से । प्रति ।
(अव्य) कारण ।
लिये ।

सई—(सं स्त्री) तारा, काशीर पत्ते
उबां चरु वा केवाही ।
छोटा तवा ।

सह—(अव्य) तेजसा, ऐहपदे ।
तब । त्यों ।

सऊ—(अव्य) उभांनि, तह्मनि ।
तो भी । तथापि ।

सक—[अव्य] लैकर ।
पर्यन्त ।

(सं स्त्री) एकेशित्वे छाई
थका क्रिया ।

ताकने की क्रिया या भाव ।
टकटकी ।

सकदजा—(सं पुं) जानाव ।
अन्दाज । कूत ।

सकदीर—[सं स्त्री] भागा ।
भाग्य ।

सकदीरवर—(वि) भागवान ।
भाग्यवान ।

सकना—[क्रि अ] दृष्टिपात करना ।
इष्टिपात करना ।
[सं पुं] छाई-थाकोठा ।
ताकनेवाला ।

(क्रि स) बाँट छोड़ा ।
आसरा देलना ।

सकनवर—[सं पुं] अभिमान ।
अभिमान ।

सकरार—(सं स्त्री) गंवर, विवाद ।
हुज्जत । विवाद ।

सकरीर—(सं स्त्री) कथा-बतवा,
बकूठा ।
बात-चीत । भाषण ।

सकला, सकुआ—(सं पुं)
भला काठि ।

सूत लपेटने का टेकुआ ।

सकली—(सं स्त्री) टाकुरी ।

सूत कातने का छोटा-सा औजार ।

सकलीक—(सं स्त्री) कष्ट, अशुविष।

कष्ट । विपत्ति ।

सकलीक—(सं पुं) निष्ठाचार ।

शिष्टाचार ।

सकसीम—[सं स्त्री] भगोवा क्रिया,

विभाग ।

बाँटने का भाव या क्रिया ।

विभाग ।

सकसीर—(सं स्त्री) अपराध,

लोभ ।

अपराध । कसूर ।

सकजा, सकादा—(सं पुं) ताशिया ।

किसी से प्राप्य धन पाने या

आवश्यक कार्य करनेके लिये फिर

से कहना या स्मरण दिलाना ।

सकाबी—[सं स्त्री] कवि-बंध ।

बीज आदि खरीदने के लिये

दिया गया कृषि ऋण ।

सकिया—(सं पुं) गौर, आश्रय ।

बालिश । विश्राम का स्थान ।

आश्रय ।

सकिया-कलाम—(सं पुं)

कोनो बाज्जिब थिय नक बा

बाक्यान्त, याव अयोग कथाई

कथाई होवा सेवा बाय ।

सकन-सकिया । वह शब्द या

वाक्य जो किसी आदमी की बात-

चीत में हमेशा निकला करता

है ।

सक—(सं पुं) पैर बोन ।

मट्टा ।

सकण—(सं पुं) काँठ, निज

आदिबे मूर्ति ठेकाव कवा ।

लकड़ी, पत्थर आदि गड़कर

मूर्तियाँ बनाना ।

सकमीना—(सं पुं) आमाज,

अज्ञान ।

अन्दाज । अनुमान ।

सकलुस—[सं पुं] उपनाम ।

उपनाम ।

सकत—(सं पुं) बाजपाँटे, निःश-

गन, जानपैरा ।

राज सिंहासन । बड़ी चौकी ।

सकती—(सं स्त्री) गरु तन्ना,

फल ।

छोटा तन्ना । पटिया (स्लेट)

सगडा—[वि] बनवान, मजबूत,

मकत-आवत ।

बलवान । मजबूत । अच्छा और

बड़ा ।

सगमा, सगमा—[सं पुं] पदक ।

पदक ।

संगारि—(सं पुं) अष्टाजिका
गाँवों में होना, गिनती आदि
तिथि का गणना, गिनती, बालि,
छिमेक आदि गिन मिलाते हैं।
कहा 'ठाई'। उदाहरण पौता गणित ।

उत्तरी गाड़ने का गढ़ना । वह
स्थान जहाँ इमारत बनाने का
बूना, गारा आदि साना जाता है ।

संगारि—[सं पुं] परिवर्तन ।
परिवर्तन ।

सञ्जना, सपना—(क्रि अ) गन्ध
होना, अद्भुत होना ।
गरम होना । जलना । संतप्त या
दुखी होना ।

सञ्चा—(सं स्त्री) छान ।
चर्म ।

सज्जना—(क्रि स) त्याग करना ।
त्यागना ।

सज्जरबा—[सं पुं] अद्भुत, अज्ञान ।
अनुभव । प्रयोग ।

सज्जरबाकार—(सं पुं) अद्भुत ।
अनुभव ।

सज्जबीज—(सं स्त्री) गन्धति,
गौरव, बलवत्ता ।
सम्पत्ति । फैला । बन्दोबस्त ।

सट—(सं पुं) अस्मन, नदी वा
गाँव का पार ।
प्रदेश । क्षेत्र । नदी या समुद्र का
किनारा ।

(वि) उच्च ।
पास ।

सटस्थ—[वि] पास, थका,
निवर्तक ।
तट या किनारे रहनेवाला ।
निरपेक्ष ।

सटस्थता—[सं स्त्री] निवर्तकता ।
निरपेक्षता ।

सटिनी—(सं स्त्री) नदी । नदी ।

सटी—[सं स्त्री] नदी का पार ।
उपत्यका ।
नदी का किनारा । उपत्यका ।

सट्कना—(क्रि अ) मर-मरके
डगना वा काटि डोना ।
'सट्' शब्द के साथ टूटना । किसी
चीज का सूखकर फट जाना ।

सट्क भट्क—(सं स्त्री) आक-
अक ।

आट-बाट । आडम्बर ।

सट्का—(सं पुं) बोझा, गुरुता ।
गति अक्षिप्त गुरुता ।
बहुत सबेरा । छोक ।

सङ्गपना—(क्रि अ) छाँटि फूटि

कबा, गर्जन कबा ।

अधिक पीड़ा के कारण छूट-
पटाना । गरजना ।

सङ्गपना—[क्रि स] आनक

छाँटि-फूटि कबादा ।

ऐसा काम करना जिससे कोई
कष्ट पावे ।

सङ्गाक—(सं स्त्री) अङ्काव शङ्क ।

‘तडाके’ का शब्द ।

(क्रि वि) सोनकाले ।

जल्दी से । तुरन्त ।

सङ्गाका—(सं पुं) मब्-मब् शङ्क ।

‘तड़’ शब्द ।

(क्रि वि) तङ्कणा ।

तुरन्त ।

सङ्गाग—[सं पुं] प्रभुवी ।

तालाब ।

सङ्गागना—(क्रि अ) छेष्टा कबा ।

डाङ्कोप कबा ।

डींग हाँकना । प्रयत्न करना ।

सङ्गातड़—(क्रि वि) मब्-मब्

शङ्केवे ।

तड़ तड़ शब्द के साथ ।

सङ्गाना—(क्रि स) औंठ बाकि

कबा काम, याद बाबा लोकर

आकृष्टे इय ।

अनजान से रहकर ऐसा काम
करना जिसे लोग ताड़ लें या
देखें ।

तत् - [सं पुं] जङ्ग, बाग्य ।

ब्रह्म । वायु ।

[सर्व] मेहे । उस ।

तत—[सं पुं] बाग्य, पिता, पुत्र,

ठाँव बूझ बाछ, तब ।

वायु । पिता । पुत्र । तारवाले

वाद्य । तत्व ।

(वि) डेढधुं, गन्ध ।

तप्त । गरम ।

ततबीर—(सं स्त्री) दिश-भावना,

उपाय ।

तदबीर । उपाय ।

तत्काल—(क्रि वि) तङ्कणा ।

तुरन्त । उसी काल ।

तत्क्षण—(क्रि वि) तङ्कणा ।

उसी समय ।

तत्त्वतः—(क्रि वि) तडाङ्गवि,

मूलतः ।

तत्त्व के विचार से ।

तत्त्वमसी—(पद) तूमिमेहे मेहे,

अर्थात् जङ्ग ।

तू वही, अर्थात् ब्रह्म है ।

सञ्ज - (क्रि वि) भाव ।

उस अगह । वहाँ ।

सथागत—[सं पुं] गौतम बुद्ध ।
गौतम बुद्ध ।

सथैव—[अव्य] तेनैवबुद्धे,
जैवैव ।

वैसा ही । उसी प्रकार ।

सद्वत्तरः, सदनंतर—(क्रि वि)
भाव निष्ठ ।

उसके बाद ।

सदपि—[अव्य] तथापि ।

तो भी । तथापि ।

सद्वचोर—(सं स्त्री) दिश-भावना,
उपाय ।

काम पूरा या ठीक करने का
उपाय । तरकीब ।

सदर्थ-समिति—(सं स्त्री) विविध
उद्देश्य गठित समिति ।

किसी विशेष कार्य के लिये
बनायी गयी समिति । (अ-एड-
हॉक कमिटी)

सदाकार—[वि] जैव आकार,
मीन ।

उसी आकार का । तल्लीन ।

सदाहक—[सं पुं] विचार ।

अभियुक्त आदि की सोच ।

दुष्टटना की जाँच ।

सदीय—[सर्व] जैव गणकीय ।

उसका । उससे सम्बन्ध रखने
वाला ।

सद्वत्—(वि) तावैव गमान ।

उसीके समान ।

सन—[सं पुं] नवीन ।

शरीर ।

(क्रि वि) काल ।

तरफ ।

[वि] अलग ।

तनिक । थोड़ा ।

तनक, तनिक—[वि] अलग,
गरु ।

थोड़ा । छोटा ।

तनकीह—[सं स्त्री] विचार ।

जाँच । मुकदमे की वे मूल बातें

जिन का विचार और निर्णय
आवश्यक हो ।

तनकाह—[सं स्त्री] वेतन ।

वेतन ।

तनञ्जुस—(वि) अवनत । अपमान

अवनत । पद या महत्वसे घटाया

या उतरा हुआ ।

तनतनाना—(क्रि अ) शं देखूवा ।

क्रोध दिखाना ।

तनना—(क्रि अ) बिछाबित होवा,

पावि भिग्न । निर्धन भिन्न होवा ।

खिचाव से पूरे विस्तार तक

पहुँचना । ताना जाना । अकड़

कर सीधा खड़ा होना । अभि-

मानपूर्वक रुष्ट होना ।

तनहा—[वि] अकलनबीया ।

अकेला ।

[क्रि वि] यरुले ।

अकेले ।

तनहाई—[सं स्त्री] निर्जनता,

निर्जन ठाँह ।

अकेलापन । एकान्त स्थान ।

तना—(सं पुं) शा-शह ।

वृक्ष का नीचेवाला भाग जिसमें

डालियाँ नहीं होती ।

तनाजा—(सं पुं) काखिया ।

झगड़ा ।

तनाव—(सं स्त्री) टैनिजबी ।

खेमें आदि खीचकर बांधने की

रस्सी ।

तनाव—[सं पुं] बिछाव ।

तनने की क्रिया या भाव ।

तनिया—(सं स्त्री) कौटूलि, नरगाँठ ।

लंगोटी । स्त्रियोंके पहनने की

कुरती ।

तनु—(वि) कीच, जलज, कोयल ।

दुबला-पतला । थोड़ा । कोयल ।

बढ़िया ।

(सं स्त्री) नबीव, औ ।

शरीर । स्त्री ।

[अव्य] काल ।

ओर ।

तनुजा, तनूजा—(सं स्त्री) बेटी ।

बेटी ।

तनूरुह, तनोरुह—[सं स्त्री]

नोन, बेठा ।

रोम । बेटा ।

तन्यक—[वि] द्वितीयापक ।

जो खींचने पर लम्बा हो जाय ।

(अ—इलेस्टिक)

तन्वांगी, तन्वी—(वि) रुणाङ्गी,

पातल नबीव ।

दुबले-पतले अङ्गोंवाली ।

तपकना—[क्रि अ] क्षयपणोवा ।

उछलना । चमकना ।

तपना—[क्रि अ] तथं होवा, अछू

देखूवा । तपना कवा ।

खूब मर्म होना । तप होना ।
अभुत्व या अधिकार दिखाना ।
बुरे कामोंमें अधिक खर्च करना ।
तपस्या करना ।

तपश्चरण, तपस—(सं पुं)
उपग्रा ।

तपस्या ।

तपश्चर्या—(सं स्त्री) उपग्रा ।
तपस्या ।

तपस्वी—(सं पुं) उपग्री ।
तपस्वी ।

तपाक—(सं पुं) आवेग आवेग ।
आवेश । तेजी ।

तपाना—[क्रि स] श्रम करना ।
झूथ दिखाना ।

गरम करना । दुख देना ।

तपिश—(सं स्त्री) श्रम, उद्वेग ।
गरमी । तपन ।

तपेदिक—[सं पुं] यन्त्रा बोध ।
यक्ष्मा रोग ।

तपोधन—(सं पुं) उपग्री ।
बहुत बड़ा तपस्वी ।

तपरीह—(सं स्त्री) बन्धनानि ।
खुशी । दिव्यगी ।

तपसील—(सं स्त्री) विषय
विषय, टीका ।

विस्तृत वर्णन या विवरण ।
टीका ।

तब—[अव्य] तेजिया, तेजनेल ।
उस समय । इस कारण से ।

तबक—(सं पुं) लोक भाँख,
खुब, उबप ।

लोक । परत । तह । एक प्रकार
चोड़ी थाली ।

तबका—(सं पुं) विभाग, जनसमूह ।
मूमि का खण्ड या विभाग ।
लोक । आदमियों का समूह ।

तबदील—(वि) परिवर्तित । ज्ञानाञ्जलि
बदला हुआ । एक स्थान या पद
से हटाकर दूसरे स्थान या पद
पर भेजा हुआ ।

तबर—(सं पुं) कूठाव ।
कुल्हाड़ी ।

तबलबी, तबलिया—(सं पुं)
तबला-वाद्यक ।
तबला बजानेवाला ।

तबाहला—(सं पुं) परिवर्तन,
ज्ञानाञ्जलि ।

परिवर्तन । स्थान या पद परिव-
र्तन ।

तबाह—(वि) गर्वनाश ।
पूरी तरह से नष्ट ।

तबाही—(सं स्त्री) क्षम ।

नाश । बरबादी ।

तबीअत, तबीयत—(सं स्त्री) मन,
आस्था, बुद्धि वा ज्ञान ।

चित्त । बुद्धि । ज्ञान ।

तबेला—(सं पुं) खोबा-खोल ।
अस्तबल ।

तभी—(अव्य) तैतिथी, लई काबगो
उसी समय । इसी कारण ।

तमबा—(सं पुं) भिष्टल । शिटिका
छोटी बन्दूक । वह पत्थर जो
दरवाजे में खड़े बल में लगाया
जाता है ।

तम—(सं पुं) अक्काव, पाप, बंध,
अज्ञान ।

अन्धकार । पाप । क्रोध । अज्ञान ।

तमक—(सं स्त्री) उड्डेचना,
उबड़ता ।

जोश । आवेश । तेजी ।

तमकना—[क्रि अ] उड्डेकित होना ।
क्रोध का आवेश दिमाना ।

तमचर—[सं पुं] निमाचर ।
वाक्क ।
राक्षस ।

तमचुर—(सं पुं) बुरगी, बुरबा
छाई ।
मुरगा ।

तमतमाना—(क्रि अ) बंधत वा
बंधत बढ़ा गया ।

धूप या क्रोध आदि के कारण
चेहरा लाल होना ।

तमना—[सं स्त्री] ईच्छा ।
कामना । इच्छा ।

तमस—(सं पुं) अक्काव, पाप ।
अन्धकार । पाप ।

तमसुक—(सं पुं) दलिल ।
दस्तावेज ।

तमा—(सं पुं) बाह ।
राह ।

(सं स्त्री) बाति लोभ-
लालगा ।

रात । लोभ-लालच ।

तमाचा—(सं पुं) छव, छांभ ।
चपत । थप्पड़ ।

तमादी—[सं स्त्री] उकलि खोवा ।
किसी बात की बिहित अवधि
बीत जाना ।

(वि) उकलि खोवा ।
बिधि, नियम आदि के द्वारा
जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी
हो ।

तमाम—(वि) सम्पूर्ण, गमांथ ।
पूरा । समाप्त ।

समास—[सं पुं] उवाच गच्छ । एविव
उदावाच, संपाठ ।

तेजपात का वृक्ष । एक प्रकार
की तकवार । तम्बाकू ।

समाशब्दीन—[सं पुं] तामाठा
छांवा टमाक ।
तमाशा देखने वाला । बेइया-
गामी ।

समाशा, समासा—(सं पुं) तामाठा ।
वह खेल या कार्य जिसे देखने
से मन प्रसन्न हो । बहुत बेवंगी,
अनियमित और हास्यास्पद बात
या चीज ।

समिद्ध—[सं पुं] अक्काब, शं ।
अन्धकार । झोष ।
(वि) चक्रकावन्न ।
अन्धकार पूर्ण ।

समिद्धा—[सं स्त्री] अक्काब बाँधि ।
अंधेरी रात ।

समीचर—(सं पुं) बाँकग ।
राक्षस ।

समीज—[सं स्त्री] विवेक, बुद्धि,
आत्म-कायना ।
भले बुरे का ज्ञान या परस्पर
ज्ञान । बुद्धि

समोली—(सं पुं) पान-विक्रेता ।
पनवाड़ी ।

सय, सै—(वि) निश्चय ।
निश्चित करना ।

सरंग—(सं स्त्री) छो, बिछुनी ।
पानी का हिलोर । बिजली,
खुनी आदि का प्रवाह या लहर ।

सरंगी—(वि) छोरुछ, यई-
नठनौना ।
जिसमें तरंगे हों । मनमौजी ।

सर—(वि) डिखा वा तिडा,
भैतल ।

गीला । शीतल । मालदार ।

(क्रि वि) तलत ।

नीचे । तले ।

(प्रत्य) शूटाव डितवत पार्श्वक्य
बूझावटन; बेने-डूकतव,
निग्नतव ।

दो वस्तुओं में से एक की श्रेष्ठता
सूचित करनेवाला ।

सरकना—[क्रि अ] तर्क कर्वा। फाँटियोवा
तड़कना । तर्क करना । मनमें
सोच विचार करना । उल्ललना ।

सरकश, सरकस—(सं पुं) तूण,
कँव वा नव धोवा तूणा ।
तीर रखने का चोंगा । तूणीर ।

सरका—(सं पुं) उडवादिभाव-
पूजे पोवा गप्पति ।

मरे हुए व्यक्ति के उत्तराधि-
कारी को प्राप्त होनेवाली सम्पत्ति ।

सरकीब—(सं स्त्री) उपाय, बुद्धि,
वचन ।

बनावट । रचना प्रणाली ।
वृत्ति । डंग ।

सरकी—[सं स्त्री] बुद्धि, उन्नति ।
वृद्धि । उन्नति ।

सरखा—(सं पुं) धवन जौत ।
नदी आदि के पानी का तेज
बहाव ।

सरजना—(क्रि अ) धनक निग्रा,
खं कवा ।
डॉटना । बिगड़ना ।

सरजीला—[वि] खंडान, अचू ।
क्रोधपूर्व । प्रचंड ।

सरजुमा—(सं पुं) अश्रुवाद ।
अनुवाद ।

सरणि, सरणी—(सं स्त्री) नाव ।
नाव ।

सरणिजा, सरणि तनुजा—(सं स्त्री)
यमुना नदी ।
यमुना नदी ।

सरसीब—(सं स्त्री) परिवारिक,
अश्रुव ।

सिलसिला । क्रम ।

सरदुदुद—[सं पुं] ठिठ्ठा, उड-
कठा ।

सोच । फिक्र । खटका ।

सरन-सारन—[सं पुं] उकाव,
उकाव कर्षा, छाता ।

उद्धार । संसार सागर से पार
करने वाला ईश्वर ।

सरना—(क्रि स) गांजोवा । पार
कवा ।

तैरना । तैर कर या नाव
आदि से पार करना ।

[क्रि अ] भूख होवा, गर्गति
होवा ।

मुक्त होना । सद्गति प्राप्त
करना ।

सरनी—[सं स्त्री] नाव, उख
भूरा ।

नाव । खोलचा रखने का ऊँचा
मोढ़ा ।

सर-पर—(क्रि वि) एठाव पाइत
एठा ।

एक के बाद दूसरा ।

सरफ— (सं स्त्री) काल, दिन,
पक्ष ।

ओर । दिशा । पार्श्व । पक्ष ।

सरफदार—[वि] नक्षत्रांश ।

पक्षघर । हिमायती ।

सर-सर—(वि) छिन्न वा छिन्न ।

भींगा हुआ ।

सरराना—(क्रि अ) छोटा निग्रा ।

मरोड़ना ।

सरलाई—[सं स्त्री] कोमलता ।

कोमलता ।

सरवार—(सं स्त्री) तटवर्णन ।

तलवार ।

सरस—(सं पुं) दया, करुणा ।

दया । रहम ।

सरसना—(क्रि अ) उच्छिन्न शेष ।

किसी वस्तु के लिये लालायित

या विकल रहना ।

(क्रि सं) जड़ वा भीड़ित

करा ।

वस्तु या भीड़ित करना ।

सरसाना—[क्रि सं] आनन्द उच्छिन्न

करा । कटे निग्रा ।

ऐसा काम करना जिसमें कोई

तरसे । वस्तु या भीड़ित करना ।

सरह—[सं स्त्री] अकाश,

अणाली ।

प्रकार । भाति । प्रणाली ।

मुक्ति ।

सरहदार—(वि) चक्र अक्ष ।

शौकीन ।

सराइन—(सं स्त्री) उवा, नक्षत्र

आगि ।

आकाश के तारे नक्षत्र आदि ।

सराई—(सं स्त्री) उभयतः

अक्षर । आश्रय

पहाड़ के नीचे का प्रदेश वा

भूमि । नीची भूमि । तरा ।

सराजू—[सं पुं] उर्ज ।

तुला दंड ।

सराना—(सं पुं) अविश गीत ।

एक प्रकार का चलता गाना ।

गीत ।

सराबोर—(वि) छिन्न छिन्न ।

पूरी तरह से भींगा हुआ ।

सराभर—[सं स्त्री] उल्लास कार्य

राज्य ।

जल्दी होनेवाली कार्रवाई ।

सरा—(सं पुं) ज्ञान, लोक,

निज निज निज भविष्य ।

उछाल । छलांग । कुछ समय तक लगातार गिरनेवाली धारा ।

तरावट - (सं स्त्री) गिछठा । गीठलठा ।

तर होने का भाव । गीलापन । क्षीतलता । स्निग्ध पेय या भोजन ।

तराश—[सं स्त्री] काटन । काटने का ढंग या भाव । बनावट ।

तराशना—(क्रि स) कटो, खोदितकवा । काटना । कतरना ।

तरियाना—[क्रि स] तल प्रलोढा, छाकन दिया । तिउदा ।

नीचे कर देना । ढाँकना । तर या गीला करना ।

(क्रि अ) गेद बका । तैल आदि का तले बैठ जाना ।

तरीका—[सं पुं] श्रवण उपोद्ग । वावशोब ।

ढंग । चाल । व्यवहार । उपाय ।

तरुणाई, तरुनाई—[सं स्त्री] तरुण अवस्था ।

युवावस्था ।

तरुणिमा—[सं स्त्री] यौवन । यौवन ।

तरेंदा—(सं पुं) डेढन वा छूब । पानी पर तैरनेवाला काठ, बाँस आदि का बेड़ा ।

तरेरना—[क्रि स] बडा चकूबे छावा ।

क्रोध या असन्तोष की दृष्टि से देखना ।

तरौस—(सं पुं) पाव । तट किनारा ।

तरौना, तर्यौना—(सं पुं) कानझूल । कान में पहनने का गहना ।

तर्कना—[क्रि अ] तर्क कवा । तर्क या बहस करना ।

तर्की—[सं पुं] तार्किक । तर्क करनेवाला ।

तर्ज—[सं पुं] थकाव, ठाँठ । प्रकार । शैली । रचना प्रकार ।

तर्जन—(सं पुं) तर्जन-गर्जन । क्रोध पूर्वक या बिगड़ते हुए कुछ कहना ।

डाँटना-डपटना । डराना । फटकारना ।

तलवा—(क्रि अ) उर्जन-गर्जन
करा ।

डिटना । घमकाना ।

तलुमा—(सं पुं) उर्जना, अश्रुवाद ।
अनुवाद ।

तल—(सं पुं) तलि, गाँठ धन
पौतागव एधन ।

नीचे का पेंदा । जलाशय के नीचे
की भूमि । पैर का तलवा ।
अतह । सात पानालों में से
पहला ।

तलक—[अव्य] लै ।
तक ।

तल-गृह, तल-घर—[सं पुं]
डेंटिब तनत थका कोठाली ।
तहलाना ।

तलना—[क्रि अ] डका ।
गरम घी या तेल में डालकर
पकाना ।

तलफना—(क्रि अ) कटे पोवा,
धव-रुबोवा ।
कष्ट पाना । तड़पना ।

तलब—(सं स्त्री) अश्रुगदान,
पोवाब ईच्छा । वेतन ।
खोज । पाने की इच्छा । आवश्यक-
कता । बुलावा । वेतन ।

तलबगार—(वि) इच्छूक ।
चाहनेवाला ।

तलबी—(सं स्त्री) आवश्यकता ।
बुलावा । मांग ।

तलबेली—[सं स्त्री] उक्कठा ।
बहुत अधिक उत्कंठा ।

तलवा, तलुमा—(सं पुं) तबिब
तलुवा ।
पैर के नीचे का भाग ।

तलवार—(सं स्त्री) तबोवाग ।
एक हथियार ।

तलहटी—(सं स्त्री) उगताका ।
तराई ।

तला—(सं पुं) तलि, कोठाव
तनडाग ।
पेंदा । जूते के नीचे का चमड़ा ।

तलाक—[सं पुं] आइन गजत
डावे पडि-पडोब गवक
विच्छेद ।
पति पत्नी का सम्बन्ध विच्छेद ।

तलाश—(सं स्त्री) अश्रुगदान,
विचार-खोज ।
अनुसंधान । खोज ।

तलाशी—(सं स्त्री) हेकरा
बडब अश्रुगदान ।

खोई या छिपायी चीज पाने के लिये किसी के शरीर, घर आदि की देखभाल ।

तले—(क्रि वि) उलत । नीचे ।

तलैया—[सं स्त्री] थाल वा जक भूखरी । छोटा तालाब ।

तल्प—(सं पुं) बिछना । बिस्तर । सेज ।

तल्लीन—(वि) निमग्न । निमग्न ।

तवज्जह—[सं स्त्री] मनोयोग, कृपादृष्टि । ध्यान । कृपादृष्टि ।

तवना—(क्रि अ) उलत होना, खंडल वडा पना । तस होना । गुस्से से लाल होना । प्रताप दिखाना ।

तवा—(सं पुं) तावा । रोटी आदि सेकने के लिये लोहे का गोल बरतन ।

तवारीख—(सं स्त्री) सूखी । इतिहास ।

तवालत—[सं स्त्री] दीर्घता । लम्बाई ।

तशरीफ—(सं स्त्री) गश्च, गन्ना-निष्ठ वाङ्मय ।

महत्त्व । बहुप्यन । सम्मानित व्यक्ति ।

तश्व—[सं पुं] डाडन काशी । बड़ा थाल ।

तश्तरी—(सं स्त्री) जक काशी । रिकाबी (प्लेट)

तस—[वि] तेने, तेनेकूबा । वैसा ।

तसदीक—(सं स्त्री) गताडा, गाफी ।

सचाई । गवाही ।

तसदीह—(सं स्त्री) मूत्र-कायोवनि । सिर दर्द । कष्ट ।

तसमा—(सं पुं) चयनाब फिटो । चमड़े का फीता ।

तसला—(सं पुं) एविश वाचन । एक प्रकार का बरतन ।

तसलीम—(सं स्त्री) नगकाब । गानाडा । सलाम । मान्यता ।

तसल्ली—(सं स्त्री) गाचना, शैश्या ।

सान्त्वना । बैयं ।

सहचार, सहशीर—[सं स्त्री] छवि ।

छविब पटव धुनीया ।

चित्र । चित्र के समान सुन्दर ।

सत्कर—(सं पुं) छाव ।

चोर ।

सत्करी—[सं स्त्री] छाव कवा

कार्या, ठूकणी ।

चोरी । चोर की स्त्रा ।

तँह—(कि वि) तात ।

वहाँ ।

तह—[सं स्त्री] तबप, तलि, छव ।

परत । नीचे का तल । महीन

फिली ।

तहकीकाव—[सं स्त्री] अङ्गकान ।

अनुसंधान ।

तहखाना—[सं पुं] बबब डोटिब तलत

बका बब बा कोठाली ।

मकान के नीचे बनाया हुआ

कमरा ।

तहमत—[सं स्त्री] गुडि ।

जूनी ।

तहरी—[सं स्त्री] छाडेल आरु यटव

माशब बिचिबी । छाल कुबूबाब

बड़ा । पेटे की बरी । चाबल और

मटर की सिचड़ी ।

तहरीर—(सं स्त्री) लिखन, लिख-

नीब ठाँठ ।

लिखावट । लेख-शैली ।

लिखाई ।

तहका—(सं पुं) लउ-उउ,

उखल-माखल ।

बरबादी । खलबली ।

तहबोल—[सं स्त्री] तहबिल जया ।

खजाना ।

तहस नहस—(वि) नटे, गन्धूर्व

ध्वंस ।

पूरी तरह से नष्ट भ्रष्ट ।

तहसील—[सं स्त्री] बाणना मंथर

कवा कार्या ; तहसीलदाब

कार्यालय ।

लोगों से रुपये वसूल करने की

क्रिया । वसूल किया हुआ धन ।

तहसीलदार की कचहरी ।

तहसीलदार—[सं पुं] तहसी-

लदाब । बाणना तोला विवरण ।

कर वसूल करनेवाला अधिकारी ।

तहसीलना—(कि स) बाणना

आदाय कवा ।

कर लगान आदि वसूल करना ।

तहाँ—(कि कि) तात, ताँटेल ।

वहाँ ।

सहाना, सहियाना—(क्रि स) डाँप
पिया ।

तह करना ।

सही—[क्रि वि] लड़े ठाँइत, ताउ ।
उसी जगह ।

सौत—(सं स्त्री) छांगली, डेड़ा
आदिब नाड़ीब पना कबा खरी ।
बशूब छिला ।

पशुओं की अँतड़ियों को बँटकर
बनाया घागा । धनुष की डोरी ।

सौता—(सं पुं) जानि, लेखेवि,
श्रेणी ।

कतार । श्रेणी ।

सांवा—(सं पुं) ताम ।
ताम्र धातु ।

सांबूल—(सं पुं) ताम्बूल । शिलि
ताम्बूल ।

पान । पान का बीड़ा ।

सौसना—(क्रि स) धक्क दिया ।
डाटना । धमकाना । सताना ।

साई—(सं स्त्री) षेठी ।
पिता के बड़े भाई की पत्नी ।

साऊ—(सं पुं) षेठा ।
पिता का बड़ा भाई ।

साक—(सं स्त्री) छावनि, अपेक्षा,
अश्रुगहान ।

अवलोकन । टकटकी । अवसर
की प्रतीक्षा । खोज ।

साक-शाँक—(सं स्त्री) झुनि-झुनि
छाटा ।

छिपकर देखने की क्रिया ।

साकत—(सं स्त्री) बल, श्वाब,
शक्ति ।

जोर । बल । सामर्थ्य ।

साकतवर—(वि) शक्ति शाली,
बलवान ।

शक्तिसाली । समर्थ ।

साकना—(क्रि स) लका कबा ;
अपेक्षा कबा ।

अवलोकन करना । अवसर की
प्रतीक्षा करना ।

सा कि—(अव्य) बाँटो, गँठिके ।
इसलिये कि । जिसमें ।

साकीद—[सं स्त्री] तागिना ।

किसी काम या बात के लिये
जोर देकर कहना । अच्छी तरह
चेता कर कही जानेवाली बात ।

साखा—[सं पुं] काँठ बकनाब
उपबत वेबाई धोवा काँपोबब
धान । देवानत बड्ड धोवा धीक
गते पर लोटा कपड़े का धान
आला, ताक (दीवार में का)

साग—(सं स्त्री) शूठा ।

सूत ।

सागना—(क्रि स) पाठनटोक जिज्ञा ।

तागे से दूर दूर पर सिलाई करना ।

सागा—[सं पुं] बैटिया । शूठा ।

डोरा । धागा । मोटा सूत ।

साछना—[क्रि अ] शङ्कक आक्रमण

कृविबटेल ठूप्ति ठूप्ति आगवड़ा ।

शत्रु पर वार करने के लिये बगल से आगे बढ़ना ।

साज—(सं पुं) बाज यूकूटे ,

आज्वाब आजमशन । किबिटि ।

राजमुकुट । मोर, मुरगे आदि के सिर की चोटी । आगरे का

ताज महल ।

साजगी—(सं स्त्री) गजीवता ,

अयुक्तता ।

ताजापन । प्रफुल्लता । पूर्ण

स्वस्थता ।

साजन—(सं पुं) चाबुक ।

चाबुक । कोड़ा ।

साजा—(वि) टाँटका, नज़्म ,

खिया ।

जो अभी बनकर तैयार हुआ

हो । बिलकुल नया । हरा-

भरा । (फल मूल) जो अभी

पेड़ से तोड़ा गया हो ।

साजिया—(सं पुं) बहरबन गमगुल

ठैशाबी कागजब गमाधि ।

मुहरंम के अवसर पर बनाया

कागज का मकबरा ।

साजीर—(सं स्त्री) दण्ड, शाखि ।

दंड ।

साजीरात—(सं पुं) अगवाही

आक शाखि गश्की आदेन गमूह ।

आपराधिक दंडों से सम्बन्ध

रखनेवाले कानूनों का संग्रह ।

साजीरी—(वि) शाखि ।

दण्ड के रूप में लगाया या बैठाया

हुआ ।

साजुब—(सं पुं) आचबित ।

आश्चर्य ।

साङ्—(सं पुं) डाल गंछ, अंशव ।

एक लम्बा पेड़ । प्रहार ।

साङ्गना—[सं स्त्री] अंशव, डाकि-

शक, शाखि, उल्पीडन ।

प्रहार । डाँट डपट । दण्ड ।

उत्पीड़न । झिड़की ।

[क्रि स] अंशव कबा, डाकि-

बनक दिया । कुछ दशक जानि
पेनोरा ।

मारना । कष्ट पहुँचाना ।
डाँटना-डपटना । छिपी हुई बात
भाँपना ।

वाक्य—[वि] डाँटना पोर ।
जिसे ताड़ना की गयी या दी
गयी हो ।

वाक्य—[सं स्त्री] ताड़ । ताल बा
बाँझर गछर बग बाँझरै बाँझ
करा एबिष टोडा बग ।

ताड़के डण्ठलों का नशीला रस ।

वाक्य—[सं पुं] पिता । पूजनीय
वाक्य ।

पिता । बाप । पूज्य या मान्य
व्यक्ति ।

वाक्य—(वि) तपत, गर्म ।

तपा हुआ । गरम ।

वाक्य—(वि) ताताब देश ।

तातार देश का ।

[सं पुं] ताताब देश
निवासी ।

तातार देश का निवासी ।

(सं स्त्री) ताताब देश का ।

तातार देश की भाषा ।

वाक्य—(सं स्त्री) बहुर दिन ।

छुट्टी का दिन ।

वाक्य—(सं पुं) एटार आन-
टोब मग़त ठिक बक़म निज
धोवा । छिनाऊ करण ।

एक वस्तु का दूसरी वस्तु से
मिलकर एक हो जाना ।
पहचानना ।

(अ. —आईडेंटिफिकेशन) ।

वाक्य—[सं स्त्री] गंधा,
परिमाण ।

संख्या ।

वाक्य—[सं स्त्री] टैना कार्य । गन्धीतब
तान ।

तानने की क्रिया या भाव ।
खींच । संगीत में स्वरों का
कलापूर्ण विस्तार ।

वाक्य—[क्रि स] टैना, बिछावित
करा, बाबिबेटल डैनाउ शोवा ।
कसने के लिये जोर से खींचना ।
खींचकर फ़ैलाना । मारने के
हाथ या हथियार उठाना ।

वाक्य—(सं पुं) दीप । आकष
लगा कर, बाक ।

कपड़े की बुनावट में लम्बाई के
बल के सूत । आक्षेपपूर्ण बात ।

व्यंग ।

(क्रि स) गंवर कवा, बिचार कवा ।

गरम करना । जाचना ।

तानापाई, तानापाही—(सं स्त्री)

बादे बादे अशा-बोधा ।

बार बार आना जाना ।

ताना-बाना—[सं पुं] दौध-बाबि ।

कपड़े की बुनावटमें लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत ।

तानाशाह—[सं पुं] खेळाचावी

नांगक । आदेनर अहीमता श्रीकार नकवा नेडा ।

वह शासक जो अपने अधिकारों का मनमाना दुरुपयोग करे ।

(अ—डिक्टेटर) ।

तानाशाही—(सं स्त्री) एकना-

ग्रकृष्ट ।

अधिकारों का मनमाना उपयोग ।

वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो ।

(अ—डिक्टेटरशिप)

तापक्रम—(सं पुं) कोनो ठाँह

वा बन्धन अवस्था छेदे होवा

ताप्य तापय ।

किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थका वह ताप जो विशेष अवस्थाओं में घटता बढ़ता रहता है ।

ताप-त्रय—[सं पुं] त्रिताप—

आध्यात्मिक, आधिदैविक आरु आधिभौतिक ।

आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनों ताप या कष्ट ।

तापना—[क्रि अ] झुईकवा ।

आग की आँच से शरीर गरम करना ।

(क्रि स) झुईव उपरव थै गंवर कवा । धन नाश कवा ।

आग पर रखकर गरम करना या तपाना । (धन) नष्ट करना ।

तापस—(सं पुं) तपगी ।

तपस्वी ।

ताप—[सं स्त्री] ताप, ज्योति,

शक्ति-गोचर ।

ताप । आभा । सामर्थ्य । ताकत ।

तापकुसोड़—[क्रि वि] एकैबाहे

तङ्कणां ।

लगातार । तुरन्त ।

तापुत—[सं पुं] वाकचर दवे बनोवा

नवावा ।

लाश बन्धकर रखनेवाली सन्दूक ।

सावे—[वि] बनीछूड, आछावह ।
बशीभूत । आज्ञा माननेवाला ।
सावेदार—[वि] आछाकावी ,
टगवक ।
आज्ञाकारी । सेवक ।
साम—[सं पुं] दोष, आकूलता,
क्लेश, वागना, भागव, एकाव ।
दोष । व्याकुलता । क्लेश ।
वासना । थकावट । क्रोध ।
अधिरा ।
सामरस—(सं पुं) पशु, गोप,
ताम्र, शङ्ख ।
कमल । सोना । तांबा । घतूरा ।
सामस—(वि) ताम्रिक ।
तमोगुणसे युक्त ।
(सं पुं) गोंप, शूरे, थं,
अछान ।
साँप । दुष्ट । क्रोध । अज्ञान ।
सामीर—[सं स्त्री] अष्टोलिका
गला काय ।
हमारत बनाने का काम ।
सामीर—(वि) आंमनीय । अंपछ ।
जिसका पालन हो (आज्ञा) ।
जो यथा स्थान पहुँचा या उद्दिष्ट
व्यक्ति को दिया गया हो ।

सामीली—[सं स्त्री] आंमन ।
गमाश ।
(आज्ञा) पालन । (सूचना आदि)
अभिष्ट स्थान पर पहुँचाना ।
साम्रचूड—[सं पुं] बुवगी (बडा) ।
मुरगा ।
साम्रपर्णी—(सं स्त्री) गुरुवी ।
तालाब ।
साम्रलेख (साम्र पत्र)—(सं पुं)
ताम्र कलि ।
तबिपर लिखे गये दान-पत्र आदि ।
सायफा—[सं पुं] वेष्ठा बुद्धिब
लगत गणक बशी लोक
गकन ।
वेश्या और उसके समाजियों
की मण्डली ।
(सं स्त्री) वेष्ठा ।
वेश्या ।
साया—(सं पुं) जेठा ।
पिता का बड़ा भाई ।
सार—(सं पुं) कप, ठाँव, ठेलि-
आव । कन बडोवा । गुरुवी ।
चाँदी । धातु-तन्तु । बिजली की
सहायता से समाचार भेजे जाने
वाले तन्तु या ऐसे समाचार
(टेलिग्राम) । सूत । सिलसिला ।

करताल सतह । तालाब ।

[वि] निर्मल ।

निर्मल ।

तारकेश—[सं पुं] क्लान ।

चन्द्रमा ।

तारकोल—(सं पुं) आलकात्रा ।

अलकतरा ।

तारघाट—(सं पुं) आठनि उपग्र ।

मतलब निकालने का सुभीता

था अवसर ।

तारना—[क्रि स] उद्धार कर्ना ।

पानीत पत्रा माशुश्क बचावा ।

उद्धार करना । पार लगाना ।

डूबते को बचाना । उद्गति या

मोक्ष देना ।

तारपीन—(सं पुं) ताम्रपिन् ।

चीड़ के वृक्ष से निकला तेल ।

तारुण्य—(सं पुं) तबलता, चक

लता ।

तरलता । चंचलता ।

तारा—(सं पुं) तारा । चक्रवर्गि,

भाग्य ।

नक्षत्र । आँख की पुतली ।

भाग्य ।

(सं स्त्री) दशविंश महाविद्या

एविंश । ब्रह्मन्तिव पञ्ची ।

दस महाविद्याओं से एक । बृह-

स्पति की स्त्री ।

ताराक्षिद्, ताराधोश—[सं पुं]

छत्र, महापद, ब्रह्मन्ति ।

चन्द्रमा । शिव । बृहस्पति ।

तारापथ—(सं पुं) आकाश ।

आकाश ।

तारी—(सं स्त्री) ध्यानमग्न अवस्था ।

एकेश्वर चाहै धका ।

ध्यान में तन्मय हो जाना ।

टकटकी ।

तारीक—[वि] क'ना, एकाव ।

काला । अधेरा ।

तारीख—[सं पुं] तारिख । तिथि ।

तारीफ—(सं स्त्री) प्रशंसा, वर्णना,

विशेषज्ञ ।

वर्णन । प्रशंसा । विशेषता ।

तारुण्य—(सं पुं) यौवन, तरुण

अवस्था ।

जवानी ।

तारु—[सं पुं] तारु ।

तालू ।

ताल—[सं पुं] शातव तनूरा । शात

चापवि । शूटि-ताल, गबोवद,

ताल गच्छ ।

हथेली । करतल ध्वनि । जाँव
पर हथेली मारकर उत्पन्न किया
जानेवाला शब्द । मंजीरा ।
तालाब ।

ताल-बैताल—[सं पुं] शृंटा झूठब
नाथ ।

दो कल्पित यक्ष ।

ताल-मेल—[सं पुं] ताल-मान,
ताल आरु श्रवण गायशब्द ।

ताल और स्वर का सामंजस्य ।

तालाब—[सं पुं] गढ़ावर ।
सरोवर ।

तालिम—(सं स्त्री) विद्या ।
बिछीना ।

ताली—[सं स्त्री] छावि, शांतापवि,
गरु प्रभृती ।

कुंजी । ताड़ी । करतल ध्वनि ।
छोटा तालाब ।

तालीम—(सं स्त्री) शिक्षा ।
शिक्षा ।

तालुक—(सं पुं) गश्क ।
सम्बन्ध । वास्ता ।

तालुका—(सं पुं) विस्तृत एलका ।
बड़ा इलाका ।

तालुकेदार—[सं पुं] तालुकदार,
जगिदार ।

किसी तालुके का जमींदार ।

ताब—[सं पुं] उड़ाप, गवय,
कागजब ताँप ।

उत्ताप । गरमी । शेली या एँठ
की झोंक । कागज का तस्ता ।

ताबत—(क्रि वि) तेतिग्राटेनके,
ताटेनके ।

तब तक । वहाँ तक ।

ताबना—(क्रि स) ताँप दिया,
झूथ दिया ।

तपाना । दुःख या कष्ट पहुँचाना ।

ताबरी—(सं स्त्री) ताँप, बंद,
जब, जेबा ।

ताप । धूप । बुखार । ईर्ष्या ।

तावान—[सं पुं] अर्बदण्ड ।
अर्थ दंड ।

तासीर—(सं स्त्री) प्रभाव, फल ।
प्रभाव । किसी वस्तु की गुण
सूचक प्रकृति ।

तासु—(सर्व) ताँब वा तेँब ।
उसका ।

तासों—(सर्व) तेँब वा ताँब वा
तेँब पंवा ।
उससे ।

साहि—(सर्व) डेढक ।
उसको । उसे ।

साहू—(कि वि) तथापि ।
तिसपर भी ।

सिक्कम—[सं पुं] बडयज्ञ । छात्रनी ।
गहरी या गुप्त युक्ति या चाल ।

सिक्कमो—[सं पुं] कोणनी ।
चालबाज ।

सिकोना, सिकोनिया, सिखूँटा, सिर-
खूँटा—(वि) तिनहूँकीया ।
तीन कोनों वाला ।

सिक्का—(सं पुं) नाग-पिण्ड ।
मांस की बोटी ।

सिक्क—(वि) डिठा ।
तीता ।

सिक्क—(वि) डीक, केश ।
तीक्ष्ण । कड़ुवा ।

सिक्कता—(सं स्त्री) डीकता ।
तीक्ष्णता ।

सिक्कारना—(क्रि अ) निष्ठावे कबा
अङ्गुगहान ।

ताकीद करना ।

सिगुना—(वि) त्रिनि ३५ ।
तीन गुना ।

सिक्क सिक्कन—(वि) डीक ।
तीक्ष्ण ।

सिजरा—[सं पुं] पान-खर,
डोम-खर, एटेकया ।
हर तीसरे दिन आनेवाला
बुखार ।

सिज्जारत—(सं स्त्री) बाणिका, बेरा
बेपोर ।
बाणिज्य ।

सिजोरी—(सं स्त्री) मोर
आलमाबी ।
लोहे की आलमारी ।

सिङ्की—(सं स्त्री) टिका (ताचन
पातन) ।
तास का वह पत्ता जिसपर तीन
बूटियाँ होती है ।

[बि] नने नने आँठवि
याँउता ।

जो चुपचाप गायब हो गया है ।

सिङ्की-बिङ्की, सितर-बितर—[बि]
छेमेनि-डेमेनि ।

छितराया या बिखरा हुआ ।
अस्त व्यस्त ।

सिख—[क्रि वि] तात, लेह
ठाईत ।
वहाँ । उधर ।

सिस्ना—[क्रि वि] गिमान ।
उतना ।

सिस्नी—(सं स्त्री) अविश ।
बाँझ । एक उड़नेवाला पक्षि ।
एक प्रकार की घास ।

सिस्नीकी—(सं स्त्री) तिता-नाउ ।
कड़वा कदू ।

सितारा—[सं पुं] अविश ।
यज्ञ । मोटावा ।

सितारों की तरह तीन तारोंवाला
एक बाजा ।

सिस्नी—(सं स्त्री) गश्कूत ।
सहिष्णुता । क्षमा ।

सिसिर, सिसिर, सिसर—(सं पुं)
अविश ।
एक पक्षी ।

सिस्ते—(वि) गिमान ।
उतने ।

सिस्ते—(वि) गिमान ।
उतना ।

सिस्ते—(क्रि वि) ताउ, जेहे
ठांइउ ।
उस स्थान पर ।

सिस्ते-पत्र—[सं पुं] पक्षिका ।
पंखान ।

सिन, सिन्ह—(सं) जेहेवार ।
'सि' का बहु० ।

[सं पुं] कूठा, उण ।
तिनका । तुण ।

तिनकना, तिनगना—[क्रि अ]
जकि उठे ।
कुछ नाराज होना ।

तिनका, तिनका—(सं पुं) कूठा ।
सूखी घास आदि का टुकड़ा ।

तिनका-तोड़—[सं पुं] कूठा-टिंडि
एवा ।
चिरन्तन सम्बन्ध-छेद ।

तिन-पहला—(वि) तिनिशुशु ।
जिसमें तीन पहल या पाद्वें हों ।

तिन्नी—(सं स्त्री) अविश ।
धान ।
एक प्रकारका जंगली धान ।

तिपाई, तिरपाई—(सं स्त्री) तिनि
छेडोया ।
तीन पावों की छोटी चोकी ।

तिबारा—[वि] छुडोय बार ।
तीसरी बार ।

(सं पुं) तिनिशुशु शब्द ।
यव ।

वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे
हों ।

तिरपाक्षी—(वि) त्रिनि दिनर बासी ।
तीन दिनोंका बासी (साथ पदार्थ) ।

ति-मंजिष्ठा—(वि) त्रिनि मङ्गीया
बवं ।
तीन स्तरो का मकान ।

तिमिगिल—(सं पुं) त्रिनि गच्छ ।
एक बड़ा सामुद्रिक जन्तु ।

तिमि—(अव्य) गेहे पदेव ।
उस प्रकार । वैसे ।

तिमिर—(सं पुं) अन्धकार,
डाढ़बीया ।
अन्धकार । धुँधला ।

तिमिरारि—(सं पुं) शूर्य ।
सूर्य ।

तिमिरारी—(सं स्त्री) अन्धार ।
अन्धकार ।

तिमुहानो, तिरमुहानी—[सं स्त्री]
त्रिनि आनिव ठक ।
जहाँ तीन रास्ते मिलते हैं ।

तिय—(सं स्त्री) त्रिबोता ।
औरत । स्त्री ।

तिया—(सं स्त्री) त्रिबोता । ठिका
(ताछ) ।
स्त्री । तीन मुहोंवाला तास
का पत्ता ।

तिरकना—[क्रि अ] ठूमि पका । ठाडि
योबा । बाल सफेद होना । 'तड़'
शब्द कर टूटना ।

तिरगुन—(सं पुं) त्रिगुण—गढ़,
बध, उय ।

सत्त्व, रज, तम ये तीन गुण ।

तिरछाई, तिरछाई—(सं स्त्री)
शेगनीया ।
तिरछापन ।

तिरछा तिरौछा—(वि) टेबा, टेँका ।
बक्र । टेढा ।

तिरना—(क्रि अ) गँठोवा, ,
पीर टोबा वा मुक्त होबा ।
पानी पर तैरना या उतरना ।
पार होना । संसार सागर से
पार होना या मुक्त होना ।

तिरप—(सं पुं) नाछ एक विशेष
ढकी ।

नृत्य में तिहाई आने पर तीन
बार पैर पटकना ।

तिरपट—(वि) टेबा ।

तिरछा । मुश्किल । टेढा ।

तिरपाक्ष—(सं पुं) त्रिपाल ।

एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो
धूप और वर्षा से रक्षा के लिये

बीजों पर ताना या ढाला जाता है । (अं—टरपोलिन)
तिरपित—(वि) उथ ।
 तुष्ट ।
तिरबौलिया—(सं पुं) तिनिकन
 बाहिर छ्दाब थका ठाई ।
 तीन बाहरी दरवाजोंवाला स्थान ।
तिरमिरा—[सं पुं] चकुर बाग ।
 आँखों का एक रोग । चका-
 चौंध ।
तिरमिराना—(क्रि अ) चकू चाटे
 नावि शवा ।
 प्रकाश के सामने (आँखों का)
 चौंधियाना ।
तिरलोक—(सं पुं) तिनिलोक—
 स्वर्ग, मर्त्ता, पीतान ।
 तीनों लोक ।
तिरबौंहा—(सं पुं) नदीब पाब ।
 नदी का किनारा ।
तिराना—(क्रि स) गौंछुबोदा, पाब-
 कबा । उक्ताब कबा ।
 पानी पर तैरना । पार करना ।
 उद्धार करना ।

तिरहा—(सं पुं) तिनि जानिब
 चक ।
 तिमुहानी ।
तिराही—[क्रि वि] तनत ।
 नीचे ।
तिरिया—(सं स्त्री) तिवी,
 तिवोता ।
 स्त्री । औरत
तिरोहित—[वि] नुकाग्रित । नुष्ट ।
 छिपा हुआ । लुप्त ।
तिर्यक्—(वि) टेबा ।
 टेढ़ा ।
 (सं पुं) पशु-पक्षी ।
 पशु पक्षी आदि जीव ।
तिर्यग् गति—[सं स्त्री] बक्र-गति ।
 पशुब गर्डत जन्म ।
 टेढ़ी चाल । पशु योनि में जन्म
 लेना ।
तिलंगा—(सं पुं) देनैय चिपाही ।
 देशी सिपाही ।
तिलंगी—[वि] तेलेलानाब
 अशिवागी ।
 तिलंगाने का निवासी ।

[सं स्त्री] टिना ।

गुड़ी । पतंग ।

विकलना—[कि अ] पिछल होना ।
फिसलना ।

विकलकुट—[सं पुं] तिल-भिठा ।
कूटे हुए तिल की बनी मिठाई ।

विकलचटा—[सं पुं] भँसता छावा,
तेलछत्रवा ।

एक प्रकार का पतंगा ।

विकल-बावला—[बि] कला-बग ।
पंखवा ।

काला और सफेद मिला हुआ ।

विकलछना—[कि अ] अशोब होना ।
विकल होना । छटपटाना ।

विकलठी—[सं स्त्री] तिल गूँघ
छकान ठाँदि ।

तिल का सूखा डंठल ।

विकलड़ी—(सं स्त्री) तिलिषवीया
वा तिलिषुवीया शव ।

तीन लड़ों की माला या हार ।

विकलमिलाना—(कि अ) टिकेहि
नाबि उँठा ।

अचानक कष्ट या पीड़ा होने से
विकल होना ।

विकलस्म—(सं पुं) ढकी ।

जादू । अद्भुत या अलौकिक
व्यापार । [बि-तिलस्मी]

विकलांजलि—(सं स्त्री) भविताग ।
ब्रतकर तिल पानी दिया किया ।
किसी के मरने पर अंजुली में
जल और तिल लेकर उसके नाम
से छोड़ना । सदा के लिये परि-
त्याग करने का संकल्प ।

विकला—(सं पुं) एविष तेल ।

पुंसत्व की शक्ति बढ़ाने के लिये
जननेन्द्रिय पर मालिश करने का
एक प्रकार का तेल ।

विकलाक—(सं पुं) बिष्मल ।
तलाक ।

विकलाम—(सं पुं) दागाइनाग,
दागदाग ।

गुलाम का गुलाम । परम तुच्छ
व्यक्ति या सेवक ।

विकलेदानी—(सं स्त्री) बेबी, जूठा
आदि बंधा जाना ।

सूई बागा आदि रखने की बेबी ।

चिकोना, चिकोना—(वि) चिकोना,
तेलबूझ ।

जिसमें तेल हो या तेल लगा हो ।

चिकोना—(क्रि स) तेल दि
चिकन करा ।

तेल लगाकर चिकना करना ।

चिकोरी—[सं स्त्री] तिल मिश्री
मिठा ।

तिल मिली हुई बरी ।

चिकना—(सं पुं) नाबी, छात्र
आदिब आदि ।

दुपट्टे या साड़ी आदिका बादले
या बादले का काम ।

चिको—(सं स्त्री) शीश, भिनाइ ।
तिल ।

पेट की पिलही । पिलही का
रोग । तिल ।

चिकान—[सं पुं] चिकना ।
चिकना । फिक ।

चिकना—[क्रि स] गठोरा ।
बनाना ।

चिकना—(क्रि अ) बोबा ।
ठहरना ।

चिस—(सर्व) चिसे ।
'ता' का अभिक्ति युक्त रूप ।

चिसरत, चिसरत—[सं पुं]

मवाह । छतीस अक्षर मवाही ।

तटस्थ तीसरा आदमी । तीसरे
हिस्से का मालिक ।

चिसाना—(क्रि अ) छकाछुर होना ।
प्यासा होना ।

चिसाई—[सं स्त्री] छतीस ।
तृतीयांश ।

चिसारा (गे)—(सर्व) तोमार ।
तुम्हारा ।

चिहि, तेहि—(सर्व) तब तक
तेहेंक ।
उसको, उसे ।

चिहूँ—[वि] चिनिउ ।
तीनों ।

ची, चीय, चीब—(सं स्त्री) चार्या,
पञ्ची ।
स्त्री । पत्नी ।

चीक्षु, चीक्षन, चीक्ष, चीखन—
(वि) चीक, चोका ।

तेज नोक या धारवाला । प्रखर ।
प्रचंड । तीखा या चरपरा स्वाद
वाला । कर्ण कटु ।

चीखा—[वि] छतीसवाँ । छति-
कट्टे ।

तेज धारवाला । प्रखर । सुने में
अग्निय । बढ़िया ।

तीक्ष्ण, तीछा—[वि] तीक्ष्ण ।
तीक्ष्ण ।

तीक्ष्ण—(सं स्त्री) छुट्टीया तिथि ।
तिथिवादा एक छत ।
चान्द्र मास के पक्ष की तीसरी
तिथि । भाद्रपद महीने के शुक्ल
पक्ष की तृतीया को होनेवाला
नारियों का एक व्रत । हरिता-
लिका ।

तीक्षा—(सं पुं) छुट्टी । मूठनमानव
श्रुता छुट्टी दिनव कृता ।
मुसलमानों में किसी के मरने पर
तीसरे दिन का कृत्य ।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण
छात्र ।
एक प्रसिद्ध पक्षी जो लड़ाने के
लिये पाला जाता है ।

तीक्ष्ण—(वि) तीक्ष्ण ।
तीक्ष्ण और चरपरे स्वाद वाला ।
मिर्च आदि के स्वाद का ।

तीक्ष्ण—(वि) तीक्ष्ण ।

तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण ।
तीक्ष्ण चलानेवाला ।

तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण, तीक्ष्ण ।
नदीका किनारा । बाण ।
(क्रि वि) तीक्ष्ण ।
पास । निकट ।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण ।
वह पवित्र स्थान जहाँ लोग धर्म
भाव से दान, दर्शन आदि के लिये
जाया करते हैं । संन्यासियों का
एक भेद । यज्ञ ।

तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण शर्मा-
लक्ष्मी गुरुनर प्रधान उपाधि-
देवता ।

जैन धर्मावलम्बियों के प्रमुख
चोबीस उपास्य देवता ।

तीक्ष्ण—[सं पुं] तीक्ष्ण-यात्रा,
तीक्ष्ण-पर्याटन ।

तीक्ष्ण-यात्रा ।

तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण ।

वड़ा या लम्बा तिनका । सीक ।

तीक्ष्ण—(सं स्त्री) तीक्ष्ण ।

पतली सीक । मोजे आदि बुनने
की सलाई ।

तीक्ष्ण—(सं पुं) तीक्ष्ण, तीक्ष्ण,
तीक्ष्ण-गर्वा ।

समुद्र । शिकारी । मछुआ ।

सीसरा—(वि) तृतीय, निबपेक्ष !
तृतीय । तदस्थ ।

सीसी—(सं स्त्री) तिष्ठि ।
अलसी ।

सुंग—[वि] उन्नत, उथ ।
उन्नत । ऊँचा । प्रचण्ड । प्रधान ।
(सं पुं) पर्वत ।
पर्वत ।

सुंड—(सं पुं) मूत्र, ठोठि, मशामेद ।
मुँह, चोंच । धूधन । महादेव ।

सुंडी—(वि) ओझान्ना मूत्र वा
ठोठि ।
आगे निकले मुँह, चोंच या
धूधनवाला ।
(सं पुं) गणेश देवता ।
गणेश ।

सुंद—(सं पुं) पेट ।
पेट ।
(वि) क्रिश्च, उग्रद्वर ।
तेज । विकट ।

सुंदिल, सुंदैल—(वि) पेटोल,
पेटूरा ।
बड़े पेट वाला ।

सुंदा, तूंदा—(सं पुं) कितानाउ,
माउखोना ।

तितलोकी । कड़ू को खोखला
करके बनाया हुआ पात्र ।

सुंभु—(सं पुं) धनिया ।
धनिया ।

सुभ—(सर्व) तोमाक, तोमाव ।
तुम्हें । तुम्हारा ।

सुधना—(क्रि अ) गविगवा, गर्डमाउ
शेरा ।

टपकना । गिर पड़ना । (गर्भ)
गिरना ।

सुक—(सं स्त्री) विद्याकबता,
गंगति ।

किसी कविता या गीत का कोई
या पद । अन्त्यानुप्रास । सामं-
जस्य । संगति ।

सुकबंदी—[सं स्त्री] छन्द कावा-गुणशीन
मन्त्र-योजन । निरुद्ध कविता ।
काव्य गुणों से रहित तुक जोड़-
कर पद्य रचने का काम । मही
या साधारण कविता ।

सुकमा—(सं पुं) सुठोम-पाठ ।
बटन लगाने का छेद ।

सुकांश—(सं पुं) मिलिठाउ,
मिठाकरी ।
अन्त्यानुप्रास युक्त ।

तुकारना—(क्रि स) उड़े, उड़े गुनि
नडा, अछड़ गटबोधन ।
'तू तू' करके बुलाना । अशिष्ट
सम्बोधन ।

तुलना—[सं स्त्री] डाँडर चिना
बड़ी पतंग या गुड़ी ।

तुलना—(सं पुं) ठोठा-पत्र ।
वह तीर जिसमें फल न हो ।

तुलना—(सं पुं) अथन भुवनि देश
नाम । जेहे देशव शोवा ।
एक प्राचीन देश का नाम । इस
देश का घोड़ा ।

तुलना—[सर्व] उड़े ।
'तू' शब्द का विभक्ति युक्त रूप ।

तुलना—(सर्व) ठोका । तुलनाको ।

तुलना—[वि] अशुभमान, अधानमान ।
बहुत थोड़ा ।

तुलना—(क्रि स) उड़ोवा । बेलग
होवा । पहेठा उड़ोवा ।
दूसरे से तोड़नेका काम कराना ।
सम्बन्ध छोड़कर अलग होना ।
बड़े सिक्कों को छोटे छोटे सिक्कों में
बदलना ।

तुलना, तोतना—(क्रि अ)
थोका-धुकिटेक कोवा ।
तुलना कर अस्पष्ट बोलना ।

तुलना, तोतना—(वि) थोका-
धुकि टेक कथा कठौता ।
तुलनाकर अस्पष्ट बोलनेवाला ।

तुलना—(सं पुं) शालबीया कुल
विशिष्ट एविश कुल गछ ।
एक पेड़ जिसके फूलों से बसन्ती
रंग निकलता है ।

तुलना—(वि) शूर्वन, कोमल ।
दुबल । कोमल ।

तुलीर, तूल, तूलीर—(सं पुं)
तूल ।
तीर रखने का चोंगा ।

तुलना—(सं स्त्री) पिठेल ।
छोटी बन्दूक ।

तुलना—[क्रि अ] अवाक होवा ।
स्तब्ध होना ।

तुलना—(सर्व) तुलना ।
'तू' का बहुवचन रूप ।

तुलना, तूली—(सं स्त्री) लाठ-
थोला, लाठ-ठोकावी ।
कड़ू का बना पात्र ।

तुलना—(सं पुं) तुलना कोलाहल,
वोव-शुक्र ।
सेना या युद्ध का कोलाहल ।
घोर युद्ध ।

तुम्ह—(सर्व) तुम ।

तुम ।

तुम्हारा—(सर्व) तोगार ।

‘तुम’ का सम्बन्ध कारक का रूप ।

तुम्हें—(सर्व) तोगाक ।

तुमको ।

तुरंग (म)—(सं पुं) रोगा, यन ।

गात ।

घोड़ा । चित्त । सात की संख्या ।

तुरज—[सं पुं] बवार टेडा,

हकमा टेडा, थपा टेडा ।

चकोतरा नीबू ।

तुरंत—(क्रि वि) तुरन्त, तता-

लिके ।

जल्दी से । तत्काल ।

तुर—(क्रि वि) ततानिके ।

शीघ्र ।

(सं स्त्री) तता-तैय्या ।

शीघ्रता ।

तुरई, तोरई, तोरी—(सं स्त्री)

डोल; झिका वा बिका ।

एक प्रकार की तरकारी ।

तुरकटा—(सं पुं) मुठलमान ।

मुसलमान ।

तुरकाना—(सं पुं) डुकीमान,

मुठलमान ।

तुकिस्तान । मुसलमान ।

तुरकिन—(सं स्त्री) डुकी देश

डिबोता । मुठलमान डिबोता ।

तुर्क की स्त्री । मुसलमान की

स्त्री ।

तुरकी—(वि) डुकी देश ।

तुर्क देश का ।

(सं स्त्री) डुकीर भाषा ।

तुर्किस्तान की भाषा ।

तुरग तुरय—(सं पुं) रोगा ।

घोड़ा ।

तुरही—[सं स्त्री] पेप, पिडा ।

एक प्रकार का लम्बा बाजा ।

तुरा—(सं स्त्री) ततानिके, पिडा ।

त्तरा, जल्दी । तुरही बाजा ।

[सं पुं] रोगा ।

घोड़ा ।

तुराई—(सं स्त्री) कोयल गनि,

ततानिके ।

गद्दा । जल्दी ।

तुराना—(क्रि अ) आँतुर होवा,

उह-पिच् लगा ।

आतुर होना । जल्दी मरना ।

(क्रि स) छछि गेगोवा ।
तोड़ देना ।

तुरस, तुरी—(वि) छेडा ।
बट्टा ।

तुरसि—(स स्त्री) वेग, क्रियता ।
वेग । जल्द बाजी । फुरती ।

तुरसी, तुरी—(सं स्त्री) छेडा-
छन, केट्टेवा-माउ ।
खट्टापन । बातचीत में दिखाई
जानेवाली कटुता ।

तरित—(वि) उतालिके ।
त्वरित, शीघ्रता से ।
[क्रि वि] टूबछे ।
तुरंत ।

तुरीय—(वि) चतुर्थ ।
चौथा ।
(सं स्त्री) गोष्प । बाणी ।
वाणी की उच्चरित होनेवाली
अवस्था । मोक्ष ।

(सं पुं) प्रथम जन्म ।
निर्गुण ब्रह्म ।

तुरक, तुर्क—(सं पुं) शूजमान,
टूबक पेशाब निवागी ।
मुसलमान । तुर्किस्तान का
निवासी ।

तुरी—(सं पुं) व ।

पगड़ी में लगाया जानेवाला पर
या कलगी । पक्षियों के सिर पर
की कलगी ।

[वि] अछूत, आगेग्रे,
नोशेरा ।
अनोखा । अद्भुत ।

तुलना—(सं स्त्री) तुलना ।
कई वस्तुओं का तारतम्य । समा-
नता । उपमा ।

[क्रि अ] पगा पीछावे छजन
करा । उछत होवा ।

तराजू पर तोला जाना । तौल
या मान में बराबर उतरना ।
नियमित होना । उद्यत होना ।

तुलवाना—(क्रि स) खोथा,
गाडीर चकाउ तेल पिशा ।
तौल या वजन । गाड़ीके पहियों
में तेल दिलाना ।

तुलना—[सं स्त्री] गमानता, तुलना-
छनौ, छजन, तुलवानि—बारठा
बागिर भितरत गथर ।

तुलना । मिलान । तराजू । तौल ।
बारह राशियों में से सातवीं
राशि ।

तुझाई—(सं स्त्री) जोधा कार्या
वां ताब बानठ ।

तोलनेका काम, भाव या मजदूरी ।

तुझादान—[सं पुं] जात्रापक निज
शरीरब गमान ओजनब प्रवा-दान ।

मनुष्य की तौल के बराबर अन्न
या दूसरे पदार्थ का दान ।

तुझाना - (क्रि अ) आशि पोवा,
हूकि पोवा, नष्ट होवा,
जोधापोवा ।

आ पहुँचना । . पुरा उतरना ।
नष्ट हो जाना । किसीके बराबर
होना । तुलवाना ।

तुव—(सर्व) जोधाव, उव ।
तव । तुम्हारा ।

तुव—[सं पुं] ठूँह, कगीर खोना ।
भूसी । अडे का छिलका ।

तुधानल—(सं पुं) ठूँह-छूँह ।
भूमी या घास फूस की आग ।

तुष्टना—[क्रि अ] ठूटे होवा ।
तुष्ट या प्रसन्न होना ।

तुसी—(सं स्त्री) ठूँह ।
भूसी ।

[सर्व, वि] आशुनि ।
आप ।

तुहि—(सर्व) जोधाक ।
तुझको ।

तुहिन—(सं पुं) कूँवली, बबक,
जोधाक, शीत ।
कुहरा । हिम । चाँदनी । शीत ।

तुहिनाचल—(सं पुं) शिवालया ।
हिमालय ।

तूँ, तू—[सर्व] तई ।
मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम
(तुच्छार्थ)

तूअर—[सं पुं] बडब वां ताब
गछ ।
अरहर का पौधा । उसके दाने
या बीज ।

तूखना—(क्रि स) ठूटे कवा ।
तुष्ट या प्रसन्न करना ।
(क्रि अ) ठूटे होवा ।
तुष्ट या प्रसन्न होना ।

तूती—(सं स्त्री) ठिँशा चबाई,
एविश पेपा ।
छोटी जाति का तोता । मुँह से
बजाने का एक बाजा ।

तूदा—(सं पुं) दूँध, गीधाव छिन ।
राशि । हव बंदी । निशाना
साधनेका मिट्टी का बूह ।

तूफान—(सं पुं) धूम्रश,
तेज बांधी ।

तूफानी—[वि] उष्णजीवा, विह-
नीया, धूम्रशर दत्त वेणी ।
उपद्रवी । भूठा अभियोग या
कलंक लगानेवाला । तूफान की
तरह तेज । उग्र ।

तूम-तडाक—[सं स्त्री] जाह-
बिगाह ।
तड़क भड़क । ठसक ।

तूमना—[क्रि स] कपाह वठा ।
हातेवर बँहि पिहि दिया ।
रुई के रेशों का पहल अलग
अलग करना । हाथसे मसलना ।

तूमार—[सं पुं] अपर्कावी विस्तार ।
साधारण बातका व्यर्थ विस्तार ।

तूर, तूरा—(सं पुं) नागवा, जिडा ।
डेवी ।
नगाड़ा । तुरही ।

तूरज, तूर्य—(सं पुं) जिडा, डेवी ।
नगाड़ा ।

तूरण (न)—[क्रि वि] उतानिके ।
घट पट । शीघ्र ।

तूरना—[क्रि स] डडा ।
तोड़ना ।

(सं पुं) जिडा, पेगा ।
तुरही ।

तूर्ण—[अव्य] डुरन्ते ।
जल्दी ।

तूरु—[सं पुं] आकाश, कपाह,
बडा शूठार काटोपर ।

आकाश । रुई । लाल रंग का
सूती कपड़ा । गहरा लाल रंग ।
लम्बाई ।

[वि] डुला, डुलनीय ।
तुल्य ।

तूलना—[क्रि स] गाड़ीर धुवाउ
डेल दिया ।
पहिये की धूरी में तेल डालकर
चिकना करना ।

तूलम-तूल—[क्रि वि] दोटव-दोव,
गयुवा गयुविके ।
लम्बाई के बल । आमने सामने ।

तूलिका, तूली—[सं स्त्री] डुलिका,
कलव ।

चित्र अंकित करने की कूची ।

तूस—[सं पुं] डूह, पंछ,
पंछवी चानव
भूसी । पक्षमीना ऊन । पक्षमीना
ऊनकी बनी चादर ।

तृसना—(कि अ, कि स) छूटे होना या छूट कर।

सन्तुष्ट, तृस या प्रसन्न होना या करना।

तृक्षा, तृषा—[सं स्त्री] छूषा, भिषागा।

प्यास। इच्छा। अभिलाषा। लोभ लालच।

तृ—(प्रत्यय) थावा। ठटके। से।

तेंदुआ—(सं पुं) नाइव कुट्टे की बाध।

चीते की तरह का एक हिंसक पशु।

तेंदू—(सं पुं) आवनूस गछ। आवनूस का वृक्ष।

ते—(अव्य) था। ठटके। से।

[सर्वं] ठेठेनाक। ठेठेनाक-गकन।

वे। वे लोग।

तेह—[सर्वं] ठाक। उसे।

तेह—[सं पुं] जेठेति, छूटे। तेज। अग्नि।

तेह—(पद) ठेठेनाक। वे भी।

तेहना—(कि अ) छूष होना। क्रुद्ध होना।

तेग—(सं स्त्री) उबोवांग। तलवार।

तेगा—(सं पुं) दा, थङ्ग। खड्ग।

तेजना—[कि स] उगाग कर। एना। त्यजना। त्याग करना।

तेजपत्ता, तेजपात—[सं पुं] ठेव-पात।

एक पेड़ का पत्ता जो मसाले की तरह काम में आता है।

तेजसी, तेजस्वी—(वि) ठेवसी, धठापी।

जिसमें तेज हो। प्रतापी।

तेजाब—(सं पुं) एठिप। काब-खातीर ठेडा आदक।

क्षार का तरल और अम्ल सार। (अं—एसिड)।

तेजाबी—[वि] एठिपगुल। एठिपदेव पोषित।

तेजाब सम्बन्धी। तेजाब की

सहायता से ठीक किया हुआ ।
 [सं पुं] अष्टमव गशाग्रदेव
 पोषित गोत्र ।
 तेजाब की सहायता से शुद्ध किया
 हुआ सोना ।
 तेजायसन—(सं पुं) अति तेजस्वी ।
 परम तेजस्वी ।
 तेजी—[सं स्त्री] तीव्रता, उच्चता ।
 गीब्रता, श्रुमाता ।
 तीव्रता । उग्रता । शीघ्रता ।
 महंगी ।
 तेजोवत—[वि] अशीन, दूरी ।
 श्री हत ।
 तेवा, तेत्तिक, तेतो—(वि) गिमान ।
 उतना ।
 तेपि—[पद] उपाधि ।
 तो भी ।
 तेरस—[सं स्त्री] अष्टादशी ।
 त्रयोदशी तिथि ।
 तेरह—[वि] डेढ़ ।
 तेरही—(सं स्त्री) ब्रतकर अष्टा-
 दश दिवसगत दिवा डोछ ।
 मृतक के तेरहवें दिन किया जाने
 वाला श्राद्ध ।
 तेरा—(सर्व) डोढ़ ।
 'तू' का सम्बन्ध कारक रूप ।

तेलहन—[सं पुं] तेल-शुद्धि ।
 वे बीज जिनसे तेल निकाला
 जाता है ।
 तेलहा—[वि] तेल शुद्ध, तेल-
 तेलीया । तेलनेवे उखा ।
 जिसमें तेल हो या तेल लगा हो ।
 तेल के योग से बना हुआ या
 पका हुआ ।
 तेलिया—(वि) चक्-चकीया ।
 तेलन मदे क'ना । तेल तेलीया ।
 तेल की तरह काला, चिकना
 और चमकीला ।
 [सं पुं] क'ना वरग, क'ना-
 पोरा ।
 काला रंग । काले रंगका घोड़ा ।
 तेलिया-परवान—[सं पुं] एविश
 चक्-चकीया गिन ।
 एक प्रकार का चिकना पत्थर ।
 तेवन—[सं पुं] आगं छाठान,
 आगोद-अगोदर दिन ।
 घर या महल के सामने का छोटा
 बाग । आमोद प्रमोद का स्थान ।
 मनोविनोद ।
 तेवर—[सं पुं] फुट्टि वा छावनी ।
 ऊकूटि ।
 दृष्टि । चितवन । मूकुटी ।

तेवान—[सं पुं] छिछा, तावना ।

चिन्ता । फिक्र । सोच विचार ।

तेवाना—[क्रि अ] छिछा कबा ।

चिन्ता या फिक्र करना । विचार करना ।

तेह—[सं पुं] थं, अभिमान, उद्वेगना ।

क्रोध । घमंड । तेजी । तीखापन ।

तेहरा—[वि] तिनिकोनीया ।

तीन परतों का । तिगुना ।

तेहराना—[क्रि स] तृतीयवार कबा ।

कोई काम तीसरी बार करना ।

तेहा—[सं पुं] क्रोध, अभिमान, उद्वेगता ।

क्रोध । अहंकार । उग्रता ।

तेही—[सं पुं] थंडाल, अभिमानी, उद्वेग शब्दादब ।

उद्वेग शब्दादब ।

क्रोधो । अभिमानी । उग्र स्वभाव वाला ।

तै—(सर्व) तई ।

तू । तूने ।

(अव्य) पबा । ठटैक ।

से ।

तै—(अव्य) गिमान ।

उतना ।

(सं पुं) बीयांगना । काव गम्भीर शोदा ।

निपटारा । फैसला । काम पूरा होना ।

(वि) बीयांगित, निश्चित ।

निपटा हुआ । जो पूरा हो चुका हो । निश्चित ।

तैनाव—(वि) निश्चुल ।

नियुक्त ।

तैयो—(त्रि वि) तथापि ।

तिसपर भी ।

तैरना—(क्रि अ) गँटोबा ।

संतरण करना ।

तैराई—(सं स्त्री) गँटोबा का

वा ताव पूबकाव ।

तैरनेकी क्रिया, भाव या पुरस्कार ।

तैराक—(वि) गँटोबा विदात

पार्गित ।

बहुत अच्छी तरह तैरनेवाला ।

तैराना—[क्रि स] गँटोबावा ।

गँटोबावा । तैरनेमें प्रवृत्त

करना । घुसाना ।

तैलचित्र—[सं पुं] तेलश्वि तेल

बडेबे अँका चिकचिकीया छवि ।

तेल मिले रंगों की सहायता से

बना हुआ चित्र ।

सैसा—(वि) तेने ।

उस तरहका ।

सैसे—(क्रि वि) गेइमदे ।

उस तरह से ।

सौइ—[सं स्त्री] उरुणा पेट ।

फूले हुए पेट का निकला हुआ भाग ।

सौइड—[वि] पेट्टेवा, पेटान ।

तोंदवाला ।

सौइी—(सं स्त्री) नाइ, नाडि ।

नाभी ।

सौइका—[सर्व] तोमांक ।

तुम्हें ।

सो—(अव्य) तेनेइले ।

(किसी बात पर जोर डालने या ऐकान्तिकता प्रकट करनेवाला अव्यय) उस दशा में ।

(सर्व) ठइ, तोब ।

तुफ़ । तेरा ।

सौई—[सं स्त्री] पावि (काटपावव) ।

मगजी । गोड ।

सोइक—(वि) खडनकावी । डाडोडा ।

तोड़नेवाला ।

सोइना—(क्रि स) डडा, खड-विखड

कवा, निग्रम डेलखन कवा । माटिड

पोनअथमे शान बोवा ।

किसी पदार्थ के खंड या टुकड़े करना । खेतमें पहले पहले हल चलाना । झीण या अशक्त कर देना । संघटन, व्यवस्था आदि नष्ट भ्रष्ट करना । आज्ञा, नियम आदि उल्लंघन करना ।

सोइफोइ—(सं पुं) टूब गांव । स्वर्ण ।

किसी चीज को टुकड़े टुकड़े कर नष्ट करने की क्रिया या भाव ।

सोइवाना, तुइवाना—(क्रि स)

डडोवा ।

दूसरे से तोड़नेका काम करवाना ।

सोइा—(सं पुं) टकाव मोना ,

शब आतीर डबिड पिक्का थार ।

ठेला । बाटि ।

रुपये की थैली । जंजीर जैसा

गहना । घटी । बन्दूक छोड़ने की

रस्सी ।

सोण—(सं पुं) डूण ।

तरकश ।

सोतई—(वि) टिंग्रा बबगैया ।

सोते के रंग का ।

सोतक—[सं पुं] छातक । पिरांती

छाई ।

पपीहा ।

सोसा—[सं पुं] भाटों ।

शुक पक्षी ।

सोसा-चश्म—[सं पुं] अविश्वजी,
निर्द्वैत ।

बे-मुरीबत । निष्ठुर ।

सोद—(सं पुं) कष्ट, पीड़ा ।

कष्ट । पीड़ा ।

सोदन—(सं पुं) छावुक, वेदना ।

चावुक । व्यथा । दर्द ।

सोपखाना—(सं पुं) थाब-वाकफ
घर । कामान बर्था घर वा ठाँह ।

वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं ।

बुद्धके लिये प्रस्तुत तोपोंका समूह ।

सोपची—[सं पुं] कामान छल्लावा

गैन्या । गोलम्माक ।

गोलंदाज ।

सोबडा—[सं पुं] दानादेव गैसते

बौवार मुखत ओलोसाई दिया

वाना ।

दाना भरकर बोड़े के मुँहपर

बाँधनेवाली थैली ।

सोबा, सौबा—[सं स्त्री] नटने नटने

करा अलिङ्गा । अछूशोचना ।

भविष्यमें कोई बुरा काम न करने

की दृढ़ प्रतिज्ञा ।

सोम—[सं पुं] द'न ।

समूह ।

सोमर—[सं पुं] याठि । तोयब

ब'न । एविश हल ।

एक पुराना अस्त्र । एक प्रकार

का छन्द ।

सोय—(सं पुं) पानी ।

पानी ।

सोयधर—(सं पुं) येष ।

बादल ।

सोयधि, सोयनिधि—[सं पुं]

गागर ।

समुद्र ।

सोर—[वि] तोब ।

तेरा ।

सोरना—(क्रि स) डडा ।

तोड़ना ।

सोरा—[सं] तोब ।

तेरा ।

(सं पुं) किवीटि ।

कलगी ।

सोराबान—[वि] बेगौ ।

बेगवान ।

सोख—(सं स्त्री) उखन, परिव्राण ।

माप । परिमाण ।

[वि] डूना ।

तुल्य ।

तोखना, तौखना—[क्रि स] खोखी,
डूलना कवि चोरा ।

वजन करना । अस्त्र आदि हाथ
में लेकर चलाने के लिये ठीक
स्थिति में लाना ।

तोखा—(सं पुं) एक तौनाब
डब ।

बारह मासे की तोल ।

तोशक—[सं स्त्री] तोखक, डूजी ।
बिछाने का गद्दा ।

तोशदान—(सं पुं) खादा बख कठिउद,
बाठन वा मोना । बखूकब
खुजी बख मोना ।
यात्रा के समय जलपान आदि
रखने की थैली । सिपाहियों की
कारतूस रखने की थैली ।

तोशा, तोसा—(सं पुं) पथर
गथल । थोछ बख ।
पाथेय ।

तोशाखाना, तोसागार—(सं पुं)
पोछाक बखी कोठालि ।
वह स्थान जहाँ राजाओं या
अमीरों के पहनने के कपड़े, गहने
आदि रहते हैं ।

तोष, तोस—(सं पुं) गङ्गाई,
अंगव्रता ।

तृप्त होने का भाव । प्रसन्नता ।

तोषण, तोषन—(सं पुं) डूखि
गच्छाव ।

तृप्ति । सन्तोष ।

[वि] गङ्गाई करवाता ।

सन्तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला ।

तोहफा—(सं पुं) उपहार ।
सौगात ।

[वि] खून्नव ।
बढ़िया ।

तोहमत—(सं स्त्री) डिखिशीन
दोषादोष ।
भूठमूठ लगाया हुआ दोष ।
भूठा कलंक ।

तोही—[सर्व] तोक ।
तुरु को । तुम्हें ।

तौकना, तौसना—[क्रि अ] गंवत
तु टनाटपावा ।

गरमी से झुलसना । ऊमस होना ।

तौ—(क्रि वि) तेनहले ।
तो ।

(क्रि अ) आछिल ।

था ।

(वि) तोब वा तौनाब ।

तेरा या तुम्हारा ।

(अव्य) बाक, ठिक आछ ।

हाँ, ठीक है ।

सौक—[सं स्त्री] गलपडा । अपवा-
बीब गलड आवि दिशा लोब
बकै ।

वह भारी गोल पटरी जो पागल
के गले में पहनाई जाती है । इस
आकार का गहना । पसियों के
गलेमें होनेवाली हंसुली ।

सौन—(सर्व) गि वा गेइ ।

वह ।

सौनी—(सं स्त्री) गरु तावा वा डेवा,
गरु केबाहि ।

छोटा तवा ।

सौर—(सं पुं) उपाय, अकाव,
छाल-छलन ।

तरीका । प्रकार । चालचलन ।

सौरि—(सं स्त्री) मूबभूबणि ।

सिरका चक्कर । घुमटा ।

सौरेस—[सं स्त्री] इहनीगकनब
अथान शर्ष-अह ।

यहूदियों का प्रधान धर्मग्रन्थ ।

सौखिबा—(सं पुं) गाढवाडा ।

एक विशेष प्रकार का मोटा
बगोछा ।

सौहीन—(सं स्त्री) अपमान ।
अपमान ।

त्यागना—(क्रि सं) त्याग कर ।
छोड़ना ।

त्यो—[क्रि वि] गेइ ढवे, गेइ
गमयत ।

उस प्रकार । उसी समय ।

(सं पुं) काल, दिश ।

ओर । तरफ ।

(अव्य) आक ।

ओर । तथा ।

त्योराना—(सं पुं) याछाछाई,
मूब भूबणि ।

सिरमें चक्कर आना ।

त्योरो—(सं स्त्री) दृष्टि, छावनि ।
दृष्टि । निगाह ।

त्योहार—(सं पुं) उ५गव ।
पर्व दिन ।

त्योनार—(सं पुं) शबन, ठाँठ ।
ढंग । तज, शैली ।

त्योनारा—[वि] उ५म ।
बढ़िया ।

त्रयी—(सं स्त्री) त्रिनिटा बखब
गमूह । त्रिमूर्ति ।

तीन वस्तुओं का समूह ।

त्रसन—(सं पुं) डग ।
भय ।

प्रसना—(कि अ) उग्रते हात
उवि पोटेते मुकाबा ।

भय से कांप उठना । कष्ट पाना ।

प्रसानी—(कि स) उग्र देखना ।
डराना ।

प्रासना—[कि स] उग्र देखना,
कष्ट दिना ।

डराना । कष्ट पहुँचाना ।

प्राहि—[अय्य] बढावा । बका
कल । बचाओ ।

प्रिक—[सं पुं] द्विगुडि ।
तिनिटा बडव गनु । कँकाज ।
तीन चीजों का समूह या बर्ग ।
कमर ।

प्रिकुटी—(सं स्त्री) अकूटि ।
भीहों के बीच का ऊपरी भाग ।

प्रिकोण मिति—[सं स्त्री] तिनि-
हूकीया बड बोधा अक विद्या ।
त्रिभुज के कोण, बाहु आदि का
मान निकालने की प्रक्रिया ।

प्रिजामा, प्रिग्रामा—(सं स्त्री)
बाडि, निशा ।
रात्रि ।

प्रिवाप—[सं पुं] द्विडाप । दैहिक,
दैविक, आधिभौतिक ।

दैहिक, दैविक और भीतिक ताप
या कष्ट ।

प्रिदोष—(सं पुं) द्विदोष—बाहु,
गिड, ककव विचार । गन्निपाठ
बोधि ।

वात, पित्त और कफ ये तीनों
रोग । सन्निपात रोग ।

प्रिदोषना—[कि अ] गन्निपाठ
बाबा आकाश । काम, क्रोध
लोभ वशवर्डी होवा ।
वात, पित्त और कफ के प्रकोप में
पड़ना । काम, क्रोध और लोभ के
फेर में पड़ना ।

प्रिधा—(कि वि) द्विविध उपाय ।
तीन प्रकार से ।

[वि] तिनि प्रकार ।
तीन प्रकार का ।

प्रिपञ्चमा—[सं स्त्री] गङ्गा ।
गंगा ।

प्रिपिटक—[सं पुं] बोध धर्म-
अथ ।

बौद्धों का धर्मग्रन्थ ।

प्रिपिटाना—[कि अ कि स]

गड्डे होवा, गड्डे कवा ।

तुस या सन्तुष्ट करना या होना ।

त्रिपुंड—(सं पुं) तैव गकले
कपालत लोवा तिलक ।
वह तिलक जो शैव लोग लगाते
हैं ।

त्रिपुरारी—(सं पुं) नशादेव ।
शिव ।

त्रिबली—(सं स्त्री) त्रिबलि - पेट
नाईवा डिडि आदि ठाँईत छान
कौंच बाई होवा त्रिनिडाल
बेवा वा शिव ।
पेट के ऊपर दिखाई पड़ने वाले
तीन बल या रेखाएँ ।

त्रिविक्रम, त्रिविक्रम—[सं पुं]
वामनर विवाटे कप ।
वामन का विराट रूप ।

त्रिवेनी, त्रिवेणी—(सं स्त्री) गङ्गा,
यमुना आरु गवशतीव गङ्गम
शूल प्रयाग । इङ्गा, पिङ्गला आरु
सूयुङ्गा नाडीव मिलन ।
गंगा, यमुना और सरस्वती का
सङ्गम । इङ्गा, पिङ्गला और
सुषुम्ना इन तीनों नदियों का
सङ्गम स्थान ।

त्रिभंग—(सं पुं) एक युद्धा—शरीरव
तिनि ठाँईत डीअ थका ।
खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें

टांग, कमर और गरदन ये तीनों
अंग कुछ टेढ़े रहते हैं ।

त्रिय (१)—[सं स्त्री] त्रिबोता ।
औरत ।

त्रियना—[क्रि अ] उपडि थका,
गौतुवि पाव होवा ।

पानीके ऊपर तरना । तैरकर
पार होना ।

त्रिलोचन—(सं पुं) नशादेव ।
शिव ।

त्रिवर्ग—(सं पुं) धर्म, अर्थ आरु
काम । ब्राह्मण, क्षत्रिय आरु
वैश्य जाति ।

धर्म, अर्थ और काम का समूह ।
सत्त्व, रज और तम ये तीनों
गुण । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य
ये तीनों वर्ण ।

त्रिवेदी—(सं पुं) शंखवेद, यजुर्वेद
आरु सामवेदर छान बाँधीता ।
ब्राह्मण गकलर एठा जाति ।
ऋक, यजुः और साम इन तीनों
वेदों का ज्ञाता । ब्राह्मणों का
एक वर्ग ।

त्रुटित—(वि) उड्डी-छिड्डी, ज़ाटि
गुर्ग ।

कटा या टूटा हुआ । आहत ।
वृट्पुर्ण ।

त्रैकाङ्गिक—(वि) अतीत, भविष्यत
आरु वर्तमान वा भूत, मध्याह्न
आरु गंधर्वा एवै त्रिणिष्ठ कालत
होवा [काय]

भूत, भविष्य और वर्तमान इन
तीनों कालों में होनेवाला । प्रातः
मध्याह्न और संध्या तीनों
कालों में होनेवाला ।

त्रोटक—[सं पुं] ७, १, ४ नाईवा
२ टा अक्ष ब्रूज नाटक ।

प्राचीन नाटक का एक भेद ।

उद्यम्बक—(सं पुं) मशानेव ।
शिव ।

त्वक् (सं पुं) छाल । पञ्च छाने-
ल्लियव एटा ।

छाल । चमड़ा । पाच ज्ञानेन्द्रियों
में से एक ।

त्वचा—[सं स्त्री] छाल । गापव

योष्ट वा चकला ।

चमड़ा । छाल । साँपकी कँचुली ।

त्वदीय—[सर्व] 'तोगार ।

तुम्हारा ।

त्वरा—(सं स्त्री) शीघ्रता ।

शीघ्रता ।

त्वरित—[वि] क्वचित् । वेगै, द्रुत-
गात्री ।

जल्दी चलने, जाने या पहुँचाने
वाला । जिसका जल्दी पहुँचना
या जल्दी कार्रवाई आवश्यक हो ।
(एकप्रस)

त्वेष—[सं पुं] उत्साह, भावावेग ।

उत्साह । भाव का आवेग ।
आवेश ।

थ

थ—वाङ्मन वर्णमालाव गुरुपण आथव ।
देवनागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ
व्यंजन ।

थंहिल—(सं पुं) थूकाव बेगी ।
यज्ञ की वेदी

थंभ[म], थंभा— [सं पुं] छठ,
थूँटा, टोका ।
खंभा । सहारा ।

थंभना—(क्रि अ) बोरा ।
थमना (रकना)

थंभित्त—[वि] थयकि बोरा ।
ठकित ।

रुका या ठहरा हुआ । अचल ।
थकित ।

थकन, थकान—(सं स्त्री) भागव ।
क्लान्ति । थकावट ।

थकना—(क्रि अ) भागवि पना ।
वेकाव लगना ।
क्लान्त होना । उबना । बुढ़ापे
के कारण अशक्त होना । मोहित
होना ।

थकाथक—(क्रि वि) थक् थक्
कर । एकबाहे ।

थक थक शब्द करते हुए ।
लगातार ।

थकामौदा—(वि) झुग्ना-
झुगुवा ।
बिल्कुल थान्त ।

थकावट—[सं स्त्री] भागव लगना
अवस्था । शिथिलता, अवगाध ।
थकने का भाव या परिणाम ।
शिथिलता । क्लान्ति ।

थकित—(वि) भागकरा, मोहित ।
थका हुआ । मोहित ।

थकौहा—(वि) भागकरा, शिथिल ।
थका हुआ । शिथिल ।

थकर, थका—(सं पुं) थमना,
.ठेकुरा ।
किसी बीज का जमा हुआ पिंड ।
समूह ।

धाति- (सं स्त्री) निधि, गच्छित
पूँछि ।

धाती । जिम्मे में रखा हुआ धन ।

धन- (सं पुं) बैठा वा बैठा ।

गाय, भेस आदि का स्तन

धनैसा- [सं पुं] तिरौतावर लुनव
वेसाव ।

औरतों के स्तन की बीमारी ।

धनैस- [सं पुं] गाँवबूढ़ा ।

गाँव का मुखिया । गावका लगान

बसूल करनेवाला कर्मचारी ।

धपक, धपकी, धपधपी- [सं स्त्री]
लाट्टेक धंगबिना ।

हथेली से धीरे धीरे ठोकने की
क्रिया या भाव ।

धपकना- (क्रि स) खनकट लाट्टे
लाट्टे धंगबिना ।

प्यार से या आराम पहुँचाने के
लिये किसी के शरीरपर धीरे धीरे
हथेली से आघात करना ।

धपका- [सं पुं] ठेकुरा, गकटके
बरा टांगव ।

धपका, धपकी ।

धपना- (क्रि स) धांपन करा ।

स्थापित करना । धोपना ।

[क्रि अ] धांपन होना ।

स्थापित होना, जमना ।

धपेड़ना- (क्रि स) टांगव बरा ।

धपेड़ा या चपत लगाना ।

धपेड़ा- (सं पुं) टांगव, आघात ।

धप्पड़ । आघात । धक्का ।

धपोकी- (सं स्त्री) हात टांगबि ।
करतल ध्वनि ।

धपपड़- (सं पुं) टांगव, गुम्फतव
आघात ।

हथेली से किया हुआ जोर का
आघात । तमाचा । भारी
आघात ।

धमना- (क्रि अ) बोवा, अछल
होवा । धैर्य बरा ।

रकना । ठहरना । बन्द हो जाना,
धीरज धरना ।

धर- [सं स्त्री] लव, बलना ।
तह । परत ।

[सं पुं] ठाँह, शिख्य बज्जुव
शुलि ।

स्थल । हिंसक पशु की माँद ।

धरकना- (क्रि अ) धक-धकटके
कैना ।

भय से कांपना ।

शरथर—(सं स्त्री) डगड कैंपनि
उठा ।

डर से कांपना ।

(क्रि वि) कैंपि कैंपि ।

डर से कांपते हुए ।

शरथराना—(क्रि अ) डगड कैंपि

डरसे कांपना । कांपना ।

[क्रि स] कैंपोदा ।

थर थर करके कांपने में प्रवृत्त
करना ।

शरथराहट, शरथरी—[सं स्त्री]

थर-थरि वा थर-थरि ।

थर थराने की क्रिया या भाव ।

शरना—(क्रि स) शोडवी मवा ।

हथोरी से कूचना ।

शरसना—(क्रि अ) डग पोदा वा

कटे पोदा ।

प्रस्त या पीड़ित होना । कष्ट
भोगना ।

शरिया—(सं स्त्री) कांशी ।

थाली ।

शरी—(सं स्त्री) बाधन भूमि ।

गुहा ।

शेरोंकी मांद । गुफा ।

शरीना—(क्रि अ) डगडोड होदा ।

डरसे कांपना । भयभीत होना ।

शर—[सं पुं] ठांहे, बाध ठांहे

वनबीजा भुजब भूमि ।

स्थान । जलसे रहित भूमि ।

जंगली पशुओं की मांद ।

शरकना—(क्रि अ) झोकाव

होदा । आलाडन होदा ।

भारी चीज का कुछ ऊपर नीचे
हिलना । मोटाई के कारण शरीर
का मांस हिलना ।

शरकर—[सं पुं] शलकर ।

स्थल में रहनेवाले जीव ।

शरकलाना—[क्रि अ] थोका

काटकाट गाव गडवाल अल
नवि उठा ।

मोटे शरीर का मांस झूल कर या
ऊपर-नीचे हिलना ।

शररुई—(सं पुं) शलकात ।

स्थल पर उत्पन्न होनेवाले (जीव,
वृक्ष आदि)

शरली—(सं स्त्री) ठांहे, डला वा

डलि (नदी आदि)

स्थान । जल के नीचे की भूमि ।

ठहरने या बैठने का स्थान ।

शरई—[सं पुं] बाध वि ।

मकान बनाने वाला कारीगर ।

राज ।

अक्षरना—[क्रि अ] निबिंन देह
रहि पवा ।

शिथिल होकर बैठ जाना ।

थहना—[क्रि स] न ब झोख
लोवा, यिमान न ताक झोखा ।
थाह लेना ।

थहरना—[क्रि अ] कँपा ।

दुबलता, भय आदि से काँपना ।

थहाना—(क्रि स) पानीब गंभीरता
विबये नाहेवा माशुहर गुण
गम्भर्क अश्रमान कवा ।

गहराई, गुण, आदि की थाह
लेना या पता लगाना ।

थौंग—(सं स्त्री) चोब-डकाईडव
गोपन आछा । बिचाबि डेलिया ।
चोरों या डाकुओं के छिपकर
रहने का स्थान । खोज, तलाश ।

थौंगी—(सं पुं) चोबि बड किनोता
वा बाबोता । चोबब चर्पाब,
चोबाःचोबा ।

चोरी का माल खरीदने वाला या
अपने पास रखने वाला आदमी ।
चोरो का सरदार । जासूस ।

थौंझा—(सं पुं) थोल । गंज-
पुलि आपित पानी पिसाब
अविशब काबणे कवा सेब ।

किसी पेड़ या पीछे के चारों ओर
का घेरदार गड्ढा जिसमें उसे
सींचने के लिये पानी डाला जाता
है ।

था—[क्रि अ] आछिन ।

‘होना’ क्रिया का भूत कालिक
रूप ।

थाई—(वि) शायी ।

स्थाई ।

थाक—(सं पुं) गौरव जीमा,
बल्लव दय ।

गाँव की हद । एक पर एक रखी
हुई बीजों का ढेर ।

थातो—(सं स्त्री) पूँजि । वापडि
गादन । विपदब काबणे गळित
धन ।

जमा पूँजी । धरोहर । गाढ़े समय
में काम आने के लिये बचाकर
रखा हुआ धन ।

थान—(सं पुं) थान, ठाँइ,
गोशाली, कापोबब थान ।

जगह । स्थान । चौपायों के बंघि
जाने का स्थान । कुछ निश्चित
लम्बाई का कपड़े, गोटे आदि का
पूरा टुकड़ा । संस्था ।

थाना—(सं पुं) थाना, बिबि
ठाई ।

टिकने या बैठने का स्थान ।

अड्डा । पुलिस की बड़ी चौकी ।

थानु-सुख—(सं पुं) गणेश देवता ।
गणेशजी ।

थानेदार—(सं पुं) दावोका वा
दावोगी ।

पुलिस के थाने का प्रधान
अधिकारी ।

थानैत—(सं पुं) ठकीब पशबीया
गकनब भुविग्राम । अमदेवता ।
चौकी या अड्डे का प्रधान ।
ग्राम देवता ।

थाप—(सं स्त्री) ठवना, ठनक,
ठोल, आदिठ मवा ठापव,
छाप, अक्का, मपत ।

तबले, मृदङ्ग आदि पर पंजे से
किया जानेवाला आघात ।
थप्पड़ । छाप । गुण, प्रधानता
आदि की धाक । शपथ ।

थापना—(क्रि स) थापन कबा,
हाउठवे वा मंठाउ गंठा ।
स्थापित करना । हाथ या साने
से कोई चीज पीठ या दबाकर
कोई चीज बनाना ।

(सं स्त्री) थापन, थापना ।
स्थापन । दुर्गापूजा के लिये घट—
स्थापन ।

थापर—(सं पुं) ठापव ।
चपत । थप्पड़ ।

थापा—(सं पुं) हाउठ तनूवाक
छाव, वाशव, म'व ।

दीवारों आदि पर लगाई जाने-
वाली पंजे की छाप । वह सचा
जिससे कोई चीज अंकित किया
जाय । ठेर । राशि ।

थापी—(सं स्त्री) धून वा धूवमूठ ।
राज मजदूरों का मसाला जोड़ने
का एक औजार । प्रशंसा, आशी-
र्वाद आदि के रूपमें किसी की
पीठ ठोकने की क्रिया या भाव ।

थामना—[क्रि स] धवा, गतिरुक्क
कबा, आशय मिया ।

पकड़ना । गिरती या चलती हुई
चीज रोकना । सहारा देना ।
अपने ऊपर कार्य का भार लेना ।

थायी—(वि) शशी ।
स्थायी ।

थाय—(सं पुं) हाउठ कौशी ।
बड़ी थाली ।

भाषा—(सं पुं) धौल । गङ्ग-पुनि
आदि पानी दिवाव सुविधाव
कावण कवा येव ।

पेड़ या पौधों के चारों ओर पानी
सींचने के लिये बनाया हुआ
गड्ढा । पेड़ के चारों ओर बनाया
चबूतरा । फोड़े, फुन्सी आदि के
चारों ओर होनेवाली सूजन ।

धाक्षी—(सं स्त्री) कौशे ।
भोजन करने की गोल तश्तरी ।

धाह—[सं स्त्री] ढ, गंभीरता,
उमा वा उमि, गीमा ।
गहराई, ज्ञान, महत्व आदि की
सीमा । गहराई, ज्ञान, महत्व
आदि का पता या परिचय ।
सीमा ।

धाहना—(क्रि स) गंभीरता अशु-
मान कवा । किमान ढ छुधि
छावा ।

गहराईका पता लगाना ।

धाहरा—(वि) अगंभीर, उमाः ।
कम गहरा । छिछला ।

धिगल्ली—[सं स्त्री] ठाणलि ।
चकती । पैबन्द ।

धित—(वि) धित, धका ।
स्थित ।

धिति—(वि) धिति ।
स्थिति ।

धिर—(वि) धिब ।
स्थिर ।

धिरकना—[क्रि अ] नृत्तात डविब
छकल गति ।
नाचने के समय पैर धीरे धीरे
उठाना और पटकना ।

धिरता (ई)—(सं स्त्री) धिबता,
श्रमिष ।

ठहराव । स्थायित्व । शान्ति ।

धिरधानी—(वि) धिब ।
एक जगह जमकर रहनेवाला ।

धिरना—(क्रि अ) धिब शोवा,
गेम वक्ता ।

पानी आदि का हिलना डोलना
बन्द होना । स्थिर होना ।
निधरना ।

धिराना—(क्रि स)
जल को स्थिर होने देना । स्थिर
करना । निधारना ।

धीता—(सं पुं) धिबता, धाका ।
स्थिरता । शान्ति । चैन ।

धुकाना—(क्रि स) धू पेनाबटेल
वाधा कवा, जानव धूव निला
कवा ।

किसीको थूकने में प्रवृत्त करना ।
उगलवाना । किसी की बहुत
निन्दा करना ।

थुका फजीहत—(सं स्त्री) उथना-
उथनि ।

निकृष्ट कोटि का लड़ाई-भगड़ा ।

थुड़ी—(सं स्त्री) थूः ।

घृणा पूर्वक थूकने का शब्द ।
धिकार ।

थुथुकारना—(क्रि स) थूँ-थूँ
मिया ।

परम घृणा प्रकट करना ।

थू—(अव्य) थूः ।

थूकने का शब्द । घृणा या
तिरस्कार का शब्द ।

थूक—[सं स्त्री] थूँकाव ।

खलार । लार ।

थूकना—[क्रि अ] थूँ (गलावा) ।

मुँह से थूक निकाल कर बाहर
फेंकना ।

(क्रि स) मुखत वथा वख्त उगलि
मिया । मुँह में रखी वस्तु उगलना ।

थूथन—(सं पुं) गांशवि आदिब
बोधा नाक ।

सूअर आदि का कुछ लम्बा
निकला हुआ मुँह ।

थून—[सं पुं] थूँठा, ठोका,
अवलम्बन ।

खम्भा । टेक, सहारा ।

थूनी—(सं स्त्री) थूँठा, ठोका,
ठोका ।

खम्भा । चाँड़ । टेक ।

थूरना—[क्रि स] थूना, कोढोवा,
धैँठि-धैँठि डोढोवा ।

कूटना । मारना । कसकर
भरना ।

थूल—[वि] थूल, मोटा जाद
गधुव ।

स्थूल । जो स्पष्ट दिखाई दे ।
मोटा और भारी । भद्दा ।

थूहर—(सं पुं) गांशव-खेना,
नांग रूपा ।

एक छोटा पेड़ जिसके डंठल
डंडेके आकार के होते हैं ।

थेई-थेई—[सं स्त्री] नाचब ताल
वा नृत्या ।

थिरक थिरक कर नाचने की
मुद्रा । नाच का बोल ।

थेथर—(वि) भागकदा, बाँझ-
बाँझ ।

लस्त-वस्त । बहुत थका हुआ ।
परोधान ।

बैला—[सं पुं] धैला ।

झोला ।

बैली—(सं पुं) थोक वा थोका,

पाइकाबी जावे बाल किना-

वेचा कवा काय ।

ढेर, झुड । एक साथ बहुत सा

या इकट्ठा माल सरीदने या बेचने

का काम । सारी वस्तु ।

थोक—(सं स्त्री) योगा, उपहार

अकपे दिया धनव योगा ।

छोटा पैला । किसी को भेंट

किया जानेवाला धन ।

थोड़ा (वि) अल्प ।

न्यून । कम ।

(क्रि वि) अल्पदेक ।

जरा । तनिक ।

थोथा—(वि) गाबहीन, कौंपोला ।

जिसमें कुछ सार या तत्व न हो ।

खोखला । व्यर्थ का । कुंठित ।

थोपना—(क्रि स) डाँठ आनेथ

दिया, मिष्टा अभियोग अना ।

मोटा लेप चढ़ाना । झूठा अभि-

योग लगाना ।

थोरा—(वि) अल्प ।

थोड़ा । जरा ।

थोरिक—[वि] अकणमान ।

थोड़ा-सा ।

द

दू—वाङ्मन वर्णव उठव गन्थाव
आंखव ।

धर्ममाला का अठारहवां अंजन ।

दूंग—(वि) विस्मृत ।

विस्मृत ।

दूंगई—(वि) विस्मृतकर, दम्भूवा ।

दंगा करनेवाला । प्रचण्ड ।

दूंगल—[सं पुं] मल युक्त आंखा,

माल झूँझ ।

जोड़ बन्धकर लड़ी जानेवाला ।

कुम्ती । कौशलकी प्रतियोगिता ।

(वि) ३२९ ।

बहुत बढ़ा । भारी ।

दंगा—(सं पुं) काजिया, माव-धव ।

मारपीट । उपद्रव ।

दंडक—(सं पुं) टोटाकान, भांगक,

एविष ह्म ।

डण्डा । शासक । एक प्रकार का

छन्द ।

दंडना—(क्रि स) दण्ड दिया ।

दण्ड देना ।

दंडनायक—[सं पुं] दण्ड निवध

अधिकारी ।

सेनापति । दण्ड देनेवाला एक

अधिकारी ।

दंडपाणि—(सं पुं) यमराज ।

यमराज । भैरव ।

दंडप्रणाम, दंडवत—(सं पुं)

दण्डवत, गार्होष्ठ अर्पण ।

जमीन पर लेटकर अभिवादन ।

दंडविधि—[सं स्त्री] शास्त्रि

बादशा जिन्हा धका भूषि, फोछ-

मावी जाहेन ।

बहु विधान जिसमें अपराधों के

क्रिये दण्डोंका विवेचन होता है ।

दंडी—[सं पुं] शासन पविद्ध

लाशुटि ले कुवा एक अकाबब

गमगागी ।

दण्ड धारण करनेवाला । एक

प्रकार के सन्यासी ।

दंड्य(वि) दण्ड्य ।

दण्ड पाने योग्य ।

दंत कथा—(सं स्त्री) किंवदन्ति,

जन-अपत्ति ।

किंवदन्ति ।

दंतखोदनी—[सं स्त्री] धविका ।

दांत खोदने का छोटा औजार ।

दन्तमूलीय—[वि] दंतव गुनव

पवा उच्छ्रित (वर्ण) ।

दांतों के मूलसे उच्चरित होने

वाला (वर्ण) ।

दंतार, दंतुला—[वि] दंताल ।

बड़े दांतोंवाला ।

दंतिया दंतुरिया—[सं स्त्री]

गरु दंत ।

छोटा दांत ।

दंड—(सं पुं) काजिया, दंत ।

भगड़ा । दांत ।

दंषा—[सं पुं] बिजुलि ।

बिजली ।

दूध, दूधान—[सं पुं] अशकव,
अडिमान ।

घमण्ड । अभिमान ।

दूधरी—(सं स्त्री) गवया ।

बैलों द्वारा फसल की बालों से
दाना अलग करने का काम ।

दूश, दूस—(सं पुं) काटोव,
थोठे ।

दन्त-अत । विषले जन्तुओं का
डङ्क । दांत काटने की क्रिया ।

दूशक—[वि] दंशनकावो ।

डंसनेवाला । दांत काटनेवाला ।

दूष्ट्र—(सं पुं) फ़ाउ ।

दांत । (सं स्त्री दूष्ट्रा) ।

दूई—[सं पुं] देव, विधाता ।

ईश्वर । विधाता । (अदृष्ट) ।

दूकन—(सं पुं) दक्षिणाञ्च ।

दक्षिण भारत ।

दूकियानूस—(वि) अवम्बवादी,
कट्टिवादी ।

परम्परावादी । रुढ़िवादी ।

दूकियानूसी—(सं स्त्री) गङ्गोर्ता ।
संकीर्णता ।

दूक्षिणापथ—(सं पुं) विद्या प्रदे-
नव दक्षिणव प्रदेन ।

विध्य प्रदेशके दक्षिणका प्रदेश ।

दूक्षिणावर्त—(वि) १०१ फांम
शुवा ।

जिमके घुमने की प्रवृत्ति या मुल
दाहिनी ओर हो ।

दूखल, दिहानी—(सं स्त्री) आपा-
नत गठ गम्पखिव दखन दिशा
काय ।

अदालत से किसी को किसी सम्प-
त्तिपर दखल दिलवाने का काम ।

दूखील—[वि] अधिकारी ।

अधिकार रखनेवाला ।

दूगड़—(सं पुं) डांडव टोम ।

बड़ा ढोल ।

दूगदगा—(सं पुं) डग, गल्मद ।

डर । सन्देह । [सं स्त्री-दूगदगी]

दूगना—[क्रि अ] छिन दिशा, पथ
कवा, बन्दूक मवा ।

दागा या चिह्नित किया जाना ।

दग्ध किया जाना । बन्दूक तोप
आदि छोड़ा जाना । कलंकित
होना ।

दूगहा—[वि] दाग झुल, पेशा ।
गुथव छाई छोटोवा ।

दागवाला । मृतक का दाह कर
अबतक आद्यादि द्वारा शुद्ध न
होनेवाला । जलाया हुआ ।

दगा—[सं स्त्री] छल-छातूवि,
रुक्मिणी ।

छल-कपट । धोखा ।

दगाबाज—[वि] दगाबाज, कपट ।
धोखा देनेवाला । छली ।

दगैल—[वि] दागयुक्त, शिथिल-
जीवन-यापन करिछे ।

दागदार । जो कारागार का दण्ड
भोग चुका हो ।

दग्ध—[वि] दग्ध, पीड़ित, तापित ।
जला या जलाया हुआ । पीड़ित ।

दचक—[सं स्त्री] हँचा ।
भटका या ठोकर खानेका भाव ।
[सं पुं दचक]

दचकना—(क्रि अ) हँचा खोबा ।
भटका, ठेस या हलकी ठोकर
खाना । कुछ दब जाना ।
[क्रि स] हँचा निग्रा ।
ठेस या हलका धक्का लगाना ।
दबाना ।

दक्षिण—[सं पुं] दक्षिण ।
दक्षिण ।

दड़कना—[क्रि अ] काँटि खोबा ।
फट जाना ।

ददियल—[वि] दाढ़ीवाला ।
दाढ़ीवाला ।

दतवन, दतुवन (वन) दतोन—
[सं स्त्री] दौतव ।

दाँत साफ करने की नीम आदि
की टहनी । मुँह साफ करने की
क्रिया ।

दत्तक—[सं पुं] दत्तकनीय ।
गोद लिया हुआ ।

दत्तचित्त—(वि) अतृप्त मनोयोग ।
जिसका किसी काम में खूब जी
लगा हो ।

ददौरा, ददिहाल—[सं पुं]
ककादेउताब वंश वा घर ।
दादा का वंश । दादा का घर ।

ददोरा—(सं पुं) बोलबोला, ग्राह,
जिम [ग्राह होब] ।
चमड़े पर होनेवाली थोड़ी सूजन ।
चकत्ता ।

ददु—[सं पुं] दद [बेमार] ।
दाद रोग ।

दधि-सुत—[सं पुं] दध ।
चन्द्रमा ।

दन-दनाना—[क्रि स] दग्-दग् नक्
कबा । आनन कबा । निर्भीक
भावे कोनो काम कबा ।

दन दन शब्द करना । आनन्द
करना । निश्चाङ्क होकर कोई
काम करना ।

द्वनादन—(क्रि वि) एकैवादेश ।
धन्-धन्धै ।

लगातार । दन् दन् शब्द के
साथ ।

द्वपटना—[क्रि स] गालि दिया ।
डाँटना ।

द्वफनाना—(क्रि सं) पूति थोड़ा ।
कबर दिया ।

गाड़ना (मृतशरीर) । कब्र देना ।

द्वफा—[सं स्त्री] बाव, आईनब
शाबा ।

बार । विधान आदिका कोई
अंश, धारा ।

(वि) दूबीछूत कबा । आँतबोरा
तिबङ्कत ।

दूर किया या हटाया हुआ ।
तिरस्कृत ।

द्वफतर—(सं पुं) कार्यालय ।
कार्यालय ।

द्वबंग—[वि] अडाबशाली ।
प्रभावशाली ।

द्वब—[वि] निष्ठे ।

“ किसी की तुलना में कम या

घटिया ।

[सं पुं] हैछा ।

दबाव ।

द्वबकना—[क्रि अ] नुकोरा, कोच-
बोच थोड़ा ।

भय, संकोच आदि के कारण
छिपना ।

[क्रि स] शड़ुबी भावि भावि धातुब
गठ दिया ।

धातु का पत्तर पीट कर बड़ा
करना ।

द्वबकाना—[क्रि स] नुकाई थोड़ा ।
छिपाना ।

द्वबदबा—(सं पुं) आतङ्क ।
आतंक । रोब-दाब ।

द्वबना—(क्रि अ) हैछा थोड़ा ।
पिछ हैशका । विवश होना ।
उल गवा ।

बोझ के नीचे पड़ना । ऊपरी
तलका कुछ नीचा होना । किसीसे
विवश होकर कोई काम करना ।
किसी बातपर कोई कार्रवाई
न होना ।

द्ववाना, द्वबोरना—[क्रि सं] हैछा
दिया । नाटित पूति थोड़ा ।
ऊपर से भार रखना । जमीनमें

गाड़ना । किसी बातको बढ़ने न देना । शान्त करना ।

दुबाव—(सं पुं) हैछा, अडाव ।
ववाने की क्रिया या भाव ।

दबैछ—[वि] हैछा पाउँछ ।
अडावपाउँछ ।
दबनेवाला ।

दबोचना—[क्रि स] हैछानावि धवा,
भुकाई धोवा ।
भट से पकड कर दबा लेना ।
छिपाना ।

दम—(सं पुं) शक्ति, इज्जिय
निग्रह, उशाह, जीवनी शक्ति ।
वह दण्ड जो दमन के लिये
किया जाता है । इन्द्रिय निग्रह ।
साँस । नशे आदि के लिये मुँहसे
धुँआ खींचने की क्रिया । प्राण ।
जीवनी शक्ति । घोखा । एक
प्रकार का पुराना हथियार ।

दमकला—[क्रि अ] छिकसिकावा ।
बमकना ।

दम-कल—[सं स्त्री] दम-कल,
नगौनाम ।
पानी जोर से फेंकनेका पंप ।
पानी डालकर आग बुझाने वाला
यन्त्र ।

दम-कला—(सं पुं) गोमाप बम
आदि छटियाई दिवले बाइशाव
कवा पिठकाबी बुछ पात्र ।
चेबेका ।

गुलाब जल या रङ्ग छिड़कने का
पिचकारी लगा बड़ा पात्र ।

दम-खम—(सं पुं) वृत्ता, जीवनी
शक्ति । श्रुत्य गठ ।
दृढता । जीवनी शक्ति । मूर्तिका
सुडील गठन ।

दमड़ी, दमरो—(सं स्त्री) एक
पईछाव आठ भांगर एडाग ।
पैसे का आठवाँ भाग ।

दमदमा—[सं पुं] बुक्क, शूर्गव
काबत कवा उथ गड़ बा डेठि ।
मोरचा ।

दमदार—[वि] शक्तिशाली ।
मजबूत ।
जिसमें पुरा दम या जीवनी
शक्ति हो । मजबूत ।

दमदिलासा, दममुत्ता—[सं पुं]
मुठ्ठननि ।
केवल फुसलाने के लिये कही
जानेवाली झूठी बात ।

दमना—[क्रि अ] बांगर बेमार
होवा ।
साँस फूलना ।

दमनीय—(वि) याक दमन कविव
पावि । दमन कविव लगौया ।
जिसका दमन किया जा सके ।
जिसका दमन आवश्यक हो ।

दमबाज—(वि) मिछनीया, गौधर,
छुद्रा ।

दम-बुत्ता वा चक्रमा देनेवाला ।
गांजा आदि पीनेवाला ।

दमा—(सं पुं) चांगर बेबाव ।
सांस फूलने का रोग ।

दमाद, दामाद—(सं पु) खोंवांई ।
कन्या का पति । जामाता ।

दमामा—(सं पुं) नागेश्वर ।
नगाड़ा । डंका ।

दधानत—[सं स्त्री] गठानिठा,
विवेचना ।

सत्य मिछा । ईमानदारी ।

दधार—[सं पुं] अकल, काँडि-
कावरीश ठाँई ।

प्रान्त । बास पास का स्थान ।

दूर—(सं पुं) पथ, ग्रीड, छश,
विनीर्ण कवा कारी, झुवाव, बाध-
नववाव ।

शक्त । मझा । गुफा । विदारण ।

द्वार । जगह । मकानकी मञ्जिल ।

राज दरबार ।

[सं स्त्री] पाय, पव; अतिठा,
झूँडियाव ।

भाव, कीमत । प्रतिष्ठा । ईस् ।

दरकना—(क्रि सं) काँटि थोवा ।
फटना ।

दरका—(सं पुं) काँटि, धूव
छोबेबे खुन्ना थंई मेला काँटि ।
दरार । ऐसी चोट जिससे कोई
चीज फट जाय ।

दरकिनार—(क्रि वि) गम्पूर्ण गुधक,
धूव ।

बिलकुल अलग । दूर ।

दरखत—(सं पुं) गछ ।
पेड़ ।

दरजा—(सं पुं) खेनी, वर्ग, पद ।
श्रेणी । वर्ग । पद ।

दरम—(सं पुं) दरम ।
ध्वंस । विनाश ।

दरद—(सं पुं) बेवना, ग्रीडा ।
वेदना । पीड़ा । कठना ।

दर-दर—[क्रि वि] झुवावे-झुवावे ।
द्वार-द्वार ।

दरदरा—(वि) थंशेठा ।

जिसके कण महीन नहीं । मोटे हों ।

दरपन, दर्पण—(सं पुं) पाटोप, आँठी ।

आकृति देखने का ऐनक ।

दरपना—(क्रि अ) गर्व वा अहंकार करना ।

दपं या क्रोध करना । घमंड करना ।

दरबंदी—(सं) बेलग-बेलग मात्र ।

अलग अलग दर या विभाग बनाना । चीजों की दर निश्चित करना ।

दरबा—(सं पुं) पाव छाई आगिब राश ।

पक्षियों के रहने के लिये काठका बना हुआ खानेदार घर ।

दरवान—(सं पुं) पाटवान, छवनी ।

द्वारपाल ।

दरबारी—(सं पुं) दरबार गण । गणगण ।

दरबार में रहनेवाला ।

(वि) दरबार वांछ ।

दरबार का । दरबार के योग्य ।

दरभ, दर्भ—[सं पुं] कुश, डाक (नाविकल) ; वाण्य ।

कुश । डाम । बन्दर ।

दरमियान—[सं पुं] ग्राह । मध्य । बीच ।

(क्रि वि) ग्राह्य ।

बीच या मध्य में ।

दरबाजा—[सं पुं] दरवाजा, द्वार । द्वार । किवाड़ ।

दरवेश—[सं पुं] फकिर, वैवांगी । फकीर, साधु ।

दरसन—[सं पुं] दर्शन । दर्शन ।

दरसना—(क्रि अ) दृष्टिगोचर होना ।

दिखाई देना ।

(क्रि स) छाया ।

देखना ।

दरसनी—(सं स्त्री) आँठी, पाटोप ।

दर्पण ।

दरसाना—(क्रि स) देखना ।

दिखलाना । झलकाना ।

(क्रि अ) दृष्टिगोचर होना ।

दिखाई देना ।

दर्रासी—[सं स्त्री] काटि खनवत अन्न ।

हँसिया की तरह एक औजार ।

दराज—(वि) गधुव, दीपन ।

बहुत । लम्बा ।

(सं स्त्री) देवाज ।

टेबल या मेज का वह खाता जो बाहर खीचा या खोला जा सकता हो । [अं—झावर]

दरार—[सं स्त्री] काटे ।

किसी चीज के फटने पर बीच में पड़नेवाली खाली जगह ।

दरिया—(सं पुं) नदी, जागंव ।

नदी । समुद्र ।

दरियाई—[वि] नदी वा जागंव
जगहवा, नदी वा जागंववा प्रांतवा ।

समुद्र या नदी सम्बन्धी । नदी
या समुद्र के पास या किनारे का ।

दरिया-दिल—[वि] उपाव, दांगी ।

उदार । दानी ।

दरियाफ्त—(वि) छाउ, जना ।

ज्ञात । मालूम ।

(सं पुं) जाथ-पोंछ ।

पूछकर जाने की क्रिया या भाव ।

दरी—(सं स्त्री) अशा, अखव,

अवधि ।

गुफा । पहाड़ी नीचा स्थान वहाँ कोई नदी या नाला गिरता हो ।
शतरंजी ।

दरीबा—(सं पुं) पानव वषाव ।

पान का बाजार ।

दरेरना—[क्रि स] बर्षा, छड़िकना,
झुलि गिरि कबा ।

रगड़ना । मोटा या दरदरा
पीसना ।

दरेरा—[सं पुं] बर्षा क्रिया ।

रगड़ने की क्रिया या भाव ।

दरेस—[सं स्त्री] एविश कुलाश
कापोव ।

एक प्रकार का फूलदार महीन
कपड़ा ।

दरेसी—(सं स्त्री) जमान टेउगावी,

अन्वेषण कबा कार्य ।

ऊबड़ खाबड़ जमीन समतल या
बराबर-करना ।

दर्ज—[सं स्त्री] काटे ।

दरार ।

[वि] लिखित ।

कागज या अपने स्थानपर लिखा
या चढ़ा हुआ ।

दर्जन (दर्जन)—(सं पुं)

पञ्चन ।

बारह वस्तुओं का समूह ।

दर्दमंद, दर्दी—[वि] श्शी, दशानू ।

दुखी । दयावान ।

दर्दुर—(सं पुं) डेकूली ।

मेंढ़क ।

दर्प—(सं पुं) अशुकाव, गर्व, दम्प ।

धर्मंड । गर्व । अहंकार मिला

हुआ क्रोध । अक्सड़पन ।

आतङ्क ।

दर्ब—(सं पुं) जवा, धातु [गोण कप आदि] ।

द्रव्य । घातु [सोना, चांदी आदि] ।

दरी—(सं पुं) दूई पर्वतव माऊव

ठेक गमल लूमि, उपताका ।

दो पहाड़ों के बीच का तंग

रास्ता । घाटी ।

दर्शित—[वि] देखूँडा, अकानित, पणित ।

दिखलाया हुआ ।

[सं पुं] आग्रानयत अयाण शकटप देखूँडा कागज, वस्त्र आदि ।

न्यायालय में प्रमाण के रूप में उपस्थित पत्र, लेख्य या वस्तुएँ ।

दड—(सं पु) दूठ, बार जानेक

एकाल । पीतल । कुलव पीहि ।

पन, टेगपन ।

किसी बीज या वस्तु का जुड़ा

हुआ खण्ड । पीधों का पत्ता ।

फूलकी बँखुड़ी । समूह । लोगों

का गुट । सेना । मुना हुआ मेदा ।

दलक (न)—[सं स्त्री] आघात,

कैपनि, माछ माछ उठा बिब ।

आघात । बरथराहट, धमक ।

रह रह होनेवाली पीड़ा ।

दलकना—(क्रि अ) कटा, कैपा,

छक्काई उठा, उद्विग्न होना ।

फटना । काँपना, धराना ।

चौकना । उद्विग्न या विकल

होना ।

[क्रि स] भय देखूँडा ।

डराना ।

दलदल—(सं पुं) गिटेनि. जमाद ।

वह गीली जमीन जिसपर खड़े

होनेपर पैर बँसता हो ।

दलना—[क्रि स] मला, नष्ट वा

स्वर्ण कवा ।

बक्री आदिमें पीसकर छोटे छोटे

टुकड़े करना । रीबना । मसलना ।

नष्ट वा ध्वस्त करना ।

दशमः—(सं स्त्री) शार्ध निश्चि
कावच कवा दल ।

स्वार्थ सिद्धि के लिये लोगों का
अलग दल बनाना ।

दशमलाना—[क्रि स] गच्छ
मोशवि विस्तृत कवा ।
मसलना । कुचलना । नष्ट
करना ।

दशहन—(सं पुं) नालि कवि पत्र
पत्र ।

वह अक्ष जिसकी दाल बनती है ।

दशाली—(सं स्त्री) दालाली ।
दालाल का काम या पारिश्रमिक ।

दशित—(वि) नष्टित, मोशनी
पेलोरा, श्वंग कवि पेलोरा ।
मसला, रोदा या कुचला हुआ ।
नष्ट किया हुआ ।

दशित-वर्ग—(सं पुं) निम्न श्रेणी
लोक ।
समाज का निम्न वर्ग ।

दशिता—(सं पुं) आधा धूना पत्र ।
मोटा या दरदरा पीसा हुआ
अक्ष ।

दशित—(सं स्त्री) श्रेष्ठक नालि
शकृप कवि पत्र नालि

अथ । सिपाहियों को दण्ड के
रूप में किया जानेवाला कबायद ।

दश—(सं पुं) वन, वन छूड़े ।
वन । जङ्गल में लगनेवाली
आग ।

दशन—(सं पुं) नाश ।
नाश ।

दशनो—(सं स्त्री) नवनी ।
बैलोसे रोदवा कर डण्डलसे फसल
अलग करने का काम ।

दवा, दवाई—(सं स्त्री) औषध,
चिकित्सा ।

औषध । इलाज । ठीक या दुस्त
करने की तरकीब । दावानल ।

दवाखाना—[सं पुं] औषधान्न,
डॉक्टरखाना ।

औषधालय ।

दवागि(गी), दवाग्नि, दवारी—(सं स्त्री)
वनछूड़े दावानल, दावाग्नि ।
दावानल ।

दवामी—[वि] चिबशशी ।
जो सदा के लिये हो ।

दशन—[सं पुं] नाश, कबच ।
दाँव । कबच ।

दशनाम—[सं पुं] गन्नागौर एठा
थेनौ ।

सन्वासियोंका एक वर्ग ।

दशनाबली—(सं स्त्री) दौतव
नाबी ।

दांतों की पंक्ति ।

दशमलव—(सं पुं) दशमिक उद्घाटन ।
गणित का दस दस की ईकाई
सम्बन्धी नियम ।

दशाहरा—(सं पुं) विषय-दशमी ।
विजया दशमी ।

दशांग—[सं पुं] अंगकि धूप ।
सुगन्धित धूप ।

दशा, दसा—[सं स्त्री] अवस्था,
दशा, काव्यत विवशी वा विवशि-
नीव दशा ।

अवस्था । विशेष अवस्था ।
साहित्य में रस के अन्नगंत
विरही या विरहिणीकी अवस्था ।

दशाह—(सं पुं) दश ।
मरने के दस दिन बाद होनेवाले
श्राद्धादि ।

दसना—(क्रि अ) आदि थोड़ा ।
बिछाया जाना ।
('क्रि स') आदि मिश्र ।

बिछाना ।

(सं पुं) बिछना ।

विस्तर ।

दसाना—(क्रि स) आदि मिश्र ।
बिछाना ।

दस्त—(सं पुं) अनीसा ढोढ,
शाठ ।

पतला पाखाना । हाथ ।

दस्तक—(सं स्त्री) इराबत ड्रंक-
बिगड़े गता कार्या, माफूल, कब ।
बुलाने के लिये दरवाजे का कुंडा
खटखटाने की क्रिया । महसूल ।
कर या प्राप्य के रूपमें लिया
जानेवाला धन ।

दस्तकार—[सं पुं] शिन्नी,
काविकर ।

शिली । कारीगर ।

दस्तकारी—[सं स्त्री] काविकरी,
शिन्नी ।

कारिगरी । शिल्प ।

दस्ता—(सं पुं) नाल, टैगखन गरु
दल, कागखन मिश्र ।

औजार, हथियार आदिकी मूँठ ।
बैठ । सिपाहियों का छोटा दल ।
कागज के बीबीस तांबोंकी गट्टी ।

दस्ताना—(सं पुं) शाठ योबा,
एविष उबोबोल ।
हाथ में पहनने का मोजा । एक
प्रकार की तलवार ।

दस्तावर—(वि) झुलाप ।
दस्त लानेवाली (दवा) ।

दस्तावेज—(सं स्त्री) कर्छी-थंड । दलिल
जिस कागज पर पारस्परिक लेन-
देन की शर्तें लिखी रहती हैं ।

दस्ती—(वि) शाठन भ्रूठिठ वा
आग्रहण थका ।

हाथमें रहनेवाला । किसी आदमी
के हाथ आने या जानेवाला ।

दस्तूर—(सं पुं) नियम, पञ्चब,
अथा ।

रिवाज । प्रथा । विधि । कायदा ।

दस्तूरी—(सं स्त्री) पञ्चवि, माननी ।
वह धन जो मालिक की ओर से
माल खरीदने वाले नौकर को
पुरस्कारके रूपमें दिया जाता है ।

दस्तु—(सं स्त्री) दस्त्या, डकाइठ,
कूठमाग ।

डाकू । दास ।

दह, दहर—(सं पुं) दूँ (येन-
पुत्रुनाम दूँ)

कूष्ठ ।

दहकाना—(क्रि अ) नेहे-पुवि मवा,
उडठ होबा, अडठ होबा ।
जलना । उत्तप्त होना । संतप्त
होना । .

दहकाना—[क्रि स] दप् दप्टैक
अलोबा, थंर डूलोबा ।
आग बधकाना । क्रोध दिलाना ।

दहना—[क्रि अ] पुवि योबा,
डभ होबा, क्रोधाधित होबा ।
जलना । भस्म होना । क्रोध से
संतप्त होना ।

(क्रि स) अलोबा, गसुथ
कबा ।
जलाना । संतप्त या दुखी करना ।
भड़काना ।

दहपटना [क्रि स] क्षरंग कबा ।
ध्वस्त या नष्ट करना । कुचलना ।

दहसाना—[क्रि अ] डयठे थयकि
बोबा ।
डरकर धम जाना ।

दहसा—(सं पुं) टाठन 'दह' पाठ
थन ।

ताश का वह पत्ता जिसपर दस
बूटियाँ होती हैं ।

दहसाना—(क्रि स) थयकिब कोवठ
कायब पना विवठ थका ।

ऐसा डराना कि कोई काम करने से आदमी रुक जाय ।

दहलीज, देहरी, देहली—[सं स्त्री]

शुबाब-गड़िया व। शुबाब पत्नी ।
दरवाजे में चौखट के नीचे की लकड़ी या पत्थर ।

दहशत—[सं स्त्री] डग ।

भय ।

दहाई—[सं स्त्री] दशगन्था,

दशब मान ।

दस का मान या भाव ।

दहाड़ना—[क्रि अ] गोंधबनि,

ठिक्कवि ठिक्कवि करना ।

घोर आदि का गरजना । चिल्ला कर रोना ।

दहाना—[सं पुं] बहल मुख, नदीब

मोहना ।

चौड़ा मुँह । नदी का मुहाना ।

दहिना, दाहिना—[वि] दौंकाल ।

दक्षिण पार्श्व ।

दही—[सं पुं] दै ।

खटाई के योग से जमाया गया दूध ।

दहीड़ी—[सं स्त्री] दै जवाब

बाने काँटा व। पाँहेला ।

बही जमाने की हाँड़ी ।

दहेज, दाहज [१]—[सं पुं]

योतुक ।

योतुक ।

दौ—[सं पुं] बाब, पाज, छाता,

चानोंता ।

दफा । बारी । ज्ञाता ।

दौंग—[सं पुं] नागंबा, गक

पांदाब ।

नगाड़ा । छोटी पहाड़ी ।

दौज—(सं स्त्री) गयता ।

बराबरी ।

दौड़ना—(क्रि स) दगु मिया, बनि-

मना करा ।

दंड देना, जुरमाना करना ।

दौत—(सं पुं) दौत ।

दन्त । दन्त जैसी उभरी हुई कोई पंक्ति ।

= **खट्टे करना**—शुद्ध धुब छुल्ल मिया ।

लड़ाई में बहुत परेशान करना ।

= **खगाना** वा **गढ़ाना**—पाज

मुनि आना पाजि धका ।

कोई चीज पानेकी ताकमें रहना ।

दौता—(सं पुं) कबत आदिब बाँज,

छकवि आदिब दौतवि ।

आरा आदि का दाँतों की तरह

उभरा हुआ भाग ।

= किटकिट—गदाय टैश थका

शहै काखिया ।

नित्य या बराबर होते रहनेवाला
झगड़ा ।

द्विपत्य—[वि] दाम्पत्य, पति-पत्नी
गणकीय ।

पति पत्नीसे सम्बन्ध रखनेवाला ।

दौब—[सं पुं] बाधि, पन, धनब
नौन, अशकूल अवगव ।

जुए में लगाया जानेवाला धन ।

बार । खेलने की पारी । अनुकूल
अवसर । बिपक्षी को हराने की
युक्ति या पंच । स्थान । चाल ।

= पर चढ़ना—ठेकत पना ।

विवश स्थिति में होना ।

दौबनी—(सं पुं) निबोडूवण ।

मस्तक पर पहनने का एक
अलंकार ।

दौबरी—[सं स्त्री] जरी ।
रस्सी । डोरी ।

दौई—[वि] लौकाले ।
दाहिनी ।

[सं स्त्री] बाव, दफा ।

दफा । बार ।

दाई—[सं स्त्री] बाई, दागी ।
घाय । दासी ।

दाऊ—(सं पुं) ककाईदेठे, बल-
देव ।

बडा भाई । बलदेव ।

दाक्षायणी—[सं स्त्री] दक्ष कन्या,
गती, दुर्गा ।

दक्ष की कन्या । सती । दुर्गा ।

दाक्षिण्य—(सं पुं) अशकूल,
कोशल ।

अनुकूल होनेका भाव । कौशल ।

(वि) दक्षिण, दक्षिण गणकीय ।
दक्षिण का । दक्षिणा सम्बन्धी ।

दाख—(सं स्त्री) आख, किच बिच ।
अंगूर । किशमिश ।

दाखिल—[वि] अविष्ट, शक्ति,
दाखिल ।

घुसा या पैठा हुआ । प्रविष्ट ।

पहुँचा या आया हुआ ।

दाखिला—(सं पुं) अवेण ।
प्रवेश ।

दाग—(सं पुं) पोवा कार्य,
बुतक-वाहन, दाग वा टेका,
पोव ।

जलाने का काम । दाह । मुरदा

जलाने की क्रिया । धब्बा । ऐब,
दोष ।

दागना—(सं पुं) लफ्फा खिब कबा,
कलक लगावारा, शूथ दिया, गुलि
मबा ।
निशान लगाना । दाग या
कलंक लगाना । कष्ट या दुःख
पहुँचाना । तोप या बन्दूक आदि
छोड़ना ।

दाघ—(सं पुं) गर्म, उछाप ।
गरमी । ताप ।

दाजना—(क्रि अ) पोवा, जेबा-
शित होवा ।

जलना ।

(क्रि स) जलनावा, जेबाशित
कबा ।

जलाना ।

दाढ़—(सं स्त्री) आगिफाँत, फाँत
आगूब हाड़ ।

जबड़े के अन्दरके बड़े चौड़े दाँत ।

दाढ़ना—(क्रि स) जलनावा, शूथित
कबा ।

जलाना । दुःखी करना । किसी
के मन में ईर्ष्या पैदा करना ।

दाड़ा—(सं पुं) वन-झूँड़े, पाइ,
दोषल पाढ़ि ।

वन की भाग । जलन । बहुत
बड़ी दाढ़ी ।

दाढ़ी—(सं स्त्री) धूतबि. पाढ़ि ।
ठोढ़ी । ठोढ़ीपर उगनेवाले बाल ।

दातव्य—(वि) दियाव उपयोगी ।
दिये जाने योग्य । दान का ।

(सं पुं) दान, दिव लंगीरा
धन ।

दान । दानशीलता । जो धन
देना या चुकाना आवश्यक हो ।

दातार—[सं पुं] दाता, दानी ।
दाता ।

दाद—(सं स्त्री) रब, श्राय ।
एक प्रसिद्ध चर्म रोग । दद्रु ।
न्याय ।

= देना ।

अश्रंग कबा ।

प्रशंसा करना ।

दादनी—[सं स्त्री] दान, वायना ।
आगधन ।

देन । पेशगी ।

दादरा—[सं पुं] एविध जनबिन्न
गीत ।

एक प्रकार का चलता गाना ।

दादा—(सं पुं) कका देउडा ,
ककाहेनेउ ।

पिता का पिता, बड़ा भाई ।

दादुर—(सं पुं) डेकूनी ।
मेंढक ।

दाघना—(क्रि स) जलोता ।
जलाना ।

दान-बारि—(सं पुं) शाहीर
डिगडू ।
हथी का मद ।

दाना—(सं पुं) दाना, अन्नक दिया
बंजिटेइ, दान, माह मन्त्रर छुटि
आदिब आहार । छेनि, मिछिबी
आदि गोठि मावि गरु गरु
आकार धरा छुटि वा बंउ ।
अनाज का बीज या कण । सूखा
भुना हुवा अन्न । कोई छोटा
गोल उमार ।

(वि) बुद्धिमान ।

बुद्धिमान ।

दानादेश—(सं पुं) देना टका
परिवोधन आदेश-पत्र ।

देन बुकाने का आदेश पत्र ।

दानी—(वि) दानी, उनाव ।
उदार ।

(सं पुं) कब गजशकती,

दाउवा गाहाय मर्डता ।

कर उगाहने वाला । दान या
मिखा लेनेवाला ।

[सं स्त्री] पाछ वा आशर ।
आधान या पात्र ।

दानेहार—(वि) दाना बूछ ।

जिसमें या जिसपर दाने या रवे
हैं ।

दाघ—(सं पुं) अधिमान, अहं-
कार, शक्ति, उमाह, आतङ्क,
अं ।

अभिमान । घमण्ड । शक्ति ।
उमङ्ग । आतङ्क । गुस्सा ।
जलन ।

दापना—(क्रि स) हैँचा दिया, बांधा
दिया, अन्वीकार वा विबोधिता
करा ।

दबाना । रोकना ।

दाघ—[सं पुं] बोझा, हैँचा,
डाव, आतङ्क ।

दबाने की क्रिया या भाव । भार ।
आतंक ।

दाघना—[क्रि स] हैँचा दिया,
छेपा दिया, नष्ट करा ।

दबाना । गाड़ना । हराना । नष्ट-
अष्ट करना ।

दावा—[सं पुं] गच्छ कनन बवा
काय ।

कलम लगाने के लिये पौधे की
टहनी जमीन में गाड़ना ।

दाम—(सं पुं) दूध ।
कुश ।

दाम—[सं पुं] मूला, शब, खबठ,
रुपया-पैसा । मूल्य ।

दामन—(सं पुं) पोटाकर अधो-
भाग, आँठि, पोशाक पाद-
पेश ।

पहने जानेवाले कपड़ों में कमर से
नीचे का भाग । पहाड़ के नीचे
की भूमि ।

दामाद—(सं पुं) जौंदाई ।
बेटी का पति ।

दामिनि, दामिनी—(सं स्त्री)
बिछुरी ।
बिजली ।

दामी—[वि] दासी, मूलावान ।
कीमती ।

दाय—(सं पुं) योद्धक, पैण्डक
विषय, उडवाशिकारी शब्द ।

वह वन जो किसी को दिया
जाने को हो । उत्तराधिकारियोंमें

बँटने वाला पैतृकवन । जिम्मे-
दारी । जवाबदेही ।

दायक—[सं पुं] मिठता, माता ।
देनेवाला ।

दायज (1)—(सं पुं) योद्धक ।
दहेज ।

दायर—(वि) चणित, (आमानतत)
दाखिल करा अधिकयोग ।

बलता । न्यायालय में उपस्थित
किया हुआ (अभियोग) ।

दायरा—[सं पुं] दूबनैशा वेब,
इड ।

गोल घेरा । मण्डल ।

दाय्यो—(वि) जौं काग ।
दाहिना ।

दाया—[सं स्त्री] दया, धाई ।
दया । धाय ।

दायाद—(सं पुं) उडवाशिकारी,
जमान अन्वैदाव, उखवदाव ।

किसी सम्पत्ति में हिस्सा पानेका
अधिकारी ।

दार, दारा—(सं स्त्री) देवै, पत्नी ।
पत्नी ।

(प्रत्य०) दशैशा ।
रखनेवाला ।

दारण—[सं पुं] कला-छिन्ना कान ।

चीरने-फाड़ने का काम ।

दारना—(क्रि स) कालि पेलोवा,

नष्ट कर्वा ।

फाड़ना । नष्ट करना ।

दार-मदार—[सं पुं] याश्रय, बका,

निष्पत्ति ।

आश्रय । किसी कार्य या बात का

किसी दूसरे कार्य या बात पर

अवलम्बन ।

दारिका—(सं स्त्री) बैयनी, पञ्जी,

काठ-पुतला ।

पत्नी । कठपुतली ।

दारिद्र्य दारिद्र्य—[सं स्त्री]

पाविष्य, निर्धनता ।

निर्धनता । गरीबी ।

दारु—(सं पुं) काष्ठ, देवदारु गृह,

बाटेष्ट ।

काठ । बड़ई । कारीगर ।

दारु-योषित—[सं स्त्री] काठ-पुतला ।

कठपुतली ।

दारु—(सं स्त्री) उषध ।

दवा ।

(सं पुं) मद, वाक्पद ।

मद्य । बारूद ।

दारोगा—(सं पुं) नाट्यांगी ।

थानेदार ।

दाह—(सं स्त्री) दालि ।

इले हुए अरहर, मूँग आदि

अनाज । अरहर, मूँग आदि को

गाढ़ा कर उवाला हुआ रूप ।

दाल के आकार की कोई चीज ।

= मै काला होना-गन्धेय जनक ।

खटके या सन्देह की जगह होना ।

= गलना-यडीष्टे निक्षि होवा ।

प्रयोजन मिद्ध होना ।

दालचीनी (दारचीनी)—(सं स्त्री)

डाल-चेनि ।

एक प्रकारका सुगन्धित मसाला ।

दालान—(सं पुं) बाबान्ना ।

आछूटिया कोठा ।

बरामदा ।

दाव—[सं पुं] शवि, वन-झुई,

पोरवि, पा ।

वन । वन की आग । आग ।

जलन । एक तरह का औजार ।

दावत—(सं स्त्री) डोख, डोखव

निमन्त्रण ।

भोज । निमन्त्रण ।

दावना—(क्रि स) दमन कर्वा ।

दमन करना ।

दावा—[सं पुं] वन-छूड़े, अजिआग,
पापखि, शङ्ख, दृढ़ उछि ।
किसी चीजपर अपना हक बत-
लाना । स्वत्व । अधिकार प्राप्ति
के लिये चलाया गया मुकदमा ।
अभियोग । जोर । दड़तापूर्वक
कुछ कहना ।

दावानल—[सं पुं] वन-छूड़े ।
वन में आप ही आप लगनेवाली
आग ।

दावेदार—(सं पुं) उखर दाव ।
दावा करनेवाला या रखनेवाला ।

दास—[सं पुं] दाग, ठाकुर,
लेबर, एठा उपाधि ।
गुलाम । सेवक । एक उपाधि ।

दासता—(सं स्त्री) दाग ।
गुलामी ।

दासा—[सं पुं] छँवा सबर दादशा-
बत लगानेवाले सबर पंवा दाशि-
बतेल बटोरा अन्न ।
दीवार से सटाकर बना हुआ
चबूतरा दरवाजे के ऊपर का
तख्ता या पत्थर ।

दास्तान—(सं स्त्री) उठाख,
काशिनी, बिसबन ।
वृत्तान्त । कहानी । वर्णन ।

दास्य—(सं पुं) दाग, लेवा ।
दासता । सेवा ।

दाह—[सं पुं] दाह, शय-दाह,
ताप, जेबा ।
जलाने की क्रिया । शव जलाने
की क्रिया । ताप । ईर्ष्या ।

दाहना—[क्रि स] दाह, कबा,
जलोदा, श्रुत श्रुत कबा ।
दाह करना । जलाना । बहुत
दुःख करना ।

दाहिने—[क्रि वि] गेठा काल ।
दाहिने हाथ की तरफ ।

दिअना—[सं पुं] ठाकि, नखि ।
दीया । चिराग ।

दियरी, दियली—(सं स्त्री) माटिब
गरु ठाकि ।
मिट्टी का बहुत छोटा दीया ।

दिक्—[सं स्त्री] दिक्, जिन्, काल ।
दिशा । ओर ।

दिक्—[वि] आगनि, जलान, शय-
वान ।

जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो ।
पीड़ित । हैरान । अस्वस्थ ।

(सं पुं) यन्त्रा ना यन्त्र
बोग ।

तपेदिक या क्षय रोग ।

दिक्कत—(सं स्त्री) दिग, आवनि,
अन्वविधा, कष्ट ।

परेशानी । तकलीफ । कठिनता ।

दिक्कना—[क्रि अ] दृष्टिगोचर
होना ।

दिखाई देना ।

दिक्कनाई—(सं स्त्री) पेशा वा
पेशुद्धाव आविर्भाविक ।

दिक्कलाने की क्रिया, भाव या
पारिश्रमिक ।

दिक्कलाना, दिक्कलाना—(क्रि स)
पेशुद्धाव ।

दूसरे को कोई चीज प्रदर्शित
करना ।

दिक्कलवट—(सं स्त्री) रुखि
गाव गच्चा, वाहिदे वर-छः ।

ऊपरी बनावट । दिखौआ,
ठाट-बाट । ऊपरी तड़क-भड़क ।

दिक्कलवटी—[वि] रुखि ।

केवल दिक्कलाने के लिये रूप-रंग,
ठाट-बाट आदि ।

दिक्कलवा—(सं पुं) वाश्याद्धव ।

ऊपरी तड़क-भड़क । आडम्बर ।

दिक्कलौआ—[वि] वाहिदे वर-छः,
डिडवे कोराडाडुवी ।

सिर्फ ! देखने, भरका, मगर
किसी काम का नहीं ।

दिगम्बर—(सं पुं) शिव, नाडठ,
एकाव ।

शिव । मंगा रहनेवाला ।

अन्धकार ।

[वि] नाडठ ।

मंगा ।

दिग्दर्शक—(सं पुं) पृथिवीक धारण
कवि आटाठाट निमित्त धरका
शाडी ।

पृथ्वी की आठों दिशाओं में रहने
वाले हाथी ।

(वि) वर डाडव ।

बहुत बड़ा या भारी ।

दिग्दर्शक-यंत्र—(सं पुं) दिग-
दर्शक यंत्र ।
दिशा निर्देशन करनेवाला यंत्र ।
कुतुबनुमा ।

दिग्दर्शन—(सं पुं) दिक्-दर्शन,
नमूना ।

नमूना । साधारण परिचय
कराने का काम ।

दिठाना—(क्रि अ) कु-दृष्टि पना,
नखर मगा, मूथ मगा ।

बुरी दृष्टि या नजर लगना ।

[क्रि स] दू दृष्टि दे ढोवा ।

बुरी दृष्टि या नजर लगाना ।

दिठौना—(सं पुं) निष्ठुर उपरत

दू दृष्टि नपबिबटेल दिश कोट ।

बुरी नजर से बचाने के लिये
बालकों के माथे, गाल आदि पर
लगायी जानेवाली बिन्दी ।

दिठाना—(क्रि स) दृढ़ करा,
निश्चय करा ।

हड़ या मजबूत करना । निश्चित
करना ।

[क्रि अ] झूठ ढोवा ।

हड़ या पक्का होना ।

दिहसा—[सं स्त्री] दिखाव इच्छा,
मान प्रवृ, उद्देश ।

देने की इच्छा । वसीयत ।

दिन काटना— श्रव दिन
अतिवांछित करा ।

कष्ट का समय किसी प्रकार
बिताना ।

==दिन चढ़ना—गर्भकाल पूरा
होना । गर्भकाल पूरा होना ।

==दिन फिरना—श्रव निष्ठ
श्रव दिन अश ।

दुख के बाद सुख या सम्पन्नता
के दिन आना ।

दिनकर—(सं पुं) श्रव ।

सूर्य ।

दिनचर्या—[सं स्त्री] दैनिक
कार्यक्रम ।

दिनभर में किये जानेवाले काम-
धंधा ।

दिनाई—(सं स्त्री) विवाह वस्तु ।
वह जहरीली चीज जिसे खाने
से तुरंत मृत्यु हो जाय । दाद
(रोग) ।

दिनिआ, दिनियर—(सं पुं)
श्रव ।

सूर्य ।

दिनौधी—[सं स्त्री] दिन-रक्षा,
दिनत कम देखा एविश चक्र-
वाग ।

दिनके समय न दिखाई देने का
रोग ।

दिपना—[क्रि अ] उज्ज्वल हो उठना ।
चमकना ।

दिपाना—(क्रि स) उज्ज्वल करा ।
चमकाना ।

दिमाग—(सं पुं) मस्तिष्क, मेधा,
मानसिक शक्ति, अहङ्कार ।

मस्तिष्क । मेधा । मानसिक

शक्ति । घमंड ।

—छड़ाना—छालि-छावि छावा ।

अच्छी तरह सोचना-समझना ।

दिमागी—[वि] मस्तिष्क मन्त्रकीय,
मानसिक, मस्तिष्कमय, अश्वात्त ।

दिमाग मंबधी । दिमाग का ।

अच्छी मानसिक शक्ति वाला ।

घमडी ।

दियना—(गं पुं) चाकि ।
दीपक ।

दियारा—(सं पुं) नदीव प्रावर
शक्ति, नवीचिका ।

नदीके पास की जमीन ।

मृगतृष्णा । छलावा ।

दिरमान—[सं पुं] उषध,
चिकित्सा ।

औषध । इलाज ।

दिरमानो—(सं पुं) चिकित्सक ।
चिकित्सक ।

दिल—(सं पुं) अश्रुव, क्षम्य ।
हृदय । चित्त ।

—देना—धेयवत् पना ।

किसी से प्रेम करना ।

—से दूर करना—पाशवि योत्रा ।

मुला देना ।

दिलगीर—[वि] वाथित ।

जिसके मनमें कोई दुख या कष्ट
हो ।

दिलगीरी—(सं स्त्री) वाथा ।

मनमें होने वाला दुख या कष्ट ।

दिलचस्प—(वि) मनोवञ्चक ।

मनोरंजक ।

दिलचस्पी—(सं स्त्री) मनोवञ्चन,
अश्रवाग ।

मनोरंजकता । अनुराग ।

दिलजना—(वि) अस्पर्धक ।

जिसे बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा
हो ।

दिलदार—[वि] उपाव, रसिक,
बगाल, धेयव ।

उदार । रसिक । प्रेमी ।

दिल्लासा—[सं पुं] आश्रय ।
आवासन ।

दिलो—(वि) अति वनिष्ठ, शार्दिक ।
बहुत वनिष्ठ । हार्दिक ।

दिलेरी—(वि) माहीवाल, माहगी ।
बहादुर । साहसी ।

दिलेरी—[सं स्त्री] माह, माहग ।
साहस । बहादुरी ।

द्विजगी—(सं स्त्री) ठाँठो-बद्धवा ।
परिहास । मजाक । दिल लगने
की क्रिया या भाव ।

दिव—[सं पुं] शर्ष आकाश, दिन ।
स्वर्ग । आकाश । दिन ।

दिवाल—(वि) दाता, दानी,
देवाँल ।
जो देता हो । देनेवाला । दीवार ।

दिवाला—(सं पुं) शम्भू, आधिक
पूज्यश ।
ऋण चुकाने में असमर्थ । आर्थिक
हीन अवस्था । कोई चीज या
गुण न रह जाना ।

दिवालिया [वि] शरित शलप्राप्त
टैग थका ।
जिसके पास ऋण चुकाने के लिये
कुछ भी न रह जाय ।

दिवाली—(सं स्त्री) दीपावति ।
दीपोत्सव । दीवाली ।

दिव्या—(वि) दिव्यता, पाटा ।
देनेवाला ।

दिव्य—(वि) अलौकिक, शपत ।
अलौकिक । शपथ ।

दिव्यांगना—(सं स्त्री) देवी,
अपेक्षी ।
देवता की स्त्री । अप्सरा ।

दिव्या—(सं स्त्री) शर्षत थका
नाशिका ।

स्वर्ग में रहनेवाली नायिका ।

दिव्यास्त्र—(सं स्त्री) देवता
अपठ अष्ट ।

देवता का दिया हुआ या मन्त्र से
चलनेवाला अस्त्र ।

दिश, **दिशा**, **दिशी**, **दिसा**,

दिस—[सं स्त्री] काल, दिश ।
ओर । दिक् । दस की संख्या ।

दिसावर—[सं पुं] विदेश ।
दूमरा देश । विदेश ।

दिहल—(क्रि स) मिल ।
दिया ।

दीआ (सं पुं) टाकि ।
दीपक ।

दीक्षांत—(सं पुं) गमावर्जन,
यज्व अग्न्याक्रिया ।

किसी महाविद्यालय की पढ़ाई का
सफलतापूर्वक अन्त । यज्ञ के
अन्त की क्रिया ।

दीखना—[क्रि अ] देखी पोरा ।
दिखाई देना ।

दीधी—(सं स्त्री) प्रधुरी ।
तालाब ।

दीठ—[सं स्त्री] दृष्टि, कुदृष्टि ।
दृष्टि । निगाह । कु-दृष्टि ।

दीठबंदी—(सं स्त्री) याद ।
जादू ।

दीदार—[सं पुं] दर्शन ।
दर्शन ।

दीनार—(सं पुं) सोनबर मुद्रा ।
स्वर्ण मुद्रा ।

दीप—(सं पुं) चाकि ।
दीया ।

दीपक—(सं पुं) चाकि, एविश्व
अर्थालङ्कार, एविश्व बाण ।
दीया । एक अर्थालंकार । एक
राग ।

[वि] उज्ज्वल करवाता, हज्जम
शक्ति बढ़ाता, उज्ज्वलक ।
प्रकाश या उजाला करनेवाला ।
पाचन शक्ति बढ़ानेवाला । उत्ते-
जक ।

दीपन—(सं पुं) प्रकाशन, भोकर
बुद्धि, उज्ज्वलना ।
प्रकाशन । मुख तेज करना ।
उत्तेजना ।

[वि] हज्जमोकारक, उज्ज्वलक ।
पाचन शक्ति बढ़ानेवाला । उत्ते-
जक ।

दीपना—(क्रि स) उज्ज्वलना ।
चमकाना ।

[क्रि अ] उज्ज्वल उठा ।
चमकना ।

दीपमालिका—(सं स्त्री) दीपा-
श्रिता ।
दीवाली ।

दीप-स्तम्भ—[सं पुं] गागवत
बाट देखुदावर कारणे निर्माण
करा चाकि ।

समुद्र में जहाजों को रास्ता
दिखाने के लिये बना हुआ
आलोक-स्तम्भ ।

दीपिका—[सं स्त्री] गरु चाकि ।
अर्थपूषि ।

छोटा दीया । अर्थ बतलाने वाली
पुस्तक ।

(वि) यिद्वे पोशव बिज्जन
करे ।

प्रकाश फैलानेवाली ।

दीपित, दीप्त—(वि) जलि थका
उज्ज्वल ।

जलता हुआ । चमकीला ।

दीप्ति—(सं स्त्री) पोशव, उज्ज्वलता,
पोछा ।

प्रकाश । चमक । शोभा ।

दीयक—(सं स्त्री) डेँह भरवा । काँठ
वाँद थोड़े नष्ट कवा एविश नाटित
थका पोका ।
एक तरह का कीड़ा जो लकड़ी
आदि खा जाता है ।

दीयट—[सं स्त्री] गश् ।
दीपाधार ।

दीया—[सं पुं] छाकि । दीपक ।

दीयासलाई—(मं स्त्री) दियाछलाई,
छूदेव-बाह ।

आग जलाने की पतली तीलियो
की डिब्बी ।

दीर्घकाय—(मं पुं) डाँट-नीबल,
जुबुश ।

बड़े डीलडील वाला । बहुत
बड़ा ।

दीर्घसूत्रा—(सं स्त्री) नइ ३ दिन
छुवि लाइ लाइ श्वा क्रिग ।
दीर्घसूत्र ।

हर काम बहुत धीरे धीरे ओर
देर में करना । कार्यालयों में
पेचीली, व्यर्थ की कार्रवाइयों के
कारण होनेवाली व्यर्थ की देर ।

दीर्घसूत्री—(वि) अटोक कामठ
पलन करौंठा ।

हर काम में बहुत देर लगानेवाला ।

दीर्घा—[सं स्त्री] गेनावी ।
नलपा । छालिब छका बाँठ ।
ऊपर से छाया हुआ मार्ग ।
भवनमें ऊचाई पर दर्शकोंके बैठने
का स्थान ।

दीर्घिका—(सं स्त्री) गक प्रधुवी ।
छोटा तालाब ।

दीर्ण—[वि] फटा ।
फटा हुआ ।

दीवान—(मं पुं) बाख गडा,
बाखाव गडी । कोना उमकविब
गमल गखल-गखश ।

राज सभा । राज्य का मंत्री ।
किसी शायर की सब गजलों का
संग्रह ।

दीवान-खाना—(सं पुं) बैठक
थाना ।
बैठक-घर ।

दीवान-खास—(मं पुं) मूल
दरबार ।
खास दरबार ।

दीवाना—[वि] पागल, विकिथ ।
पागल । विकिस ।

दीवानी—[सं स्त्री] मखीब पद वा
कार्या, पदानी आदालत ।
दीवान का पद या कार्य ।
दीवानी न्यायालय ।

दीवारी, दीवाल—(सं स्त्री)

उध देव ।

प्राचीर । मिट्टी, पत्थर आदि का घेरा ।

दीवाली—(सं स्त्री) दीपावली ।

कार्तिक की अमावस्या को होनेवाला दीपोत्सव ।

दीसना—(क्रि स) देनी पोना ।

दिलाई देना ।

दीह—(वि) दीय, दब उब ।

लम्बा और बड़ा । बहुत ऊँचा

(सं पुं) छावि गोवा ।

चहारदीवारी ।

दुह—(सं पुं) दूध, खरिदाल, काषिदा । नागेवा ।

उत्पात । झगड़ा-बलेड़ा ।

नगाड़ा ।

दुंदुभि—(सं स्त्री) नागेवा ।

नगाड़ा ।

दुदुध—(सं पुं) टोवा साप ।

डेढ़हा साप ।

दुंवा—[सं पुं] शकत नेशन

जेड़ा ।

एक प्रकार का । मोटी दुमवाला

मेड़ा ।

दुआ—(सं स्त्री) केवल उचरत

करा प्रार्थना, यागैरूप ।

ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना ।

आशीर्वाद ।

दुआह—(सं पुं) अथवा आर

बुझात होवात द्वितीय विवाह ।

पहली स्त्री मर जाने पर शादी न

होनेवाला पुरुष का दूसरा विवाह ।

दुइ—(वि) दुई ।

दो ।

दुइज, दुइज—(सं स्त्री) द्वितीया

तिथि ।

द्वितीया तिथि ।

दुऊ, दुऔ—(वि) दुआ ।

दोनों ।

दुकड़ा—(सं पुं) घोवा, अगईठाव

चाविडागव एडांग ।

जोड़ा । पैसेका चौथाई भाग ।

दुकड़ी—(सं स्त्री) शूटेका, घोवा,

घोव ।

दो रुपये । जोड़ी ।

दुकना—(क्रि अ) गुरकावा ।

छिपना ।

दुकान, दूकान—(सं स्त्री)

दोकान, पोशाक ।

चीजें सरीख बिक्री का स्थान ।

हाट । इधर उधर फैली हुई चीजें ।

दुकानदार, दूकानदार—(सं पुं)

दोकानी ।

दुकान वाला ।

दुकानदारी, दूकानदारी—(सं स्त्री)

दोकानी-व्यवसाय ।

दुकानदार का काम या भाव ।

दुकाल—[सं पुं] शक्ति,

आकाल ।

अकाल ।

दुकूल—(सं पुं) धनीया कारण ।

आँठल । कपड़ा । स्त्रियों के

पहनने की साड़ी । आँचल ।

दुकेले—[सं पुं] आन कोनोवा

नगड शका, वि यकलनबीया

नश्य ।

जिसके साथ कोई एक और

आदमी हो ।

(क्रि वि—दुकेले) (वि—दुकेला)

दुकड़—(सं पुं) एकलगे बाकि

धोवा ध्वन नाउव बोवा, एविश

नक टोलव बोवा ।

एक में बँधी दो नावों का जोड़ा ।

छोटे ढोलों का जोड़ा ।

दुका—(वि) बँधा, ताँठव नाउव
फोटा ।

जो एक साथ दो हों ।

दुखड़ा—[सं पुं] श्वर काशिनी ।

किसी के दुख या कष्ट का वर्णन,
संकट ।

दुखना—(क्रि व)विरोधा, विर उठा ।

(शरीर के किसी अंगमें) पीड़ा
होना ।

दुखाना—(क्रि स) श्व नित्रा ।

दुखी करना । कष्ट देना ।

दुखिया—(वि) श्वःविठ ।

दुःखित ।

दुग—[वि] श्वे ।

दो ।

दुगई—(सं स्त्री) श्वर आंगव

मुकलि बाबाउ ।

मकान के आने का उसारा ।

बरामदा ।

दुगदुगी—[सं स्त्री] श्वर शप-

शपनि, ननव श्वरुनि ।

हृदय का जोर से धुकधुक करने की क्रिया । भय ।

दुग्ध—(सं पुं) एका गौत्रीय । दूध ।

दुग्ध—[वि] शृणु । दुग्ना ।

दुग्धिसई(वाई)—(सं स्त्री) मोटासा-ब मोर अवस्था, आनका । द्विविधा । आशंका ।

दुग्धित्ता—(वि) मोटासा मोर । जो द्विविधा या चिन्तामें हो । सन्देह में पड़ा हुआ ।

दु-दूक—(वि) दूधे भाग्य विच्छेद । दो दुकड़ों या खण्डों में बँटा हुआ ।

दुतकारना, दुदलाना—(क्रि स) डावि मिला, भाँटना कदा । दूना दूना कदा । किसी को तिरस्कारपूर्वक हटाना । धिक्कारना ।

दुतारा—[सं पुं] मोटासा । दो तारोंवाला बाजा ।

दुतारी—[सं स्त्री] एविष तबो-बाल ।

एक प्रकार की तलवार ।

दुति—(सं स्त्री) कोठि, पोश, प्रकाश, पोछा ।

प्रभा । प्रकाश ।

दुतिया—(सं स्त्री) तृतीया तिथि । द्वितीया तिथि ।

दुतिवन्त—(वि) धनीश, चकचकीश । चमकीला । सुन्दर ।

दुद्धी—[सं स्त्री] थड़ियाटि । खड़िया मिट्टी ।

दुध मुँह—[वि] प्रियाह शोभा, कौत नगवा । पानी के दूध ।

जिसके दूध के दाँत न टूटे हों । जो शिशु माता के दूधपर ही पलता हो । बहुत छोटा बच्चा ।

दुधार [रु]—(वि) शीबं डी, श्वनी । दूध देनेवाली ।

दुधारा—(वि) दूधकाण्डेन शव शक ।

जिसके दोनों ओर धारें हों ।

[सं पुं] एविष तबो-बाल । एक प्रकार की तलवार ।

दुधारो—(वि) शीबं डी । दूध देनेवाली ।

(सं स्त्री) दूधकाण्डेन शव

धका तबोबाल ।

दोनों ओर धारोंवाली तलवार ।

दुधिया—(वि) गोशीर येन बग ।

दूध की भाँति सफेद ।

दुनना—(क्रि स) गठकि पेलोवा ।

कुचलना ।

दुनाली—(वि) दोगलीया वा

झनलीया ।

दो नलियोंवाली ।

दुनियाँ, दुनिया—(सं स्त्री) गंगाव,

लोक ।

संसार । मंसार के लोग ।

दुनियादार—(सं पुं) गृह्य, गृह्य

धर्मत पाटेकत बाङ्गि, गंगावी ।

गृहस्थ । व्यवहार कुशल व्यक्ति ।

दुनियाई—[वि] गांगादिक ।

सांसारिक ।

दुपटा, दुपट्टा—(सं पुं) चादर ।

ओढ़ने की चादर । कन्धे पर

रखने का कपड़ा । आँचल ।

[सं स्त्री—दुपटी, दुपट्टी]

दुपहरिया, दुपहरी—(सं स्त्री) इ प-

बीया, एविध गरु कुलब गछ ।

दोपहर । एक छोटा फूलदार

पौधा ।

दुबधा, दुबिधा—(सं स्त्री) बिधा,

डूँई बकमर भाव, मनब गंमथ ।

द्विधा । संशय । आगा पीछा ।

आशंका ।

दुबरा, दुबला—[वि] शीण,

चेबेला । कृश । अशक्त ।

दुबारा, दोबारा—[क्रि वि] पुनब,

आको एवाब ।

एकबार और ।

दुभाषिया—(सं पुं) दोडाठी

(दोडाबी) ।

अलग अलग भाषाओंमें बातें करने

वालों को एक दूसरे की बात सम-

झानेवाला । (अं—इन्टर प्रेटर)

दुमंजिला—(वि) डूँई मझीया

(अटोलिका) ।

दो स्तरों का [मकान]

दुम—(सं स्त्री) गेज, गेजन पवे

पाँछकाले लाणि धका, गेव

आक शून्ध अंश ।

पूँछ । पूछ की तरह पीछे रहने

वाला । किसी काम का अन्तिम

और सूक्ष्म अंश ।

दुमची—(सं स्त्री) घोंवाव गेजव

तलेवे बका गादि गंमथ बि

वा फिटो ।

घोड़ेकी साजमें लगा रहनेवाला

वह तत्तमा जो उसकी पूँछके नीचे रहता है ।

दुमदार—(वि) नेखाल, नेख धका ।

पूँछवाला ।

दुमावा—(सं स्त्री) माथी-माथे, वि-माथ ।

विमाता । सौतेली माँ

दुमुँहाँ, बोमुँहाँ—(वि) शूयुथीया । जिसके दो मुँह हों ।

दुरंगा, दुरंगी—(वि) झुबडीया, झुबे बरुबर, ठोठेकीया, अबक्क । जिसमें दो रङ्ग हों । वो तरह का । दोहरी चाल चलनेवाला ।

दुरन्त—[वि] मूर्ख, अवन, कठिन, डीवण, दूष्ट ।

बहुत बड़ा या भारी । कठिन । भीषण । दुष्ट ।

दुरदुराना—(क्रि स) दूरते विदूर करा ।

तिरस्कारपूर्वक भगा देना ।

दुरना—(क्रि अ) गन्धर्व पंवा आँतव होवा, गुरकोवा ।

सामने से दूर होना । छिपना ।

दुरभेव—[सं पुं] मूर्खतावा, मनोभानिया ।

बुरा भाव । मनो मालिन्य ।

दुरमुस—[सं पुं] धूबगुठ, धुग । कंकड़ या मिट्टी पीटकर समान करने का एक उपकरण ।

दुराग्रह—(सं पुं) दूबाकाङ्का, निम्ननीय ऐछा, मूल भ वस्तुन करा ऐछा ।

अनुचित हठ । अपने मतके ठीक सिद्ध होनेपर भी उसपर अड़े रहना ।

दुराचरण, दुराचार—[सं पुं]

कूचडाव, बेग्रा आचरण ।

बुरा आचरण । बदचलनी ।

दुरादुरी—[सं स्त्री] गुर-गुर (टाक) ।

छिपाव । गोपन ।

दुराघर्ष—(वि) शर्क, गहखे पंवा-अग्र नोहोवा, मश पंवाकरी । जिसका दमन करना कठिन हो । प्रचण्ड ।

दुराना—(क्रि अ) आँतवि होवा, गुरकोवा ।

दूर होना । छिपाना ।

(क्रि स) आँतबाई होवा,

बुराई धोखा, शत्रु, छद्म आदि
नछाई डोला ।

दूर करना । छिपाना । (हाथ, आँख
आदि) नचाना या मटकाना ।

दुराव—(संपुं) कपटे डार, कथा
गोपने बर्बाद डार ।

किसी से कोई बात गुप्त रखने
या छिपाने का भाव ।

दुरित—(संपुं) पाप, दूर्गति ।
पाप । पातक ।

[वि] पापी ।
पापी । पातकी ।

दुरियाना—(क्रि स) दूर कबा ।
दूर करना ।

दुरुत्साहन—(संपुं) बेगना-कागव
कावणे उगगाह दिया ।

बुरे काम के लिये उकसाना ।

दुरुस्त—(वि) खूब, डाल, ऋति-
हीन ।

जो अच्छी या ठीक दशामें हो ।
जिसमें दोष या त्रुटि न हो ।
उचित ।

दुरुस्ती—(संपुं) गलती, धन,
मेवावत ।

संशोधन । मरम्मत ।

दुरुह—(वि) कठिन अर्थशुद्ध ।
जल्दी समझ में न आनेवाला ।
कठिन ।

दुर्घट—[वि] श्वटेल टोन, गश्चे
नोहोरा वा नष्ट ।
जिसका होना कठिन हो ।

दुर्जय, दुर्जेय—(वि) अश्व कविटेल
टोन, प्रवाकगी ।
जो जल्दी जीता न जा सके ।

दुर्ज्ञेय—[वि] जानिवटेल वा बुझि-
वटेल टोन ।
दुर्बोध ।

दुर्दमनोय, दुर्दम्य—(वि) दमन
कविटेल टोन ।
जिसका दमन करना बहुत
कठिन हो ।

दुर्द्वर—[वि] श्विवटेल टोन ।
जिसे पकड़ता कठिन हो । प्रचंड ।
दुर्धर्ष—[वि] महा प्रवाकगी ।
प्रचंड ।

दुर्भाव—[संपुं] दूष्मिष्टा,
दू डार ।
बुरा भाव । भीतरी बैर या द्वेष ।

दुर्भावना—(संपुं) दूष्मिष्टा,
आनका ।
बुरी भावना । आशंका ।

दुर्मेद, दुर्भेद्य—(वि) गहरे छेद

करिव नोबाबा ।

जो जल्दी भेदा न जा सके ।

जिसे पार करना बहुत कठिन हो ।

दुर्मति [वि] मन्द स्वभावशुद्ध ।

दुष्ट बुद्धिवाला ।

[सं स्त्री] क्रू-बुद्धि ।

बुरी बुद्धि ।

दुर्मद—(वि) अहंकारी ।

घमण्डी । मदमत्त ।

दुर्वचन—(सं पुं) गालि, तिरस्कार ।

गाली ।

दुर्वाद—(सं पुं) गालि, अपवाद ।

गाली । अपवाद ।

दुर्विनीत—[वि] अनिष्ट, छँटा ।

अशिष्ट । अवलङ्ग ।

दुर्विपाक—(सं पुं) दूर्कपाल ।

दुर्घटना । बुरा परिणाम या फल ।

दुर्व्यसन—[सं पुं] उद्विग्न, क्रू-

आचरण ।

बुरा व्यसन । लत ।

दुलकना, दुलखना [क्रि स]

पुनरावृत्ति कर्ता, पुनरुक्त ।

कोई बात दुबारा कहना या बतलाना ।

[क्रि अ] एवावटोक पिछ्त अही-
कार कर्ता ।

कहकर मुकरना ।

दुलही, दुलही—(सं स्त्री) दूधान

माला एके लगे ग्रीथि कर्ता
माला ।

दो लड़ों की माला या हार ।

दुलही—[सं स्त्री] धोआ आदिने

दुश्चिन्तन पाछु छेडेवे मर्ता लाथि

घोडे आदि चौपायों का पिछले

दोनों पैर उठाकर किसी को

मारना ।

दुलाराना—[क्रि अ] शिष्टक मन्त्र

प्रेषुवा, श्रिय शिष्टक निठिना

वाचन कर्ता ।

बच्चों को दुलार या प्यार करना ।

दुलारे बच्चों का सा व्यवहार

करना ।

(क्रि स) शिष्टक लगत नर्ता-

धेगाली कर्ता ।

बच्चों से दुलार या लाड़ करना ।

दुलहन, दुलही—[सं स्त्री] कहेना ।

नव-वधू ।

दुलहा—(सं पुं) दवा, दब ।

बर । पति ।

दुलाई—(सं स्त्री) दूई डबौया
छाव । उबार कावणे पातल
लेप । हलकी रजाई ।

दुलाना—(क्रि स) लवाई दिया ।
हिलाना । डुलाना ।

दुलार—[सं पुं] मय, छेनेइ ।
बच्चों को प्रसन्न रखने की प्रेम-
पूर्ण चेष्टा । लाड़ ।

दुलारा, दुलारी—[वि] मयमय ।
लाड़ला ।

दुलीचा (लैचा)—[सं पुं] गलिचा
वा मलिचा ।
गलीचा ।

दुव—(वि) दूई ।
दो ।

दुवन—(सं पुं) दूई, शक्र,
बाक्र ।
दुष्ट । शत्रु । राक्षस ।
[वि] बेरा ।
बुरा ।

दुशवार, दुशवार—[वि] टांग,
कटंगाथ ।
कठिन । दुरूह ।

दुमन—(सं पुं) शक्र, देवी ।
शत्रु । बैरी ।

दुमनी—[सं स्त्री] शक्रता, देवी-
भाव ।
बैर । शत्रुता ।

दुष्प्रवृत्ति—(सं स्त्री) क्रूयति, बेरा
आशय । दुष्प्रवृत्ति ।
बुरी या दूषित प्रवृत्ति ।
(वि) क्रूयति गम्भ ।
दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला ।

दुसूती—(सं स्त्री) दूई श्रुती
(मोति काटपाव) ।
दोहरे मूतों की मोटी चादर ।

दुसेजा—(सं पुं) पालः वा
पादलः ।
पलङ्ग ।

दुहस्थङ्ग—(क्रि वि) दूया शोडतेमबा ।
दोनों हाथों से प्रहार ।
(सं पुं) दूया शोडतेन कबा
प्रहार ।

दोनों हाथोंसे होनेवाला प्रहार ।

दुहना—(क्रि स) गाथीब शीबोवा ।
शोषण कबा ।
पशुओं के स्तन से दूध निका-
लना । शोषण करना ।

दुहनी, दोहनी—[सं स्त्री] कैंनीया,
भाड़ा, शीबोवा कार्य ।

वह बरतन जिसमें दूध दुहते है ।
दूध दुहने का काम ।

दुहरा, दोहरा— (वि) श्रृंगीया,
षिठीयबाबर ।

जिसमें दो परतें या तहे हों ।
दो बार या दूसरी बार का ।
(सं पुं) “दोहा” छन्द ।
दोहा नामक छन्द ।

दुहाई—(सं स्त्री) घोषणा, दोहाई,
अपथ, शीटवावा कार्य वा तार
बाना ।

मुनादी । घोषणा । अपनी रक्षाके
लिये किसीको बिल्लाकर बुलाना ।
शपथ । दुहनेका काम या
मजदूरी ।

दुहाग—(सं पुं) श्रृङ्गा, वैधवा ।
दुर्भाग्य । वैधव्य ।

दुहागिन—(सं स्त्री) विधवा ।
विधवा ।

दुहिसा—[सं स्त्री] बेटा, ली ।
बेटी ।

दुहूँ—[वि] श्रृया ।
दोनो ।

दुहेला—(वि) श्रृङ्गाशी, तान,
श्रृङ्गपूर्ण ।

दुःखदायी । कठिन । दुःखी ।
दुःखपूर्ण ।

(सं पुं) बिकटे वा श्रृङ्गाशक
कार्य ।

विकट या दुःखदायक कार्य ।

दुईया—(वि) गुबाल, गांभीर्य
शीटवाउंठा ।
दुहनेवाला ।

दूँदना—(क्रि अ) शई-काजिया
वा उपद्रव करना ।

लड़ाई भगड़ा या उपद्रव करना ।

दूक—[वि] दूई एठा, किछुगान ।
दो एक । कुछ ।

दूखना—(क्रि स) पात्र नगोवा ।
दोष या ऐब लगाना ।

[क्रि अ] पीडा होवा, नष्ट
होवा ।

पीडा होना । नष्ट होना ।

दूज—[सं स्त्री] शिठीया ।
द्वितीया ।

दूजा—[वि] शिठीय ।
दूसरा ।

दूतिका, दूती—(सं स्त्री) बाडावाशी
तिटोता ।

सन्देश पहुँचानेवाली । कुटनी ।

दूष—[सं पुं] एबों गोबीव ।
दुष । पब ।

दूष-पूत—(सं पुं) धन-जन ।
धन और सन्तति ।

दून—[सं स्त्री] झुण ।
दुगुना होने का भाव ।
(सं पुं) उपेक्षा ।
तराई । घाटी ।

दूना—[वि] झुण ।
दुगुना ।

दूनौ—(वि) दूना ।
दोनों ।

दूष, दूषा—[सं स्त्री] दूषवि ।
दूषा घास ।

दू-षदू—[क्रि वि] मुखा-मुखि ।
गन्ध-धृत ।
मुकाबले में ।

दूधर—(वि) दूःगाथा ।
कठिनता से सहा जानेवाला ।

दूसना—(क्रि अ) लव-चव शेरा ।
हिलना ।

दूरदर्शक-यंत्र, दूरबीन—(सं पुं)
दूरबीक्षण यंत्र । दूरबीन ।
दूर की चीजें पास और बड़ी
दिखाने वाला यंत्र ।

दूरी—(सं स्त्री) दूर, दूरव ।
अन्तर । फासला ।

दूषा—[सं स्त्री] दूषवि ।
दूष घास ।

दूलह, दूलहा—[सं पुं] दवा, रव ।
वर ।

दूषण—(सं पुं) वेग्राण, दोष ।
अवगुण । बुराई । दोष या ऐब
लगाना ।

दूषना, दूसना—[क्रि स] दोष
दिश ।
दोष लगाना ।

दूष्य—[वि] दोषणीय, निन्दनीय ।
निन्दनीय ।

दूसर, दूसरा—[वि] वितीय ।
द्वितीय ।

दृगंचल—[सं पुं] चक्र पंठाव
नाम । पलक ।
पलक । कटाक्ष ।

दृग—[सं पुं] चक्र, दृष्टि ।
आँख । दृष्टि । दो की संख्या ।

दृढ़—[वि] दृढ़, गृह, शशी,
निश्चित ।

प्रगाढ़ । पुष्ट । कड़ा । हृष्ट-
पुष्ट । स्थायी । निश्चित ।

दृष्टचेता—[वि] दृष्ट अतिष्ठ, अस्म
विवेचना ।

पक्के विचारोंवाला ।

दृष्टप्रतिज्ञा—[वि] दृष्ट अतिष्ठ,
मङ्गल एवि निदिशा ।

अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने
वाला ।

दृढ़ाई—[सं स्त्री] दृढ़ता ।
दृढ़ता ।

दृढ़ाना—[क्रि स] दृढ़ कर्त्तु कर्त्तु ।
दृढ़ या पक्का करना ।

[क्रि अ] दृढ़ होना ।

दृढ़ या पक्का होना ।

दृष्ट—[वि] गर्व युक्त । उग्र ।
उग्र । तेज युक्त । अभिमानी ।

दृष्टि—[सं स्त्री] गर्व, अभिमान,
उग्रता, तेजस्विता, उज्ज्वलता ।
चमक । तेजस्विता । प्रकाश ।
अभिमान । उग्रता ।

दृष्टकूट, दृष्टिकूट—[सं पुं] गोंधर ।
पहेली ।

दृष्टिगोचर—[वि] चक्षुषे देखा,
चक्षुषे पत्ता ।

जो देखने में आवे ।

दृष्टि भ्रम—(सं पुं) भ्रम,
भ्रमण ।

आँखों से देख कर होनेवाला
भ्रम ।

देखनहारा—[सं पुं] छाँटना,
दर्शक ।
देखनेवाला ।

देखना—(क्रि स) छाँटना, निरीक्षण
करना, परीक्षा करि छाँटना ।
अवलोकन करना । जाँच या
निरीक्षण करना । अनुभव
करना ।

देख-भाल, देखरेख—[सं स्त्री]
तदावर, परिदर्शन ।
जाँच पड़ताल । निगरानी ।

देखादेखी—(सं स्त्री) देखादेखि,
देखा गाथा ।
साक्षात्कार ।
[क्रि वि] देखादेखि ।
किसी को कुछ करते देख उसका
अनुकरण ।

देन—(सं स्त्री) दान, अर्पण वा
अर्पण । दिवले बाकी रक्क
न ।
दान । प्रदत्त या प्राप्त वस्तु ।
चुकाने को बाकी रक्कम ।

देनदार—[सं पुं] शम्भा ।
कर्जदार ।

देन-लेन—[सं पुं] लेन-पेन ।
देने और लेने का व्यवहार ।

देना—[कि स] दिना, जगर्ण कर्ना ।
दान करना । हवाले करना ।
अनुभव करना । प्रहार करना ।
(सं पुं) धावटेल अना शन,
पेना ।
उधार ली गयी रकम ।

देय—[वि] दिवलगौरा, दिवले
वाकी धका शन । दिवल योग्य ।
जो दिया जा सके । देन । जो
दिया जाने को हो ।

देयादेश—(सं पुं) आदाय दिवले
दिना आदेश ।
दानादेश । (अं—पेमेंट आर्डर)

देयासी—(वि) देव, नष्टदेव अवा-
कुरा करेता ।
भाड़ फूँक करनेवाला ।

देर—(सं स्त्री) पलन, गमन, पव ।
विलम्ब । समय । वक्त ।

देवकार्य—(सं पुं) देवताव पूजा
आदि, देवताव उपकार कर्ना
कार्य; बेने—असुर वध ।
होम, पूजा आदि आभिक कार्य ।

देवदार—[सं पुं] देवदारु गृह ।
एक पेड़ ।

देवधुनि—(सं स्त्री) गङ्गा नदी ।
गङ्गा नदी ।

देव-यान—(सं स्त्री) जन्मलोकले
योवा वाटे ।
ब्रह्मलोक को जाने का मार्ग ।

देवर—(सं पुं) देव, आभिव गव
भायक ।
पति का छोटा भाई ।

देवरानी—(सं स्त्री) या ।
पति के छोटे भाई या देवर की
स्त्री ।

देवल—(सं पुं) देवताव मन्त्रि ।
देव मंदिर ।

देवलोक—[सं पुं] शर्ग ।
स्वर्ग ।

देव-वधू—[सं स्त्री] अपेक्षी,
देवी ।
अप्सरा । देवी ।

देवांगना—(सं स्त्री) देवताव पत्नी,
अपेक्षी ।
देवता की पत्नी । अप्सरा ।

देवानीक—[सं पुं] देवताव
गैष्ठ ।
देवताओं की सेना ।

वैशाख्य—(सं पुं)

मेरुजगत्,

नलिन ।

मन्दिर ।

वैश्या—(वि) निष्ठता ।

देनेवाला ।

वैश्वर—(सं पुं) मेरुताव प्रका-

मेरा छलावर कावणे दान कब

निकर छुनि ।

देवता को चढ़ाया हुआ धन या सम्पत्ति ।

देशज—(वि) देशीय, देशत उत्पन्न ।

देश से उत्पन्न ।

देश-निकाला—(सं पुं) निर्वासन ।

निर्वासन ।

देश-भाषा—(सं स्त्री) कोनो देश

वा प्रदेश की भाषा ।

किसी देश या प्रदेश की भाषा ।

देशान्तर—(सं पुं) देशांतर, दूर

आन एक देश, विदेश ।

दूसरा देश ।

देशाचार—(सं पुं) देशाचार,

देश की आचार-व्यवहार ।

वह आचार या रीति व्यवहार

जो किसी देश में प्रचलित हो ।

देशाटन—[सं पुं] दूर देश

वर्ण ।

दूर दूर देशों का भ्रमण ।

देहत्याग—(सं पुं) इच्छा ।

मृत्यु ।

देहरा—(सं पुं) नलिन, नक्षत्र

नदी ।

देहालय । मनुष्य शरीर ।

देहात—[सं पुं] गाँव ।

ग्राम ।

देहाती—(वि) गाँववासी ।

ग्रामीण । गाँववासी ।

देही—[सं पुं] आत्मा, शरीर शुद्ध

आत्मा ।

आत्मा । शरीरवासी प्राणी ।

दैत्यारि—(सं पुं) विष्णु, इन्द्र ।

विष्णु । इन्द्र ।

दैनिन्दनी, दैनिकी—[सं स्त्री]

दैनिक शिष्टा, डाकघर की बही ।

दिन भर के कार्य आदि लिखने

की पुस्तिका (अं—डायरी)

दैन्य—(सं पुं) दीनता, दरिद्रता,

काठोर भाव, अतिशय विनय

भाव ।

दीनता । कातरता ।

द्वैधा—[सं पुं] भागा, अदृष्ट, जेवर ।

देव । ईश्वर ।

(सं स्त्री) मातृ ।

माता ।

द्वैध—(वि) देवता सम्बन्धी, देवता-
वा विधाता । शवि मान ।

देवता सम्बन्धी । देवताका किया
हुआ ।

[सं पुं] भागा, अदृष्ट, जेवर ।

प्रारब्ध । होनेवाली बात । ईश्वर,
आकाश ।

द्वैधगति—[सं स्त्री] अदृष्ट वा कपा-
नर फेबत वा देवताव ईच्छात
होवा आकस्मिक कार्य ।

ईश्वरी बात या घटना । भाग्य ।

द्वैध—[सं पुं] गणक, मणा गणिव
परा लोक ।

ज्योतिषी ।

द्वैधयोग—(सं पुं) देव-घटना,
आकस्मिक घटना ।

इतफाक । संयोग ।

द्वैधवशा [वशात्]—(क्रि वि) भागा-
क्रम, अकस्मात् ।

स योग से । अकस्मात् ।

द्वैधात् (क्रि वि) दृष्टा, अकस्मात् ।
अकस्मात् ।

द्वैधी—(वि) देवताव निष्ठिना,
पैविक, आकस्मिक ।

देवता सम्बन्धी । देवताओं द्वारा
हुआ । आकस्मिक ।

द्वैशिक—[वि] देशीय, देशीय ।

देश सम्बन्धी । देश का ।

द्वैहिक—[वि] गात वा देशत

होवा, शारीरिक, शरीरव ।

देह सम्बन्धी । शारीरिक ।

द्वै—[वि] दृष्टे ।

द्वैधाव [1]—(सं पुं) दृष्टे नैव गात्रव
गमद्वि अकल ।

दो नदियों के बीचका भू भाग ।

द्वैध[उ]—[वि] दृष्टो ।

दोनों ।

द्वैधना—(क्रि स) दोष दिया ।

दोष लगाना ।

द्वैधना—[सं पुं] आवक, अवस्था ।
वर्णन कर ।

द्वैधना—(क्रि स) दृष्टि धरा ।

दबाव डालना ।

द्वैधव—[सं पुं] नरक ।

नरक ।

दोहकी—[सं पुं] नावकी ।

नारकी ।

दो तरफा—(वि) दूहे उबगीया ।

दोनों तरफ होने या लगानेवाला ।

(कि वि) दूया फालने ।

दोनों तरफ से ।

दोधारा(री)—(सं स्त्री) दूयाफाल

धार धका तबोवाल ।

दीनों ओर धारवाली तलवार ।

दोन—[स पुं] उपतका ।

तराई । दो-आबा ।

दोना—[सं पुं] पना वा दोना,

कल पट्टेबाब खोल ।

पत्तो का बना कटोरे जैसा पात्र ।

दोनों—[वि] दूया, उडये ।

उभय ।

दोपहर—[सं पुं] दूपरीया ।

मध्याह्न ।

दो-फसली—[वि] (आछ-भाजी)

दूयाविष धेति मश्कीय ।

रबी और खरीफ दोनों फसलों

से सम्बन्ध रखनेवाला ।

दोय—[वि] दूया दूये ।

दोनों । दो ।

दो-रसा—(वि) दूहे रकयब वन

वा लोवागदूख ।

दो प्रकारके रस या स्वादवाला ।

दोला—[सं स्त्री] दोलान, दोला ।

भूला । डोली ।

दोलित—[वि] शानि-बानि धका ।

हिलता या भूलता हुआ ।

दोषना—[कि स] दोषारोप

करा ।

दोष या अपराध लगाना ।

दोषारोपण—[सं पुं] दोषारोप ।

दोष लगाना ।

दोस्त—[सं पुं] बझू, मित्र ।

मित्र । स्नेही ।

दोस्ताना—[सं पुं] बझू ।

मित्रता ।

(वि) बझू जम्पकीय ।

दोस्ती का ।

दोस्ती—(सं स्त्री) बझू, मित्रता ।

मित्रता ।

[सं पुं] एविष बगिट ।

एक प्रकार की रोटी या परांठा ।

दोहसा—(सं पुं) नाति ।

नाती ।

दोहद—(सं स्त्री) गर्डवती जीव

इच्छा वा वागना, गर्डावना,

गर्भस्थिति चिन् ।

गर्भवती स्त्री की इच्छा या वासना । गर्भावस्था । गर्भ के चिह्न ।

दोहदवती—(सं स्त्री) गर्भवती । गर्भवती ।

दोहना—[क्रि स] दोषादोष कृत्वा, श्रेय अर्थात् कृत्वा ।

दोष लगाना । तुच्छ ठहराना ।

दोहरना—[क्रि अ] पुनरावृत्ति कृत्वा, प्रकृष्टीया कृत्वा ।

दोहराना । दोहरा करना ।

दोहराना—[क्रि सं] पुनरावृत्ति कृत्वा, पुनरुक्ति कृत्वा, प्रकृष्टीया कृत्वा ।

पुनरावृत्ति करना । किसी किये हुए कामको जाचने के लिये फिर से अच्छी तरह देखना । कपड़े, कागज आदि को दोहरा करना ।

दौड़—(सं स्त्री) दौव, लव, दौव-प्रतिस्पर्धा । दौव ।

दौड़ने की क्रिया या भाव । चढ़ाई । दौड़ने की प्रतियोगिता । विस्तार ।

दौड़धूप—[सं स्त्री] लबा-छपवा, खंखूला ।

वह प्रयत्न जिसमें इधर उधर दौड़ना पड़े ।

दौड़ना—(क्रि अ) लवमव । धावित होना ।

दौड़ाना—[क्रि स] आनक दोषादोष । दूसरे को दौड़नेमें प्रवृत्त करना ।

दौर—[सं स्त्री] ज्ञान, श्रुति वा मोक्षार्थी, ज्ञान, पाल ।

चक्र । भ्रमण । उन्नति या विकास के दिन । धारी ।

दौरा—(सं पुं) ज्ञान, चक्र । भ्रमण ।

जांच पड़ताल के लिये भ्रमण ।

दौरान—[सं पुं] काल, अवधि, आदर्शन । ज्ञान । दो घटनाओं के बीच का समय । दौरा ।

दौलत—(सं स्त्री) धन, दौलत, सम्पत्ति ।

धन । सम्पत्ति ।

दौलत खाना—(सं पुं) नागखान । निवास स्थान ।

दौलत मन्द—(वि) धनी । धनवान ।

दुष्ट—(सं स्त्री) नीति, शोभा,
छेडेति ।

दीप्ति । चमक । शोभा ।

द्यूत—(सं पुं) कूतक्रीडा, पाशटि
वा कड़ि आदिसे कबा खेल ।

पाशा या जूए का खेल ।

द्योतक—(सं पुं) सूचक, बोधक,
छापक ।

सूचक । प्रकाश करनेवाला ।

द्रव—(वि) पनीया, झुलीया, तबल,
पशियावा ।

पतला । गीला । पिघला हुआ ।

द्रवना—(क्रि अ) पति पानी होवा,
वै योवा, द्रवीभूत होवा ।

पिघलना । बहना । दयाद्रं होना ।

द्रवित, द्रवीभूत—[वि] गलि वा
पति योवा, झुलीया होवा ।

जो तरल हो गया हो । पिघला
हुआ । दयाद्रं ।

द्रष्टा [वि] देखता, यि देखे ।
देखने वाला । दर्शक ।

[सं पुं] आत्मा ।

आत्मा, (सांख्य योग)

द्राक्षा—[सं स्त्री] आक्षर, एविष

नतार गुटि ।

अंगूर ।

द्रावक—(वि) ज्वकाबी, गनाई
पेलोवा, विगलित कना ।

गलाने या बहानेवाला । हृदय
को दयाद्रं करने वाला ।

द्राविडी—[वि] द्राविड़ देशन (गांधीज
पवा कूनादिका अस्तुबीप पर्यंत
जुवि थका भावत अंश)

द्रविड़ सम्बन्धी ।

द्रुम—[सं पुं] गछ ।
पेड़ ।

द्रोणी—(सं स्त्री) एविष जनपद :
थलि, गिविगकट । गर नाण ।

छोटी नाव । छोटा दोना ।
पहाड़ी दर्रा ।

द्रोह—(सं पुं) अपकार, हिंसा,
द्रोश ।

दूसरे को हानि पहुंचाने की
वृत्ति । वैर ।

द्रोही—(वि) हिंस्रक, अपकार वा
शत्रुता करनेवाला ।

द्रोह करने या हानि पहुंचाने
वाला ।

द्वन्द्व—(सं पुं) बोधा, मिथुन,
प्रतिवन्दी, काञ्चि, कष्टे, उपज्वर ।
युग्म । मिथुन । प्रतिद्वन्द्वी ।
मगड़ा । कष्ट । उपद्रव ।

द्वन्द्व—(सं पुं) दूधे, श्रियान्न,
विवाद, दम्भ जगज्ज ।
द्वन्द्व । एक प्रकार का समास ।

द्वय—[वि] दूठो ।
दो ।

द्वयता—(सं स्त्री) दूठो वृक्षावटेल,
भेद-भाव ।
दो का भाव । भेद-भाव ।

द्वादश—(वि) द्वादश, बार ।
बारहवा । बारह ।

द्वादशाह—(सं पुं) बृहत्तार बार
पिनव दिना कवा अक्ष, गपिष्ठि ।
मरने के बारह दिन पर होने
वाला श्राद्ध ।

द्वादशी—(सं स्त्री) द्वादशीः एका-
दशीव प्राञ्च तिथि ।
किसी पक्ष की बारहवीं तिथि ।

द्वापर—[सं पुं] तृतीय युग, गता
आरु त्रेताव प्राञ्च युग ।
चार युगों में से तीसरा युग ।

द्वार—[सं पुं] बाटो, द्वार ।
मार्ग । दरवाजा ।

द्वार-पटी—[सं स्त्री] पक्ष ।
द्वार पर टाँगनेका परदा ।

द्वारपाल—(सं पुं) दूबाव-वक्क,
दूबवी ।
दरबान ।

द्वारा—(सं पुं) दूबाव ।
दरवाजा ।
(अव्य) दाना, शङ्खराई ।
जग्ये से ।

द्वि—[वि] दूधे ।
दो ।

द्विज, द्विजन्मा, द्विजाति—[वि]
दूबाव अन्ना, शिख ।
दो बार जन्मा हुआ ।
(सं पुं) चबाई, जाकण, छल,
कौत ।
पक्षी । ब्राह्मण । चन्द्रमा । दाँत ।

द्विजपति, द्विजराज—(सं पुं)
जाकण, छल ।
ब्राह्मण । चन्द्रमा ।

द्वित्व—(सं पुं) दूधे, दूधे भाव ।
दोहरे का भाव । दो का भाव ।

द्विधा—[क्रि वि] दूधे प्रकारे विधा ।
दूधेभागे विभक्त ।
दो प्रकार से । दो भागों में ।
द्विविधा ।

द्विपद—(सं पुं) माश्रु ।

मनुष्य ।

(वि) दुखन डवि थका ।
दो पैरोवाला ।

द्विरद—[सं पुं] हाती ।

हाथी ।

[वि] छुटा फाँत थका ।
दो दाँतोवाला ।

द्विद्विगमन—[सं पुं] विषाव कञ्चन
अतिग्रहण द्वितीयवार गमन ।
गौना ।

द्विरुक्ति—(सं स्त्री) एक शब्द
वा कथाकेइ याको केवा
कार्य । पुनरावृत्ति ।

पहले या एकवार कही हुई बात
फिर से कहना ।

द्विरेफ—[सं पुं] दोहरेफ ।
अमर ।

द्विविध—(वि) दुई बिध ।
दो तरह का ।

द्विविधा—(सं स्त्री) दोहोद्वि-
योव, संशय ।
द्विविधा । संशय ।

द्विवेदी—[सं पुं] जाकणव एटा
श्रेणी ।
ब्राह्मणों की एक जाति । दूबे ।

द्वीप—(सं पुं) द्वीप, माझुमी ।

टापू ।

द्वेष—(सं पुं) अमङ्गलव वांछा,
द्विंश, शत्रुभाव ।
घातुता । चिढ़ ।

द्वेषी—(वि) द्विंश करनेवाला,
शत्रु ।

द्वेष रखने या करनेवाला ।
घातु ।

द्वै—(वि) दुई, दूयो ।
दो । दोनों ।

द्वैत—(सं पुं) दुई भाव, युक्थ,
भेद भाव ।

दो का भाव । युग्म । भेद भाव ।

द्वैतवाद—(सं पुं) द्वैतवाद, दार्शनिक
सिद्धांत—द्वैत याद्वैत धर्म, भिन्न,
एक धर्मद्वय बाजे आन देवताओं
आहे ।

आत्मा और ब्रह्म को दो मानने
वाला दार्शनिक सिद्धान्त ।

द्वैध—(सं पुं) संशय, दोहोद्वि-
योव । द्वैत शीघ्र

विरोध । कुछ शासक के और
कुछ प्रजा के प्रति निधियों का
शासन (डाढाकीं)

द्वैवार्षिक—(वि) दूहे बह्नीया ।
दो दो वर्ष पर होनेवाला ।

द्वौ—(वि) दूशो, वन दूहे ।
दोनों । दावानल ।

ध

ध—वर्ण मालाव उनविंशत्य वाङ्मयवर्ण
वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन ।

धंधक—(सं पुं) धाना, जञ्जाल,
आडल ।
संसार के काम धन्धोंका भगड़ा ।
जंजाल ।

धंधक-धोरी—(सं पुं) जञ्जालत
पना लोक, वह बावगायौ ।
जंजालों में फँसा हुआ आदमी ।
बहु धन्धी ।

धँधलाना—(क्रि अ) काकति
करा, मिथ्याडबब देखुवा ।
छल करट करना । आडम्बर या
ढोंग रचना ।

धंधा—(सं पुं) बावशाव; उल्लोच,
कामकाज, खीटिका ।

उद्योग । काम काज । व्यवसाय ।
पेशा ।

धँसना—(क्रि अ) डिठबटेल मोटोवा
कार्य । बुर बोदा । पोत बोदा,
नष्ट होवा ।

पानी में या किसी कोमल वस्तु में
प्रवेश करना । गड़ना । नीचे की
ओर धीरे धीरे बैठना या जाना ।
नष्ट होना ।

धँसाना—(सं स्त्री) अवेण करव,
झुंझा काम ।

धँसने की क्रिया, भाव या ढंग ।
वह जगह जिसमें कोई चीज
धँसे ।

धकधकाना—(क्रि अ) उठल-धुठल
लगना । दहदहाइ दूहे जलि उठा ।

भय, उद्वेग आदिसे हृदय की गति
का तीव्र होना । आग दहकना ।

धक्का—(सं स्त्री) बुरा बर्ण-
धर्षण, धक् धक्, उछल धुल ।

हृदय की धक्कन । हृदय ।
किसी बात की आशंका या भय ।

धक्काना—(क्रि अ) मगन धक्-
धक् करी, उछल धुल लगी ।
किसी बात की आशंका होना ।

धक्काना—[क्रि स] गँठिया,
गँठा बरा ।
धक्का देना ।

धक्कलना—[क्रि स] टकियाई दिया,
ठेलि दिया ।
ठकेलना । किसी चीजको ठेलकर
हटाना ।

धक्कम-धक्का—[सं पुं] ठेला-
ठेलि, धँचा-धँचि ।

भीड़ में आदमियों का एक दूसरे
को धक्का देना । बड़ी भीड़ ।

धक्का—(सं पुं) टक्का, आघात,
विपत्ति, शानि । धँचा ।

टक्कर । झोंका । बड़ी भीड़ ।
विपत्ति । हानि ।

धक्का मुक्की—[सं स्त्री] बुरा-
बुरा ।

एक दूसरे को धक्का देना और
मुक्के मारना ।

धक्का—(सं पुं) ठेला, धँचा ।
धक्का । भटका ।

धज—(सं स्त्री) धुन-धँच । गौर्वा
सजावट या बनावट का सुन्दर
ढंग । शोभा ।

धजा—[सं स्त्री] पठाका ।
पताका ।

धज्जी—[सं स्त्री] डोबा-कानि,
एछिटा, डोखर, टूटबा ।
कपड़े, कागज आदि में कटकर
निकली हुई पतली पट्टी ।

धड़ंग—(वि) नाडं वा नाडं ।
नंगा ।

धड़—(सं पुं) गा, गाँ, गाँ-गं ।
शरीर में गले से नीचे कमर तक
का सारा भाग । पेड़ का तना ।
(सं स्त्री) धुन्ना धोना वा
वाग्वि पना शक ।

टकराने या गिरने का शब्द ।

धक्कन—[सं स्त्री] बुरा बर्ण-
धर्षण, धक्कन धक्कन ।

भय आदि के कारण हृदय का
स्पन्दन ।

धड़कना - [क्रि अ] धप्, धपनि
 उठा, स्फुटित होना ।
 भय, दुबेलता आदि के कारण
 हृदय का स्पन्दित होना [क्रि स -
 धड़काना]

धड़धड़ाना -- [क्रि अ] धिप्, धिप्
 कवा, धप धपाना, टुकनना ।
 भारी चीज गिरने का मा धड़-
 धड़ शब्द होना ।

धड़ल्ला - (सं पुं) विपन्न, गरीब ।
 गरीब शब्द का नाम कवा ।
 बेहिचक फुगती ।

धड़ल्ले से -- यदिवाग विना वागै ।
 विना रुके । बे-धड़क ।

धड़ा - [सं पुं] गन्ध, दुर्गन्धी ।
 वायु । तराजू के दोनों पलड़ों की
 ठीक स्थिति । तराजू ।

धड़ाका - [सं पुं] विस्फोटन शब्द,
 धम्पन ।
 विस्फोट का शब्द । धमाका ।

धड़ा धड़ - (क्रि वि) धमकाने ।
 लगानार और जल्दी जल्दी ।

धड़ाम - (सं पुं) श्रुतेर शब्द
 शब्द ।
 उँचाई से कूदने या गिरने का
 शब्द ।

धड़ो - [सं स्त्री] पीडा, डाढान
 बाले ठठत शब्द बेषा ।
 पाँच सेर का तोल । पान खाने से
 ओठों पर पड़नेवाली लकीर ।

धत् - (अव्य) धत् ।
 धिक्कारने का तुच्छ सूचित करने
 का शब्द ।

धत्कारना - [क्रि स] छेछे-छेछे
 लेश-लेश कना ।

धत्कारना धत् शब्द के साथ
 भगाना ।

धतूरा - (सं पुं) धतूरा ।
 गफेद फूलोंवाला एक पोषा
 जिनके बीज विपैले होते हैं ।

धक्कना, धधाना - (क्रि अ) धप्-
 धपाने कलि धक्का, धक्कित
 ठेक धक्का ।

दहकना । भड़कना ।

धनंजय - (सं पुं) यज्ज्, विष्णु,
 यज्ञि, धनौवन वायु विशेष,
 बर डाढव ।
 अर्जुन । विष्णु । अग्नि । शरीर
 की पोषण-वायु ।

धनकुबेर - (सं पुं) बर डाढव
 धनी ।
 बहुत बड़ा धनवान ।

धनतेरस—[सं स्त्री] काष्ठियाश्च
कृष्णाद्योदनी तिथि मिदिना
लक्ष्मी भूजा कवा उग्र ।
कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की
त्रयोदशी ।

धनद—(वि) धन दिंडा ।
धन देनेवाला ।
(सं पुं) कूटव द्रवता ।
कुबेर ।

धनपक्ष—[सं पुं] जमाव धन,
जमा-चबट ।
हिसाब में जमावाला पक्ष ।
[क्रेडिट साइड]

धनपति—(सं पुं) कूटव, धनी ।
कुबेर । धनी ।

धनवान, धनाढ्य—(वि) धनी ।
धनी । अमीर ।

धनहीन—(वि) धनीया, निर्धन ।
निर्धन । गरीब ।

धनाणु—(सं पुं) शिव (शिव-अश्विन
इहे अकारव विश्वा शक्ति)
धन विश्वा रुक्मि ।

वह अणु जो सदा धनात्मक
विद्युत् से आविष्ट रहता है ।
(अं-प्रातिविक्र)

धनात्मक—[वि] धनात्मक, धन-
प्रकृष ।

धनवाले तत्व से युक्त । धन पक्ष
से सम्बन्ध रखनेवाला ।

धनि—(सं स्त्री) अग्नी, धी ।
पत्नी । वधू ।
(वि) शत्रु ।
धन्य ।

धनिया—[सं पुं] धनीया, एविध
मछली ।

मसाले का एक पौधा । एक
प्रकार का धान ।
(सं स्त्री) युवती धी ।

युवती स्त्री या वधू ।

धनु—[सं पुं] श्वश्रु, नवम राशि ।
(श्वश्रु राशि)

धनुष । बारह राशियों में एक
राशि ।

धनुर्धर (धर), धनुर्दारी—(सं पुं)
श्वश्रुधर, श्वश्रुदारी, श्वश्रुदारी ।
श्वश्रुधर श्रुज कवा वीव ।

धनुष धारण करनेवाला या धनुष
चलाने में निपुण व्यक्ति ।

धनुर्वेद—[सं पुं] श्वश्रुविद्या
विश्ववक्त्र श्वश्रुधर श्वश्रुधर ।

यजुर्वेद का वह भाग जिसमें धनु-
विद्या का विवेचन है ।

धनुष, धनुस—[सं पुं] धेनु ।
दूधे गंध परिवर्धन ।

कमान । चार हाथ की एक माप ।

धनुष-टंकार—[सं पुं] धेनुव
टंकार । एविश वार्ग ।

धनुष की डोरी खींचने का 'टन्'
शब्द । एक रोग ।

धनुही—[सं स्त्री] लंठ-छोड़ानोकर
खेला कवा गव धेनु ।
लड़कों के खेलने का छोटा
धनुष ।

धन्ना सेठ—(सं पुं) सब धनी ।
बड़ा धनी ।

धन्या—(सं स्त्री) पत्नी, धाई वा
धाँड़ी ।
पत्नी । धाय ।

धन्वा—[सं पुं] धेनु ।
धनुष ।

धपना—[क्रि अ] तापलि बेल ।
छेकूब दिया ।
तेजी से आगे बढ़ना ।
[क्रि स] मरा, कोढ़ोरा ।
मारना । पीटना ।

धप्पड़, धप्पा—(सं पुं) टापव ।
थप्पड़ ।

धब्बा—[सं पुं] दाग, कलक,
छेका ।
दाग । कलंक ।

धमक—(सं स्त्री) धूमकट पत्रा
शब्द । श्रेष्ठावनि ।
भारी वस्तु के गिरनेका शब्द ।
चलने से या आघात आदि से
होनेवाला कम्प ।

धमकना—[क्रि अ] धूमकट पत्रा ।
विप-विप कवा । मूब विमवा ।
धमाका करना । (मिर) दर्द करना ।

धमकाना—[क्रि स] धमक दिना ।
धमकी देने हुए डराना ।

धमकी—(सं स्त्री) धमक, धमकि ।
दण्ड देने या हानि पहुँचाने का
भय दिखाना ।

धम धमाना—(क्रि अ) धूम-धूम
शब्द कवा ।

धम धम शब्द उत्पन्न करना ।

धमनी—[सं स्त्री] धमनी, गाव
तेज छला गिव । नाड़ी ।
वह नली जिसमें से हृदय का शुद्ध
रक्त निकलकर सारे शरीर में
फैलता है । नाडी ।

धमा चौकड़ी—[सं स्त्री] उथल-
नाथल । उपद्रव, डाई-उकानि ।

उछल-कूद । उपद्रव ।

धमार—[सं स्त्री] उथल-नाथल ।

होली उपद्रवत पोवा गीत ।

कुम्हा भबिदेर कुट्टेव उपवेदि

चनाकोथल ।

उछल कूद । एक प्रकारकी विशेष

कला से साधुओं का दहकती हुई

आग पर चलना । एक प्रकार का

गीत ।

धर—[वि] बगल वा शायद कर्बोता ।

बक्क ।

रखने या धारण करनेवाला ।

रक्षक ।

(सं पुं) आशय, शरीर ।

पहाड़ । शरीर ।

(सं स्त्री) शरीर, पृथिवी ।

पकड़ने की क्रिया या भाव ।

पृथ्वी ।

धरका—[सं पुं] शीशर पाँचि गाँधि

खीबिका उपार्जन कदा जाति ।

बाँसों की टोकरीयाँ बनानेवाली

एक जाति ।

धरणि, धरणी—[सं स्त्री] शरीर,

पृथिवी ।

पृथ्वी ।

धरणी-धर—(सं पुं) शेषनाग ।

शेषनाग ।

धरता—(सं पुं) शरीर, शक्ति,

काय भाव लड़ता, शरीर ।

ऋणी । किसी कार्यका भार लेने

वाला । ऋण ।

[वि] शायद कर्बोता ।

धारण करने वाला ।

धरती—(सं स्त्री) पृथिवी ।

पृथ्वी ।

धरन—[सं स्त्री] शरीर, शक्ति, काया,

चर्चा । ज्ञेय ।

धरने की क्रिया, भाव या ढंग ।

हठ । जिद । मकान का मोटा

शहनीर ।

धरना—[क्रि म] शरीर, शक्ति, काया ।

पकड़ना । ग्रहण करना । रखना ।

अधिकारमें लेना । धारण करना ।

[सं पुं] शरीर, शक्ति, काया ।

कोई भाग पूरी कराने लिये अड़

कर बैठना । [पिक्केटिंग]

धर-पकड़—(सं स्त्री) श्रेष्ठता

कदा । शरीर काय ।

अपराधी, शत्रु आदिको पकड़ने

की क्रिया या भाव ।

धरमाई—(सं स्त्री) धार्मिकता ।
धार्मिकता ।

धरमी—[वि] शरीर, धार्मिक ।
धार्मिक ।

धरपणा, धरसना—[क्रि अ]
उपभूत होना, छुट्टि होना ।
डर जाना । दब जाना ।
(क्रि स) अपमान करना । हैचि
धर ।
अपमानित करना । दबाना ।

धर-हर—(सं पुं) श्रेष्ठता का वर्ण,
धर का, धर-वर्ण ।
धर पकड़ । बीच बचाव । रोक-
थाम ।

धरहरा—[सं पुं] छूटा ।
मीनार ।

धरा—(सं स्त्री) धरा, पृथिवी ।
पृथ्वी । संसार ।

धराऊ—[वि] गँठतीरा । प्रबल ।
विशेष अवसरों के लिये सुरक्षित
वस्तु । पुराना ।

धरातल—[सं पुं] धरातलः दीर्घ
आकृष्ट तल तथा किंचित् धनता
नतका । क्षेत्रफल ।
सतह । क्षेत्रफल ।

धराशाही—(वि) धराशाही,
भूपति, शासित वाग्यि प्रवा ।
जमीन पर गिरा या लेटा हुआ ।

धरित्री—(सं स्त्री) पृथिवी ।
पृथ्वी ।

धरी—[सं स्त्री] नदी का स्रोत ।
ववशुन पानी का धार ।
नदी की धारा । पानी की धारा ।
वर्षा की झड़ी ।

धरेला [ली]—(सं स्त्री) उद्योग ।
उपपत्ती । गन्तव्य ।

धरैया—[वि] धारण करना ।
धारण करनेवाला ।

(सं पुं) शेष नाग ।
शेषनाग ।

धरोहर—[सं स्त्री] पूँछ,
आसन ।
थाती । अमानत ।

धर्मज्ञ—(वि) धर्मज्ञ, धर्म,
प्रत्यक्ष, गाय या अगाध आदि
विषय ज्ञान ।
धर्म को जाननेवाला ।

धर्मणा—(क्रि वि) धर्मज्ञ, धर्म
विचार अशुभ ।
धर्म-विचार के अनुसार ।

धर्म-ध्वज—(सं पुं) धर्म का नाग
वाहक आडम्बर देखुंदा लोक ।

धर्म आडम्बर खड़ा करनेवाला ।

धर्मनिष्ठ—(वि) धार्मिक, धर्मशील,
पूणात्मा ।

धार्मिक ।

धर्म-पत्नी—[सं स्त्री] धर्म-पत्नी,
गृहस्थिनी ।

विवाहिता स्त्री ।

धर्मपिता—(मं पुं) वापदाय
दिया पिता ।

जो वास्तविक पिता न होने पर
भी धार्मिक भाव से पिता बन
गये हों ।

धर्मपुत्र—[सं पुं] धर्मपुत्र : धर्म
बन्धन निमित्त पुत्रकल्प ग्रहण
करा ल'वा ।

जो औरस पुत्र न होने पर भी
धार्मिक भाव से किसी का पुत्र
बन गया हो ।

धर्मप्राण—[वि] धर्मप्रिय, धर्मशील ।
धर्म को प्राणों के समान प्रिय
समझनेवाला ।

धर्मराज—[सं पुं] बुद्धिष्ठि,
यमराज. धर्मपालनकारी राजा ।

युधिष्ठिर । यमराज । धर्म का
पालन करनेवाला राजा ।

धर्मशाला—(सं स्त्री) पथिक आरु
निवास्थ आश्रयक श्रुदाई-श्रुदाई
बांशिवटेल दिया घर ।

यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मार्थ
बनाया हुआ मकान ।

धर्मशाला—[वि] धार्मिक ।
धार्मिक ।

धर्म-संकट—(सं पुं) उद्भय गच्छे ।
छूटे गाँव छूटे भवि ।

उभय संकट ।

धर्मसभा—[सं स्त्री] विद्याभालय,
न्यायालय ।
न्यायालय ।

धर्मन्ध, धर्मोन्मत्त—(वि) धर्मरु,
युद्धिले नेचाई निजब धर्मदे
भाल आरु पबब धर्मक वेद्या
बुलि विश्वास करा ।

धर्म के कारण संकीर्ण आचरण
करनेवाला ।

धर्माधिकरण—[सं पुं] विद्याभालय ।
न्यायालय ।

धर्मार्थ—(क्रि वि) धर्मब अर्थ,
पदवापकावार्थ ।

धर्म के लिये या परोपकार के
लिये ।

धर्मावतार—[सं पुं] धर्मावतार,

न्याय विचारक,

लोकक शोधन कर्ता नात ।

अत्यन्त धर्मात्मा ।

धर्मासन—(सं पुं) न्यायासन ।

न्यायाधीश का आसन ।

धर्मिष्ठ—[वि] धार्मिक ।

धार्मिक ।

धर्मोन्माद—[सं पुं] धर्मोन्मादता,

निष्ठ धर्मक अति प्रबल कर्षण

विश्रांति कवि आन धर्मक लोकक

शिक्षा कर्ता ।

धर्म के नाम पर भले बुरे का

विचार छोड़ देने की मानसिक

अवस्था ।

धर्षण [सं पुं] उत्पीड़न । आक्रमण

अपमान । दवाचना । दवाना ।

आक्रमण ।

धर्षणी—(सं स्त्री) दारिद्र्यविणी ।

व्यभिचारिणी ।

धव—(सं पुं) शस्त्री, एविश गच्छ ।

पति । पुरुष । एक प्रकार का

पेड़ ।

धवरी—[सं स्त्री] बगीचाई ।

सफेद गाय ।

धवल—[वि] बर्ण, निर्मल ।

श्वेत । निर्मल ।

धवलार्द्र—(सं स्त्री) धवलि, बर्ण

बः विनिष्ट ।

सफेदी ।

धवलित—(वि) बर्ण, उज्ज्वल ।

सफेद । उज्ज्वल ।

धवलिता—(कि स) उज्ज्वलता ।

सफेदी । उज्ज्वलता ।

धवाना—(कि अ) दोबारा ।

दोहरना ।

[कि अ] क्षणित होता ।

ध्वनित होना ।

धसकना—[कि अ] हँसना ।

डिठ होना ।

नीचे की ओर धसना या बैठना ।

ईर्ष्या करना । डरना ।

धसना—(कि अ) क्षण होना ।

ध्वस्त होना ।

(कि स) क्षण कर्ता ।

नष्ट करना ।

धौधल [१]—[सं स्त्री] उत्पीड़न,

उत्पीड़न ।

उपद्रव । शरारत । स्वेच्छा-

चारिता ।

धा—(प्रत्य) ढट, निठिना ।

तरह । भाँति । (जैसे—नवधा,
बहुधा)

धाक—[सं स्त्री] अभाव, श्याति ।
रोब । ख्याति ।

धाकड़, धाकर—(क्रि म) श्याति-
वा प्रभाव शानी लोक ।

जिसकी बहुत अधिक धाक हो ।
बहुत प्रबल ।

धाकना—(क्रि अ) अभाव विस्तार
करा ।

धाक या रोब जमाना ।

धागा—(सं पुं) बट्टीया ।
बटा हुआ सूत ।

धाड़—[सं स्त्री] डकाइएतब आक्र-
मण, दल, सेना । गच्छन ।
डाढ़ । दहाड़ । डाकुओं का
आक्रमण । भुण्ड । सेना ।

धाता—[सं पुं] विशाता, अगत
बन्का आरु विशान करेता,
खन्ना, विष्णु ।

ब्रह्मा । विष्णु । महादेव ।
विधाता ।

(वि) पालक, बरकक ।
पालक । रक्षक । धारक ।

धातुपुष्ट (बर्द्धक)—(वि) एविध
उत्पन्न-वर्धन शक्ति बढ़ावब बावे ।
जिससे वीर्य बढ़े और गाढ़ा हो ।

धातृका—[मं स्त्री] धाई, धात्रा ।
दाई ।

धात्री—(सं स्त्री) धाई, लोकब
गर्भ लवा होराली आनपैचान
धवा माईकी । पृथिवी, गाई ।
माता । धाय । गंगा । पृथ्वी ।
गाय ।

धान-पान—(वि) खीन, लेबेला-
छेपेता, कोमल ।

दुबला-पतला । कोमल ।

धाना—[क्रि अ] दोबा, यज्ञ करा,
छेष्टा करि चोरा ।

दौड़ना । दौड़-धूप या प्रयत्न
करना ।

धानी—[सं स्त्री] आशान, थली,
थोका, डब्बा बेल्ल । जेवण सेउ-
जीया बड ।

स्थान । वह जिसमें कोई चीज
रखी जाय । हलका हरा रंग ।
भूना हुआ जौ या गेहूँ ।

(वि) जेवण सेउजीया बडब ।
हलके हरे रंग का ।

धानुक—(सं पुं) धनुष्यध्वज । कपाह
धुनि लेप आदि तैयार कवा
माकुह ।

धनुर्धर । धुनिया ।

धाप—(सं पुं) दूरस्थ ज्ञात-प्राग
आशानाहेल । आहल-बहल पंथाव ।
दूरी की एक नाप । लम्बा चौड़ा
मैदान ।

[सं स्त्री] तृप्ति, गन्तुवा ।
तृप्ति ।

धापना—(क्रि अ) गन्तुष्टे होवा,
दोवा ।

सन्तुष्ट या तृप्त होना । दीड़ना ।
(क्रि स) गन्तुष्टे कवा ।

सन्तुष्ट या तृप्त करना ।

धाबा—(सं पुं) याटोल वा याटोलि ।
अटारी ।

धाम—(सं पुं) घर, शरीर, मोठा,
तीर्थस्थान ।

मकान । किसी चीज के रहनेका
स्थान । शरीर । गोमा । पवित्र
तीर्थ ।

धामिन—(सं स्त्री) एविध विवाह
गाप ।

एक प्रकार का जहरीला सांप ।

धाय—[सं स्त्री] धाई, धात्री ।
दाई ।

धार—(सं पुं) बरसुण पानीव
धाव, धाव, धाव ।

वर्षा का जल । ऋण । प्रान्त ।
(सं स्त्री) पानीव अवाह, धीवण
बरसुण, अश्व-शत्रुव धाव ।
पानी का प्रवाह । जोरकी वर्षा ।
हथियार का तेज सिरा ।

धारक—(वि) धावक, आधाव कपे
धवि धाकेंठा, धाव कटेंठा ।
धारण करनेवाला । उधार लेने
वाला ।

धारणा—[सं स्त्री] धारण शक्ति,
कल्लगी, अश्वत्थ, योगीभांगर
अश्व विनय ।

धारण करनेकी क्रिया या शक्ति ।
मनमें धारण करने की शक्ति ।
याद । योगके आठ अंगों में से
एक ।

धारना—(क्रि स) धवा, ठिबाः कवा,
झापन कवा ।

धारण करना । मनमें निश्चय
करना । स्थापित करना ।

धारा—[सं स्त्री] अवाह, धाव,
नानी निछिगा देह पवा पानी वा

ववसू ।

प्रवाह । लगातार चलनेवाला
किसी बात का क्रम । विधान
आदिका विशेष या स्वतंत्र अंग ।
[अं - सेक्सन]

धारा प्रवाह—[वि] अविवाय
गति त चला ।

अविराम चलनेवाला कार्य ।

धारा-यंत्र—(सं पुं) उश्, खवणी,
छैबका, पिच्काबी ।
फुहारा । पिचकारी ।

धारा-सभा—(सं स्त्री) विधान वा
अड्डेन तैयार कबा मडा ।
विधान या कानून बनाने वाली
सभा ।

धारी—(वि) धारण करवाता,
पिक्काता, गैना, गमूह, बेथा ।
धारण करनेवाला । पहननेवाली ।
सेना । समूह । रेखा ।

धार्थ—(वि) धारण करबिनर वा लवर
योगा ।

धारण करने योग्य ।

धावक—[सं पुं] बेगते छिछि
पत्र दिछुता, दूत ।
दोड़कर चिट्ठी आदि ले जाने
वाला । हरकारा ।

धावन—[सं पुं] दूत ।

दूत । धो कर साफ करना । वह
जिससे कोई चीज साफ की जाय ।

धावा—[सं पुं] आक्रमण, युद्ध,
धोव ।

आक्रमण । दोड़ ।

धाह—(सं स्त्री) छिछवि छिछवि
कन्ना ।

जोरसे चिल्लाकर रोना ।

धिक् [क], धिक्कार—(सं स्त्री)
धिक, धिकाव, धिकाव ।

तिरष्कार या घृणा व्यंजक
शब्द । लानन ।

धिकना—[क्रि अ] तथु वी गवम
होवा । तप्त होना ।

धिय (१), धोय (१)—(सं स्त्री)
झी, होवानी ।

पुत्री । लड़की ।

धिराना—(क्रि स) आश्वास दिया ।
धमक दिया ।

आश्वासन देना । धमकाना ।

[क्रि अ] लेशम होवा,
धैर्य धरा ।

धीमा पड़ना । धैर्य रखना ।

धींग, धींगड़ा (रा)-(सं पुं)

शूरे-भूटे ।

हट्टा-कट्टा । बदमाश । पापी ।

धींगा-धींगो, धींगा-मुस्तो-(सं स्त्री)

दण्ड-दण्डि ।

अनुचित बल प्रयोग या दबाव ।

जबर्दस्ती ।

धी—(सं स्त्री) बुद्धि, मन । धी ।

बुद्धि । मन । बेटी ।

धीजना—(क्रि स) स्वीकार कबा

वा अस्वीकार कबा ।

ग्रहण, स्वीकार या अंगीकार करना ।

(क्रि अ) शैर्ष्य श्वा, गन्धुष्टे

शेबा, गान्धु शेबा ।

धीरज धरना । सन्तुष्ट होना ।

स्थिर या शान्त होना ।

धीमा—(वि) लाट्ट लाट्ट, मद्धर ।

मन्द गतिवाला । मन्द ।

धीमान्—[सं पुं] बुद्धिमान ।

बुद्धिमान ।

धीरक, धीरज—[सं पुं] शैर्ष्य ।

धैर्य ।

धीरना—(क्रि अ) शैर्ष्य श्वा ।

धैर्य धारण करना ।

(क्रि स) शैर्ष्य श्वा ।

धैर्य धारण करना ।

धीर-ललित (सं पुं) बःछडिआ ।

सदा बना ठना और प्रसन्न रहने वाला ।

धीरा—(सं स्त्री) नायिका एविध

डेड ।

नायिका का एक भेद ।

[वि] धीर, मद्धर ।

मंद । धीमा ।

धीरोदात्त—(सं पुं) दयालू, बलवान,

धीर आरु योक्ता नायक ।

दयालू, बलवान्, धीर और

योद्धा नायक ।

धीवर—[सं पुं] माष्ट मबीमा,

डोम ।

मछुवा । मल्लाह ।

धुंगार—(सं स्त्री) गन्धार दिवा ।

बघार । छोक ।

धुंध—(सं स्त्री) धुवनौ-कूडनी,

छकूब एविध बोध ।

घूल या भाप के कारण होनेवाला

अँधेरा । आँख का एक रोग ।

धुँधला—[वि] अन्ध, यककाब

पूर्ण ।

कुछ काला या अन्धेरा सा ।
अस्पष्ट ।

धुँधाना धुँधुआना, धुँधुवाना—
(क्रि अ) धोबीं दिया, अन्धेरा
होना ।

धुआँ देना । धुँधला होना ।

[क्रि स] कोनो वस्तु
धोबीं लगाव ।

किसी चीज में धुआँ लगाना ।

धुँधुरि—(सं स्त्री) धूलो कूबली ।
गंद गुबार या धुँए से होनेवाला
अंधेरा ।

धुआँ, धूआँ—(सं पुं) धोबीं,
धूल ।

धूम । उमड़ता हुआ भारी समूह ।

धुआँना—[क्रि अ] धोबीं लगा ।
धुआँ लगने के कारण पकवान का
स्वाद बिगड़ जाना ।

धुआँयँध—(सं स्त्री) धोबीं
पट्टे गोरू । उगाव ।

धूएँ की सी गंध । अपचमें आने
वाला डकार ।

धुकड़-पुकड़—(सं स्त्री) डेकभुकल ।
भय के कारण धबराहट । आगा
पीछा ।

धुकधुकी—(सं स्त्री) धप-धपनि ।
भय के कारण हृद स्पन्दन ।
एक प्रकार का गहना ।

धुकना—[क्रि अ] नठ होना । पवि-
योत्रा । जपि उठ ।
नीचे झुकना । गिर पड़ना । झप-
टना ।
(क्रि स) धोबीं दिया ।
धूनी देना ।

धुकरना, धुकरना—(क्रि अ)
गल थकावी मरना ।
जोरसे शब्द करना ।

धुड़गा—[वि] धूलि-धूलवित ।
जिसके शरीर पर कोई वस्त्र
नहीं, धूल ही हो ।

धुतकार—(सं स्त्री) धिक्कार ।
धिक्कार । 'दुत्' कर भगा देना ।

धुधुकार [सं स्त्री] खोदबे
शक कबा ।
जोर का धू धू शब्द ।

धुन—(सं स्त्री) एकाग्रता । जंकर ।
लगन । उत्कट अभिलाषा ।

धुनकी—(सं स्त्री) कपाश धूना
ठाँठ वा धेशू ।
धुनियों की वह ममान जिससे वे
रूई धुनते हैं ।

धुमना—(क्रि स) कपाड़ धूना ।

अन्नाधिक गवा । आनन कथा
शूशुनि निश्चय कथाके कै
बोवा ।

धुनकी की सहायता से रूई में से
बिनीले अलग करना । खूब
मारना पीटना । दूसरे की बात
बिना मुने अपनी बात कहते
जाना ।

धुनियाँ—[सं पुं] धूमकब ।

वह जो रूई धुननेका काम करता
हो ।

धुनी—[सं स्त्री] नदी । गन्नागौर
धूनि । नदी । धूनी ।

धुप-धूप—(वि) पबिकाब, उज्जल ।
साफ । उज्ज्वल ।

धुमिलाना—[क्रि अ] मोटा गवा ।
धूमिल होना । काला पड़ना ।

धुरंधर—(वि) डार लड़ता, श्रेष्ठ,
अधीन ।

मार उठानेवाला । श्रेष्ठ ।
प्रधान ।

धुर—(सं पुं) गाड़ीब धूवा, गैर-
बिन्धू । आरखनि ।

गाड़ी का धुरा । शीर्ष या उच्च

स्थान । आरम्भ ।

(अव्य) गच्छवा, गच्छवा ।

बिलकुल ठीक या ठिकाने तक ।

[वि] अद्भुत, पोणे पोणे ।

बहुत दूर ।

पक्का । दृढ़ । सीधे । बहुत दूर ।

धुरना—(क्रि स) गवा । बखोवा ।
मारना । बजाना ।

धुरा—(सं पुं) गाड़ीब धूवा ।

गाड़ी में वह लोहे का डण्डा

जिसमें पहिये लगे रहते हैं ।

अक्ष । (सं स्त्री-धुरी)

धुरीण—(वि) अग्र्य । मानिइ लड़ता ।

बोझ सम्भालनेवाला । मुख्य ।

धुरंधर ।

धुरेटना—(क्रि स) धूलिबे
गानि दिना ।

धूल से लपेटना । मारना ।

धुरा—(सं पुं) धूलि, बालि, गुड़ि ।

धूल । चूर्ण ।

धुलना—(क्रि अ) धोवा ।

पानी से साफ किया जाना ।

धुलाई—[सं स्त्री] धोवाव वान ।

धोने का काम या मजदूरी ।

धुम्स—(सं पुं) दग्ध, टिला, नदीब
वाक ।

दूह । टीला । नदी का बांध ।

धुंसा—[सं पुं] डेलव चानव,
धुंसा वा शठा ।

ऊनकी मोटी लोई या चादर ।

धूसना—(क्रि अ) डांडबटोक शक
करा ।

जोर का शब्द करना ।

धूआँधार—(वि) धोआवे ठाकि
शवा । खुब ज़ावेवे । भीषण ।

धुएँ से भरा हुआ । गहरे काले
रंग का । बहुत जोर का । घोर ।
(क्रि वि) खुब बेचिटेक, खुब
वेगेवे ।

बहुत अधिक या बहुत जोर से ।

धूँई, धूनी—(सं स्त्री) गुग्गुल,
धूना आदिव धोआ । धूनि
(गन्नागीब) ।

गुग्गुल आदि सुगंधी द्रव्य जलाकर
निकाला गया धूआँ । माधुओ के
तापने की आग ।

धूजना—[क्रि अ] लबचब होआ ।
हिलना । काँपना ।

धूत—(वि) लबचब करि शका । अथवा
कम्पित । एबा, चाबिओ पिनव
परा वक करा यथवा आठुबि
शका, छुष्ट, छडुव ।

हिलता या काँपता हुआ । छोड़ा

हुआ । चारों ओर से हका या
घिरा हुआ । धूर्त । चालाक ।
दगाबाज ।

धूतना—[क्रि अ] धूर्तानि करा ।
धूर्तता करना ।

धूताई—(सं स्त्री) धूर्तता ।
धूर्तता ।

धू धू—[सं पुं] झुई डलाव शक ।
आग के जलने का शब्द ।

धूप—(सं पुं) सुगंधि धोआ ।
सुगन्धित धूम ।

(सं स्त्री) बंद । धूप ।
घाम । एक गन्ध द्रव्य ।

धूप-छाँह—(सं स्त्री) एके ठाईठे
बेलग बेलग बड येन देखी
एबिध बडियाल कापोब ।
केठियावा बंद आक केठियावा
छँ गा ।

एक प्रकार का रंगीन कपड़ा
जिसमें एकही स्थान पर कभी
एक रंग दिखाई पड़ता है, कभी
दूसरा । कभी धूप कभी छाया ।

धूपदान—[सं पुं] धूपधाव ।
धूपनानि ।

धूप या गंध द्रव्य जलानेका पात्र ।

धूपना—(क्रि अ) धूप अथवा तेने
कोनो खूगकि द्रव्य जलाई
धोवागन कबा । दोन ।
धूप या कोई गन्ध द्रव्य जलाकर
उसका धुआँ उठाना । दौडना ।
हैरान होना ।

[क्रि स] धूप जलाई
छाबिओकाले खूगकि कबा ।

धूप जलाकर वातावरण सुवा-
मित करना ।

धूम—[सं पुं] उगार, धूमकेतु ।
अपच से उठनेवाला डकार ।
धूमकेतु ।

[सं स्त्री] उगार, बमक-खमक,
उगार, कोलाहल, श्रांति ।
हलचल । उपद्रव । ठाट बाट ।
समारोह । कोलाहल । ख्याति ।
(वि) धोवाव निठिना, अगाव,
मिछानिठि ।

धूएँ की तरह का । जिसका
कोई आधार न हो । भूठ-भूठ का
और निस्सार ।

धूम-केतु—(सं पुं) धूमकेतु ।
पुच्छल तारा । अग्नि ।

धूम-धाम—(सं स्त्री) उगार,
खमक-खमक ।

समारोह । ठाट-बाट ।

धूम-धामी—[वि] धूमधाम नवा,
छूटे, उपद्रवी ।
जिसमें धूमधाम हो । नटखट ।
उपद्रवी ।

धूम-पट—(सं पुं) धूमकेतु
गैरु गकलक नुकुवानटेल
धोवावे गका आँव अथवा
पदार्थ ।

युद्ध क्षेत्र में सेना को छिपाने के
लिये धूएँ से की जानेवाली आड
या परदा ।

धूमिल—(वि) क'ला, धोवावबगैया,
अच्छा ।
धूएँ के रंग का । काला ।
धुबला ।

धूम्र—(सं पुं) धोवाँ ।
धूआँ ।

(वि) धोवा बगैया ।
धूएँ के रंग का ।

धूर—(सं स्त्री) धूलि ।
धूल ।

(सं पुं) एलोटा (धुब)
जमीन की एक माप ।

धूर-धुरेटा—[सं पुं] धूलि नालिबे
ठवा ठाँडे ।

वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो ।

[वि] धूलिदेव लागि थका ।
धूलमें लिपटा हुआ ।

धूर्जटि—(सं पुं) महादेव, शिव ।
महादेव ।

धूल, धूलि—[सं स्त्री] धूला, बालि,
गायाना वज्र ।
रज । गर्द । तुच्छ वस्तु ।

—छड़ना—नष्ट होना, जेउति
नाइकीया होना ।
—बरबादी होना । चमक नष्ट
होना ।

—छड़ाना—बदनाम कर्ना ।
बदनामी करना ।

—फाँकना—बेया पबिश्चित्त ईकाले
गिकाले घुबि कुवा ।
मारा मारा फिरना ।

—में मिलना—विनष्ट होना ।
चोपट या नष्ट होना ।

धूसर, धूसरित—[वि] धुसब,
धुगबित, मलिन ।

मटमैला । धूल के रंग का ।
धूल से लिपटा ।

धृति—(सं स्त्री) मनन दृढ़ता, धैर्य ।
धारण करने या पकड़ने की
क्रिया । मनकी दृढ़ता । धीरज ।

धृती—[वि] धीव, धीबवान, धैर्य-
वान ।

धीर । धैर्यवान ।

धृष्ट—[वि] निमाष, उद्धत ।
निलज्ज । उद्धत ।

धेनु—[सं स्त्री] गक (माइकी) ।
गाय ।

धेरी—(सं स्त्री) जीयाबी ।
बेटी ।

धोंघा—[सं पुं] कूकप, गाँठि
लगा ।

बेडोल या मिट्टी आदिका लोदा ।
(वि) मूर्ख, अशुद्धि ।

मूर्ख । बे-ढंगा ।

धोंधा-बसन्त—(सं पुं) मशामूर्ख ।
निरा मूर्ख ।

धोखा—[सं पुं] छल, कँकि,
वाञ्छि, चबाइक डग धुवावलै
थेति पथानत कवि धोवा मूर्ति
आदि, बेचनेबे ठेगानी एविध
याङ्ग ।

छल । दगा । भुलावा । भ्रान्ति ।
भ्रम उत्पन्न करनेवाली बात या
वस्तु । अज्ञानतासे होनेवाली भूल ।
जोखिम । चिड़ियों को डराने के
लिये खेत में खड़ा किया हुआ

पुतला । बेसन का एक प्रकार का पकवान ।

धोखेबाज—(वि) धूर्त, कपटी । कपटी । धूर्त ।

धोती—(सं स्त्री) धूँठी, चूबिया । एक प्रकार पहनने का वस्त्र ।

धोना—(क्रि स) धोना । पानी में प्रक्षालित करना । दूर करना ।

धोपना—(क्रि स) नाब पिटे कबा । मारना-पीटना ।

धोब—(सं स्त्री) धोना काम । धोये जाने की क्रिया ।

धोबी—(सं पुं) धोना । कपड़ा धोने का काम करनेवाला ।

—का कुत्ता—यकागिला बाल्लि । निकम्मा आदमी ।

धोवन—(सं स्त्री) धोना काम, कौनो वस्तु धोनाब पिछ्त बै योना पानी । धोने की क्रिया या भाव । किसी चीज को धोने से निकला या बचा हुआ पानी ।

धोवाना—(क्रि स) धोना । धुलना ।

[क्रि अ] धोवा होवा । धोया जाना ।

धौ—(अव्य) नेजानेँ । किय? ये, यथवा, डेने, वारु । न जाने क्या । कि, या । तो, भला ।

धौकना—(क्रि स) झूई जलावब बावे फुडरा, उपरबत धोवा, शास्ति दिया । आग सुलगाने के लिये भाथी से हवा देना । ऊपर डालना । दण्ड आदि देना ।

धौकनी—(सं स्त्री) भाती । भाथी ।

धौजना—[क्रि अ] लवा-ठपवा कबा । दीड़ धूप करना । (क्रि स) डबिरे गच्छा । पैरों से कुचलना ।

धौताल—[वि] बड्डिराल, साहसी, बलवान (बेरा कामत) उपपत्नी । फुरतीला । साहसी । हेकड़ । उपद्रवी ।

धौस—[सं स्त्री] धमक, प्रभाव । धमकी । धाक । भाँसा पट्टी ।

धौसना—[क्रि स] शयक दिया, नाव
 सब कबा, दमन कबा ।
 धमकाना । मारना—पीटना ।
 दमन करना ।

धौसा—[सं पुं] नागेश्वर, गायत्री ।
 नगाड़ा । सामर्थ्य ।

धौत—[वि] परिवर्द्धाव भावे
 शोध, उच्छेद ।
 धोया और साफ किया हुआ ।
 सजाला ।
 (सं पुं) कप ।
 चांदी ।

धौरा—[वि] वंश ।
 सफेद ।
 (सं पुं) वंश बलद, पंजुक
 नायब छाई ।
 सफेद बैल । पंडुक पक्षी ।

धौरी—[सं स्त्री] वंश ग्राई, एविष
 छाई ।
 सफेद गाय । एक प्रकारका पक्षी ।

धौल—[सं स्त्री] लोकचान, मूबत
 काकृत अथवा पिठित मबा मार ।
 सिर कंधे अथवा पीठ पर लगने
 वाला थपड़ । नुकसान ।
 [वि] वंश ।
 सजला । सफेद ।

धौला—[वि] वंश ।
 सफेद ।

ध्याता—[वि] ध्यान करवाता ।
 ध्यान करने या लगानेवाला ।

ध्यान—(सं पुं) ध्यान (मानसिक
 अश्रुति विशेष)
 मानसिक अनुभूति । किसी के
 चिन्तन में मन के लीन होने का
 भाव ।

—**दिलाना**—आडू लिखाई दिया, उद्देश-
 कियाई दिया, मनत कबि दिया ।
 चेताना । सुमाना ।

—**पर चढ़ना**—मगत पंवा, श्रवण कबा ।
 स्मरण कराना ।

ध्याना—[क्रि स] ध्यान करवावा ।
 ध्यान कराना या लगाना ।

ध्येय—[वि] ध्यानव योग्य, उद्देश्य ।
 ध्यान करने योग्य । उद्देश्य ।

धुव—[वि] शिव, अचल ।
 स्थिर । अचल । निश्चित ।
 [सं पुं] आकाश, पांशव, एक-
 प्रकारका नाकव गहना, अथ
 नक्कड़, पृथिवीव उल्लव आकर
 दक्षिण गौश । मेरु प्रदेश ।

आकाश । कील । पहाड़ । उत्तर
आकाश का एक तारा । पृथ्वी के
उत्तरी और दक्षिणी सिरे ।

ध्रुवीय—(वि) ध्रुव मयक्रीय, मेक
अक्ष ।

ध्रुव सम्बन्धी । ध्रुव प्रदेश का ।

ध्वंसक—(वि) नाश करनेवाला ।
नाश करनेवाला ।

ध्वंसन—[सं पुं] क्षय, विनाश,
भङ्ग-छिन्न ।

क्षय । विनाश । तोड़ फोड़ ।

ध्वंसावशेष—(सं पुं) क्षयशेष ।
खंडहर ।

ध्वज—(सं पुं) प्रताका, चिह्न,
क्षव ।

पताका । चिह्न ।

ध्वजा—(सं स्त्री) ध्वजा, प्रताका ।
झण्डा ।

ध्वनि—(सं स्त्री) शब्द, श्रुति ।

आवाज । गूढ़ अर्थ या भाव ।

ध्वनि क्षेपक यंत्र—[सं पुं] गैर-

फोफोन, शब्द दूबटेल प्रतिष्ठित

यंत्र । ध्वनि को दूरतक फैलाने-

वाला एक यंत्र । (अ-माइक्रोफोन)

ध्वनित—(वि) श्वनित, निगमित ।

शब्दसे युक्त । व्यंजित । धादित

ध्वन्य'त्मक—[वि] श्वनि युक्त,

वाक्क'र्थ प्रधान, श्वन्याग्र ।

ध्वनि युक्त । जिसमें व्यंग्यार्थ

प्रधान हो ।

ध्वन्यार्थ—(सं पुं) वाक्क'ग शक्तिसे

उत्पन्नार्थ ।

व्यंजना शक्ति से निकलनेवाला

अर्थ ।

ध्वान्त—(सं पुं) अकाल ।

अन्धेरा ।

ध्वान्तचर—[सं पुं] वाक्क'ग ।

राक्षस ।

न

न—वाक्छन वर्णव कुबि गन्ध्याव आथव ।
देवनगरी वर्णमाला का बीसवाँ
वर्ण ।

(अव्य) नश्य, निवेश अर्थत ।
“नहीं, मत । या नहीं ।

नंगा धड़ंग—(वि) सम्पूर्ण उलछ ।
बिलकुल नंगा ।

नंगा—[वि] नाड्ड, आवरण बहित,
निगाछ ।

वस्त्र हीन । जिसके ऊपर कोई
आवरण न हो । निर्लज्ज ।
लुच्चा ।

नंगा झोली—(सं स्त्री) नुकाई
बधा वख्त बिचावि पिक्कि थका
कानि-कापोब आदि तालाच
रुबा ।

पहने हुए कपड़ों की तलाशी ।

नंगा नाच—[सं पुं] निगाछ आवे
दोषपूर्ण अमृात काम रुबा ।
बहुत ही निर्लज्जता पूर्वक और

बिलकुल मनमाने ढंगसे दोषपूर्ण
अनुचित कार्य करना ।

नंद—(सं पुं) आनन्द, परमेश्वर,
विष्णु, पुत्र, कृष्ण पालक पिता,
एकन बच्चा विशेष ।
आनन्द । परमेश्वर । विष्णु ।
बेटा । कृष्ण के पालक पिता ।

नन्दन—(सं पुं) पुत्रेक, ईल्लर
बागिछा, शिव, विष्णु, मेघ ।
पुत्र । इन्द्र का उपवन । शिव ।
विष्णु । मेघ ।
[वि] आनन्द दिउँता ।
आनन्द देनेवाला ।

नन्दना—(क्रि स) आनन्दिठ रुबा ।
आनन्दित करना ।
(क्रि अ) आनन्दिठ होरा ।
आनन्दित होना ।
(सं स्त्री) झी ।
बेटी ।

नन्दा—(सं स्त्री) दूर्गा, कामधेइ,
सम्पडि, ननद ।

दुर्गा । कामधेनु । सम्पत्ति ।

ननद ।

[वि] आनन्द मिठता (श्री) ।

आनन्द देनेवाली ।

नंदित—(वि) आनन्धित, निना-
मिठ ।

आनन्दित । बजता हुआ ।

नंदिनी—[सं स्त्री] जी, दुर्गा,
गङ्गा, ननद, प्रज्ञा, वशिष्ठ मुनि
कामधेनु ।

बेटी । दुर्गा । गंगा । ननद ।

पत्नी । वसिष्ठ की कामधेनु ।

नंदी—(सं पुं) शिव बाहन वनदटो,
शिव गण (नन्दी), विश्व ।

शिव का बैल । शिव का गण ।
विष्णु ।

(वि) आनन्दपूर्व ।

आनन्द युक्त ।

नंदोई, ननदोई—(सं पुं) ननद
गिरीदेवक ।

ननद का पति ।

नंदरदार—(सं पुं) गाँव मुखी-
ग्राम बाहि, (गौंडूठा) ।

गाँव का मुखिया ।

नंदरदार—[क्रि : वि] गंधार

कुमारगिरि ।

संख्या के क्रम से ।

नन्दरी चोर—(सं पुं) डाँड
आरु अगिस्त चोर ।

बहुत बड़ा और प्रसिद्ध चोर ।

नन्दरी नोट—[सं पुं] ए
अथवा ऐराठके बेछि टकार
नोटे ।

सौ रुपये या इससे अधिक का
नोट ।

नई(थी)—(वि) नडुन(श्री), नीतिज्ञ ।
नीतिज्ञ । 'नया' का स्त्री लिंग ।

[सं स्त्री] नदी ।

नदी ।

नक-कटा—(वि) नाक-कटा,
निनाक ।

जिसकी नाक कटी हो । निर्लज्ज ।

नकषिसनी—(सं स्त्री) अपराध
क्षमा कबितेन अथवा कोनो
काम कबितेन करी माग्नय
आर्धन ।

अपराध क्षमा कराने या कोई
काम कराने के लिये दीनतापूर्वक
प्रार्थना करना ।

नकटा—[स पुं] उड़व भावव
 एकप्रकार विषा नाश । याव
 नाकटो को ।
 विवाह आदिके अवसर पर गाया
 जानेवाला एक प्रकारका गीत ।
 जिसकी नाक कटी हो ।

नकद, नगद—(सं पुं) नगद ।
 वह धन जो सिक्कों के रूपमें हो ।
 (बि) गमुथत अन्वा अखुत
 धन । डाल ।
 जो तैयार या नामने हो (रुपया),
 बढिया ।
 (क्रि वि) वखव गननि दिय
 नगद धन ।
 सामान के बदले में तुरन्त दिया
 हुआ रुपया । 'उधार' का
 उलटा ।

नकदी, नगदी—(क्रि वि) मुद्रा
 शिछावे, नगद-नगद ।
 नगद या सिकके के रूप में ।

नकना—(क्रि स) आवहोवा, भाग
 कवा ।
 लाधना । त्यागना ।
 [क्रि अ] बिबळ होवा,
 शायबान होवा ।
 नाक में दम होना । हैरान होना ।

नकब—(सं स्त्री) गिद्धि ।
 संध ।

नकवानी, नकवानी—(सं स्त्री)
 बिबळि, शायबान ।
 नाकमें दम । हैरानी ।

नकबेसर—[सं स्त्री] गरु नाक-
 छोटो (नाकव गरु अनरकाव)
 छोटी नथ ।

नकल नबास—(सं पुं) नकल
 गविठ ।
 या हमरा के लेलो आदि की
 नकल करता हा ।

नकली—[वि] नकली, अवाशुव,
 आचलव बिअदी । डाल । कृत्रिम ।
 नकल करके बनाया हुआ । बना-
 वटी । जाली ।

नकसा, नकशा—(सं पुं) छिड,
 आकृति, यवस्था, गौठ नागछिड ।
 रेखा चित्र । आकृति । ढंग ।
 अवस्था । सावा । मानचित्र ।

नकसीर—(सं स्त्री) नाकव
 एविश वेशाव ।

नाक के एक प्रकार का रोग ।

नकाब—(सं स्त्री) मुथा, मुथ छाकि-
 बटेल बावशान कवा काटोव,
 अबनि ।

चेहरा छिपाने के लिये उसपर
डाला कपड़ा । धूँधट ।

नकाबपोश—(सं पुं) मुखी भिक्षा ।
जो नकाब पहने हुए हो ।

नकारना—[क्रि अ] अस्वीकार
करा । नां-करा ।
अस्वीकृत करना ।

नकारात्मक—(वि) निवेषात्मक ।
जो बात न मानी गयी हो या
जो करने से इन्कार किया गया
हो ।

नकाशना—[क्रि स] धातु, गिल,
आदि काटि छिद्र अंका ।
धातु, पत्थर आदि खोदकर चित्र
आदि बनाना ।

नकियाना—(क्रि अ) नाक मत्ता,
नाकदेव उल्लास करवा, नक्की
खूब ।
शब्दों को अनुनासिक उच्चारण
करना ।

[क्रि स] खूब दिग्गम्भीर किया ।
बहुत परेशान करना ।

नक्कीब—(सं पुं) छाबण । डाँट ।
भाट ।

नकैल—[सं स्त्री] नाक (ऊँच
नाकठ लगीवा खबी)
ऊँट, बैल आदि की नाक में
पिरोई रस्सी ।

नकारखाना—(सं पुं) नागवरा
बखोवा स्थान । नश्वत बखोवा
स्थान ।
वह स्थान जहाँ नगाड़ा बजता
हो ।

नकारखाने में तूती की आवाज—
डाँडवर आगत क्रूरलोकब सुनिब
नलगा कथा ।
बड़ो बड़ों के मामले छोटों की
न सुनी जानेवाली बात ।

नकाल—[सं पुं] नकल कर्बोता,
बहुरा ।
नकल करनेवाला । भाँड़ ।

नकाशी [नकाशी]—(सं स्त्री)
धातु, काँटि, गिल आदि काटि
अंका नागा छिद्र आदि, अलग-
विशेष छिद्र कला ।
धातु, काठ, पत्थर आदि पर
खोदकर चित्र आदि बनाने की
कला । खोदकर बनाये हुए चित्र
या बेल बूटे ।

नक्की—[वि] अंका, दृढ़, निश्चित ।
पक्का । दृढ़ । निश्चित ।

[सं स्त्री] गौतमोदा गमयत
उलोदा नाकी-खर ।

गाने में नाक से स्वर निकालने
का ढंग ।

नक्कू—(वि) डाँडर नाक थका,
निखके खुब बेग़ा उवा ।

बड़ी नाक वाला । अपने आपको
बहुत बुरा समझनेवाला ।

नक्क—(सं पुं) मगर । षड़िगाल ।
'नाक' नामक जल जन्तु । मगर ।

नक्कश—(वि) उच्छिन्न, छिन्न,
लिखित ।

अंकित, चित्रित या लिखित ।

[सं पुं] छवि, चित्रकारी,
ताविष ।

तस्वीर । वेल् बूटे । छाप ।
ताबीज ।

नक्कशा-नसबी—[सं पुं] चित्र
आकौता ।

नक्कशा बनाने या अंकित करने
वाला ।

नक्कत्री, नछत्री—(सं पुं) छत्रमा ।
चन्द्रमा ।

(वि) भाग्यवान् ।

भाग्यवान् ।

नख—(सं पुं) नख, खड्ग, एविव
शक्ति वस्त्र ।

नाखून । खण्ड । एक गंध द्रव्य ।

[सं स्त्री] छिला उलोदा नूता
वा खबी ।

गुड़ी उड़ानेकी डोर ।

नखत [ट]—[सं पुं] नखत्र, तबा ।
नक्षत्र । तारा ।

नखना—(क्रि अ) छपियाई पाब
करोदा ।

लांघकर पार किया जाना ।

[क्रि स] छपियाई पाब होदा,
गटे कबा ।

लांघकर पार करना । नष्ट करना

नखरा, नखरा-तिल्ला—(सं पुं)

काबोवाक आनलित वा आक-
षित कबिबटेल अथवा अश्वीकृति
नाईवा विनयनीलता देखुदाबटेल
कोनो नाबीये नाईवा नाबीव
निछिना कबा छेष्टा वा भाव,
नखरा ।

किसी को रिझाने या झूठमूठ
अपनी अस्वीकृति या मुकुमारता
सूचित करने के लिये स्त्रियों की
अथवा स्त्रियों की सी चेष्टा ।

नखरीला, नखरे बाज—(वि)
निश्चिन्निहि तोनाटमाद कबितेल
छेटी कबोता ।

बहुत नखरा करनेवाला ।

नखशिख—(सं पुं) नख पत्र
निशितेल कप मोन्दर्या ।

नख मे शिख तक के सब अंग ।

नखास - [सं पुं] जम्बु विक्री कवा
बखाव ।

पशुओं, खाम कर घोड़ो के विकने
का पाजार ।

नखियाना—[क्रि स] नख बह उवा ।
नाखून गडाना ।

नखी—[सं पुं] नीपल नख थका
जह, नृगिन्ध ।

लम्बे नाखून वाले जानवर ।
नृसिंह ।

नखोटना—(क्रि स) नखदेव आँटोवा ।
नाखूनो से खरोंचना ।

नग—[सं पुं] नखत, ब्रह्म, गौप,
श्रृंग, गन्धा, बन्धोया मृत्वा-
वान पीरब ।

पर्वत । वृष । साँप । सूर्य ।
संख्या । चमकने वाले जड़ाऊ
पत्थर ।

नगपति—(सं पुं) शिवाल, शिव, श्रुमेरु ।

हिमालय । शिव । सुमेरु ।

नगमा, नगमा—[सं पुं] गन्धर्व,
बाध ।

मंगीत । राग ।

नगरपाल—[सं पुं] नगपालिका
यशिकादी ।

नगर की रक्षा करनेवाला
अधिकारी ।

नगरपालिका—[सं स्त्री] नग
पालिका (निनिनिपालिनि)
नगर की सफाई, पानी आदि की
व्यवस्था करनेवाली नागरिकों
द्वारा चुने हुए सदस्यों द्वारा
बनी हुई संस्था । (अं—म्युनि-
सिपैलिटी)

नगराई—[सं स्त्री] नागरिकता,
छतुबालि ।

नागरिकता । चतुराई ।

नगला—(सं पुं) गरु प्राँउ, दूवा ।
छोटी बस्ती । गांव ।

नगाड़ा—(सं पुं) नागवा ।
डका ।

नगाधिप, नगेन्द्र, नगेश—(सं पुं)
शिवाल, श्रुमेरु पर्वत ।
हिमालय । सुमेरु पर्वत ।

नगीना—[सं पुं] बड़ ।

रत्न ।

नचना—(क्रि अ) नचा ।

नाचना ।

(वि) नचा अथवा अङ्ग

चालना कवा ।

नाचने या अङ्ग हिलानेवाला ।

नचनियाँ—(सं पुं) गर्भक, गट्टी ।

नर्सक ।

नचाना—(क्रि स) गट्टी, कोनो

बस्त हातत लै धूबोवा, काम

करिबलै कोनो व्यक्ति बारे

बारे पठिओवा अथवा विवरु

कवा ।

किसीको नाचने में प्रवृत्त करना ।

कोई चीज हाथमें लेकर इधर

उधर घुमाना । किसी को कोई

काम करने के लिये बारबार

दोड़ाना या तंग करना ।

नक्षत्र—[सं पुं] नक्षत्र ।

नक्षत्र ।

नज्जदीक—[वि] उचित ।

निकट । पास ।

नजर—[सं स्त्री] दृष्टि, कृपादृष्टि,

छक्का दिया, ध्यान, नज्ज लगा,

उपलोकन ।

दृष्टि । कृपादृष्टि । निगरानी

ध्यान । परख । दृष्टि का बुरा

प्रभाव । भेंट । उपहार ।

नजर बन्द—(वि) अन्तर्बीन ।

पहरे के अन्दर रखा हुआ ।

(सं पुं) डेक्कियाजी आदि

खेल ।

जादू आदि का खेल ।

नजरा—(वि) यिसे देखिलेई

डाल बेया बस्त छिनि पाय ।

जो देखने ही अच्छी या बुरी

चीज पहचान ले ।

नजराना—(क्रि स) नज्ज

लगाओवा ।

नजर लगाना ।

(क्रि अ) नज्ज लगा ।

नजर लगाना ।

(सं पुं) उपहार, उपलोकन,

पाओवा ।

भेंट । उपहार । पगड़ी ।

नजला—[सं पुं] पानी लगा

[बेयाब ।]

जुकाम । सरदी ।

नज्जकत—(सं स्त्री) सुकुमारता ।

सुकुमारता ।

नजीक—[क्रि वि] ठीक ।
निकट ।

नजीर—(सं स्त्री) उदाहरण ।
उदाहरण ।

नट—[सं पुं] नट, नाटक का पात्र,
खेल-तमाशा देखने वाला जाति
विशेष ।

नाटक का पात्र । खेल तमाशे
दिखानेवाली एक जाति ।

नटई—(सं स्त्री) गल, गलत
दिशा बर्णना ।

गरदन । गले की घंटी ।

नटखट—(वि) शूरे, चतुर ।
पाजी । चालाक ।

नटना—(क्रि अ) अभिनय करना,
शौकाव कवि आदिगण ।
अभिनय करना । नाचना । कह
कर मुकर जाना ।

नट नागर—[सं पुं] कृष्ण, नीला
कपड़े । तागकल भित्तवत श्रेष्ठजन ।
लीला करनेवालों में श्रेष्ठ, कृष्ण ।

नटनी, नटिन—(सं स्त्री) नाचनी,
नटे जाति का तिरवाता ।
नटकी या नट जातिकी स्त्री ।

नटराज, नटेश—(सं पुं) शिव,
नटवाङ्मय ।
शिव ।

नटवर—[सं पुं] कृष्ण ।
कृष्ण ।

नटी—[सं स्त्री] नटे जाति का
तिरवाता, नाचनी, अभिनेत्री ।
नट जाति की स्त्री । नर्तकी ।
अभिनेत्री ।

नत—(वि) यवगत; बेका टोढ़ा,
नत ।
भुका हुआ ।

नतमस्तक—(वि) मूव टोढ़ा है,
नतमस्तक ।

जिसका सिर किसीके आगे
भुका हो ।

नतर [रु]—(क्रि वि) गश्न,
अनाथा ।
नही तो । अन्यथा ।

नति—[सं स्त्री] नति, मूव टोढ़ा
कार्या, अनाथ, विनय ।

‘नत’ होने की दशा । भुकाव ।
प्रणाम । विनय ।

नतोजा—[सं पुं] फल, परिणाम ।
फल । परिणाम ।

ननु—(क्रि वि) नष्टन ।

नहीं तो ।

नस्थी—(सं स्त्री) गन्ध, गन्ध
कागज पत्र ।

संलग्न । संलग्न कागजों का
समूह ।

नय—(सं स्त्री) नाक की चिन्ता
एवम् अनन्त ।

नाक में पहनने का एक गहना ।

नयना—(सं पुं) नाक के आगे भाग
(नाक के आगे)

नाक का अगला भाग ।

(क्रि अ) नाक को छूटा कर,
गन्ध होना वा कर्मा ।

नष्ट होना या नाश जाना ।
छेदा जाना ।

नयना—(क्रि अ) अक्षर पत्र पर
करा, हेतुनिष्ठ, गवज ।

पशुओं का सा शब्द करना ।
रंभाना । गरजना ।

नयनद—[वि] नष्ट होना, नाश-
विनाश होना ।

गायन । लुप्त ।

नदीश—(सं पुं) गन्ध, गन्ध ।
समुद्र ।

नयना—(क्रि अ) बल आदि
जाठोवा, जाठोवा, कोनो काम
आवृत्त कर ।

बल आदि का जुटना । संयुक्त
या सम्बद्ध होना । कार्य का
आरम्भ होना ।

नकारना—[क्रि अ] यथोक्त
करा ।

इनकार या अस्वीकार करना ।

ननद [दी]—(सं स्त्री) ननद ।
पति की बहन ।

ननसार, ननिआउर, ननिहाल—
(सं पुं) मोमायैकन धर ।

नाना का घर ।

नन्हा—[वि] गुरु ।
बहुत छोटा ।

नपाई—[सं स्त्री] छोटी काम
वा तान, दान ।

नापने की क्रिया, भाव या पारि-
श्रमिक ।

नपुंसक [सं पुं] नपुंसक, स्त्री ।
हिजड़ा ।

नपुंसकता (सं स्त्री) नपुंसकता ।
नपुंसक होने की अवस्था या
भाव ।

नफर—(सं पुं) गेदक, बाछि ।

सेवक, व्यक्ति ।

नफरत—(सं स्त्री) घृणा ।

घृणा ।

नफा—[सं पुं] लाभ ।

लाभ । फायदा ।

नफीरो—[सं स्त्री] तूण, टोन

अथवा तूर्या बाछ ।

तुरही, बाजा ।

नफीस—(वि) भाग, खुब धुनीया ।

अच्छा । बढ़िया । सुन्दर ।

नबी—(सं पुं) नबी, प्रयोगश्रव, देव-

दूत [इस्लाम धर्म] ।

पैगम्बर ।

नब्ज—(सं स्त्री) शतब गाड़ी, नाड़ी ।

कलाई की नाड़ी ।

नभ—(सं पुं) आकाश, गेव,

बरसूण ।

आकाश । बादल । वर्षा ।

नभगामी, नभचर—(सं पुं)

शूर्य, छत्र अथवा तबा, देवता,

पक्षी ।

सूर्य, चन्द्र या तारा । देवता ।

पक्षी ।

[वि] आकाशत विचरण

करौता ।

आकाश में चलने वाला ।

नभोवाणी—(सं स्त्री) आकाशवाणी

(रेडिओ) ।

आकाशवाणी (रेडिओ) ।

नम—[वि] खेका, तिता,

कोमल ।

भीगा हुआ । गीला । कोमल ।

नमक—(सं पुं) लोण, निमथ,

लावण्य ।

लवण । लावण्य ।

नमक-हराम—(सं पुं) कृतज्ञ,

थाई पात रक्ता ।

कृतघ्न ।

नमक-हलाल—(सं पुं) कृतज्ञ,

शायी डल ।

कृतज्ञ । स्वामीभक्त ।

नमकीन—[वि] नूनीया, धुनीया ।

नमक मिला हुआ या नमक के

स्वादवाला । खूबसूरत ।

(सं पुं) निमथदेव रक्ता आञ्जा ।

नमक डालकर बनाया हुआ

पकवान ।

नमना—(क्रि अ) नम्र होना,

अर्पण करना ।

भुक्ता । प्रणाम करना ।

नमनीय—(वि) पूजनोय, आपदनीय,

डाख शूदाव भवा ।

पूजनोय । लचीला ।

नमनीयता—[सं स्त्री] कोमलता ।

लचीलापन ।

नमाज—(सं स्त्री) मुछलबागसकले

बोपाक छटनावा प्रार्थना ।

मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना ।

नमाना—(क्रि स) गृह दोउटा, बर्ण
कवा ।

झुकाना । झुकाकर अपने अधीन
करवा ।

नमी—(सं स्त्री) जेका डाव ।

गीलापन ।

[वि] बगुठा शीकाव कवा जन ।

झुकनेवाला ।

नमूना—(सं पुं) नमुना, उदाहरण,

आदर्श, आदि ।

बानगी । उदाहरण । आदर्श

ढाँचा ।

नय—(सं पुं) नीति, नम्रता ।

नीति । नम्रता ।

(सं स्त्री) नदी ।

नदी ।

नयन—[सं पुं] चक्र, लैन अश ।

आँख । ले आना ।

नयनी—[सं स्त्री] चक्रव यनि ।

आँख की पुतली ।

[वि स्त्री] चक्र थका (श्री) ।

आँखोंवाली ।

नयशील—(वि) नीतिछ, विनीत ।

नीतिज्ञ । विनीत ।

नया—[वि] नतून, अविज्ञताशून्य ।

नवीन । हाल का । अनुभवहीन ।

नर—[सं पुं] नाशूह, सेवक, शिव,

विष्णु, अर्जुन, एविध छन ।

विष्णु । शिव । अर्जुन । पुरुष ।

सेवक । एक छंद ।

(वि) पूक्य छाति ।

पुरुष जाति का ।

नरकट—[सं पुं] बेतब पदे एविध

गछ, थांगवि ।

बेत्की तरह का एक पीधा

जिमके डण्ठलों से कलमें, चटा-

इयाँ आदि बनती हैं ।

नरकुल, नरियर—[सं पुं]

नाबिकल ।

नारियल ।

नरकेहरि, नरनाहर, नरहरि—

वृगिरु ।

नसिद्ध ।

नरगिस—[सं स्त्री] बगीचाकूल थका
एविश गछ ।

सफेद फूलवाला एक पौधा ।

नरदमा (दा)— (सं पुं) नजा,
अधाली, नर्क्या ।

पनाला । मैला पानी का नल ।

नर-देव— (सं पुं) बाभूष ।
ब्राह्मण ।

नर-पिशाच—(सं पुं) नरपिशाच,
पिशाच नदर काय कबा बाभूष ।
पिशाच जैसा काम करनेवाला
आदमी ।

नरमा—(सं स्त्री) एविश कपाश,
गियनू ठुला, काथर लति ।

एक प्रकार की कपास ।
सेमर की रूई । कान के
नीचे का लटकता हुआ भाग ।

नरमाना—[क्रि अ] गत्र होवा ।
नरम पड़ना, नम्र होना ।
(क्रि स) नरम अथवा कोमल
होवा ।

नरम या मुलायम करना ।

नरमाहट, नरमी—(सं स्त्री) कोम-
लता ।
कोमलता ।

नरमेघ—(सं पुं) नरमेघ, बाभूष
गछदेव कबा गछ ।

मनुष्यों का संहार । प्राचीन
काल का एक यज्ञ, जिसमें मनुष्य
की बलि दी जाती थी ।

नर-लोक—[सं पुं] जगत्, पृथिवी ।
जगत् ।

नरसिंघा— [सं पुं] ठुवर ददे
एक अकारब बापा ।

तुरही जैसा एक प्रकारका बाजा ।

नराच, नाराच—[सं पुं] बाण ।
बाण ।

**नराट, नराधिप, नरिंद, नरेन्द्र,
नरेश**—[सं पुं] राजा ।

राजा ।

नरियाना—(क्रि वि) छिओवा ।
पुकारना ।

नरी— [सं स्त्री] माटेका । मछवा,
बं दिवा, छांगलब चायबा ।
गिछोना कोमल चायबा नली,
नर्क्या । सोभाबीब छूई कुडवा
पितलब छुडी ।

सिफाया हुआ मुलायम चमड़ा ।
करघे की नार । नली । नाली ।
स्त्री ।

नरेली—(सं स्त्री) नाविकलव धोना,
अथवा नाविकलव होका,
गरु नाविकल ।

नारियल की खोपड़ी । नारियल
की खोपड़ी से बना हुआ हुका ।

नर्त्तक—(सं पुं) नाचनी ।
नाचनेवाला, नर्तकी [स्त्री]

नर्त्तना—(क्रि अ) नाच ।
जाचना ।

नर्त्तित—[वि] नाचि थका ।
नाचता हुआ ।

नर्दन—[सं स्त्री] गवजा ।
गरज ।

नर्म—[सं पुं] पविशंग, शिजा,
विद्रुषक ।
परिहास । विद्रुषक ।
[वि] कोयल ।
नरम ।

नर्मद—[सं पुं] बहवा ।
मसखरा ।
(वि) धेमेलीया, विनोदप्रिय ।
सुखद ।

नर्मदेश्वर—[सं पुं] शिव, नर्मदा
नदीत पोवा एटि निबलिङ्ग ।
निबलिङ्ग ।

नल—[सं पुं] नल खाग्रबिब कलन ।
दमयन्तीव खात्री नलबजा । बायव
गैश्र बाहिनीव एटा बायव,
नल वन ।

नरकट । कलम । दमयन्ती के
पति । राम की सेना का एक
बन्दर । चीज । नाली ।

नलिका—(सं स्त्री) एविध अन्न ।
अन्नकोश, ठाँठपालन एविध
आशिला ।
'नाल' नामक अस्त्र । तूण ।

नलिन—[सं पुं] भूय, पानी,
पक्षी विशेष ।
कमल । जल । सारस ।

नलिनी—[सं स्त्री] डेटेकुल, कय-
लिनी, नदी ।
मलिनी । नदी ।

नली—(सं स्त्री) गरु नली, दंडव
छुडा याव अमूबे बक कवा थोके,
छुडा ।

छोटा या पतला नल । चोंगा ।
पैर की पिडली का अगला भाग ।

नव—[वि] नतून । १ संख्या ।
नवीन । 'नौ' की संख्या ।

नवतन—(वि) नवीन ।
नवीन ।

नवना—[क्रि अ] नूब दोउडा ।

नत्र अथवा बिनग्री होडा ।

भुकना । नभ्र या विनीत होना ।

नवनीत—(सं पुं) गाथन ।

मक्खन ।

नवम—(वि) नवम ।

नवा ।

नव-मल्लिका—(सं स्त्री) नवमल्लिक ।

कुल । शेरालि कुल ।

चमेली ।

नवरात्र—(सं पुं) च'उ याक

आशिन गाहत दुर्गा पूजा होडा ।
ङ्कणफर प्रतिपद तिथिब
पवा नवशीटेल दिन मयूह ।

चैत या आश्विन महीने की शुक्ल
पक्ष की प्रतिपदा से लेकर नवमी
तक की नौ तिथियाँ जिनमें दुर्गा
का पूजन होता है ।

नवल—[वि] नडून, खलब, युवक ।

नवीन । सुन्दर । जवान ।

नवससि, नवशशि—(सं पुं)

शिथीगाव छत्र ।

द्वितीया का चाँद ।

नवाई—(सं स्त्री) बिनग्री होडा वा

नतहोडा कार्य अथवा भाव ।

नवने या विनीत होने की क्रिया
या भाव ।

[वि] नडून ।

नया ।

नवागत—[वि] नवागत, नडूनटैक
अश ।

नया आया हुआ ।

नवाज—[वि] रूपा करनेवाला ।

कृपा करनेवाला ।

नवाना—[क्रि स] नूब दोउडा ।

भुकाना । विनीत या नभ्र करना ।

नवान्न—(सं पुं) न-देशवा नवान्न ।

नया उपजा हुआ अनाज ।

नवाबी—(सं स्त्री) नवाबी, नवाब

योग्य, नवाबब शासन काल ।

नवाब का पद, काम या शासन

काल । नवाबों की सी अमीरी ।

नवाई—[वि] न दिनटैक छलि
थका ।

नौ दिनों तक चलता रहनेवाला ।

नवीकरण—[सं पुं] नवीकरण,

न रूप दिया ।

नया रूप देना । जिसकी अवधि

बीत चुकी हो उसे फिरसे आगेके

लिये वैध या नियमित करना ।
(अं—रिपूअल)

नवीस—[सं पुं] नविष्ठ, निर्वैषाण ।
लेखक । लिखनेवाला ।

नवेला(सं पुं) युवक, नटून ।
युवक । नया ।

नवोद्गा—(सं स्त्री) न कहेना, युवती,
एविश नायिका ।
नव-वधू । युवती स्त्री । नायि-
काओं का एक भेद ।

नवोद्धित - (वि) नटूनटोक उपजा,
नवोद्धित ।
जो हालमें उत्पन्न हुआ हो या
अस्तित्व में आया हो ।

नव्य—(वि) नया, आधुनिक ।
नया ।

नशाना, नसना—[क्रि अ] नष्ट
होना ।
नष्ट होना ।

नशा—[सं पुं] निष्ठा, बागीशान
बख्त खोराब पिछ्त होरा
मानसिक अतश्च । बागीशान
बख्त, अशङ्काब ।
मादक पदार्थों के सेवनसे उत्पन्न
मानसिक दशा । मादक द्रव्य ।
धमण्ड ।

नशाखोर, नशेबाज—(सं पुं) गदाग्र
बागीशान बख्त खोराब बाख्त ।
हमेशा नशेका सेवन करनेवाला ।

नशाना, नसाना—[क्रि अ सं] नष्ट
होना अथवा कबा ।
नष्ट होना या करना ।

नशीला—[वि] मादक, बागीशान ।
मादक । जिसपर नशेका प्रभाव
हो ।

नशतर—[सं पुं] [कोश आदि
काटित्व वावे] शूर, गरु तीक्ष्ण-
तर तूबि ।
फोड़े आदि चीरने का बहुत छोटा
तेज चाकू ।

नशवर—[वि] नश्वर, नष्ट श्वलशैला ।
नष्ट हो जानेवाला ।

नस—(सं स्त्री) तेज चलाचल
कबा नाड़ी ।
शरीर की रक्तवाहिनी नली ।

नसल, नस्ल—(सं स्त्री) वंश,
जाति ।
वंश । कुल ।

नसीब—(सं पुं) भाग्य ।
भाग्य ।

नसीहत—[सं स्त्री] उपदेश ।
भलाई का उपदेश ।

सेनी— (सं स्त्री) खथला ।

सीढ़ी ।

स्तिप्त—[वि] गलत्र कबा ।

नत्थी किया हुआ ।

स्य— [सं पुं] नय, नाकेवे

उछोड़ा पवन वा धपातब बुबि ।

सुंघनी ।

हूँ— (सं पुं) विवाह आगमिना

गथ कमाये छेतुका पिछोवा

एकप्रकारब प्रवर्गि अर्था ।

विवाह के पहले बरके नाखून

काटने और मेंहदी लगाने की एक

रीति ।

हर— (सं स्त्री) द्रो, कृत्रिम थाल ।

सिचाई आदि के लिये बनाया

कृत्रिम जल मार्ग ।

हरनी— [सं स्त्री] गथ कटा एविध

गँझुलि ।

नाखून काटनेका एक औजार ।

हलाना, नहवाना— (क्रि स) गो

धुँडेवा ।

स्नान करवाना ।

हान— (सं पुं) गो धोना, नान-

पर्व ।

नहाने की क्रिया या भाव ।

नहाने का नहाना ।

नहाना— (क्रि स) गो धोवा ।

स्नान करना । तरल पदार्थ से

सारे शरीर का तर होना ।

नहारी— (सं स्त्री) जलपान ।

जलपान ।

नहिक— [वि] नकारात्मक, “न”

उडब ।

नकारात्मक । (‘अहिक’ का विपर्याय)

नहीं— (अव्य) नाहै ।

निषेध या अस्वीकृति सूचित करने

वाला एक अव्यय ।

नहूसत— [सं स्त्री] अशुभ, अशुभ ।

मनहूसी ।

नौ— (अव्य) नाहै ।

नही ।

नौधना— (क्रि स) जपियाई पाव

होवा ।

लौधना ।

नौद— [सं पुं] पोशनीय जल

दाना-पानी दिया गाँठि अथवा

काँठब डाँडब बाँटन ।

पशुओं को चारा खिलानेका बड़ा

घिनी का बरतन ।

नौदना—(क्रि अ) छिन्न वा श्वर
करा, टाँचि मवा, आनन्दित
होवा ।

शब्द करना । छीकना । आनन्दित
या प्रसन्न होना, बुझने के पहले
दीपक का भभकना ।

नांदी—(सं स्त्री) अद्भुत, कावा
वा नाटकवा आश्चर्यते कोना
बड़ा वा देवताक प्रशंसा वा
तुति करा श्लोक ।

अद्भुत । मंगलाचरण ।

नांदीमुख—(सं पु) नांदीमुख
शब्द, न पूरकश्वर शब्द ।

विवाहादि मंगल अवसरो पर
होनेवाला मांगलिक श्राद्ध ।

नौथ, नौव, नौबरा, नौउ —
[सं पु] नाम ।
नाम ।

नौह—(सं पु) शायी ।
स्वामी ।

[अव्य] नश्य ।
नही ।

नाइन, नाउन—(सं स्त्री) नापि-
तनी, नापितर धूँ ।
नाई की स्त्री ।

नाई—[सं स्त्री] एकदशी, गमान
दशी, गदूश ।

समानदशा ।

[अव्य] गमान, निचिना ।

समान । की तरह ।

नाई, नाऊ—(सं पु) नापित ।
हज्जाम ।

ना-उम्मेद—(वि) निराश ।
निराश ।

नाक—(सं स्त्री) नाक, नर्षाणा,
गन्धान, शैशुण ।

नामिका । नेटा । प्रतिष्ठा ।

(सं पु) शबिवालब निचिना
एविश डल डल्लु, श्वर्ग, आकाश,
इन्द्र ।

मगर की भोति एक जलगन्तु ।
स्वर्ग । आकाश । इन्द्र ।

काटना—नर्षाणा शानि
होवा । वेइज्जती होना ।

—रखना—गन्धान अटूट
रनी । प्रतिष्ठा की रक्षा करना ।

नाकना—(क्रि स) जडिद न करा,
पनाजित करा ।

ठाँधना । मान करना ।

नाका—[सं पु] मोहना नदी
मुँ, वाणिश मुख, बेजिब बिक्का ।

रास्ते का मुहाना । दुर्ग, नगर
आदि का प्रवेश द्वार । पहर की
चौकी । सूईमें का छेद ।

नाकाबंदी—[सं स्त्री] पथ निरोध,
बाट बन्द कबा कारी ।

शत्रु को घेरने के लिये आनेजाने
का मार्ग रोकना ।

नाखना—(क्रि स) गटे कबा,
पेलाइ दिया, अज्ज मक्षानन
कबा ।

नष्ट करना । फेंकना । डालना ।
शस्त्र चलाना । रखना ।

नाखुश—[वि] अप्रगम ।
अप्रमत्त ।

नाखून—(सं पुं) नख ।
नख ।

नाग—(सं पुं) कर्णयूक्त नाग,
शङ्खी, वर्णि-ताग, पांग, अथन
प्रेमव नाग ।

फन वाला साँप । एक प्राचीन
जाति । हाथी । रांगा । मीसा ।
पान । ताम्बूल । बादल । आठ
की संख्या ।

नाग-झाग—(सं पुं) आकिः, कानि ।
अफीम ।

नागना—(क्रि स) गोहशब्दा नाइबा
पृथक् कबा ।

नागा या अन्तर करना ।

नागफनी—(सं स्त्री) नागब-
केणी ।

एक प्रकार काटेदार पौधा ।
(अं)—कैकृतस ।

नागबेल—(सं स्त्री) पाप ।
पान ।

नागर—(वि) उड्डव, नगबव लगत
गश्कित ।

नगर से सम्बन्ध रखनेवाला ।
चतुर ।

(सं पुं) नगबवागी, गण्लोक ।
नगर का निवासी । भला आदमी ।

नगर-मोथा—[सं पुं] एक-
प्रकार बदनोषधि ।

एक प्रकार की घाम जिसकी
जड़ दवा के काम में आती
है ।

नागराज—(सं पुं) ऐरावत,
अनल नाग ।

ऐरावत । गेषनाग ।

नागरी—(सं स्त्री) नगबवागी
उड्डव ज़ौ, उड्डव ठिबोठा; देव-
नागबी लिपि ।

नगर की रहनेवाली चतुर स्त्री ।
औरत । देवनागरी लिपि ।
हिन्दीभाषा ।

नागलोक—(सं पुं) नागलोक,
पाताल ।

नागवार—[वि] अग्रश, अग्रिय ।
अग्रिय ।

नागा—[सं पुं] नाडूँ, नागा जाति,
नागापाशव, अश्व वा विषाण ।
नंगे रहनेवाला एक शैव सम्प्रदाय ।
एक पहाड़ी जाति । नियत समय
पर होते रहनेवाले कामका किसी
बार न होना ।

नागिन—(सं स्त्री) नागिनी ।
नाग का मादा ।

नागेश्वर (नागकेश्वर)—[सं पुं]
नाश्वर, नागेश्वर ।
एक प्रकार का गंधयुक्त बीज
वाला पेड़ ।

नाचकूद—(सं स्त्री) नाच-बाग,
योगाङ्ग । प्रकाशव निर्वर्क
प्रयोग ।
नाच तमाशा । योग्यता, शौर्य
आदि प्रकट करनेका निरर्थक
प्रयत्न ।

नाचना—(क्रि अ) नचा, नैच,
बाजव श्रव आक ताल अङ्गवि
छेउ श्रवि श्रवि शत श्रवि नबोवा ।
नृत्य करना । मँडराना । प्रयत्न
में दीड़धूप करना । क्रोधमें
उछलना-कूदना ।

नाज—(सं पुं) गा-खोकाबनि,
अश्वाब, गर्व ।

नखरा । घमण्ड, गर्व ।

नाजायज—(वि) अवैध, अशुचित ।
अवैध । अनुचित ।

नाजिम—[सं पुं] नाज्जपाल
(मुठलमान बाख्श्वर)
न्यायालय सम्बन्धी कार्यालय का
प्रबन्धकर्ता ।

नाजिर—(सं पुं) निबौकक, नाखिर—
टेकेलाबिलाकब उपरब विषया ।
बेफाब दालाल ।

निरीक्षक । न्यायालय के लिपिकों
का अधिकारी । वेदयाओं का
दालाल ।

नाजी—(सं पुं) जार्मानोब एटा दल ।
जर्मनी की एक पार्टी (नात्सीपार्टी)

नाजुक—(वि) कोमल, पातल,
शृम्भ, मरुशान ।
कोमल । पतला । सूक्ष्म । गूढ़ ।
जोखिमका ।

नाजो—[वि स्त्री] बरबर, थियतना,
कोमलाङ्गी ।

दुलारी । प्रियतमा । कोमलाङ्गी ।

नाटा—[वि] छुट्टि-छापव, कैटोया ।

छोटे डील डोलका । कम ऊँचा ।

नाट्य—(सं पुं) नाटो-यडिगय,
भाष ।

अभिनय । स्वाँग ।

नाठना—[क्रि स] नष्ट कर्वा ।
नष्ट करना ।

[क्रि अ] नष्ट होना, भगना ।
नष्ट होना । भागना ।

नाङ्—(सं स्त्री) डिडि ।
गर्दन ।

नाङ्गा—(सं पुं) खरी, देवताव
अर्थ अग्नित बडा मूला, पेटव
छितवव नली वा अङ्ग ।

इजार बन्द । देवताओंपर चढाया
जानेवाला लाल सूत । पेटके अंदर
की नली ।

नाङ्गी—(सं स्त्री) नाडी, शिब ।
नली । घमनी । डोरी ।

नात—(सं पुं) गश्क, गश्कीया,
कूट्रेष ।
नाता । नातेदार ।

[सं स्त्री] इति ।
स्तुति ।

नातरि, नातरु—(अव्य) अनाथा,
नश्वेल ।
अन्यथा ।

नाता—(सं पुं) गश्क ।
सम्बन्ध ।

नाती—(सं पुं) नाति नवा ।
बेटी का बेटा ।

नाते—(क्रि वि) गश्कत, काबटेल ।
सम्बन्ध से । वास्ते ।

नातेदार—[वि] कूट्रेष ।
सम्बन्धी ।

नाथना—[क्रि स] गरु म'इव नाकी
नलोवा । गलश कर्वा ।
बल । भैसे आदि की नाक छेद
कर उसमें रस्सी पिरोना । नत्थी
करना ।

नाद—(सं पुं) गर्जन, क्षनि, गच्छीत
शब्द । संगीत ।

नादना—(क्रि स) बढावा ।
बजाना ।

(क्रि अ) नाखि उठा, गवखि
उठा, अकृषित होवा ।

बजना । गरजना । प्रफुल्लित
होना ।

नादान—[वि] मूर्ख । मूर्ख ।

नादिर—[वि] अछूत, याचवित ।

अद्भुत । अनोखा ।

नादिरशाही (सं स्त्री) ईष्ठा-

मते आछा जावि कवा,
छोर्षाव अत्ताचार ।

मनमानी आज्ञाएँ प्रचलित करना ।

भूरी अन्धेर या अत्याचार ।

[वि] बलि कठोर वा विकट ।

बहुत कठोर या विकट ।

नाधना—(क्रि स) बलम. गंड आदिक

गाड़ीत छोरा, गंगोरा, काग
आबड कवा ।

बैल, भैंसा आदिको गाड़ी आदिमें

जोतना । लगाना । आरंभ करना ।

नाना—(वि) नानाविध, अनेक प्रकार ।

अनेक प्रकार के । अनेक ।

(रां पुं) मातामह । ककामेउता,

पदिना ।

मातामह । पुदीना ।

(क्रि स) अवनत कवा, अद्वेष

कबोरा ।

झुकाना । डालना या घुसाना ।

नानिहाल (ननिहाल) (सं पुं) मातामह

श्व ।

नाना नानी का घर ।

नानी—[सं स्त्री] मातामही ।

माता की माता ।

ना-नुकर—(सं पुं) अश्रीकाव ।

इत्कार ।

नाप—[सं स्त्री] माप, परिमाण,

जोखी कार्य ।

परिमाण । माप । नापनेका काम ।

मान । लम्बाई नापने की वस्तु ।

नाप-जोख—(सं स्त्री) जोख-

माथ ।

किसी चीज को नापने जोखने की

क्रिया या भाव ।

नाप-तौल—(सं स्त्री) जोख-माथ ।

किसी चीज को तौलने की क्रिया

या भाव ।

नापना—(क्रि स) जोखजोरा,

गंभीरता, अनुमान कवा, खानव

गंभीरता झुंथि चोरा ।

मापना । किसी बातकी गहराई

या किसी व्यक्ति की जानकारी

आदि का पता लगाना ।

नापसंद—[वि] अपचल, मनत

नलगी ।

जो पसन्द न हो ।

नापाक—(वि) अपवित्र, अनियम ।

अपवित्र । मैला-कुचैला ।

ना-पास—[वि] ऊँडीर्ण नोशोरा

फेरेल ।

अनुत्तीर्ण ।

नापिप्त—(सं पुं) नापिप्त ।

हज्जाम ।

नाबदान—[सं पुं] नल-यूद्ध याक

गलि-नगानी उलाई योरा नली ।

मल-नूत ओर गन्देपानी की नली ।

ना-लिंग—(वि) नाबालक ।

अ-वयस्क ।

नाबूद—(वि) बेया ।

नष्ट ।

नाभि—[सं स्त्री] नाभि, नाई,

माझभाग, पृथिवीव अभासुदब

एक कश्चित अंश ।

केन्द्र । पेट का मध्य भाग ।

पृथ्वीके भीतरी मध्य भाग का

कल्पित अंश ।

ना-मंजूर—(वि) अस्वीकार ।

अस्वीकार ।

नाम—[सं पुं] नाम, अगिष्ठा ।

संज्ञा । यग या कीर्ति सूचक

प्रसिद्धि ।

=नाम उद्घातना—यदनाम

यथा । यदनामी करना ।

=नाम लेना—गुण प्रोत्ता ।

गुणगान करना ।

=नाम पाना—अगिष्ठा होना ।

प्रसिद्ध होना ।

नामकरण—(सं पुं) गवनि,

नामकरण ।

वच्चोके नाम रखनेका संस्कार ।

नाम रखना ।

नाम-जद—[वि] अगिष्ठा, गवदनादे

डालनेके जग ।

नामांकित । प्रसिद्ध ।

नामजदगी—(सं स्त्री) गवानीत

करण ।

चुनाव आदिमें खड़े होने के लिये

किसी का नाम निश्चित करना ।

नामदार, नामवर—(वि) अगिष्ठा ।

प्रसिद्ध ।

नाम-धाम—[सं पुं] नाम, ठिकाना

आदि ।

नाम और रहनेका पता ठिकाना ।

नामनिगान—[सं पुं] चिन-छाव ।

चिह्न ।

नाम-पट्ट—[सं पुं] जाननी-तक,

नाम आदि लिखा थाका तक ।

वह पट्ट जिसपर नाम आदि
 अंकित रहता है। (साइनबोर्ड)
नामर्द्ध—[वि] नपुंसक, डीक।
 नपुंसक। डरपोक।
नामर्द्धी—[सं स्त्री] डीकता,
 दुर्बलता।
 नपुंसकता। कायरता।
नाम-लेना—(सं पुं) नाम-लड़ता,
 गति-गखान।
 नाम लेनेवाला। सन्तान-सन्तति।
नाम-शेष—(वि) नाम गात्र अवशेष,
 उद्धारशेष।
 जिसका केवल नाम रह गया हो।
 नष्ट। ध्वस्त। मृत।
नाम हँसाई—(सं स्त्री) लोक-
 निन्हा, अप्रशंसा।
 लोक निन्दा। बदनामी।
नामांकित—(वि) नाम-लिखित,
 नाम अना, अश्रुता।
 जिसपर नाम लिखा या खुदा हो।
 नामजद। प्रसिद्ध।
नामांतर—[सं पुं] पर्याय।
 पर्याय।
नामावली—(सं स्त्री) नाम-
 तालिका, नामावली-देवता-
 नाम-चाब धका टेबल।

नामों की सूची या तालिका।
 वह कपड़ा जिसपर राम-कृष्ण
 आदि नाम छपे रहते हैं।
नामी—(वि) नामजद, अश्रुत।
 प्रसिद्ध।
ना-मुनासिब—[वि] अश्रुत।
 अनुचित।
ना-मुमकिन—(वि) अश्रुत।
 असम्भव।
नायन—(सं स्त्री) नाभि-तनी।
 नाई की स्त्री।
नायब—(सं पुं) मुखिया।
 मुख्तार। सहायक।
नायाब—[वि] दुर्लभा, दुर्लभ।
 जो जल्दी न मिले। अप्राप्य या
 दुष्प्राप्य। बहुत बढ़िया।
नारंगी—(सं स्त्री) कमला टेंडी।
 कमला नींबू।
 [वि] प्रका कमला-वर्ण।
 पीलापन लिये कुछ लाल रंग का।
नार—(सं स्त्री) डिंडि, गान। स्त्री
 गरदन। नाल। नारी।
 (सं पुं) पानी, गन्ध, भाँवर,
 डाँडर खरी।
 जल। समूह। मण्डार। नाल।
 मोटा रस्ता। नाला।

नारकी—(वि) नारकी- नरकर
योग्य, पापी ।

बहुत बड़ा पापी । नरकमें रहने
योग्य या रहनेवाला ।

नारद—(सं पुं) ब्रह्माव पुत्रक, दश-
जना देवर्षिब एषना अगिन्न
ध्वि, टूटकीया कथा कै हम्म
लगावा ।

ब्रह्माके पुत्र हरिभक्त देवर्षि ।
लोगों में भगड़ा करानेवाला
व्यक्ति ।

[वि] पानीव अक्षिपति, दंश-
जात ।

जल देनेवाला । वंशज ।

नारा—(सं पुं) अश्वगौत, गला ।
अश्वक्षति ।

घोष । [स्लोगन] । नाला ।

नाराच—(सं पुं) लोव श्व ।
लोहे का बाण ।

नाराज—[वि] अगम्य, अश्वगम ।
अप्रसन्न ।

नाराजगी—[सं स्त्री] अगम्यति,
अश्वगमता ।

नाराजी—(सं स्त्री) अश्वगमता ।
नाराजगी ।

(वि) बाजी नोडोवा ।

जो राजी न हो ।

नारि—(सं) तिवोडा, गमूह,
भागाव ।

नारी । समूह । भण्डार ।

नाल—(सं स्त्री) नाल, कोनो
बद्ध शोतेबे शवा भाग । प्रह्म
आदिब ठावि । श्वेत्, शान आदिब
थेब । श्वोबाव खुबात लगोवा
लोव छा ।

कमल, कुमुद आदि फूलों की
पीली लम्बी डण्डी । पौधे का
डण्ठल । गेहूँ, जौ आदि की बाल,
जिसमें दाने होते हैं । बन्दूक की
नली । घोड़े की टापमें लगाया
जानेवाला अर्धचन्द्राकार लोहा ।

नालकी—[सं स्त्री] अतिश दोना ।
एक प्रकार का पालकी

नालायक—(वि) अलायक, अयोग्य ।
अयोग्य ।

नालायकी—[सं स्त्री] अयोग्यता ।
अयोग्य ।

नालिश—[सं स्त्री] अभियोग,
नोकर्पना ।
अभियोग ।

नाली—[सं स्त्री] गक नली । गक
नली ।

छोटा नाला । पतला नल ।

नाव—[सं स्त्री] नाव ।

नौका ।

नाविक—(सं पुं) नाव, नाविक ।

वाण । नाविक ।

नावना—(क्रि स) अवनत कना ।

झुकाना । डालना ।

नाविक—(सं पुं) नावबोझ, नाव

वा आशंख चबाँड़ता ।

झल्लाह । जहाज चलानेवाला या
जहाज पर काम करनेवाला
व्यक्ति ।

नाशन—(सं पुं) विनाश ।

नाश करना ।

(वि) नाशकाबी ।

नाश करनेवाला ।

नाशना—[क्रि स] नाश कना ।

नाश करना ।

नाशो—(वि) नाशकाबी, नश्वर ।

नाशक । नश्वर ।

नाशता—(सं पुं) जलपान ।

जलपान ।

ना-समझ—(वि) अतुष्ट, भूर्ध ।

भूर्ध ।

नासा, नासिका—[सं स्त्री] नाक ।

नाक ।

नासीर—[सं पुं] देनानामद

अथवा भाबी ।

सेना का अगला भाग ।

नासूर—(सं पुं) विशकांश ।

शरीर में कुछ भीतर तक होने
वाला व्रण या घाव ।

नाइ—[सं पुं] नाथ ।

नाथ ।

नाइक—(क्रि वि) अनाइकत ।

व्यर्थ ।

नाइर—(सं पुं) नाशव कुट्टकी ।

शेर ।

नाही—(अव्य) नश्य, नाई ।

नहीं । कभी नहीं ।

निंदक—(वि) निन्दक ।

निन्दा करनेवाला ।

निंदना—(क्रि स) निन्दा कना ।

निन्दा करना ।

निंदरिया—[सं स्त्री] छोपनि ।

नींद ।

निंदाना—[क्रि स] निन्दावा, निन्दाई

दिश ।

पीठे को निराना ।

निंदामा—(वि) छोपनि गंधूवा ।

जिसे नींद आ रही हो ।

निदिध्या (सं स्त्री) टोपनि ।
नीद ।

निद्य—(वि) निम्ननीय ।
निदनीय ।

निःशंक—[वि] निर्भय ।
निभय ।

निःशुल्क—(वि) बिनाशुल्के ।
बिना शुल्क का ।

निःश्रेयस—(सं पुं) श्रेयः,
कल्याण ।
मोक्ष । कल्याण ।

निःसंग—(वि) अकलशरीया ।
निरसि । अकेला ।

निःसत्त्व, निःसार—अभाव, नावस्था ।
जिसमें कुछ भी तत्त्व या सार
न हो ।

निःसरण—(सं पुं) उल्लिखित,
उल्लिखित वाटे ।
निकलना । निकलने का मार्ग ।

निःसारण—(सं पुं) निरुद्ध शब्द ।
कोई चीज या तरल पदार्थ का
धीरे धीरे बाहर निकालना ।

निःसीम—(वि) असीम, बर
डाँडा ।
असीम । असीम जगत् का असीम ।

निस्पन्द—(वि) अस्पन्दशील ।
जिसमें किसी प्रकार का स्पन्दन
न हो ।

निःस्पृह—[वि] हेच्छा वा वांछा
नकरा ।
निर्लोभ ।

निःस्वन—(वि) निःशब्द ।
निःशब्द ।
[सं पुं] श्वनि ।
ध्वनि ।

निःस्वर—(अव्य) उच्चरित, गमान ।
निकट ।
(वि)
समान ।

निःस्वराना—(क्रि स) उच्चरित ।
पास पहुँचना ।
(क्रि अ) उच्चरित अना वा
पौवा ।
पास आना या पहुँचना ।

निकन्दन—[सं पुं] नाश, वध ।
नाश, वध ।

निकन्दना—(क्रि स) नष्ट करना ।
नष्ट करना ।

निकट—[वि] उच्चरित ।
पास का । जिसमें अधिक अन्तर
न हो ।

(क्रि वि) उचर ।

पास ।

निकट-पूर्व—[सं पुं] एशिया महा-
देशके पश्चिम भाग । उचर
पूरुव ठाईवे ।

एशिया महादेश का पश्चिमी
भाग ।

निकटस्थ—[वि] उचर ।

पास का ।

निकम्मा—[वि] अकर्मा, निकर्मा,
निवर्त्तक ।

जो कोई काम न करता हो ।

निरर्थक ।

निकर—(सं पुं) गमूह, बाणि,
भंडाल, आँठार गया । (आधा
पायछाया)

समूह । राशि । कोश । आधा
पायजामा ।

निकलंक [की]—(वि) दोष शुभा,
बलक विहीन ।

दोष रहित ।

निकलना—(क्रि अ) बाहिरले
अहा, पाव होवा । उदय होवा,
उत्पन्न होवा । सिद्ध होवा ।

अतिबाहित होवा । तलोवा ।

बाहर आना । पार होना । उदय
होना । उत्पन्न होना । सिद्धहोना।
व्यतीत होना ।

निकलवाना—(क्रि स) बाहिर
कराई दिवा (उल्लिखित) ।

‘निकलना’ का प्रेरणाथक ।

निकष—(सं पुं) तलोवाव थाप ।
कसती शिल ।

तलवारकी म्यान । कसीटी का
पत्थर ।

निकसना—(क्रि अ) बाहिर
उलोवा ।

निकलना ।

निहाई—[सं स्त्री] उदयता,
सूक्तता । उपकार ।

अच्छापन । सुन्दरता । भलाई ।

निकाम—(वि) निकाय, खूब बेचि ।
निष्काम । निकम्मा । बहुत
अधिक ।

(क्रि वि) वार्थ ।

व्यर्थ । बेफायदा ।

निकाय—(सं पुं) गमूह, निकाय,
असुष्ठान [समिति], घर ।

समूह । कोई विशेष कार्य करने
के लिये बना हुआ कुछ व्यक्तियों

का संघटित समूह । (अं-बाडी)
ढेर । मकान ।

निकाळना—[क्रि स] वाशिबटेल
अना वा वाशिब कबा । यात्रा
कबा । निष्ठा कबा । आदख
कबा । मशाखान कबा । कम
कबा । उलिउवा ।

बाहर करना या लाना । गमन
कराना या चलाना । निश्चित
करना । स्पष्ट करना । आरंभ
करना । कम करना । हल करना ।
आविष्कृत करना । बरामद
करना ।

निकाळा—[सं पुं] उलिउवा अथवा
वाशिब कबा कार्य अथवा भार ।
कालापीनीय शक्ति ।

निकालने की क्रिया या भाव ।
निवासन का दण्ड ।

निकाश—(सं पुं) आकृति, गाय,
उच्च, कृतिष् ।
आकृति । समानता । समीपता ।
क्षितिज ।

निकास—[सं पुं] वाशिब होवा
वा कबा कार्य अथवा भार ।
पथाव, उद्गम, आश्रय पथ ।
आश्रय मशानता ।

निकलने या निकालने की क्रिया
या भाव । मैदान । उद्गम ।
आमदनी का रास्ता । आय ।
बराबरी ।

निकासना—(क्रि स) उलिउवा ।
वाशिब कबा ।
निकालना ।

निकासी—(सं स्त्री) उलिउवा वा
वाशिब कबा कार्य नाईवा
भार । यात्रा कबि उलोवा ।
आश्रय, सम्पत्ति पंवा पोवा
लाभांश, लाभ, विक्री कबिब
वाटे वस्तु वाशिबटेल पठिउवा,
बशानी ।

निकलने या निकालने की क्रिया
या भाव । यात्रा के लिये निक-
लना । आय । किसी सम्पत्ति से
लाभ के रूप में प्राप्त होनेवाला
धन । लाभ । बिक्री के लिये माल
का बाहर जाना । माल की
क्षपत ।

निकाह—(सं पुं) विवाह । [मुहल्लयान
गकलब] ।

विवाह (मुसलमानी)

निकुंज—[सं पुं] निकुंज, लताच्छा-
दित वृक्ष ।
लता मंडप ।

निकृष्ट—[वि] बेग़ा, निःकिन ।
खराब । बुरा ।

निकेत [न]—(सं पुं) बर, ठाढ़े,
डँडाल ।
घर । स्थान । भण्डार ।

निकिप्त—[वि] पलिओवा, पबि डाऊ,
पठिओवा, जया कबा, निकिप्त ।
फँका हुआ । त्यक्त । भेजा हुआ ।
जमा किया हुआ ।

निक्षेपण—[सं पुं] पलिओवा, दिया,
छलोवा, एवा ।
फँकना । डालना । चलाना ।
छोड़ना ।

निखटक—(क्रि वि) निःगल्गट्टे,
निर्भये ।
बेखटके । बेघड़क ।

निखट्टू—[वि] निकर्षा, क्षोप ।
जो कुछ कमाता न हो ।

निखरना—[क्रि अ] धुई निका
होवा ।

मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल
होना ।

निखरा—(वि) पबिकाब, उज्जल ।
साफ । उज्जल । (स्त्री-निखरी)

निखरी—[सं स्त्री] बिठैत डका ।
धी में पकी हुई रसोई ।

निखार—[सं पुं] निर्मलता ।
निर्मलता ।

निखारना—(क्रि स) पबिकाब अथवा
निर्मल कबा ।
साफ या निर्मल करना ।

निखातिस—(वि) बिठक, डेजाल
नोहोवा ।

विशुद्ध । जिसमें मिलावट न हो ।

निखिल—(वि) गम्पूर्ण, अखिल ।
सम्पूर्ण । सारा ।

निखुटना—(क्रि अ) शेष होवा ।
समाप्त होना ।

निखोट—(वि) निखुटे, अष्ट अथवा
उभूऊ ।

जिसमें खोटाई या दोष न हो ।

स्पष्ट या खुला हुआ ।

[क्रि वि] निःगल्गट्टे,
निर्भयछिडे ।

बिना संकोच के । बेघड़क ।

निखोटना—[क्रि स] नखेदे
आँछोवा ।

नाखून से नोचना ।

निगड़—(सं स्त्री) शतीक बका
निकलि । कट्येदीब डबित
पिकावा निकलि ।

हाथी के पैरमें बाँधनेका सिक्कड़ ।
बेड़ी ।

निगद (न)--(सं पुं) कथन ।
कथन ।

निगम--(सं पुं) पंथ, वेद, बख़ाब,
बेला, वावगाय । कबपोबेचन,
निगम ।

मार्ग । वेद । बाजार । मेला ।
व्यापार । व्यापारियों का संघ ।
नगर की व्यवस्था करनेवाली
बड़ी संस्था (कारपोरेशन) ।

निगमन--[सं पुं] न्यायालयत
अमानित कबा कथा सम्पर्क
आश्रय कथन । कोनो मिडेनि-
टिपोलिटी अथवा कूज निकायक
नियमन [कबपोबेचन] कप
मिश्रा कार्य ।

न्यायालय में सिद्ध की हुई बात
के सम्बन्ध में अन्तिम कथन ।
किसी संस्था को निगम का रूप
देने की क्रिया या भाव । (अं—
इन्कारपोरेशन)

निगरानी--(सं स्त्री) छाबी-बेला,
छक्क मिश्रा ।
निरीक्षण । देखरेख ।

निगलना--(क्रि स) गिलि गेलोबा,
अहेनब धन आबगाय कबा ।
लीलना । दूसरेका धन दबा लेना ।

निगहवान--(सं पुं) बथीशा, बक्क ।
रक्षक ।

निगाहो--(सं स्त्री) होकाब
काठब गलिछा ।

हुक्के की काठकी नली ।

निगाह--[सं स्त्री] दृष्टि, छावनी,
कृपादृष्टि ।

दृष्टि । चितवन । कृपा दृष्टि ।
परख ।

निगुरा--(वि) गुक्क हाबा दीका
नोलोबा जन ।

जिसने गुल्से दीक्षा न ली हो ।

निगूढ़--(वि) गोपनीय, निगूढ़ ।
अत्यन्त गुप्त ।

निगोड़ा--(वि) शर्द्धीशा, दूष्टे,
वेया ।

अभागा । दुष्ट । बुरा । (स्त्री—
निगोड़ी) ।

निग्रह--(सं पुं) अवरोध, नियन्त्रण,
दमन, शांति, पीड़न, बन्धन ।

अवरोध । नियन्त्रण । दमन ।

दण्ड । पीड़न । बन्धन ।

निग्रहना—[क्रि स] धरा, धरारा, शांति दिया ।

पकड़ना । रोकना । दण्ड देना ।

निघंटु—[सं पुं] वैदिक शब्दालोक
लोक । विशयक ग्रंथ विशेष ।

वैदिक शब्दों का कोश ।

निघटना—[क्रि अ] खूब बेछि
अथवा निश्चित भाने घटना ।

बहुत अधिक या निश्चित रूपसे
घटना ।

निघर-घट—(वि) धान-शिति
नोदशरा, निलाख, झेदौ ।
जिसका कहीं घर घाट या डोर
ठिकाना न हो ।
निलंज्ज । ढीठ ।

निचय—(सं पुं) जगूय, निश्चय,
जगूय, पूँछि ।

समूह । निश्चय । संचय । किसी
विशेष कार्य के लिये जमा किया
जानेवाला धन । (अं-फण्ड)

निचला—(वि) तलब, शिव, शांति,
निष्फल ।

नीचे का । स्थिर । शान्त ।

निचाई—[सं स्त्री] नीचता,
छेकनना ।

नीचापन । नीचता ।

निचुड़ना—(क्रि अ) अँटो, काटपाव
आदि धुई पानौशिनि अँटि
उलिउवा कार्य ।

कपड़े, फल आदि को मरोड़ य
दबाकर जल या रस निकलना

निचोड़—(सं पुं) गाव, अँटोवा
पिछित उलोवा वज्ज । अँट
कार्य । वज्जवा अथवा मज्जवा
गारांश ।

सार । निचोड़ने पर निकलनेवाला
अंश । निचोड़ने की क्रिया य
भाव । कथन या मत का सारांश

निचोड़ना—(क्रि स) पूति क्षोवा
कोनो वज्जब गाव अंश उलि
उवा, वज्जतो धन हरण करा ।
गारना । किसी चीज का सारा
भाग निकालना । अधिकतम
धन हरण कर लेना ।

निचोला—[सं पुं] आच्छादन,
काटपाव ।

आच्छादन । वस्त्र ।

निचौहौ—(वि) तलमूरा ।

नीचे झुका हुआ ।

निष्पन्न—(वि) छाति वा ह्य
नोहोवा ।

बिना छत्र का ।

निष्ठावर—(सं स्त्री) उत्सर्ग, मञ्जल
कार्यार वावे देव-देवीटेल आग-
बटोरा कार्य ।
किसी की मंगल कामनाके उद्देश्य
से कोई चीज उसके मस्तक पर से
धुमाकर दान करने या कही रख
आने का उपचार या टोटका ।
उतारा । उत्सर्ग ।

निष्ठोह [१]—(वि) निर्दोशी,
निर्द्वेष, मोक्षशील ।
जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम
न हो । निष्ठुर ।

निज—(वि) निज ।
अपना । मुख्य । ठीक ।
(अव्य) निश्चित भावे ।
सूत्रातः ।
निश्चित रूप से । मुख्यतः ।

निजाभ—[सं पुं] काञ्चिन्ना,
शङ्कता ।
भगड़ा । शत्रुता ।

निजाई—(वि) विवादाल्पद,
काञ्चिन्ना शक ।
विवादाल्पद ।

निजाम—[सं पुं] रावण, शत्रु-
दबावादक प्रबन्धि भागकर
उपाधि ।

व्यवस्था । हैदराबाद के भूतपूर्व
शासकों की उपाधि ।

निजी—(वि) निज । व्यक्तिगत ।
निजका । व्यक्तिगत । जिसके
स्वामित्व, अधिकार आदि का
औरोसे कोई सम्बन्ध न हो ।

निजु—[अव्य] निश्चित भावे
निश्चयपूर्वक ।

निजू—(वि) निज ।
निजका अपना ।

निम्नरना—(क्रि अ) डाल डाले
जबि डालावा (पानी) गार-
अण नोहोरा होवा, निजके
निर्दोशी प्रमाणित करा ।
अच्छी तरह झड़ना । सार भागसे
रहित या वंचित होना । अपने
आपको निर्दोष सिद्ध करना ।

निठल्ला, निठल्लू—(वि) निष्कर्षा,
अकर्षण्य ।
जिसके पास कोई काम धन्धा
न हो । खाली ।

निठुर—[वि] निर्द्वेष ।
निष्ठुर ।

निठुराई—(सं स्त्री) निर्द्वेषता ।
निष्ठुरता ।

निर्दर—(वि) निर्भीक, गाहजो ।

जिसे किसी का डर न हो ।

निर्भय । ढीठ ।

निर्दाल—(वि) पवित्राशु, क्राशु,

भाग्यशु ।

थका मांदा । अशक्त ।

नितंब—(सं पुं) पाछुकाले कैंका-

लब तलब छूई तपिनाब मांजब

भाग । चूतड़ । कन्घा ।

नितंबिनौ—(सं स्त्री) नितम्बिनौ, बहल

आरु सुन्दर नितम्ब थका तिरबोता ।

सुन्दर नितम्बोंवाली स्त्री ।

नित्य, नित्यि—(अव्य) गदाग्र ।

नित्य । हमेशा ।

नित्यांश—(वि) श्रुव बेहि, गज्जनि,

पत्रय ।

बहुत अधिक । बिलकुल । परम ।

नित्य—(वि) नित्य, तिबल्लन ।

शाश्वत ।

(अव्य) प्रतिदिन, गदाग्र ।

प्रतिदिन । सदा ।

नित्यकर्म, नित्यक्रिया—[सं पुं]

नित्यकर्म ।

नित्य का काम । प्रतिदिन आव-

श्यक रूपसे किये जानेवाले कार्य ।

निधरना—[क्रि अ] गेद पवा ।

तरल पदार्थ में घुली चीज या

मैल आदिका नीचे बैठ जाना ।

[क्रि स-निधारना]

निधरना—(क्रि स) अनामद कबा,

छेँछा पिशा ।

निरादर करना । दबाना ।

निदर्शना—[सं स्त्री] निदर्शना

अर्थालंकार ।

एक अर्थालंकार ।

निदाध—(सं पुं) गबग, बंद,

औशकाल ।

गरमी । धूप । ग्रीष्म ऋतु ।

निदान—[सं पुं] मूल कारण, बोध

चिनाशु कबा शास्त्र, शेष ।

मूल या आदि कारण । रोग की

पहचान । रोग की पहचान

विषयक विद्या या शास्त्र । अंत ।

(अव्य) शेषत, एतेके ।

अन्त में । इसलिये ।

निदिध्यासन—[सं पु] बाब बाब

दृष्टि आकर्षण कबा ।

बारबार ध्यानमें लाना ।

निदेश—(सं पुं) विधान, आदेश,

विशेष नियम ।

शासन । आज्ञा । कथन । किसी

आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के

सम्बन्ध में लगाई हुई शर्त या
बन्धन । (अं-प्राविजन)

निर्दोष—[वि] निर्दोष, दोषशून्य
निर्दोष ।

निद्रालु—[वि] निद्रालु, टोपनि
ग्रथुवा ।

जिसे नींद आ रही हो ।

निधन—(सं पुं) निधन, श्रद्धा,
मरण ।

विनाश । मृत्यु ।

[वि] निश्चिन्ता, शनशील ।

निर्धन ।

निधान—(सं पुं) आधार, भंडार ।
आधार । कोश । वह जिसमें
किसी गुण की परिपूर्णता हो ।

निधि—(सं स्त्री) भंडार, १
संस्थापित शक्ति, कुदरेवर १विध
वस्तु, कोनो संस्था वं विशेष
काय व कारणे गहित धन ।

गड़ा हुआ खजाना । नौकी संस्था
का सूचक शब्द । कुबेरके नौ
रत्न । किसी विशेष कार्यके लिये
नियत धन ।

किसी संस्था के आय व्यय के
हेतु रक्षित धन । समुद्र । आगार ।

निधिपाल—(सं पुं) याव तत्प्राप्त-
धानत कोनो निधि रक्षा इय ।
जिसकी देख रेख में कोई निधि
रखी गयी हो ।

निनादना—[क्रि अ] शक्ति करना,
छिन्नना ।

निनाद या शब्द करना ।

निनारा—(वि) अज्ञात, गर्वी-
कृष्ट ।

न्यारा । सबसे श्रेष्ठ या अलग ।

निनांबाँ—[सं पुं] मुख व भित्तव
उलोवा गर गर कोश ।

मुँह के भीतरी भाग में निकलने
वाले छोटे छाले ।

निपजना—[क्रि अ] उत्पन्न होना,
तैयार होना, परिपुष्ट होना ।
उत्पन्न होना । बनना । पुष्ट या
पक्का होना ।

निपट—(अव्य) विस्तृत, केवल,
एकपक्ष, समुदाय ।

विशुद्ध । केवल । सरासर ।

बिलकुल ।

निपटना—[क्रि अ] निवृत्त होना,
ग्रांथ व पूर्ण होना ।

निवृत्त होना । समाप्त या पूरा
होना । सतम होना ।

निपटाना—(क्रि स) गम्पूर्ण कवा,
आपाय प्रिया, शेष वा शिब कवा ।
पूरा करना । चुकाना । समाप्त
या तै करना ।

निपटारा—(सं पुं) गमायि, गमायि ।
गोमायि ।
निपटने की क्रिया या भाव ।
किसी बात के तै या निश्चित
होने की क्रिया या भाव । अन्त ।
फसला ।

निपात—[सं पुं.] निपात, पञ्चन,
विनाश, क्षय, व्याकरण श्रुत-
मते गदेश आन विशिष्ट गठित
होवा शब्द ।

पतन । विनाश । मृत्यु । क्षय ।
वह शब्द जो व्याकरणके नियमों
के विरुद्ध बना हो और फलतः
अशुद्ध हो ।

(वि) नष्ट, पीत दथका ।
बिना पत्तों का

निपातना—(क्रि स) क्षय कवा,
गमायि होलावा ।

काटकर या योंही नीचे गिराना ।
नष्ट करना । मार डालना ।

निपीकना—[क्रि स] उपेक्षित
कवा, कष्ट प्रिया ।

दबना । कष्ट पहुँचाना ।

निपुणता, निपुणार्थ, निपुणार्थ—

(सं स्त्री) निपुणता, दक्षता ।
दक्षता ।

निपूत (१)—[वि] अपूजक ।
जिसे पुत्र न हो । (स्त्री-निपूती) ।

निफन—(वि) गम्पूर्ण ।

पूर्ण ।

(क्रि वि) गम्पूर्ण बकल ।
पूरी तरह से ।

निफरना—[क्रि अ] विक्रि इकाल-
जिकाल होलावा, स्पष्ट होला ।
चुभ या घँसकर आर पार होना ।
खुलना । स्पष्ट होना ।

निबंध—(सं पुं) लव-छव इव
नोवावाटेक बन्ध निग्रम, अवक,
बचना ।

अच्छी तरह बाँधने की क्रिया
या भाव । बंधन । लेख ।

निबंधन—(सं पुं) बन्धन, काबन,
पञ्चो कवा ।

बाँधना । बंधन । कारण । पंजी-
कृत या रजिस्टरी होना ।

निबटना (बड़ना)—(क्रि अ)

निबड होवा, गमायि होवा ।
निपटना । निवृत्त होना । समाप्त
या खतम होना ।

निबेरना—[क्रि अ] पृथक् होना,
 झुक्त होना, बाधा, आँतबि
 योबा, गमाछ बा सम्पूर्ण होना ।
 अलग होना । मुक्त होना ।
 अङ्कन दूर होना । समाप्त या
 पूरा होना ।

निबहना—(क्रि अ) अव्याहति
 पोवा, निर्वाह होना, सम्पादन
 होना ।
 निभना । निर्वाह होना ।

निबहुरना—[क्रि अ] क'बबाटैल गै
 प्रतारर्तन नकवा ।
 कहीं जाकर वहाँसे न लौटना ।

निबाह—(सं पुं) निर्वाह, जीविका,
 आर्पण पालन ।
 निर्वाह । गुजारा । आज्ञा आदि
 का पालन ।

निबाहना—[क्रि स] निर्वाह कवा,
 झुक्त कवा ।
 निर्वाह करना । छुड़ाना ।

निबुक्कना—(क्रि अ) अव्याहति
 पोवा, अवरग पोवा ।
 कामसे छुट्टी पाना ।

निबेङ्कना, निबेरना, निबेहना—[क्रि स]
 दागझर पवा झुक्त कवा, झुक्ति
 दिया ।

वन्धनसे छुड़ाना । चुनना ।
 हटाना ।

निभ—(सं पुं) ज्योति, ज्योनाक ।
 प्रकाश । चमक । चन्द्रमा की
 चाँदनी । लपट ।
 (वि) गिठिगा, ठुला ।
 तुल्या ।

निभना—(क्रि अ) निर्वाह होना,
 अव्याहति पोवा, चलि थका ।
 गुजारा होना । छुट्टी या छुटकारा
 पाना । जारी या चलता रहना ।
 पूरा होना ।

निभरम—[वि] शंकाहीन ।
 शंका या भ्रम रहित ।
 (क्रि वि) निर्भये, शंकाहीन
 भावे ।
 बेघड़क ।

निभरोसी—(वि) आश्रयविहीन,
 निवाश्रय ।
 निराश्रय ।

निभाना—(क्रि स) पालन कवा,
 चरितार्थ कवा, निर्वाह कवा ।
 संबंध व्यवहार आदि ठीक तरह
 से चलाये रहना । चरितार्थ
 करना । चलाना ।

निधृत—(वि) निष्ठित, निश्चित,
अटल, शिब, शाख, डब।

निश्चित। अटल। स्थिर।
शांत। भरा हुआ।

निमंत्रण—(सं पुं) निमन्त्रण,
आश्वान, मत्ता कार्य।
आह्वान। न्योता। बुलावा।

निमंत्रना—(क्रि स) निमन्त्रण दिना।
निमंत्रण देना।

निमज्जन—(सं पुं) प्रानीत गा
छूबुबिगाई कबा न्नान।
गोता लगाकर स्नान।

निमज्जना—(क्रि अ) डूब नबा।
डूब दिना।
गोता लगाना। लीन होना।

निमान—(सं पुं) न ठाई, जलाशय।
नीचा स्थान। जलाशय।

निमाना—(वि) एल्लौया, नख,
विनीत।

नीचे की ओर गया हुआ।
ढालुआं। नम्र। विनीत।

निर्मानिया—[वि] स्वेच्छाचार।
मनमानी करने वाला।

निमानी—[सं स्त्री] स्वेच्छाचार।
मनमानी। स्वेच्छाचार।

निमि—(सं स्त्री) निमि गछ।
नीम वृक्ष।

निमिख, निमिष, निमेख—[सं पुं]
निमिष, निमेष।
निमेष।

निमोलन—[सं पुं] मुद योरा।
जपोरा।
मूंदना। सिकोड़ना।

निमुँहा—(वि) मुँहशीन, निमुँहा।
बिना मुँह का। जो बहुत बोलना
न जानता हो।

निमेखना—(क्रि स) निमिष कछ।
चक्रुब पलक पेलोरा।
पलक गिराना।

निमेष—[सं पुं] चक्रुब पलक
पेलोरा। चक्रुब पचाब गमान
गमय। मुहूर्त।

पलक गिराना या भपकना।
पल भर का समय।

निम्नगा—[सं स्त्री] नदी।
नदी।

नियंता—(सं पुं) निमायक,
चलाउंता, शासन करौंता।

नियम बनानेवाला। कार्य चलाने
वाला। शासक।

नियत—(वि) कोनो नियमादिब
द्वारा निर्दिष्ट । कोनो पद वा
कार्यात नियुक्त ।

नियम प्रथा आदि के द्वारा
निश्चित किया हुआ । पद, कार्य
आदि पर नियुक्त किया हुआ ।

नियति—[सं स्त्री] नियति—(इयाब
काम निर्दिष्टित वा लवच नहय),
भाग्य, अदृष्ट । नियुक्त होना
क्रिया ।

नियत होने की क्रिया या भाव ।
भाग्य । अदृष्ट ।

नियमतः—(क्रि वि) नियम मते ।
नियम के अनुसार ।

नियमन—(सं पुं) नियम बद्धन ।
नियम बद्ध करना ।

नियराना—(क्रि अ) उच होना ।
नजदीक होना ।

(क्रि स) उच चपोना ।
निकट पहुँचना ।

नियोज (सं स्त्री) ईच्छा, दीनता,
मुहलमानब अथार्थगुनवि मृतकब
उद्देश्य दिया डोख ।
इच्छा । दीनता । बड़ोंका प्रसाद ।
मुसलमानी प्रथा के अनुसार मृतक
के उद्देश्य से दिया जानेवाला
भोजन ।

नियामक—(सं पुं) नियमब द्वारा
आवक कबि बाथोता । नियम
करोता ।

नियम बनाने या नियमों में बांध
रखनेवाला । विधान बनाने
वाला ।

नियार— [सं पुं] गोणारीब
दोकानब जावब-जोखब ।
जोहरियों की दूकान का कूड़ा-
ककट ।

नियोक्ता— [सं पुं] नियोग
करोता ।
नियोग करनेवाला ।

नियोग—[सं पुं] नियुक्त, नियोग,
पतिब पना गन्धानोपति
नोहोरा अवस्थात गन्धान उपपतिब
बावे आन कोनो लोकक नियुक्त
कबि पुबनि अथा ।

नियोजित करना या किसी काम
में लगाना । प्राचीन काल की
वह प्रथा जिसमें पतिसे सन्तान
न होनेपर देवर या पतिके गोत्रज
दूसरे किसी व्यक्ति से सन्तान
उत्पन्न कराया जाता था ।

नियोजन—(सं पुं) नियुक्ति ।
नियुक्ति ।

निरंकुश—(वि) बाधा वा दमन
करने वाला नथका । मुकलि-
भूवीश ।

जिसके लिये कोई अंकुश या
रुकावट न हो । परम स्वच्छन्द ।

निरंग—(वि) अङ्गहीन, वर्णहीन ।
जिसके अंग न हो । वर्ण हीन ।

निरंजन—[वि] निर्मल, तेजोमय,
लज्जातिर्यय, अविनाशी ।

बिना ऑजन या काजल का ।
मायासे अलग । अविनाशी ।
(सं पुं) प्रबलेश्वर ।
परमात्मा ।

निरंजनो—[वि] निरञ्जन गङ्गाकी,
ब्रह्मदेव निरञ्जन कण्ठ उपासक ।
निरंजन सम्बन्धी । ईश्वरके निरं-
जन रूप का उपासक ।

(सं स्त्री) आरतिब प्राज्ञ ।
आरती का पात्र ।

निरक्ष-देश—(सं पुं) विषुव रेखाव
उत्तरव देश, य'त दिन राति
श्राव गमान्श्य ।

निरक्ष रेखा के पास के देश
जिनमें दिन और रात लगभग
बराबर होते हैं ।

निरक्षर—(वि) आश्रय छिनि नोपेक्षा
निबन्धन ।

जिसका अक्षर ज्ञान न हो ।
अपढ़ ।

निरक्ष रेखा--(सं स्त्री) विषुव
रेखा ।

पृथ्वी के मध्य की पूर्व पश्चिम
विस्तृत कल्पित रेखा ।

निरखना—(क्रि स) निरीक्षण करना ।
देखना ।

निरच्छ—[वि] अक्ष ।
अन्धा ।

निरत—(वि) कामत नागि धका,
लीन ।

किसी काममें लगा हुआ । लीन ।

निरतिशय—[वि] प्रबल, चरम,
यादृष्टिउत्कृष्ट ।

परम । सबसे बढ़कर ।

निरधार—[सं पुं] निश्चय ।
निश्चय ।

[क्रि वि] निश्चितकरण ।
निश्चित रूप से ।

निरधारना—[क्रि स] निर्धारण
करना, मन्दत बुद्धिलोका ।
निर्धारण या निश्चय करना ।
मनमें समझना ।

निरञ्ज—(वि) अग्नशीन, निवांशव ।
अञ्ज रहित । निराहार ।

निरपना—(वि) लोकब, आनब ।
पराया । गैर ।

निरपवाद—(वि) निरुलङ्घ ।
जिसमें कोई अपवाद या दोष न हो ।

निरपेक्ष—(वि) निरपेक्ष, प्रक्षप्रोत न थका ।
बे-परवा । तटस्थ ।

निरपेक्षता—[सं स्त्री] निरपेक्षता,
कार्बोकलीया नोहोदा ।
निरपेक्ष होने की अवस्था या भाव ।

निरवंसो—(वि) वंशहीन, निर्वंश ।
वंश हीन । निर्वंश ।

निरभिमान—[वि] निवशकाव ।
अहंकार रहित ।

निरभिलाष—[वि] कोना अलि-
लाष नथका ।
जिसमें कोई अभिलाषा न हो ।

निरञ्ज—[वि] येष शून्य ।
बिना बादल का ।

निरमना, निरमाना—(क्रि स)
निर्माण कवा ।
निर्माण करना ।

निरमूलना—[क्रि स] निर्मूल
कवा ।

निर्मूल करना ।

निरमोल (क) —[वि] अमूला ।
अनमोल ।

निरय—(सं पुं) नवक ।
नरक ।

निरर्थ, निरर्थक—(वि) निवर्थक,
अर्थहीन ।

जिसका कोई अर्थ न हो ।
निष्फल ।

निरवच्छिन्न—(वि) निवच्छव ।
सिलसिलेवार ।

निरवधि—[वि] याव कोना
निश्चित समय नाई, असीम ।
जिसकी कोई अवधि न हो ।
असीम ।

(क्रि वि) एकेबाहे ।
लगातार ।

निरवलम्ब—[वि] अवलम्बन शून,
याव कोना गशशक नाई ।
अवलम्ब हीन । जिसका कोई
सहायक न हो ।

निरवारना—[क्रि स] शूल कवा,
अवकाश निर्माण कवा ।

मुक्त करना । हटाना । निणय करना ।

निरबाहना—[क्रि अ] निर्वाह कबा ।
निर्वाह करना ।

निरशन—[सं पुं] उपवास । उपवास ।

निरस—(वि) नीबज, बगहीन ।
नीरस । रसहीन ।

निरसन—(सं पुं) दूर कबा, पूर्वव
गिक्काख वा आछा नाकच कबा,
निबाकबण ।

दूर करना । पहले का निश्चय
या आज्ञा आदि रह करना ।
निराकरण । परिहार । निका-
लना । पदच्युत करना ।

निरस्त—[वि] क्काल, विमुक्त ।
नाकच वा बंद कबा ।

जिसका निरसन हुआ या किया
गया हो । जो रद या व्यर्थ कर
दिया गया हो ।

निरस्त्रीकरण—(सं पुं) निबन्ध वा
अज्ञानी कबा कार्य ।

निरस्त करने की क्रिया या भाव ।

निरा—(वि) सूकीया, बिशुद्ध,
केवल, गमूदाय ।

बिना मेल का । खालिस
केवल । निपट । बिलकुल ।

निराई [सं स्त्री] निबोदा कार्य ।
थेतिब वन गुछाई पबिक्काब कबा
कार्य ।

निराने की क्रिया, भाव या
मजदूरी ।

निराकरण—[सं पुं] पृथकीकरण,
भावि छिच्छि ठिबाः कबा, निर्णय
कबा, नाकच कबा । मतब थणुन ।
अलग अलग करना । सोब
समझ कर ठीक निर्णय करना
या परिणाम निकालना । रह
करना । परिहार । किसी की
युक्ति का खंडन ।

निराट—[वि] बिशुद्ध, अकलशबीया
निबल, निर्जन ।
विशुद्ध । अकेला । निराला (स्थान)
निर्जन ।
(अव्य) सूकीया, केवल ।
निरा । केवल ।

निराटा—[वि] आचरित ।
अनोखा ।

निराधार—[वि] आधार हीन,
निर्मूल, यि आशानिक नहय, याब
गहायता कबोता नाई ।
जिसका कोई आधार न हो ।
निर्मूल । जो प्रमाणों से सिद्ध न

हो सके । जिसकी सहायता करनेवाला कोई न हो ।

निराना—(क्रि स) निरोग, श्वेतित वन छुटाई परिवर्तन कबा ।

पौधों के आस पास की घास निकालना ।

निरामय—[वि] निरोग । नीरोग ।

निराल—[वि] विशुद्ध, पवित्र । विशुद्ध । खालिस ।

निराला—(सं पुं) निबल ठाई । एकान्त स्थान ।

[वि] निर्जन, सम्पूर्ण बेलेग धरण ।

निर्जन । सबसे अलग तरह का । अद्भुत । विलक्षण । अनूठा ।

निराश्रुत—(वि) अनाश्रुत, टाकि नवथा ।

बिना ठँका हुआ ।

निरासी—[वि] उदास । उदास ।

निराहार—(वि) अनाहार । ब्रत, उपवास ।

जिसने भोजन न किया हो ।

जिसमें भोजन न किया जाता हो (व्रत आदि) ।

निरीक्षक—(सं पुं) छाँड़ना, निरीक्षण काबी ।

देखनेवाला । निरीक्षण या देख रेख करनेवाला । (इन्स्पेक्टर)

निरीक्षण—(सं पुं) छाँड़ना, छाँड़ना, छाँड़ना, छाँड़ना या छुड़ना । देखना । देख रेख । देखने की मुद्रा या ढंग ।

निरीश्वर—(वि) श्वेत विहीन । ईश्वर से रहित ।

निरुधारना—[क्रि स] निवारण कबा । दूर कबा ।

निवारण करना । दूर करना ।

निरुक्त—(वि) निश्चित भाव कोबा । निश्चित ।

निश्चित रूप से कहा हुआ ।

निश्चित किया हुआ ।

[सं पुं] छत्र वेदाङ्ग एविध-यत् वेदिक शब्द व्याख्या

पौरा याथ । शब्द व्याख्यापत्रि नगत् शब्दकृत व्याकरण अंश ।

छः वेदाङ्गोंमें से एक जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है । शब्दों की व्युत्पत्ति वाला व्याकरणका अंश ।

निरुक्ति—[सं स्त्री] शब्द व्याख्या, एविध अनङ्काव ।

शब्द की व्युत्पत्ति । एक अलं-
कार ।

निरुत्साह—(वि) उत्साहहीन ।
उत्साहहीन ।

निरुत्सुक— [वि] निरुत्सुकी ।
निरुत्सुक ।
जो उत्सुक न हो ।

निरुदन— (सं पुं) रासायनिक
प्रकार नाशवा उद्भिद आदि
प्रवा पानी भाग उलियाई
पेलोवा ।
रासायनिक तत्व या वनस्पति
आदि में से जल का अंश निका-
लना या मुखाना ।

निरुद्देश्य—[वि] उद्देश्यहीन ।
जिसका कोई उद्देश्य न हो ।
(क्रि वि) बिना उद्देश्य ।
बिना किसी उद्देश्य के ।

निरुद्यम— (वि) याब कोना
उद्यम वा काम नाई, अकर्षा ।
जिसके हाथमें कोई उद्यम या
काम न हो । निकम्मा ।

निरुपम—(वि) याब कोना उपमा
नाई । अनुपम ।
उपमा रहित । बेजोड़ ।

निरुपाधि (क)—[वि] यि गकलो
उपाधि, वस्त्र, वांश, आदि
प्रवा युक्त । सांसारिक माया-
जाल प्रवा युक्त ।

जो सब प्रकार की उपाधियों,
बन्धनों और बाधाओं से रहित
हो । सांसारिक माया जाल से
मुक्त । निर्विघ्न ।

[सं पुं] जन्मा ।
ब्रह्मा ।

निरुवरना—(क्रि अ) कठिन गमना
दूर होना ।
कठिनता या उलझन दूर होना ।

निरुवार— [सं पुं] एवोवा,
अव्यावृत्ति, गमना, अतिकार,
बीमारोग ।
छुड़ाना । छुटकारा । सुलझाने का
काम । निपटाना । फैसला ।

निरुद्ध—(सं पुं) उपग्रह, अग्निक,
विद्या मोहावा ।
उत्पन्न । प्रसिद्ध । बिन व्याहा ।

निरूपण— (सं पुं) भावि-चिह्नि
कवा निर्णय ।

सोच समझकर किया जानेवाला
विचार या निर्णय ।

निरूपना—(क्रि अ) निकषण कवा ।
निरूपण करना ।

निरेखना—(क्रि स) छावा ।
निरखना । देखना ।

निरोग (गी)—(सं पुं) नौदवाग,
शून्य, बोधहीन ।
स्वस्थ । चंगा । आरोग्य प्राप्त ।

निरोध—(मं पुं) बाधा, आटक,
अवबोध, खेद, नाश, छिन्नवृद्धि
प्रयत्न ।

रोक । रुकावट । अवरोध । घेरा ।
नाश । चित्त वृत्तियोको रोकना ।

निरोधक, निरोधी— [वि] आटक
काबी ।
रोकनेवाला ।

निर्ख—(सं पुं) दब-मान ।
भाव । दर ।

निर्खबदी— (स स्त्री) दब-मान
ठिक कवा ।
दर निश्चित करना ।

निर्गंध—(वि) गंधहीन ।
गंध रहित ।

निर्गत—(वि) उल्लावा, वाञ्छलावा ।
निकला या आया हुआ ।

निर्गमना—(क्रि अ) उल्लावा ।
निकलना ।

निर्गुण—(वि) गरु, बख, उग्र एह
तिनिष्ठपद बाहिर, शुद्धहीन ।
सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणों
से परे । गुण रहित ।

निर्गुणिया—(वि) निष्ठगै-निष्ठ
ब्रह्म उपासनाकाबी ।
निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने
वाला ।

निर्ग्रन्थ—(वि) अश्व लगत याव
कोनो ग्रन्थ न हो ।
जिसका ग्रन्थसे सम्बन्ध न हो ।

निर्धन—[सं पुं] विनाश, धूम्रश,
भूमिकम्प ।
विनाश । आँधी । भूकम्प ।
आघात ।

निर्धन— (वि) यत्नाशु नौठ
अश्रुतिशून्य ।

बहुत ही नीच प्रवृत्तिवाला ।
निर्जित—(वि) याव गम्पूर्ण कटप
जय कवा देखे ।
जो पूरी तरह से जीत लिया
गया हो ।

निर्जीव— [वि] जीव नशका,
आयुशून्य, निरुत्पन्ना ।
जीव रहित । अशक्त । उत्साह
हीन ।

निर्झर—[सं पुं] निखरा, झूँझि ।
पानीका झरना । सोता ।

निर्झरिणी—(सं स्त्री) नदी, निखरा ।
नदी । झरना ।

निर्णायक—(सं पुं) निर्णय
करवाता ।

वह जो निर्णय या फैसला करे ।

निर्द्वन्द्व—(वि) निवशङ्काव ।
अहंकार शून्य ।

निर्द्वै, निर्द्वयी—(वि) निर्द्वय, निर्द्वै ।
निर्द्वय । निष्ठुर ।

प्राप्त नथका, यि कोनो पलवन्न
नश्य, निवत्पन्न ।

जिसमें दल या पत्र न हो । जो
किसी दल में न हो । तटस्थ ।

निर्द्वहना—(क्रि स) छटनावा ।
जलाना ।

निर्द्वैद्व (द्व)—(वि) विरोधहीन,
विरोध भाव शून्य ।

जिसका विरोध करनेवाला कोई
न हो । स्वच्छन्द ।

निर्धधा—[वि] छाविका नथका ।
बे-रोजगार ।

निर्धारण—[सं पुं] निर्णय, मोमांसा ।
कोई बात निश्चित करना ।
न्याय में एक ही प्रकार के बहुत से

पदार्थों में से गुण, कर्म आदि की
समानता के आधार पर अलग
अलग वर्ग बनाना ।

निर्धारना—(क्रि अ) निर्णय कवा ।
निश्चित करना ।

निर्धूत—(वि) डालटक ढोवा,
शुद्ध । पवित्र ।

अच्छी तरह धुला हुआ । स्वच्छ ।

निर्निमेष—(क्रि वि) अनिमिश्र वा
अनिमेष ।
एकटक ।

(वि) चक्रव पठाव नपवा ।

जिसकी या जिसमें पलक न गिरे ।

निर्बहना—(क्रि अ) पाव होवा ।
पार होना । अलग या दूर होना ।
पालन होना ।

निर्बाध (धित)—[वि] बाधा हीन ।
बाधा रहित ।

(क्रि वि) बाधाहीन भावे ।
बिना किसी बाधा के ।

निर्बाध—[वि] अछान ।
अज्ञान ।

निर्भर—(वि) पूर्ण, मिलित,
आश्रित ।
पूर्ण । मिला हुआ । आश्रित ।

निर्भात—[वि] बांछहीन, अवांछ ।
जिसमें कोई भ्रम या सन्देह न हो । जिसको कोई भ्रम या सन्देह न हो ।

निर्मत्सर—[वि] श्रेयहीन ।
जिमके मन में मत्सर या ईर्ष्या-
डाह न हो ।

निर्मम—(वि) निर्द्वेष, निर्धन,
निष्काय, निर्दयतापूर्ण ।
जिसे ममता या मोह न हो ।
निर्मोही । निष्काम । निर्दयता-
पूर्ण ।

निर्माणा—[क्रि स] निर्माप कर्ता ।
बनाना ।

निर्माल्य—(सं पुं) देवताव
उद्देश्य अर्पित पदार्थ ।
किसी देवता पर चढ़ा हुआ
पदार्थ ।

निर्मोही—(वि) भावाशय
नोद्देशी ।
जिसे मोह या ममता न हो ।

निर्यात—(सं पुं) बस्थानि वञ्च ।
देश से बाहर जानेवाला माल ।
[वि] बस्थानि ।
जो देशके बाहर भेजा गया हो ।

निर्यातन—(सं पुं) पोटेक,
अतिशिंगा, उन्मीजन, बस्थानि
कर्ता, भावि पेलोदा ।

बदला लेना । अत्याचार करना ।
भार डालना । निर्यात करना ।

निर्यास—[सं पुं] वग, गाव ।
रस । गोंद ।

निर्लिप्त—[वि] अनागच्छ, लेष्टा
नथका ।
अनामकन ।

निर्वंश—[वि] वंश नथका । एक
वांश वंश लोप वा उच्छन्न
होवा ।

जिसका वंश नष्ट हो गया हो ।

निर्वचन—(सं पुं) निरूपण, शब्द
निरुक्ति वा व्युत्पत्ति ।

निरूपण । शब्द की निरुक्ति
या व्युत्पत्ति ।

[वि] श्रुत योन ।
चुप । मोन ।

निर्वसन—(वि) वस्त्रहीन, उलङ्घ ।
वस्त्रहीन । तंगा ।

निर्वहना—[क्रि अ] निर्वाह होवा ।
निर्वाह होना ।

निर्वाचक—(सं पुं) निवर्तकवादी ।
चुननेवाला ।

निर्वाण—[सं पुं] शून्यता, कार्य,
गमाप्ति, अष्ट बोधा, श्रुता,
श्रुति ।
बुझना । समाप्ति । अस्त होना ।
मृत्यु । मुक्ति ।

निर्वाण—(सं पुं) शून्यता, कार्य,
विनाश, गमाप्ति कर्ता ।
बुझने या बुझाने का काम ।
विनाश । अन्त या समाप्ति
करना ।

निर्वासन—(सं पुं) देशाश्रय ।
मार डालना देश निकाला ।

निर्वाह—[सं पुं] क्रम वा प्रव-
त्तवा निर्वाह, पालन, गमाप्ति ।
क्रम या परम्परा का चलता
रहना । पालन । समाप्ति ।

निर्विकल्प—(वि) छात्र याव
छेद्यव भेद नोद्योता, अज्ञान
लगत एकौट्टत ।
जिसमें विकल्प या भेद न हो ।
स्थिर । निश्चित ।

निर्विघ्न—(वि) निर्विघ्न, बाधाहीन ।
जिसमें विघ्न या बाधा न हो ।
(क्रि वि) निर्विघ्न, बाधाहीन
भाव ।

बिना किसी विघ्न बाधा के ।

निर्विरोध—[वि] अविरोध ।
विरोधहीन ।

जिसमें कोई बाधा, विरोध या
रुकावट न हो ।

(क्रि वि) अविरोध । बिना विरोध
बिना किसी बाधा या रुकावट के ।

निर्वीर्य—[वि] वीर्याहीन । शून्य ।
वीर्य हीन । अशक्त । कमजोर ।

निर्वेद—(सं पुं) उपमान, वेद,
वैवाग्ग्य, मग्न उन्मादीनता वा
विषमता ।

अपमान । खेद । वैराग्य । मनकी
उदासीनता या खिन्नता । विरक्ति ।

निर्वैर—(वि) शत्रु नशक ।

वैर या द्वेष से रहित ।

निर्व्याज—(वि) अकण्ठ, वाक्-
विघ्नरहित ।

निष्कण्ठ । विघ्न या बाधा से
रहित ।

निसय—(सं पुं) शय, ठाई ।

मकान । स्थान ।

निवर्त्तन—[सं पुं] नियम आदि
उठाई लोढा वा दातिल कर्ता ।
विधान आदि का अन्त करना ।
कानून रद्द करना ।

निवसना—(क्रि अ) वास कर्ता ।

निवास करना ।

निवार—(सं स्त्री) पालेडब किछे ।

पलंग बुनने की मोटे सूतकी पट्टी ।

निवारना—[क्रि स] निवारण कवा ।

निवारण करना ।

निवारी—(सं स्त्री) युति कुल ।

जूही की तरह नफेद फूलों का एक पौधा ।

निवाला—[सं पुं] भातव ग्राह्य ।

भोजन का कोर ।

निविड़—[वि] देख । बब घन वा

डाँठ । गड्डीव ।

घोर । घना । गम्भीर ।

निविष्ट—(वि । एकाग्र, बशी,

आवद्ध ।

जिमका चित्त एकाग्र हो । ठह-

राया या रखा हुआ । बाँधा

हुआ ।

निवृत्ति—(सं स्त्री) मुक्ति, मोक्ष,

अव्याप्ति, ईच्छा ।

मुक्ति । मोक्ष । छुटकारा । पदसे

सदा के लिये हट जाना ।

निवेदना—(क्रि स) निवेदन कवा,

अर्पण कवा ।

निवेदन करना । अर्पित या भेंट

करना ।

निशंक—(वि) निर्भय ।

निर्भय ।

निशंग, निषंग—[सं पुं] शङ्का,

बलि कटो ना ।

तरकश । खड्ग ।

निशांत—(सं पुं) रातिव अदगान,

रातिप्रवा ।

रात का अन्त । तड़का ।

निशा—[सं स्त्री] निशा, राति ।

रात ।

निशाकर—(सं पुं) छत्र ।

चन्द्रमा ।

निशा-खातिर—(सं स्त्री) निश्चिन्ता,

आश्रय होवा ।

निश्चिन्तता । इतमीनान ।

निशान—[सं पुं] छिन्न, बुढ़ा-

याङ्गजिव छिन । छिक्ना,

प्रताका, नागनेबा ।

बना या बनाया हुआ चिह्न ।

अंगूठे का चिह्न । पता । एक

प्रकार का बहुत बड़ा भण्डा ।

नगाड़ा ।

निशाना—(सं पुं) लक्ष्य, आनक

लक्ष्य कबि कवा आक्रमण ।

लक्ष्य । किसी को लक्ष्यकर उस

पर बार करने की क्रिया ।

निशानाथ, निशापति, निशिकर,
निशानाथ, निशेश. — [सं पुं]

छत्र ।

चन्द्रमा ।

निशानी—[सं स्त्री] श्रुति दिन ।
श्रुति, छिह ।

स्मृतिचिह्न । यादगार । चिह्न ।

निशान ।

निशास्ता—[सं पुं] देखें आवक ।
गाव, धन्य, ताहान ।

गेहूँ या आटे का जमाया हुआ सत
या गूदा । कलफ ।

निशि—(सं स्त्री) राति ।
रात ।

निशिवासर—[क्रि वि] राति दिन ।
जमाय ।

रात दिन । सदा ।

निशीथ—[सं पुं] माखराति ।
रात ।

निश्चल—[वि] शिब, अचल ।
स्थिर । अटल ।

निश्चेष्ट—(वि) छिछाशून्य, अचल,
शिब ।

बेहोश । निश्चल । स्थिर ।

निश्छल—(वि) गबल अकृतिब ।
सरल प्रकृति का ।

निश्शंक—(वि) निर्भय ।

निःशंक । निर्भय ।

निश्शेष—(वि) गशाष्ट, निःशेष ।
समाप्त । निःशेष ।

निषाद—(सं पुं) प्राचीन अनार्या
जाति, गङ्गातट गण्डम आर्य
उद्धतय श्व ।

एक प्राचीन अनार्य जाति ।
संगीत में सातवाँ और सबसे
ऊँचा स्वर ।

निषादी—[सं पुं] माऊत ।
हाथीवान ।

निषिक्त—(वि) याव डितबत
कोनो वस्तु डबाई दिया टैहछे ।
जिसके अन्दर कोई चीज भरी
गयी हो ।

निषेक—(सं पुं) छट्टियाई दिया ।
डूबोरा, गर्डबाबन कबोरा ।
अलुबत शक्ति गकाव कबा ।

छिड़कना । डुबाना । अरक उता-
रना । गर्भ धारण करना । किसी
के अन्दर कोई चीज या शक्ति
भरना ।

निषेधात्मक—[वि] निषेधात्मक,
निषेध अर्थ श्रुतक ।

जिसमें निषेध या मनाही की गयी हो। नकारात्मक।

निषेधाधिकार—(सं पुं) मनाहि।

नामजूर कराव कथता।
किसी प्रस्तावित कार्य को पहले से ही अमान्य या अस्वीकृत करके रोकने का अधिकार।

निष्कंप—(वि) शिव।

स्थिर।

निष्क (सं पुं) वैदिक काल

एविश लोणव मूला।

वैदिक काल का सोने का एक सिक्का।

निष्कपट—(वि) अकंपते, गबल।

छल रहित। सरल।

निष्करुण—[वि] निदय, कर्कश-

विहीन।

करुणारहित।

निष्कर्ष—(सं पुं) जावकथा।

मूल कथा।

सारांश। सार।

निष्काम—(वि) कामना नथका,

स्वार्थ नथका।

जिसके मनमें कोई कामना न हो। बिना किसी कामना के किया जानेवाला काम।

निष्कासन—(सं पुं) बाहिब करा कार्य।

निकालना। बाहर करना।

निष्क्रमण—(सं पुं) बाहिब शै योवा कार्य।

बाहर निकलना।

निष्क्रय—(सं पुं) बेतन, कति-प्रबण। उवा मूला।

वेतन। बदला। किसी वस्तु के बदले दिया जानेवाला धन।

निष्क्रांत—[वि] मूळ, बाहिब शै थका।

मुक्त। निकाला हुआ।

निष्ठ—(वि) तत्पर, निष्ठा वा श्रद्धामूळ।

ठहरा हुआ। तत्पर। किसी के प्रति निष्ठा, श्रद्धा या भक्ति रखनेवाला।

निष्ण, निष्णात—(वि) कोटना विषय अगाध पंडित।

किसी विषय का पूरा पण्डित।

निष्पक्ष—[वि] पक्षहीन, निरपेक्ष।

तटस्थ। पक्षपात रहित।

निष्पन्न—(वि) जन्म, शैव मोबांश। जो आज्ञा, नियम, निश्चय आदि

के अनुसार पूरा किया जा चुका हो ।

निष्प्रभ—(वि) प्रकाश वा शक्ति शून्य । निष्प्रभ । उज्ज्वलताहीन । प्रभा रहित । शक्तिहीन ।

निसंक—(वि) निर्भय । निःशंक । निर्भय ।

निसँठ—(वि) छुथीया । निर्धन ।

निसतरना—(क्रि अ) निखार पोता, बर्फ़ प्रवा । निस्तार या छुटकारा पाना ।

निस-दिन, निसिदिन—(क्रि वि) दिनब'ति, अश-बश । दिन और रात । सदा ।

निसबत—(सं स्त्री) गश्क़, देव-शिक गश्क़, तुलना । सम्बन्ध । लगाव । मँगनी । तुलना । मुकाबला ।

निसरना—(क्रि अ) उलिउरा, निःश्रुत । होरा । निकलना । निःसृत होना ।

निसरावन—[सं पुं] शिक्षा । ब्राह्मण को दिया जानेवाला कच्चा अन्न ।

निसर्ग—(सं पुं) अकृति, कर्ण, मान, श्रुति ।

प्रकृति । रूप । दान । सृष्टि ।

-निसाँस (१) निसास—(सं पुं) दीर्घबास । दीर्घस्वास ।

(वि) श्वासहीन, श्वत्वाश । जिसमें साँस न हो । मृतप्राय ।

निसुका—(वि) श्वाँगा, श्वत्वांगा । गरीब । बेचारा ।

निसृष्ट—(वि) एका वा उलियाई ब'था, प'ठोवा, दिया । छोड़ा या निकाला हुआ । भेजा हुआ । दिया हुआ ।

निस्तंद्र—(वि) तन्द्राहीन, जाग्रत । जिसे तन्द्रा न आयी या न आती हो । जाग्रत ।

निस्तरंग—[वि] तबद्धहीन, शांति । तरंग रहित । शांत ।

निस्तरना—(क्रि अ) निखार पोता, उक्ताव होरा । निस्तार या छुटकारा पाना ।

निसृष्ट—(वि) श्रृंश नथका, ईच्छा वा वांछा नथका । निर्लोभ ।

निष्क—(वि) आश ।

आषा ।

निस्वन—[सं पुं] श्वनि ।

ध्वनि ।

निस्संग—(वि) निगूढ , अकल-
शरीरा, विषय-वासनाबन्ध
विबद्ध ।

अकेला । विषय वासनाओं से
रहित । निर्जन ।

निस्सरण—(सं पुं) बाहिर् ओलारा
पथ, ओलारा ।

निकलनेका मार्ग । निकलना ।

निस्सार—(वि) अगाध, गांभीर्य ।
सार रहित । जिसमें काम की
बात न हो ।

निहंग (म)—[वि] अकलशरीरा,
शरीर लगत गम्भीर नावाशि
अकल थाटकाता, उलझ,
निगूढ ।

एकाकी । स्त्री से सम्बन्ध न रखने
और अकेला रहनेवाला । गगन ।
निर्लज्ज ।

(सं पुं) शिखरकलन एक
गम्भीर ।

सिक्खों का एक सम्प्रदाय ।

निहंग-लाडला—[वि] आनन्द ।

जो दुलार के कारण स्वेच्छावारी
हो गया हो ।

निहकरमी—[वि] कर्मबन्धित,
निजिष्ठ ।

जो कर्मों से रहित या अलिप्त हो ।

निहत्था—[वि] शत नथका,
शतत कोटिना अथ नथका,
शत शत ।

जिसका हाथ न हो । जिसके
हाथमें कोई हथियार न हो ।

निहाई—(सं स्त्री) निगाबि ।

लोहे का वह आधार जिसपर
सोना, लोहार आदि कोई चीज
रखकर हथौड़े से पीटते हैं ।

निहायत—[वि] अतास्त, बहुत,
नितास्त ।

अत्यंत । बहुत ।

निहार—(सं पुं) कुँवली, नीठ,
शिव, निग्रह ।

कुहरा । ओस । हिम ।

निहारना—[क्रि स] छावा ।
देखना ।

निहास—(वि) पूर्ण काम, गूढ ।
पूर्ण काम ।

निहासी—[सं स्त्री] गादी, लेप,
निगावि ।

गद्दा । रजाई । निहाई ।

निहित (वि) निहित, याक
थोरा हैछे, भित्तबत सोमाई
थका वा नुकाई थका ।

कहीं या किसी के अन्दर रखा,
पड़ा या छिपा हुआ ।

निहुरना—(क्रि अ) ढों खोरा ।
भुकना ।

निहोरना—[क्रि स] कोनो
काबणे आर्षना कबा, गच्छे कबा
कृतज्ञ होरा, खोचामति कबा ।

किसी बात के लिये प्रार्थना
करना । मनाना । कृतज्ञ होना ।
खुशामद करना ।

निहोरा—[सं पुं] उपकार,
कृतज्ञता, आश्रय ।

एहसान । कृतज्ञता । प्रार्थना ।
सहाय ।

[क्रि वि] शरा, काबणे,
निमित्ते ।

द्वारा । के लिये । वास्ते ।

नीह—[सं स्त्री] टोपनि, झुमटि ।
निद्रा ।

नीवू—[सं पुं] नेमू वा नेमुटेडा ।
एक प्रकार का खट्टा रसदार
फल ।

नीव—[सं स्त्री] डोटी, आबछनि,
मूल, आधाव ।

भित्ति । किसी वस्तु या कार्य का
प्रारंभिक भाग । मूल । आधार ।

नीक (१)—[वि] ভাল, উৎকৃষ্ট ।
उत्तम । बढ़िया ।
[सं पुं] উৎকৃষ্টতা ।
उत्तमता ।

नीके—(क्रि वि) ভালদবে ।
अच्छी तरह ।

नीच—[वि] निकट, अधम, बेग्या,
झूठे बाबूह ।

जाति, गुण आदि में घटकर या
कम । अधम । बुरा ।

नीचा—(वि) চাপব, নিম্ন, দোঁ-
खोरा, मध्व, झुझ ।

गहरा । निम्न । झुका हुआ ।
घोमा । झुझ ।

नीचाशय—[वि] झुझ, गंकीर्ण ।
झुझ ।

नीचे—[क्रि वि] তলফালে, তল
খাপব, অধীনস্থ ।

निम्न तल की ओर । तुलना में
घटकर या कम । अधीनता या
मातृहता में ।

नीङ्—[सं पुं] छाशैव वाह,
आशयश्चल ।

चिड़ियों का घोंसला । ठहरने या
रहने का स्थान ।

नीतिज्ञ—(वि) बोधि वा दृष्टव ज्ञान ।
नीति जाननेवाला ।

नीप—[सं पुं] कदम्ब वा कदम्ब गृह ।
कदम्ब का पेड़ ।

नीम—[सं पुं] निम्ब गृह ।
एक पेड़ जिसके सभी अंग कड़वे
होते हैं ।

(वि) आधा ।

आधा ।

नीमा—[सं पुं] तलत पिक्का एविश
साज वा पोचाक ।
एक पहनावा ।

नीयत—(सं स्त्री) उद्देश्य, आशय ।
आशय । मंशा ।

नीर—(सं पुं) पानी, तबल पदार्थ
वा बग ।

पानी । तरल पदार्थ या रस ।

नीरज—(सं पुं) पानीत उष्णम,
पद्म, मुकुता ।

जल में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ ।
कमल । मोती ।

नीरद्—(सं पुं) मेघ ।

बादल ।

[वि] पानी दिवता, फाँट
नथका ।

जल देनेवाला । बे-दाँतका ।

नीरधर—[सं पुं] मेघ ।
मेघ ।

नीराञ्जन, नीराजन—(सं पुं)

देवताओं की आराधना ।

देवता की आरती ।

नीराञ्जनी—[सं स्त्री] आराधिता
पत्नी ।

आरती का पात्र ।

नीरा—(सं पुं) तालव बग, ताड़ ।

ताड़ का रस ।

(क्रि वि) उचलते, काँचते ।

समीप । पास ।

नीराजना—(क्रि क) आराधना करना,
अथवा यदि बछि-काँचि चिकुण
करा ।

आरती करना । शस्त्र आदि
साफ करके चमकाना ।

नील—[वि] नील वस्त्रोष्ण ।

नीले रंग का ।

(सं पुं) नीला रंग । एते

गन्धान्ध प्रविशान् ।

नीला रंग । एक पोषा । सी
वरब की संख्या ।

नीलकण्ठ—(वि) नीलकण्ठ, याव
गल नील रवगोष्ठा ।

नीले गलेवाला ।

(सं पुं) मशामेद । गयुव ।

नीलकण्ठ पत्नी ।

शिव । मोर । एक प्रकार की
चिड़िया ।

नीलगाय—(सं स्त्री) नीलगाय,
ज्जली श्विना ।

एक प्रकार का पहाड़ी हिरन ।

नीलम—(सं पुं) नीलम, बहु-
मूलोष्ठा मणि । नीलकाष्ठ मणि ।
नील मणि ।

(सं स्त्री) तबोदाल विदेश ।

एक प्रकारकी तलवार ।

नीलांबर—[सं पुं] नीला रङ्ग
कापोष, नीलाकाश ।

नीले रंग का कपड़ा । नीला
आकाश ।

नीलांबुज, नीलोत्पल, नीलोफर—
[सं पुं] नीला पद्म ।

नीला कमल ।

नीला—(वि) नीला ।

नील के रंग का ।

नीलिमा—(सं स्त्री) नीला रङ्गीश ।
नीलापन । श्यामता ।

नीवि, नीवी—[सं स्त्री] पण्डे
आदिब कर्कालत गांठि दिशा
रठी व । ज्वी ।

कमर में लपेटी धोती की गांठ ।

कमर पर कपड़े को बाँधने की
डोरी ।

नीहार—[सं पुं] बरफ, ऊँबलि ।
कुहरा । पाला । हिम ।

नीहारिका—(सं स्त्री) नीहारिका ।
आकाश में दूर तक कुहरे की
तरह फैला हुआ प्रकाश पुंज ।

नुकता—(सं पुं) बिन्दू ।
बिन्दी ।

नुकता-चीनी—[सं स्त्री] दोष-
कोटि ।
छिद्रान्वेषण । ऐब या दोष निका-
लना ।

नुकसान—[सं पुं] नुकसान,
हानि, शारीरिक क्षति ।
हानि । कमी । घाटा । शारीरिक
क्षति ।

नुकीला—[वि] खोडाल, खोड
थका ।

जिसमें नोक हो । बांका तिरछा ।

नुकड़—(सं पुं) थब अथवा बांछान
आगटेल उजाई थका कोथा ।

मकान या गली का या रास्ते पर
आगेकी ओर निकला हुआ कोन ।

नुक्स—(सं पुं) दोष ।
दोष । ऐब ।

नुफा—(सं पुं) बौर्या, गश्न ।
बीर्य । मन्तान ।

नुमाईदा—(सं पुं) प्रतिनिधि ।
प्रतिनिधि ।

नुमाइश—(सं स्त्री) अदर्शनी,
झाक-झमक, टाक-टिका ।
प्रदर्शन । तड़क भड़क । प्रदर्शनी ।

नुसखा, नुस्खा—(सं पुं) वेशाबीक
उषध आदि लिखि दिया कागज ।
कोनो वस्तु तैयार कर,
पद्धति ।

वह कागज जिसपर रोगी के लिये
औषध और उसकी सेवन विधि
लिखी रहती है । किसी चीज के
बनाने की पद्धति या गुर । व्यय
का अवसर या योग ।

नुपूर—[सं पुं] गेपूर, नूपूर ।
धुंधुल । पंजनी ।

नूर—[सं पुं] ख्याति अथवा ।
ज्योति । कान्ति ।

नूह—(सं पुं) श्वेतेन याव मुहल-
नान गहनत एकन पयगंधर
अथवा देवदूत ।

ईसाइयों, मुसलमानों आदि के
अनुसार एक पैगम्बर ।

नृत्त—[सं पुं] नृगच्छत अथ नृत्यपत्र
अभिनय ।

उच्च कोटि का सुसंस्कृत अभि-
नय ।

नृपति(नि)नृपाळ—(सं पुं) राजा ।
राजा ।

नृवंश—(सं पुं) मनुष्य वंश ।
मानव वंश ।

नृशंस—[वि] निर्दूष, अत्याचारी
कूर । अत्याचारी ।

नेक—[वि] ताल ।
भला । अच्छा ।

[क्रि वि] अजग ।
तनिक ।

नेक-चलन—[वि] मद्गच्छावी, भद्र ।
सदाचारी ।

नेक-नाम—[वि] कीर्तिमान ।
कीर्तिशाली ।

नेक-नीयत—[वि] ভাল স্বভাব,
গুণস্বভাব ।

अच्छी नीयत या संकल्प वाला ।
उत्तम विचारोंवाला ।

नेकी—(सं स्त्री) गङ्गल, গঙ্গলতা ।
भलाई । सज्जनता ।

नेकु—(वि) अनपथ ।
तनिक भी ।

नेग, नेगचार (जोग)—[सं पुं]
विश्रा आदि माण्डलिक कार्यर
गमयत ईष्टे क्रूरैव आरु आश्रित
गकलक टेन। पशेछा मिश्रा नियम ।
गङ्गक, গুচন গঙ্গকীয় ।

विवाहादि शुभ अवसरों पर
सम्बन्धियों और आश्रितों को
कुछ धन देने की प्रथा । रीति ।
निकटता । सम्बन्ध ।

नेगी—(सं पुं) माण्डलिक कार्यर
गमयत धन पालन अधिकारी ।
नेग पानेका अधिकारी प्रबंधक ।

नेजा—(सं पुं) বলগ, বর্না, যাঠী ।
भाला । बरछा ।

नेत—[सं पुं] शांतीव मथिवटेल
बादशाह कवा जवो, निर्दाबण ।

गङ्गक, बादशा, एविश अलकाव ।
मथानी की रस्सी । निर्धारण ।
सकल्प व्यवस्था । एक प्रकार
का कहना ।

(सं स्त्री) ওবনি, স্বভাব ।
ओढ़नी । नीयत ।

नेति—(सं पुं) [न श्ति] याव
अस्तु नाई प्रबोधा ।

जिसका अन्त नहीं हो । पर-
मात्मा ।

नेत्र—(सं पुं) চকু ।
आँख ।

नेपथ्य [सं पुं] नेपथा ।
रंगमंच के पीछे का स्थान ।

नेम—(सं पुं) नियम, बीति ।
धार्मिक नियम पालन ।

नियम । रीति । धार्मिक क्रियाओं
का पालन ।

नेमि—[सं स्त्री] চকর ঘূরণ, নাদব
পানী জুবলি ।

पहिये का चक्कर । कुएकी जनत ।

नेमी—[वि] नियम पालन करेता,
निर्मात भावे धर्म कार्य
करेता ।

नियम का पालन करनेवाला ।

नियमित रूप से धार्मिक कृत्य
करनेवाला ।

नेवतना—(क्रि स) निश्चय प्रिया ।
न्योता देना ।

नेवर—(सं पुं) नेत्रब ।
घुँघरू । पाजेब ।
(वि) बेग़ा ।
बुरा ।

नेवरना—[क्रि अ] नाईकीया
होना, निवृत्त होना ।
निवारण होना । समाप्त होना ।
निवृत्त होना, छूटना ।

नेवडा—(सं पुं) नेटेल ।
गिलहरी की तरह का एक जन्तु ।

नेवाज—(वि) कृपा करनेवाला,
प्रशंसील ।

निवाज । कृपा करनेवाला ।

नेवाना—(क्रि स) मूव दाँडना ।
भुकाना ।

नेवारी—(सं स्त्री) नेवालौ ।
सफेद फूलवाला एक पौधा ।

नेसुक—[क्रि वि] अलप ।
तनिक । जरा ।
(वि) अलपमान ।
थोड़ा सा ।

नस्त-नाबूद—[वि] सम्पूर्ण भाव
नष्ट होना ।

पूरी तरहसे नष्ट भ्रष्ट ।

नेह—[सं पुं] स्नेह, प्रेम, तेल ।
स्नेह । प्रेम । तेल ।

नेहरा, नेहार—(सं पुं) स्नेह,
मन्य ।
स्नेह ।

नेही—[वि] प्रेमी, मन्यो ।
स्नेही ।

नै—(सं स्त्री) नियम, नली, बाँध
नला, शंकाब नली, बाँधी ।
नय । नीति । नदी । बाँसकी
नली । हुक्के की निगाली ।
बाँसुरी ।

नैक (कु)—(क्रि वि) अलप ।
तनिक । थोड़ा सा ।

नैचकी—(सं स्त्री) डाल गाँह ।
बढ़िया गाय ।

नैचा—[सं पुं] नलिचा ।
हुक्का पीने की लचीली नली ।

नैत—(क्रि अ) डाल ख़ुबि वा
ख़ुदाग ।

अच्छा मौका । सुअवसर ।

नैन [सं पुं] ठक, अग़ास, मारन ।
नयन । नेत्र । अन्याय । मक्खन ।

नैनूँ—(सं पुं) मांखन ।
मखन ।

नैपुण्य—[सं पुं] दक्षता ।
दक्षता ।

नैमित्तिक—(वि) यि कारवा
निमित्त अथवा कोनो विशेष
उद्देश्य निमित्त बाबे कबा हय,
नैमित्तिक ।

जो किसी निमित्त से या कोई
विशेष उद्देश्य सिद्ध करने के
लिये किया गया अथवा हुआ
हो ।

नैया—(सं स्त्री) नाव ।
नाव ।

नैयायिक—[वि] न्याय शास्त्र
अभिज्ञ, नैय्यायिक ।
न्याय शास्त्र का ज्ञाता ।

नैऋत—(सं पुं) बाक्क, दक्षिण-
पश्चिम कोण ।

राक्षस । दक्षिण पश्चिम कोण ।

नैर्मल्य—[सं पुं] निर्मलता ।
निर्मलता ।

नैवेद्य—(सं पुं) नैवेद्य, देवता
कावण उर्ग्री कबा भोग
आदि ।

देवता को अर्पित किया जानेवाला
खाद्य पदार्थ । भोग ।

नैश—[वि] रातिर, राति
गश्कौर ।

रात का । निशा सम्बन्धी ।

नैष्ठिक—(वि) नैष्ठिक, निर्ठावान ।
निष्ठा सम्बन्धी । निष्ठावान ।

नैसर्गिक—[वि] प्राकृतिक, स्वाभा-
विक ।
प्राकृतिक । स्वाभाविक ।

नैहर—(सं पुं) पित्रालय, माकर
घर ।
पीहर । मायका ।

नोक—(सं स्त्री) छोट ।

बहुत पतला सिरा । आगे की
ओर निकला हुआ पतला या
सूक्ष्म भाग ।

नोक झोंक—(सं स्त्री) गाछान-
काछान, बाग, निजर भितर
होवा आच्छाप ।

बनाव सिंगार । तेज । व्यंग्य ।
आपस में होनेवाले आक्षेप ।

नोच-खसोट—[सं स्त्री] टेना,-
आछोरा ।
छीना भपटी ।

नोचना—[क्रि स] नाशि थका
बख आखूबि छिडा । नथ अथवा
फाँटतेवे छिडा ।
लगी हुई वस्तु भटके से तोड़कर
अलग करना । नाखूनों या दाँतों
से उखाड़ना ।

[सं पुं] छलि उडला चियठा ।
बाल उखाड़ने का चिमटी ।

नोट—(सं पुं) मन्त्र थाकिब
बावे चयूटेक लिखि मोबा
टोका । छिठि । टिङ्गौ, चबकावे
उलिउबा टकाव नोटे ।

ध्यान रखने के लिये टोंकने या
लिख लेनेका काम । पत्र ।
टिप्पणी । सरकार द्वारा चलाया
हुआ अर्थ पत्र ।

नोन—[सं पुं] निमथ । लोण ।
नमक ।

नोना—[सं पुं] लोणा नाछि,
आटेकल ।
नोनी मिट्टी । शरीफा । सीता-
फल ।

[वि] नूनीया ।
नमकीन ।

नोनिया—[सं पुं] निमथ ठेयार
कबा एठो जाति ।

नमक बनाने वाली एक जाति ।

नोवना—[क्रि स] गाँदे शिवावर
मययत पिछु डबित वक्ता ।
गाय दूहते वक्त पिछले पैर
बाँधना ।

नोहरा—(वि) छूर्लड, विलक्षण,
विचित्र ।
अलभ्य । विलक्षण ।

नौ—(वि) नबर मन्थ्या ।
नौका या जल सम्बन्धी ।

नौकर—(सं पुं) ठाकुर ।
वैतनिक कर्मचारी । सेवन ।

नौकरी—[सं स्त्री] ठाकुरि ।
नौकर का काम । सेवा । वह पद
या काम जिसके लिये वेतन
मिलता हो ।

नौका—[सं स्त्री] नाव ।
नाव ।

नौग्रही—(सं स्त्री) नवग्रह शक्ति
बावे गलठ पिक्का एविश
अलकाव ।

नौ ग्रहों की शान्ति के लिये गले
में पहनने का एक गहना ।

नौछावर—(सं स्त्री) उइर्गी,
उइगर्ग । उत्सर्ग ।

नौज—(अय्य) जेवटे नरुवक,
नशुक ।

ईश्वर न करे । न हो । न सही ।

नौजवान—(वि) नवयुवक ।
नवयुवक ।

नौटंकी—(सं स्त्री) एक प्रकार
नाटक ।

एक तरहका नाटक ।

नौतरण—[सं पुं] जल-यात्रा ।
जल यात्रा ।

नौता—[वि] नटून ।
नवीन । ताजा ।

(सं स्त्री) नवता ।
नवता ।

नौबत—(सं स्त्री) बाब, पगी,
जस्टवाग, बहलबनि, नशवत ।
बारी । दशा । संयोग । मंगल
सूचक शहनाई आदि बाजे ।

नौबत खाना—(सं पुं) नशवत
बजावो ठाँह ।
जहाँ नौबत बजती है ।

नौमि—(पद) नई नमस्कार अनाँउ ।
में नमस्कार करता हूँ ।

नौरंग—(सं पुं) सूर्यकिरा, नटून
रंग अथवा आत्मान-आत्मान ।

नारंगी । नया रंग या आमोद
प्रमोद ।

नौलखा—[वि] ९ लाख मूलाब, बह-
मूलीश ।

नौ लाख मूल्य का । बहु मूल्य ।

नौसर—[सं पुं] धूँठ ।
धूँतता । जालसाजी ।

नौसरिया—[वि] धूँठ ।
धूँत । जालसाज ।

नौसिखुआ—(वि) न शिकार ।
जिसे अभी नया नया का सीखा
हो ।

नौ-सेना—[सं स्त्री] नौ-जैन ।
बह सेना जो जहाजों पर रहकर
नदी या समुद्र में युद्ध करती है ।

न्यस्त—(वि) अस्त, अपिठ,
अपिठ, बाछि जखोदा ।
रखा या धरा हुआ । स्थापित ।
चुनकर सजाया हुआ । छोड़ा
हुआ । जमा किया हुआ ।

न्यासि—(सं स्त्री) जाति ।
जाति ।

न्यामस—[सं स्त्री] धुव डाल,
बहमूलीश अथवा फूल डाल पदार्थ ।
बहुत अच्छा, बहुमूल्य या बलम्भ
पदार्थ ।

न्याय कर्ता—(सं पुं) शांश कर्ता ।

न्याय करनेवाला अधिकारी ।

न्यायतः—(क्रि वि) शाश्वतवि,
ठीक ।

न्याय के अनुसार । ठीक ठीक ।

न्याय परता—[सं स्त्री] शाश्वतमता ।
न्यायशीलता ।

न्याय-संगत—[वि] शाश्वत, उचित ।
न्याय, औचित्य, अधिकार आदि
की दृष्टि से ठीक ।

न्यायाधीश—(सं पुं) शाश्वतीश,
न्यायालयनयन विचारक ।

न्यायालय का विचारक या जज ।

न्यारा—(वि) शृथक, यना, विच्छिन्न ।
अलग । दूर । अन्य । निराला ।

न्यास—(सं पुं) वशा, नाग,
कोनो विशेष कार्यवा वादे
गच्छित गच्छति वा धन ।

रक्षना । धरोहर । किसी विशेष
कार्य के लिये निकाली या किसी
को सौंपी हुई सम्पत्ति या धन ।
न्यास ।

न्यून—(वि) कम, अनन्य ।
कम । थोड़ा । घटकर ।

न्यूनतम—[वि] गकलनाउटेक कम,
नृगणतम ।

जितना कम हो सकता हो ।

न्योछावर—(सं स्त्री) उद्गर्ग ।
बलि दिया ।

निछावर । उत्सर्ग । बलिजाना ।

न्योता—[सं पुं] निमन्त्रण ।
बुलावा । निमन्त्रण ।

नहाना—(क्रि अ) शाश्वत ।

नहाना । स्नान करना ।

[वि] गक, केकूटा ।

नन्हा । छोटा ।

प

प—देवनागरी वर्णमाला २१ नं
आश्व, शक्र शेषतः व्याख्या
है। [१] आशी अथवा बका कर्ता
आर (२) पान करेता, बाँता
अर्थ है, येने :- भूप=भूमि
पानन करेता। मृगप=मृग
बाँता।

देवनागरी वर्णमाला का इक्कीसवाँ
वर्ण। शब्दों के अन्त में इसका
व्यवहार [१] पति अथवा रक्षा
या पालन करनेवाला और (२)
पीनेवाला, अर्थ में होता है।
जैसे—भूप। मृगप।

पंक—[सं पुं] बोका।
कीचड़।

पंकज—(सं पुं) कमल, पद्म।
कमल।

पंकिल—(वि) बोकाशुल, मलिन।
जिसमें कीचड़ हो। मलिन।

पंक्ति—(सं स्त्री) शारी, बेधा,
एकलगे शीव वहा लोक
गकन।

कतार। लकीर। साथ बैठकर
भोजन करनेवाले लोग।

पंख—(सं पुं) आशि। डेटुका।
पर। डैना।

पंखड़ी, पंखुड़ी—(सं स्त्री) कुलव
आशि।
पुष्प-दल।

पंखा—(सं पुं) विहनि।
हवा करेवाला बेना।

पंखी—(सं पुं) छाई।
पक्षी।

(सं स्त्री) पतङ्ग, आशि, गद
विहनि।

पतंग। पंख। छोटा पंखा।

पँखुडा—(सं पुं) गाबूश्व शरीरव
काक आरु हातव ज्ञावा ।
कंधे और बांह का जोड़ ।

पंगत [ति] —[सं स्त्री] शरीर,
गयाँछ, एकैलगा शीव बहा
लोक गकल ।

कतार । एक साथ बैठकर भोजन
करनेवालों का वर्ग । समाज ।

पंगु, पंगुल—[वि] धोबा ।
लंगड़ा ।

पंच—(सं पुं) ५ व संख्या, समूह;
पञ्चांगत, गायत्रि विचारव बावे
निबुद्ध कबा बाङ्गि ।

पाँच की संख्या । ममुदाय । न्याय
करनेवाला । समाज हार-जीत
औचित्य-अनौचित्य का निर्णय
करने के लिये नियत किया हुआ
व्यक्ति ।

पंचकन्या—(सं स्त्री) अश्लया,
क्षोपदी, कुसुमा, तावा, श्लो-
मदीक पञ्चकन्या बुजि कय ।
अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा
और मंदोदरी-ये पाँच स्त्रियाँ
जो हमेशा कन्या के समान मानी

पंचगंगा—(सं स्त्री) गङ्गा, यमुना,
गवशती, किरणा आरु
धूतपापा—एहे पाँचटा नदीव
गङ्गम ।

गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा
और धूतपापा इन पाँच नदियों
का संगम ।

पंचगव्य—(सं पुं) गव्य पबा
उत्पन्न होवा—दूध, एवा-
गाशीव, घिटे, गोबर आरु गो-
मूत एहे ५ विश बड्ड ।

गी से उत्पन्न होनेवाले-दूध, दही
घी, गोबर और गो-मूत्र ये पाँच
द्रव्य ।

पंचतत्त्व—(सं पुं) पृथिवी, पानी,
तेज (शक्ति) वायु आरु
आकाश । पञ्चभूत ।

पृथ्वी, जल, तेज, वायु और
आकाश । पंच भूत ।

पंचत्व—[सं पुं] श्रुता, पञ्चभूतत
लय ।

पाँच का भाव । मोत ।

पंचनद—(सं पुं) पञ्चाव नदय
विपागा, ईवावती, चण्डावा

पंजाब की सतलज, व्यास, रावी,
चनाव और झेलम ये पाँच
नदियाँ। पंजाब प्रदेश।

पंचनामा—[सं पुं] न्याय विचारक
निर्वाचनर समयत बादी आरु
विवादीर स्वीकृति पत्र। पक्षग्रन्थ
बाबा सिद्धान्त कर्ता वा निर्णय
दिग्गज आख्या पत्र।

पाँच चुनने के समय वादी प्रति-
वादी का स्वीकृति पत्र। पंचों
द्वारा फैसला लिखा हुआ कागज।

पंचपात्र—(सं पुं) पूजा के बाद
वाङ्मय गिलास वा लोटा के
नद्वे गरु पात्र।

पूजा के काम के लिये गिलास
की तरह का एक छोटा पात्र।

पंचप्राण—[सं पुं] शरीर के
अपान, उदान, प्राण, व्यान
आरु मनान, एहे पाँच अकार
वायु।

शरीर में रहनेवाले-अपान, उदान
प्राण, व्यान और समान, ये पाँच
प्राण।

पंच-मकार—(सं पुं) म आश्वदेवे
आवृत्त वायु मार्ग ५ विश

आशिला—म, मांस, माह,
मुद्रा आरु मेथुन।

वाम मार्ग में—मद्य, मांस, मत्स्य,
मुद्रा और मेथुन।

पंचमांग—[सं पुं] शङ्ख बाज्यत
उपद्रव कर्ता चोराऽचोरा पक्ष।
शत्रु के राज्यमें उपद्रव आदि करने
वाला जासूस वर्ग।

[वि] पक्ष्य नादिनी।
पंचमांगी।

पंचमेल—(वि) पाँचविध वस्तु
मिलि धका, मकल्ला अकार
वस्तु मिश्रित होना।

जिसमें पाँच प्रकार की चीजें
मिली हुई हों। जिसमें सब प्रकार
की चीजें हों।

पंचरंग(१)—[वि] पाँच रंग, वस्तु
वस्तु।

पाँच रंगों का। अनेक रंगों का।

पंचरत्न—(सं पुं) गोप, शीवा,
नीलकाण्ठ, लाल आरु मुकुटा एहे
पाँचवस्तु।

सोना, हीरा, नीलम, लाल और
मोती ये पाँच रत्न।

पंचसङ्का—(सं पुं) पाँच धातु
[मणि, शङ्ख, आदि]
पाँच लङ्गों का।

पंचवाण—(सं पुं) कामदेव
और शंभु, कामदेव ।

कामदेवके पाँच वाण । कामदेव ।

पंचशर—[सं पुं] कामदेव,
कामदेवके निष्कप कबा शर ।

कामदेव । कामदेव के पाँचवाण ।

पंचांग—[सं पुं] औंठ अक्ष
विशिष्ट बख्त, प्रशिक्षा ।

पाँच अंगोंवाली वस्तु । पत्रा ।

पंचाग्नि—[सं स्त्री] एक प्रकार
उपग्राह, औंठ प्रकार अग्नि
गृह ।

एक प्रकार की तपस्या । पाँच
प्रकार की अग्नियाँ ।

पंचानन—(वि) औंठ मुखीया, शिव ।

पाँच मुँहोंवाला ।

(सं पुं) शिव, गिरि ।

शिव । सिंह ।

पंचामृत—(सं पुं) दूध, अमृत,
गन्धक, शि, चैनि और मोर
गन्धक ।

दूध, दही, घी, चीनी और शहद
मिलाकर देवताओं के स्नान के
लिये बनाया जानेवाला पदार्थ
जिसे पवित्र मानकर पीया जाता
है ।

पंचायती—(वि) प्रकाशित,
बाख़्ख़ा ।

पंचायत का । सामे का ।

पंचाल—(सं पुं) हिमालय और
छत्तलर माथर उपत्यकाक प्राचीन
नाम, शिव ।

हिमालय और चम्बल के बीच के
भू भाग का प्राचीन नाम । शिव ।

पंचालिका—(सं स्त्री) पूतला,
अभिनेत्री, नटी ।

गुड़िया । अभिनेत्री । नटी ।

पंचाली—(सं स्त्री) पूतला, ज्योपदी,
प्रकाश लेशर तिलोत्ता ।

गुड़िया । द्रौपदी । पंचाल देश की
स्त्री ।

पंछा—(सं पुं) बा आदि प्रवा
उल्लास विषयानी ।

घाव आदि से पानी की तरह
निकलनेवाला स्राव ।

पंछी—(सं स्त्री) चवाई ।
चिड़िया ।

पंजर—(सं पुं) ककाल, शरीर,
भिषवा ।

ठठरी । कंकाल । शरीर ।
पिंजड़ा ।

पंजा—(सं पुं) शत अथवा डबि
पौचोटी आङ्गुलिब समूह, पंजा,
ठाँठर पात—पौचोटी बूटा वा
ठिन थका ।

हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों
का समूह । उँगलियों या हथेली
का संपुट । ताश का वह पत्ता
जिसपर पाँच बूटियाँ होती हैं ।

पंजिका-पंजी—[सं स्त्री] पञ्जिका,
हिचाव बधा बही, घुबगौशाटक
मेबाई थोरा दीवल कागजब
झुवा ।

पंचांग । हिसाब या त्रिवरण
लिखने की पुस्तिका । गोलाई में
लिपटा लम्बे कागज का मुट्ठा ।

पंजीबन—[सं पुं] बहीत निपि
बद्ध कबा, नामब तालिकात नाम
आदि लिखा ।

पंजीमें लिखा जाना । नाम सूची
में नाम लिखा या चढ़ाया जाना ।

पंजीरी—(सं स्त्री) आटा शिउत
भाजि तैयार कबा एविश मिठा
शुवि ।

आटे को घी में भूनकर बनाया
जानेवाला मीठा चूर्ण ।

पंहा—[सं पुं] पाठा, तीर्थ, मन्दिर
आदि देखुठरा बारगात्रिक
बाजि ।

किसी तीर्थ या मन्दिर में यात्रियों
को देव दर्शन करानेवाला व्यक्ति ।

पंहाल—[सं पुं] चाशियाना,
डाडब मङ्गप ।

उत्सवादि के लिये बनाया गया
बड़ा मंडप ।

पंडिताई—(सं स्त्री) विद्वता,
पंडितानि, पंडितब बारगात्र ।
विद्वता । पंडितों का काम या
व्यवसाय ।

पंडिताऊ—[वि] पंडिताभिमानी,
पंडितब दरेब ।

पंडितों की तरह या ढंग का ।

पंडुक—[सं पुं] पाब चबाशेब दरेब
एविश चबाई ।

कबूतर की तरह का एक पक्षी ।
(स्त्री पंडुकी) ।

पंथ—(सं पुं) पंथ, सम्प्रदाय,
आचार बारशाब बीति ।

मार्ग । आचार व्यवहार का ढंग ।
सम्प्रदाय ।

पंथी—(सं पुं) पथिक, कोटोना
गच्छन्नाय अथवा मतावनशी ।

पथिक । किसी सम्प्रदाय या पंथ
का अनुयायी ।

पंथ—(सं स्त्री) शिक्षा अथवा
उपदेश ।

शिक्षा या उपदेश ।

पंथा—(सं स्त्री) दक्षिण भावत
एति प्रुवति नदी वा ताव पावत
थका एथन नगर वा प्रुथुबी ।

दक्षिण भारत की एक प्राचीन
नदी । इस नदी के तट का एक
नगर या सरोवर ।

पँवरिया—(सं पुं) माङ्गलिक
कार्यार गमयत गौत गौता एटा
छाति ।

मंगल अवसरों पर गीत गानेवाली
एक जाति ।

पँवाड़ा—(सं पुं) अनाशकत कवा
तर्क, एक प्रकारब लोकगीत ।

व्यथ की बकबाद । एक प्रकार
का देहाती गीत ।

पँसारी—(सं पुं) गेलागालब
दोकानी ।

मिचं, मसाले बेचनेवाला बनिया ।

पकड़—(सं स्त्री) धर, धर-पाकर,
गालझुंझ ।

पकड़ने की क्रिया या भाव ।
पकड़ने का ढँग । भिड्न्त ।

पकड़ना—(क्रि अ) धरा, ग्रहण कवा,
धरव डलिउवा, आक्रमण कवा ।

धरना । ग्रहण करना । पता
लगाना । आक्रान्त करना । किसी
चलनेवाली चीज तक पहुँचकर
चढ़ना ।

पकना—(क्रि अ) पका, रूपक
होवा, गिक्ति होवा, गिजा, गृष्ट
होवा ।

फल आदि का पुष्ट होकर खाने
योग्य होना । आग पर सीकना ।
फोड़े में पीबभर आना । पक्का
या दृढ होना । (क्रि स-पकाना)

पकवान—(सं पुं) शिउत भजा
अथवा शिउतेव तैयारी मिठाई ।
घीमें तड़ा या घीसे पकाया हुआ
कोई खाद्य पदार्थ ।

पकौड़ा—[सं पुं] बर भजा, नेचन
आमिदेव तैयारी गरु गरु बर
भजाव पदेव थोवा वस्त ।

बेसन आदि को छोटे छोटे टुकड़े

के रूपमें तलकर बनाया जाने वाला एक पक्षवान ।

पक्षा—(सं पुं) पक्षा, पृष्ठ, निश्चित क्रांतिहीन, आशेनब दृष्टिब आमा-विक ।

पुष्ट । जो आग पर पकाया गया हो । मजबूत । निश्चित । त्रुटिहीन । जिसे अभ्यास हो । कानून या विधि की दृष्टि से मान्य और प्रामाणिक । अटल ।

पक्षी रसोई—(सं स्त्री) चिडे डेल आमिटव बका थोदा पदार्थ ।
साध पदार्थ ।

पक्ष—(वि) अपक्ष, पृष्ठ, परिविष्ट ।
पका हुआ । दृढ़ । परिपुष्ट ।

पक्षाशय—[सं पुं] आकाशय,
आकाशलि ।

पेटके अन्दर का वह स्थान जहाँ पहुँचकर अन्न पचता है ।

पक्षपात—[सं पुं] पक्षपात,
कोटना एक पक्षब फलीया होरा, अवलंब विपरीत आर्ष-बुद्ध मांशुशब एदल वा एजनक एबि आन दल वा जनक गशाश-
भूति देखूरा ।

मीचित्य या न्याय का विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनु-रूप होनेवाली प्रवृत्ति या सहानु-भूति और उस पक्ष का समर्थन ।

पक्षपातो—(वि) पक्षपाती ।
तरफदार ।

पक्षाघात—(सं पुं) बातवाग, अर्काक्री ।
अर्वाग होना ।

पक्षो—[सं पुं] पक्षी, चबाई । पक्ष-
पाती ।

चिड़िया । तरफदार ।
(वि) चबाई गश्कीय, पक्षब ।
पक्ष सम्बन्धी । पक्षका ।

पख—(सं स्त्री) बाधा, क्रांति ।
अङ्गा । बखेड़ा । त्रुटि ।

पखवाड़ा—[सं पुं] पक्ष ।
पन्द्रह दिनों का समय ।

पखारना—(क्रि स) खोरा ।
घोना ।

पखावज—(सं स्त्री) श्रद्ध ।
मृदंग ।

पखेरू—[सं पुं] चबाई ।
चिड़िया ।

पग—(सं पुं) शोध, भवि ।
पाँव । कदम । डग ।

पगड डो—(सं स्त्री) जरू बांछा,
लोक ।

जगलों या खेतों में का पतला
रास्ता ।

पगड़ी—[सं स्त्री] पांछवी, उग्रहाव
गाईवा आंग्रधन कपे दिशा धन ।
सिरपर बांधा जानेवाला साफा ।
नजराना ।

पगतरी—(सं स्त्री) ज्ञोता ।
जूता ।

पगना—(क्रि अ) ध्रम वा बट्ठवे पूर्व,
निमग्न होवा, लीन होवा,
पगा ।
शरबत या शीरे मे पागा जाना ।
प्रेम या रस में पूर्ण होना ।

पगार—(सं पुं) चोशदर वेव,
बेतन, छपिगाई पाव हव पवा
नदी, गाटिब लेण आदि, एविध
मुकूट ।
चहार दीवारी । पैरों से कुचली
हुई मिट्टी या गारा । सिरपेच ।

पगुराना—[क्रि अ] पांछलिउवा,
बोगइ कवा ।
पागुर या जुगाली करना ।

पचा—[सं पुं] पचा, गरू गाई बक्रा
जरी वा बशी ।

गाय भेंस के गले में बांधी जाने
वाली मोटी रस्सी ।

पचड़ा—(सं पुं) ज्ञान, एकध-
कावव गीत ।
भंभट । बखेड़ा । एक प्रकार
का गीत ।

पचना—[क्रि अ] दृश्य होवा,
गमाथु होवा, आनव वस्तु निखर
कवा, ध्रम कवि भांगवि पवा ।
हजम होना । समाप्त या नष्ट
होना । पराया माल छिपाकर
अपना कर लेना । परिश्रम कर
हैरान होना । खपना ।
(क्रि स- पचाना)

पचास—[वि] पक्षांश ।

पचासा—(सं पुं) ५० टा वस्तु
गमुह, जबरवी कालीन अदृश्यात
टिपाशी अथवा पूंलठ आदिक
मातिबटैल बजोवा घंटा ।
एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं
का समूह । जरूरी स्थितिमें
सिपाहियों को बुलाने के लिये
बजाया जानेवाला थाने का
घंटा ।

पचीस—(वि) पँचिष ।
बीस और पाँच ।

पचीसी—[सं स्त्री] अँचिनविध
बख्तर गमूश, बगबर आबखिक
२० बख्तर, पोशा खेनब गुँटि ।
पचीस वस्तुओं का समूह । आयु
के प्रारंभिक पचीस वर्ष । चौसर
खेलने की गोटी ।

पचड़ (र) - [सं पुं] काठन बड़
मालिवटेल गड़ा बाँह यँवा
काँठन मला ।

लकड़ी की वह गुल्ली जो काठ की
चीजों को कसने के लिये उनमें
ठोकी जाती है ।

पक्षी—(सं स्त्री) हज्जन कबा वा
कबोवा कार्य, अलकाब गंवार
एक प्रकार नियम ।

पचने या पचाने की क्रिया या
भाव । जड़ाव का एक प्रकार ।

पक्षीकारी—(सं स्त्री) एक बकम
बाख्तर उपरत अहेन बडब बाख्तर
खटोवा कला । एने प्रणेने
तेयार होवा कामकार्य ।
पक्षी करने की क्रिया या भाव ।
पक्षी करके तैयार किया हुआ
काम ।

पछाड़ना—(क्रि अ) पिछ्पनि
बोवा ।

पछाड़ा जाना । पिछड़ा जाना ।

पछताना—(क्रि अ) अझताप
कबा ।

पश्चात्ताप करना ।

पछतावा—(सं पुं) अझताप ।
पश्चात्ताप ।

पछवाँ—(सं पुं) पछोवा, पन्चि-
गर प्रिनर ।
पश्चिम की ओर का ।

पछाड़—(सं स्त्री) अछानदेश
वा (शोक आदि) मूर्छित है
परि टांगा, मल्लशुक्रव एटी पेट ।
पछाड़ने या पछड़ने की क्रिया या
भाव । बेसुध या मूर्छित हाकर
गिर पडना ।

पछाड़ना—[क्रि म] मल्लशुक्रव
बिपक्ष योद्धाक माँटित पेलाई
दिया, अतिव्योगितात बिपक्ष-
दलक पवांत कबा, कापोर धुवर
गमयत ज़ोब ज़ोबटोक आछाब
नवा ।

कुत्ती में बिपक्षी को जमीनपर
पटकना या गिराना । प्रतियो-
गिता में बिपक्षी को हराना ।
कपड़ा धोते समय जोर जोर से
पटकना ।

पछावर—[सं पुं] बोलैबे तैयारी
एक प्रकार चबवत ।

छाछ का बना एक प्रकार का
पेय पदार्थ ।

पछोड़न—(सं स्त्री) (कुलादे खादि
उलिउवा) धान आदि शराव
खावब-खाथव, पतान आदि ।

अनाज आदि का कूड़ा-ककंट, जो
उन्हें पछोड़ने पर निकलता है ।

पछोड़ना—(क्रि स) कुलादे खादि ।
सूप आदि से फटकना ।

पजरना—[क्रि अ] जला, जलि उठा ।
जलना । (क्रि स-पजाड़ना) ।

पटंबर—(सं पुं) पोतिव कापोव ।
रेशमी कपड़ा ।

पट—(सं पुं) पटे, कापोव,
पर्फा, दूबाव, छिउकलाव बावे
गखा लेखनी आदि ।

कपड़ा । परदा । लेख या चित्र
आदि अंकित करने के लिये धातु
आदि का लम्बा टुकड़ा । दरवाजे
का किवाड़ ।

पटकना—[क्रि स] खोबेबे टका
दि पेलोवा । माँटित पेलोई
दिवा ।

जोर से झोंका देते हुए गिराना ।
जमीन पर पछाड़ना ।

(क्रि अ) अङ्कुरित होवा, अकटे
होवा ।

अंकुरित होना । प्रकट होना ।

पटका—(सं पुं) टडालि ।
कमर बन्द ।

पटकान—[सं स्त्री] आछादि
पेलोवा कार्य अथवा डार ।

पटकने या पटके जाने की क्रिया
या भाव ।

पटतर—(सं पुं) गमानडा, उभमा ।
समानता । उपमा ।

(वि) गनतल ।
समतल ।

पटना—[क्रि अ] खाल आदि
मादि उब ठाई गमान कवा,
कोनो ठाईत कोनो बड
खुब नेछि डारव लग लगा । तैयार
कवा । निश्चित कवा । गम्पूर्ण
आदाय कवा (धाव) । पानी
गिछा ।

गड्डे आदि का भरकर ऊँचे तलका
बराबर हो जाना । किसी स्थान
में किसी वस्तु का बहुत अधिक

मात्रा में इकट्ठा होना । दीवारों पर छत बनाना । खेतका सींचा जाना । लेन-देन में मूल्य या शर्तें निश्चिन होना । ऋण चुकाना ।

पटपटाना—[क्रि अ] डोक प्रियाइ अथवा गबर यापित कठे पोदा, अठे अठे अथ शोदा, दूःख अकान कवा ।

भूख प्यास या गरमी आदि से कष्ट पाना । पट पट शब्द होना । खेद या दुःख करना ।

पटरा—(सं पुं) काठब तछा, नीरा, चालपोरा, काठ का तल्ला । पीड़ा ।

पट-रानी—[सं स्त्री] पाटबानी पाटिगाटेन ।

राजा की प्रथम विवाहित रानी जो सिंहासन पर उनके साथ बैठती हो ।

पटरी—[सं स्त्री] गरु आरु पातल तछा, काठा फलि-बाठाव छुशा काटे माछुइ यावव वाटे तैयार कवा पथ, फिता, दूबी, बेल लाईन ।

छोटा और हलका पटरा । लिखने की तस्ती । रास्तेके दोनों ओर पदल चलने के लिये बनाया गया भाग । सुनहले रुपहले तारों से बना हुआ फीता । हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी । लोहे के बने समानान्तर छड़ जिस पर रेलगाड़ी चलती है ।

पटल—(सं पुं) घबर चाल, आवरण, थाप, थलपी, अथगात्र, चानेकि टकुर पलक ।

छप्पर । आवरण । परत । पहल । आँख की भीतरी बनावट के परदे । तल्ला । अध्याय । पंखड़ी । समूह ।

पटबारी—(सं पुं) गाँवबूढ़ा अथवा चबकावी कर्मचारी वह सरकारी अधिकारी जो गाँव की जमीन, उपज और लगान आदि का हिसाब-किताब रखता है ।

(सं स्त्री) बागीक अलकाव, काटपोर आदि भिक्काई दिया जागी ।

रानियों को गहने, कपड़े आदि पहनानेवाली दासी ।

पटसन—(सं पुं) गवां पाठे ।

एक पौधा जिसके रेखे से रस्सी
बोरे आदि बनते हैं । पाट ।

पटह—(सं पुं) झन्नुडि, नागेश्वर ।
दुन्दुभी । नगाड़ा ।

पटा—(सं पुं) तबोवांलव आक्रम-
णव पत्रा बन्का पावटेल बावशाव
कबा लोशाव कवट । चाल । गौवा,
काणोव, चापव, पांशुबि, पद-
प्राप्त ठिक कबा ।

तलवार के बार से बचावके लिये
लोहे की पट्टी । पीड़ा । वस्त्र ।
दुपट्टा । पगड़ी । सीदा पटने की
क्रिया या भाव ।

पटाका (खा)—(सं पुं) फटका,
फटकाव शब्द, छव ।

पटाक का शब्द । एक प्रकार की
आतशबाजी । थप्पड़ ।

पटाक्षेप—[सं पुं] दृष्ट पविर्बर्धन,
कोनो वटनाव गमांशि ।

नाटक का दृश्य समाप्त होनेपर
परदे का गिरना । किसी घटना
की समाप्ति ।

पटाना—(क्रि सं) शव गलाव काव
कबावा, शव पविर्लोश कबा..

पद-प्राप्त ठिक कबा, आनक
निषव अशकूल कबा ।

पाटने का काम दूसरे से कराना ।
ऋण चुकाना । सीदा या उसका
दाम ठीक करना । किसी को
अपने ऊपर प्रसन्न या अपने अनु-
कूल करना ।

[क्रि अ] शांति टेश वश ।
शान्त होकर बैठना ।

पटिया—(सं स्त्री) कलि, चाल-
गौवाव चोकाठव काठ ।
फलक । खाट के चौखटे में बगल
की लकड़ी ।

पटो—[सं पुं] वेणुव आदिब
बावे कबा दीवल काणोव,
पांशुबि, नाटकव पट्टा ।
कण्डे आदि की लम्बी घञ्जी ।
कमरबन्द । पगड़ी । नाटक का
परदा ।

पटीलना—(क्रि सं) ठगा, ठिक
पथटेल पना ।

ढंगपर लाना । ठगना ।

पटु—(वि) पट्टे, कुशल, छत्र ।
प्रवीण । कुशल । चतुर ।

पटुआ—[सं पुं] पाठे ।
पाट ।

पटेबाज—(वि) बाजिदारी, छूटे ।

भूमिबारी और धूर्त ।

पटेक—[सं पुं] गौवन मुखियाल,
बाजि ।

गाँव का नम्बरदार या मुखिया ।

पटोरी—(सं स्त्री) पाटेब शायी
वा हुरीश ।

रेशमी साड़ी या धोती ।

पटोल—[सं पुं] एकप्रकार का
पाटेब काटोब, पटल ।

एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।
परबल ।

पटोसिर—(सं पुं) मुरत नका
काटोब, मुर नका ।

सिर पर बाँधने का कपड़ा ।

पटौनी—[सं स्त्री] धव गजा काया ।
पटने या पाटने की क्रिया या
भाव ।

पट्ट—(सं पुं) गौवा, ताग्रपत्र
आदि बाज्जाज्जाब वाटेब बावकृत
बद्ध, ठाल, जिंशगन, नाब
आदि लिखा काठे वा टिनब
टूकूवा । (चाइनवार्ड)

पीढा । पटरी । धातु की वह
चिपटी पट्टी जिसपर राजाज्ञा

या दान आदि की सनद खोदी
जाती थी । काठ या धातु का
वह बड़ा टुकड़ा जिसपर नाम
या सूचनाएँ लिखी या लगायी
जाती है । डाल । सिहासन ।

पट्टन—[सं पुं] नगर ।
नगर ।

पट्ट-महिषी—[सं स्त्री] पाटेबाटेप ।
पटरानी ।

पट्टा—(सं पुं) पट्टी, अधिकार-
पत्र, एकप्रकार का तबोदान,
शलब झुल्ला कावब दीवल ठूलि,
छायवाब किता ।

अधिकार पत्र । सनद । चमड़े का
लम्बा तसमा या फीना । गले के
दोनों ओर के लम्बे लम्बे बाल ।
एक प्रकार की तलवार ।

पट्टी—(सं स्त्री) क'ठन टूकूवा,
फलि. पाठ, उपदण्ण, वेसा
भाटेब दिया प्रवागण. बिठाई,
कोटोना गण्णद्धिब दण ।

पटिया । तस्ती । पाठ । उपदेश ।
बुरी नीयत से दी जानेवाली
सलाह । एक प्रकार की मिठाई ।
किसी सम्पत्तिका भाग ।

पट्टीदार—[सं पुं] अस्त्र-व, गणेशाश्री ।

हिस्सेदार । बराबरका अधिकारी

पट्टेदार—(सं पुं) पट्टा जिंशारे नाटि लेखन वाक्कि ।

जिसने पट्टा लिखाकर कोई जमीन ली हो ।

पट्टा—(सं पुं) सुवक, गेहका, नम योका, आशु, डाडव-नीबल वाक्कि ।

जवान । तरुण । अक्काडिया । स्नायु । लम्बा और दलदार मोटा पत्ता ।

पठान—[सं पुं] एति मुछलमान जाति, पाठान । एक मुसलमान जाति ।

पठार—[सं पुं] वेछि उथल सम-तल माटि-माल भूमि, एति प्राशबी जाति । बहुत ऊँचाई पर की समतल जमीन । एक पहाड़ी जाति ।

पठावन—(सं पुं) वृत्त । वृत्त ।

पठिया—[सं स्त्री] सुवडो, गबल अथ डिबोडा । जवान और तगड़ी स्त्री ।

पट्टताल—(सं स्त्री) प्रभुगकान, विचार ।

अनुसंधान । जाँच ।

पट्टनी—(सं स्त्री) अतिव उप-योश्री छन परि धका नाटि । जोतने-बोने योग्य वह जमीन, जो जोरी-बोई न गयी हो

पट्टना—(क्रि अ) पठित होवा । छुथ, कहेइ छुर्यानि मि धवा । डिबोडा, आवाग कवा, आठ-णक होवा ।

पतित होना । दुख, कष्ट का भार आदि ऊपर आना । ठहरना । आराम करना । रास्ते में होना । आवश्यकता या गरज होना ।

पट्टपोता, परपोता—(सं पुं) नातिव न'वा ।

पोता या नाती का लडका ।

पट्टवा—(सं पुं) बंदव पोडानी । भेस का नर बच्चा । (सं स्त्री—पडिया) ।

पट्टाव—[सं पुं] नाटिक्यार जिवनि वर । प्रयादाव आशय मूल । जिवनि मूल ।

पैदल यात्रा के समय कही बीच में कुछ समय के लिये ठहरना । यात्रियों के ठहरने का स्थान ।

पड़ोस—(सं पुं) ७८व-पौखर,
पैठिकावबर ठाई।
किसी स्थान के आस पास का
स्थान।

पड़ोसी—[सं पुं] ७८व छुबूरीया।
पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़ना—(क्रि स) पढ़ा, अध्यायन
कबा। मञ्ज उक्तावण कबा।
बीछ कबा। मुखइ कबा।
अध्ययन करना। बाँचना। मंज
उच्चारण कर फुंकना। जादू
करना। शब्दों को रटना।

पढ़ाई—[सं स्त्री] पढ़न, विद्या-
ज्ञान, पढ़ावा पढ़ावा बावे
पौवा धन, अध्यापन।
विद्याभ्यास। पढ़ने के या पढ़ाने
के बदले में मिलनेवाला धन।
अध्यापन।

पढ़ाना—(क्रि स) पढ़ावा, निष्का
पिना।
शिक्षा देना। कोई कला सिखाना,
समझाना।

पढ़ैया—[सं पुं] पाठक, पढ़ू देव।
पढ़नेवाला।

पूज—(सं पुं) पूजा, ठिका आदिब
छठ वा छुडि। गणपति,

बेपावर बड्ड।
जूबा। ठेके आदि की शर्त।
सम्पत्ति। व्यापार या व्यापार
की वस्तु। दहेज आदि देने की
करारें।

पण्य—(वि) बेचा किनाब बागा।
जो खरीदा-बेचा जा सके।

(सं पुं) बलावड्ड, बलाब,
दोकान। किना बेचाब बड्ड।
सौदा। व्यापार। बाजार।
दूकान।

पतंग—[सं पुं] चबाई, कीट-
पतङ्ग। चूरी, एविध गड्ड।
कागजब टिला।
पक्षी। फतिगा। सूर्य। एक
प्रकार का वृक्ष। गुड्डी।

पतंगम्—(सं पुं) चबाई, पतङ्ग।
पक्षी। फतिगा।

पतंगा—(सं पुं) पखिला, पतङ्ग।
उड़नेवाला छोटा कीड़ा। फतिगा।

पत—(सं पुं) पति।
पति।

(सं स्त्री) अडिठा, नर्यादा।
प्रतिष्ठा। इज्जत।

पतझड़, पतझार—(सं स्त्री) पत
कालत गड्ड पात गवा मरन,

अवनतिव गमय ।

पेड़ों के पत्ते झरने का समय ।

अवनति का काल ।

पतला—(वि) पातल, मिश्र,
पनीया । शर्बल ।

कम मोटाईवाला । बारिक ।

अधिक तरल । अशक्त ।

पतवार—[सं स्त्री] श्वि-वर्ण, गण्ड
शुक्लान पात ।

जहाज या नाव को निश्चित
दिशा में घुमाने फिरानेवाला
यंत्र । पीछों की सूखी पत्तियाँ ।

पता—(सं पुं) ठिकना, अशुगन्धान,
छान, दृश्य ।

ठिकाना । अनुसंधान । जानकारी
रहस्य ।

पताकिनी—(सं स्त्री) टैग
सेना ।

पतिआना, पतियाना—(क्रि म)
पतियन बोवा, विभाग करना ।
विश्वास करना ।

पतित-उधारन—(वि) पतितक
उधार करनेवाला, पतित-
प्राप्तन ।

पतितों का उद्धार करनेवाला ।

पतियार—(वि) विभाग दे'ग ।
विश्वास करने योग्य ।

पतिव्रता—(वि) गती, गायत्री ।
सती । साध्वी ।

पतोला—[सं स्त्री] गौतन वा ताम्र
गर्भ शङ्खी ।

पीतल या ताँबे की एक प्रकार
की छोटी बटलोई ।

पतुरिया—[सं स्त्री] वेष्टा ।
वेष्टा ।

पतोखा—(सं पुं) खापि, धाना ।
पत्ते का बना छोटा पात्र या
छाता ।

पतोह (हू)—[सं स्त्री] बोवाबी ।
बेटे की पत्नी ।

पत्तन—[सं पुं] नगर ।
नगर ।

पत्तर—[सं पुं] धातुव पातल
किञ्च दण्ड टूटना ।

धातु का पतला चोड़ा टुकड़ा ।

पतल—(सं स्त्री) गण्ड पातले
ठेसारी एक बकनन बाप
बोवा गाय ।

पत्तों का बना हुआ गोलाकार
आधार जिसपर खाना आदि
परोसा जाता है ।

पत्ता—(सं पुं) गह्वर प्रांत, कागज
गिरा अलङ्कार ।

वृक्ष का पत्र । कान में पहनने का
एक गहना ।

पत्ती—[सं स्त्री] गह्वर प्रांत, कूलर
प्रांति । कांठ नाशिव । धातु
आदिब गह्वर टुकड़ा ।

छोटा पत्ता । सामे का अंश ।
फूल की पंखड़ी । भांग । लकड़ी
घातु आदि का कोई कटा हुआ
छोटा टुकड़ा ।

पत्थर - [सं पुं] गिल, गिलर
टुकड़ा, बरसुगल गिल, शीवा
आदि बर ।

प्रस्तर । शिला खंड । ओला ।
हीरा, नीलम आदि रत्न ।

पत्र—(सं पुं) गह्वर प्रांत, कागज,
चिठि, बातवि काकत, पृष्ठा ।

वृक्ष का पत्ता । वह कागज जिस
पर कोई महत्व की बात हुई हो ।
चिट्ठी । अखबार ।

पत्रकार—[सं पुं] खबर कागज
सम्पादक, बातवि योगनिगार ।

अखबार का सम्पादक । पत्रों में
समाचार आदि भेजनेवाला ।

पत्रपुष्प—(सं पुं) गह्वर वा
पुष्पाव गाथाव गाथी ।
गाथा उपहार ।

सत्कार या पूजा की बहुत
सामान्य सामग्री । सामान्य या
तुच्छ उपहार ।

पत्रवाह, पत्रवाहक— [सं पुं]

डाकोवाल, पत्रवाहक ।

डाकिया । पत्र पहुँचानेवाला ।

पत्रा—[सं पुं] तिथि पत्र,
पृष्ठा । पत्रिका ।

तिथि पत्र । पृष्ठ ।

पत्राचार—(सं पुं) पत्र वादशाव ।

पत्र व्यवहार ।

पत्रिका—[सं स्त्री] चिठि, आलोचनी
बातवि काकत आदि ।

चिट्ठी । नियत समयपर प्रका-
शित होनेवाला कोई सामयिक
पत्र पत्रिका या पुस्तक ।

पत्री—(सं स्त्री) चिठि, टूटि प्रवक ;
अथ पत्रिका ।

चिट्ठी । कोई छोटा लेख । जन्म
पत्रिका ।

[सं पुं] बाण ।

बाण ।

पथरकला—[सं पुं] पुराणि कालव
एविध वस्तूक ।

प्राचीन काल की एक प्रकार की
बन्दूक ।

पथराना—[क्रि अ] मिलव पत्थर
कठोराव होरा, निखोराव पत्थर
होरा ।

पत्थर की भाँति कठोर हो जाना।
नीरस और कठोर होना । सजीव
न रहना ।

पथरी—(सं स्त्री) मिलव बाँटि,
मूत्राशयव एविध रोग । एविध
चक्रमकीया मिल ।

पत्थर की बनी छोटी कटोरी ।
मूत्राशय का एक रोग । चक्रमक
पत्थर ।

पथरीला—(वि) मित्राशय ।
पत्थरो से युक्त

पथरीटा—[सं पुं] मिलव बाँटि ।
पत्थर का कटोरा ।

पथ्य—(सं पुं) गरीयाव लघुपाकी
आहार । पथ्य ।
रोगी को दिया जानेवाला सुपाच्य
आहार ।

(वि) पथ अश्वकीय ।
पथ सम्बन्धी ।

पदक—[सं पुं] गौबरव निर्गन
श्रवणे दिया एवञ्च धातुव पुरवकार
मोहर, पदक ।
तमगा ।

पदचार (ण)—(सं पुं) पद
यात्रा ।
पैदल चलना ।

पदचारी—(सं पुं) पद यात्री ।
पैदल चलनेवाला ।

पदतल—[सं पुं] डबिब तलवा ।
पैर का तलवा ।

पददलित—(वि) डबिबे योशवि
पेलोरा, अधोनह ।

पैरोसे रोदा हुआ । जिसे दबाकर
बहुत हीन बना दिया गया हो ।

पदभार—(सं पुं) कोनो पदव
दायिद्व ।

किमी पद का उत्तर दायित्व ।

पद-योजना—[सं स्त्री] कविडाव
पद मिलोराव कार्य्य ।

कविता में पदों के मिलाने की
क्रिया या भाव ।

पदवी—(सं स्त्री) उपाधि, बिताप ।
उपाधि । ओहदा ।

पदाक्रान्त—[वि] डबिबे गच्छि
पेलावा ।

पैरों तले कुचला या रोदा हुआ ।

पदाति (क)—[सं पुं] डबिबे
थोख काटि बग कबा, टैन्या वा
छिपाही ।

पेदल चलनेवाला । नौकर ।

पदल सिपाही ।

पदार्थिकार—(सं पुं) कोना पद
वा बितापर अधिकारी ।

किसी पद या ओहदे पर होने
वाला अधिकारी ।

पदाना—(क्रि स) खूगुम कबा ।

बहुत परेशान या तंग करना ।

पदार्थविज्ञान—(सं पुं) अपार्थ
गश्के बिगैब छान नायक शास्त्र,
प्रकृतिब विज्ञान ।

भौतिक विज्ञान । (फीजिक्स)

पदार्पण—[सं पुं] एठाईत टैग
डबि मिया वा उपस्थित होना ।

कहीं पैर रखने या आनेकी क्रिया ।

बड़ों के लिये आदर सूचक ।

पदावली—(सं स्त्री) पदब गश्दश ।
बाक्यों की श्रेणी । भजनों का
संग्रह ।

पदेन—(क्रि वि) कोना पनत
अधिष्ठित थका अधिकारब ।

किसी पद के या किसी पदपर
आरूढ होने के अधिकार से ।

(एक्म-ऑफिसियो)

पद्धति—[सं स्त्री] बीति, निगम,
प्रणाली ।

राह । रीति । प्रणाली ।

पद्म—(सं पु) अद्भुत, एठा डाडब
गश्था ।

१,००,००,००,००,००,००,००० ।

कमल । गणितमें सोलहवे स्थान
की संख्या ।

पद्मजा, पद्मा—[सं स्त्री] लक्ष्मी ।
लक्ष्मी ।

पद्मनाभ—(सं पुं) बिष्णु ।
विष्णु ।

पद्मनाल—[सं स्त्री] अद्भुत ठाबि ।
कमल का डण्डल ।

पद्मराग—(सं पुं) डालिवा बाथब ।
लाल माणिक ।

पद्मासन—(सं पुं) बीउ कबडनब
उपबत गौ डबि याक गौ
कबडनब उपबत बीउ डबि रैथ
कबा आगन । योगिक नूडा

योग साधन में एक प्रकार का
आसन या मुद्रा ।

पद्मिनी—[सं स्त्री] पद्मनि, लक्ष्मी,
शूलकनी तिवोता ।

कमलिनी । लक्ष्मी । स्त्रियों में
एक भेद ।

पद्यात्मक—[वि] छन्दोवक्तृ ।
छन्दोबद्ध ।

पधराना—(कि स) गगनात्
बहु उवा, अतिष्ठित कवा ।

आदर पूर्वक बैठाना । प्रतिष्ठित
करना ।

पधारना—[कि अ] पदार्पण कवा ।
(गगनानीय व्यक्ति के उत)
आदरणीय व्यक्ति का आना ।

पन-(सं पुं) यवज्ञा, अतिज्ञा, मूला,
एविष अताय ।

अवस्था । प्रण । मूल्य । एक
प्रत्यय ।

पनघट—(सं पुं) पानी घना बाटे ।
बहु स्थान जहाँ लोग पानी भरते
हैं ।

पनचक्की—[सं स्त्री] पानीव गोंतव
बाबा चालित चक्का वा यंत्र ।

पानी के वेग से चरनेवाली चक्की ।

पन-डुब्बा—(सं पुं) बटा ।

पान दान ।

पन-डुब्बा—[सं पुं] पानी काँटेवी,
पानीव तले तले घोड़ा युक्त

काशख । डुबियाल ।

गोताखोर ।

पनडुब्बी—[सं स्त्री] पानी काँटेवी ।

पानीव तले तले घोड़ा युक्त

काशख ।

जलाशयों के पाम रहनेवाली एक
प्रकार की चिड़िया । पानी के
अन्दर डूबकर चलनेवाला एक
प्रकार का आधुनिक जहाज (सब-
मैरिन) ।

पनपना—[कि अ] ठग शवि उठा,
लह्-पहटेक बाढ़ि अहा, उठा,
सूख ।

नये पीछों का पत्तों से युक्त और
हरा भरा होना । नये सिरे से
अथवा फिरसे तन्दुरुस्त, समर्थ या
सशक्त होना ।

पनबाड़ी—[सं पुं] पान बेटीठा ।

पान बेचनेवाला । तमोली ।

पनवारी—[सं पुं] पानव बाबी ।

पान के पीछोंका भीटा ।

पनस—[सं पुं] कैंठाल गंज वा
ठाव फल ।

कटहल वृक्ष या उमका फल ।

पनहरा—(सं पुं) पानी भाबी,
पानी पोंगनिगाव ।

दूसरों के घर पानी भरनेवाला
आदमी ।

पनहा—(सं पुं) गूठल, गूठ अर्थ ।
कपड़े या दीवार की चौड़ाई ।
बूढ़ तात्पर्य ।

पनाळा—[सं पुं] गर्मगा, नला ।
गंदा पानी बहने की मोरी ।
नाबदान ।

पनाह—(सं स्त्री) बक्का, आश्रय-
जल, शरण ।
रक्षा । रक्षा पाने का स्थान ।

पनिया, पनिहा—[वि] पानीत
धाटक सि, पानी बिहलावा ।
पानी में रहनेवाला । पानी
मिलाया हुआ ।
(सं पुं) छाबाःछावा ।
भेदियां । जासूस ।

पनीर—(सं पुं) पनीर, शना ।
छेता । पानी निचोड़ा हुआ दही ।
पनीरी—(सं स्त्री) अइन ठाईत
कबब बाटव गंधोवा पुलि ।

वे पीछे जो दूसरी जगह ले जाकर
रोपने के लिये लगाये जाते हैं ।

पनीला, पनैला—(वि) पानी सूख,
पानीत शक ।

जिसमें पानी मिला हो । जो
पानी में रहता हो ।

पन्नग—[सं पुं] गांप, मरकत मणि ।
मांप । मरकतमणि ।

पन्नगारि—(सं पुं) गरुड ।
गरुड ।

पन्ना—(सं पुं) मरकत मणि, पृष्ठा ।
मरकत मणि । पुस्तक का पृष्ठ ।

पपड़ी—[सं स्त्री] बाब चकला, कोना
बच्चर डुकाई बोवा अथवा खलप,
अनिध विठाई ।

सूखकर चिपड़ी हुई किसी वस्तु
की पतली परत । धाव पर की
जमी हुई परत । एक प्रकार की
मिठाई ।

पपीता—[सं पुं] मधुफल, अमिता ।
एक प्रकार का फल या उसका
पौधा ।

पपीहरा, पपीहा—[सं पुं] पानी
पिया चनाई, छातक पक्षी ।
चातक पक्षी ।

पयोटा—[सं पुं] छत्र भित्ति ।
आँख के ऊपर की पलक ।

पय—(सं पुं) गाँधी ।
दूध ।

पयस्विनी—(सं स्त्री) शिवजी
गाँधे, नदी, शठयोग मठ बाँधे
काण्व नाडी ।

दूध देनेवाली गाय । नदी । हठ
योग में बायें कान की नाड़ी ।

पयहारी—(सं पुं) गाँधी खाँडे
बद्धि धका गाँधु ।
केवल दूध पीकर रहनेवाला
साधु ।

पयान—(सं पुं) गमन ।
गमन ।

पयार (ल)—(सं पुं) नवा
[दाँहे निशा धानव नूरा]
धान आदिके पुयाल ।

पयोद—(सं पुं) मेघ ।
मेघ ।

पयोधर—[सं पुं] छन, मेघ, पोशाक ।
स्तन । बादल । पहाड़ ।

पयोधि (निधि)—[सं पुं] गाँधव ।
समुद्र ।

परन्तु—(अव्य) किन्तु, तथापि ।
तो भी । पर । किन्तु ।

परंपरागत—(वि) परम्परा अक्षु-
गति ।

परम्परा से चला आया हुआ ।

पर—(वि) आन, अना. पिछन,
दूर, उडन, टैरवी ।
अपने से भिन्न । गैर । पीछे या
बाद का । दूर । उत्तम । बैरी ।
(अव्य) पिछत, किन्तु ।

पश्चात् । परन्तु ।

[सं पु] छाँहेव आँखि, डेडुका ।
पक्षी का पंख ।

[प्रत्यय] उ, (गुरुवी वा
अधिकबर्ण चिन्)
सप्तमी या अधिकरण का चिह्न ।

पर-कटा—(वि) आँखि कटा ।
जिसके पंख कटे हों ।

परकना—(क्रि अ) यडाग होवा ।
गट्ट होवा । लाँहे पोवा ।
हिलना-मिलना । आदत पड़ना ।

परकाजी—(वि) आवापकावी ।
परोपकारी ।

परकार, परकास—[सं पुं] आँखिनी
कैठा कम्पाठ ।
वृत्त बनाने का एक औजार ।

परकाळा—[सं पुं] खूना, थंटे-
थंटी, बाबांठा, खलखल एडाव,
टूटूवा ।

टुकड़ा । नदी चिनगारी ।

परकीय—(वि) आनन ।
दूसरे का ।

परकीया—(सं स्त्री) पन प्रकृषव
लगत प्रेम करेवाला स्त्री ।
अपने पति के सिवा दूसरे पुरुष
से प्रेम करनेवाली स्त्री ।

परकोटा—(सं पुं) गठ, कौंठ ।
रक्षा के लिये बनायी हुई ऊँची
दीवार का घेरा । बाँध ।

परख—(सं स्त्री) डाल बेया चिनि
पोरा छान, परीक्षा ।
गुण-दोष की ठीक ठीक जाँच ।
पहचान ।

परखना—[क्रि स] खूना दृष्टिसे
परीक्षा करा, डाल बेया चिनि
उलिटवा ।

सूक्ष्म परीक्षा करना । अच्छे बुरे
की पहचान करना ।

[क्रि स] प्रतीक्षा करा ।

प्रतीक्षा करना ।

परगाछा—[सं पु] बधुगला ।
दूसरे पेड़ पौधों पर उगनेवाले
कुछ छोटे पौधे ।

परचना—(क्रि स) काटोबाब
लगत थोकि नाटश नाटश मिलि
झुलि गोदा ।

किसी के पास रहकर धीरे धीरे
उससे हिलना मिलना । चसका
लगना ।

परचा—[सं पुं] कागजब टूटूवा,
चिठि, प्रन्न पत्र, बातवि काकतब
कोना एने मरथा, परीक्षा,
प्रमाण ।

कागजका टुकड़ा । पत्र । परीक्षा
का प्रश्न पत्र । समाचार पत्रका
कोई अंक । कोई छोटा विज्ञापन
या सूचना पत्र । परिचय । जाँच ।

परचून—(सं पु) दोकानन चाडल
नालि आदि वस्तु ।

बनिये के यहाँ बिकनेवाली आटा,
दाल, मसाले आदि वस्तु ।

परछन—(सं स्त्री) विवाहव एक
बीडि-मबाब चाकिडकाले एटि
चाकि घुबोबा इय छूड-प्रैठ
आदि धेदिबटेल ।

विवाह की एक रीति ।

परछाई—[स स्त्री] अतिच्छाया,
अतिविष

आकृति के अनुरूप पड़ी हुई
छाया । प्रतिबिम्ब ।

परवरना (जतना)—(कि अ)
प्रचलित होना, छलि उठना ।
प्रज्वलित होना । मुग्धना ।

परजात—[स स्त्री] आन छाति ।
दूसरी जाति ।
(वि) अग्रा जाति ।
दूसरी जाति का ।

पर-जोबी—[सं पुं] यन्त्रों की
भावना करि गि जायै धाक,
बहुमला आदि ।
वह जो दूसरों के सहारे रहकर
जीवन बिताता हो । कुछ पोषे
या कीड़े मकोड़े जो दूसरेके रस
या खून चूसकर पीते हैं ।

परतः—[अव्य] आनर शब्द,
भिन्न, अलग ।

दूसरे से । पीछे । आगे । परे ।

परत—(स स्त्री) उदण, आन,
छाति ।

सतह पर फैली हुई वस्तु की
भोटाई । स्तर । तह ।

परती—(सं स्त्री) ठिठा मिठा कागधन
वही वा पोप । छन गाँठि, धेति
नकरा नाँठि ।

एकमें लगे हुए बहुत से कागजों
को गूड़ी । बिना जोती हुई खेती
के उपयोगी जमीन ।

परतीति—(सं स्त्री) अतीति,
विज्ञाग ।

प्रतीति । विश्वास ।

परदा—(सं पुं) पर्दा, आव,
उपनि ।

चक्र । व्यवधान । आड ।
छिपाव । मर्यादा । लाज ।

परदाज—(सं पुं) गणेश ।
सनाता । चित्र अदि क चारों
आर बेल बूटे बनाना ।

पर-दादा—(सं पुं) अभिजात,
आकाशका ।
दादा का बाप ।

परदा-नशीन—[वि] आदरव शब्द ।
परदे में रहनेवाली स्त्री ।

परधाम परम धाम—(सं पुं)
वैकुण्ठलोक ।
वैकुण्ठ धाम ।

परपंच—(सं पुं) अणक अणान ।
प्रपंच । कथन ।

परपराना—(क्रि अ) झलकौया
आदि लगाने जिहा याक
मुथत होरा पोबनि ।
मिचं आदि लगर चुनचुनाना ।

पर-पोदा—(सं पुं) नातिब लंबा ।
पोते का लडका ।

पर-बस, परवश—[वि] पराधीन ।
पराधीन ।

पर बोधना—(क्रि स) जगारा,
छानव उपदेश दिया ।
जगाना । जान का उपदेश देना ।

परभृत—[सं पुं] कार्डिटकन,
कूनि ।
कार्तिकेय । कोयल ।

परम तत्व—(सं पुं) परम तत्व
याव शाव। विश्व उपपत्ति याक
विकाश देखे, जेव ।
वह तत्व जिमसे विश्वकी उत्पत्ति
और विकास हुआ है । ईश्वर ।

परम पद—(सं पुं) शक्ति ।
मुक्ति ।

परम सत्ता—(सं स्त्री) परम
गडा—यि भक्तिउटेक कोनो
अर्थ गडा नाई ।

वह सत्ता या शक्ति जिससे बढ़
कर कोई सत्ता या शक्ति न हो ।

परम हंस—(सं पुं) महायोगी,
मगुत ईश्वरक पति मगुत भाग
करा योगी ।

पूर्ण ज्ञानी सन्यसी । परमात्मा ।

परमानना—(क्रि स) आमानिक
श्रीकार करा ।

प्रामाणिक समझना । स्वीकृत
करना ।

परमायु—[सं स्त्री] जीवाइ धका
काल ।

मनुष्य के जीवन काल की चरम
सीमा ।

परमार्थ—[सं पुं] अर्थ ज्ञान, परमा-
पकान, मुक्ति ।

सबसे बढ़कर वस्तु या सत्ता ।
परोपकार । मोक्ष ।

परमिनि—[सं स्त्री] चरमगीमा बा
गौर पद ।

चरमसीमा या पद ।

परमोदना—[क्रि अ] बोवाबोना
करा ।

मीठी मीठी बातें कर अपनी ओर
मिलाना ।

परल्ला—(वि) गिफालव ।

उस ओर का । उधर का ।

परवरिश—(सं स्त्री) पालन-
पोषण ।

पालन पोषण ।

परवा, परवाह—[सं स्त्री] छिन्ना,
शीतिव, आनन महष वा शक्ति
आदिन अति दृष्टि ।
चिन्ता । फिक्र । किसी के महत्व,
शक्ति आदिका ध्यान ।

परवाना—(सं पुं) लिखित आदेश,
कमता, निदिष्टे श्रोतव पात्र ।
पत्र, प्रस्ताव ।
आज्ञापत्र । फतिगा । नापने का
एक मान या पात्र ।

परवाल—[पु सं] ठकुर बेका नोन ।
आँख की पलक के अन्दर का वह
बाल जिसमें आँख में बड़ी पीडा
होती है ।

परशु—(सं पुं) कुशाव निचिना अश्रु ।
युद्धमें काम आनेवाला एक प्रकार
का कुल्हाडी जैसा औजार ।

परसना—[क्रि म] स्पर्श करना,
माश्रव करने का आलस्य ।
छुना । परोसना ।

परस-पखान, परस-पत्थर, परस-
(सं पुं) प्रबल मणि (ईश्वर

प्रबल लो ३ गोप हय)
एक प्रकार की मणि जिसके
स्पर्श से लोहा सोना बन जाता
है ।

परसाल—[पद] योग्य बहुर ।
पिछले वर्ष ।
[सं स्त्री] डाँडर थोठाली ।
बडा कमरा ।

परसों—(अव्य) प्रबल दिना ।
बीने कल या आनेवाले कल का
परवर्ती दिन ।

परस्व—[सं पुं] प्रवाधीनता,
गानन सम्पत्ति
परायापन । दूसरे की सम्पत्ति ।
पराधीनता ।

परहेज—[सं पुं] शोभा-लोभात
गंशन, वाच-विचार ।
खाने-पीने आदि का मंयम ।
दोषों, पापों, बुराइयों आदि से
दूर रहना ।

पराँठा—[सं पुं] डाँठ कटि ।
एक प्रकार की रोटी । परीठा ।

परा—[सं स्त्री] ज्ञान विद्या
ब्रह्मविद्या ।

(सं पुं) नाबी ।

पंक्ति । कतार ।

पराकाष्ठा—(सं स्त्री) चरमसीमा ।

वह अन्तिम सीमा जहाँ तक कोई बात हो या पहुँच सकती हो ।

पराग—(सं पुं) कुलब बेधु, चमन ।

पुष्परज । चन्दन ।

पराक्रम—[वि] विमुख, उदा-

गोन, विरोध ।

मैं ह केरे हुए । उदासीन । विरुद्ध ।

परात—(सं स्त्री) डाँडव थाल ।

बड़ी थाली ।

परात्पर—(वि) सर्वश्रेष्ठ ।

सर्व श्रेष्ठ ।

(सं पुं) विष्णु; परमात्मा ।

विष्णु । परमात्मा ।

पराना—[क्रि अ क्रि स] जौतवि बोरा,

जौतबोरा, गँठे करा ।

भाग जाना । भगा देना । नष्ट

करना ।

पराभव—[सं पुं] पराजय, तब-

काब, अधीनश्व करा ।

पराजय । तिरस्कार । दूसरे को

दबाकर अपने अधीन करना ।

पराभूत—(वि) पराजित, तब-

झुठ ।

हारा हुआ । तिरस्कृत ।

परायण—(वि) निर्ध, बत ।

गया हुआ । लगा हुआ । किसी

विषय या बात पर दृढ़तापूर्वक

आरुढ़ या स्थिर ।

पराया—[वि] आनब, भिन्न, पब ।

दूसरे का । जो आत्मीय न हो ।

परार्थ—[सं पुं] आनब शक कबा

गणकाय ।

दूसरे का उपकार या भलाई ।

[वि] आनब निमित्त ।

जो दूसरे के लिये हो ।

परावर्त्तन—[सं पुं] पुनर्वागमन,

किनि अश कार्या ।

फिर अपने स्थान पर आना ।

परिद (दा)—[सं पुं] चबाइ ।

चिड़िया ।

परिकर—[सं पुं] पात्र, पवि-

ग्राम, गमूश, पल, ठेडालि ।

पलंग । परिवार । समूह । कुँड ।

कमरबन्द ।

परिक्रमण—(सं पुं) आवर्त्तन,

वचन-कबा ।

दौरा करना ।

परिक्रमा—[सं स्त्री] अग्रक्रम ।

देवता या पवित्र स्थान के चारों
ओर घूमना ।

परिखा—[सं स्त्री] गड़बाटेव ;

छाबिङ्काले थका बाल ।

खाई । खंदक ।

परिगणित—(वि) लेखा, गन्था

कबा, गानि मोवा, गवा कबा ।

जो गिनती में आया हो जिसका
उल्लेख या गणना किसी अनुसूची
आदि में की गयी हो ।

परिगत—[वि] परिवेष्टित, विगठ,
छात । चारों ओर से

घिरा या घेरा हुआ । बीता
हुआ । मरा हुआ । जाना हुआ ।

परिग्रहण—(सं पुं) ग्रहण कबा
कार्य ।

ग्रहण या स्वीकृत करने की क्रिया
या भाव ।

परिष—(सं पुं) श्रवावताः, विशि-

पथालि, एविश अश्र, शोवा,
अमूलि भूथ । कलश ।

दरवाजा बन्द करने की अंगल ।

रुकावट के लिये सड़ी की हुई

कोई चीज । एक अस्त्र । घोड़ा ।

फाटक । पानी का घड़ा ।

परिचर—(सं पुं) अश्रुचन, गेवक ।

सेवक ।

परिचर्या—[सं स्त्री] गेवा-उअवा,

आल-टेपठान ।

सेवा-शुभ्रूषा ।

परिचारक—(सं पुं) आलधवा,

ठाकर ।

सेवक दास । (सं स्त्री-परिचारिका)

परिचालक—(सं पुं) अथाक,

नेता ।

चलानेवाला ।

परिच्छद्—(सं पुं) आच्छादन ।

गाय-पाव ।

आच्छादन । पोशाक ।

परिच्छन्न—(वि) आश्रित, भालटेक

गाय पाव भिका ।

ढका या छिपा हुआ । स्वच्छ ।

परिच्छिन्न—(वि) गीमावन्न,

विच्छन्न ।

प्ररिमित । बँटा हुआ ।

परिजन—(सं पुं) अश्रुचन, छुता,

परिग्रहण । आश्रित बाळि ।

आश्रित लोग । परिवार ।

परिज्ञात—[वि] डाल कपे बना ।

अच्छी तरह जाना हुआ ।

परिणय—(सं पुं) विवाह ।

विवाह ।

परिणीत—[वि] विवाहित, गमाष्ट ।

विवाहित । समाप्त ।

परिचाप—[सं पुं] अश्रुताप ,

खेद, दुःख, शोक, पिछता कबा

बेझाव ।

गरमी । दुःख । शोक । पचचा-

त्ताप ।

परितुष्ट—[वि] अतिशय गह्वर ।

परम सन्तुष्ट । प्रसन्न ।

परितुष्टि—(सं स्त्री) मनव गह्वर,

कामना पूर्ण होव'न बावे लाड

कबा मनव आनंद ।

पग्तिप्त होने की क्रिया या भाव ।

अच्छी तरह तृप्त होना ।

परितोष—(सं पुं) सम्पूर्ण गह्वार ।

तुष्टि । सन्तोष ।

परिदयक—[वि] एवा, ताग

कबा ।

छोड़ा हुआ ।

परित्राण—(सं पुं) विपदव प्रवा

मुक्ति वा बका ।

रक्षा । बचाव ।

परिदर्शन—[सं पुं] निरीक्षण ।

निरीक्षण ।

परिधान—(सं पुं) कापोव, गाव

पाव ।

वस्त्र । पोशाक ।

परिधि—[सं स्त्री] घूर्णनीय बन्धव

वेव वा जीवा ।

वृत्त को घेरनेवाली गोल रेखा ।

परिपक्व—(वि) डालटैक पका वा

गिजा, सम्पूर्ण पार्गव ।

अच्छी तरह पकाया पचा हुआ ।

प्रौढ । अनुभवी । प्रवीण ।

परिपाक—[सं पुं] डालटैक गिजा

होवा वा जीव होवा ।

पकना या पकाया जाना । पचना ।

प्रौढता । दक्षता ।

परिपाटी—(सं स्त्री) अश्रुधला,

निराशि ।

क्रम । पद्धति ।

परिपालन—(सं पुं) बक्ष,

पोलन ।

रक्षा करना । बचाव ।

परिपुष्ट—[वि] निपोटल ।

भली-भाँति पष्ट ।

परिपूरक—(वि) पूर्ण करनेवाला ।
पूर्ण करनेवाला ।

परिप्लव—(सं पुं) गौरवदा, बानप्रानी, अत्याचार ।
नैरना बाढ । अत्याचार ।

परिप्लुत—(वि) प्लावित, डूबि गका ।
प्लाविन । भीगा हुआ ।

परिभाषा—(सं स्त्री) सूत्र, के'नो एक विशेष वादगाय ना विद्यात वादशुत शक ।
व्याख्या । किसी एक कार्य, विचार या अर्थ का सूचक शब्द ।

परिमल—(सं पुं) अति उद्वज्ज्वाल, सुगन्ध ।
सुवास । सुगन्ध ।

परिमार्जन—(सं पुं) धुँडे-पथालि ठिक करा, नोन वा क्कालि योत-बोवा ।
माँज या घोकर साफ या ठीक करना । दोष-त्रुटियाँ दूरकर ठीक करना ।

परिमित—(वि) ज्ञोथा, निदिष्टे परिमाणब, यलप ।
जिसकी नाप तोल की गयी हो । सीमित । थोड़ा ।

परिमेय—(वि) परिमाण कबिब पवा, छुशिव पवा ।
जो नापा या तोला जा सके । जिसे नापना या तोलना हो ।

परिया—(सं पुं) एक अस्पृश्य जाति, कुष्ठ, तूछ ।
एक अस्पृश्य जाति । क्षुद्र, तूच्छ ।

परियान—(सं पुं) निम्न देश एवि श्वाभी भादे आन देशटेल योवा ।
अपना देश छोडकर स्थायी रूपसे दूसरे देश में जाना ।

परिरम (ण)—(सं पुं) यालिहन ।
आलिंगन ।

परिरूप—[सं पुं] छा'नेकि, नमूना ।
नमूना ।

परिलेख—(सं पुं) चित्र आकृति, उल्लेख, वर्णना, विववण ।
चित्र का ढाँचा । उल्लेख, वर्णन । विववण ।

परिवर्जन—[सं पुं] इका-ववा ।
मना करना ।

परिवहन—(सं पुं) पविनहन—
नाछूश वख आदि ईठादेव पवा निठाईटेल अना गिया कार्य ।

कोई चीज उठाकर एक जगह से
दूसरी जगह ले जाना । माल या
यानी ढोनेका काम ।

परिवाह—[सं पुं] निम्ना, प्रविष्टा ।
निन्दा । शिकायत ।

परिवार—[सं पुं] आवरण, प्रवि-
ष्टा, वस्त्र, प्रविष्ट ।

आवरण । कुटुम्ब । खूनदान ।
परिवार ।

परिवृत्त—[वि] प्रविष्ट, उ-
त्थित ।

घेरा या घिरा हुआ ।

(सं पुं) विवरण ।

विवरण ।

परिवेश—[सं पुं] वेव, वृत्त ।

घेरा । मण्डल ।

परिवेष (ण)—[सं पुं] आश-
क, आवृत, आल, धरा, कार्य,
वेव ।

भोजन परोसना । घेरा ।

परिव्रज्या —(सं स्त्री) इकाले
सिकाले कुवा, उपश्रमा, गंगाव-
प्रति विवर्त, हे डिङ्गुकर नद-
वीरन कठोरा ।

इधर उधर घूमना । तपस्या ।
संसार से विरक्त होकर भिक्षुक
की भाँति जीवन बिताना ।

परिव्राज (क)—(सं पुं) गङ्गाजी, पर्व-
श्रृंग, नाना ठाँहें वसि कुवा
नाश्र ।

सन्ध्यासी । परमहंस । घूमने
फिरनेवाला ।

परिशोचन—(सं पुं) अशुभ-
चर्चा ।

मनन पूर्वक किया जानेवाला
अध्ययन ।

परिशोधन—[सं पुं] जम्पूर्ण बक-
विशुद्ध कवा, शीत, प्रविष्टा
कवा ।

पूरी तरह साफ या शुद्ध करना ।

ऋण चुकाना ।

परिष्करण—(सं पुं) निर्मल वा
विशुद्धीकरण ।

स्वच्छ य शुद्ध करना ।

परिसर—(सं पुं) आल-पाटन
थका माटि, पथार, उच्च-छत्रवीरा,
श्रित्ति ।

आस पास की जमीन । मैदान ।
पड़ोस । स्थिति ।

परिसीमा—[सं स्त्री] चतुर्थ जीमा,
छावि जीमा ।

अन्तिम या चरम सीमा । (अं—
एक्स्ट्रीम)

परिस्तान—[सं पुं] प्रबोध देश ।
परियों का कल्पित देश ।

परिस्फुट—(वि) अन्तःस्थ अग्नि,
कठिन-कठोरता के उलाहने का, पूर्ण
प्रभुत्व ।

अत्यन्त स्पष्ट । प्रकाशित । खूब
खिला हुआ ।

परिहरना—[क्रि स] उद्धार करना ।
प्राप्त करना ।

त्यागना । छोड़ना । दूर करना ।

परिहार—[सं पुं] दोष, अनिष्ट
आदि दूर करना । उपचार,
एवमपेक्षा ।

दोष, अनिष्ट आदि दूर करना ।
उपचार । छोड़ना । छूट ।

परिहास—(सं पुं) हँसना-नकलना ।
वैशा, गिला ।
हँसी । ईर्ष्या । निन्दा ।

परी—[सं स्त्री] अपेक्षणी, प्रबल
कण्ठधारी स्त्री ।

अप्सरा । परम रूपवती स्त्री ।

परीक्षित—(वि) प्रयोग । छोड़ा ।
यथार्थ नातिशयक ।

जिसकी परीक्षा हो चुकी हो ।

परीखना—(क्रि स) प्रयोग करना ।
परीक्षा करना ।

परु—(क्रि वि) प्रवृत्ति, योद्धा बह्व,
अज्ञा बह्व ।

परसों । बीता हुआ साल । पर-
साल । आनेवाला साल ।

परुष—[वि] कठोर, कठोर, निर्द्वेष ।
कठोर । कटु । निष्ठुर ।

परे—(अव्य) ऐसे काल, वेलेन,
उपनयन, आदि ।

उस ओर । अलग । ऊपर ।
आगे ।

परेग—(सं स्त्री) एक गजाल ।
छोटी कील, कटिया ।

परेड—[सं स्त्री] टैगनाय कावाच ।
सैनिकों की कवायद ।

परेता—(सं पुं) उषा ।
मृत लपेटनेका तीलियोंका बना
एक उपकरण ।

परेषा—[सं पुं] प्रायः छात्र ।
कठोर छात्र ।
पंडुक पक्षी । कबूतर ।

परेशान—(वि) बाध, बाधूल ।

उद्विग्न ।

. व्यग्र । व्याकुल । उद्विग्न ।

परोसना [क्रि स] याचना बरबोते

आन शवा । विलगीयाव ।

भोजन सामग्री ला लाकर खाने
वाले के सामने रखना ।

परोठा—(सं पुं) अनिध डाँठ बन्टी ।

. परोठा । एक प्रकार की रोटी ।

पर्जन्य—(सं पुं) यम ।

बादल ।

पर्ण—(सं पुं) गछव पात ।

किताबव पात ।

पेड़ का पत्ता । पुस्तक आदिका
कोई पृष्ठ ।

पर्णकुटी [शाला]—(म स्त्री) अँका

शव ।

भोपड़ी ।

पर्यंक—(सं पुं) डाउन खाँटे ।

आलस ।

बड़ी खाट । पलंग ।

पर्यटन—(सं पुं) क्रुवा, अग्रण कवा ।

धूमना-फिरना ।

पर्यवसान—[सं पुं] शेष, समापन,

शेषफल ।

अन्त । समावेश । ठीक ठीक अर्थ

निश्चित करना ।

पर्यवेक्षण—(सं पुं) निबीक्षण,

परिनिर्णयन ।

निरीक्षण । निगरानी ।

पर्याप्त—[वि] अष्टव, यथेष्ट ।

जितना चाहिये या जितना होना
चाहिये ।

पर्याय—[सं पुं] समानार्थक, अशुक्रम,

एविध अर्थान्तरकान ।

समानार्थक । मिलसिला । एक

अर्थालंकार ।

पर्यायवाची—(वि) समानार्थक ।

किमी शब्द का अर्थ सूचित करने
वाला दूसरा शब्द । समाना-
र्थक ।

पर्यालोकन, पर्यालोचन—(सं पुं)

आलसदेव कवा निःवचना ।

किसी वस्तु के गुण दोष जानने के
लिये उसे अच्छी तरह देखना ।

परवरिश (परवरिश)—(सं स्त्री)

प्राज्ञन-पोषण ।

पालन-पोषण ।

पलंग—[सं पुं] आलस ।

बड़ी चारपाई ।

पलंगड़ी- [सं स्त्री] गढ़ा पालनः
छोटा पलंग ।

पल- (सं पुं) एकपञ्च गमयन् याति
भाग्य एवाग । उच्छ्रि, निविश ।
समय का एक सूक्ष्म विभाग ।
तराजू । आँख की पलक ।

पलक- (सं स्त्री) उच्छ्रि निविश ।
आँख के ऊपर के चमड़े का
परदा ।

पलटन- (सं स्त्री) गेना, समुदाय,
दल ।

सेना । समुदाय भण्ड ।

पलटना- (क्रि अ) घूर्ति योवा ।
दश प्रविबर्त्तन होवा । गम्भूर्ण
प्रविबर्त्तन होवा ।

उलट जाना । दशा बदलना ।
स्वरूप बिलकुल बदल जाना ।
वापस होना । उलटना । बद-
लना । लौटना

पलटनिया- (सं पुं) गेनिक ।
मैनिक् ।

पलटा- (सं पुं) घूर्ति योवा कार्य,
धुवन ।

पलटने की क्रिया या भाव ।
बदला ।

पलटे- (क्रि वि) गलनि ।

बदलेमें

पलड़ा- [सं पुं] उच्छ्रि पल्ला,
कोना विरोधी पक्ष ।

तराजू का पल्ला । विरोधियों में
से कोई पक्ष ।

पलथली- [सं स्त्री] यागन-भिवि
वश कार्य ।

दोनों पैरों की कुण्डला जैसा बना
कर बँटने की मुद्रा ।

पलना- (क्रि अ) पोश-पाल योवा,
शोश-देव लहे-पूठे होवा ।

पाला पोसा जाना । खा पीकर
हट-पुष्ट होना ।

पलहा- [सं पुं] कृशिश्रुत, पल्लव ।
वृक्ष की कोंपल ।

पलान- (सं पुं) पोशिव जीन ।
घोः की जीन ।

पलाश- (सं पुं) पलाश गज,
पशु, दाक्षिण ।

टेमू । पत्ता । राक्षस ।

पलास- [सं पुं] पलाश गज, दाक्षि
पक्षी ।

ढाक या टेसू । एक मांसाहारी
पक्षी । जमुरे की तरह का एक
औजार ।

पल्ली—[सं स्त्री] बिड़े आदि डेलिउरा
गुरु हेता ।

घी आदि निकालने की छोटी
कलछी ।

पल्लीता—(सं पुं) गलिता, शिशा,
कनाई शीश डोवारा वस्तुत छूई
लगोवारा शिशा ।

बत्तीकी तरह लोटा हुआ कागज ।
बन्दूक या तोप की रंजकमें आग
लगाने की बत्ती । कपड़ा लपेट
कर बनाई हुई जलाने की बत्ती ।

पल्लीद—(वि) अपवित्र, नीच ।
अपवित्र । नीच ।

पल्लेवन—(सं पुं) बेलिवर गमयत
मवा याटाव लगत दिग्रा सुकान
आठा । शानिव लगते होवारा
अतिबिड्ड वान्न ।
बेलने के समय आटे के पेड़े में
लगाया जानेवाला मूखा आटा ।
हानि होने पर साथ में होनेवाला
आवश्यक व्यय ।

पल्लोटना—(क्रि स) डवि टिपि

दिग्रा । छटेकटाई ईकाटि गिकाटि
करा ।

पैर दबाना । तड़पते हुए इधर
उधर लोटना ।

पल्लव—(सं पुं) नतूनटैक ओलोवा
कूँहिपात ।
नये निकले हुए, कोमल पत्ते ।
कोपल ।

पल्लवग्राही—(वि) उपवन्ता ज्ञान
लउता ग्राहि ।
केवल ऊपर ऊपरसे थोड़ा ज्ञान
प्राप्त करनेवाला ।

पल्लवित—(वि) पल्लवित, कूँहिपाते
डवा, शग्रा श्यामला, डाडव-
दोथल ।

नये पत्तों से युक्त । हरा भरा ।
लम्बा चौड़ा । कण्टकित ।

पल्ला—(सं पुं) काटोवव आग वा
मूब, ठूलाछनी, । दूबध, धूती,
छूवाव आदिब एरुल ।

कपड़े का छोर या सिरा । तराजू
का पलड़ा । दूरी । घोरी, किवाड़ों
आदि की जोड़ी में से कोई एक ।

पल्ली—[सं स्त्री] गुरु ग्राउ ।
छोटा गाँव ।

पल्ल—[सं पुं] आँचल ।

आंचल । चौड़ी गोट ।

पल्लं—(अव्य) अधिकारवत्, दायिष्ठ, मूर्छित ।

अधिकार या पासमें । गाँठमें ।

पवन—(सं पुं) वायु, प्रवन ।

वायु ।

पवन-चक्की—(सं स्त्री) बतहर
झोबेदे चला छात वा कल ।
हवा के जोर से चलनेवाली
चक्की ।

पवदान—(सं पुं) वायु, गोन
देवता, गार्हपत्य अग्नि ।

वायु । गार्हपत्य अग्नि ।

(वि) पवित्र करनेवाला ।

पवित्र करनेवाला ।

पवि—(सं पुं) बख, बिछुरी ।

बख । बिजली ।

पशम—(सं स्त्री) पछम, शिशि डेल ।

मुलायम ऊन ।

पशमीना—(सं पुं) डेलदे
ठेगारी स्लमर कापोर ।

पशम का बना हुआ बड़िया
कपड़ा ।

पशुपति—(सं पुं) शिव ।

शिव ।

पशुपाल—(सं पुं) शिल्प पशुपालन
कर, गोपाल, गवशाय ।

जो पशुओं का पालन-पोषण
करता हो । ग्वाला

पश्चात्—(अव्य) पीछे ।

पीछे । बाद ।

पश्चात्ताप—(सं पुं) अनूताप ।

अनूताप । पछतावा ।

पश्चिमी—(वि) पश्चिम ।

पश्चिम का ।

पसंद—(वि) पछम, रुचि अछ-

कूल, ভাল लग्ना ।

रुचि के अनुकूल । अच्छा लगने
वाला ।

(सं स्त्री) रुचि ।

रुचि ।

पसर—(सं पुं) यर्काझनी, कोनो

बाजबे भवा मूठा, बिज्जार, आक्रमण ।

आधी अंजली । किसी चीज से
भरी हुई मुट्ठी । विस्तार । आक्रमण ।

पसरना—(क्रि अ) अंगार, दीपन

दि अथवा बहल भावे बहा ।

फैलना । कुछ लेटकर या बहुत
फैलकर बैठना ।

पसली—[सं स्त्री] नाश्रु, पशु
आदिब कामिगड ।

मनुष्य, पशु आदि की छाती के
पंजर में की आडी और कुछ
गोलाकार हड्डी ।

पसाना—(क्रि स) गिखा भाउब
परा मांर छेकि डेलि उवा ।

भात पक जाने पर उसमें से मांड़
निकालना ।

पसारना—(क्रि अ) अगावित कवा ।
फैलाना ।

पसलीजना—[क्रि अ] बग टैव योवा,
बामल तिति योवा, दयाब
उज्जक होवा ।

घन पदार्थ में से द्रव अश का रम-
रसकर बाहर निकलना । पमीने
से तर होना । मनमें दया आना ।

पसोना—(स पुं) घान ।
प्रवेद ।

पसेरी—[मं स्त्री] पंठ गेवर
माप ।
पांच सेर का मान ।

पसोपेश—[सं पुं] बिबा, छिछा ।
असमंजस । सोच-विचार ।

पस्त—[वि] गाश्रु श्कवा, शतां,
पबिआसु ।

हिम्मत हारा हुआ । थका हुआ ।

पँह—(अव्य) उचव, पवा ।
निकट । पास । से ।

पहचान, पहिचान—(सं स्त्री)
छिगाकि, लक्षण, पबिचय ।

पहचानने की क्रिया या भाव ।
परख । लक्षण । जान पहचान ।

पहनना, पहरना—(क्रि स) पबि-
छिड होवा, योगिता अथवा
विशेषइ जना ।

परिचित होना । योग्यता या
विशेषता को जानना ।

पहनना, पहरना—[क्रि स] पिक्का ।
परिधान करना ।

पहनावा—(क्रि स) पिक्कावा ।
धारण कराना ।
(सं पुं) पोछाव, गाछ-गच्छा ।
पोगाक ।

पहर—[सं पुं] अ व, दिन बातिब
अष्टेवांश ।
दिन रात का आठवाँ भाग ।

पहरा—[सं पुं] पशवा, चकी
(पशवा दिया खान)

रक्षा का प्रबन्ध / चौकी । रख-
वाली ।

पहरी, पहरेआ, पहरेदार—[सं पुं]
अश्वी, पशु दिये बाँझि ।
पहरा देनेवाला ।

पहल—[सं पुं] दिना, खनप, निखर
पिनर कोना काय आबख कबा,
कोना बखर तिनिकोअर
नाखर खणु आदि ।

घन पदार्थ के मिरो या कोनो के
बीच की समभूमि । पहलू ।
सतह । तह । किसी कार्य का
अपनी ओर से आरम्भ ।

पहलवान—[सं पुं] पालोवान,
हठे-गुठे बाँझि ।

कुस्ती लड़नेवाला पुरुष । मल ।
बलवान और हृष्ट पुष्ट व्यक्ति ।

पहला, पहिला—(वि) अथन ।
प्रथम ।

पहलू—(सं पुं) पक्ष, दिना ।
करवट । पक्ष ।

पहले—[अव्य] आबखनिदत, अथन,
आगब कालत ।
शुरूमें । प्रथम । पूर्वकाल में ।

पहले-पहल—(अव्य) अथनबाब ।
पहलीबार ।

पहलौठा—(वि) कोना द्वीव
अथन लंबा गम्भान ।

किसी स्त्री के गर्भ से पहले पहल
उत्पन्न (लड़का) ।

पहलौठी—[सं स्त्री] अथन
गुताग अगद कबा ।

पहली मन्तान प्रसव करना ।

पहाड़—(सं पुं) गक पर्वत, उथ
ठाई, नव अश्वर नख, कठिन
कान ।

छोटा पर्वत । ऊँची राशि ।
बहुत भारी वस्तु । कठिन कार्य ।
[वि] वर डाँडव आक गंधुव ।
बहुत बटा और भारी ।

पहाड़ा—(सं पुं) नेउठा ।

गुणन सूची ।

पहाड़ी—(वि) पाशाबो, पाशावड
बाग कबा लोकर ।

पहाड पग रहनेवाला । जिममें
पहाड हो ।

(सं स्त्री) गक पाशाब, टिला ।
छोटा पहाड़ ।

पहिया—(सं पुं) चक्र, चक्र ।

चक्रा । चक्र ।

पहुँच—[सं स्त्री] पोवा, उपनीत,

कोना ज्ञानत उपस्थित

होवा शक्ति वा गारुषा, अभिज्ञ-

ताव गीता, ज्ञानव गीता ।

पहुँचने की क्रिया या भाव ।

किसी स्थान या बात तक पहुँचने

की-शक्ति या सामर्थ्य । अभिज्ञता

की सीमा । ज्ञान की सीमा ।

पहुँचना—(क्रि अ) एठाईव पंवा

अना ठाईटेल अशा, अद्वेषण कवा,

अभिप्राय अर्थात् मतनव बुझा ।

एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान

को जा जाना । प्रवेश करना ।

अभिप्राय या आशय समझना ।

(क्रि स—पहुँचाना ।)

पहुँचा—(सं पुं) किलाकूटिव उपर

आक काबलतिव तलव अंश,

काव कवाव शक्ति ।

हाथ की फलाई ।

पहुँचाई—(सं स्त्री) अतिथि

होवा, अतिथि गस्काव ।

पाहुना होना । अतिथि सत्कार ।

पहेली—(सं स्त्री) बरगा, गमजा,

गोथव ।

रहस्य । समस्या । घुमाव फिराव
की बात ।

पौक—[सं पुं] बोका ।

कीचड़ ।

पौख—(सं पुं) पांखि ।

पंख । पर ।

पौखी—(सं स्त्री) चबाई ।

चिड़िया । पतिता ।

पौच—(वि) पाँच ।

(सं पुं) किछू नाशय, पञ्च

यथवा मुखौशाल लोक ।

कुछ लोग । पंच या मुखियाकोश ।

पौजर—[सं पुं] पञ्चव, काकव

तलव पंवा ककालव उपवव

भाग ।

शरीर में बगल और कमरके बीच

का भाग । पसली । बगल ।

पांडु—(सं पुं) जेवन् डानशीरा

ववण । जेँडा, एविश बोग,

पाँडव पिछ ।

कुछ लाली लिये पीला रंग ।

सफेद रंग । पीलिया रोग ।

पाँडवों के पिता ।

पांडुर—(वि) पाँडू ववणीरा । वग ।

पीला । सफेद ।

पांडुलिपि—(सं स्त्री) शते.लिखी
नकल। पांडुलिपि।

पुस्तक, लेख आदि की हाथ की
लिखी हुई वह प्रति जो छपने
के लिये हो।

पांडुलेख—[सं पुं] गटा-विदा।
मसौदा। खाका।

पाँच—[सं स्त्री] शारी, एकलगे
बहि ढोषन करौता।

पंक्ति। साथ बैठकर भोजन
करनेवाले लोग।

पांथ—[वि] पथिक, विद्योगी।
पथिक। वियोगी।

पाँथवा—[सं पुं] पायथाना
आसित भवि दिनब बावे
लगोवा गबझाव।

पाखानों आदि में बैठने के लिये
बना हुआ पैर रखने का स्थान।

पाँयँता—(सं पुं) पथान, भवि-
पथान।

पलंग आदि का पैताना।

पाँव—[सं पुं] भवि।
पैर।

पाँवड़ा—[सं पुं] पथानित वल्लि
आगवनत पथुनि मुखत पावि

दिया कापोव। भवि व
छोताव भुनि-भाकति मति
आशिवर बावे पूढाव मुखत
बथा यतन।

वह कपड़ा जो किसी सम्मानित
व्यक्ति की अगवानी के लिये मार्ग
में बिछाया जाता है। पैर पोछने
का बिछौना।

पाँवड़ी—(सं स्त्री) खरग, जोता।
खड़ाऊँ। जूता।

पाँस—(सं स्त्री) गाव, पठन
गाव।

खेत में डाली जानेवाली खाद।
किसी वस्तु को सड़ाकर उठाया
जानेवाला खमीर।

पाइक—(सं पुं) दाग, पदाधिक
गैन्य।

पायक। दूत। दाम। पैदल
सिपाही।

पाई—(सं स्त्री) भवि. एटा पहेछार
तिनि-गव एक मूला-पाई।
पूर्ण विवायव छिग।

पैर। चक्र। पैसे के तिहाई
मूल्य का एक सिक्का। चौथाई का
मान प्रकट करनेवाली सीधी [१]
रेखा। पूर्णविराम की रेखा।

पाठक—[सं पुं] छूहे।

पावक। अग्नि।

पाक—[सं पुं] बकन, गिट्टावा
कार्य। जीव गोदा।

पकने या पकाने की क्रिया या
भाव। रसोई। पकवान। भोजन
पचने की क्रिया।

[वि] निष्पाप, पवित्र, निर्दोष,
निर्मल।

पाप रहित। पवित्र। निर्दोष।
निर्मल।

पाकर—(सं पुं) अवि गश्, पाकबी।
एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

पाकशाला—(सं स्त्री) पाकघर,
वाकनि शाल। वाकनि घर।
रसोई घर।

पाक्षिक—(वि) पक्षकीया,
(पक्षकीया पञ्च)

एक पक्ष या पन्द्रह दिनों का या
उससे सम्बन्ध रखनेवाला। पन्द्रह
दिनों पर एक बार प्रकाशित
होनेवाला पत्र।

पाखंड—(सं पुं) पाखण्ड, यक्षबी,
धूबाछानी, आडधर।

ढोंग। आडम्बर। छल। धूर्तता।

पाखंडी—(वि) कपटालि, धूर्तलि,
वृष्टालि।

ढोंगी। धोखेबाज। धूर्त।

पाख—(सं पुं) पख, एकपक्ष,
डेडेका।

पन्द्रह दिन। पखवारा। पंख।

पाखाना—[सं पुं] पाखशाना,
शौचालय, बिछा।

शौच गृह। मल।

पागना—(क्रि स) पंगना।

सीरे या चाशनी में कोई चीज
पकाना या लपेटना।

पागलखाना—(सं पुं) पंगना-
खाटुक।

वह स्थान जहाँ चिकित्साके लिये
पागल रखे जाते हैं।

प गलपन—[सं पुं] पागनामि,
उग्रामना, उग्रमता।

उन्माद। विक्षिप्तता। पागलोंका
सा मूर्खता पूर्ण आचरण।

पाचक—(वि) जीर्णकारी वा
गिट्टावा वृक्ष।

पचाने या पकानेवाला।

[सं पुं] जीर्णकारी वाकनी,
प्रेषक।

पाचनशक्ति बढ़ानेवाली दवा।
रसोइया।

पाचन—[सं पुं] निष्ठ कर्ता, जीव

योदा क्रिया, जीर्णकारी उद्देश ।

पचाना या पकाना । आहार के

पचने या हजम होने की क्रिया ।

पाचक औषध ।

(वि) जीर्णकारी ।

पचानेवाला (पदार्थ) ।

पाचनशक्ति— [सं स्त्री] शक्ति

शक्ति, जीव शक्ति ।

हाजमा ।

पाछ—(सं स्त्री) खिञ्चुव आदि

गच्छ प्रता नग डेलिगानन नाद

गच्छ गीत कर्ता विका ।

रक्त, रम आदि निकालने के लिये जन्तु या पोष के शरीर पर छुरी आदिसे किया हुआ हलका घाव ।

[सं पुं] पिछ । अशुभवन ।

पीछा ।

(वि, क्रि वि) पिछव काल ।

पीछे ।

पाजी—[वि] दृष्टे, लम्पटे, दुर्जन ।

दुष्ट । लुच्चा । शरारती ।

(सं पुं) पनातिक टैना,

अधिक, बक्क ।

पैदल सिपाही । ज्यादा । रसक ।

पाजेब—(सं स्त्री) नृपुत्र ।

नूपुर ।

पाटंबर—(सं पुं) पाटिब काटपाव ।

रेशमी कपड़ा ।

पाटना—(क्रि स) जानव-झोथारबरे

भावादा, दंग कर्ता ।

मिट्टी, कूड़े आदिसे गट्टा आदि

भरना । ढेर लगाना । पाटन

या छत बनाना ।

पाटल—[सं पुं] शोलाप्र । चक्र

मर्ज । गुलाव । आख का कांथा ।

(वि) गुलपौया ।

गुलाव सम्बन्धी ।

पाटव—[सं पुं] कोशल ।

कुशलता ।

पाटा—[सं पुं] दलि-गवि वा दलि

द्वारि ।

वह लम्बी लकड़ी जिससे जोते

हुए खेत की मिट्टी के ढेले तोड़े

जाते हैं ।

पाटी—(सं स्त्री) पावपाटि, निशाबि,

गाबी, गेउँठा ।

परिपाटी । झेली । श्रेणी, पंक्ति ।

सिर के बालों में निकाली जाने-
वाली मांग ।

पाठन (सं पुं) पढ़ावा कार्य,
अध्यापन ।
अध्यापन ।

पाठान्तर—[सं पुं] ग्रंथित लिखाव
बाद में अन्त एक प्रकारसे लिखा
पाठ वा शब्द ।
पाठ-भेद ।

पाठा—(सं पुं) झूठे-गूठे, पठा, गाना ।
तगड़ा । जवान बेल, भैंसा या
बकरा ।

पाठी—(सं पुं) पढ़नेवाला, पाठक ।
पढ़नेवाला । पाठक ।

पाड़—[सं पुं] धुती आदिब ओबि,
कँचो दाँठ, छाँ ।

घोती आदिका किनारा । मचान ।
कुएँ के मुँहपर रखने की जाली ।
बाँध । फाँसी का तख्ता ।

पाड़ा—(सं पुं) पोवा, पूवरी ।
मुहल्ला ।

पाड़—[सं पुं] काँठव गीवा ; आबि-
काएओबर कैति । टेडि ।

पाटा । वह मचान जिसपर बैठ
कर किसान खेती की रखवाली

करते हैं । घोती, साड़ी आदिका
किनारा ।

पाड़ा—(सं पुं) झूठेका-झूठेकि
शब्द ।

एक प्रकार का हिरन ।

पाजि—(सं पुं) शत ।
हाथ ।

पाणि ग्रहण—[सं पुं] विवाह ।
विवाह ।

पातक—(सं पुं) पाप ।
पाप ।

पातकी—[वि] पापी ।
पापी ।

पातर (१)—[वि] पातल, क्रीष ।
पतला । दुबला ।

पाताब—(सं पुं) भविष्य पिक्का
बोधा ।
पैरों में पहनने का मोजा ।

पात्ती—(सं स्त्री) छिछि, गच्छ
पात, अतिछि ।
चिट्ठी । वृक्ष के पत्ते । प्रतिष्ठा ।

पातुर (री)—[सं स्त्री] वेश्या ।
वेश्या ।

पात्रता—(सं स्त्री) आर्थी शब्द
योग्यता ।

पात्र होने की अवस्था या भाव ।
किसी काम के लिये चुने जाने या
किसी पदपर नियुक्त होने के लिये
आवश्यक योग्यता या गुण ।

पाथ—(सं पुं) पानी, वाटे, पथर
गायत्री, वाटे-शब्द ।

पानी । मार्ग । पाथेय ।

पाथना—(क्रि स) गना, ले ३ दिशा ।
गीली मिट्टी या गोबर आदिको
थाप-पीट या दबाकर उपले, ईंट
आदि के आकार में लाना ।

पाथर—(सं पुं) शिल ।

पत्थर ।

पाथेय—(सं पुं) पथर-गमल, वाटे-
शब्द ।

पथ या गस्ते में काम आनेवाला
खाद्य पदार्थ । यात्राकी सामग्री
और व्यय के लिये धन ।

पाद—(सं पुं) भवि, छत्रार्थ, श्वरक ।
वशिष्ठादेदि उल्लास वायु ।

पैर । श्लोक या पद्य का चरण ।

चौथाई भाग । अपान वायु ।

पाद त्राण—[सं पुं] ज्ञोता ।

ज्ञाता ।

पादना—(क्रि अ) वशिष्ठादेदि
वायु उल्लास । पान ।

गुदा से वायु त्याग करना ।

पादप—(सं पुं) गृह ।

वृक्ष ।

पादरी—(सं पुं) शूद्रान् धर्मशास्त्रक
ईसाई पुरोहित ।

पादाकांत—[वि] अदमनित, अबा-
धित ।

पद दलित । पराजित ।

पादुका—[सं स्त्री] श्वर, ज्ञोता ।
खड़ाऊँ । जूता । पैरोंमें पहनने का
कोई उपकरण ।

पादोदक—(सं पुं) पद-ऊँ ।

चरणामृत ।

पाद्य—[सं पुं] भवि भूवलेन उल्लास
ऊँटलेन आंग वटोटा पानी ।

पूजनीय व्यक्ति या देवता के लिये
चरण धोने के दिया जानेवाला
जल ।

पान दान—(सं पुं) पान वटा ।

पनडब्बा ।

पाना—(क्रि स) पाना, भोगकरना

प्राप्त करना । अच्छा या बुरा फल

भोगना । देव या जान लेना ।

बराबरी कर सकना । भोजन

करना । प्राप्तव्य धन ।

पानिप—(सं पुं) पाना, ज्ञा-
करता, पानी ।

कान्ति । चमक । शोभा या
सुन्दरता । पानी ।

पानीदार—(सं पुं) अस्त्राभ्युप,
छिक्-मिकीया । गाश्गी ।

इज्जतदार । चमकदार । साहसी ।

पाप-ग्रह—(सं पुं) वेगा ष्ट, कू-
ष्ट ।

शनि, राहु, केतु आदि अशुभ
फल देनेवाले ग्रह ।

पापघ्न—(वि) प्रापनाशक ।
पाप नाशक ।

पापङ्ग—(सं पू) प्रापव ।
उर्द या मूंग के आटे की मसाले-
दार पतली चपाती ।

पाबंद्—[वि] यावक्क, निगनाशु-
बर्ही ।

बंधा हुआ या बद्ध । नियम
आदि का नियमित रूपसे पालन
करनेवाला ।

पामर—[वि] शूटे, प्राप्ती, नीछ ।
खल । पापी । नीच ।

पामरी—(सं स्त्री) शिवाभाई
रुकुव उपवत लोवा पातल
छापर ।
दुपट्टा ।

पायंदाज—[सं पुं] छवि मछिव
बावे इवान मूखत बशी एविश
गँछलि वा काटोबर ।

पैर पीछने का बिछावन । पांवड़ा

पायक—(सं पुं) दूठ, ठाकुर,
प्रापतिक देगना ।

दूत । दाम । पैदल मिपाही ।

पायदार—(वि) मजबूत, दृढ़ ।
बहुत दिनोंतक काम आने या
टिकनेवाला । मजबूत ।

पायल—[सं स्त्री] नृपुत्र, माशुम्मी ।
पाजेब नामका पैरका गहना ।
हथिनी ।

पाया—(सं पुं) थोटे यादिव खुवा,
थंटे-थंटी ।
पलंग चौकी आदिका गोड़ा ।
खंभा । पद । दरजा ।

पारंगत—[वि] अनिपुण । अप्रशिक्षित ।
पूर्ण पंडित ।

पार—(सं पुं) प्राव, उठे, जिप्राव,
कैति ।

जलाशयों के नट । दूसरी तरफ ।
अन्त, सिरा ।

(अव्य) अपिछत, आगत, दूर ।
परे । आगे । दूर ।

(वि) पालन बबोडा । पाव
कबोडा ।

पालन करनेवाला । पार लगाने
वाला ।

पारखी—(सं पुं) पबीकक ।
चिनेता ।

परख या पहचान रखनेवाला ।

पारग—(वि) पाबट्टे योवा ।
पट्टे, पार्गट ।
जो पार चला गया हो । अच्छा
जाता ।

पारण—[सं पुं] जत वा उपवागव
अखुत कबा आशव, पाव होरा
कार्य । पबीकात गफल होरा ।
पार करने या उतरने की क्रिया
या भाव । परीक्षा या जांचमें
पूरा उतरना । उपवास के दूसरे
दिन का पहला भोजन और
तत्सम्बन्धी कृत्य ।

पारणक—[वि] उपवागव पिछत
आशव कबोडा ।

पारण करनेवाला ।

(सं पुं) अशान पत्र, अशुयति
पत्र ।

परीक्षा आदि में उत्तीर्णता का
सूचक पत्र । पार-पत्र ।

पारधी—(सं पुं) ब्याध, चिकाबी,
हठाकाबी ।

बहेलिया । शिकारी । हत्यारा ।

पारद—(सं पुं) पावा, एठा
आठीन जाति ।

पारा । एक प्राचीन जाति ।

पारदर्शक—[वि] श्वख, फटे-
फटीया ।

जिसके आरपार की मारी चीजे
दिखाई पड़े ।

पारदर्शी—(वि) दृढदर्शी । श्वक ।
दूरदर्शी । पारदर्शक ।

पारना—(क्रि स) पावि दिया ।
पेलोरा, पिक्का, गाँठत कटे ।
डालना । गिराना । रखना या
देना । दिलाना । पहनना । सँचे
आदि में डालना । पूरा करना ।

पारस—(सं पुं) पबनगणि । गबाई
दिशा डोखन ।

एक कल्पित पत्थर । स्पर्शमणि ।
खानेके लिये परोसा हुआ भोजन ।

[अव्य] उठव ।

पास ।

पाखसी—(वि) पाबन्त देशगङ्गाय,
पाबन्त देश ।

पाखस देश सम्बन्धी । पाखस देश

का ।

[सं पुं] पावञ्च देश
वाणिज्य ।

पारस देश का निवास ।

पारायण—[सं पुं] गमायि,
निर्दिष्ट काल व क्षितवत्त गमायु
होवा ग्रंथ पाठ आदि कार्य ।

समाप्ति । नियत या नियमित
समय पर होनेवाला किसी घमं
ग्रंथ का आदिसे अन्त तक होने
वाला पाठ ।

पारावत—(सं पुं) पाव चबाइ,
पौशव ।

परेवा । कबूतर । पहाड़ ।

पारावार—(सं पुं) इपाव-गिपाव,
गीवा, गाशव ।

आरपार । सीमा । समुद्र ।

पारिजात—[सं पुं] शर्शव प्रावि-
जात फूल ।

नन्दन कानन का एक वृक्ष ।

पारित—(वि) गमयित, यशु-
न्यादित । शीकृत ।

जिसका पारण हो चुका हो ।

प्रस्ताव आदि जो पास हो चुके
हों ।

पारी—(सं स्त्री) पाल ।

बारी ।

पार्वण—[सं पुं] आठे गी आरु
पूणिमात पूर्वपूरुषगणक पिण्ड
दिया श्राव ।

पर्वके अवसर पर किया जानेवाला
विशेष प्रकार का श्राद्ध ।

पार्वतीय—(वि) पर्वतीय ।
पहाड़ी ।

पार्षद—(सं पुं) गयीपवर्डी, उचव
शका, गवक ।

पास रहनेवाला । सेवक ।

मुसाहब ।

पाल—(वि) वक्को, वक्क ।

पालन करनेवाला । कार्य विभाग
आदि का प्रधान संचालक या
अधिकारी ।

(सं पुं) गावत तवा पाल ।
तबू । गाड़ी आदि देखे ।

नाव के मस्तूलमें बांधा जानेवाला
बड़ा मोटा कपड़ा । तम्बू । गाड़ी
या पालकी को ऊपर से ढँकनेका
ओहार ।

(सं स्त्री) पानी आवक बाधि-
वटेल दिश बाह । पूबुबी
आदि उब पाव ।

पानी रोकनेवाला बांध या मेंड़ ।
ऊँचा तट या किनारा ।

पालक—[वि] पालन करनेवाला ।
पालन करनेवाला ।
[सं पुं] पालनशील पोषा,
पोषक ।

पाला हुआ, दत्तक पुत्र । एक
प्रकार का माग ।

पालतू—(वि) पोषणीय ।
पाला या पोसा हुआ (जानवर) ।

पालना—[क्रि म] पालन करना । पोषण ।
पालन करना । (वात-जात्रा
आदि) भंगन करना ।
(सं पुं) शिशु गल्लवा पोषण ।
छोटे बच्चों के लिये एक प्रकारका
भूला या हिंडोला ।

पाला—(सं पुं) बर्फ, शीत,
गन्धक, प्रधान ज्ञान, डूलि,
जीवाश्म ।

हिम । बरफ । मरदी । सम्पर्क ।
वास्ता । प्रधान स्थान । सीमा
निर्धारित करनेवाली मेंड़ ।
अनाज भंगने का मिट्टी का एक
बड़ा पात्र । अखाड़ा ।

पालागन(गी)—[सं स्त्री] नमस्कार,
प्रणाम ।

प्रणाम । नमस्कार ।

पाली—(वि) अपभ्रंश प्रवर्धनी
भाषा । पालि । प्रेमी । कामान ।
पुत्रि । प्रेमी । प्रेमी तल गा
भाग । एक प्राचीन भाषा । तोषा
(सं स्त्री) पाल ।
बारी ।

पाव—[सं पुं] छतुर्थांश, एक
पोषण ।

चौथाई भाग या अंश । एक सेर
का चौथाई भाग ।

पावक—[सं पुं] जूड़े, पोषा,
गन्धक, सूर्य ।

जाग । ज्ञान । पालन । सहाचार ।
सूर्य ।

(वि) उद्ध कर्ता ।

शुद्ध या पवित्र करनेवाला ।

पावती—(सं स्त्री) बलि, प्राप्ति-
श्रीकाव ।

रमीद । प्राप्ति स्वीकार ।

पावदान—[सं पुं] भविष्य
ज्ञान । भविष्य गतिवत् वादे
प्रवृत्त बर्णन गच्छति ।

गाड़ी आदिमें पैर आदि रखने के
लिये बना हुआ स्थान रेशोंका
बना हुआ वह खंड जिसपर पैर
पोंछे जाते हैं । पांवड़ा ।

पावन—[वि] पवित्र ।

पवित्र करनेवाला । पवित्र ।

(सं पुं) छूरे, आशुश्चिद्र, पानौ,
गोबर, बज्राक्ष ।

अग्नि । प्रायश्चित्त । जल ।

गोबर । रुद्राक्ष ।

पावनता, पावनताई—[सं स्त्री]
पवित्रता ।

पावन या पवित्र होने की दशा
या भाव ।

पावना—(सं पुं) पावना, पाव-
नश्रीवा, आपा ।

प्राप्य धन ।

पावस—(सं पुं) वर्षा शीत ।
वर्षा ऋतु ।

पाश—[सं पुं] जाल, बन्धन । कान्त ।
फंदा । किसी प्रकार का बन्धन ।

रस्सी, तार आदिका फंदा ।

पाशव—(वि) पाशविक, पशुव
निष्ठिन वा दुष्ट ।

पशु सम्बन्धी । पशुओं का सा ।

पाशुपत—[वि] महादेव उपासक
अथवा अश्वनाय । पशुपति वा
शिव गणेश ।

पशुपति या शिव सम्बन्धी ।

(सं पुं) महादेव उपासक ।
पशुपति या शिव का उपासक ।

पाषाण—[सं पुं] शिला ।
पत्थर ।

[वि] क्षयशील, कठोर, निर्द्वय ।
हृदयहीन । निर्दय ।

पासंग—(सं पुं) एक तर्जनी आदि
शृङ्गाकालव गन्धनता गमान

कबिलेन बन्धन ।

तराजू की डंडी बराबर करने के
लिये उठे हुए पलड़े पर रखा
हुआ कोई बोझ ।

(वि) कम, दुष्ट ।

बहुत थोड़ा । तुच्छ ।

पास—[सं पुं] काय, काल,
उच्च, अधिकार ।

बगल । ओर । सामीप्य ।
अधिकार ।

(अव्य) निकट, उच्च, आनंद
प्रति ।

निकट । नजदीक । अधिकार में ।
किसी के प्रति ।

(वि) प्रवीण आश्रित उद्योग ।
अच्छा आदि श्रेष्ठ ।

परीक्षा आदिमें सफल । (प्रस्ताव
आदि) पारित ।

पासा—[सं पुं] आशाश्चलन क्षुति,
जुआश्चलन ।

चौसर खेलने की गोट । जुए
का खेल । मोटी बस्तीके आकार
की गुल्ली ।

पासी— (सं पुं) चबाइयबीया,
ठाडिद्वाला, ठाडिब बादगाय
कबा जाति ।

जाल या फंदा डालकर चिड़ियाँ
पकड़नेवाला । ताड़ के पेड़ से
ताड़ी उतारनेवाली एक जाति ।

(सं स्त्री) फाल, जाल, बौबाब
छनि बक्का जबि ।

फंदा । पासा । घोड़े के पैर
बाँधने की रस्सी ।

पाइन—(सं पुं) शिल, कवाटि शिल ।
पत्थर । कसौटी का पत्थर ।

पाहि—[अव्य] उचर, आनर अति,
आनर शबा, बक्का कबा ।
पास । किसी के प्रति । किसीसे ।
'रक्षा करो' ।

पाहुना—(सं पुं) अतिथि,
जोबाइ ।
अतिथि । मेहमान । दामाद ।

पिंग—[वि] तान बबनीया ।
ताम्रवर्ण ।

पिंगल—[वि] शलसीया, बडूचवा
मुगी वरण ।

पीला । ताम्रवर्ण ।

[सं पुं] हल शास्त्र निर्वाता
एछन मुनि, बालब, जूइ, फेंचा ।

छन्दः शास्त्र के एक आचार्य ।

छन्दः शास्त्र । बन्दर । अग्नि ।

उल्लू पक्षी ।

पिंगला—(सं स्त्री) इठियांगर
लगत गन्धक्रीय एडाल नाडी,
लक्ष्मी ।

हठ योग के अनुसार शरीर की
तीन प्रधान नाडियों में से एक ।
लक्ष्मी ।

पिंजरापोल—(सं पुं) गोशाला
वा पशु शाल ।

गोशाला या पशुशाला ।

पिंड, पिंडा—(सं पुं) पिण्ड, घूब-
नोया गोटो बड्ड, नबीब ।

गोल पदार्थ । अन्न आदि का
गोला । शरीर ।

पिंड-दान—(सं पुं) इतकर
अर्घ्य पिण्ड दिये कार्य ।

श्राद्ध आदि में पितरों को पिंड
देने की क्रिया ।

पिहरोगी—(सं पुं) छिबकशीशा ।
जिसे हमेशा कोई न कोई रोग
लगा ही रहता हो ।

पिडो—(सं स्त्री) डबिब डिना,
कनाकून ।

घुटने के नीचे का पिछला मांसल
भाग ।

पिडली—(सं स्त्री) घूबगीगा गरु
शोभा वस्त्र, मछवा ।
छोटा पिड । सूत, रस्सी आदिका
गाल लच्छा ।

पियराई, पियराई—[सं स्त्री]
दानवीशा ववण । चबाई ।
पीलापन ।

पिक—[सं पुं] कुलि चबाई । पापिशा
कोयल । पपीहा ।

पिघलना—[क्रि अ] गलि योवा,
अव होवा, शिशाठ दया उपजा ।
धन, पदार्थ का गलकर तरल
होना । चित्तमें दया उपजना ।

पिचकना—(क्रि अ) टोटावा
पवा ।
फूले या उमरे हुए तलका दबना ।

पिचकारी—(सं स्त्री) छेवरका ।
नली के आकार का एक उपकरण

जिसेसे तरल पदार्थ अन्दर
खींचे और बाहर फेंके जाते हैं ।

पिचपिचा—[वि] नवय, नाशी,
छेप-छेपीशा ।
लसदार । दबा हुआ और गुल-
गुला ।

पिच्छिल—(वि) पिछ्ण,
फिसलनदार ।

पिछड़ना—(क्रि अ) पिछ पवा,
अतिशयश्रिता अश्रित पिछ् पवि
थका ।
साथ से छूटकर पीछे रह जाना ।
प्रतियोगिता आदिमें पीछे रह जाना

पिछलग्ना—(सं पुं) अश्रुशी,
सेवक, आश्रित, अश्रुचव ।
अनुगामी । सेवक । आश्रित ।
पिछलग्ना ।

पिछलग्ना—(सं पुं) अकाशुगवण-
काबी ।
अन्ध अनुयायी ।

पिछला—[वि] पिछ्कालव, पिछ्च,
अतीतव, शेषव ।
जो पीछे की ओर हो । बादका ।
बोता हुआ । अन्तिम ।

पिछवाड़ा—(सं पुं) वनव पाछ-
काल ।

घर आदि के पीछे का भाग ।
पीछे की भूमि ।

पिछेलना—[क्रि स] ठेलि पिछु-
बाइ थोवा, पिछ पेलाइ थोवा ।
धक्का देकर पीछे हटाना । पीछे
छोड़ना ।

पिटना—[क्रि अ] अशाब बना ।
पीटा जाना ।

पिटार्ई—(सं स्त्री) अशाब कबा
काया ना ताब नागठ ।
पीटने या पीटे जानेका काम या
भाव । पीटने की मजदूरी ।

पिटारा—[सं पुं] पिटोबि, थार ।
बांस आदि की पट्टियों से बना
ढकनेदार पात्र ।

पिट्—[सं पुं] गौपन भाव,
गहाशकाबी ।
गुप्त रूप से या पीछेसे छिपकर
सहायता करनेवाला ।

पितर—[सं पुं] शर्गौय पूर्व-पूरुष ।
मरे हुए पूर्वज ।

पितृथ (सं पुं) पिताब भाइ-
भुवा, पदाइ ।
चाचा ।

पित्ता—(सं पुं) पिछ, माइ-पिछ,
पिछ कोब ।

पित्त । साहस । यकृत की वह
थैली जिसमें पित्त रहना है ।

पित्तो—(सं स्त्री) शायति ।
अम्हारी । घमोरी ।

पित्तेमार—[वि] गेवा ननपेबा
[छेठे वा काम] ।

(वह काम) जिसमें बहुत ही धैर्य
या अध्यवसाय से लगे रहना पड़े ।

पिहो—(सं स्त्री) गविध कूज
छबाइ, नगथा ।

एक प्रकार की छोटी चिड़िया ।
जो बहुत ही तुच्छ आर नगण्य
हो ।

पिनक—[सं स्त्री] याकिठब बागिठ
आल-आला, गेबेडे-गेठेडे ।
अफीम के नशे में सिरका भूमना ।

पिनकना—(क्रि अ) आल-आल
कबा, आलप कथाठेइ अगच्छे
शरा ।

पिनक लेना । थोड़ी सी बातपर
झुंझा या नाराज हो उठना ।

पिनपिनाना—[क्रि अ] पन
पेगटेक गदाइ कना ।
बच्चों का हमेशा रोते रहना ।

पिनाक—(सं पुं) मशामेव वध,
त्रिशूल ।

शिव का धनुष । त्रिशूल ।

पिपासा—(सं स्त्री) पियाह, बर
हैछा । वा लोभ ।

प्याम ।

पिपीलिका—[सं स्त्री] पिपरा,
पकवा ।

चूँडी ।

पिय—(सं पुं) पति ।
पति ।

पियराना—(क्रि अ) पैंता पवा ।
पीला पड़ना ।

पियरी—[सं स्त्री] शालबीया नाबी
वा धुती, शालबीया गुण ।

पीली रंगी हुई धोती या साड़ी ।
पीलापन ।

पियूख, पियूष—(सं पुं) अमृत ।
अमृत ।

पिराना—(क्रि अ) बिख उठना, पीड़ा
होना ।

दर्द करना । दुखाना [किसी
अंग का]

पिरोना—(क्रि स) बेबीत मूत्र
खरवाना, मँषा ।

सूत, तागे आदि में कुछ गूँथना ।
पोहना । सूई के छेद या नाकेमें
तागा डालना ।

पिळना—(क्रि अ) गाँठकर अशा,
अतिक्रिंत याक्रमण कवा, छेपि
बग उल्लिखना ।

वेग से किसी ओर से दूट पड़ना ।
भिड जाना । रस या तेल निका-
लनेके लिये पेरा जाना ।

पिलपिला—(वि) खूँकागल, अताछ
कागल ।

अत्यन्त कोमल ।

पिलाना—[क्रि स] पीन करवाना ।
पीने का काम दूसरोसे कराना ।
अन्दर भरना ।

पिल्ला—[सं पुं] कुइबर पोवानि ।
कुत्ते का बच्चा ।

पिल्लु—(सं पुं) पोक (गैला पछा
बद्धत होवा), पेलू ।

वह छोटा कीड़ा जो सड़े हुए
फलों आदि में पड़ जाता है ।

पिष्ट—(वि) बटन, बटा बद्ध ।
भिहि गुवि कवा ।

पीसा या पिसा हुआ ।

पिष्ट-पेषण—(सं पुं) चर्वित, चर्वण ।
पिसे हुए को फिरसे पीसना ।

कही हुई बात या किया हुआ
काम फिरसे दोहराना ।

पिसना—(क्रि अ) पिशा, ण्वि
होवा, कटे वा शानि मख कबा ।
पीसा जाना । कुचला जाना ।
बहुत कष्ट या हानि सहना ।

पिस्ता—(सं पुं) प्रेक्षा, एविश
बानाम जातीय फल ।
एक मेवा ।

पिस्तौल—[सं स्त्री] पिष्टूल, वन्दूक
जातीय एविश यज्ञ ।
वन्दूक की तरह छोटा अस्त्र ।

पिसू—(सं पुं) पेशाब ।
मक्खियों जैसा शरीर का रक्त
चूसनेवाला एक कीड़ा ।

पिहित—(वि) यादृत, नूकाशित ।
ढंका हुआ । छिपा हुआ ।

पी—[सं पुं] प्रिय ।
प्रिय ।
(सं स्त्री) प्राणिना च्वाशेव नात् ।
पपीहे की बोली ।

पीक—[सं स्त्री] ताम्रानव पिक् ।
खाये हुए पान के रस की थूक ।

पीब—[सं स्त्री] भातव नाड ।
भात का मांड ।

पीछा—[सं पुं] पीछफाल, पिछिब
पिने, आनक अशुगबन कबा
क्रिया ।

पीछे की ओर का भाग । पीठका
भाग । किसी के पीछे लगे रहने
की क्रिया या भाव ।

करना—गलब्रह्म, पाछे पाछे
अशुगबन कबा ।
गले पडना । किमा के पीछे पीछे
लगे रहना ।

पीछे—(अव्य) प'छफाल वा
आनफाल, पिछ्ठ, शेषतः ।
पृष्ठ भागमें या दूगरी ओर ।
पीछे की ओर, कुछ दूर पर ।
बाद । अन्त में । वास्ते ।

पीटना—[क्रि स] नबा, आघात
कबा । कोटवाग ।

आघात करना । मारना । जैसे
तैसे कोई काम समाप्त करना या
किमी से कुछ ले लेना ।

[सं पुं] आनव बुड्ढात होवा
शोक, कठिनता ।

किसी के मरनेपर होनेवाला
शोक । कठिनता ।

पीठ—[सं पुं] पीठा, बिष्ठापीठ,
विशिष्ट पवित्र स्थान, बेदी,

गिःशान ।

लकड़ी, पत्थर आदिका बैठने का
आमन या स्थान । विद्यार्थियों के
पढ़ने का स्थान । सिंहासन ।
बेदी । कोई विशिष्ट पवित्र
स्थान ।

(सं स्त्री) पिठि, पाङ्काल ।
शरीर के पीछेवाला भाग ।
पृष्ठ-भाग ।

पीठिका—(सं स्त्री) आशय, गद्दा
शोभा, परिच्छेद ।
आधार । छोटा पीठा । परि-
च्छेद ।

पीठी—(सं स्त्री) पानि-बटो,
पानीत जियाई पिहिं गुवि
कवि लोवा पानि ।
पानी में भिगोकर पीसी हुई
दाल ।

पीड़न—[सं पुं] उन्पीडन, उपपन्न,
यज्ञभा ।
कष्ट देना । दबाना । पेरना ।
अत्याचार करना ।

पीड़ा—[सं पुं] पीबा, एविश वश
आगन ।

बैठने के लिये काठका छोटा और
" कम ऊँचा आसन । सिंहासन ।

पीढ़ी—[सं स्त्री] गौवि, गद्दा गौबा ।
पुत्र । किसी विशेष समयमें होने
वाले व्यक्तियों की समष्टि । (अं-
जेनरेशन) छोटा पीठा ।

पीत—(वि) शालबीया, पीन कबा,
प्रिया ।

पीला । भूरा । पीया हुआ ।
(सं पुं) शालबीया वक्थ ।
पीला रंग । भूरा रंग ।

पीतम—(वि) प्रियतम ।
प्रियतम ।

पीतल—(सं पुं) पिठल (एविश
धातु ।
नाम्बे और दस्ते के मेल से बनी
हुई धातु ।

पीतांबर—(सं पुं) पीरुव (पीरुवई
प्राय शालबीया कापोर
पिठिछिल) शालबीया कापोर ।
पीला कपड़ा । श्रीकृष्ण ।

पीन—(वि) झूल, शंकु, ऊँचे-पूँछे ।
स्थूल । मोटा । पुष्ट । भरा-भूरा ।

पीनस—[सं पुं] एविश नाकब
बेसाव ।

नाक का एक रोग ।

पीना—[क्रि स] पीन कबा, मनव
भाव मनते दसाई बशी, मन पीन

कवा, धूसपान कवा ।
 पान करना । कोई विचार या
 मनोविकार मन ही में दबालेना ।
 शराव पीना । धूस्रपान करना ।
पोष, पोष—(सं स्त्री) पूँछ ।
 यावमें निकलनेवाला मवाद ।
पीपल—(सं पुं) पौष्ट । पिपिलि ।
 अश्वत्थ वृक्ष । एक लता जिसकी
 चरपरी कलियाँ पाचक होती है ।
पीपा—[सं पुं] पिपा ।
 काठ या लोहेका बड़ा गोल पात्र ।
पीयूष—[सं पुं] यशुत ।
 अमृत ।
पीर—(सं स्त्री) दुःख, कष्ट, गदाश-
 त्रुति ।
 पीडा । कष्ट । महानुभूति ।
 (वि) दुःख, गदाश, मुश्किलान
 ग'धु ।
 वृद्ध । महात्मा । गुरु ।
पील—[सं पुं] पीलो ।
 हाथी ।
पील-पाँव—[सं पुं] पीला-
 वेनाव ।
 श्लोपद नामक रोग ।

पील सोज—(सं पुं) गञ्ज
 चिराग दान ।
पीला—(वि) डालक्षीया जेठ ।
 हल्दी के रंगका । कान्तिहीन ।
पीलिया—(सं पुं) पीलु रोग ।
 कमल रोग ।
पीव—(सं पुं) प्रिय, पति ।
 प्रिय । पति ।
पीसना—(क्रि सं) पीसना, पीटा
 पिटा, पीदितमय काम कवा ।
 रगड कर आटे या चूर्णके रूपमें
 करना । परिश्रमका काम करना ।
पीहर—(सं पुं) पीकर बर ।
 मायका ।
पुंगव—(सं पुं) बलवान् वा बलवान् ।
 बल ।
 [वि] जेठ, अति उद्यम ।
 श्रेष्ठ । उत्तम ।
पुंगोफल—[सं पुं] जामोला ।
 मुपारी ।
पुंज—(सं पुं) बागि, प'म ।
 राशि । ढेर ।
पुंजित—(वि) जमीकत, पूँजीकृत ।
 जो धीरे धीरे जमा होकर बढ़े

पैमान आकार के रूपमें हो गया हो ।

पुंढरीक—[सं पुं] अक्षकून, निःश, फोटे, दिग्गञ्ज । छूँइ ।

कमल । सिंह । तिलक । सफेद रंग का हाथी । आग ।

पुंश्चली—(सं स्त्री) बाजिठाविली । दुश्चरित्रा स्त्री । छिनाल ।

पुंसत्व—(सं पुं) प्रोक्तम् । पुरुषत्व ।

पुंसवन—[सं पुं] पाथीव, पुंसवन, पुंश्चन विया ।

दूध । गर्भाधान के तीसरे महीने होनेवाला एक संस्कार ।

पुआल—(सं पुं) नवा, धानव श्वेत् ।

पयाल । सूखा हुआ धान, गेहूँ आदिका डठल ।

पुकारना—[क्रि स] मत्ता. आश्वना कर्त्ता ।

आवाज देना । नाम रटना । फरियाद करना ।

पुकराज—[सं पुं] अक्षबाग यनि । एक प्रकार का पीला रत्न ।

पुखवा—[वि] दृढ़ ।

पक्का । दृढ ।

पुचकाना—(क्रि स) निहृकोवा, नबनेवे शत वृत्तोवा ।

चूमने का सा शब्द करते हुए प्यार जताना ।

पुचारा—(सं पुं) भिक्षा कापोवव प्राप्ति, पीतल प्रालेप, अनाशक प्रशङ्गा, उवाचोवा ।

गीले कपडे से पोछने या लेप करने का काम । हलका लेप । झूठी प्रशंसा । खुशामद ।

पुच्छ—[सं स्त्री] नेत्र, या अङ्ग-भाग, प्राङ्गाल ।

दम । पिछला या अन्तिम भाग ।

पुच्छल—(वि) नेत्राल । दुमदार ।

पुछला—[सं पुं] नेत्र, छाट्टीकाव, फाना धवा लाक ।

पूछ की भाँति पीछे लगी रहने वाली आवश्यक वस्तु । पीछा न छोड़नेवाला ।

पुछवैया—[वि] मोटावाता, गहानी । पछनेवाला । खोज खबर करने वाला ।

पुजना—(क्रि अ) श्रुजित होना ,
गन्मानित होना, श्रुण होना ।

पूजा जाना । सम्मानित होना ।

पूरा होना [क्रि स] पुजाना ।

पुजापा—[सं पुं] श्रुजाव गामझी ।
पूजा की सामग्री ।

पुट—[सं पुं] आच्छादन, बड़न,
आभाग, बाटिब आकृतिब पात्र ।
मुलायम या तर करने अथवा
हलका मेल मिलाने के लिये दिया
जानेवाला छोटा । बहुत हलका
मेल । भावना । आभा । ढकने
वाली चीज । कटोरे के आकार
का कोई पात्र ।

पुटियाना—(क्रि स) पुटलाना ।
फुमलाना ।

पुटी—[सं स्त्री] गुरु (दोना) वा
बाटि, श्रुविषा ।
छोटा दोना या कटोरा । पुडिया ।
लंगोटी ।

पुट्टा—(सं पुं) तपिना, किठापत्र
गादि ।

चूतड़ के ऊपर का भाग । पुस्तक
की जिल्द बांधने के लिये बिना
गत्ते का आवरण ।

पुडिया—(सं स्त्री) श्रुविषा, धन-
गम्पछि, पूँछि ।

कागज मोड़ या लपेटकर बनाया
हुआ वह संपुट जिसमें कोई चीज
रखी हुई हो । धन-सम्पत्ति और
पूँजी ।

पुण्यश्लोक—(वि) पवित्र आचरणब,
शुक्र वस्तु ।

पवित्र आचरणवाला । शुद्ध
चीज ।

पुतना—(क्रि अ) निषा होना ।
गछा योवा, टाक खोवा ।
पोता जाना । पुताई होना ।

पुतला—[सं पुं] पुतना ।
लकड़ी घास, कपड़े आदिका
बना मनुष्य का आकार ।

पुतली—(सं स्त्री) गुरु पुतला ।
छक्र गवि ।

छोटा पुतला , आँग के बीच का
छोटा काला भाग ।

पुताई—[सं स्त्री] गछा योवा
वा निषा कार्य अथवा तार
प्राविश्रुजिक ।

पोतने की क्रिया, भाव या
मजदूरी ।

पुस्तिका (ढा) — [सं स्त्री] गऊ
पूछना ।

पतली । गुड़िया ।

पुदीना — [सं पुं] अमिना ।

सुगन्धित पत्तियोंवाला एक पौधा ।

पुनः — (अव्य) पुनर, आकौ,
उपनि ३ ।

• फिरसे । दोबारा । उत्तरान्त ।

पुनरपि — (क्रि वि) पुनर ।
फिरसे ।

पुनरावर्तन — (सं पुं) प्रत्यावर्तन,
ज गावड बाब बाब जय लावा ।
लौटकर आना । बारबार संसार
में जन्म लेना

पुनरीक्ष — (सं पुं) पुनर परीक्षण ।
किसी देखे या किये हुए कार्य को
फिरसे देखना (अ—रित्यु)

पुनर्वसन — [सं पुं] पुनर्वसति
कहावा काया । पुनर गन्धापन
काया ।

(उजड़ें हुए लोगों को) फिरसे
बसाना ।

पुनर्विदत्त — (वि) पुनर वादव्या
होता ।

जिमका फिरसे विधान हुआ हो
या किया गया हो ।

पुनर्व्यक्त — [वि] पूर्ववत् वाक्य
होना ।

किमी चीज को पहले की तरह
ज्यों की त्यो फिरसे बनाकर
सामने रखना ।

पुनि — (क्रि वि) पुनर, आकौ ।
फिर । पुनः ।

पुनीत — (वि) पवित्र ।
पवित्र ।

पुन, पुण्य — (सं पुं) पुण्य ।
पुण्य ।

पुनंदर — (सं पुं) दुर्गम बड़ा, डैल,
बिस्म । इन्द्र । विष्णु ।

पुनः — [अव्य] मन्वृथत ।
आगे ।

पुनः दत्त — (वि) पुनर्वत् प्रवाहे दिग्वा
पहले से दिया हुआ ।
(अं—प्री गेड)

पुनःसर, पुनस्सर — (वि) आगं-
बधूवा, लग, मिलित ।
अगुवा । साथी । मिला हुआ ।

पुनः — [सं पुं] नगंर, शय ।
नगर । घर । लोक । राशि, ढेर ।
(अव्य) मन्वृथत ।
आगे । सामने ।

(वि) भनप्रव, पूर्ण ।

भरा हुआ । पूर्ण ।

पुरइन—[सं स्त्री] प्रह्वय प्रोत्त,
प्रथ ।

कमलका पत्ता । कमल ।

पुरस्ता—(सं पुं) पूर्वपूर्व, पूर्वज ।
बाप, दादा आदि पूर्वज ।

पुरजा—(सं पुं) टुकड़ा, अंग, यज्ञ,
अंश, यज्ञ-प्रतिव कोना
भाग ।

टुकड़ा । कन्यन । अवयव ।
अंश । यन्त्र आदिका कोई महत्व ।
पूर्ण अंश ।

पुरना—[नि अ] गनाष्ट वा प्रवा
छोटा, ।

ममास या पूरा होता । पूरा
पड़ना ।

पुरवट—[सं पुं] चानवार डांडव
गोना ।

खेल मीचने के लिये चमड़े का
बना बड़ा डोल । चरसा ।

पुरवना—(क्रि म क्रि अ) आशा
पूर्ण नदी वा छोटा । प्रविष्ट
कवा वा छोटा, अतिष्ठ
आदि प्रवोवा ।

किसी की आशा या कामना पूर्ण

करना या होना । परिपूर्ण करना
या होना । [प्रतिज्ञा या वचन]
पूरा करना या होना ।

पुरवा—(सं पुं) पूर्ववा, प्राचा गाँव
गिलाह । पूर्ववा ७ नक्षत्र ।
छोटा गाँव । मिट्टी का कुल्हड़ ।
पूर्वा-नक्षत्र ।

पुरवाई (वैया)—[मं स्त्री] झुका
बताइ ।

पूरब में चलने या आनेवाली
वायु ।

पुरश्चरण—(सं पुं) दोनो राश्या
वादन अश्वति, मन्त्र यादि निगमा-
वर्गवा प्रोठ कवा ।

किसी काम के लिये पहले से
उपाय सोचना ओर प्रबन्ध
करना । मन्त्रादि का नियमपूर्वक
पाठ करना ।

पुरसा—[मं पुं] ४१ वा ० कुट
उच्छ्रिता भाष ।

साढ़े चार या पाँच हाथकी
ऊँचाईकी एक माप ।

पुरांगना—(मं स्त्री) नगनवागी
श्री ।

नगरमें रहनेवाली स्त्री ।

पुरा—[वि] प्राचीन, पूर्वनि ।

प्राचीन । पुराना ।

(सं पु) छद्म ।

छोटा गाँव ।

पुरातत्व—[सं पु] आगम काल
कथा, प्रश्न-उत्तर ।

इतिहास के पूर्व काल की वस्तुओं
द्वारा प्रागैतिहासिक इतिहास का
पता लगानेवाली विद्या । (अं—
अकियाँलोजी)

पुरातत्वज्ञ—(सं पु) पुरातत्त्वज्ञाता ।
वह जो पुरातत्वका अच्छा ज्ञाता
हो ।

पुरातन—(वि) प्राचीन, पूर्वनि ।

प्राचीन । पुराना ।

[सं पु] विष्णु ।

विष्णु ।

पुराना (वि) पूर्वनि, प्राचीन,
जीर्ण । अप्रचलित ।

बहुत दिनोंका । प्राचीन । जीर्ण ।
जिसे बहुत दिनों का अनुभव या
ज्ञान हो । जिसका प्रचलन उठ
गया हो ।

(क्रि स) पूर्ण कथा वा कथावा,
पालन कथा वा कथावा ।

पुरा करना या कराना । पालन
करना या कराना ।

पुरारि—(सं पु) शिव ।
शिव ।

पुरावृत्त—[सं पु] वृत्त, ऐति-
हासिक कथा ।

प्राचीन काल का वृत्तान्त या
हाल ।

पुरी—(सं स्त्री) नगर, जगन्नाथपुरी ।
नगरी । जगन्नाथ पुरी ।

पुरीष—(सं पु) विष्ठा, षु ।
विष्ठा । मल ।

पुरु—(सं पु) देवलोक, बाक्क,
शरीर ।

देवलोक । राक्षस शरीर ।

पुरुषार्थ—(सं पु) प्रीति, प्रवा-
क्य, मार्गार्थ शक्ति ।

प्रीति । पराक्रम । सामर्थ्य, शक्ति

पुरुषार्थी—[वि] प्रवृत्त कथावा,
उद्देश्यी, प्रवृत्त, प्रवाक्यी,
बलवान् ।

पुरुषार्थ करनेवाला । उद्योगी ।
परिश्रमी । बलवान् ।

पुरुषोत्तम—(सं पु) प्रवृत्त
शक्तिवान् प्रधान वा श्रेष्ठ, विष्णु,

नावायन । यल-मांश ।

वह जो पुरुषों में श्रेष्ठ या उत्तम हो । विष्णु । नारायण । मल-मास ।

पुरोगामी—(सं पुं) अग्रगामी, आगबगूदा ।

अग्रगामी किसी विषय में उदार बिचार रखने और अग्रसर रहने वाला ।

पुरोडाश—[सं पुं] यज्ज्ञाति । हवि ।

पुरोधा, पुरोहित—[सं पुं]

पुत्रोद्दिष्ट, याजक, वायुन ।

वह ब्राह्मण जो यजमान के यहाँ कर्म कांड के सब कृत्य और संस्कार कराता है । किसी धर्म के अनुयायियों के धर्म संस्कार और धार्मिक कृत्य करनेवाला ।

पुलंदा, पुलिंदा—(सं पुं)

ढोटेपाना ।

लपेटे हुए कपड़े, कागज आदिका मुठ्ठा । बण्डल ।

पुल—[सं पुं] दल, सेतु । सेतु ।

पुलक—(सं पुं) अतिशय आश्वाद, आनन्दत बोधोत्पन्न होना । रोमांच ।

पुलकना—[क्रि अ] पुलकित होना । पुलकित होना ।

पुलकित—(वि) आनन्दत विभोब होना । गदगद ।

पुलकित—(सं स्त्री) या अदि पका-बटेल दिया लेण ।

फोड़े आदि पकानेके उनपर बाँधा जानेवाला दबाओं का मोरा लेप ।

पुलाव—(सं पुं) पोलाव ।

मांस और चावल एकमें पकाया हुआ व्यंजन ।

पुलिन—[सं पुं] क्रीडि, पाद । तट । किनारा ।

पुस्त—(सं स्त्री) पिठि, पौबि ।

पृष्ठ । पीठ । वंश परम्परा में कोई स्थान ।

पुस्ता—[सं पुं] उब बाक, गड़ । बाँध । ऊँची मेंड़ ।

पुस्तैनी—[वि] बापतीया, बापति गाहान, वंशावृत्तिक ।

कई पुस्त या पीढ़ियों से चला आया हुआ । आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला ।

पुष्कर—(सं पुं) पुष्प, पद्म, बाण, शूक, शूर्या । एतन तीर्थस्नान । जल । ताल । कमल । बाण । युद्ध । सूर्य ।

पुष्कल—(वि) बहुत, अधिक, डब-
पूर, श्रेष्ठ, पवित्र ।

बहुत । अधिक । भरापूरा ।
श्रेष्ठ । पवित्र ।

पुष्ट—(वि) पालित, रुष्टे-गुष्टे,
शकत-आवत, नोदोका ।

पाला हुआ । मोटा-ताजा । दृढ ।
मजबूत ।

पुष्टि—(सं स्त्री) पूष्टिकावक
दब ।

ताकत की दबा ।

पुष्टि—(सं स्त्री) पोषण, आटि-
लता, दृढता, समर्थन ।

पोषण । दलिष्ठता । दृढता ।
समर्थन ।

पुष्टि मार्ग—(सं पुं) श्वासी
बल्लभ आचार्यार द्वारा प्रचलित
एक भक्ति मार्ग ।

बल्लभाचार्य का चलाया हुआ एक
भक्ति मार्ग ।

पुष्प बाटिका—(सं स्त्री) कुलनि,
कुलनिवासी ।

कुलवारी ।

पुष्पबाण—(सं पुं) कामदेव,
कामदेव ।

पुष्पित—[वि] प्रकृष्टित ।
फूला हुआ ।

पुस्तिका—[सं स्त्री] गक किताप ।
छोटी पुस्तक ।

पुष्प (हुप)—(सं पुं) फूल ।
फूल ।

पूँछ—(सं स्त्री) नेष्ट, नेष्टव,
प्राञ्जकाल ।

पुच्छ । दुम । पुच्छला । पिच्छ-
लग्न ।

पूँजी—[सं स्त्री] पूँछि, मूलधन,
जम्पूर्ण योगात्ता ।

धन । जमा । मूल धन । किसी
विषय में किसी का सारी योग्यता
या ज्ञान ।

पूँजीदार—(सं पुं) पूँछिपति,
मूल धनव गवांकी ।
पूँजी पति ।

पूआ—[सं पुं] मालपोदा ।
मालपूआ । एक प्रकार की पक-
वान ।

पूग—[सं पुं] तामोल गश् बा
फल, समूह, गच्छ ।

सुपारी का पेड़ या फल । राशि ।
समूह । किसी विशेष कार्य या
व्यापार के लिये बना हुआ संघ ।

पूगना—(क्रि अ) पूर्ण होना,
समयमते उपस्थित होना ।
पूरा होना । नियत समय पर आ
पहुँचना ।

पूछताछ, पूछताछी—[सं स्त्री]
छिछागा । यज्ञकान ।
जिज्ञासा ।

पूछना—[क्रि स] मोखा, छिछागा
करा ।
जानने के लिये प्रश्न करना ।
खोज खबर लेना । महत्व या मूल्य
जानना या समझना ।

पूजना—(क्रि सं क्रि अ) पूजा
करा, डेढि दिया, पूरा होना ।
पूजा करना । घुस या रिश्वत देना,
पूर्ण या पूरा होना ।

पूत—[वि] प्रविष्ट, उक्त ।
पवित्र । शुद्ध ।
(सं पुं) गठा ।
सत्य ।

पूति—(सं स्त्री) प्रविष्टता । शर्शक ।
पवित्रता । दुर्गन्ध । सङ्गयंघ ।

पूतो—(सं स्त्री) गौठिन निहिना
निषा, नशक, निशाख आदि ।
गाँठ के रूपमें होनेवाली जड़ ।
लहसुन की गाँठ ।

पूनी—(सं स्त्री) कपाशव रौखि ।
सूत कातने के लिये तैयार की
हुई धुनी रुई की बत्ती ।

पूप—[सं पुं] बालपोरा ।
मालपूआ ।

पूय—(सं पुं) पूँछ ।
पीब । मवाद ।

पूर, पूरन—[सं पुं] कठोरी,
मिठ्ठाबा आदि मिठाईब डिब्बत
दिया मछला, तबकारी आदि ।
नमी याद्विब वेगवती धारा
गमूश ।

कचोरी, समीसे, गुमिया आदि
पकवानोंमें भरे जानेवाले ममाले ।
नदी आदि की तेज धारा या बाढ़ ।
समूह झुण्ड ।
[वि] पूर्ण ।
पूर्ण ।

पूरक—[वि] गितेशव शुभन करा
शय

पूति या पूरा करनेवाला ।
(सं पुं) आभासागव एक
अधाली !
प्राणायाम की एक क्रिया । पूर्ण
बनाने या करनेवाला अंग । गुणक
अंक ।

पूरण—(सं पुं) डटोवा कार्य,
एटो गन्थाक आन एटो गन्था-
द डण कबा अङ्क ।
पूरा करने या भरने की क्रिया या
भाव । समाप्त करना । अंकोंका
गुणा करना ।

पूरना—(क्रि स क्रि अ) पूव
कबा, आच्छादित कबा, गफल
कबा, गिफ शोबा. पूजा आदिब
बावे मङ्गल दिशा ।
पूरा करना या होना । आच्छादित
करना या होना । भरना या भरा
जाना । (मनारथ) सकल करना
या सिद्ध करना । पूजा आदि के
लिये चौका बनाना । बँटना ।

पूरव—[सं पुं] पूव दिश ।
पूर्व दिशा ।

पूरबी—(वि) पूव दिशब ।
पूर्व दिशा की ।
[सं स्त्री] एक अकावब गन्गौत ।
एक प्रकार का समीत ।

पूरा—[वि] पूर्ण, गमअ, यदथठे,
गम्पूर्णडाव गम्प्रादित ।
भरा हुआ । समूचा । पूर्ण ।
यथेष्ट । पूरी तरह से सम्पादित
या सम्पन्न किया हुआ । पूर्णकाम ।

पूर्णकाम—[वि] पूर्णकाम, गकलो
इच्छा पूर्ण शोबा ।
जिसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो
गयी हो ।

पूर्णतः, पूर्णतया—(क्रि वि) गम्पूर्ण-
डाव ।

पूरी तरहसे । पूर्ण रूपसे । जितना
हो, उन सबके विचार से ।

पूर्णता—(सं स्त्री) पूर्णता ।
पूरा पन ।

पूर्णाहुति—[सं स्त्री] पूर्वाहुति,
यज्ज, शोम आदिब शेषत दिशा
आहुति ।

यज्ञ या होम समाप्त होनेपर दी
जानेवाली आहुति ।

पूर्त्त—[सं पुं] पालन, शव, नाद
आदि गजा काम, गड़काथानी ।
पालन । मकान, कुएँ, बगीचे
आदि बनवाने का काम ।

(वि) ठाकि थका, श्रुति ।
पूरित । ढँका हुआ ।

पूर्त्त विभाग—(सं पुं) गड़काथानी
विभाग ।

तामीर का महकमा । (पब्लिक
वर्क्स डिपार्टमेंट ।)

पूर्ति—[सं स्त्री] पूर्णता, आरम्भ
करा काम गमायि, कोनो बही
वा कबम आदिब शालि ठाईदोब
पूरण करा ।

पूर्णता । आरम्भ । किये हुए कार्य
की समाप्ति । किसी बही या
कोष्ठक में कुछ लिखने या खाना
भरने की क्रिया या भाव ।

पूर्व—(सं पुं) श्रुत ।
बह दिशा जिधर सूरज उगता है ।
[वि] आगब, पुबलि ।

पहले का । पहले से होनेवाला ।
प्राचीन । पिछला ।

पूर्वज—(सं पुं) पूर्वपूबज, अग्रज,
डाडर भाई ।
बड़ा भाई । पूर्व पुरुष ।

पूर्व-राग, पूर्वारोग—[सं पुं] आर-
म्भिक प्रेम ।
आरम्भिक प्रेम ।

पूर्ववत्—(क्रि वि) आगब दरे ।
पहले की तरह ।

पूर्वापर—(क्रि वि) आगब पिछब ।
आगे पीछे ।

[वि] आगब आर पिछब ।
आगे-का और पीछे का ।

पूर्वार्द्ध—(सं पुं) पूर्वार्द्ध—आरम्भ-
विर आधा भाग ।

शुरू का आधा हिस्सा ।

पूला—(सं पुं) गुंठा, अंठि,
पोना ।

सरपत, मूँज आदिका बंधा हुआ
मुट्ठा ।

पूषा—(सं पुं) श्रुत ।
सूर्य ।

पूस—[सं पुं] पुरवाश ।
पोष महीना ।

पृथुल—(वि) बृह, विशाल ।
स्थूल । विशाल । विस्तृत ।

पृथ्वी—(सं स्त्री) पृथिवी, माटि ।
धरा । भूमि । मिट्टी ।

पृष्ठ—(सं पुं) पृष्ठा, पिठ्ठा, पिछब
भाग ।

पीठ । पीछे का भाग । पन्ना ।

पेंग—[सं स्त्री] दोलनाब एगिनब
पब; यानपिनटेल योदा ।
भूलने के समय भूले का एक ओर
से दूसरी ओर जाना ।

पेंच, पेच—(सं पुं) ढालाकी, छड्ड
गलमुकुट अतिपक्की पबालु करा,
कोशल, पेंच, अटिनता ।

घुमाव । फिगाव । उलझन ।
चाल बाजी । यंत्र । कुस्ती में
प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ने की चाल ।

पेंदा—[सं पुं] कोना वस्तु
तलब अर्थ ।

किसी वस्तु का निचला भाग,
जिसके आधार पर वह ठहरी
रहती है ।

पेखना—(क्रि म) छाँटा ।
देखना ।

पेचकरा—(सं पुं) पेंच कच-पेंच
गडाल । अँटि वा कचि यूयुं उवा
लोहार यतन ।
पेच जड़ने या निकालने का एक
औजार ।

पेचिश—(सं स्त्री) अश्ली ।
पेटमें आँव होने के कारण होने
वाला मरोड़ ।

पेचीदा, पेचीला—(वि) अटिन,
मझिन ।
पेचदार । मुश्किल । विकट ।

पेज—[सं स्त्री] लाज, अतिष्ठा ।
शौब । रबडी । लज्जा । प्रतिष्ठा ।
(सं पुं) पृष्ठा ।
पुस्तक का पृष्ठ ।

पेटी—(सं स्त्री) गरु बाकच पिटाबी,
पेटव आंगव पिने उलाटे थका
अर्थ, पेटा ।

छोटा मन्दूक । पेट का आगे
निकला हुआ भाग । कमरबन्द ।

पेटू—[वि] पेटूक, थकुरा ।
मुक्खड़ ।

पेठा—[सं पुं] बगा कोमोबा, बगा
कोमोबावे तैयारी मिठाई ।
सफेद कुम्हड़ा या उसमें बनी
मिठाई ।

पेड़—[सं पुं] गछ ।
वृक्ष ।

पेड़—[सं पुं] माखुर नाभि आरु
मूत्राशय राजन अर्थ, गर्भाशय ।
मनुष्य की नाभि के नीचे मूत्र-
न्द्रियके ऊपरका भाग । गर्भाशय ।

पेय—[वि] पि श्राव पवा ।
पीने योग्य ।

(सं पुं) पि श्राव पश, पनीया वस्तु,
पानी, गांभीर ।
पीनेकी तरल वस्तु । जल । दूध ।

पेरना—(क्रि स) तेल पेरना,
तेल आदि उलिखाव
बावे गवियह आदित दिना हेंछा
वा चाप, कष्ट दिना, श्रेवणा

निष्ठा, पठिठवा, पिशवा मोशवा
कार्य ।

कोल्हू आदिमें डालकर किसी
वस्तु को इस प्रकार दबाना कि
उसका रस निकल आवे । कष्ट
देना । प्रेरणा करना । भेजना ।

पेशना—[क्रि स] ठका मबा,
अवछा कवा, दूब कवा, शेरूकि
डिठवटेल निष्ठा ।

दबाकर अन्दर घुसाना । धक्का
देना । अवज्ञा करना । हटाना ।

पेश—(क्रि वि) गमूथत, आगंत ।
सामने । आगे ।

—करना—उपस्थित कवा, शाजिब
कवा, गांकात कवा ।

उपस्थित करना । भेंट करना ।

पेशकश—[सं पुं] गांकात ।
भेंट ।

पेशगी—(सं स्त्री) आगंधन,
अजिम ।
अगाऊ

पेशबा—[सं पुं] नेता, छबदाब,
मशाबाक्ष्व दैगैय अक्षान गझीब
उपाधि ।

नेता । सरदार । महाराष्ट्र माम्रा-
ज्यके प्रधानमंत्रियों की उपाधि ।

पेशा—[सं पुं] उद्योग, वाद्यगाय
पेशा ।

उद्यम । व्यवसाय ।

पेशाब—[स पु] मूत्र, पेशाब ।
मूत्र ।

पेशी—(सं स्त्री) गमूथत अथवा
आगंत होवा कार्य, गायालयत
मोकरक्यात उपस्थित होवा
आर ताब खगानी होवा कार्य,
शांगपेशी ।

सामने या आगे होने की क्रिया
या भाव । न्यायालय में मुकदमें के
पेश होने और उसकी सुनवायी
होनेकी कारवाई । शरीर के
अन्दर मांस की गुथी ।

पेशेवर—[सं पु] वाद्यगायी ।
वह जो कोई पेशा या व्यवसाय
करता हो ।

(सं स्त्री) वाडिछाब आदिब
इवाडे जीविका उपाज्जन
करवाता ।

व्यभिचारके द्वारा अपनी जीविका
चलानेवाली ।

पेशतर—[क्रि वि] आगंत ।
पहले ।

पेसना—(क्रि स) कटि झुगडा ।

कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज
के अन्दर घँसाना या घुसाना ।

पैजनी—(सं स्त्री) डबित गिरा
एवम् अलङ्कार ।

पैरों में पहनने का झनझन बजने
वाला एक गहना ।

पैतरा, पैतरा— [सं पुं]

आक्रमण व समयत थिय
हेरि मुझा विपेव, छडुबालीवे
डबा छलन कुबण अथवा युक्ति ।
बार करने या लड़नेके समय पैर
जमा कर खड़े होने की मुद्रा या
ढंग । चालाकी से भरी हुई चाल
या युक्ति ।

पै—(अव्य) किन्तु, अद्य, उच्यत,
अति, निश्चय आदि अर्थक
अवयव ।

परन्तु । अवश्य । पास । प्रति ।

ही । पर, ऊपर ।

जोप — यदि ।

यदि ।

तोपै—तथानि ।

तो ।

कापै—काक, काव उच्यत ।

किसपर ।

(सं स्त्री) दोष कृति ।

दोष । त्रुटि ।

पैकार—(सं पुं) बवे बवे गै
बड्ड विक्री, कबा बावगायी ।
घूम घूमकर फुटकर सौदा बेचने
वाला व्यापारी ।

पैगम्बर—(सं पुं) पयगम्बर । देवपूत
देव दूत ।

पैगाम—(सं पुं) नातबि, बागी ।
सन्देश ।

पैजार—(सं स्त्री) जोता ।
जूता । जोड़ा ।

पैठना—(क्रि अ) अवेश कबा ।
प्रविष्ट होना (क्रि स-पैठाना)

पैड़ी, पैरो—(सं स्त्री) अथला,
थट-थटि ।
सीढ़ी ।

पैदल—(वि) पदयात्रा । शोख
काति ।

पैरोंसे चलकर कहीं जानेवाला ।

(क्रि वि) शोखे शोखे ।

पाँव-पाँव ।

[सं पुं] शोख काति शोखा
पदातिक टैन्य ।

बिना किसी सवारी के पैरों से
चलने की क्रिया । पदाति-
सिपाही ।

पैदा—[वि] जन्म, उत्पन्न, अजित ।

उत्पन्न । प्रकट । अजित ।

पैदाइश—[सं स्त्री] उत्पत्ति, जन्म ।

उत्पत्ति । जन्म ।

पैदावार—(सं स्त्री) उत्पन्न ।

उपज ।

पैना—(वि) जोड़ा, जोड़ा, धार

धका ।

पतली और चोखी धारवाला ।

नुकीला ।

पैमाइश—[सं स्त्री] जोख, माप

आदिब जोख-माप ।

नाप । जमीन आदि की माप-

जोख ।

पैमाना—(सं पुं) नष्ट जोखी यज्ञ,

मापक, यज्ञ जोख ।

वह चीज जिससे कुछ नापा जाय।

मद्य पीने का पात्र ।

पैर—[सं पुं] डर, माप आदि

थका प्रदक्षिण, धानव द'ब ।

पाँव । धूल आदि पर पड़े पद

चिह्न अन्न की राशि या ढेर ।

पैरबी—(सं स्त्री) कारोबार

पिछे पिछे योवा, यज्ञ,

प्रच्छेद ।

किसीके पीछे चलना । अनुगमन ।

प्रयत्न । कोशिश ।

पैब'द—(सं पुं) चायबाब टापनि

आदि, जोब. बेलेग बेलेग

गछर झूठा डाल बाकि कलम

दिवा कार्य ।

चकती । जोड़ । किसी पैड़ की

वह टहनी जो उसी जाति के

दूसरे पैड़की टहनी में बंधी

जाती है । (वि—पैबन्दी)

पैसा—[सं पुं] प्रहेठा, धन. टकाब

एक भागव मुद्रा ।

रुपये के सौवें भाग की मुद्रा ।

पोंगा—(वि) अक्षय, सूख ।

ना—समझ । मूर्ख ।

पोंछता—[क्रि स] यँगा, बँहि-पिहि

डालटैक धूलि-मगला आदि

पबिछार करा ।

काटना । रगड़ कर धूल या मैल

साफ करना ।

(सं पुं) गला काटपान ।

पोंछने का कपड़ा ।

पोखरा—(सं पुं) पृथ्वी ।

तालाब ।

पोथ—(वि) ठूँह, शीन, बेग्रा, आगळु ।

तुच्छ । हीन । बुरा । आशक्त ।

पोटली - (सं स्त्री) गऊ टोपोला ।
छोटी गठरी ।

पोटा - (सं पुं) पेटव मोना, गान्ध्या, चक्रव पिबिकटि, आङ्गुलिब आग, चबाइब पोवाली ।

पेटकी थैली । सामर्थ्य । औकात ।
आँख की ऊपरी पलक । उँगली का सिरा । चिड़ियाका बच्चा ।

पोस—(सं पुं) जन्तु अथवा चबाइब पोवाली, काटोव, डाँडब नाँ, अन्नडि, पाल, माटिन खाजना, खाशाज
पशु या पक्षी का छोटा बच्चा ।
कपड़ा । बड़ी नाव । प्रवृत्ति ।
ढङ्ग । वारी । जमीनका लगान ।
जहाज ।

पोसना --- [क्रि स] निपा ।
गीली वस्तु की तह चढ़ाना ।
(सं पुं) यि काटोवबेट निपा
यात्र ।
बह कपड़ा जिससे कोई चीज
पोती जाय ।

पोता—(सं पुं) नाति, माटिन
खाजना, अण्टकाव ।

बेटे का बेटा । भूमि कर । अण्ड-
कोष ।

पोथा—(सं पुं) डाँडब किताप ।
बड़ी पुस्तक ।

पोथला—(वि) गोला, लपा ।
जिसमें दाँत न हो । पोला ।

पोर—[सं स्त्री] आङ्गुलिब गाँठि,
छूँह गाँठिब गाँठब अंश, झुवात
बाकी बोवा अंश ।

उँगली की गाँठ । दो गाँठों के
बीच का अंश । जुए में किसी के
जिम्मे बाकी पड़नेवाली रकम ।

पोल—[सं स्त्री] खाली ठाँह,
खिबनि, भितब कोटोपोला,
छोतान, भद्रूलि ।

खाली जगह । अवकाश । बाहरी
आडम्बर के अन्दर की सार-
हीनता । फाटक । आंगन ।

पोला—[वि] टोपोपोला, अगाव ।
जिसके अन्दर का भाग खाली
हो । खोखला । निःसार ।

पोश—[सं पुं] टाकनि ।
वह जिससे कोई चीज ढकी जाय ।

पोश १। १८६३।
नमाला।
पोश १। स्त्री] पोछाक।
पोश १। वि] आपनीय,
गुप्त।
पो- १। आपनीय, भुजि

३ जाने योग्य। पाला हुआ।
पोर १। क्रि म] पालन यथा
पालन या रक्षा करना। अपने
पाम अपनी रक्षा में रचना।

पोस्त—(सं पुं) नान्ति, यथा, अथ
छिल्ला। अफीम का पोधा।
अफीम के पोत्रे का उठा।

पोढ़ना—(क्रि म) गंधी, निहा नवा।
पिरोना। गूथना। ड्रेदना।
पीसना।

पौ—(सं स्त्री) शत्रु पुत्रा, प्राणा
प्रतः काल के सूर्य के प्रकाश की
रेखा या मद्धिम ज्योति पासे के
खेल में एक दांव।

(सं पुं) भाव, मूल।
पैर। जड।

पौढ़ना—(क्रि अ) पोला, बागव
मिरा।

भूलना। लेटना।

पौत्र—[सं पुं] नाति।
पोता नानी।

पौधा—[सं पु] नटन आरु गरु
गुं पुलि।

नया आर छोटा वक्ष। छोटे
आकार का वृक्ष।

पौन—(सं य) वंश, प्रेता, पोतन।
हवा। प्रेत। तीन चौथाई।

पौनी—(सं स्त्री) माश्रलिक कार्याव
गनाउ वड्ड नाशनि लोवा
नापित, बोवा आदि, गरु हेता।
नाई धोबी आदि जो मज्जल अव-
सग पर नंग पाते हैं। छोटी
कलछी।

पौन—[वि] पोतन।
तीन चौथाई।

पौर—(वि) नगर गश्कीर।
पुर या नगर सम्बन्धी।

पौरजन—[सं पुं] नागविक।
नागरिक।

पौरुष—(सं ०) पुरुष वंशधर ।

पुरुषका वंशज

पौरियां— [सं पुं] दोवारिक,
झुंझरी, गङ्गलगीत गाँउतागकन ।
द्वारपाल । मंगल अवसरोंपर द्वार
पर मंगलगीत गानेवाला याचक ।

पौरुष—पौरुष, पुरुषार्थ ।
पुरुषका भाव । पुरुषार्थ । उद्योग ।
(नवि) पुरुष गृहस्थी ।
पुरुष सम्बन्धी । पुरुष का ।

पौर्यात्य—(वि) आँछ ।
प्राच्य ।

पौर्यापय—(सं पुं) आगे पिछे
होना कार्य ।
आगे पीछे होनेकी क्रिया या भाव ।

पौष—(सं पुं) पृथु ।
पूष ।

पौष्टिक—[वि] पूष्टिक ।
पुष्ट करनेवाला ।

पौसरा [ला]—(सं पुं) गर्वसाधारणक
पानी खुँडवा ठाँह ।
बहु स्थान जहाँ सर्व साधारण को
पानी पिलाया जाता है ।

पौहारी—(सं पुं) भात आदि एवि
गोशीर बाँहें खीसाई थका
नाश्र ।

अन्न छोड़कर केवल दूध
पीकर रहनेवाला ।

प्यादा—[सं पुं] पदातिक जैन,
पदजखे ।

पैदल सिपाही । दूत । पैदल ।

प्यार—(सं पुं) मय, प्रेम,
चेनेह ।
मुहब्बत । प्रेम ।

प्यारा [वि] प्रिय ।
प्रिय । भला मालूम हानेवाला ।

प्याला—(सं पुं) पियला ।
छोटा कटोरा ।

प्यास—[स स्त्री] पिपासा, पियाह
वासना ।

जल पीने की प्रवृत्ति या इच्छा ।
पिपासा । प्रबल वासना या
कामना ।

प्यासा—[वि] पियाहत आँतुब,
तृष्णा ।
तृषित ।

प्रकंप (न)—[सं पुं] कम्पन, थक्
थक् टैक कँपा ।
कँपकँपी । कांपना ।

प्रकट, प्रगट—(वि) प्रकट,
उगाई पना । अकान्त ।

प्रबंधक (कर्त्ता)—(सं पुं) बन्ना-
वत्त कर्त्ता ।

प्रबंध या इन्तजाम करने वाला ।

प्रबन्ध समिति—(सं स्त्री) आदेशजन
कवा गतिविधि ।

बह समिति जो किसी सभा,
समाज या आयोजन का सारा
प्रबंध करती हो ।

प्रबुद्ध—(वि) जाग्रत । गच्छतन, ज्ञानी
जागा हुआ । होशमें आया
हुआ । ज्ञानी ।

प्रबोध (न)—(सं पुं) जाग्रत
होना, अज्ञान और पूर्णज्ञान,
बुद्धि ।

नींद खुलना । यथार्थ और पूरा
ज्ञान । दिलासा ।

प्रमंजन—[सं पुं] अत्यधिक
डडा-चिडा, अचञ्चल बडाह, धुन्ना
बडाह । बा-बाबलि ।

बहुत अधिक तोड़-फोड़ । प्रचंड
बायु । आंधी ।

प्रमद—[सं पुं] उत्पत्ति कावन
वा ज्ञान, ज्ञान, शक्ति ।

उत्पत्ति का कारण या स्थान ।
जन्म । सृष्टि ।

प्रभावित—(वि) आनन उपवत्त
अभाव विभावकारी, बनवान ।
दूसरों पर प्रभाव डालने वाला ।
बलवाह ।

प्रभा—(सं स्त्री) दीप्ति, जिक्रि-
कवि ।
आभा । चमक ।

प्रभाकर—[सं पुं] श्रृंग, छल, आश्र,
गच्छ ।
सूर्य । चन्द्रमा । अग्नि ।
समुद्र ।

प्रभात—[सं पुं] रातिपूजा ।
सवेरा ।

प्रभाती—(सं स्त्री) रातिपूजा गीता
एविष गीत । पूजा गीत ।
एक प्रकार का गीत जो सबेरे
गाया जाता है ।

प्रभास—(सं पुं) दीप्ति, शवकाव
उत्पत्ति अथन तीर्थज्ञान ।
दीप्ति । एक तीर्थ ।

प्रभासना—[क्रि अ] अतीवमान
होना ।
भासित होना । जान पड़ना ।

प्रभुता, प्रभुवाई—[सं स्त्री]

अद्भुत, आश्चर्य, गंवाकीर्त
कर्मता ।

प्रभु या ईश्वर होने का भाव ।

प्रभु या स्वामी होने का भाव ।

प्रभुसत्ता—(सं पुं) गर्वाधिक,
अद्भुत, गर्वाधिक आधिक्यता ।

देश, राज्य आदि की वह सबसे
बड़ी सत्ता या अधिकार जिसके
ऊपर और कोई बड़ी सत्ता या
अधिकार न हो । (अं-साँवरने
अधारिटी)

प्रभूत—[वि] अद्भुत, उन्नत, उगाई
धर ।

प्रचुर । उन्नत । निकला हुआ ।

प्रमंडल—(सं पुं) केबाँधना
खिलाव गयष्टि ।

प्रदेश का वह विभाग जिसमें
कई जिले हो । (अं-डिबीजन)

प्रमत्त—[वि] मत्तनीया, उन्नत
बनिया ।

नशे में चूर । पागल । मस्त ।

जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो ।

प्रमथ—[सं पुं] मथानेवा
मथव, कामदेव ।

शिव के एक प्रकार के गण ।
कामदेव ।

(वि) मथनकारी, कठेपायक ।
मथने वाला । पीड़ित करने या
कष्ट देने वाला ।

प्रमद—(सं पुं) उन्नतता ।
मत्तबालापन । आनन्द ।

(वि) उन्नत, बलिया, अंगम ।
मत्तबाला । मस्त । प्रसन्न ।

प्रमदा—(सं स्त्री) युवती द्वी ।
युवती स्त्री ।

प्रमाद—[सं पुं] भूल, वाञ्छि ।
भूल । भ्रान्ति । अभिमान
आदि के कारण कुछ का कुछ
समझना या करना । ठीक
तरह से ध्यान न देने के कारण
कर्तव्य पालन में त्रुटि करना ।

प्रमित—(वि) परिमित, उचित
परिमाण ।

परिमित । ठीक या निश्चित ।

प्रमीत—[वि] मत्त ।

मरा हुआ । [अं-डिबीज्ड]

प्रभुत्व—[वि] अद्भुत, अद्भुत,
अथव ।

प्रत्ययाय—[सं पुं] पाप, विबाध,
अपकार बाधा, निनाश ।

प्रत्यागमन—(सं पुं) उलटि, घुबि
अशो कार्य ।

लोट आना । दोबारा या फिरसे
आना ।

प्रत्यावर्तन—(सं पुं) घुबिअश ।
आपन आदि बद कबा ।
प्रत्यावर्तन ।

वापस आना । रह करना ।

प्रत्याशा—[सं स्त्री] अशांशा,
आशा ।

आशा । उम्मेद ।

पाप । विरोध । अपकार । बाधा ।
निराशा ।

प्रत्यवेक्षण—[सं पुं] कोनो
कथाब यांगपिछ विचार कबा ।
अवधान ।

प्रत्याक्रमण—(सं पुं) विबाधी
पक्षब आक्रमणब पिछत कबा
आक्रमण ।

जवाबी हमला ।

प्रत्याख्यान—(सं पुं) अशोकार,
अश्व न कबा ।

कथन, सिद्धान्त आदिका खंडन ।

आपत्ति या विरोध । अवज्ञा या

अनादरपूर्वक कोई चीज लौटावा
या लेने से इन्कार करना ।

प्रत्याहार—(सं पुं) इच्छिग्रगःयम,
पिष्टल टना, अश्व कबाब
कार्य विशेष । आबख कबा ।

इन्द्रिय निग्रह । प्रतिकार । किसी
कामको न होनेके बराबर करना ।
फिर से ग्रहण या आरम्भ करना ।

प्रत्युत—(अव्य) ववः, ऐश्वर्य उपरि ।
बल्कि । इसके विपरीत ।

प्रत्युत्पन्न—[वि] पुनर उपजा ।
गमय गेट मनल अश ।

जो फिरसे उत्पन्न हो । जो ठीक
समय पर सामने आवे ।

प्रत्युपकार—(सं पुं) उपकारब
मलनि कबा उपकार ।
किसी उपकार के बदले में किया
जानेवाला उपकार ।

प्रत्युष—(सं पुं) दोकमोकानिते ।
प्रभात । तड़का ।

प्रशिक्ष—(वि) डाडब दीवल,
अशिक्ष ।
लम्बा-चौड़ा । प्रसिद्ध ।

प्रद—[वि] मिठता ।
देनेवाला । दायक ।

प्रदक्षिणा—(सं स्त्री)) अक्षिप ।

टाविउभिने धूवि अश कार्या ।

परिक्रमा ।

प्रदत्त—(वि) अक्षत ।

दिया हुआ ।

प्रदूर—(सं पुं) एविध ओवोग ।

स्त्रियोंका एक रोग ।

प्रदाह—[सं पुं] विष अत्र । आना

ज्वर फोड़े आदि के कारण शरीर में होनेवाली प्रलन । दाह ।

प्रदेय—[वि] धानर वा मित्राव

उपयोगी ।

प्रदान करने योग्य ।

प्रदोष—[सं पुं] गङ्गा, शुक्

अपवाद, लोभ नाईवा शार्ध आदिब काबट्टे होरा नैतिक पतन ।

संख्या । बहुत बड़ा दोष या अप-

राध । आर्थिक लोभ, स्वार्थ आदि के कारण होनेवाला व्यक्ति का नैतिक पतन ।

प्रद्योत—(सं पुं) पोशर, वन्नि ।

किरण । दीप्ति ।

प्रपञ्च—(सं पुं) गार्गाविक अञ्जाल,

विस्तृति, अञ्जाल, विरुट गमगा, काकि ।

संसार और उसका जंजाल ।

विस्तार । बखेड़ा । भ्रमेला ।

आढम्बर । झुल ।

प्रपञ्ची—(वि) कपटी, धूर्त ।

ढोंगी । छली ।

प्रपन्न—(वि) नवगागठ, सेवा-

परायण ।

आया हुआ । शरणागत ।

प्रपात—(सं पुं) गदाय पनौगा

बख वेगवेग तनटेल पवि थका

उध ठाई, अलप्रभाव । निखवा ।

वह बहुत ऊँचा स्थान जहाँ से

कोई वस्तु सीधे नीचे गिरे ।

भरना ।

प्रपितामह—(सं पुं) आछोकरका ।

दादा का धाप ।

प्रपौत्र—(सं पुं) नाठिल'वा ।

पोते का पुत्र ।

प्रबन्ध—(सं पुं) बावडा, बट्पावड,

आच्छादन, बचना, गवेषणाशूनक

निबद्ध ।

इन्तजाम । बन्दोबस्त । आयोजन ।

ऐसा बड़ा लेख या निबंध जिसमें

कोई शोध मूलक नया सिद्धान्त

प्रतिपादित हो । (अंग्रेजी-थीसिस)

प्रवाद—(सं पु) कथा-वतवा, जन-
अति वा किशकृती, जनवर ।
बात चीत । जनश्रुति । अफवाह ।
झूठी बढनामी ।

प्रवाल—[सं पु] अवाल, गुरू
विशेष, गह्वर कोमल पात ।
मूंगा (माणिक) । वृक्ष के नये
और कोमल पत्ते ।

प्रवास—(सं पु) अवाग, विदेश ।
अपना देश छोड़कर दूसरे देश में
जा बसना । यात्रा ।

प्रवासी—(वि) अवागी, विदेशत गै
बाग करवाता ।
विदेश में जाकर बसने या रहने
वाला ।

प्रवाह—(सं पु) पानीर धार वा गोंत
काय चलि थका, लेठावि । प्रवाह
जल वा बहाव । काम चलना
या जारी रहना । सिलसिला ।

प्रविष्ट—(वि) अविष्ट, गोमाई थका ।
धुमा हुआ ।

प्रवीण—(वि) अवौण, पार्श्व कूणल,
गारधान ।
कुशल । दक्ष । होशियार ।

प्रवेष्टा—(सं स्त्री) कोटना का
वा कथा श्व बुलि आगेग्रेई कवा
आणी वा अङ्गमान ।
किसी काम या बात के होने के
सम्बन्ध में पहले से की जानेवाली
आशा या अनुमान । (अं-एंटि
सिपेशन)

प्रव्रज्या—[सं स्त्री] गन्नाग ।
स न्यास ।

प्रशंसना—(क्रि स) अशंगा कवा ।
प्रशसा या तारीफ करना ।

प्रशंस्थ—[वि] अशंगनीय ।
प्रशमनीय ।

प्रशस्त—(वि) अशंगनीय, डाल,
अष्ट, बहन, उचिउ, अशल ।
प्रशसनीय । अच्छा । श्रेष्ठ ।
लम्बा चौड़ा या बड़ा । उचित ।

प्रशस्ति—(सं स्त्री) श्रुति, गिन
अथवा ताश्रयनित लिखा बछार
गुण यश आदि ।

श्रुति । प्राचीन कालके राजाओं
का एक प्रख्यापन जो चट्टानों या
ताम्र पत्रों आदि पर खोदे जाते
थे ।

प्रशास— [वि] अशास, गहीन ।
चंचलता रहित । शान्त ।

[सं पुं] (अक्षि आरु आत्म-
विकाश वाच्य महाशास)
अशास महाशास ।

एशिया और अमेरिका के बीच
का महा सागर ।

प्रशान्ति— (सं स्त्री) अशास अथवा
निष्ठान् होरा भाव, पूर्णशान्ति ।
प्रशान्त या निश्चल होने का
भाव । पूर्ण शान्ति ।

प्रशाखा— [सं स्त्री] डाल, शाखा,
अशाखा ।
टहनी ।

प्रशासक— [सं पुं] शासक ।
वह जो राज्य का प्रशासन या
प्रबन्ध करता हो ।

प्रशासन— (सं पुं) शासन, शासन
वाक्य ।
राज्य के परिचालन का प्रबन्ध
या व्यवस्था ।

प्रश्रय— (सं पुं) आश्रय, आश्रय ।
आश्रय । आधार ।

प्रश्रुति— [सं स्त्री] कोनो काम
कराव समझ कर अतिश्रुति वा
कथा दिया ।

कोई कार्य करने के लिये की
जानेवाली प्रतिज्ञा या दिया जाने
वाला वचन ।

प्रसंग— (सं पुं) अगच्छ, गच्छ, विषय,
मैथुन, उचित गन्धार्ग, अकर्म,
अश्रय ।

सम्बन्ध । विषय का लगाव या
सम्बन्ध । मैथुन । उपयुक्त
संयोग । प्रकरण, अध्याय ।

प्रसरण— (सं पुं) आग वृद्धि, विस्तार ।
आगे बढ़ना या खिसकना ।
बढ़ना । विस्तार ।

प्रसव— [सं पुं] अग्न दिया ।
अग्न । मातृत्व ।
जनन । प्रसूति । मातृत्व ।

प्रसाद, **प्रसादी**— [सं पुं] अग्नता,
अग्न, देवताओं उद्देश्य कर
वृद्ध, शान्ति । अग्न ।

प्रसन्नता । मेहरबानी, अनुग्रह ।
वह खाने की वस्तु जो देवता पर
चढ़ाया जाता है । भोजन ।

प्रसादन— (सं पुं) कारोबार
गुण कर्म निष्कर्म फलीया
करा ।

प्रथम । प्रधान । मुख्य ।

[अव्य] इत्यादि ।

इत्यादि । बगैरह ।

प्रमुदित—[वि] श्ववित, आननित ।
हर्षित । प्रसन्न ।

प्रमेय—(वि) अमानव विषय श्व
पत्रा, छुशिव पत्रा ।

जो प्रमाण का विषय हो सके ।

जो प्रमाणित किया जाने को हो ।
जो नापा जा सके ।

प्रमेह—(सं पुं) पेशाब कबाल गमयत
पेशाबिये श्व आरु पूँज
उल्लावा बोग ।

पुरुषों का वीर्य सम्बन्धी एक रोग

प्रयाण—[सं पुं] अज्ञान, यात्रा,
सुखयात्रा ।

प्रस्थान । यात्रा । युद्ध-यात्रा ।

प्रयास—(सं पुं) अट्टेष्टी, परिश्रम ।
प्रयत्न । कोशिश । मेहनत ।

प्रयुक्त—[वि] गमनित, कायत
लगाया ।

सम्मिलित । जो काम में लाया
गया हो ।

प्रयोक्ता—(सं पुं) अयोग वा व्यवहार
करता ।

प्रयोग या व्यवहार करने वाला ।

उद्योग या काम में लाने वाला ।

प्रयोजक—[सं पुं] अयोग्यक,
अयोग अथवा अज्ञान आदि
करता, कायत लगाता ।
प्रयोग या अनुष्ठान करने वाला ।
काम में लगाने वाला ।

प्रयोज्य—(वि) अयोग्य,
अयोग्य करिव पत्रा अथवा
करिव लगीरा, यान श्रुताई
कोना काम करताई श्व ।
जिसका प्रयोग किया जा सकता
हो या किया जाने को हो । जो
अधिकार के रूपमें काम में लाया
जा सकता हो ।

प्रलोह(ण)—(सं पुं) जमा, जम्मा
होवा, उठा ।

चढ़ा । न उगना । जमना ।

प्रलंब—[वि] दीर्घ, आगटल
उलाई थका ।

लंबा । आगे निकला हुआ ।

प्रलयंकर—(वि) अलसकर, अल-
सब नर सर्वनाशी

प्रलय कासा सर्वनाश करनेवाला ।

प्रकाश—(सं पुं) अनाप, अनिराव
नर वनर्क ।

पागलों की तरह कहीं हुई व्यर्थ
बातें ।

प्रलेख—(सं पुं) पत्रिका, छुड़ि-
माना ।

शतनामा । अनुबन्ध-पत्र ।
[अ-डीड]

प्रलेप—[सं पुं] लिपि मित्रा बद्ध,
शशि वा गानि मित्रा प्रबद्ध,
लेपन ।

अर्गपर लगाई जानेवाली कोई
गीली दवा । लेप ।

प्रलोभ (न)—(सं पुं) लोभ,
लोभ प्रेरणा, पावन ईच्छा ।
लोभ दिखाना । लोभ ।

प्रबन्धना—(सं स्त्री) छलकना,
प्रतापना ।
छल । ठगपना ।

प्रबक्ता—(सं पुं) बक्ता, मुखपात्र
(कोनो विभागवा या अह-
ष्ठानव)

अच्छी तरह समझ कर कहने
वाला । किसी संस्था या
विभाग की ओर से आधिकारिक
रूप में कोई बात कहनेवाला ।

प्रबन्धन—(सं पुं) धर्मप्रवृत्ति
उपबत मित्रा भाषण, धार्मिक

भाषण ।

अच्छी तरह समझाकर कहना ।
धर्म ग्रंथ आदि की जवानी की
जानेवाली भाषणा ।

प्रबण—(सं पुं) हेमनीया, चांगर,
चावि आलिव चक, पेट ।

ढाल । उतार । चौराहा । उदर ।
(वि) हेमनीया, तलमै गुलबि
थका, अश्वत्थ, विनीत, निपुण,
मयर्ष ।

ढालुआँ । झुका हुआ । प्रवृत्त ।
विनीत । निपुण । समर्थ ।

प्रवर—(वि) अइनतक डाडव
अथवा श्रेष्ठ ।

ओरों की अपेक्षा बड़ा मुख्य या
श्रेष्ठ ।

(सं पुं) प्रवर । गोत्र वा गोष्ठी
प्रवर्द्ध श्रेष्ठ पुरुष वा मुनि,
सज्जन-सत्ति, अतिष्ठ ।

किसी विशेष गोत्र या वंश का
प्रवर्तक कोई विशेष महत्व का
मुनि । संतति । अच्छा जानकार ।

प्रबहमान—(सं पुं) अवाशमान,
वेगेवे बड़े योद्धा ।
जोरों से बहता या चलता हुआ ।

प्रज्ञाशील—(सं पुं) बुद्धिमान ,
विवेक ।

बुद्धिमान । समझदार ।

प्रज्वलन—(सं पुं) जल ।

जलना ।

प्रज्वलित—[वि] अचलित । उज्ज्वल ।

जलता हुआ । चमकता हुआ ।

प्रण—[सं पु] प्रतिष्ठा । मृदुता ।

हृद या पक्का निश्चय ।

प्रणत—(वि) निब मोड़ा, अणाय
कबा, विनय ।

झुका हुआ । झुक कर प्रणाम
करता हुआ । नम्र ।

प्रणत-पाल—(सं पुं) दीन अथवा

छलक पालन कर्त्ता, भगवान् ।
दीनों या भक्तों का पालन करने
वाला ।

प्रणति—[सं स्त्री] अणाय, निनति ।

प्रणाम । नम्रता । निवेदन ।

प्रणम्य—[वि] अणाय, नमस्कार

योग्य, नम्र ।

प्रणाम करने योग्य ।

प्रणय—(सं पुं) प्रेम-आर्चना ,

प्रेम ।

प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना । प्रेम ।

विश्वास ।

प्रणयन—[सं पुं] वचना । निर्वाण ।
रचना । बनाना ।

प्रणयी—(सं पुं) प्रेमी, शायी,
मन कर्त्ता बन ।

प्रणय या प्रेम करनेवाला । प्रेमी ।
स्वामी । पति ।

प्रणव—(सं पुं) ओम्कार मन्त्र,
परमेश्वर ।

ओंकार मन्त्र । परमेश्वर ।

प्रणामी—(सं स्त्री) अणायी,
गन्धान देखुवां कावणें दिना
इन अथवा उपहार । चेलामी ।
भेंट । उपहार ।

प्रणिधान—[सं पुं] अविधान ,
गमाधि, परम उक्ति, मनन एका-
अता, ध्यान ।

रखा जाना । समाधि । परम
भक्ति । मनकी एकाग्रता ।
ध्यान ।

प्रणिवात—[सं पुं] मूत्र मोड़ा,
नमस्कार ।

सिर झुकाना । नमस्कार ।

प्रस्तु—(वि) कौण, नृक्ष ।

दुबला पतला । सूक्ष्म ।

प्रभाव—[सं पुं] पौरुष, प्रताप
वीर्य ।

पौरुष । वीरता । प्रभाव ।

प्रतारक—(सं पुं) अतारक, कैंकि
दिठंठा ।

घोला देनेवाला । चालाक ।

प्रतारणा—[सं स्त्री] बिनागषात-
कता, अतारणा ।

घोला देना ।

प्रतिकार—(सं पुं) अतिकार,
पोटक, अशुविधा वा आपद
उठावटें कबा उपाय ।

रोकने के लिये मुकाबलेमें किया
जानेवाला कार्य । कम करने या
घटाने आदि का कार्य ।

प्रतिकूल—[वि] विरुद्ध, अतिकूल
विपरीत, अनिष्ट कबा (टैदर)
विपरीत ।

प्रतिकृति—[सं स्त्री] प्रतिविम्ब ।
अविकल ।

किसी के अनुकरण पर बनायी
हुई मूर्ति या रूप । प्रतिबिम्ब ।

प्रति ग्रह—[पुं सं] दान वा लोके
दिया वस्तु अर्पण ।

दान ग्रहण या स्वीकृत करना ।

प्रतिघात—[सं पुं] उलटि कबा
आघात । आघात पाई दिया ।

आघात ।

वह आघात जो किसी दूसरे के
आघात करने पर किया जाय ।

प्रतिच्छवि—[सं स्त्री] प्रतिविम्ब,
छिन्न । अतिच्छवि ।

प्रतिबिम्ब । चित्र ।

प्रतिष्ठा—[वि] अतिष्ठ, अतिष्ठा-
करी ।

प्रतिष्ठा करनेवाला ।

प्रतिज्ञापत्र—[सं पुं] अतिष्ठा
पत्र, अक्षौका पत्र ।

इकरारनामा ।

प्रतिदान—[सं पुं] दानर गगनि दिया
दान, उलटाई दिया अतिष्ठा ।
लौटाना । परिवर्तन ।

प्रतिध्वनि—(सं स्त्री) प्रतिध्वनि ।
प्रति शब्द । गूँज ।

प्रतिपक्षी—[सं पुं] विरोधी
पक्ष, विरोधी ।

विरुद्ध पक्षवाला । विरोधी ।

प्रतिपक्षि—[सं स्त्री] आशु,
गोबर, यमगा, अलुवर, शीकृति ।
प्राप्ति । ज्ञान । अनुमान । मानना ।
स्वीकृति ।

प्रतिपक्ष—(वि) प्रतिपक्ष, निश्चय
कबा, अमानित, निश्चित, शरणा-
गत ।

जो सबके सामने हो । जाहिर ।
आविर्भूत । स्पष्ट ।

प्रकरण—(सं पुं) ब्रह्माख, अंग, अथाय, छर्छा, एक अकाबब नाटक ।

उत्पन्न करना । चर्चा । वृत्तान्त ।
प्रसंग । अध्याय । नाटक का एक भेद ।

प्रकाश—[सं पुं] अकाश, पोशब, बंद । अक्षिराक्षि ।
आलोक । अमिव्यक्ति । पुस्तक का खण्ड । धूप ।

प्रकाश-गृह—(सं पुं) छावि अगिने पोशब विछाब कबा अथ बर । वह ऊँची इमारत जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो ।

प्रकाशमान—(वि) प्रकाशित, उकीष्ट । उज्ज्वल ।
चमकता हुआ ।

प्रकाश्य—[वि] नुकलि भावे, गकलोटक अनाटक ।
प्रकट करने योग्य । सबके सामने या सबको सुनाकर कहा हुआ ।
[कि वि] गकलोटके आगत,

बाखल्ला भावे ।
सबके सामने । खुले आम ।

प्रकीर्ण—(वि) गिर्छित होबा ।
बिसरा हुआ ।

प्रकृष्ट—(वि) उडन, टेना ।
उत्तम । खिचा हुआ । जोता हुआ ।

प्रकोष्ठ—(सं पुं) बाई इबाब मुखब अठबब गक कोठाली, च'बाबब, डाडब चोडाल बा कोठाली ।
मुख्य द्वार के पास की कोठरी ।
बड़ा आगन । बड़ा कमरा ।

प्रक्षालन—(सं पुं) धोवा ।
घोना ।

प्रक्षिप्त—(वि) खेजिमेनि है भका, पिछत योग दिया अंग, डाडब कायब परिकल्पना ।
फेका या छितराया हुआ । पीछेसे किसी में मिलाया या बढ़ाया हुआ । किसी बहुत बड़े काम की योजना ।

प्रखंड—[सं पुं] बाख्यब कोनो अटो अंग वा भाग ।
प्रान्त का कोई खण्ड या विभाग ।

प्रखर—[वि] अथर्व, डीक ।

बहुत तीक्ष्ण या प्रचंड ।

प्रख्यात—(वि) विख्यात, अगिऊ ।

प्रसिद्ध । मशहूर ।

प्रगटना—(क्रि अ) अकाश होना ।

उल्लास ।

प्रकट होना ।

प्रगल्भ—(वि) छत्र, टेडर, भूख,

अतिभाषाली ।

चतुर । होशियार । प्रतिभाशाली ।

निर्भय । उदत ।

प्रगाढ़—(वि) गंभीर, खूब बेछि ।

बहुत गाढा या गहरा । बहुत

अधिक ।

प्रचुर—(वि) अधिक, खूब बेछि ।

बहुत अधिक ।

प्रच्छन्न—(वि) टका अथवा मेबाई

धका, नुकाई धका, गुप्त ।

ढका या लपेटा हुआ । छिपा

हुआ । गुप्त ।

प्रच्छाया—[सं स्त्री] अश्वर

गमश्वर सूर्या वा छल्लर हई ।

ग्रहण के समय सूर्यपर पड़नेवाली

चन्द्रमा की छाया अथवा चन्द्रमा

पर पड़नेवाली पृथ्वी की छाया ।

प्रजनन—(सं पु) अजनन, धात्री

कर्म, गन्तान उपपन्न कवा ।

सन्तान उत्पन्न करना । जन्म ।

धात्री कर्म ।

प्रजापति—[सं पुं] प्रजापति,

जन्मा, मनु, सूर्या, शबर गिबिईत ।

सृष्टि उत्पन्न करनेवाला । ब्रह्मा ।

मनु । सूर्य । घरका मालिक या

बड़ा ।

प्रज्ञ—[सं पुं] विद्या, ज्ञानी ।

विद्वान् ।

प्रज्ञा—(सं स्त्री) बुद्धि, ज्ञान,

गवन्धती ।

बुद्धि । ज्ञान । संस्वती ।

प्रज्ञा चक्षु—[सं पुं] डाँडर

पण्डित, ज्ञानी, (गांधारण्डे

अक-विश्वानर केकतहरे ब्यवहार

हय)

बहुत बड़ा विद्वान् और ज्ञानी ।

(साधारणतः अन्धे विद्वानों के

लिये प्रयुक्त)

प्रज्ञापक—(सं पुं) ज्ञाननी दिउंता,

विच्छापन । ज्ञाननी ।

सूचित करनेवाला । बड़े अक्षरोंमें-

छपा विज्ञापन । (पोस्टर)

प्रतिहत—(वि) आहत, आघात प्राप्त ।

चोट खाया हुआ ।

प्रतिहार—[सं पुं] ध्वनी ।
द्वारपाल । चौकदार । (सं स्त्री)—
प्रतिहारी)

प्रतीक—[सं पुं] अथोक, चिह्न,
लक्षण, आकृति ।
चिह्न । लक्षण । मुख । आकृति ।
प्रतिमा । (भं—सिम्बल)

प्रतीकी—[वि] नाकविक ।
लाक्षणिक ।

प्रतीक्षा—[सं स्त्री] अपेक्षा,
वाटोचोवा, अतीक्षा ।
आसरा । इन्तजार ।

प्रतीक्षालय—[सं पुं] अतीकालग्र,
बेल गटेव आदिब कारयेन वाटे चाई
थका समग्रत खिबनि जोवा बर ।
जहाँ यात्री रेल, हवाई जहाज,
बस आदि के आने की प्रतीक्षामें
बैठते हैं—बहु कमरा ।

प्रसाक्षी—(सं स्त्री) पश्चिम पिन ।
पश्चिम दिशा ।

प्रतीक्ष्य—(वि) पश्चिम, पश्चिम
पिन ।
पश्चिमी दिशा का ।

प्रतीक्ष—(वि) छात, घना,
अगम ।

ज्ञात । जाना हुआ । ऊपर से
देखने पर जान पड़ने वाला ।
प्रसन्न ।

प्रतीक्षि—(सं स्त्री) छात्र, विद्यार्थी,
अगमता ।

ज्ञान । विश्वास । वचन । प्रस-
न्नता ।

प्रतीक्षी—[वि] विद्यार्थी कर्त्ता,
विद्यार्थी ।

प्रतीति या विश्वास करनेवाला ।
विश्वसनीय ।

प्रतीप—(सं पुं) अतिकूल, आघात
विपरीत, गतिविपरीत अवस्था
अर्थान्तर ।

आशाके विरुद्ध कोई बात होना,
साहित्य का एक अलंकार ।

(वि) अतिकूल, विपरीत ।
प्रतिकूल । विपरीत । विमुख ।

प्रतीयमान—(वि) वाक्यः यिष्टो दुखा
वा घना गेष्टे ।

(रूप) जो ऊपर से दिखाई देता
या समझ में आता हो । ऊपर से
दिखाई पड़ने या प्रतीत होने
वाला ।

प्रतोषना—[क्रि स] गजुष्टे कब।।

परितुष्ट या सन्तुष्ट करना।

प्रत्यंघा—[सं स्त्री] धनुष ७५।

धनुष की डोरी। चिल्ला।

प्रत्यंत - (वि) एकैनाए जीयाव।

शेष जीयाव।

बिलकुल सीमा पर का। अन्तिम

सिरेका।

प्रत्यक्ष—(वि)प्रत्यक्ष, पौनपरीया।

देखा देखिके।

जो आँखों के सामने हो। जिसमें कोई घुमाव-फिराव न हो।

(क्रि वि)चक्रवे देखा। गमूखत।

आँखोंके आगे। सामने।

प्रत्यक्षदर्शी—[सं पुं] प्रत्यक्षदर्शी,

कोनो घटना निज चक्रवे

देखा बाज्जि।

वह जिसने कोई घटना अपनी

आँखों से देखी हो।

प्रत्यनंतर—[सं पुं] उडबाधिकारी

उत्तराधिकारी।

प्रत्यनीक—[सं पुं] शक्र, विरोधी

एविध अर्थालङ्कार।

शत्रु। दुश्मन। विरोधी। एक

अलंकार।

प्रत्यपकार—[सं पुं] अपकार

पाई करा अपकार।

अपकार के बदले में किया जाने वाला अपकार।

प्रत्यभिज्ञान—(सं पुं) छिनाकि,

श्रुतिव शहायेवे होरा छान।

स्मृति की सहायता से होनेवाला

ज्ञान।

प्रत्यभिदेश—[सं पुं] प्रत्यभि-

देश, अधिकारीव आदेश आदि।

जिससे अभिदेश लेना या कुछ

जानना हो उसका किसी दूसरे

की ओर संकेत करना।

प्रत्यय—[सं पुं] प्रत्यय, विनाज

प्रमाण, विचार, बुद्धि, व्याख्या,

क्रियात शत्रुव पिछत लगा

शक्र-वगुविशेष।

विश्वास। साक्ष। प्रमाण।

विचार। बुद्धि। व्याख्या। आव-

श्यकता। प्रसिद्धि, चिह्न। व्याक-

रण में वह शब्द-खण्ड जो

किसी धातु या शब्द के पीछे

युक्त होकर उसके अर्थ में कोई

विशेषता ला देते हैं।

प्रत्यर्पण—(सं पुं) अश्व कब

बल कियाई मिया।

ली हुई वस्तु को लौटाकर ला

देना या उसके स्थानपर वैसा ही

बीज देना।

अवगत । अङ्गीकृत । प्रमाणित ।
निश्चित । शरणागत ।

प्रतिपादन—(सं पुं) कोनो कथा
डालदवे बुझि व्याख्या कबा,
निजब मत समर्थन कबाबटेल अत्रा-
णित तथा उगन्धित कबा, प्रतिपादित
कोनो विषय स्थापित कबा ।
अच्छी तरह कोई बात समझकर
कहना । अपना मत पुष्ट करने के
लिये प्रमाणपूर्वक कुछ कहना ।

प्रतिपालना—[क्रि स] प्रतिपा-
लन कबा ।

पालन करना । रक्षा करना ।

प्रतिफलक—[सं पुं] अतिफलक,
कोनो वस्तुब अतिविषय अईन वस्तु
एटात अतिफलित कबिब पबा
बद्ध विदेश ।

वह यन्त्र जो कोई प्रतिबिम्ब
उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या
पट पर डालता हो । (अं-रिफ-
लेक्टर)

प्रतिबंध—[सं पुं] बाधा, विधिनि ।
रोक । रुकावट । किसी बात या
काम में लगायी हुई शर्त ।

प्रतिभास—[वि] अकाशित,
आलोकित । ज्ञात होबा ।

चमकता हुआ । प्रकाशित ।
सामने आया हुआ । ज्ञात ।

प्रतिभास—(सं पुं) अकाश,
आभास, वय, मिछलिया ।
प्रकाश, आभास, भ्रम, मिथ्यापन

प्रतिभू—(सं पुं) अतिनिधि, गाफी,
जामीनदार ।

जमानत करनेवाला । जामीन ।

प्रतिभूति—[सं स्त्री] जामिन
दिशा बन बाणि, जामिनदार छुडि
पत्र ।

जमानत की रकम । जमानत पत्र ।

प्रतिमा—(सं स्त्री) प्रतिमा,
देवता गकनर मूर्ति ।

अनुकृति । देवताओं की मूर्ति ।

प्रतिबिम्ब ।

प्रतिमान—[सं पुं] अतिविषय,

गमानता, उदाहरण । मगा ।

प्रतिबिम्ब । समानता । बटखार ।

दृष्टान्त ।

प्रतिमूर्ति—[सं स्त्री] अतिमूर्ति,
गाईनाथ, अतिभक्ति ।

किसी के अनुरूप की वयों के त्यों
बनी हुई मूर्ति ।

प्रतिरक्षा—[सं स्त्री] प्रतिरक्षा ।
बचाव ।

प्रतिरूप—(सं पुं) प्रतिरूप ।
छिन्न । आदि ।

प्रतिमा । तस्वीर । नमूना ।
(वि) नकल । नकली ।

प्रतिरोध—(सं पुं) विरोध, बाधा ।
विरोध । रुकावट ।

प्रतिशोभ—(वि) उलटा, विपरीत,
उलझातिष्ठ कन्याव लगत निर
जातीय दबार विवाह विशेष ।
प्रतिकूल । उल्टे क्रम वाला ।
विवाह का एक भेद ।

प्रतिवर्तन—(सं पुं) घूबि अशा,
गलनि होवा, उलटि अशा ।
लीटना । वापस जाना ।

प्रतिवासी, प्रतिवेशी—(सं पुं)
दूरवासी ।
पड़ोसी ।

प्रतिविधान—(सं पुं) प्रतिकार ।
किसी विधान के मुकाबले में
किया जानेवाले विधान । प्रति-
कार ।

प्रतिस्पर्ध—[पद] शतकवा, प्रतियोगिता
एक ।

हर सी पर । फी सदी ।

प्रतिषेध—(सं पुं) निषेध,
निवारण । रोक ।

विषेध । कोई काम बिलकुल न
करने का पूरा वर्णन या मनाही ।
खण्डन ।

प्रतिषेधक—(सं पुं) निवारक, प्रति-
बोधक । वह जो प्रतिषेध करे ।

(वि) बिहेबे कोनो
प्रकारब प्रतिबोध वा निवारण
हय । जिसमें या जिसके द्वारा
किसी प्रकार का प्रतिषेध हो ।

प्रतिष्ठान—[सं पुं] प्रतिष्ठान,
गणित अथवा प्रतिष्ठित कला,
स्थापन, थापना कला ।

आपित या प्रतिष्ठित कला ।
रखना या बैठाना । देव मूर्ति की
स्थापना ।

प्रतिस्मरण—(सं पु) दूर कला,
अपगावण, वात मलय आदि
नगोवा, बेणुख नगोवा ।
अलग या दूर करना । हटाना ।
किसी एक जंग पर दवा लगाकर
मलना । मरहम पट्टी । (अ—
हुँ सिंग)

प्रतिस्पर्धा—(सं स्त्री) प्रतियोगिता ।
प्रतियोगिता । होड़ । (अं—
राइवेलरी)

किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना ।

प्रसार, प्रसारण— (सं पुं)
विस्तार, बढ़ावा, अभाव,
वेडिअन खोसते गौत-मात
आदि दूर-दूर ठाईटेल पठिअन
शास्त्रिक कार्य ।

फैलाना । बढ़ाना । किसी विषय
या चर्चा का प्रचार करना ।
रेडियो द्वारा कोई बात, गीत
आदि सुनने के लिये चारों ओर
फैलाना । (अ-ब्राड कास्टिंग)

प्रसुप्त— (वि) डबा, छिछा, दक्ष शै
अथवा शेटा शोई थका ।
सोचा हुआ । रुका, थमा या
दबा हुआ ।

प्रसुप्ति— [सं स्त्री] टोपनि ।
नींद ।

प्रसू— [वि] अन्न निष्ठता अथवा
उत्पन्नकारी ।
जन्म देने या उत्पन्न करनेवाली ।

प्रसूता— [सं स्त्री] गद्य गन्धान
अगव कवा तिवोता ।।
जन्मा ।

प्रसूति— (सं स्त्री) अगव, उत्पत्ति,
गन्धान, गन्धानव शोक ।
प्रसव । उद्भव ।

प्रसून— (सं पुं) कुल ।
फूल ।

प्रस्तर— [सं पुं] शिल, बिहना ।
पत्थर । बिछौना ।

प्रस्तार— [सं पुं] विस्तार, यात्रिका,
थलप ।
विस्तार । अधिकता । परत ।

प्रस्तावना— [सं स्त्री] आबद्ध,
अन्तर्धान, कि आपव डूमिका ।
आरम्भ । उपोद्घात । पुस्तक
की भूमिका ।

प्रस्तावित— (वि) अन्तर्धान कवा ।
अन्तर्धानित ।
जिसके विषय में प्रस्ताव किया
गया हो ।

प्रस्तोता— (सं पुं) अन्तर्धानक ।
प्रस्तावक ।

प्रस्थानित— (वि) गि अछि गैगछे,
अन्तर्धान कवि गैगछे ।
जिसने प्रस्थान किया हो ।

प्रस्फुटित— (वि) कुलि उठा, विक-
सित ।

कूटा या खुला हुआ । विकसित ।

प्रस्फुरण— (सं पुं) उल्लास,
कूनि उठा, अकान्ति होना ।
निकलना । खिलना । प्रकाशित
होना ।

प्रभक्षण—(सं पुं) निखरा ।
फरना ।

प्रभाव—(सं पुं) पेछाव, पानी
आदि टोप टोप कै पवा ।
जल आदि का टपकना या
रसना । पेशाब ।

प्रवेष्ट—[सं पुं] घात ।
पसीना ।

प्रहर—(सं पुं) त्रिनि घण्टीय समय ।
तीन घंटे का समय ।

प्रहरी—[सं पुं] अग्रणी, बक्क ।
पहरेदार ।

प्रहसन—[सं पुं] शैवि, भाषा,
हास्य बल अथवा एविष नाटक ।
हँसी । दिल्लीगी । हास्य-रस-
प्रधान एक प्रकार का रूपक ।

प्रहार—(सं पुं) आघात, मार ।
आघात । मार ।

प्रहारना—[क्रि सं] मारिवार वावे
अथवा आदि चलावा, मारा ।
मारने के लिये अस्त्र आदि
चलाना । आघात करना ।

प्रहेलिका—(सं स्त्री) मोखर ।
बहगा । पहली ।

प्रांगण—(सं पुं) घर का चोताम,
वा पट्टालि ।
घर का आंगन ।

प्रांजल—(वि) गबल , गहल ,
विशुद्ध ।
सरल । सीधा । स्वच्छ और
शुद्ध (भाषा)

प्रांत—[सं पुं] अक्षु, काव, पिश
बाज्य ।
अन्त । किनारा । दिशा ।
प्रदेश ।

प्रांतर—[सं पुं] अक्षल, गहल
धोबोड ।
उजाड़ । जंगल । वृक्षका कोटर ।

प्रांतिक, प्रांतीय—[वि] बाह्यिक वा
बाह्य गहलीय ।
प्रान्त से सम्बन्ध रखनेवाला ।

प्रांतीयता—(सं स्त्री) बाह्यार
होवा डाव, आदिभिकता ।
प्रान्तीय होने का भाव । अपने
प्रांत का विशेष या अतिरिक्त
पक्षपात या मोह ।

प्राक्—(वि) आरम्भिक, प्रारम्भ
अथवा आगव काल ।

आरम्भिक । पुराना या पूर्वकाल का ।

प्राकृत—(वि) अकृतिव जना जन्म, स्वाभाविक ।

प्रकृति से उत्पन्न । स्वाभाविक ।

[सं स्त्री] व्युत्पन्न भाषा ।

किसी स्थान की बोलचाल की भाषा । एक प्राचीन भारतीय बोलचाल की भाषा ।

प्राक्कथन—[सं पुं] भूमिका । भूमिका ।

प्रागैतिहासिक—[वि] पूर्वजोष आगव कालव ।

इतिहास-पूर्वकाल का ।

प्राची—[सं स्त्री] पूर्व दिग्व । पूर्व दिशा ।

प्राचीन—(वि) आचीन । पूर्वव । पूर्व का । पुराना ।

प्राचीर—[सं पुं] चोश्च, आचीव । चहार दीवारी । परकोटा ।

प्राच्य—(वि) पूर्वदिग्व, अचिन्ना महादेशन जगत मशकित, आच्य । पूर्वव ।

पूर्व दिशा का । एशिया महादेश के देशों से सम्बन्ध रखनेवाला । पुराना ।

प्राज्ञ—[वि] बुद्धिमान, विद्वान । बुद्धिमान । विद्वान ।

प्राण-व्यास—[सं पुं] अश्रयतम, शान्ति ।

प्रियतम । स्वामी ।

प्राण-प्रतिष्ठा—(सं स्त्री) विधिबन्ध कोना मूर्ति आण प्रतिष्ठा करा ।

कोई नयी मूर्ति स्थापित करके उसका पूजा करने से पहले मंत्रों द्वारा उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा या आरोप करना ।

प्राणांत—(सं पुं) श्रुत । मृत्यु ।

प्राणाधार—[वि] अश्रयतम । परमप्रिय ।

[सं पुं] शान्ति । पति ।

प्रातः, प्रातःकाल—[सं पुं] बातिगुवा । सबेरा ।

प्रातःस्मरणीय—(वि) आतः श्रवण, श्रवण ।

सबेरे उठते ही स्मरण करने योग्य (परम श्रेष्ठ और पूज्य)

प्राप्त—(अव्य) बातिपुवाइ ।

सवेरे ।

(सं पुं) बातिपुवा ।

सवेरा ।

प्रादुर्भाव—(सं पुं) आविर्भाव, उद्गम
आविर्भाव । उत्पत्ति ।

प्राधान्य—(सं पुं) आधान्य, मूला ।
प्रधानता ।

प्राध्यापक—[सं पुं] अध्यापक,
कोनो विषय ब्रूँछा छाला ।
बडा अध्यापक । किसी विषय का
अच्छा विद्वान् ।

प्रापक—[वि] पाँडता ।
प्राप्त करने या पानेवाला ।

प्रापण—(सं पुं) पोवा, आधि ।
प्राप्ति । मिलना ।

प्राप्त्य—[सं पुं] प्रबलता ।
प्रबलता ।

प्राप्तानिक—[वि] प्राप्तानिक,
ठिक ।

प्रमाण-सिद्ध । ठीक । सत्य ।
ठीक माना जानेवाला ।

प्रायः, प्रायशः—(अव्य) आये ।
अक्सर । करीब करीब ।

प्रायोगिक, प्रायोगिक—(वि)
अयोग्य गणकीय, क्रियात्मक,

वाक्यात्मिक ।

प्रयोग संबंधी । जिसका अभी
प्रयोग या परीक्षा हो रही हो ।
क्रियात्मक । व्यवहारिक ।

प्रारब्ध, प्राप्त्य—[वि] आरब्ध
करा ।

आरम्भ किया हुआ ।

[सं पुं] भाग्य, यि काम
फल पोवा आरब्ध हैछे ।
वह कर्म जिसका फल भोग
आरम्भ हो चुका हो । भाग्य ।
किस्मत ।

प्रार्थित—(वि) याचना के वा शिखर बाद
आर्चना करा हैछे । आर्थात् ।

जिसकी प्रार्थना की गयी हो ।

प्राप्ते—[सं पुं] खचवा । छुवाव ।
मसौदा [अं—डाफ्ट]

प्राप्त्य—(सं पुं) बरफ ।
हिम । पाला । बरफ ।

प्रापित, प्राप्त्य—(सं पुं) वर्षा
शुद्ध ।
वर्षाऋतु ।

प्राप्त्य—(सं पुं) खाद्य, गोवाप
लोवा ।
भोजन । चखना ।

प्रासंगिक—(वि) प्रासंगिक ,
आश्रयश्रिक ।

प्रसंग सम्बन्धी । आनुषंगिक ।
किसी प्रसंग में आकस्मिक रूपमें
आनेवाला व्यय आदि । [अं—
कन्टिनजेंट]

प्रासाद—(सं पुं) डाँडर अटो-
निका, बच्चा उबन आदि ।
बड़ा और ऊँचा पक्का घर ।
महल ।

प्रियबन्ध, प्रियभाषी, प्रियवादी—
(वि) मिटे भावो, मिठा कथा
कहुँता ।

मीठी बातें कहनेवाला ।

प्रिया—[सं स्त्री] नाबी, पत्नी,
प्रेमिका ।

नारी । पत्नी । प्रेमिका ।

प्रीति—[वि] प्रीति, प्रीति ।
प्रीति युक्त ।

[सं पुं] प्रीति ।

प्रीति ।

प्रीतम—[वि] प्रियतम ।
प्रियतम ।

प्रीति—(सं स्त्री) प्रीति, प्रीति ।
प्रियतम, प्रीति ।

सन्तोष । प्रसन्नता । प्रीति ।

प्रेक्षण—(सं पुं) देखना ।
देखना ।

प्रेक्षा—(सं स्त्री) चेष्टा, वृत्ता,
अभिनय आदि चेष्टा, प्रज्ञा ।
देखना । नृत्य, अभिनय देखना ।
प्रज्ञा ।

प्रेक्षागार (गृह)—[सं पुं] नाट्यशाला,
नाट्यघर, चिन्तना घर, मञ्चगृह ।
मञ्चगृह । नाट्यशाला ।

प्रेत—(सं पुं) प्रेत, प्रेत,
कृष्ण, प्रेत ।

मरा हुआ मनुष्य या प्राणी ।
वह कल्पित शरीर जो मरने के
बाद मनुष्य धारण करता है ।
पितृपुत्रों की तरह एक कल्पित
देवयोगिनी । बहुत ही कृष्ण, दुष्ट,
स्वार्थी और घृत व्यक्ति ।

प्रेत-कर्म (कार्य)—[सं पुं] प्रेत
कर्म, अलक्षणी, प्रीति ।
मृत शरीर जलाने से सर्पिड तक
के सब कार्य ।

प्रेतगृह, प्रेतगोह—[सं पुं] प्रीति ।
प्रमत्त ।

प्रेतनी—[सं स्त्री] प्रीति, प्रीति ।
प्रितीति, प्रीति ।
भूतनी । प्रीति ।

प्रेमात्मा—(सं स्त्री) बृह वाञ्छि
आवा ।

मरे हुए व्यक्ति की आत्मा ।

प्रेम-पात्र—(सं पुं) याक डाल-
पोटा शय ।

वह जिससे प्रेम किया जाय ।

प्रेमाज्ञाप—(सं पुं) श्रेयस कथा-
वतवा, श्रेयसाज्ञाप ।

प्रेमपूर्वक होनेवाली या मुहूर्त
की बातचीत ।

मरक—(सं पुं) पठाउंता,
श्रेयस करता ।

प्रेरणा करनेवाला ।

प्रेमक—[सं पुं] पठाउंता ।
जो किसी के पास कोई चीज
मेजे ।

प्रेमण—[सं पुं] कोनो वस्तु
पठिउवा ।

कोई चीज कहीं से किसी के
पास मेजना ।

प्रोक्त—(वि) कोवा ।
कहा हुआ ।

प्रोत्साहन—(सं पुं) उत्साह
दिवा, गाहग दिवा ।

कोई काम करने के लिये उत्साह
बढ़ाना । हिम्मत बंधाना ।

प्रोषित—(वि) विदेश टेल टोरा ।
विदेश गया हुआ ।

प्रोषित पति का—[सं स्त्री] श्वागी
पतिव निवहिने नायिका ।

(वह नायिका) जो अपने पति के
परदेश जानेपर दुखी हो ।

प्रौढ़—(वि) युवावस्था अधिकृत
कवि बोवा, श्रोष्ठ, अंगक ।
अच्छी तरह बढ़ा हुआ । जो
युवावस्था पार कर चला हो ।
पक्का ।

प्रौढ़ता—(सं स्त्री) श्रोष्ठ होवा
अवस्था वा भाव ।

प्रौढ़ होने की अवस्था या भाव ।

प्लावन—(सं पुं) बानपानी ।
पानी की बाढ़ ।

प्लुत—[सं पुं] गहोत तिन मात्राव
श्रव, पानी आपित छुवि धका ।
तीन मात्राओं का स्वर ।
जल आदि से व्याप्त ।

फ

फ—वाङ्मय वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन ।

वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन ।

फंका—[सं पु] छुड़ि पतल, अंगुलि, अकाल (कल आदि)
फाँकने के लिए चूर्ण रूपमें कोई दवा । उतनी मात्रा जितनी एक बारमें फाँकी जाय । फल आदि का काटा लम्बोतरा टुकड़ा ।
(सं स्त्री—फंकी)

फंदा—[सं पु] बन्धन, फाल, फाल, छल, धृष्ट ।
बधन । फंदा । जाल । छल । दुख ।

फंदाना—(क्रि अ) फालत पंदा, अपियाई पंदा ।
फंदे में फँसना । कूद जाना ।

फंदा—(सं पु) फाल, फाल, कटे-
दायक बन्धन ।
किसी को फँसाने के लिए रस्सी आदि का घेरा । पाश । कष्ट दायक बन्धन ।

फंदाना—(क्रि स) फालत पंदा, फालत पंदा ।

फंदे या जाल में फँसाना । किसी को फांदने में प्रवृत्त करना ।

फँफाना—[क्रि अ] गंभीर आदि
उठलि उठि पंदा ।

दूध आदि का गरम होकर उमड़ना ।

फँसना—[क्रि अ] फालत पंदा, लिखित पंदा ।
बन्धनमें उलझना । (क्रि स-फँसाना)

फक—(वि) विवर्ण, निरुद्ध, शैल ।
स्वच्छ । सफेद । जिसका रंग बिगड़ गया हो ।

फकत—(वि) केवल, मात्र ।
केवल । सिर्फ ।

फकड़—(सं पु) गालि गाला, छुट्टेलोक, फट्टेलोक ।

गाली गलीज । गन्दी बातें । सदा दरिद्र परन्तु मस्त रहनेवाला

व्यक्ति । बाहियात और उद्दंड
बादमी ।

फक्कड़ बाजी—(सं स्त्री) उफाईडा,
नर्वा कथा ।

गन्दी ओर बाहियात बातें बकना ।

फखर, फख—(सं पुं) गौरव ।
गौरव ।

फगुआ—(सं पुं) काकूआ, होली ।
फाग । होली ।

फगुनहट—(सं स्त्री) फाटावा बडाइ ।
फागुन में चलनेवाली तेज हवा ।

फजर—[सं स्त्री] बाडिगुवा ।
सबेरा ।

फजल—[सं पुं] यमूअइ ।
अनुग्रह ।

फजीहत—(सं स्त्री) दूनशा,
दुर्गति ।
दुर्दशा । दुर्गंत ।

फजूल—(वि) वार्थ, निवर्धक ।
व्यर्थ ।

फजूल खर्च—[वि] अपवायो ।
अपव्ययी । (सं स्त्री-फजूलखर्ची)

फटकन—(सं स्त्री) डुँड आदि ।
फटकने से निकली बेकार भूसी
आदि ।

फटकना—(क्रि स) कहे कहे नच
कना, निकलन कना, जावि

छालि प्रबिक्काब कना ।

फट फट शब्द करना । मारने के
लिये चलाना (अस्त्र आदि) । सूप
में अन्न आदि रखकर उसे उछा-
लते हुए साफ करना ।

(क्रि अ) उछव छपा, कपोश
आदि धुना ।

कुछ पास जाना या पहुँचना ।
फड़ फड़ाना ।

फटका—(सं पुं) कपोश धुना बश्,
कावा उपशीन मिलिताऊ कविता ।
रूई धुनने की धुनकी । काव्य के
रस आदि गुणों से हीन कोरी
तुकबन्दी ।

फटकारना—(क्रि स) थकेछा गवा,
अश्रुछित कपे धन बटो, डविश ।
इस प्रकार भटका मारना कि
ऊपर की चीजें छितरा कर
गिर जाय । कुछ अनुचित रूपसे
धन प्राप्त करना । कपड़ा पटक
पटक कर साफ करना । खरी
और कड़ी बात कह कर चुप
कराना ।

फटना—(क्रि अ) फटो, झूटो,
गोबीब फटो ।
ऊपर के तलमें इस प्रकार बराब

पड़ना कि कुछ भाग अलग हो जाय । अलग या पृथक हो जाना । द्रव पदार्थ में से पानी अलग हो जाना ।

फट फटाना, फड़ फड़ाना—[क्रि स]

फटे फटे कबा, चल चल कबा ।
फट फट शब्द करना । ज्यादा बकबक करना ।

(क्रि अ) धप धप कबा, कक्-
वक् कबा, छूँ-कटोरा, फटे फटे
नक्क होरा ।

(पंख) फड़ फड़ाना । कठिन स्थिति
से निकलने के लिये जोर लगाना ।
फट फट शब्द होना ।

फटहा—(वि) फटा, गोलि-गोलि
कर बाँटा ।

फटा हुआ । गाली गलीज करने
वाला ।

फटा—(वि) फटा ।

फटा हुआ ।

फट्टा—[सं पुं] बाँध का नि ।

बाँस का लम्बा फटा टुकड़ा ।

फड़कना, फरकना—(क्रि अ) धप

धपनि उठा, धव-धवनि उठा ।

रह रहकर नीचे ऊपर या इधर

उधर हिलना । कुछ करने केलिये
व्यग्र होना । (क्रि स-फड़काना)

फड़िया—(सं पुं) झूठा दोकानी ।
खुदरा अनाज बेचनेवाला ।

फणधर, फणी—(सं पुं) गाँप ।
साँप ।

फतवा—(सं पुं) मुसलमान शास्त्र
हकूम या बाबत ।

किसी बात के उचित या अनुचित
होने के सम्बन्ध में (विशेषतः
मुसलमानों के धर्म शास्त्रानुसार)
दी जानेवाली व्यवस्था ।

फतह, फतेह—[सं स्त्री] विजय,
गाँफला ।

विजय । सफलता ।

फतिगा—[सं पुं] पतङ्ग, छगा ।
पतंगा । उड़नेवाला छोटा कीड़ा ।

फतूर—(सं पुं) बिकार, उपज्रव,
शानि, विपिनि ।

विकार । उपद्रव । कमी । घाटा ।

फतूही—[सं स्त्री] शीत नथका
एविष टोला ।

बिना बाँहकी एक प्रकार की
कुरती ।

फटना—(क्रि अ) यादश्च कर्त्ता ।
कोई काम शुरू करना ।

फताना—(क्रि अ) ठेठवार कर्त्ता वा
करवावा ।

तैयार करना या कराना ।

फफसा—(वि) कौत्सोपाना, कुश्चाट्ट ।
फूला हुआ और अन्दरसे पोला ।
बरे स्वाद वाला ।

‘[सं पुं] शौं० कौं० ।
फेफड़ा ।

फफोला—(सं पुं) बुबबुबणि ।
पानी छोला ।

बागीर पर पड़नेवाला छाला ।
पानी का बुलबुला ।

फफती—(सं स्त्री) बाध ।
व्यंग ।

फफना—[क्रि अ] झल्लव होवा,
थाप होवा ।

सुन्दर या सुहावना लगना ।
खिलना ।

फफोला—[वि] धुनीया ।
सुहावना या सुन्दर दिखाई देने
वाला ।

फरक, फर्क—(सं पुं) पार्श्वका,
छेद, दृबद्ध

पार्थक्य । भेद, अन्तर । दूरी ।
(क्रि वि) वेलेग, पृथक् ।
अलग । पृथक् ।

फरजी—[वि] कृत्रिम, कल्पित ।
नकली । कल्पित ।

(सं पुं) डवा खेनव मञ्जी ।
शतरंज में ‘वजीर, नाम का
मोहरा ।

फरद, फर्द—[सं स्त्री] तालिका,
कागजव तां० ।

स्मरण रखने के लिये लिखा
हुआ लेख या सूची आदि ।
कागज का तस्ता या ताव ।
(वि) अग्रपत्र ।
बेजोड़ ।

फरना, फलना—[क्रि अ] फल
उत्पन्न कर्त्ता । फलयुक्त होवा ।
वृक्षों का फल उत्पन्न करना ।
फलों से युक्त होना ।

फरफंद—[सं पुं] छल-प्रपञ्च,
याकि-कूका ।

छल कपट । नखरा ।

फरमाइश—[सं स्त्री] आज्ञा,
अग्रबोध ।

कोई चीज बनाने, लाने या कोई
काम करने की आज्ञा ।

फरमान—(सं पुं) आज्ञा पत्र,
निर्देश पत्र ।

राज्य या राजा की आज्ञा । वह
पत्र जिसपर इस प्रकार की
आज्ञा लिखी हुई हो ।

फरमाना—(क्रि स) आपबपूर्वक,
आज्ञा दिया ।
किसी बड़े का कुछ कहना ।
(आदरार्थक)

फरश, फर्श—[सं पुं] पका उथ बरिया
वा चोतान, चोतानत पवा पनिछा,
बैठने आदि के लिये समतल और
पक्की भूमि । ऐसी भूमिपर
बिछाया हुआ कपड़ा ।

फरसा—(सं पुं) कोब, कोदाल,
तीक्ष्ण शस्त्र कुंठाव ।
फावड़ा । तेज धार की एक
प्रकार की कुल्हाड़ी ।

फरगत—(सं स्त्री) अवगति ।
गल त्याग कवा ।
छुटकारा । निश्चिन्तता ।
पाखाना फिरना ।

फरामोश—[वि] विन्मृत ।
मूला हुआ ।

फरार—(वि) गलबीया, गलातक ।
भाग्य हुआ ।

फरियाद—(सं स्त्री) गोचर,
निवेदन ।

प्रार्थना । निवेदन ।

फरियादी—(वि) ङुचबीया,
फरियादी ।

फरियाद करनेवाला ।

फरिस्ता—(सं पुं) देवद्वय दूत,
देवता ।

ईश्वर का दूत ।

फरेब—(सं पुं) भ्रमामि, कपट ।
छल । कपट ।

फरेबी—(सं पुं) कपणिमोक,
काकिबाध ।
कपटी । धोखेबाज ।

फरोश—(सं पुं) बेचोता ।
बेचनेवाला ।

फर्ज—(सं पुं) कर्तव्य, कर्तव्य ।
कर्तव्य । मान लेना ।

फर्माटा—[सं पुं] वेग, किञ्चता ।
वेग । तेजी ।

फरक—(सं पुं) कलि, तक्षा,
पृष्ठा, शत-तनूदा, आकाश,
श्वर्ग ।

तखता । पट्टी । परत । पृष्ठ ।
हथेली । आकाश ।

फलोंग—(सं स्त्री) नाक, एक
नाकबूत वृक्ष ।
कुदान । एक फलोंग भरकी दूरी
या अन्तर ।

फलाना—(बि) यमक, कोना ।
अमुक ।
[क्रि स] फल यूँ कबा ।
फल उँपन्न कबा ।
फलों-से युक्त करना । फल
उत्पन्न करना ।

फलित—(बि) फल यूँ, फल
धरा, उपति पना ।
जिसका या जिसमें फल हो या
हुआ हो । फल का ।

फलित ज्योतिष—ग्रह उभाउत
फल विचार कबा ज्योतिष
शास्त्र एक अङ्ग ।
ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों
के शुभाशुभ फलों का विचार
होता है ।

फली—(सं स्त्री) ईँह ।
छोटे बीजोंवाला लम्बा और
चिपटा फल ।

फसल—(सं स्त्री) धान, बज्र,
गन्ध, उँपन्न, मूँह ।
ऋतु । समय । खेत की उपज ।

फसली—(बि) बज्र वा ।

फसल या ऋतु का ।

[सं स्त्री] शईला, जहनि
बोग ।
हेजा ।

फसाह—(सं पुं) विकार, उँपना,
यूँ ।

विकार । उत्पात । लड़ाई ।

फहम—[सं स्त्री] बुद्धि, बोध
शक्ति ।

बुद्धि । समझ ।

आम फहम—गर्व गाथावगव बोध
गया ।

सब साधारण की समझमें आने
वाला ।

फहरना—[क्रि अ] बतहित उँवा ।

[भण्डा आदि] बायु में उड़ना या
फर फराना । [क्रि स-फहराना] ।

फाँक—[सं स्त्री] छिबना, काट ।
फल आदि का काटा लम्बोतरा
टुकड़ा ।

फाँकना—(क्रि स) गाल गावि बोवा ।
दाने या चूर्ण खाने के लिये ऊपर
से उन्हें मुँह में डालना ।

फॉट—[सं पुं] काथ । नववर वस्तु
गिखोवा पानी ।

काढ़ा । काथ ।

फॉटना—(क्रि स) काथ बनोवा ।
काढ़ा बनाना ।

फॉड़ा— [सं पुं] धूती आदि
ककालत खेब खाई थका अंश ।
धोती आदि का वह अंश जो
कमर पर लपेटकर बाँधा जाता
है ।

फॉड़ना—(क्रि अ) जपिओवा ।
उछलना ।

(क्रि स) जपियाई प्राब होवा,
कालत पेलोवा, आवक करा ।
कूदकर किसी चीजके पार जाना ।
फँदे में फँसाना । बाँधना या
बन्द करना ।

फॉस—[सं स्त्री] खान. काल ।
पाश । पशु पक्षी फँसानेका फँदा ।

फॉसना—(क्रि स) कालत पेलोवा ।
फँसाना ।

फॉसी—[सं स्त्री] काँचि । काँचि
दिशा अबि । काल ।

फँसाने का फन्दा । रस्सी का वह
फन्दा जिसमें गला फँसानेसे दम
घुटता और आदमी मर जाता

है । इस प्रकार गन्ना घोटकर
दिया जानेवाला प्राण हण्ड ।

फाका— (सं पुं) उपवास ।
नवोष ।
उपवास ।

फाकेमस्त—(वि) बावटेल नोहोवा
गद्धेओ निच्छिन्नु आक. आनगत
थका (नाश्र) ।

खाने पीने का बहुत कष्ट उठाकर
भी मस्त रहनेवाला ।

फाग—[सं पुं] काकुवा, काकुवात
गोवा ग्रीत ।
होली । होली में गाये जानेवाला
गीत ।

फाटक—[सं पुं] पञ्चलिग्रुथ ।
बड़ा दरवाजा ।

फाटना—(क्रि अ) फटे ।
फटना ।

फाड़ना—(क्रि स) कना, बिनीर्ण
करना, खोबा गोलोकोवा ।

विदीर्ण करना । चीरना । सन्धि
या जोड़ फैलाकर खोलना ।

फानूस—(सं पुं) काश्रुठ ।
छतमें टाँगने के लिये एक डब्बेके
चारों ओर लगे हुए शीशेके कमल

या गिलास आदि जिनमें मोमब-
तियां जलती है ।

कायदा—(सं पुं) नाड, नखल,
उपकार ।

लाभ । भलाई । अच्छा फल या
प्रभाव ।

कायदेमंद—[वि] लाभदायक ।
लाभदायक ।

फारसी—(सं स्त्री) फार्सी भाषा ।
फारस (फारस) देशकी भाषा ।

फाल—(सं पुं) नाडलव काल, थोख
काटोटेत एथन डबिब पवा
आनखनव पूवक्ष । आवव थोख ।
लोहे का वह फल जो लोहे के
हलके नीचे लगा रहता है ।
चलने के लिये उठाया गया पैर ।
डग । चलने में एक पैर से दूसरे
पैर तक की दूरी ।

फालतू—(वि) अतिविक्र, वार्ध,
अनागतिग्रान ।

अतिरिक्त । व्यर्थ । निकम्मा ।

फाबड़ा—(सं पुं) कोदाल, कोव ।
कुदाल ।

फासका—(सं पुं) पूवक्ष । अखव ।
दूरी । अन्तर ।

फाहा—[सं पुं] डेल आदि
डिखोरा डुना वा कापोरव
ट्रेडवा ।
तेल । इन आदिमें तर की डुई
रुई या कपड़े का टुकड़ा ।

फाहिशा—(वि) नटी, बेवशा ।
चरित्रहीन ।
छिनाल (स्त्री)

फिकर, फिक्र—[सं स्त्री] चिन्ता,
भावना, उपाय ।
चिन्ता । सोच । ध्यान । उपाय ।

फिटकार—(सं स्त्री) धिक्कार ।
धिक्कार ।

फिटन—[सं स्त्री] बागी गाडी ।
एक प्रकार की बड़ी और खुली
घोड़ागाड़ी ।

फिरंगी—[वि] विदेशी, इंडोबोनीय ।
फिरङ्ग देशका ।
(सं स्त्री) बिलाडी डबोडाल ।
बिलायती तलवार ।

[सं पुं] रुवाचि जाति ।
इंडोबोनी यादिब वगैरा माझुह ।
फ्रांसीसी । यूरोप या अमेरिकाका
गोरा निवासी ।

फिरंट—(वि) विरोधी । असमृष्टे ।
विरोधी । असत्पुष्ट ।

फिर—[वि] भ्रनव, पिछ्ठ, टेडिगि,
इगार उभवि० ।

दोबारा । पुनः । बादमें । उस
दशामें, तब । इसके अतिरिक्त ।

फिरका— (सं पुं) जाति, पल;
गण्यपात्र ।

जाति । दल । सम्प्रदाय ।

फिरना—(क्रि अ) फिरि अश, कुरा,
ढाँक नगोवा । कथा दि कथा
नदथा ।

वापस होना । घूमना । चलना ।
मरोडा या बटा जाना । मुड़ना ।
मुकरना । [क्रि स—फिराना]

फिराक—(सं पुं) विद्यापत्र, छिन्ना,
अश्रुगकान ।

बियोग । चिन्ता । खोज ।

फिरहाल— (क्रि वि) गण्यति,
गदाशठ ।

वर्तमान समय में ।

फिसड्डी—[वि] याटायेतटेक पिछ्
अवि थका ।

सबसे पिछड़ा हुआ ।

फिसलना—(क्रि अ) पिछल होवा,
लोछत अशुड होवा ।

गीली चिकनाहट के कारण पैर
आदि रखनेपर अपने स्थान से

आगे बढ़ या पीछे हट जाना ।
लोभ में प्रवृत्त होना ।

फिहरिस्त—[सं स्त्री] तालिका ।
सूची ।

फी—(अव्य) अटोक, शबेक ।
प्रत्येक । हरएक ।

फीका—(वि) गेबका, काश्चिशीन,
झान ।

स्वाद-रस आदिके विचारसे हीन
या निकृष्ट । रंग, कान्ति, शोभा
आदि के विचार से हीन या
तुच्छ ।

फीता—(सं पुं) फिठा ।

सून या कपड़े से बनी हुई चपटी
या लम्बी धज्जी ।

फीरोजा—(सं पुं) आभा, मवकत
हरापन लिये नीले रंगका एक
रत्न । [वि-फीरोजी]

फील—[सं पुं] शोरी ।
हाथी ।

फीलवान—[सं पुं] माउठ ।
महावत ।

फुँकना, फुकना— (क्रि अ) छप
होवा, नष्ट होवा ।

फूँका या जलाया जाना । नष्ट
या बरबाद होना ।

(सं पुं) नवीन नूतनाधार ।
शरीर का वह अवयव जिसमें
मूत्र रहता है ।

कुंसी—(सं स्त्री) कौंश, बछ ।
छोटा फोड़ा

कुंकीनी— [सं स्त्री] झूड़े कुंदावन
नली ।

फूँककर आग सुलगाने की नली ।

फुट—(वि) अकलनबीया, पृथक्,
वेलग ।
जोड़े या युग्ममेंसे एक । अकेला ।
अलग ।

(सं पुं) कूट, (ज्ञाथ)
बारह इंचकी एक नाप ।

फुटकर, फुटकल—(वि) विवर्ण,
अकलनबीया, पृथक्, अलग-
अलग, बुरा ।

विषम । अकेला । अलग । मिला
जुला । थोड़ा थोड़ा । खुदरा ।

फुटकी—(सं स्त्री) कूट-कूटिश
भाग वा कौंश ।

किसी चीजपर पड़ा हुआ कोई
छोटा दाग या दाना ।

फुट-मत्त—[सं पुं] बतल, बतलनेका ।

मतभेद । फूट ।

फुदकना—(क्रि अ) देओ दि योवा,
झुपियाई झुपियाई योवा ।

चिड़ियों की तरह
रह रहकर उछलते हुए
चलना ।

फुनगी—(सं स्त्री) गह्व आग ।
पोधे की शाखाओं का ऊपरी
भाग ।

फुफकारना—(क्रि अ) गारप
कौंठ कौंठ कबा ।
साँप का फुत्कार करना ।

फुफेरा—[वि] पेशाब लगत
गश्कित ।

फूफा सम्बन्ध से सम्बद्ध ।

फुर—[वि] गता ।
सत्य ।

[अव्य] धकृतते, वस्तुतः ।
सचमुच । वास्तवमें ।

फुरती, फुरती—(सं स्त्री) किथता,
नैश्चता, धर-धर ।

चटपट काम करनेकी शक्ति या
भाव । शीघ्रता ।

फुरतीला—(वि) किश्तदार
कामकरवाता, थंब-थंबटेक काम
करवाता ।

हर काम फुरतीसे करनेवाला ।

फुरसत—[सं स्त्री] अवसर,
गकाश, सुविधा ।

अवकाश । छुट्टी । रोगमे होने
वाली कमी ।

फुरहरी—[सं स्त्री] छात्रादेय प्राप्ति
कबला । बोमांक ।

चिड़ियों का पर फड़ फड़ाना ।
शरीरमें होनेवाला रोमांच ।

फुरेरी—[सं स्त्री] उषध वा डेल
मिष्ठ द्रव्यादेव मेकदा थविका,
गाव निशबत्त ।

अतर, तेल, दवा आदि में डुबाई
हुई वह सीक जिसके सिरे पर
रूई लिपटी हुई हो । रोमांचके
साथ होनेवाली कँप कँपी ।

फुलका—(सं पुं) आनी छाला,
पातल कटी ।
चपाती ।

फुलझरी—(सं स्त्री) फूलझाड़ि,
लगनीश कथा ।
एक प्रकार की छोटी-लम्बी

आतशबाजी । भगड़ा लगाने
वाली बात ।

फुलवाई, फुलबारी—(सं स्त्री)
फूलनि, फूलव वांगान, ल'वा-
छोवालीदेव गैठ पविशाल
वर्ग ।

पुष्प बाटिका । वगीचा । बाल-
बच्चे और परिवार के लोग ।

फुलहारा—[सं पुं] मानी ।
माली ।

फुलाना—(क्रि स) फूलाना ।
फूलने में प्रवृत्त करना ।

मुँह फुलाना—उत्कान्ध पंठा,
ठैह लगनी ।

रोष प्रकट करनेवाली आकृति
बनाना ।

फुलवाट—(सं स्त्री) उत्कान्धा
अवस्था, क्रिया वा भाव ।
फूलने की अवस्था, क्रिया या
भाव ।

फुलिंग—[सं पुं] फिबिडि
छूदेव कणिका ।

स्फुलिंग । आगका छोटा कण ।

फुलेख—(सं पुं) सुगन्धि डेल,
गोह डेल ।

फूलोंसे सुवासित किया हुआ तेल ।

फुफौरी—[सं स्त्री] नाइल बाँट वा बचनब गैगैत डक्का बरि ।

पीसी हुई दाल की पकौड़ी ।

फुल्ल—[वि] विकणित, अकुलित । विकसित । प्रसन्न ।

फुसफुसा—(वि) टूँझका ।

“ जल्दी टूटने या चूरचूर हो जाने वाला ।

फुसफुसाना—(क्रि स) कूट-कूटाई कोरा, कारण कारण कोरा । बहुत ही धीमे स्वर से कान में कुछ कहना ।

फुसलाना—(क्रि स) कूटलाना । बहकाना ।

फुहार, फूँधी—(सं स्त्री) प्रानीव गरु गरु बर्णिका, किनकिनिया बबर्ण ।

जलकी बहुत छोटी बूँदे या छोटो हलकी वर्षा, भीसी ।

फुहारा—(सं पु) प्रानीव कोरावा । फव्वारा ।

फूँकना—(क्रि स) फूँ दिया, नष्ट बखोवा, धन नाश करा, खराबा ।

मुँह बहुत थोड़ा खुला रखकर जोरसे हवा छोड़ना । शंख फूँक कर वजाना । जलाना । धन उड़ाना ।

फूट—[सं स्त्री] काखिया मउडैम, छिवाल वा बाँडो ।

फूटनेकी क्रिया या भाव । विरोध या वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद । एक प्रकार की बड़ी ककड़ी ।

फूटना—(क्रि अ) डडा, कूटि डलाना, बाँक होना ।

कडी या ठोम वस्तुका आघातसे टूटना । अंकुर शाखा आदि निकलना । एक पक्ष छोड़कर दूसरे पक्ष में हो जाना । व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होना ।

फूँकार—(सं पुं) गूँथवे जूँथवि बवा नक्ष ।

मुँहसे फू फू करते हुए हवा छोड़ने का शब्द ।

फूफा—(सं पुं) पेश ।

फूकी या बूआ का पति ।

फूफी—(सं स्त्री) पेशी ।

पेशा की लवण । लवण ।

फूल-दान—[सं पुं] फूलदानो ।

फूलोंके गुच्छे रखनेका काँच, घातु

मिट्टी आदि का लम्बा बरतन ।

फूलना—(क्रि स) अंकुशित होना,

फूलि उठी, शकत होना, अता-

धिक अगम्य होना, अशक्य

करना ।

पुष्पित होना । खिलना । मोटा

या स्थूल होना । कोई अंग

सूजना । बहुत प्रसन्न होना ।

घमण्ड करना ।

फूली—(सं स्त्री) चक्रुत फूल पत्रा

बोध ।

एक रोग जिसमें आँख की पुतली

पर कुछ उभरा हुआ सफेद दाग

पर जाता है ।

फूस—(सं पुं) शूण्य-वन, श्वेत ।

सूखा तृण । खर ।

फूहड़—(वि) अगोष्ठनोद्य, वेया,

अग्नौ, नोद्य ।

बे-शकर । भद्दा । अश्लील । गंदा ।

फेंकना—(क्रि स) पलिगई दिग्ना,

अवच्छादे ताग कर, अपवाद्य

करना ।

भोंके से दूर हटाना या डालना ।

तिरस्कारपूर्वक छोड़ना । व्यर्थ

धन व्यय करना ।

फेंक—[सं स्त्री] टोडानि, कैकान

वेव, कैकुरि ।

कमर का घेरा या मंडल । घोती

का वह भाग जो कमरपर लपेटा

जाता है । कमरबन्द । घुमाव ।

फेंकना—[क्रि स] शोण्टि दिग्ना,

डालपदे विशेना ।

द्रव पदार्थ में कुछ डालकर अच्छी

तरह मिलाने के लिये घुमा घुमा

कर हिलाना ।

फेंका—(सं पुं) टोडानि, पाडुरि ।

फेंक । छोटी पगड़ी ।

फेकरना—[क्रि अ] जोतेवे

छिन्ना । कम्पा ।

चिल्लाकर जोर से रोना ।

फेन, फेना—[सं पुं] फेन ।

भाग ।

फेनिल—[वि] फेनेल पविर्ण ।

फेन या फाग से युक्त या भरा

हुआ ।

फेफड़ा—(सं पुं) शोण-कौण ।

फुफुस ।

फेर—[सं पुं] घूर्ण, पाक, पवि-

वर्धन, अज्ञान, वन, शुक्ति,

बाटि । कौशल, धूर्तानि ।
 फिरने या फेरनेका भाव । चक्कर ।
 परिवर्तन । भ्रम । भ्रम ।
 चालबाजी । युक्ति । बदला-
 बदला । घाटा । फरक । ओर
 (अव्य) पुनः, आटको एवाव ।
 पुनः । एक बार ओर ।
 फेरना—[क्रि स] घुमावा, खिचाई
 दिया, गमनि करा ।
 किसी ओर घुमाना । वापस
 करना । इधर उधर चलाना । तह
 चढ़ाना ।
 फेर-फार—(सं पुं) परिवर्तन, देव-
 फेव, धूर्तानि ।
 परिवर्तन । पेच । घूर्तता ।
 फेरा—(सं पुं) अपक्रिय, प्रतिक्रिय,
 बाट-बाट अहा योवा, पाक,
 परिवर्ति ।
 चारों ओर घूमने की क्रिया ।
 प्रतिक्रिय । लपेट । बार बार
 अना-जाना । घेरा, मण्डल ।
 फेरी—(सं स्त्री) अपक्रिय, प्र-
 क्रिय ।
 फेरा । प्रदक्षिणा ।
 फेरीबाजा—(सं पुं) फेरिवाला—
 बाट-बाट धुवि कुवि वस्तु

वेचोता ।
 घूम घूम कर सौदा बेचनेवाला
 व्यापारी ।
 फेरू—(सं पुं) फेडना, शिथिल ।
 गीदड़ ।
 फेहरिस्त—[सं स्त्री] तालिका ।
 सूची ।
 फलना—[क्रि अ] विग्रहि पना, इच्छि
 होना, गिर्तबिह होना ।
 कुछ दूर तक आगे बढ़कर ओर
 अधिक स्थान घेरना । मोटा होना ।
 वृद्धि होना । बिखरना । मचलना
 (क्रि स—फैलाना)
 फैलाव—[सं पुं] विस्तार ।
 विस्तार ।
 फैशन—(सं पुं) शवण, गठन,
 गठ, आकृति, आदि, भाव ।
 फेणन ।
 ढंग । तज । रीति । प्रथा । बनाव-
 सिंगार, सजावट आदि का नया
 अच्छा या शिष्ट सम्मत ढंग ।
 फैसला—[सं पुं] निर्णय, बीनारगा ।
 निर्णय । निपटारा ।
 फोफट—[वि] एतदेय पोवा ।
 नृणाशोन वस्तु ।
 निःसार ।

फोकला-(सं पुं) वाकलि ।

छिलका ।

फोका-(वि) अगाव, गावहीन ।

थोथा । तत्वहीन ।

फोटा-(सं पुं) फोटे ।

टीका । बिदी ।

फोड़ना, फोरना-(क्रि स) डडा,

बहगा उद्घाटन करा ।

तोड़ना । मेदभाव उत्पन्न करना ।

(रहस्य) प्रकट करना ।

फोड़ा-[सं पुं] फौड़ा, था ।

व्रण ।

फोता-(सं पुं) माटिब रुव वा

श्रावना, टकार नोना, अणु-

कोष ।

भूमि-कर । रुपये रखने की थैली ।

अण्डकोष ।

फौज-(सं स्त्री) सैन्यागल ।

सेना । झुण्ड ।

फौजदार-(सं पुं) सेनापति ।

सेनापति ।

फौजदारी-(सं स्त्री) फौजदारी ।

सेनापतित्व ।

सेनापतित्व । ऐमा लडाई भगडा

जिसमें मार पीट भी हो और

लोगो को चोट भी आवे ।

फौजी-(वि) सैनिक ।

सैनिक ।

ब

ब— बर्गमालाव त्रयोविंशति
आश्व ।

बर्गमाला का तेईसवाँ व्यंजन ।

बंक, बंका-(वि) बँका, भाष

लगा, कूर्ज, पनाकरी ।

देड़ा । तिरछा । दुर्गम । पराक्रमी ।

बंकनाल—(सं पु) मोषाबोव

झूड़े कुण्डा बँका नगी ।

बह टेढ़ी नली जिससे सुनार सोने

के गहने आदि जोडते हैं ।

बंगला—(सं पुं) बडला, छुट्टीवा

छाबिखन छालव दव ।

एक मंजिला सजा हुआ मकान ।
 (सं स्त्री) बङ्गदेश की भाषा ।
 बंगाल की भाषा ।
 बंगाल—[सं पुं] बङ्गदेश ।
 बंग देश ।
 बंगाली—(सं पुं) बङ्गाली, बङ्गदेश
 निवासी ।
 बंग देश का निवासी ।
 बङ्गक—(सं पुं) ठग, प्रतापक,
 चि छल कटव ।
 ठग । धोखेबाज ।
 बङ्गना—[सं स्त्री] छल, फाँक ।
 ठगी ।
 (क्रि स) फाँक दिया, पठा ।
 ठगना । पठना ।
 बङ्गवाना, बङ्गाना—(क्रि स)
 पठाना, पठाना ।
 पढ़वाना । पढ़ाना ।
 बङ्गित—[वि] बङ्गित, चि ठग
 बाँधेछे, बेलेग कबा, होन,
 बङ्गित ।
 जो ठगा गया हो । अलग किया
 हुआ । हीन, रहित ।
 बङ्ग—[वि] छन पवि धका
 बाँटि, पङ्गित बाँटि ।

वह जमीन जिसमें कुछ उपजता
 न हो । परती जमीन ।
 बङ्गारा—[सं पुं] अचरी, याया-
 बर ।
 वह जो बैलों, घोड़ों आदिपर माल
 लादकर एक जगह से दूसरी जगह
 ले जाकर बेचता हो । यायाबर ।
 बङ्गा—(वि) बघा, बका, उपपादन
 गङ्गिहीन ।
 उत्पादन शक्तिसे रहित । बाँक ।
 बँटना—[क्रि अ] बेलेग बेलेग
 अङ्ग कबा, भाग कबा ।
 कुछ हिस्सोंमें अलग अलग होना ।
 बँटवारा—[सं पुं] विभाजन-
 भाग कबा । विभाजन ।
 बँटा—[सं पुं] काँठर नरु टोरा ।
 छोटा डब्बा । (सं स्त्री—बटी)
 बँटाई—(सं स्त्री) भण्डारा कार्य
 अथवा भाव ।
 बाँटने की क्रिया या भाव ।
 बँटाधार—(वि) नष्ट, क्षय ।
 विनष्ट । बरबाद ।
 बँटाना—(क्रि स) भाग कबा,
 भाँटि दिया ।
 विभाजन करना ।

बटेवा—[सं पुं] भाग कटौता ।
बॉटेवाला ।

बंडल—(सं पुं) टोपीवाला ।
पुलिन्दा ।

बंडा—(सं पुं) एविध डांडव कट्ट
अरई की जाति का एक कन्द ।

बंडेरी—(सं स्त्री) चालव सकलौ-
ठके उबड़ लंगोटा शकत कांठ
डाल-गुथव माबनी ।
छाजन में सबसे ऊँची रहनेवाला
मोटी लकड़ी ।

बंद—[सं पुं] बाक, शिष्टदेव
बका यात्र ।

वह चीज जिससे कुछ बाँधा
जाय । बाँध । कैद ।

[बि] चाबि उगिनब प्रवा बका,
बि भुकनि नश्य, श्रुति, नली ।
चारों ओर से रुका हुआ । जो
खुला न हो । स्थगित । जो किसी
तरह की कैद या बन्धन में हो ।

बंदगी—[सं स्त्री] जेवरब धर्षना ।
नमस्कार ।

ईश्वर की बन्दना । नमस्ते ।

बंदन—(सं पुं) नमस्कार, गिन्तूव ।
नमस्कार । सेंदुर । रोली ।

बंदनवार—(सं पुं) तोरण ।
तोरण ।

बंदना—[सं स्त्री] क्षति, यत्तिवापन ।
स्तुति । अभिवादन ।

(क्रि अ) अर्पण कवा ।
प्रणाम करना ।

बंदर—[सं पुं] बान्धव । ज़ाश-
खब बन्धव ।

कपि । मकंद । बन्दरगाह ।

बंदरगाह—[सं पुं] गमुद्र यथवा
डांडव नदीव पोवत ज़ाशज थका
ठांइ, बन्धव ।
समुद्र के किनारे जहाज ठहरने
का स्थान ।

बंदर-घुड़की, बंदर भवकी—

(सं स्त्री) केवल देखुनावले
दिशा धमकि ।

ऐसी धमकी जो दिखाने भर की
हो ।

बंदर-बौट—(सं स्त्री) बादी-
पत्तिवादीक एको निद्रि भगाई
दिशा जनेइ सकलौ यथिकाव
कवा, “मेकूबीव पिठा ज़ाशवा”
यवडा ।

ऐसा बँटवारा जिसमें वादी प्रति-
वादी किसी को कुछ न मिले,

सब कुछ बाँटनेवाला अपने अधिकार में कर ले ।

बंदिश—(सं स्त्री) बद्ध कवा कार्य, आगेगै कवि थोड़ा ब्यवस्था, गीत कविता आदि शक वा छल योजना ।

बंधने या बाँधने की क्रिया या भाव । पहले से किया हुआ प्रबंध, गीत, कविता आदि की शब्द योजना ।

बंदी—(सं पुं) डाँट, चारण, बन्दी । भाट । चारण । कैदी ।

(सं स्त्री) बद्धन, खेल कावा-गाँव, बद्ध, जिन नाईवा निश्चित होवा कार्य वा भार ।

बन्धन । कारागार । बंदर स्थित, या निश्चित होने की क्रिया या भाव ।

बंदीखाना, बंदीगृह—(सं पुं) कावागाँव, बन्दीशाल । कारागार ।

बन्दीबस्त—[सं पुं] बन्दीबस्त, ब्यवस्था, भाँटि धेति आदि छुवि कर निर्धारण कवा कार्य ।

प्रबन्ध । खेत आदि नापकर

उनका कर निर्धारित करने का काम ।

बंध—(सं पुं) बद्धन, बन्दी कवा, गाँठि ।

बन्धन । गाँठ । कैद ।

बंधक—[सं पुं] बाँझोठा, बद्धक वा बेहण दिया ।

बाँधनेवाला । रेहन ।

बंधकी—(वि) याव उचरत बेहण अथवा बद्धक बथा इस ।

वह जिसके पास कोई चीज बन्धक या रेहन रखी गयी हो ।

बंधना—(क्रि अ) बद्धा होवा, बन्दी होवा, उधबोवा, क्रम निर्धारित होवा ।

बाँधा जाना । कैद होना ।

दुरुस्त होना । क्रम निर्धारित होना । (क्रि स—बाँधना)

[सं पुं] कोनो बस्त बद्ध गज्जुलि ।

वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय ।

बंधुधा—[सं पुं] बन्दी । कैदी । बंदी ।

(वि) बाँध थोवा ।

बंधा हुआ ।

बंधुक—(सं पुं) कूल, विशेष ।
गुलदुपहरिया का फूल ।

बंध्या—[सं स्त्री] बका । गछानशीना ।
(वह स्त्री या मादा) जिसे संतान
न होती हो ।

बंधुलिस—[सं पुं] बाण्डल
पायबाना ।
सार्वजनिक पाखाना ।

बंधा—(सं पुं) बोझा, पानीकलब
आग भाग ।
यम । पानी के नल का अगला
भाग ।

बंधू—[सं पुं] दोस्त, भक्त नल ।
लम्बी मोटी नली ।

बंध—[सं पुं] दाँश, दाँशी, दाँश ।
वंश । बाँस । बाँसुरी ।

बंधोचन—(सं पुं) छेदक कपे
बावशादःप्रयोगी दाँशर भित्त
थका शपथनीया वगी यःन ।

बाँस के सफेद सार भाग जो
औषध के रूपमें काममें आता है ।

बाँसवाड़ी—(सं स्त्री) दाँशवाड़ी ।
एक जगह उगे हुए बाँसों का
भुरमुट या समूह ।

बाँसी—(सं स्त्री) दाँशी, बबनी ।
बाँसुरी । मछली फँसाने का
कँटिया ।

बाँगी—(सं स्त्री) बिबिया, बाँक ।
काँवर ।

बाक—[सं पुं] बगनी ।
बगुला ।

(सं स्त्री) अनर्थक कथा, वाक
विताडु ।

बाकवाद ।

बाकतर, बाकतर—(सं पुं) युक्त
गमयत प्रिका कवच विशेष ।
युद्ध के समय पहनने का एक
प्रकार का कवच ।

बाकना—(क्रि स) बका, प्रलाप
बका ।
प्रलाप बाकना ।

(सं पुं) बेछिटे बलका ।

ज्यादा बाकवाद करनेवाला ।

बाकबाक—(सं स्त्री) अनर्थक तर्क
कबा ।

बाकवाद ।

बाकरना—[क्रि अ] डोबडोबोवा ।
बड़बड़ाना ।

बाकरा—(सं पुं) गंठा हागनी ।
नर-छाग । (सं स्त्री—बकरी)

वक्त्रा, वक्त्र—[सं पुं] गृह वा
कमल वाक्त्रि ।

पेड़की छाल । फल आदि के
ऊपर का छिलका ।

वक्त्राद् (स)—(सं स्त्री) अनर्थक
कथा ।

व्यर्थ की बातें । वक्त्रवक्त्र ।

वक्त्रसना वक्त्रशना, वक्त्रसना—
(क्रि स) दिया, कमा करा ।
प्रदान करना । क्षमा करना ।

वक्त्रसोस, वक्त्रशश—[सं स्त्री]
पान, पूरकान ।
दान । पुरस्कार ।

वक्त्राया—(वि) बाकी ।
अवशिष्ट ।
[सं पुं] काबोबाब उचरत
बाकी धन ।
वह धन जो किसी के जिम्मे
बाकी रह गया हो ।

वक्त्रारी—(सं स्त्री) मुखर पत्रा
उल्लोका शब्द ।
मुँहसे निकलनेवाला शब्द ।

वक्त्रचना—[क्रि स] कौंच बोवा ।
सिकुड़ना ।

वक्त्रबा, वक्त्रबा—[सं पुं] गरु
टोपपोना वा बाण्डि ।

छोटी पोटली या पुलिदा ।
(सं स्त्री—वक्त्रची) ।

वक्त्रला, वक्त्रा, वक्त्रला—[सं पुं]
गली ।
वक्त्र ।

वक्त्रन—[सं स्त्री] पोवालि
दियाव अवह्व पिचटो यि गाई
वा मँह गाथीव दिग, वक्त्रना-
गाँडे ।

वह गाय या भैंस जो पच्चा देने
के सालभर बाद भी दूध देती हो ।

वक्त्रचा—(क्रि वि) केठूवा लंबा-
होवालोय आठ्र काठि कुवा ।
वक्त्रों का घुटनों के बल चलना ।

वक्त्रोटना—[क्रि स] नक्त्रेव
आँटोवा ।
नाखूनों से नोचना ।

वक्त्रत—(सं पुं) मय, भाग्य ।
ममय । भाग्य ।

वक्त्ररा—(सं पुं) यन्त्र, भाग्य ।
भाग्य । हिस्ता ।

वक्त्रान—[सं पुं] वर्णना, प्रशंसा ।
वर्णन । प्रशंसा ।

वक्त्रानना—(क्रि स) वर्णना कवा,
प्रशंसा कवा ।
वर्णन करना । प्रशंसा करना ।

बखार—(सं पुं) उँबाज ।
 वह गोल घेरा या बड़ा पात्र
 जिसमें किसान अन्न रखते हैं ।
बखिया—(सं पुं) मिश्रि टिनाई ।
 एक प्रकारकी महीन सिलाई ।
बखीर—[सं स्त्री] पौनाउ,
 पायग ।
 दूध और चीनीमें पकाया हुआ
 चावल ।
बखूबी—(क्रि वि) खूब डालदेक ।
 अच्छी तरह ।
बखेड़ा—(सं पुं) बख्खाल,
 काखिया, कठिनता ।
 भँकट । झगड़ा । कठिनता ।
बगदना—(क्रि अ) नष्ट करना,
 बरबाद करना ।
 नष्ट या बरबाद होना । भ्रममें
 पड़ना । (क्रि स—बगदाना)
बगरना—[क्रि अ] चाबिउपिते
 गिँचवति होना ।
 चारों ओर फैलना । छितराना ।
 बिखरना । क्रि स—बगराना
बगल—[सं स्त्री] काबलति,
 मौपिते वा बीउपिते ।
 काल । दाहिने बायें या इधर
 उधर का भाग ।

बगला-भगत—(सं स्त्री) उ०-
 गङ्गादी ।
 साधूके वेशमें रहनेवाला कपटी ।
बगली—[सं स्त्री] काषव वा
 उचबव ।
 बगल या पासका ।
बगाना—(क्रि स) कूटना ।
 टहलाना । घुमाना ।
बगारना—[क्रि स] बिछाबिउ
 करना । अगवित करना ।
 फैलाना । बिखेरना ।
बगावत—(सं स्त्री) विद्रोह ।
 विद्रोह ।
बगिया—(सं स्त्री) गङ्गा वागिछा ।
 छोटा बाग ।
बगीचा—[सं पुं] वागिछा ।
 छोटा बाग ।
बगूला—(सं पुं) घूर्ण-वायु,
 वायवली ।
 बवंडर ।
बगौर—(अव्य) बिना, दिशीन,
 अविशेन ।
 बिना । बिहीन ।
बगड़ी—[सं स्त्री] वागी ।
 एक प्रकार की छोड़ा गाड़ी ।

बचछाला, बाधन्वर—(सं पुं)

बाधर छाल ।

बाध की छाल ।

बचनहाँ, बचना—(सं पुं) बाध

नथर निठिना एविष अश्रु ।

बाध के नख जैसा एक हथियार ।

बधारना—[क्रि स] निखर योग्यता

प्रतिपन्न कविवरि आदशक-

ठैके बेछि कोरा, तेजनि

गवा ।

छीकना । तड़का लगाना ।

योग्यता दिखाके लिये जरूरत से

अधिक बोलना ।

बचकाना—(वि) केदूबार दबे,

न'बानि ।

बच्चों के योग्य । बच्चों का सा ।

बचत—(सं स्त्री) बचापनार भाव,

गङ्गा, गङ्गित होरा अंश,

लाभ ।

बचने का भाव । बचा हुआ अंश ।

लाभ ।

बचना—(क्रि अ) कुगङ्गति, दोष,

विपन्न, आनिब पना बका, दूबते

थका, कायत आशिउ किछु बाकी

थका ।

संगति, दोष, विपत्ति आदि से

रहित, दूर या अलग रहना ।

काममें जानेपर भी कुछ बाकी

रहना । (क्रि स-बचाना)

बचपन—[सं पुं] बाल्यकाल ।

बाल्यावस्था ।

बचाव—(सं पुं) रक्षा ।

रक्षा ।

बचवा—[सं पुं] निष्ठ ।

शिक्षु । (सं स्त्री-बच्ची)

बच्छल; बछल—(वि) बङ्गल-

मयमर भाव ।

वत्सल । सन्तान या छोटीके प्रति

बहुत अधिक ममता रखनेवाला ।

बछड़ा बछरु—[सं पुं] दाम्बुकि ।

गायका बच्चा । स स्त्री-बछिया

बछेड़ा, बछेरु—[सं पुं] गङ्क,

दाम्बुकि, चौबारा पोरानि ।

गायका बच्चा । बोड़ेका बच्चा ।

बजट—[सं पुं] बाजेट,

बजेटेकीया आय-व्यय आठनि ।

वार्षिक आय व्ययका अनुमानित

लेखा-जोखा ।

बजना—(क्रि अ) बजा, गङ्क

होरा अज ठाजना ।

आघात आदि के कारण शब्द होना । बाजे आदिसे शब्द उत्पन्न होना । शस्त्रों का चलना ।
(कि स-बजाना)

बजरंग—(वि) बखर गयान मृदु अन्न ।

बजके समान दृढ़ अङ्गोंवाला ।

बजरंगबली—[सं पुं] शूरमान ।
हनुमान ।

बजरा—(सं पुं) डाँडव नाव ।
एक प्रकार की बड़ी नाव ।

बज्रवैया—(वि) बज्राडंता, वापक ।
बजानेवाला ।

बजाज—(सं पुं) कापोव
विक्रेता, बेचोता ।
कपड़ा बेचनेवाला ।

बाझना—(क्रि अ) धुँका, पाकत
पेलोवा, काजिया करा, जेद
करा ।
बन्धना । फँसना । भगड़ना ।
हठ करना ।

बट—[सं पुं] बटे गछ, बाटे, खरीब
गाँठि ।
बरगदका वृक्ष । गोला । मार्ग ।
रस्सी की ऐँठन ।

बटखरा—[सं पुं] पत्ता ।
बाट ।

बटन—(सं पुं) बूटाय ।
बुताम ।

(सं स्त्री) बटे कार्या ।
बटने की क्रिया या भाव ।

बटना—[कि स] मछला भिंसा, बटी
वा खरी बटे काम ।

तारों, रेशों आदिको एकमें मिला
कर इस प्रकार मरोड़ना कि वे
रस्सीके रूपमें एक हो जाय ।
पीसना-मसाला आदि ।

बटपरा, बटपार (मार)—[सं पुं]
डकाइठ ।
रास्ते में लोगों को लूटनेवाला ।
डाकू ।

बटली, बटलोई—(सं स्त्री)
बटलहि, पेग्टि ।
भात-दाल आदि पकानेकी डेगची ।

बटा—(सं पुं) टोपण्टि, बल,
खेल खेलाव वस्तु विशेष, यात्री,
गणितव भाग पर्यायवाची छिन ।
गोला । गंद । चकई नामका
खिलोना । डेला । यात्री । गणितमें
भिन्न का स्वरूप सूचक बड़ी पाई ।

बढाना—(क्रि अ) बढाशरा ।
बन्द होना ।

बढी—[सं स्त्री] गरु बढि ।
छोटी गोली ।

बढुआ, बढुवा—[सं पुं] बढुआ,
केशवा बलपं थका झोलोडा ।
कुई खानोवाली एक प्रकार की
छोटी थैली । देगची ।

बढेर—(सं पुं) अक्की विशेष ।
तीतर की तरह की एक छोटी
चिड़िया ।

बढोटन—(क्रि स) बुटेलि जमा
करा ।

समेटना । इकट्ठा या जमा
करना ।

बढोही—[सं पुं] अशिक । यात्रा ।
रास्ता चलने वाला । यात्री ।

बढा—(सं पुं) कोनो विशेष
काबणत कमि योत्रा मूल्यमान
दालानि, लोकछान, कलङ्क, गरु
धुबगैया टेगा, पंठा छुटि ।

किसी विशेष कारण से मूल्य में
होने वाली कमी । दलाली ।
घाटा । कलंक । कूटने पीसने

आदि का पत्थर । छोटा गोल
डिब्बा ।

बढी—[सं स्त्री] पंठा छुटि, धुव-
गैया गरु टूट्टुवा ।

किसी चीज का गोल छोटा
टुकड़ा । टिकिया ।

बढु—(सं पुं) बटे गछ ।

बरनद का पेड़ ।

(वि) डाडर ।

बड़ा ।

बढुपन—[सं पुं] श्रेष्ठइ, मशइ ।
बड़ा होने का भाव । महत्त्व ।

बढुबढाना—[क्रि अ] डोब-
डोबोवा ।

बकवाद करना । धीरे धीरे
अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना ।

बढुबोल (१)—(वि) उकाईना;
बना कथा ।

बहुत बढाकर बातें करनेवाला ।

बढुभाग [१]—(वि) भाग्यवान ।
भाग्यवान ।

बढुवाग्नि, बढुवानल—(सं पुं)
कश्चित अग्नि, समुद्रत जलि थका
झुई, बाढ़वानल ।

बह आग जो समुद्र में
जलती हुई मानी जाती है ।

बढ़हार—(सं पुं) बियाब पिछत
बब नात्रीक खुँउरा डोज (उडव
डानतब बीति) ।
विवाह के बाद होने वाला बरा-
नियो का भोज ।

बढ़ा—[वि] डाडव-दीशन, बृहत्,
नेछि बग्नब, श्रेष्ठ, बेछि ।
लम्बा-चोड़ा और विशाल ।
अधिक अवस्था या उमर का ।
श्रेष्ठ । महत्व का । बढ़कर ।
अधिक । (बि-स्त्री—बड़ी)
(सं पुं) बड, बबडडा ।
उद की पीठी की तली हुई गोल
टिकिया ।

बढ़ाई—[सं स्त्री] श्रेष्ठ, उडव,
ग्रहिना ।
बड़प्पन । श्रेष्ठता । महिमा ।
प्रशंसा ।

बढ़ी, बरी—(सं स्त्री) बड,
बबडडा ।
दाल, आलू आदि पीसकर सुखाई
हुई छोटी टिकिया ।

बढ़, बढ़ती, बढ़ोतरी—(सं स्त्री)
जोख बा गनपाठ होवा
आशिका, शक्ति, मूलाशक्ति ।
तोल, गिनती, मान आदि मे होने

वाली अधिकता, बन्त । मूल्य
की वृद्धि ।

बढ़ना—(क्रि अ) बढ़ा, बिस्तार,
मूलाशक्ति, जोख-बाफ आदित
बेछि होवा, श्रमोवा (चाकि) ।
विस्तार, मान आदि में पहले से
अधिक होना । गिनती या नाप
तोल में अधिक होना । मूल्य,
अधिकार, सामर्थ्य आदि में वृद्धि
होना । दीप के बुझना ।
(क्रि म—बढ़ना) ।

बढ़नी—[सं स्त्री] नाउनी ।
आंगशन ।
भाडू । पेशगी ।

बढ़ाव—(सं पुं) शक्तिर डार,
बागपानी, मूला आदि शक्ति
होवा, बेछि होवा ।

बढ़ने की क्रिया या भाव । वाड ।
मूल्य आदि का बढ़ना, चढ़ना या
ऊँचा होना ।

बढ़ावा—(सं पु) उडवना,
उदगनि वा उदगाश दिया ।
प्रोत्साहन । उत्तेजना ।

बढ़िया—(वि) उडव, डाल ।
उत्तम । अच्छा ।

वतंगढ़—[सं पुं] डिमके ठान
करा, गर कथाके डाउब करा ।
किसी साधारण सी बात को
दिया हुआ बहुत बड़ा या भगडे
बसेडे का रूप ।

वतकड़ी—[सं स्त्री] कथा-वतबा,
उर्क-विउर्क, गाछि कोरा कथा ।
वार्तालाप । बाद-विवाद । झूठ-
मूठ-या मनसे बनाकर कही जाने-
वाली बात ।

वतकड़—(वि) खुबवेछि, अनर्थक
कथा कोरा ।
बहुत ज्यादा व्यर्थ की बातें
करनेवाला ।

वतरस—(सं पुं) कथा कोराब
आनन ।
बातचीत का आनन्द ।

वतलाना, बाताना—(क्रि स)
कै दिया, परिचय दिया,
बेधुवा ।
परिचित कराना । ज्ञान कराना ।
दिखाना ।

वतक, वतख—(सं पुं) बिना शैश ।
जल-हंम ।

वतनास—(सं स्त्री) बडाश ।
हवा ।

वतासना—(क्रि स) बडाश
नगोरा ।
हवा करना ।

वतिया, भतिया—(सं स्त्री)
अटेनउ, कैठा कल ।
छोटा, कच्चा, लम्बा फल ।

वतियाना—(क्रि स) कथा कोरा ।
बातें करना ।

वतौर—(क्रि वि) निषट्मने,
गमान, निठिना ।
तरह पर । रीति से । समान ।

वत्तिस, वत्तिस—(वि) वत्तिश ।
वत्तिस ।

वत्ती—[सं स्त्री] मलिता, चाकि,
म'मवाति ।
पलीता । दीपक । मोमवत्ती ।

वद—[वि] बेया, इहे, बेया
अकृतिब ।

बुरा । दुष्ट ।
(सं स्त्री) डेलठा, अडिठोवा,
पक, अनिष्टे ।
पलटा । बदला । पक्ष । जोखिम ।

बदकिस्मत—[वि] उर्कगीरा ।
बमागा ।

बदचलन—[वि] श्छवित्र, अग
श्रद्धि ।

दुश्चरित्र ।

बदजात—(वि) नीच, धूर्त ।
नीच । पाजी ।

बदतर—(वि) निकृष्टतर ।
निकृष्ट-तर ।

बद-दुआ—[सं स्त्री] अभिशाप ।
शाप ।

बदन—(सं पुं) शरीर ।
देह ।

बदनसीध—[वि] अभाग, शर्तगोष ।
अभागा ।

बदना—(क्रि स) वर्णना करना,
गाने लोना, बाजि गाना ।
वर्णन करना । गानेना । ठह-
राना । बाजी या शतं लगाना ।

बदनाम—(वि) कुशांत, बदनाम ।
कुख्यात ।

बदनामी—[सं स्त्री] कुशांति,
अपवाद, अपयथ ।
कुख्याति । अपवाद ।

बदबू—(सं स्त्री) शर्करा ।
दुग्ध ।

बदबूदार—(वि) शर्करापूर्ण ।
दुग्ध युक्त ।

बदमस्त—(वि) मत्तनीया, निचाते
मत्त ।
नशे में चूर ।

बदरा—(सं पुं) मेघ ।
बादल ।

बदरिया, बदरी—[सं स्त्री] मेघ ।
बादल ।

बदलना—(क्रि अ) परिवर्तित
होना । स्थानान्तर होना ।
परिवर्तित होना । एक की जगह
दूसरा हो जाना ।
[क्रि स] बदल कराना, अंश
बदलाना । अंश ३ बरा, गलना-
गलन करना ।

परिवर्तित करना । एक चीज
हटाकर उसकी जगह दूसरी चीज
रखना । एक चीज देकर दूसरी
लेना ।

बदला—[सं पुं] विनिमय, प्रति-
कार, कृतकर्तव्य फल, प्रतिफल ।
विनिमय । पलटा । एवज । प्रति-
कार । किये हुए काम का फल ।

बदली—(सं स्त्री) मेघ, बदल ।
मेघ । तबादला ।

बद-हजमी—[सं स्त्री] अजीर्ण ।

अजीर्ण ।

बदहवास—[वि] डेढ़, अज्ञान,
गृहित ।

जिसके होश ठिकाने न हों ।
उद्विग्न ।

बदा—[वि] भागत लिखा ।
भाग्य में लिखा हुआ ।

बदी—(सं स्त्री) कृष्णक, बेया,
अनाया, अपकाव ।
कृष्ण पक्ष । बुराई ।

बदौलत—[क्रि वि] अश्रद्धा ।
किसी की कृपा या अनुग्रह के
द्वारा ।

बदू—(सं पुं) आरव देशव
जाति विशेष ।
अरब में रहनेवाली एक जाति ।

बद्ध—[वि] बद्ध, निर्धारित ।
बाँधा या बँधा हुआ । निर्धारित ।

बद्ध-परिहर—(वि) पृष्ठ अतिष्ठ,
उद्यत ।
उद्यत ।

बधाई—[सं स्त्री] शुभ कामना,
बहुल कार्य ।

बढ़ती । मंगलान्वार । सुबारक-
बाद । शुभ कामना ।

बघावा—(सं पुं) शुभकामना, राज-
निक कार्यत इष्टे कृत्रिम
दिया उपहार ।

बघाई । सगे सम्बन्धियों के यहाँ
मंगल अवसरोपर भेजा जानेवाला
उपहार ।

बधिक—[सं पुं] शत्रुकावी,
ठिकारी, शत्रु ।
हत्यारा । जल्लाद । बहलिया ।

बधिया—(सं पुं) बका, बाँधी, कनै
काठि नपुंसक कर्मा बन्धु ।
वह पशु जिसका अंडकोश निकाल
दिया गया हो ।

बधिर—(सं पुं) कला, काष्ठ
शुद्धता शब्द ।
बहरा ।

बधू, बधूटी—(सं स्त्री) बोरानी,
न बोरानी ।
पुत्र की पत्नी । नयी आयी हुई
बहू ।

बनचारी—[वि] बनचारी, बनवागी ।
बन में रहने या घूमने फिरने
वाला ।

बनना—[क्रि अ] तैयार होना,
गखा, डाल अवस्था होना, बर्छा,
मूर्ख अथवा हास्यास्पद होना,
मिष्टांकेय गंभीर होना डार
आदि कबा ।
तैयार होना । रचा जाना ।
अच्छी दशामें होना । निभना ।
मूर्ख या हास्यास्पद सिद्ध होना ।
अधिक योग्य या गम्भीर होने की
फूठी मुद्रा धारण करना ।

बन-मानुष—(सं पुं) वन मानुष ।
आकृति आदिमें मनुष्यसे मिलता
जुलता जंगली जन्तु ।

बनवारी—(सं पुं) श्रृङ्खल ।
श्रीकृष्ण ।

बनास—(सं स्त्री) उलर कापोंर
विशेष ।
एक प्रकार का ऊनी कपड़ा ।

बनाना—[क्रि स] तैयार कबा,
सजा, कोनो पद, थिताप
अथवा अधिकार अधिकारी कबा,
बुद्धि नोवावाटेक काको ब्यक्त
अथवा विज्ञाप कबा ।
तैयार करना । रचना । किसी
पद, मर्यादा या अधिकार में
अधिकारी करना । किसी को इस

प्रकार मूर्ख या उपहासास्पद
बनाना कि वह समझ न सके ।
(प्रे०—बनवाना)

ब-नाम—(अव्य) नामत, विकल्पा ।
के नाम । के विरुद्ध ।

बनाबट—(सं स्त्री) कृत्रिमता,
बचना, आडम्बर ।
कृत्रिमता । रचना । आडम्बर ।

बनाबटी—(वि) अस्वाभाविक,
कृत्रिम, नकल ।
नकली ।

बनिज—(सं पुं) बणिज, व्यापार,
किना-बेचा गायत्री ।
व्यापार । क्रय विक्रय की वस्तु ।

बनिया—(सं पुं) व्यापारी, गेला
मालर बेपारी, छाति विशेष ।
व्यापार करनेवाला व्यक्ति । आटा
दाल आदि बेचनेवाला । वैश्य ।

बनियाइन—[सं स्त्री] गेश्ठी ।
गंजी ।

बनिस्वत—(अव्य) तुलनात,
अपेक्षा ।
तुलना में । अपेक्षा ।

बनी—(सं स्त्री) बनहनी, बागिचा,
कहेना, नाविका ।

बनस्थली । वाटिका । दुलहिन ।
नायिका ।

बनेठो—[सं स्त्री] मृत लोहा
अथवा कप आदि थोटोवा लाठी ।

बह डंडा जिसके सिरपर लट्ट
लगे रहते हैं ।

बनैला—(वि) बनबीरा [छत्र] ।
जंगली (पशु)

बन्ना—(सं पुं) दवा, बिया नाम
विशेष ।

दुल्हा । विवाह के अवसर पर
गाये जानेवाला एक प्रकार का
गीत ।

बन्नो—(सं स्त्री) केशना, बोराबी ।
दुलहिन । वधू ।

बपु, बपुख—(सं पुं) शरीर ।
शरीर ।

बपौसी—[सं स्त्री] बापतीया ।
बाप से मिली हुई सम्पत्ति ।

बफरना—[क्रि अ] अभिमान कवि
काकियाव निमित्त खोबे छकाव
दिया, उत्पात करा ।

अभिमान में भरकर लड़नेके लिये
जोर का शब्द करना । उत्पात या
उपद्रव करना ।

बफारा—(सं पुं) औषध मिश्रित
पानीवे एक द्रव्य ।

औषध मिले जलके भापसे शरीर
का कोई अंग सँकना ।

बबर, बबबर—[सं पुं] डाँडव
गिर ।

बड़ा शेर । सिंह ।

बबुआ—(सं पू) 'नापकन' लेशीया
ल'बाक मरमते मता नाम ।
लड़कों के लिये प्यारका सम्बो-
धन । (सं स्त्री—बबुई)

बबुला—(सं पुं) बनबीरा काईटेशुक्त गच्छ
विशेष ।

कीकर का पेड़ ।

बबुला—[सं पुं] अग्निपिण्ड,
पानीव बूबबुबि ।

आगका गोला । पानीका बुलबुला ।

बभूत—[सं स्त्री] भस्म, छाई ।
भस्म । राख । विभूति ।

बम—[सं पुं] बोना ।

विस्फोटक पदार्थों का गोला ।

बमकना—[क्रि अ] अतिशयोक्ति
पूर्ण कथा बोना, डाँडव
डाँडवके शब्द कना ।

डींग हाँकना । जोर का शब्द
करना ।

बम-भोला—[सं पुं] शिव ।

शिव । महादेव ।

बय—[सं स्त्री] वयस ।

उम्र ।

बयन—(सं पुं) कथा ।

वचन ।

बया—(सं पुं) बलबली जातीय
पक्षी विशेष, शान चाउल आदि
जोशी मान्द्र ।

एक प्रकार का पक्षी । बुलबुल ।

अनाज तोलने का काम करने
वाला ।

बयान—(सं पुं) वर्णना, विवरण ।

वर्णन । विवरण ।

बयाना—[सं पुं] वायना, यागधन ।

पेशगी ।

बयार—(सं स्त्री) बतार ।

हवा ।

बर—(सं पुं) बटे, बेथी, दूढ़ भावे
कबा प्रतिष्ठा ।

बरगद । रेखा । दृढ़तापूर्वक की
हुई प्रतिज्ञा ।

[अव्य] उपर, बाहिर अथवा

गुप्त, तथापि ।

ऊपर । बाहर या सामने । बल्कि ।

(वि) श्रेष्ठ, पूर्ण याग ।

श्रेष्ठ । पूर्ण (आशा) ।

बरई—(सं पुं) पानब श्रेष्ठि
कवौता याक वेठौता ।

पान उपजाने, बनाने और बेचने
वाला । तमोली ।

बरकंदाज—(सं पुं) बरकान्दाज,
बन्दूकधारि जैग ।

वह सिपाही जिसके पास बड़ी
लाठी या बन्दूक रहती है ।

बरकत—(सं स्त्री) बरत प्रविशाल,
लाभ, अमूल्य ।

बहुतायत । लाभ । प्रसाद या
कृपा ।

बर-खिलाफ—(वि) विरुद्ध ।
विरुद्ध ।

बरगद—[सं पुं] बटे गछ ।

बड़ का पेड़ ।

बरच्छा—(गं पुं) विवाह नियम
विशेष, न- चाई विवाह ठिक
कबा लोकाचार विशेष ।

विवाह में तिलक से पहले कन्या
पक्ष की ओरसे वर को देखकर
विवाह निश्चित करनेकी रस्म ।

बरछा—(सं पुं) बर्षा, बरस,
पाणि । भाला ।

बरजना—[क्रि अ] निषेध कबा ।

मना करना ।

(क्रि स) व्रश्न नकबा, वावशान नकबा ।

सामने आनेपर भी ग्रहण न करना प्रयोग या उपयोग में न लाना ।

बरजोर—(वि) बलवान, अत्ताचाबी ।

बलवान । अत्याचारी ।

[क्रि वि] बलव ।

बलपूर्वक ।

बरतन—[सं पुं] पात्र, वाहन-वर्धन ।

पात्र ।

बरतना—[क्रि अ] आचरण कबा,

वावशान कबा ।

व्यवहार या बरताव करना ।

(क्रि स) कायत थोटोबा ।

काम में लाना ।

बर-तरफ—(वि) कायत, बेलगे, पदपूत ।

किनारे । अलग । बरखास्त ।

बरताव—(सं पुं) वावशान ।

व्यवहार ।

बरदाना, बरधाना,—[क्रि स, क्रि अ]

गाई, घोड़ा, बलद अथवा

घोड़ा, लगत बम क्रिया अथवा

एने बम क्रिया द्वारा गर्भ धारण कबा ।

गौ, घोड़ी आदि का उनकी जाति के पशुओं से संयोग कराना या संयोग द्वारा गर्भधारण करना ।

बरदास्त—(सं स्त्री) गहा ।

सहन ।

बरना—(क्रि स) बरण कबा, दान

दिया, वर्णना कबा । सूता बटो ।

वरण करना । दान देना । वर्णन करना । (तागा) बटना ।

बरफ, बर्फ—(सं पुं) बरफ ।

हिम । ओला ।

बरफानी, बरफोला—(वि) बर-

फेबे पूर्ण, बरफमय ।

जिसमें या जिसपर बरफ हो ।

बरफी—(सं स्त्री) बर्फ, मिठाई विशेष ।

एक प्रकार की मिठाई ।

बरबंड—[वि] बलवान, उदण्ड ।

बलवान । उदण्ड । प्रचंड ।

बरबस—[क्रि वि] अनाशकत,

बोब-झुनूयके ।

व्यर्थ । जबर्दस्ती ।

बरबाद—[वि] नष्ट ।

नष्ट । चौपट ।

बरमा—(सं पुं) काठ आदि
कुछ कबा गझुलि विशेष—
बबमा ।

लकड़ी आदिमें छेद करनेका एक
औजार ।

बरराना, बराना—[क्रि अ] अनाशक्त
कथा कोरा, टोपणित कथा
कोरा ।
व्यर्थ बकना । नींद या बेहोशीमें
बकना ।

बरवै—[सं पुं] छद्म विशेष ।
एक प्रकार का छन्द ।

बरषा, बरसा, बरसात - [सं स्त्री]
वर्षा, वर्षा शब्द ।
वर्षा । वर्षा, ऋतु ।

बरस, बरिस—(सं पुं) वर्ष ।
वर्ष, साल ।

बरसगाँठ, बरषगाँठ—[सं स्त्री]
अथ वार्षिकी, अथ दिन ।
साल गिरह ।

बरसना—[क्रि अ] बरसना दिया,
छाविपिनब पबा खुब बेछिटेक
अहा अथवा पबा ।

आकाश से जल गिरना । चारों
ओरसे अधिक मात्रामें आना या
गिरना । (क्रि स-बरसाना)

बरसाती—(वि) वर्षा शब्द होरा,
वर्षा शब्द ।

बरसात में होनेवाला । बरगातका ।
[सं स्त्री] वर्ष आदि वर्षा
शब्द । आनीकोट आदि ।
कोठियो आदि इमारतो का प्रवेश
द्वार । एक प्रकारका कपड़ा जिसे
पहननेपर शरीर नहीं भागता ।

बरसी—[सं स्त्री] बरसनाका
शब्द ।
मृतक का वार्षिक श्राद्ध ।

बरही—[सं स्त्री] गन्तान अथ शव
बार दिनब दिन । वर्षा निधि
विशेष ।

सन्तान उत्पन्न हानके बारहव दिन
का उत्सव तथा कृत्य ।

[क्रि वि] बरसना ।
बलपूर्वक ।

बराक—(सं पुं) शिव, युद्ध ।
शिव । युद्ध ।
(वि) नीच, बेचेबा ।
नीच । बेचारा ।

बारात, बरिआत, बारात—[सं स्त्री]

• बरवाड़ी ।

विवाह के समय बरके साथ कन्यावालो के यहाँ जाने का दल ।

बराना—(क्रि अ) मनसब वा मजबूत

हलक न । नोकरों वा काम

मनवा, बरवा । वा, जानि ठनि

कावावाक कोनो काम वा

कार्यवा प्रवा पृथक् कवा ।

प्रसंग या अवसर आने पर भी

कोई बात न कहना या काम न

करना । रक्षा करना । बचाना ।

जानबझ कर किसी को किसी

काम या बात से अलग करना ।

जलना ।

[क्रि स] निर्वाचन कवा,

छलोवा ।

चुनना । जलाना ।

बराबर—(वि) समान, मजबूत ।

समान । समतल ।

(क्रि वि) एकान्द्रिक्रम, एकैलगे,

मनास ।

लगातार । एक साथ । हमेशा ।

बराबरी—[सं स्त्री] समानता ।

समानता ।

बरामद—(वि) गकलोवे आगत

नूकाई धका बख उलियाई अना ।

खानातानाछौत ओलोवा बख-

वाशानि ।

निकाल कर सब के सामने लाया

हुवा । [छिपा हुआ माल]

बरामदा—(सं पु) बाबांठा ।

मकानों में आगे या कुछ बाहर

निकला हुआ छायादार छज्जा ।

बरियाई—(क्रि वि) बलबे ।

बलपूर्वक ।

(सं स्त्री) श्रेष्ठता, शक्तिशालु ।

श्रेष्ठता । बढप्पन । शक्तिमत्ता ।

बरी—(सं स्त्री) मरु घुबगीया बबि,

बबि ।

छोटी गोल टिकिया ।

[वि] मुकलि होश ।

छूटा हुआ । मुक्त ।

बरु [क्र]—(अव्य) यदि, किन्तु । बरः

भले ही । बलिक ।

बरुनी, बरौनी—(सं स्त्री) पलकब

नोम, पिबिकति ।

पलको के आगे के बाल ।

बरेंडा—(सं पु) नाबली ।

बह लकड़ी जो खपरैल या छाजन

में लगवाई के बल लगी रहती है ।

बरेली—[सं स्त्री] हाडत पिक्का अलक्काव विशेष । बिग्रा ठिक कबिबटेल बर अथवा कशेना चोरा कार्य ।

बाह पर पहनने का एक गहना । विवाह सम्बन्ध स्थिर करने के लिये वर या कन्या को देखना ।

बर्बर—(सं पुं) निर्धूर, अगुडा । जंगली आदमी । उजड़ु ओर मूर्ख ।

बरै—[सं पुं] बनल । भिड़ नामका उड़नेवाला कीड़ा ।

बलंद, बुलंद—(वि) उँच, डाँडर । ऊँचा । बड़ा ।

बल—(सं पुं) बल, गान्ध्या, शक्ति, डाबरा, सेना, सहाय, कौँच खोरा, अन्ध, पिने, बाले, बक्रता ।

सामर्थ्य । भार उठाने की शक्ति । सहारा । भरोसा । सेना । पार्व । ऐँठन, फँटा । टेढ़ापन । सिकुड़न । अन्तर । ओर, तरफ ।

बलकना—[क्रि अ] उतना होना, आवेश प्रवेश होना ।

उबलना । उमड़ना । आवेश में आना ।

बलगम—(सं पुं) कफ । कफ ।

बलदाऊ, बलदेव—(सं पुं) बल-देव, बलदाय । कृष्णके बड़े भाई ।

बलना—[क्रि अ] जला । जलना ।

[क्रि स] जराँ बढो । (रस्सी आदि) बटना ।

बलम, बालम—[सं पुं] पति, प्रणयी, प्रेमी । पति । प्रणयी, प्रेमी ।

बलमीक, बलमोक—[सं पुं] उँछ हाकनू । दीमकों की बाँबी ।

बलवा—[सं पुं] विद्रोह, विप्रल । विद्रोह । विप्लव ।

बलवाई—[सं पुं] विद्रोही । विद्रोही ।

बला—(सं स्त्री) गज विशेष, पृथिवी, लक्ष्मी, दुःख, दुःप्रैत अथवा ईईउर पवा पोवा बाधा ।

पौषों की एक जाति । पृथ्वी ।
लक्ष्मी । आपत्ति, दुःख । भूत-प्रेत
या उनकी बाधा ।

बलाका—(सं स्त्री) बगलीब जाक ।
बगलों की पंक्ति ।

बलात्—[क्रि वि] बलपूर्वक ।
बलपूर्वक ।

बलात्कार—(सं पुं) बलपूर्वक
काम कबोवा, बलबल और गछोग
कवा कार्य ।
किसी स्त्रीके साथ बलपूर्वक
स भोग ।

बलाधिकृत—[सं पुं] प्राचीन
डावतब सेनाधायक याक बाङ्ग-
मञ्जीव उपाधि ।

प्राचीन भारत में राज्य के सेना
विभाग का प्रधान अधिकारी
और राजमंत्री ।

बलाहक—[सं पुं] मेघ ।
मेघ ।

बलि—(सं पुं) बाङ्कब, उपशव,
पूजाब गायत्री, नैवेद्य, देवताब
आगत कटो अङ्ग, बलि ।

राजकर । उपहार । पूजा की
सामग्री । नैवेद्य । किसी देवता के

नामपर मारा जानेवाला पशु ।
(सं स्त्री) बाङ्कवी ।
सहेली ।

बलिया, बलिष्ठ—[वि] बलवान ।
बलवान ।

बलिहारी—[सं स्त्री] प्रेम, अक्रा
आदिब कारणे निजके समर्पण
कवा ।

प्रेम, श्रद्धा आदिके कारण अपने
आपको किसी के अधीन या किसी
पर निष्ठावर कर देना ।

बलुआ—(वि) बालि अँहीश,
बालिमय । रेतीला ।

बलैया—(सं स्त्री) हःथ-कटे,
विपद-विधिनि ।

बला । आपत्ति ।

बलैया लेना—अइनेब कटे वा
बोग निजे लवटेल देखी
प्रकाश कवा ।

किसी का रोग या कष्ट अपने
ऊपर लेने की कामना प्रकट करना

बालिक—(अव्य) नहले, बवः ।
अन्यथा । अच्छा यह कि ।

बल्लभ—(सं पुं) बल्लभ, याठि ।
डंडा । बरछा ।

बसना—[सं पुं] डाढ़र शकत
आरु दीधल काँठ वा लाठि ।
लम्बा और मोटा शहतीर या
डण्डा ।

बसंडर—[सं पुं] धूमश,
बड्ढाबली ।
चक्रर की तरह घूमती हुई हवा ।
आँधी ।

बसासीर—[सं स्त्री] अर्श बेबाब ।
अर्श रोग ।

बसंती—(वि) बसन्त ऋतुब,
हालधीया बड्ढर ।
बसन्त ऋतु का । पीले रंगका ।

बस—(वि) यथेष्टे, टेश्छे ।
यथेष्ट । भरपूर ।
(अव्य) यथेष्टे, केवल ।
पर्याप्त । केवल ।
(सं पुं) बल, ब्योब ।
बल । जोर ।

बसना—(क्रि अ) बाग कबा ।
जीवन बिताने के लिये कही
निवास करना । रहना । आबाद
होना ।

बसर—[सं पुं] निर्वाश, जीवन-
बाबन ।
गुजर । निर्वाह ।

बसना—(क्रि स) ठाई दिया,
बाग कबिबटेल बाबश्चा कबि दिया,
बहिबटेल दिया ।

बसने या रहने के लिये जगह
देना या प्रवृत्त करना । आबाद
करना । ठहराना । बैटाना ।
सुगन्ध से युक्त करना ।

(क्रि अ) बाग कबा, थका,
सूगाँकि सूख होबा, नोनो
काग कबाँत गकल होबा ।

बसना । रहना । कुछ कर मकने
में समर्थ होना । गन्ध से युक्त
होना ।

बसीठ—(सं पु) खबर लै बाबा
दूत ।
समाचार भेजनेवाला दूत ।

बसीठी—(सं स्त्री) दूतगिबि ।
दूतत्व ।

बसुधा—(सं स्त्री) बसुधबा,
गृथिनी ।
पृथ्वी ।

बसूना—(सं पुं) काँठमिद्धीब
यज्ञ विणेश । बाछूना ।
लकड़ी गढ़ने का बड़इयों का एक
ओजार ।

बसेरा— [सं पुं] वाश्च,
ठबाई छिबिकतिब वाश्च ।
ठहरने या टिकने की जगह ।
वह जगह जहाँ पक्षी रात बिताते
हैं । निवासी ।

बस्ता— [सं पुं] किताब, वही
यादि बाकि लै योरा कापोब ।
वह कपड़ा जिनमें पुस्तकें, बहियाँ
आदि बाँधी जाती हैं । बेठन ।

बहकना— (क्रि अ) पथ बह्ने होरा,
मदत मतलौया होरा, छल-
कपटब वशवर्ती होरा ।
पथभ्रष्ट होना । किसीके धोखेमें
आ जाना । किसी प्रकारके मद
या आवेश में चुर होना । (क्रि स-
बहकाना)

बहन, बहिन— (सं स्त्री) डनी ।
माताकी कन्या । चाचा, मामा,
बुआ की लड़की ।
[सं पुं] बत्ताश्च छाति ।
भोंका ।

बहना— (क्रि अ) बै योरा,
अनबबत बै योरा, घुबि कुवा,
निर्ब्याह होरा ।
प्रवाहित होना । निरंतर रसके
रूप में प्रवाहित होना । मारा-

मारा फिरना । निर्वाह होना ।
[क्रि स] कठिउरा, कोना
अंकावब बोखा बा दाग्रिह अइण
कबा ।

कोई चीज अपने ऊपर लाद या
खींचकर ले चलना । किसी
प्रकारका भार अपने ऊपर लेना ।

बहनापा— (सं पुं) डनी-सम्पर्क ।
बहन का सम्बन्ध ।

बहनोई— (सं पुं) डग्रीपति,
बैनाइ ।

बहन का पति ।

बहनौरा— (सं पुं) डनीयैकब
शलबब बब ।

बहन का समुराल ।

बहरा, बहिर— (वि) कला, काणबे
शुडना ।

जो कान से न सुने या कम सुने ।

बहराना— (क्रि स) काकि दिया,
आनन्द दिया, पृथक कबा,
उलिउरा ।

बहलाना । बहकाना । बाहर की
ओर ले जाना या करना । अलग
करना ।

(सं पुं) नगब वा गौबब
बहिडाग ।

घाहर या बस्तीका बाहरी भाग ।

बहरियाना—(क्रि स) डेलियाई मिश्रा ।

बाहर करना ।

बहरी—(सं स्त्री) बाघ जातीय
छाये ।

एक शिकारी चिड़िया ।

(वि) बाहिरब ।

बाहर का । बाहरी ।

बहलाना—(क्रि अ) मनोबलन
होना । काकित पना ।

मनोरंजन होना । भुलावेमें आना ।

बहलाना—(क्रि स) मनोबलन
करा । कुटलोवा ।

चित्त प्रसन्न करना । बहकाना ।

बहली—(सं स्त्री) बथव निठिना
गरुगाड़ी ।

रथकी तरह की बेलगाड़ी ।

बहस—[सं स्त्री] तर्क-वितर्क,
वाद-प्रतिवाद ।

तर्क-वितर्क । विवाद ।

बहसना—[क्रि अ] तर्क, विवाद
करा ।

तर्क या विवाद करना ।

बहाऊ—[वि] टैव याव पना,
बोवाइ दिठुता, बेग्रा, अनाशकत
धन नष्ट करेता ।

बहा देने के योग्य । बहा देनेवाला ।

बुरा । व्यर्थ धन नष्ट करनेवाला ।

बहादुर—(वि) वीर, भवाक्रमी ।
शूरवीर । पराक्रमी ।

बहाना—(क्रि स) अवाशित करा,
अनाशकत बच करा ।

प्रवाहित करना । पानी की धारा
में डालना । व्यर्थ व्यय करना ।

(सं पु) निष्कृत बचाव काबल
गजा मिश्रा कथा । टालिबाधि ।

अपना बचाव करने या मतलब
निकालने के लिये कही हुई झूठी
बात । नाम मात्र का कारण ।

बहार—(सं स्त्री) वगळ काल,
आनन्द, बसनेगता ।

वसन्त ऋतु । मजा, आनन्द ।
रमणीयता ।

बहाल—(वि) निष्कृत ठाईते
पुनर निष्कृत ।

अपने स्थान पर फिर से या पूर्व-
वत् स्थित ।

बहाली—(सं स्त्री) पुनर्निष्कृति ।
पुनर्निष्कृति ।

बहाव—[सं पु] अवाश, वै थका
पानी, बचत बग ।

प्रवाह । बहता हुआ पानी ।

प्रबल वेग या प्रवृत्ति ।

बहिर्यो—[सं स्त्री] बाह्य ।

बाह्य ।

बहिरंग—[वि] बाह्यर ।

बाहरी । बाहर का ।

बहिर्जगत्—(सं पुं) बहिर्जगत् ।

बाहरी दृश्य या जगत् ।

बहिर्मुख—(वि) बहिर्मुख, विपरीत,

विमुख ।

विमुख । विपरीत ।

बहिर्गत—[सं पुं] शर्ग ।

स्वर्ग ।

बही—(सं स्त्री) बही ।

हिस्साब किताब लिखनेकी पुस्तक ।

बहुल, बहुविद्—(वि) बहु ज्ञान,

अविच्छिन्न ।

अच्छा जानकार ।

बहुतायत—(वि) खूब बेछि परिमाण ।

अधिकता । ज्यादाती ।

बहुतेरा—[वि] बहुता ।

बहुत-सा ।

[कि वि] विविध धरतय ।

बहुधाकावे ।

अनेक प्रकार से ।

बहुधा—[कि वि] आदेश ।

प्रायः । अक्सर ।

बहुभाषी—[वि] खूब कथा कउंठा,

बहुभाषी ।

बहुत बोलनेवाला । बहुत-सी

भाषाएँ जाननेवाला ।

बहुमत—(सं पुं) भिन्न भिन्न मत,

मतभेद । अधिक गण्यक

लोकब मतेका ।

बहुत-से लोगो का अलग अलग

मत । बहुतसे लोगोका एक मत

या राय । (अं—मेजॉरिटी)

बहुमूल्य—(वि) मूल्यवान, बहु-

मूल्यी ।

कीमती । दामी ।

बहु-रंगा—[वि] केवा बडब ।

कई मिले जुले रंगो का ।

बहुरना—(कि अ) कबवाटेल गे

घुवि अहा ।

कही जाकर वापस आना ।

लौटना ।

बहुरि—(कि वि) पुनर, आको ।

पुनः । उपरान्त ।

बहुरिया—(सं स्त्री) न बोवाबी ।

नयी बह ।

बहुल— [वि] बेछि ।

अधिक ।

बहु— (सं स्त्री) बोराबो, पद्मी,
कईना ।

लडकेकी स्त्री । पत्नी । दुलहिन ।

बहेड़ा— [सं पुं] बनोषभिब गछ
विशेष । भोयोबा गुटि ।

एक प्रकार का पेड जिसके फल
दवा के काममें आते हैं ।

बहेडुआ— [वि] फट्टेबा, चेल-
बेलीया ।

आवारा ।

बहेलिया— [सं पुं] चवाई चिकाबी ।
चिड़ीमार ।

बहोरना— (क्रि अ) उडता ।
लोटना ।

बहोरि— [अव्य] पुनर, आको,
पिछत ।

पुन । फिर ।

बाँक— [सं स्त्री] बाजुर निठिना
एविध अलकाव । शेरू । एक
प्रकावब छूबी ।

बाँहपर पहनने का एक गहना ।
घनुष । एक प्रकार की छुरी ।

(वि) बेका, डाँड लगा ।
टेढा । बाँका, तिरछा ।

बाँकड़ी— (सं स्त्री) सोनानी किटा
विशेष ।

एक प्रकार का सुनहला फीता ।

बाँकपन— (सं पुं) बेँका होराब
डाव । शोभा ।

बाँका होने का भाव । शोभा ।

बाँका— (वि) डाँजुरा डँजुरा ।
सुन्दर गजा-कछा । बीब ।

टेढा । सुन्दर और वनान्ठना ।
बहादुर ।

बाँकुड़ा, बाँकुरा— (वि) बेँका, डीक
भावब, मज्जल । प्रवल पराक्रमी ।
बाँका । तेज धार का । कुशल ।

बाँग— [सं स्त्री] आवाज, गता,
मोलाई दिया आजान, कूकुराब
पुवाब डाक ।

पुकार । मुल्ले की अजान ।
मुरगे का सबेरे बोलना ।

बाँगड़— (सं पुं) पञ्जाब बाज्जाब
हबियाना अकल ।

पंजाबका हरियाना अकल ।

बाँगड़— (सं स्त्री) डावा विशेष ।
हबियाना अकलत अचलित
डावा ।

हरियानी बोली ।

(वि) मूर्ख, ठेगछ ।

उजहु । मूर्ख ।

बौधना—(कि स) पढ़ा ।

पाठ करना ।

(कि अ) बन्ना वा उद्धार पोवा ।

रक्षा या उद्धार पाना ।

बौध—(सं स्त्री) बद्धा । बद्धा ।

बुंधा ।

बौटना—(कि स) भाग कबा,

विलाई दिया ।

हिस्सा या विभाग करके देना ।

वितरण करना ।

बौड़ा—[वि] नेष्ट कटा (लक्ष्),

अनशाय ।

दुमकटा (पशु) । असहाय ।

बौदी—[सं स्त्री] दाजी, बान्नी ।

दासी ।

बौध—[सं पुं] बाह, नदी आदि

बाह, बहान, बधाउवि, बाधा ।

बाधने की क्रिया या भाव । नदी

या जलाशय का जल रोकने के

लिये उसके किनारे या बीच में

बना हुआ मिट्टी, पत्थर आदिका

घुस्स । वह बन्धन जो किसी बात

को रोकने के लिये लगाया जाता है ।

बौधना—(कि स) बद्धा, क्रम आदि

ठिक कबा, अनु-मज्झ बाधन कबा ।

नियमित कबा ।

रस्सी, कपड़े आदिमें घेरकर

उसमें गाँठ लगाना । पकड़ कर

बन्द या कैद करना । पाबन्द

करना । क्रम, व्यवस्था आदि

ठीक या नियत करना । अस्त्र—

शस्त्र आदि धारण करना ।

बौबो—(सं स्त्री) ठेई शकल ।

गांधर्व ग्रीठ ।

दीपकों के रहने का मिट्टी का

दूह । साँप का बिल ।

बौस—(सं पुं) बाँस ।

एक लम्बी वनस्पति जिसमें पोला

पन और बीच बीचमें गढ़े होते

हैं ।

बौसा—(सं पुं) बाजशाह ।

रीढ़ की हड्डी ।

बौसुरी—[सं स्त्री] बाँशी ।

बाँशी ।

बौह—[सं स्त्री] शड़, बल, गशाय,

कायिक आदि शब्द अर्थ ।

हाथ । बल । सहायक । सहारा ।

कमीज आदिकी आस्तीन ।

बाई—(सं स्त्री) बात बेमार,
श्रीसकलर बाते आदर बूचक
शब्द, बेथ्या सकलर नाथर लगत
लगेवा शब्द बिशेष, सब
पुथुबी ।

त्रिदोषों में बात नामक रोग,
स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक
शब्द । बेथ्याओं के नामोंके साथ
लगानेवाला एक शब्द । छोटा
तालाब ।

बाईस—(बि) बाईश

बाहर—[बि] पागल, बलिश ।
बाबला । पागल ।

बाएँ, बायें—(क्रिबि) बाँपिन ।
बाईं ओर या तरफ ।

बाक—[सं पुं] कथा, बचन ।
बात । वचन ।

बाकी—[सं स्त्री] बाकी, अवशिष्ट ।
अवशिष्ट । शेष ।

(अव्य) किष्ठ ।
तेकिन । परन्तु ।

बाग—(सं पुं) बागिछा ।
उद्यान ।

[सं स्त्री] बाँबाब लगाम ।
बोड़े की लगाम ।

बागडोर—(सं स्त्री) लगाम ।
लगाम ।

बागवान—[सं पुं] बाली ।
माली ।

बागवानो—(सं स्त्री) बागिछात
कूल गछ बोदा विद्या, शिक्षा ।
बगीचों में पेड़ पीधे लगाने की
कला या विद्या ।

बागा—(सं पुं) दीघल चोला ।
एक लम्बा पहनावा । जामा ।

बागी—[सं पुं] विद्रोही ।
विद्रोही ।

बागीचा—(सं पुं) सब बागिछा ।
छोटा बाग ।

बाघी—(सं स्त्री) फोहा, गाँठि ।
एक प्रकार का फोड़ा जो गर्मी या
आतश के रोगियों को जांघ की
सन्धि में होता है ।

बाबा—(सं पुं) अतिछा, संकल्प ।
वचन । संकल्प ।

बाछा—(सं पुं) दामुबि, लंबा ।
गोका बछड़ा । लड़का ।

बाज—(सं पुं) बाज चवाई, बाँबा,
श्वान, बाज बज्ज ।

एक प्रसिद्ध शिकारी चिड़िया ।
बोड़ा । बनि । बाजा ।

(प्रत्यय) अथवा विशेष,
शब्दों में अथवा अयोग्य कबिले
आगच्छ, अथवा तात अथवा
आदि अर्थ करे ।

एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में
लगकर रखनेवाले, व्यसनी,
शौकीन या कर्ता आदि का अर्थ
देता है ।

[वि] वक्षित, कोनो
कोनो ।

वंचित । रहित । कोई कोई ।
कुछ विशिष्ट ।

(अव्य) नष्ट, बिना ।
बिना । बगैर ।

बाजना—(क्रि स) बजा, काजिया
करा । आवाज पोढ़ा, बुँका ।
बजना । झगड़ा करना । लड़ना ।
आघात लगना ।

बाजरा—[सं पुं] बज्रा (गंगा
विशेष) ।

जौधरी नामक मोटा अन्न ।

बाजा—[सं पुं] बाँझ-यज्ञ ।
बजाने का यन्त्र । वाद्य ।

बा-आस्ता—(क्रि वि) नियमांशुवि ।
जाबते या नियमके अनुसार ।

(वि) नियम अशुक्ल ।
जो नियम के अनुकूल हो ।

बाजारी, बाजारू—[वि] बजार
गश्तीय, गाथावन, बजारत थका,
बखरवा ।

बाजार सम्बन्धी । बाजार का ।
मामूली । बाजार में बैठने या
रहनेवाला ।

बाजी—[सं स्त्री] बाजी लगाई
खेला खेल, बाँझ लगा ।
शर्त । बदान । ऐसा खेल जिसमें
दाँव लगा हो ।
[सं पुं] बाँबा ।
घोड़ा ।

बाजीगर—(सं पुं) बाँझकर ।
जाहूगर । नट ।

बाजीगरी—[सं स्त्री] बाँझकर
खेल ।

बाजीगर का काम या खेल-
तमाशा ।

बाजू—(सं पुं) बाँझ, बाँझ
(अलङ्कार विशेष) ।

बाँह । बाँहपर पहननेका एक
गहना ।

बाजूबंद. बाजूबीर—[सं पुं]

अनङ्गब विप्लव ।

बाह पर पहननेका एक गहना ।

बाट—(सं पुं) पथ, बाटे, पगो,

(गाल खोखा)

भागं । चीजें तोलनेका बटखरा ।

बट्टा ।

बाटना—(क्रि स) पिश ।

पीसना ।

बाटिका—(सं स्त्री) बाटिका ,

गरु बागिछा ।

छोटा बाग ।

बाढ़व—[सं पुं] गागरवत लगी

छूड़े, बाढ़बाशि ।

बड़वानल । समुद्र में जलनेवाली

अग्नि ।

बाड़ा (बाड़)—(सं पुं) टाबिउ

पिने बेब दिग्रा डांडव पंथाव,

गो-शाला ।

चारों ओर से गिरा हुआ बड़ा

मैदान । पशु शाला ।

बाड़ी—(सं पुं) बावी ।

छोटा बाग ।

बाढ़—[सं स्त्री] बान पानी,

यथेष्टे ।

वृद्धि । जल-प्लावन । प्रचुरता ।

भरमार ।

बाणा—[सं पुं] तीव, बाण ।

तीर ।

बाणिज्य—(सं पुं) बणिज ,

बावगाय ।

व्यवसाय । व्यापार ।

बात—[सं स्त्री] कथा, बाणी,

परिवृद्धि, वातावर, अतिज्ञा,

गन्धान, उपदेश, बहगा, गोपनी-

यता, अतिव्याय, विशेषवृद्ध ।

कथन । बाणी । परिस्थिति ।

सन्देश । वार्तालाप । वादा ।

साख । इज्जत । उपदेश । भेद ।

अभिप्राय । खूबी । कथन का

मर्म ।

बात-चीत—[सं स्त्री] कथा-वतवा ।

कथोप कथन । वार्ता ।

बातुल—(वि) पांगल ।

पागल ।

बातुनिया (नी)—[वि] कथकी ।

बकवादी ।

बाद—(अव्य) पिछ्त ।

उपरान्त ।

(वि) अतिवृद्धि ।

अलग हटाया या छोड़ा हुआ ।

अतिरिक्त ।

[सं पुं] बाद-विवाद, काक्षिया-
पेछान कवा । बाजि बधा ।

बाद विवाद । हुज्जत करना ।
घात, बाजी ।

बादर, बादल— (सं पुं) येष ।
बादल ।

[वि] आनन्दित ।

प्रसन्न । खुश ।

बादरिया — (सं स्त्री) येष ।
बदली (मेघ)

बादला— [सं पुं] सोपानी वा
कपानी, छिक्मिकिया तार ।
एक प्रकार का सुनहला या रूप-
हला चमकीला तार ।

बादि— (अव्य) वार्थ ।
व्यर्थ ।

बादित—[वि] बजोडा, निनादित ।
बजाया हुआ ।

बादी—(वि) वायुव विकार गन्धकीय ।
वायु विकार सम्बन्धी ।

(सं स्त्री) शरीरत वायुव विकार
बेछि होवा ।

शरीरमें वायु विकारका प्रकोप ।

(सं पुं) काक्षिया कबोता,
शक्र ।

नाद या झगड़ा करनेवाला ।
शत्रु ।

बादुर— [सं पुं] बाहुनी ।
चमगादड़ ।

बाध— (सं पुं) बाधा, अश्वविधा,
धाँटिषा (उतब डारतब उज्जा-
पोछ) गजा जबी ।

अडचन । कठिनाता । दिक्कत ।
खाट बुनने की मूँजकी रस्सी ।

बाधक—(सं पुं) बाधक, कष्टदायक ।
रुकावट डालनेवाला कष्टदायक ।

बान — (सं पुं) नव, पानीव
७५ टो, फटकाबाजी, चमक-
दमक ।

वाण । पानीकी ऊँची लहर । एक
प्रकार की आतिश बाजी । वर्ण ।
चमक ।

(सं स्त्री) गाछान-काछान ।
बनाव सिंगार । आदन ।

बानक, बानिक—(सं उचय) बेन,
गाछ-पाव ।

वेश । सज-धज । सजावट ।
मंयोग ।

बानगी—[सं स्त्री] गयूना, उगाहब ।
नमूना ।

बाना—[सं पुं] पोछाक, झिति,
बीति, अश्रु दिग्गव, बानि,
(दीव-बानि) ।

पहनावा । वेश विन्यास । स्थिति ।
रीति । तलवार की तरह का या
भाले की तरह का एक हथियार ।
भरनी ।

(क्रि स) छुलि आछावा,
गंझुछित होवा, बज्जब मुख
अथवा फूटा बहल कवा ।

सिकुडने वाली वस्तुका अपना
मुँह या छेद फैलाना । बालोंमें
कंध करना ।

बानी—[सं स्त्री] बानी, बचन,
मिनति ।

बाणी । वचन मनीती । चमक ।

बापुरा—(वि) बेचेवा, दोन-हीन ।
बेचारा । दोन हीन ।

बाबस—(अव्य) विषये, बाबे ।
सम्बन्धमें । विषय में ।

बाबुल—[सं पुं] पिता, बाबू ।
पिता । बाबू ।

बाबू—(सं पुं) बाबू, पिताक
बाबे सम्बोधन ।

आदर सूचक शब्द । पिताके लिये
सम्बोधन ।

बायन—(सं पुं) उपहारब मिठाई,
आगधन ।
उपहार का मिठाई । उपहार ।
पेशगी ।

बायस—(सं पुं) काँडेरी ।
कौआ ।

बायाँ—(वि) बाँपनिब, विपरीत,
विरोधी अथवा शत्रु ।

बाम भाग का उलटा । विरोधी,
दाहिने या शत्रु ।

(सं पुं) डुगि, (तबलाब लगत
थका बाद्य ।)

डुगी ।

बारबार—(क्रि वि) बाबे बाबे ।
बार बार ।

बार—(सं पुं) झराब, चिना-
पवित्र, बाजगडा, बाबा ।
दरवाजा । ठौर-ठिकाना । राज
सभा । बोझ ।

(सं स्त्री) समय, पलम, बार ।
काल । बिलम्ब । दफा ।

बारन—(सं पुं) हाथी ।
हाथी ।

बारना—(क्रि ब) बाधा दिया ।

मना करना ।

[क्रि स] जलावा ।

बालना । जलाना ।

बारह—वाव ।

बारह-खड़ी—[सं स्त्री] श्ववर्णव
मात्रा गमूह बाह्यन वर्णव लगत
लगाई पंजा वा लिखा द्यक्रिया ।
प्रत्येक व्यंजन वर्ण के साथ बारह
स्वरों को मात्राओं के रूपमें
लगाकर बोलने या लिखने की
प्रक्रिया ।

बारह—(वि) चेटेलि-चेटेलि ,
नष्ट-बष्टे ।

छिन्न-भिन्न । नष्ट भ्रष्ट ।

बाट—[सं पुं] वाववाही गौत ।
वह पद्य या गीत जिसमें बाहर
महीनों के विरह का वर्णन होता
है ।

बारह-मासा—(वि) वावमशीय
(बहुरचोव गोटेई केई
माहते फला वा कुला ।)
सब ऋतुओं में फलने फुलनेवाला ।

बारह-सिंगा—[सं पुं] एविश
शविष, पक्ष ।

एक प्रकार का बड़ा हिरन ।

बारिज—(सं पुं) पञ्चम ।

कमल ।

बारिश—[सं स्त्री] वनस्प, वर्षा-
शब्द ।

वर्षा । वर्षा ऋतु ।

बारी—[सं स्त्री] पाव, मार्जित
वागिष्ठा, शिबिकी, बल्लव, श्रुती,
गच्छावाली, पाल ।

किनारा । हासिया । बाड़ा ।

बगीचा । खिड़की । बंदरगाह ।

पारी । छोटी लड़की । युवती ।

[सं पुं] श्व, माली ।

घर । माली ।

बारीक—(वि) शून्ध, मिहि, वव
गन्ध, गंभीर ।

महीन । बहुत छोटा । गम्भीर ।

बारीकी—(सं स्त्री) पातल भाव,
शून्धता ।

पतलापन । सूक्ष्मता ।

बारे—(क्रि वि) शेषत ।
अन्त को (या में)

बारे—(अव्य) विषये, शब्दके ।
विषयमें ।

बाल—(सं पुं) बालक, लंबा,
नखना, अल्ल, छुलि, हातीपों-
बालि ।

बालक । अनजान । हाथी । केश ।

(वि) केहूवा-निष्ठ, नवोदित ।

जो सयाना न हुवा हो । जो अभी निकला हो ।

बालक—(सं पुं) ल'वा, श्रुतेक ।

लड़का । पुत्र ।

बालाचर—(सं पुं) झाँटे, ग्राया-

जिक शिक्षा आदिते निश्चित ल'वा ।

वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाओं की शिक्षा मिली हो ।

बालधि—[सं पुं] नेत्र ।

पूँछ ।

बालना—(सं पुं) झलोवा ।

जलाना ।

बालपन—[सं पुं] निष्ठ,

ल'वालि ।

लड़कपन ।

बालधच्छे—(सं पुं) गछान,

ल'वा-छोदानी ।

सन्तान ।

बाल-झीला—(सं स्त्री) ल'वा-छोदा-

नीव खेल-धेवालि ।

बालकों के खेल या क्रीड़ा ।

बाला—(सं स्त्री) युवती, पत्नी,

कहेना, कोयलाहो, गरम ।

युवती स्त्री । पत्नी । कन्या ।

[सं पुं] बाना, शांतत आरु

कानत भिक्का अलङ्कार विशेष ।

कमसिन, सीधा-सादा ।

हाथमें पहनने का कड़ा । कानमें

पहनने की बड़ी बाली ।

बालाई—(वि) उपरव अंश,

अतिबिछ ।

ऊपरका । साधारण या नियत से

भिन्न और अतिरिक्त ।

[सं स्त्री] चामनि, शांतिदर

गाव भाग, गरम ।

मलाई ।

बाला-नशोन—(सं पुं) बहिवर

वावे श्रेष्ठ आगन, गरुलोतटेक

उथ ठाईत बहि थका छन ।

बैठने का सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ

स्थान । वह जो सबसे ऊँचे स्थान

पर बैठा हो ।

[वि] गरुलोतटेक भान,

श्रेष्ठ ।

सबसे अच्छा ।

बालिका—[सं स्त्री] छोदानी ।

छोटी लड़की ।

वाङ्मय—[सं पुं] गावात्मक ।

वयस्क ।

वाङ्मय, वाङ्मय—[सं स्त्री] गारु ।

तकिया ।

[वि] यच्छात्र, गृह ।

अज्ञान । मूल ।

वाङ्मय—[सं पुं] वेगेंत,

डालटै मेली डुटा आरु माखर

आउ लिब माखर जोख, आवा-

हीत ।

बिता । हाथकी उँगलियाँ पूरी

फैलानेपर अंगुठेके सिरेसे छिगुनी

सिरे तक की लम्बाई ।

वाङ्मय—[सं स्त्री] कानत गिका

श्रुवगैश अलङ्कार विनैव ।

कानमें पहनने का एक वृत्ताकार

गहना ।

वाङ्मय—(सं स्त्री) बालि ।

रेत । बालू ।

वाङ्मय—(सं पुं) कण, बालि ।

रेणुका । रेत ।

वाङ्मय—(सं पुं) द्वितीयान् छय ।

द्वितीया का चन्द्रमा ।

वाङ्मय—(क्रि वि) शब्द ।

हसपर भी ।

वाङ्मय, वाङ्मय—(सं स्त्री)

डाङ्गर नाद, गरुड पुत्रवरी ।

बड़ा और चौड़ा कुआँ । गहरा

छोटा तालाब ।

वाङ्मय—(सं पुं) वाङ्मय, कटौश

बहुत ठिगने या नाटे कद का

आदमी । बोना ।

(वि) छुट्टी दाब, वाङ्मय ।

वाङ्मय—(सं पुं) वाङ्मय ।

रसोदया ।

वाङ्मय, वाङ्मय—(वि) पागल,

गृह ।

पागल । मूल ।

वाङ्मय—[सं पुं] निवासी ।

निवासी ।

वाङ्मय—(सं पुं) वाङ्मय, थका ठाँवे,

गोक, काटोव ।

रहने की क्रिया या भाव । रहने

का स्थान । गन्ध । कपड़ा ।

[सं पुं] स्वागित करा, डूँडे ।

वासना । आग ।

वाङ्मय—[सं पुं] वाङ्मय ।

बरतन ।

वाङ्मय—(सं स्त्री) गरुड ।

गंध ।

(क्रि स) सुगन्धित कवा ।

सुगन्धित करना ।

बासी—(वि) बासी, आगरेय
बस्त्र, आगदिना थावलमैद्या
किष्ण पोछ दिनाटेल बर्षा ।

देरका पका हुआ । कुछ समय का
रखा हुआ ।

बाहर—(क्रि वि) मौसम बाहिरत,
बाहिर, बेलग, पृथक, आगटेल
उलाइ, थका ।

सीमा के पार, अलग, परे या
आगे निकला हुआ ।

बाहरी—(वि) बाहिर, आनर,
उपेकरा ।

बाहरका । पराया । ऊपरी ।

बाहु-बल—(सं पुं) शारीरिक
शक्ति, शरीरशक्ति ।

शारीरिक शक्ति । पराक्रम ।

बाहुल्य—[सं पुं] बाहुल्य,
वार्धता ।

बहुतायत । व्यर्थता ।

बाह्य—(वि) बाहिर ।

बाहर का ।

बिग—(सं पुं) बाग ।

व्यंग ।

बिंदी—(सं स्त्री) कपालत
लंगोरा गरु कौंटेर बड्ड, बिन्दू
कौंटे ।

नुक्ता । माथे पर लगाया जाने-
वाला छोटा गोल टीका ।

बिघना—[क्रि अ] बिस्का, फूटा
कवा, लागि धवा ।

बीधा या छेदा जाना । उलभन ।

बिब—[सं पुं] प्रतिबिम्ब, हँ,
कोरा भातुवि, सूर्या, चन्द्र
आदिब मञ्जुल, आभाष ।

प्रतिबिम्ब । प्रतिकृति । कुदरू
नामक फल । सूर्य चन्द्र आदि
का मंडल । आभास ।

बिबा—[सं पुं] लति कल वा
गवरीया कैठाल ।

कुदरू नामक फल ।

बिबित—(वि) यांर छाया पवि
आछे ।

जिसका बिब या छाया पड़ रही
हो ।

बिकना, बिकाना—[क्रि अ] बिज्जी
होवा ।

बेचा जाना । बिक्री होना ।

बिकरार, बिकरात—(वि) भयङ्कर
भयंकर ।

बिक्काई—(स स्त्री) व्याकुलता ।
व्याकुलता ।

बिक्सना—[क्रि अ] विकशित
होना ।
विकसित होना । (क्रि स)—
विकासना ।

बिकाऊ—[वि] विक्रीय, बेचि
लगीया ।
बिकनेवाला ।

बिकारी—[स स्त्री] आलेख ,
टका पड़ेठा वा मोप गेब आदि
बुझावर बाटे ब्यवहार कर
छिन ।

बहू टेढ़ी पाई जो अङ्गों आदि के
आगे रूप्यों की संख्या या मन
सेर आदि का मान (5) सूचित
करने के लिये लगाई जाती है ।

बिखरना—(क्रि अ) मिँछरित
होना, बिभृच्छल होना ।

तितर बितर होना । छितराना ।

बिखेरना—[क्रि स] बिपिने मिपिने
पेलोना, छुटिओवा ।

इधर उधर फैलाना । छितराना ।

बिगड़ना—(क्रि अ) बेग्या होना,
बेग्या अवस्था होना, बेग्या चबित्र
होना, अगच्छुष्ट होना ।

खराब हो जाना । बुरी दशामें
आना । बदचलन होना । नाराज
होना ।

बिगड़े-दिल—(वि) उध्व श्वावब
लोक, कू-पथत छला जन ।
उग्र या विकट स्वभाववाला ।
कु-मार्गपर चलनेवाला ।

बिगड़ैल—[क्रि] कथाई कथाई
काजिया करबौता ।
बात बातमें बिगड़ने या लड़ पड़ने
वाला ।

बिगाड़—(सं पुं) बेग्या होना
क्रिया अथवा आगच्छुष्टभाव, भङ्गता ।
बिगड़ने की क्रिया या भाव ।
खराबी । बेमनस्य ।

बिगाड़ना—(क्रि स) कोनो
वस्तु श्वाभाविक रूप अथवा गुण
विकार घटा, अवस्था बेग्या
होना ।

किसी वस्तु के स्वाभाविक रूप या
गुणमें विकार उत्पन्न करना । बुरी
दशामें लाना या पहुँचाना ।

बिगुल—(सं पुं) विकूल, बहुराई
मुखेबे बहोरा आवध शिडा ।
सैनिकों को एकत्र करने के लिये
बजाई जानेवाली तरही ।

बिगूचना—(क्रि अ) दोधोव-
नोदोवत पना, हेँटा दिसा वा
धवा पना ।
असमंजसमें पड़ना । पकड़ा या
दबाया जाना ।

बिगोड (ऊ)—(सं पुं) नष्ट होना,
बेशा ।

नाश । खराबी ।

बिगोना—[क्रि स] बेशा कना,
अपवादहार कना, नुकोवा, कष्ट
दिसा ।
खराब करना । दुरुपयोग करना ।
छिपाना । तंग करना । बहकाना
(क्रि अ) नष्ट अथवा बेशा
होना ।

नष्ट या खराब होना ।

बिघटना—(क्रि स) बिघटना, नष्ट
कना, भाङ्गि-छिडि पेलोवा ।
बिघटित करना । विनष्ट करना ।
बिगाड़ना । तोड़ना-फोड़ना ।

बिचकना—(क्रि अ) मुख रेंका
कना, झलि उठा (खड्ड) ।
(मुँहका) टेढ़ा होना । भड़कना ।

बिचकाना—(क्रि सं) मुख डेडू-
चालि कना, उछटनि दिसा ।
(मुँह) चिढ़ाना, (मुँह) टेढ़ा

करना । (मुँह) बनाना । भड़-
काना ।

बिचरना—(क्रि स) धुवि कुवा
विचरण कना ।
विचरण करना ।

बिचला—[वि] माझू ।
मध्य का ।

बिचवई, बिचवानी—[सं स्त्री]
मथावृत्ता ।
मध्यस्थता ।
(सं पुं) मथावृत्त ।
मध्यस्थ ।

बिचारना—(क्रि अ) डवा, चिन्ता
कना ।

विचार करना । चिन्ता करना ।

बिचाल—[सं पुं] बेलग कना,
पार्थक्य ।
अलग करना । अलगाव ।
अन्तर ।

बिचाली—(सं स्त्री) नवा, धान,
गम आदिब सुकाई थका गछ ।
धान, गेहूँ आदि का सूखा हुआ
डण्ठल ।

बिच्छी, बिच्छू—शक्ति, बिहा ।
बृश्चिक ।

बिछड़ना, बिछुड़ना—(क्रि अ)

बेगमग अथवा बिच्छेद होना ।

अलग या जुदा होना ।

बिछलना—(क्रि अ) पिछला ।

फिसलना ।

बिछाना, बिछावना—(क्रि स)

बिछाना अथवा माटित कापौर
पावि दिसा, जिँचि दिसा वा
छाटिसाई दिसा ।

विस्तर या कपड़ा जमीनपर दूरी
तक फैलाना । बिखराना ।

बिछावन, बिछौना—[सं पुं]

रिछना, लवि-पाटी ।

बिस्तर ।

बिछोड़ा, बिछोड़, बिछोह—

(सं पुं) बिच्छेदव क्रिया
अथवा भाव, बियोग, बिच्छेद ।
बिछुड़ने की क्रिया या भाव ।
वियोग ।

बिजन [1] —(सं पुं) गरु

बिहनी ।

छोटा पंखा ।

(बि) एकासु शान, अकल ।

एकान्त स्थान । अकेला ।

बिजली, बिजुरी—(सं पुं)

बिजुली, चकल ।

बिद्युत् । चपला ।

[बि] बर चकल अथवा उच्छल ।

बहुत अधिक चंचल या प्रकाश-
मान ।

बिजहन—(बि) याव कठिया वा बिथान

पर्यास अथवा बीज पर्यास नष्ट
हैछे ।

जिसका बीज तक नष्ट हो गया
हो ।

बिजूका, बिजूखा (बि) धेति

पथावत चबाई आदिक भय
बुरावटेल गाछि थोवा वख बिगेषा

पक्षियों आदि को डराने के लिये
खेत में उलटी टांगी हुई काली
हांडी या इसी तरह की कोई
चीज ।

बिजोरा—[बि]

निश्कतोय ।

कमजोर । दुर्बल ।

बिटिया—(सं स्त्री) छोराणी ,

जौयरी ।

बेटी ।

बिठाना—[क्रि स] बहउवा ।

बैठाना ।

बिडरना—[क्रि अ] ईकाल गिकाल
होवा, जिँचबित होवा, नष्ट
होवा ।
इधर उधर होना । बिखराना ।
बिचकना । नष्ट होना । खराब
होना ।

बिडारना—(क्रि स) डग देखुँडवा,
डग देखुँवाई खेदा ।
भबभीत करना । डराना । डरा
कर भगाना ।

बिदबना—(क्रि स) काय करा,
कटोवा, गंअइ वा एकगोट
करा ।
कमाना । संचित या इकट्ठा
करना ।

बितना—(क्रि अ) यतिशहित
होवा, कटोवा ।
व्यतीत होना । बीतना ।

बिताना, बिताबना—(क्रि स)
अतीत होवा, कटोवा ।
गुजारना । काटना ।

बितु, बिस्त—[सं स्त्री] धन-गम्पति,
गामर्था ।

वित्त । धन सम्पत्ति । सामर्थ्य ।

बित्ता—(सं पुं) वेगेंत ।
बालिस्त ।

बिथरना—(क्रि अ) जिँचबित
होवा ।

बिखरना ।

(क्रि स) ईकाले-गिकाले
जिँचबित होवा, (गम्बर बीज)
छटिउया ।

इधर उधर बिखराना । (बीज)
बोना ।

बिथा—(सं स्त्री) बाथा । दुःख,
व्यथा ।

बिथारना—(क्रि स) जिँचबित होवा ।
बिखेरना ।

बिदकना—(क्रि अ) फटा,
धुँरटना अस्त होवा, याषात
पोवा ।

फटना । घायल होना । भड़कना

बिदरना—(क्रि अ) फटा, नष्ट
होवा ।

फटना । नष्ट होना ।

बिद्वारना—[क्रि स] फला-छिवा करा,
नष्ट करा ।

चीरना-फाडना । नष्ट करना ।

बिदा, बिदाबती—(सं स्त्री)

आवाय, अश्वान, योवा ।

गमन । प्रस्थान ।

बिदूषना—[क्रि स] दोष अथवा
कलङ्क नगोढ़ा ।

दोष या कलङ्क लगाना ।

बिदोरना—[क्रि स] भूख भुलि वा
भेलि देखुवा ।

(मुँह) खोलकर दिखाना ।

बिध—, सं स्त्री) विध, अकार
उपाय, ढङ्ग ।

प्रकार । भाँति । उपाय ब्रह्मा ।

बिधना—(सं पु) विधाता ।
विधाता ।

(क्रि अ) बिक्र होवा ।

विद्ध होना ।

बिधानी—[सं पु] विधान ठेठगार
करा ।

विधान बनानेवाला ।

बिन, बिना—(अव्य) नश्ल ।
सिवा । न हो तो । बगैर ।

बिनति (ती)—[सं स्त्री] आर्धना
निवेदन ।

प्रार्थना । निवेदन ।

बिनना—[क्रि स] बहा, बाछि
उलिगवा ।

चुनना । छाँटकर अलग करना ।

(प्रे०—बिनवाना ।)

बिनवना—[क्रि स] भिनति अथवा
आर्धना करा ।

बिनय या प्रार्थना करना ।

बिनसना—[क्रि अ] नष्ट होवा ।
नष्ट होना । बरबाद होना ।

बिनाई—[सं स्त्री] बोवा कार्या,
बोवनोब बेश, बहा ।

बुनने की क्रिया, भाव या मज-
दूरी । चुनने की क्रिया, भाव या
मजदूरी ।

बिनावट—[सं स्त्री] बोवाव क्रिया
वा धरण ।

बुनने की क्रिया, भाव या ढंग ।

बिनुआ—(वि) बाछि बाछि
गंवाइ करा ।

जो बीन या चुन चुन कर इकट्ठा
किया गया हो ।

बिनौरी—[सं स्त्री] बरकर गक
टूटवा ।

ओले के छोटे टुकड़े ।

बिनौठा—[सं पु] कपास
गुँटि ।

कपास का बीज ।

बिफरना—[क्रि अ] अप्रगन्न] वा
अगच्छे होवा, अगच्छत वा

बिजोही होवा ।

विद्रोही या बागी होना, नाराज होना ।

बिभोर—[वि] बिछोड़, भुँक ।
बिभोर । मुग्ध ।

बिमानो—(वि) निवाडिमानो ।
जिसे अभिमान न हो । निरभि-
मान ।

बियाना—[क्रि स] प्रियन, प्रिय
करा ।
व्याना । प्रसव करना ।

बियाबान—(सं पुं) डयानक
जङ्गल, निर्द्धन पंथाव ।
उजाड़ जगह । जङ्गल । सुनसान
मैदान ।

बियावर—[बि स्त्री] जगिब लगौशा,
प्रिय श्वलगौशा ।
बियाने या बच्चा देनेवाली ।

बिरंगा—[वि] केरा-बडबो ।
कई रङ्गों का ।

बिरचना—[क्रि अ] बिबड़ बा
उपागीन होरा, अगच्छे अथवा
नाबाख होरा ।
किसी की ओर से विरक्त या
उदासीन होना । अप्रसन्न या
नाराज होना ।

(क्रि स) गवा ।

रचना बनाना ।

बिरह—[सं पुं] कौटिगाथा,
अश्लि ।

यश वर्णन । प्रशस्ति ।

बिरमना—[क्रि अ] पलम करा,
बिबड़ देश कानबि कटा ।

देर लगाना । विरक्त होकर
अलग होना । क्रि स-बिरमाना

बिरवा—[सं पुं] गछ ।
वृक्ष ।

बिरहा—(सं पुं) विशाव आक
उडव अदेशत अचलित बिबह
अथान एविध लोकगौत ।
एक प्रकार का लोक गीत ।

बिराजना—[क्रि अ] बिबाज
करा, शोभावकन करा, बहा ।
शोभित होना । बैठना । (आदर
सूचक)

बिरादर—(सं पुं) भाई, एक
बन्धु वा गौत्रव ।
भाई । भ्राता ।

बिरादरी—[स स्त्री] छाति, एक
छातिब भाइश्वर गयष्टि ।
एक जाति के लोगोंका समूह ।

बिराना, बिरावना—[क्रि स] बं

. डोना, डोकावा ।

बिड़ाना ।

बिरिनो—(सं स्त्री) जयश, वाद,

पोल ।

समय । बार । बारी ।

बिछ—[सं पुं] ग्रांत ।

बिबर ।

बिलकुल—(क्रि वि) सम्पूर्ण ।

पूरा पूरा ।

बिलखना—[क्रि अ] बिनाई करना,

छूँची होना ।

बहुत रोना । दुखी होना । सिकु-

डना ।

बिलग—[वि] बेलग, निम्नोन्न ।

अलग । निदनीय ।

(सं पुं) पार्श्वका, मित्रता

अथवा गश्क त्याग करवा ।

पार्थक्य । मैत्री या संपर्क का

परित्याग ।

बिलगाना—[क्रि अ] बेलग

होना ।

बिलग होना ।

(क्रि स) बेलग करवा ।

अलग करना ।

बिलागाव—(सं पुं) अलव, पार्श्वका ।

अलगाव । पार्थक्य ।

बिलनी—[सं स्त्री] बेबड थका

वमबी वा कुमावनी, आँखिनाई ।

मिट्टी की दीवारों पर रहनेवाली

भीरी । आँखों की पलकों पर

होनेवाली छोटी फुत्सी ।

बिलपना—(क्रि अ) गुणवर्णाई करना ।

रोना ।

बिलमना—(क्रि अ) पलम करवा,

बोवा ।

बिलम्ब या देर करना । ठहरना ।

बिलसना—(क्रि अ) (क्रि स)

शोभा बढ़ावा, ভাল দেখा,

भोग करवा ।

शोभा देना । अच्छे जँचना ।

भोग करना ।

बिला—(अव्य) नहल ।

बिना । बगैर ।

बिलाना—क्रि अ नष्ट होना,

अदृष्ट होना ।

नष्ट होना । अदृश्य होना ।

बिलाव—(सं पुं) बोला पेकुरी ।

नर बिल्ली ।

बिलैया—[सं स्त्री] मेकूबी ।
बिल्ली ।

बिलोकना—[क्रि स] छावा ,
देखा, प्रतीक्षा कवा ।

देखना । जानना ।

बिलोचन—(सं पुं) चकू ।
आँख ।

बिलोकना—[क्रि स] ग्राहीव आदि मथा,
खेलिमेनि कवा, चेदेनिभेदेनि
कवा । दूध आदि मथना । अस्त
व्यस्त करना ।

बिलोना—[क्रि स] ग्राहीव यादि
मथा, छानि दिया ।

दूध आदि मथना । डालना,
उड़ेलना ।

बिल्ला—[सं पुं] बान्ना मेकूबी,
बेङ्ग, कापोवरेव तैयारी
स्वयंसेवक अथवा टापवाटी
आदिये धावन कवा कापोवव
छिन विशेष ।

बिल्ली का नर । कपड़े की वह
पतली पट्टी या निशान जो कुछ
स्वयंसेवक, चपरासी आदि अपनी
पहचान के लिये लगाते हैं । (अं-
बैज)

बिल्ली—(सं स्त्री) मेकूबी, श्वावव
मलथा वा चितकनि ।

बिलैया । दरवाजे में लगाने की
सिटकिनी ।

बिल्लौर—(सं पुं] गार्खिल मिल
फ्रटिक ।

एक प्रकार का मफेद पारदर्शक
पत्थर । स्फटिक ।

बिलवाई—(सं स्त्री) ग्राहना वा
भवि तनूरा फोटा बेमाव ।
पैर के तलवे फटने वा रोग ।

विसंभार (१)—(वि) शरीरव
मिने याव कोदना उम-वम
नाई ।

जिसे अपने शरीर की मुध-बुध
न हो ।

विसनी—(वि) विलगो, बेष्ठा-
गळ ।

व्यसनी । वेग्या गामी ।

विसपना—[क्रि अ] सूर्या यादि
यख योवा ।

सूर्य आदि का डूबना ।

विसमिल—(वि) जगई कवा ।
शालाल, तथम होवा, यावाठ

थांछ होवा ।

जबह किया हुआ, जल्मी, घायल ।

बिसरना—[क्रि अ] प्राश्वि
योवा ।

मूलना । (क्रि स—बिसराना)

बिसहर—(स' पुं) गौण, विश्व
शक्ति नाशकिया करेवाता ।

साँप । विषका प्रभाव नष्ट करने
वाला ।

बिसात—(स' स्त्री) शक्ति, जमा,
गायत्री, प्राणी खेलन चालन
काएपौर बन ।

हैसियत । जमा । सामर्थ्य । वह
कपड़ा या दफती जिसपर शतरंज
या चौपड़ खेलते है ।

बिसाती—(वि) बेछि, कलम,
पूतना यादि बिज्जी करेवाता ।

सूई, तागा, कलम, खिलोने आदि
बेचनेवाला ।

बिसाना—(क्रि अ) धितापि
नगोवा, विश्व अभाव पना ।
बसाना, विषका असर होना ।

बिसाथध—[वि] गेला बाछन
निठिना गोक ।

जिसमें सड़ी मछली सी गन्ध हो ।

बिसागना—[क्रि स] प्राश्वि
योवा ।

मूल जाना ।

बिसाहना—[क्रि स] किना,
जानि कुनि विपद छोडै जना ।
खरीदना । [विपत्ति, भंक्रुठ
आदि] जानबूझकर अपने ऊपर
लेना ।

बिसाहनी—[स' स्त्री] किनि
लोवा बह ।

मोल ली जानेवाली वस्तु ।

बिसूरना—(क्रि अ) मनत छूट
वा शोक करा, डूगुनि कला ।
मनमें खेद या दुख करना ।
सिसक सिसक कर रोना ।

[स' स्त्री] छिछा ।
चिन्ता ।

बिसेख, बिसेष, बिसेस—[वि]
बिनेष ।

विशेष ।

बिस्तर, बिस्तरा—(स' पुं)
बिठना ।

बिछावन ।

बिस्तरना—(क्रि अ.) बिछुठ
होवा ।

विस्तृत होना ।
 [क्रि स] विस्तारना ।
 फैलाना ।
 विस्तारना—(सं पुं) विस्तार कर्ना,
 बढ़ावा ।
 विस्तार करना । बढ़ाना ।
 विस्तृष्टा—(सं स्त्री) खेति ।
 छिपकली ।
 बिस्वा—[सं पुं] एविषा माटिब
 ब्राह्म भागव एभांग, एनेछा ।
 एक बीघे का बीसवाँ भाग ।
 बिहँसना—(क्रि अ) ईश ।
 मुस्कराना । (क्रि स-बिहँसना) ।
 बिहग—(सं पुं) छाई ।
 पत्नी ।
 बिहरना—(क्रि अ) बसना कर्ना,
 फटना ।
 बिहार या सैर करना । फटना ।
 बिहान—(सं पुं) रातिपूरा, काशेटेन ।
 सबेरा । आगामी कल ।
 बिहाना—(क्रि स) एवा ।
 छोड़ना ।
 (क्रि अ) अतीत होवा ।
 व्यतीत होना ।

बिहाल—(वि) अचन होवा,
 भागवि पवा ।
 विकल । थका हुआ ।
 बिहिश्त—[सं पुं] स्वर्ग ।
 स्वर्ग ।
 बीधना—(क्रि अ) बाधत पवा ।
 फँसना ।
 (क्रि स) बिक्री ।
 विद्ध करना ।
 बीघा—(सं पुं) बिषा, माटिब
 एक प्रकारब खेती ।
 जमीन की एक माप ।
 बीच—(सं पुं) माझ, पार्श्वका,
 मध्य ।
 मध्य । अन्तर, फर्क । अवसर ।
 (क्रि वि) भित्तबत, त ।
 अन्दर । में ।
 (सं स्त्री) छो ।
 तरंग ।
 बीचि (ी)—(सं स्त्री) छो ।
 तरंग ।
 बीचोबीच—(क्रि वि) ठिक
 माझते ।
 बिल्कुल या ठीक बीच में ।

बीझ—(सं पुं) बिछा ।

बिच्छू । (सं स्त्री-बीछी)

बीज—(सं पुं) बीज, मूल, कावण
बीर्य ।

बीया । जड़ । हेतु । बीर्य ।

(सं स्त्री) बिछूली ।

बिजली ।

बीजक—(सं पुं) शूरी, तालिका,

कबीर दास के पद संग्रह प्रथि ।

सूची । तालिका । कबीर दास के
पदों के एक संग्रह का नाम ।

बीज-मंत्र—(सं पुं) मूल मन्त्र,
पञ्चति ।

मूल-मंत्र । गुरु, पद्धति ।

बीजा—(वि) शिथिल ।

दूसरा ।

बीजी—(सं स्त्री) नाबिकल आदि

भिन्नवर्ग गाइ, आगति ।

नारियल आदि की गिरी ।

गुठली ।

बीजू—(वि) गुठिल पत्रा उद्गम
होना ।

जो बीज बोने से उत्पन्न हुआ हो ।

बीट—(सं स्त्री) चबाइए गु ।

चिड़ियों की बिछा या मल ।

बीझा—(सं पुं) बीझा तामोल ।

बाइना दिया टंका ।

पान की गिलौरी । किसी काम
के लिये पेशगी दिया जानेवाला
धन ।

बीतना—(क्रि अ) अतीत होना,
घटो, गमाओ होना ।

गुजरना । घटित होना । समाप्त
होना ।

बीन—(सं स्त्री) गोंप नरुवा
मकल बछोवा पेपी । बीणा ।

सँपेरो के बजाने की तूमड़ी ।
बीणा ।

बीनना—(क्रि स) बाँटलाना
लाना ।

चुनना । बुनना ।

बीमार—(वि) बेमारी ।
रोगी ।

बीमारो—[सं स्त्री] बेमान, व्याधि,
जङ्गल बेया यडाग ।

रोग । व्याधि । संभट । बुरी
आहत ।

बीया—(वि) शिथिल ।

दूसरा ।

[सं पुं] बीज ।

बीज ।

बीर—(सं पुं) डाई ।

भाई ।

(सं स्त्री) गथी, कापड़ एविध

अलकाब, गों-छरणीया पंथाब ।

सखी । कान का एक गहना ।

गोचर भूमि ।

[वि] बीर ।

बहादुर ।

बीरन—[सं पुं] डाई ।

भाई ।

बीर-बहूटी—(सं स्त्री) बड़ा बड़ब

एविध पोक । ईल्ल बधू ।

गहरे लाल रंग का एक कीड़ा ।

इन्द्रबधू ।

बीरा—(सं पुं) ठूबीया तारोला ।

प्रसाद हिचावे पोरा फल-मूल
आदि ।

बीड़ा । देवता के प्रसाद रूप में
मिलनेवाले फल-मूल आदि ।

बील —[वि] कोपोला ।

पोला । खोखला ।

(सं पुं) प गाँठ, बड़ ।

नीची भूमि । मंत्र ।

बीस—[वि] आनडटेक बेछि,

अलप डाल, दिन ।

किसी से बढ़कर या कुछ अच्छा ।

बीसी—(सं स्त्री) कृत्रि विध बस्तब

गंजह ।

बीस चीजों का समूह ।

बीहड़—(वि) उथरा मोथोरा, उथ

चापड़, गहीन ।

जो सरल न हो । ऊँचा-नीचा,

ऊबड़ खावड़ ।

बुँदका—(सं पुं) कपालत फोटा

हिचावे बावशाब कबा तिलक,

बूबणीया आरु डांडर दाग ।

भालेपर लगाया जानेवाला गोल

टीका । गोल और बड़ा बब्बा ।

(सं स्त्री—बुँदकी)

बुँदा—(सं पुं) कापड़ एविध

अलकाब । कपालत लगाई लोबा

कौंठ ।

कानमें पहनने का एक गहना ।

माथेपर लगाने की बिंदी ।

(सं स्त्री—बुँदी)

बुआ,बूआ—[सं स्त्री] पेठी ।

पिताकी वहन ।

बुकचा—[सं पुं] टोपोला, बोआ ।

गठरी ।

बुकनी—[सं स्त्री] छूण, छड़ा ।

चूर्ण ।

बुखार—(सं पुं) खर, डाप ।

हथ, क्रेष आदिब आरवग ।

भाप । शरीर में होनेवाला
ज्वर । दुःख, क्रोध आदि का
आवेग ।

बुजदिल—(वि) काग्रकृष, उन्मा-
द्व ।

कायर । डरपोक ।

बुजुर्ग—(वि) बुढ़ा, डाढ़र, जन्मानी ।
वृद्ध । बड़ा ।

(सं पुं) बोधा-रुका, प्रूर्व-
प्रकृष ।

बाप दादा । पूर्वज ।

बुझना—(क्रि अ) छूड़े भूशोरा,
उत्प्राह आदि मिथिल शोरा,
बुछा ।

अग्नि का जलना समाप्त होना ।

उत्साह आदि का मंद पड़ना ।

समझना । (क्रि स-बुझाना)

बुझौबल—[सं स्त्री] गँथव ।
पहेली ।

बुझना—[क्रि अ] छूवा ।

झूबना । (क्रि स-बुझाना) ।

बुड्डा, बुड्डा—(वि) बुद्ध, बुढ़ा ।
वृद्ध । (सं स्त्री—बुद्धिया, बुद्धी)

बुड्डाना—(क्रि अ) बुढ़ा होना ।
वृद्ध होना ।

बुढ़ापा, बुढ़ौतो—[सं पुं] बुढ़ावस्था
बुढ़ाकाय ।

वृद्धावस्था ।

बुत—(सं पुं) मूर्ति, शिवलिंग ।
मूर्ति । प्रियतम ।

बुतना—(क्रि स) बुझाये जाना ।

बुझ जाना । (क्रि स-बुताना)

बुद्धिजीवी—[वि] बुद्धि जीवि ।
वह जो केवल बुद्धिबलसे जीविका
उपार्जन करना हो ।

बुद्धिमत्ता—(सं स्त्री) बुद्धिमत्ता,
बुद्धिमत्ति ।
समझदारी । अक्लमंदी ।

बुदबुद—[सं पुं] पानीन बुब-
बुबनि ।

पानी का बुलबुला ।

बुध—[सं पुं] अश्व विशेष, बुधवार ।
देवता, बुधवारक आर बुधवार
लोक ।

एक ग्रह । एकवार । देवता ।

बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति ।

बुनकर, बुनिया—(वि) बुँति ।
जुलाहा ।

बुनना—[क्रि स] कापोर
बोना ।

सूतकी सहायता से करघे पर
कपड़ा तैयार करना । हाथ या
यंत्र से कुछ सूत ऊपर और कुछ
नीचे निकालकर कोई चीज
बनाना ।

बुनाई—[सं स्त्री] बोड़ा, बोड़ान
बानठ ।

बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बुनियाद—(सं स्त्री) बुनियाद ,
ढोढि, यथार्थता ।

जड़ । नींव । वास्तविकता ।

बुनियादी—(वि) सम्पर्कीय, उबि-
शकत ।

बुनियाद या जड़ से सम्बन्ध रखने
वाला । आधारिक ।

बुभुक्षा—(वि) श्रावव ईर्ष्या,
डोक । भूख । क्षुधा ।

बुरका—(सं पुं) बोक'1, मूरव
परा डबिडेलके आववि थका
मुहलमान डिबोडाई पिक्का
पोछाक विनेष ।

मुसलमानी महिलाओं के सब
अंग ढँकनेका एक पहनावा ।

बुरा—(वि) बेग्रा ।
निकृष्ट । खराब ।

बुराई—[सं स्त्री] बेग्राभाव ,
आशुधि, श्रेष ।

बुरापन । अवगुण । शिकायत ।
द्वेष ।

बुरादा—(सं पुं) काठव डडा ।
लकड़ी चोरने पर निकलनेवाला
उसका चूर्ण ।

बुरुश—[सं पुं] बुरुश , बः
दिशा डुलि ।

रंगने या मफाई करने की कूँची ।

बुर्ज—[सं पुं] बुरुज, दुर्गब
कायत कवा उथ गड वा
डोढि, शीनाबव उपबव डाग ।
किले आदि की दीवारों में वह
ऊपरी स्थान जिसमें बैठने के
लिये थोड़ी जगह होती है ।
मीनार का ऊपरी भाग ।

बुलबुल—[सं स्त्री] बुलबुली
छ्वाइ ।
एक छोटी चिड़िया ।

बुलबुला, बुल्ला—(सं पुं) पानीव
बुबबुबवि ।
पानी का बुदबुद ।

बुलाना—(क्रि स) बत, आश्रय
कवा ।

किसी को पास आने के लिये

पुकार कर कहना । किसी को

बोलने में प्रवृत्त करना ।

बुलावा, बुलौवा—[सं पुं]

निगमन ।

निमंत्रण ।

बुलाहट—[सं स्त्री] निगमन ।

निमंत्रण । बुलाना ।

बुहारना, बोहारना—[क्रि स]

बादलों पर प्रकाश करना ।

झाड़ू से साफ करना ।

बुहारी—(सं स्त्री) बाग़नी ।

झाड़ू ।

बूँद—(सं स्त्री) प्रानीय कणिका,

बीज, बिन्दु, टोपान ।

कतरा । टोप । बीज ।

बूँदाबौंदी—(सं स्त्री) किन्-

किनिया वस्तु ।

हलकी बूँदों की थोड़ी वर्षा ।

बूँदी—(सं स्त्री) बेटन अथवा

कला गह वारि उखाड़ा ।

बेसन के तले हुए छोटे छोटे

टुकड़े ।

बू—[सं स्त्री] गन्ध, धूर्णक ।

गन्ध । दुर्गन्ध ।

बूकना—[क्रि स] मिश्रित रंग,

निम्न बोगाडा मेथुनावटेल

उर्क करना ।

महीन पीसना । केवल योग्यता

दिखाने के लिये बाते करना ।

बूचड़—(सं पुं) कटाई ।

कसाई ।

बूचा—(वि) नाउठ, काँकटो ।

कनकटा ।

बूझ—[सं स्त्री] बुझानि, बुझि,

गोथर ।

समझ । बुद्धि । पहेली ।

बूझना—(क्रि स) सोचना, बुझा,

गोथर उखर उलझना ।

पूछना । समझना । पहेली का

उत्तर निकालना ।

बूट—[सं पुं] गजानि ओलावा

गुठ, गछ-गछनि ।

चने का हरा पौधा या दाना ।

पेड़ या पौधा ।

बूटना—[क्रि अ] पलौवा ।

भागना ।

बूटा—[सं पुं] गन्ध गछ । काँपोर

आरु वेव आन्ति छिड़ित करना

छिड़कना ।

छोटा वृक्ष । कपड़ों, दीवारों

आदि पर बने हुए फूलों या वृक्षों

के आकार का चिह्न ।

बूटी—[सं स्त्री] वनस्पति, बनो-
बधि, भां, काटपावत अँका गर
गरु फूल आदि ।
बनस्पति । जड़ी । भाग । छोटा
वृक्ष ।

बूढ़ना, बूरना—(क्रि स) डूबा ।
डूबना ।

बूढ़—(वि) ब्रह्म, ब्रू ।
बुद्धा ।

बूढ़ा—[वि] ब्रू ।
बुद्धा ।

बूता—[सं पुं] गायत्री ।
सामर्थ्य ।

बूरा—[सं पुं] छेनि, छुडि ।
शक्कर । चीनी ।

बृहद्—[वि] बर डाडव ।
बहुत बड़ा ।

बैठ [ठ]—(सं स्त्री) काठव
गाल ।
बीजारों में लगी हुई काठ की
मूठ ।

बैड़ना, बैड़ना—(क्रि स) बेब
दिया, छेडा दिया ।
वृक्षों आदि की रक्षा के लिये
चारों ओर मेंड बनाकर उन्हें

घेरना चौपायों को घेर कर हाँक
ले जाना ।

बैड़ा—[वि] बैँका, बिकटे,
शेडाव ।

आड़ा । तिरछा । बिकट ।

बैंदो—[सं स्त्री] अनकाव
बिन्धव, फोँटे ।

बिंदी, दावनी नाम का गहना ।

बे—(अव्य) रहित, शून्य, गालि
बिन्धव ।

रहित, हीन । तिरस्कारपूर्ण
सम्बोधन ।

बे-अदर—[वि] उपपत्तियाँ, बे-
आदर ।

उद्दंड ।

बेआदर, बे-इज्जत—(वि)
अपमानित, अगम्यानी ।

अपमानित । अप्रतिष्ठित । जिसकी
कोई इज्जत न हो ।

बे-ईमान—[वि] अधर्मी, धर्मव
अति लक्ष्य नबन्धी लोक ।

जो ईमान या धर्म का विचार
न करे ।

बे-कदर—[वि] अगम्यान,
अपमान ।

बेइज्जत ।

बेकरार-- (वि) विकल, अछल ।
विकल ।

बेकड़-- (वि) ब्याकूल ।
व्याकुल ।

बेकली-- (सं स्त्री) भय, ब्याकूलता ।
धबराहट । व्याकुलता ।

बे-कसूर-- [वि] निवगवाशी ।
निरपराध ।

बे-काम-- [वि] अकामिला, निव-
र्धक ।
निकम्मा । निरर्थक ।

बे-कायदा-- [वि] नियमब विरुद्ध ।
कायदे या नियम के विरुद्ध ।

बेकार-- (वि) निवगवा, अकामिला,
निवर्धक ।
निकम्मा । निरर्थक । जिसके
हाथ में जीविका-निर्वाह के लिये
कोई काम धंधा न हो ।
(क्रि वि) वार्थ ।
व्यर्थ ।

बेकारी-- (सं स्त्री) निवगवा-
अवस्था ।

बह अवस्था, जिसमें जीविका-
निर्वाह के लिये मनुष्य के हाथ
में कोई काम-धंधा नहीं होता ।

बे-खटके-- (क्रि वि) निःशङ्का ।
निस्संकोच ।

बे-खबर-- [वि] मूर्ख, अज्ञान,
अचेतन ।

अनजान । बेहोश ।

बेगाना-- (वि) अलग, वितीय,
पनब ।

गैर । दूसरा । पराया ।
अनजान ।

बेगार [ी]-- (सं स्त्री) वागच वा
प्राविश्रमिक निद्रियाटेक बलपूर्वक
करोवा काम ।

बिना मजदूरी दिये जबर्दस्ती
लिया जानेवाला काम ।

बेगि-- (क्रि वि) तडाटेडयाटेक,
ताबातावि ।
जल्दी से ।

बे-गुना-- [वि] निवगवाशी ।
निरपराध ।

बेचना-- (क्रि स) बिक्री कबा,
बेचा ।

विक्रय करना ।

बेची-- (सं स्त्री) बिक्री ।
विक्रय ।

बेचैन—[वि] अनाख, व्याकुल ।
जिसे चैन न मिलता हो ।
व्याकुल ।

बेजा—(वि) अशुचि ।
अनुचित ।

बेजान—(वि) निर्धन, शूठ, मूक,
शून्य ।
निर्जीव । मृतक । मुरझाया या
कुम्हलाया हुआ । बहुत दुबल
या कमजोर ।

बे-जाल्ता—[वि] नियम विरोधी ।
जाते या नियम आदिके विरुद्ध ।

बे-जोड़—(वि) अशु, यश्चितीय ।
अखंड । अद्वितीय ।

बेटा—(सं पुं) पुत्र, लंबा ।
पुत्र । लड़का ।

बेठन—(सं पुं) किताप आदि
बेबिग्राह खोरा कापोर ।
बहु कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियाँ,
थान आदि बंधे जाते हैं ।

बे-ठिकाने—[वि] धानधित नोहावा,
अशुपयुक्त ।

जो अपनी ठीक जगह पर न हो ।
अनुपयुक्त । निरर्थक ।

बेड़—(सं पुं) गह्वर टाविओ फालव
टाप ।

वृक्ष के चारों ओर की मेंड़ ।

बेड़ा—(सं पुं) गँटाका, नाव,
आंशख अथवा विमान आदि
गमूह ।

नदी को पार करने के लिये लट्टो
आदि से बनाया हुआ ढाँचा ।
बहुत सी नावों, जहाजों या
हवाई जहाजों आदि का समूह या
दल ।

[वि] वैका, विकते ।
तिरछा । कठिन, विकट ।

बेड़ी—(सं स्त्री) कश्मीर उचित
गिरावा निकल । गुरु नाव ।
अपराधियों के पैरों में बांधी
जानेवाली जंजीर । छोटी नाव ।

बे-डौल—(वि) बेग्रा आकृति,
कूकट । भद्दी बनावट का ।

बेढंगा—(वि) बेग्रा, यात्र धवण-कनण
ठिक नश्य । अवावस्थित ।

जिसका ठंग ठीक न हो ।
बे-सिलसिले । भद्दा ।

बेढब—(वि) बेग्रा ।
बेढंगा । भद्दा ।

वेतकल्लुक—[वि] निडाऊ, निखर
मनर कथा खुनि कोरा जन ।
अकट्रिय ।

जो तकल्लुक या बनावट न करता
हो । अपने मन की बात साफ
साफ कहने वाला ।

[क्रि वि] निःसंकोच ।
निःसंकोच ।

वे-तर्मीज—[वि] वदमाच, वेईमान ।
बेहदा ।

वे-तरह—[क्रि वि] बेया भावे,
अगाधारण कपे ।
बुरी तरह से । असाधारण
रूप से ।
[वि] खुब बेहि ।
बहुत अधिक ।

वे-तहाशा—[क्रि वि] रब बेगाई,
बबभय खाई, नडवा निठिछाटेक ।
बहुत तेजी से । बहुत घबरा
कर और बिना सोचे समझे ।

वेताब—(वि) दुर्खल, व्याकुल ।
अशक्त । व्याकुल ।

वेताल—(सं पुं) अइबा, ह्रदबी,
भाट । श्रेष्ठ विनेय ।
द्वारपाल । एक प्रकार की भूत
योनि । भाट ।

[वि] गङ्गावर तालर अति
लक्ष्य नबथा । ताल काटि
योरा कार्य ।

(गाना बजाना) जिसमें ताल का
ठीक और पूरा ध्यान न रहे ।

वेतुका—(वि) य'त कोनो गामङ्गय
अथवा गिल नाई । अबिल,
बाप नोखोरा ।

जिसमें कोई तुक या सामंजस्य
न हो । बेहंगा ।

बेदम—(वि) इत प्राय, अर्द्धर ।
मृत प्राय । जर्जर ।

बेदर्द—(वि) कठोर मनर, काठ-
छितीया ।
कठोर हृदय ।

बेदाग—[वि] अविचार, निरपराध ।
साफ । निरपराध ।

बेधक—(क्रि वि) निःसंकोचे,
निर्झर भावे ।

निस्संकोच । निडर होकर ।

[वि] निर्वन्द, निर्दोष, विबोध-
हीन ।

निर्वन्द । निडर ।

बेचना—(क्रि स) कूटा कबा, बिहा ।
छेदना ।

बेनी—(सं स्त्री) बेनी, चेना
गौठा ठूलि ।

स्त्रियों की चोटी ।

बे-परद—[वि] अनावृत, नाङ्ग ।
अनावृत । नंगा ।

बे-परदा(इ)—[वि] निश्छिन्न, उनाव,
काटका केबेप नकरा ।
वे-फिर । परम उदार ।

बे-पेंदी—[वि] तलिनथका ।
जिसमें कोई पेदा या तला न हो ।

बे-फिर—[वि] निश्छिन्न ।
निश्चिन्त ।

बेबस—[वि] उपायहीन, पराधीन
लाचार । पराधीन ।

बेबाक—[वि] परिमोक्ष कर्ता, सुखा ।
मुकाया हुआ । (ऋण, देन आदि)

बे-मुरठवत—[वि] निरपेक्ष, पक्ष-
पात हीन ।

जो पक्षपात न करे ।

बेर—(सं पुं) बगरी ।

एक फल ।

[सं स्त्री] बाब, (एबाब, दुबाब)
पल्लव ।

बार । दफा । विलम्ब ।

बे-रहम—[वि] निर्दय, निर्दुर्ब ।
दया शून्य । निष्ठुर ।

बे-रुख—(वि) उदासीन, अगच्छुष्ट ।
उदासीन । अप्रसन्न ।

बेल—[सं पुं] बेल, श्रृङ्गल बेलि
कुल, कोब ।

श्री फल । बेले का फल । एक
प्रकार की कुदाली ।

[सं स्त्री] लता, गन्धान, वंश,
डाव ।

लता । संतान, वंश । नाव खेने
का डाँड ।

बेलचा — (सं पुं) बेलचा वा
कोटोना ।

कुदाल ।

बेलज्जत—(वि) श्यामहीन । गोब्राद-
नोशोरा । जिसमें कोई लज्जत
या स्वाद न हो ।

बेलना— (सं पुं) बेलना, कट्टी
यादि बेल गच्छुलि ।

बहु उपकरण जिससे रोटी, पूरी
आदि बेली जाता है ।

[क्रि स] कट्टी आदि बेलना
कार्य, नष्ट कर्ता ।

रोटी, पूरी आदि बनाने के लिये
बेलने से आटे की पेड़ी को बड़ा
और पतला करना । चौपट या
नष्ट करना ।

बेसनी—(सं स्त्री) नेण्ठनी ।

कपास ओटने की चरखी ।

बेला—[सं पुं] बेलि फूल ,

बेदहना, बाटि, भियला ।

सुगंधित फूलों वाला एक पौधा

या उसका फूल । एक प्रकार

का बाजा । प्याला ।

(सं स्त्री) ढो, गमूखर तीबर

झुमि ।

तरंग । समुद्र का किनारा ।

(समय) गमय, बेल ।

समय ! वक्त ।

बेलाग—[वि] निवाश, अटकाव

पृथक्, अकण्ठ वादशाव ।

बिना आधार का । बिलकुल

अलग । व्यवहार में सच्चा

और साफ ।

बेलि—(सं स्त्री) नडा ।

लता ।

बेलास—(वि) निरपेक्ष, आचल,

उद्ध ।

पक्षपात न करने वाला । सच्चा ।

बेबकूफ—(वि) मूर्ख, अबुद्ध ।

मूर्ख । नासमर्थ ।

बेबकस—(क्रि वि) अगम्यत,

कूगम्यत । कुसमय में ।

बेबा—(सं स्त्री) विधवा । बीबी ।

विधवा ।

बेबाई—[सं स्त्री] फट्टा फटा

बेशाब ।

पैर फटने की बीमारी ।

बेशऊर—(वि) यि काम कबाव

आँठ शबिब नोवावे अथवा

शबब-कबब झुबुछे ।

जिसे कोई काम करने का शऊर

न हो या हंग न आता हो ।

बेशक—[क्रि वि] निःशकेश,

अदण्ड ।

निस्संदेह । अवश्य ।

बेशरम—[वि] निलाज ।

निलंज ।

बेशुमार—(वि) अगन्था ।

असंख्य ।

बेसन—(सं पुं) दूधेब गुड़ा ।

बने का चूर्ण या आटा ।

बेसबरी—[सं स्त्री] अशीबता ।

अवीरता ।

बेसमझ—(वि) मूर्ख ।

मूर्ख ।

बेसाहना—[क्रि स] किना, छानि

कुनि विपन्न छोड़ि नोवा ।

खरीदना । (वैर, विरोध, संकट आदि) जानबूझ कर अपने सिर लेना ।

बे-ध—[वि] अछान, अचेतन बेलछ ।

जिसे सुध या होश न हो ।

बेहतर—(वि) याब लगत बिछनि नाथाटे इमान भान ।
किसी की अपेक्षा अच्छा ।

बेहद—(बि) खुब बेछि, असीम ।
असीम । बहुत अधिक ।

बेहयाई—[सं स्त्री] निलज्जता ।
निलज्जता ।

बेहरा—[वि] बेमेल, पृथक ।
अलग । जुदा ।

(सं पुं) बेदेव, लड्डा ।
बड़े आदमियों का निजी चपरासी या आदमी ।

बेहरी—(सं स्त्री) चान्ना ।
चन्दा ।

बेहाल—(वि) याब अरुझा भान नश्य, ब्याकुल ।
जिसकी दशा अच्छी न हो ।
व्याकुल ।

बेहूदा—(वि) अनिष्ट ।
अशिष्ट ।

बेहोश—(वि) अचेतन, मूर्छित ।
मूर्छित । बेसुध ।

बैंगन—[सं पुं] बेड्डेना ।
मंठा ।

बैठक—(सं स्त्री) बैठक, अक्षि-
• बेशन, छातान, वाटिच'वा ।

बैठने का स्थान या आसन ।
चीपाल । सभा समितियों का अधिवेशन ।

बैठना—(क्रि अ) बस । बाबे बाबे बेया होवा, डानवि योवा,
कोना वखव मुठ खच । ठिक लक्यात लगी ।

आसन जमाना । स्थित या आसीन होना । (कोई चीज) पचक जाना । (कारबार) विगड़ना । लागन आना । लक्ष्य या निशाने पर बैठना (क्रि स—
बैठाना)

बैठारना [लाना]—(क्रि स) वलुडवा ।
बैठाना ।

बैताल—(सं पुं) श्वेत-योनित-
विशेष ।

एक कल्पित भूत योनि ।

बैद—[सं पुं] वैद्य, आयुर्वेदिक
चिकित्सक ।

वैद्य । आयुर्वेदिक चिकित्सक ।

बैन—(सं पुं) कथा ।

वचन ।

बैनामा—(सं पुं) भाँटि बाँटो बिक्री
करा मिलल ।

जमीन, मकान आदि का बिक्रय-
पत्र ।

बैरंग—(वि) टिकट नलगाई डारकत
दिया छिटि, बेयाबिः, विफल ।
बिना टिकट लगाये मेजी हुई
चिट्टी । विफल ।

बैर—(सं पुं) शत्रुता ।
शत्रुता । बैमनस्य ।

बैरक, बैरख—सेनानिवाज, शांतिनि ।
सैनिक-अड्डा ।

बैरागी—[सं पुं] वैरागी ।
एक प्रकार के वैष्णव-साधु ।

बैरी—[वि] शत्रु ।
शत्रु ।

बैल—(सं पुं) बलश । मुख ।
बधिया किया हुआ गौ जाति का
नर । मुख ।

बैसना—(क्रि अ) बस ।
बैठना ।

बैसवारा—[वि] युवक ।
जवान । युवक ।

बैसाखी—[सं स्त्री] बोखार
माथुँटि ।

लँगड़े की लाठी । लाठी ।

बोभाई—[सं स्त्री] शत्रु गिटाँव
वानछ, अथवा कार्य ।
बीज बोने की मजदूरी, काम या
भाव ।

बोझ, बोझा—[सं पुं] बोझा,
गंधुब भार, कोनो कामब-
दायिष्ठ ।

भार । भारीपन । किसी काम
का उत्तरदायित्व ।

बोझना—[क्रि स] बोझा जापि
दिया ।
बोझ लादना ।

बोझल, बोझिल—(वि) बेछि
बोझा थका, गंधुब ।

भारी बोझ बाला । बजनी ।

बोटी—[सं स्त्री] मांसब गरु
कटा टुकड़ा ।
मांसका छोटा कटा हुआ टुकड़ा ।

बोतल—(सं स्त्री) बटल ।
लम्बी गरदनवाली कांच का एक
प्रसिद्ध पात्र ।

बोहा—[वि] गृथ, श्रृंखल, निग-
कतीश।

मूर्ख। मुस्त। कमजोर।

बोध—(सं पुं) ज्ञान, गायना,
धैर्य।

ज्ञान। सात्वना। धैर्य।

बोधन—(सं पुं) ज्ञान दिया,
बुद्ध दिया कार्य, जगोदा कार्य,
श्रृंगार प्रथम दिना श्रृंगार
जागवण कबा कार्य, उद्योगन।
बोध या ज्ञान करना। जगाना।

बोधिदत्त—(सं पुं) बोधि गव,
महाज्ञा बुद्ध नाम विशेष।
महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का
सूचक नाम।

बोना, बोवना—(वि) छुट्टि, गिँटा,
कोटोना कथा व सृष्टिपाठ कबा।
खेत में बीज छिड़कना या बिदे-
रना। किसी बात का सूत्रपान
करना।

बोरना—(क्रि स) कलङ्कित अथवा
बदनाम दि नष्टे वा वेग कबा,
पानीत डूनावा।
कलङ्कित या बदनाम करके नष्ट
करना। पानी में डुबाना।

बोरसी—[सं स्त्री] झुरैना।
अगीठी।

बोरा—[सं पुं] बस्ता, मरापाठ
डाडर मोना।

टाट का बड़ा थैला।

बोरी—(सं स्त्री) गर बस्ता।
छोटा बोरा।

बोल—(सं पुं) नचन, यादरूप लग्न
कथा, वाग्गवाण।
वचन। उक्ति। आक्षेप पूर्ण बात,
ताना या व्यंग।

बोलचाळ, बोलाचाली—[सं स्त्री]
कथा वतवा।
वातचीत।

बोली—[सं स्त्री] कथा कोदाव
गच्छि।
बोलने की शक्ति।

बोलना—[क्रि अ] कथा कोदा।
बात कहना।

[क्रि स] कोदा, कथा दिया,
ठांठा नकवा कबा।
कहना। बात पक्का करना।
छेड़-छाड़ करना।

बोल-पट—(सं पुं) चित्रना।
चित्रपट। सिनेमा।

बोली—(सं स्त्री) बोली, अर्थबुद्ध
नक, गीलायव गमयत नाम कबा
ध्वनि। उपभाषा। वाग्ग मलक

अडिवाग ।

बाणी । सार्थक शब्द या बात ।
नीलाम के समय चिल्ला कर चीज
का दाम लगाना । किसी स्थान
के लोगों की बातचीत की भाषा ।
ताना ।

बोहनी—(सं स्त्री) बघनि, पोष
अथवा होरा नग्न बिक्री (पूरा
वा गन्ना जमना ।)

किसी चीज या दिन की पहली
बिक्री या उससे प्राप्त होनेवाला
धन ।

बोहित—(सं पुं) डाँडव नाव ।
बड़ी नाव ।

बौरना—[क्रि स] गता, गछ आदि
कूल धवा ।
लता, पीछे आदि का फूलना ।

बौखलाना—[क्रि अ] खंडव कोवत
येई लेई बा आबोल ताबोल
बका ।
क्रोध में आकर अंड-बंड बातें
कहना ।

बौछार—[सं स्त्री] बबसुणव छाँटि,
कोनो वस्तु खूब बेछि आहिणवा,
एकेबाहे है थका व्यंगपूर्ण
अथवा कट्टू आलोचना आदि ।

हवा के झोंके से आनेवाली वर्षा
की झड़ी । किसी वस्तु का बहुत
अधिक संख्या में आकर गिरना
या पड़ना । लगातार कही जाने-
वाली व्यंगपूर्ण या कटु आलोचना
की बातें ।

बौना—[सं पुं] बाँटना ।
बहुत ठिगने या नाटे कद का
मनुष्य ।

बौर—(सं पुं) आमर मल ।
आम की मंजरी ।
[वि] पागल ।

बौरा । पागल ।

बौरना—[क्रि अ] आमर मलउवा ।
आमकी मंजरी निकलना ।

बौरा—[वि] पागल, उन्माद ।
पागल । विक्षिप्त ।

बौराना—[क्रि अ] पागल होवा,
पागलन पदे काम कबा अथवा
कथा कोवा ।
पागल हो जाना । पागलों की
तरह काम या बातें करना ।

ब्याज—(सं पुं) सूत ।
सूत ।

ब्याजू—(वि) सूतन बाँधे दिया
धन ।

व्याज या सूद पर दिया जाने-
वाला धन ।

व्याघ्रा—(सं पुं) ठिकारी, छाड़े
ठिकारी ।

शिकारी । चिड़ीमार ।

व्याना—(क्रि स) बियन, अंगर
करा (पञ्चर) ।

जनना । प्रसव करना (पशुओं
के लिये)

व्याख्य—[सं पुं] अलपान ।

संख्या समय या रात के पहले
पहर किया जानेवाला भोजन ।

व्याह—(सं पुं) बिया ।
विवाह ।

व्याहता—(वि) यात्र गेटे विग्रा
हैछे, विग्रा कराई अना भिवाता ।
जिसके साथ विवाह हुआ हो ।

व्योढ़ा—(सं पुं) श्वाव विग्रा
गलवा, श्वाव पात्र ।
दरवाजा बन्द करने का अरगल ।

व्योत्त—(सं स्त्री) आग्र आरु
श्वरचर शिछाप ठिकटेक बन्धी,
काम गम्पूर्ण कराव बुद्धि अथवा
बावस्था, उपाय, निष्ठा कापोर
जिवटेल करा कटा-छिडा ।

आमदनी खर्च का हिसाब ठीक
रखना । काम पूरा करने की
युक्ति, उपाय या व्यवस्था ।
तरीका । पहनने के कपड़े बनाने
के लिये कपड़े की काट-छांट ।

व्योतना—(क्रि स) छुथि-नाथि
कापोर कटा ।

पहनने का कपड़ा बनाने के लिये
कपड़ा नाप कर उसे काटना-
छांटना ।

व्योरा—(सं पुं) विवरण, ब्रडाखु,
पार्थक्य ।

विषय की हरेक बात का सवि-
स्तार उल्लेख या कथन । विव-
रण । वृत्तांत । फरक ।

व्योरेवार—[क्रि वि] बहल भावे,
बहलाये ।
विस्तार के साथ ।

व्योहर—[सं पुं] टका धावे
मिग्रा काम अथवा बावगाव ।
रूपये उधार देने का काम या
व्यापार ।

व्योहारना—(क्रि स) बावगाव
करा वा आचरण करा ।
व्यवहार या आचरण करना ।

महापद—(सं पुं) बूझि ।

मुक्ति ।

ब्राह्म—(वि) ब्रह्मा गश्कोय ।

ब्रह्म सम्बन्धी ।

ब्राह्म मुहूर्त—(सं पुं) ब्रह्मा

मुहूर्त, दोक दोकालि ।

सूर्योदय से दो घड़ी पहले का समय । प्रभात ।

ब्रीडा—[सं स्त्री] नाच ।

लज्जा ।

ब्यौना—(क्रि स) बीज गिँठा ।

बोना (बीज आदि) ।

भ

भ—वर्णमालाव चक्षिण गश्कार आश्व ।

वर्णमाला का चौदासवाँ वर्ण ।

भंग—(सं पुं) डडा, थड़ित होवा क्रिया अथवा क्षय, विनाश ।

टूटने, खंडित होने या निर्धारित होने की क्रिया या भाव । ध्वंस, विनाश । टेढ़ापन ।

भंगड़, भंगेड़ी—(वि) डाडूबी ।

बहुत या नित्य भांग पीनेवाला ।

भंगना—(क्रि अ) डडा-छिडा,

छेद पडा, डावि पोडा ।

टटना । दबना ।

(क्रि स) डडा, छिडा, डबाई दिया ।

तोड़ना । दबाना ।

भंगार—(सं पुं) दबसूखे पानी छाया होवा गाँव ।

बड़ा गड्ढा जिसमें बरसात का पानी इकट्ठा होता है ।

भगी—डाढाडा, नटे कर्बोडा ।

भंग करनेवाला । नष्ट करने वाला ।

[सं पुं] शबिजन, मेडब, डाडूबी ।

मेहतरों की जाति । भंगेड़ी ।

(सं स्त्री—भंगिन)

(सं स्त्री) नावीगकलव अत्री-
डङ्गो ।

स्त्रियों की चेष्टाएँ । हाव-भाव ।

भंगुर—(वि) डङ्गुर, नाशवान,
टूटका, रेंका ।

नाशवान । जल्दी टूट जानेवाला ।
टेढ़ा ।

भँजक—(वि) डङ्गा-छिङ्गा करबोता-
जन ।

भंग करने या तोड़नेवाला ।

भँजन—[सं पुं] डङ्गा, छिङ्गा, नाश ।
भंग करना । तोड़ना । नाश ।

(वि) डङ्गा, नष्ट करबोताजन ।
तोड़ने, बिगाड़ने या नष्ट करने-
वाला ।

भँजना—(क्रि अ) शङ्खित होना,
डङ्गा, (टेका पड़ेना) डङ्गोना,
खूटना कबा, गंदा, मुद्गंभ आदि
खूबोना, कागजब भाख दिया ।

टुकड़े होना । (सिक्का आदि)
भुनना । भँजा जाना । कागज
के ताबों का कई परतों में मोड़ा
जाना । (क्रि स-भँजना, भँजाना)

भंटा—(सं पुं) वेड्डेना ।
बेंगन ।

भंड—(सं पुं) विद्रवक, बह्म,
गाटिब डाडब शैडि ।

भाड़ ।

(वि) डङ्ग, वेग्रा, अन्नोल कथा
कडुता, धूर्ड, पावड ।

भद्दी, गन्दी या अश्लील बातें
करनेवाला । घूर्त । पाखण्डी ।

भंडना—[क्रि स] कृति कना, नष्ट
कना, डङ्गा-छिङ्गा कना ।
हानि पहुँचाना । बिगाड़ना ।
तोड़ना-फोड़ना ।

(क्रि अ) चाबिउपिने बढनाय
कवि कृना ।

चारों ओर बदनामी करते
फिरना ।

भंडा—(सं पुं) एविष डाडब बाचन,
गोपन बहग्य ।

एक प्रकार का बड़ा बरतन ।
भेद, रहस्य ।

भंडा फूटना—बहग्य अकान
होना, [नेकुरी जोलोडाव
पना ओलोवा] ।

रहस्य प्रकट होना ।

भंडार—(सं पुं) डाडाव, डंडान,
धापा बख बथा ठाई, पेट ।
कोष, खजाना । खाने पीने की

बीजें रखने का स्थान । कोठार ।
उदर ।

भंडारा—[सं पुं] भाण्डार, गमूहा,
गुह्य-गहलुक दिया । (भाण्ड-भाण्ड ।
भंडार । समूह । साधु-सन्तों का
भोज ।

भंडारी—(सं पुं) डंबाली, बाकनी,
कोवाधायक ।
कोषाध्यक्ष । रसोइया ।

भंडौली—[सं स्त्री] बलुवालि ।
भण्डों का काम या पेशा ।

भंडौआ—(सं पुं) शांकरगव
शांकावरण कविता ।
हास्यपूर्ण निम्न कोटि की
कविता ।

भंडर—(सं पुं) बरब, टाकनेग्रा,
गौत ।
भौरा । नदी के बहाव का स्थान-
जहाँ पानी चक्कर की तरह घूमता
है । गड्ढा ।

भंडर-जाल—(सं पुं) गांगारिक
गंगा जाल, काजिया-पेछा ।
सांसारिक भगड़े-बलेड़े । भ्रम-
जाल ।

भंडरा—(सं पुं) डोमोवा, बरब ।
भौरा । भ्रमर ।

भंडरी—(सं स्त्री) टाकनेग्रा,
बरबी ।

पानीका चक्कर । भंडर । भौरा ।

भंडाना—(क्रि स) धूबाई कुबोरा,
कंकित वा बिछा जालत
पेलोरा ।

धुमाना । धोखे में डालना ।

भइया,—(सं पुं) भाई, गम-
नोयाव प्रति कबा गवोधन ।
भाई । भाई या बराबरवालों के
लिये सम्बोधन ।

भक भकाना—(क्रि अ) जलोते
डकुडकाई नक्ष कबा ।
भक भक शब्द करके जलना ।

भकाऊँ—[सं पुं] डग्न लगा वड्ड ।
लंबा-छोटातीक डव देबूरावर
कलना कबा कांनखोराव नरे
खीव बिणेश ।
होआ ।

भकुआ—[वि] भूख ।
भूख ।

भकुआना—[क्रि अ] आचवित
होवा ।
भीचका होना ।
(क्रि स) भूख कबा ।
भूख बनाना ।

भक्तिसना—(क्रि स) ततातेयाके
अथवा वेशा भावे बोधा ।

जल्दी जल्दी या भद्वेपनसे खाना ।

भक्त बरसल—(वि) डल्लुवंगल,
डल्लुगकलर प्रति कृपा करवाता
छन, जेव ।

भक्तोंपर कृपा रखनेवाला ।

भक्षक, भक्षी—[वि] डकक, निखर
द्वार्धर बावे आनर गर्वनाश
करवाता ।

खानेवाला । अपने स्वार्थके लिये
किसी का सर्वनाश करनेवाला ।

भक्षण, भवना—[सं पुं] बोधा ।
खाना ।

भग—[सं पुं] श्रृया, धन सम्पत्ति,
लौडागी ।

सूर्य । धन सम्पत्ति । सौभाग्य ।
(सं स्त्री) श्रौव योनि, जनने-
ल्लिय ।

स्त्री की योनि या जननेन्द्रिय ।

भगवत—(वि) डल्ल, माछ, मांस
लोढोवा छन, निबामिवाडोगी ।
भक्त । वह जो मांसादि न
खाता हो ।

भगाति, भगती—(सं स्त्री) डल्लि ।
भक्ति ।

भगद्व—[सं स्त्री] बहूत मांश
एकेनग्रे इपिने गिपिने
लोबा-लोवि कबा ।

बहुत से लोगों का एक साथ
इधर उधर या किसी एक ओर
को भागना ।

भगना—(क्रि अ) पलोवा ।
भागना । (क्रिम-भगाना, भजाना)
(सं पुं) भागिन ।

भानजा । वतन का बेटा ।

भगिनी—(सं स्त्री) लगी ।
बहन ।

भगोडा, भग्गू, भगौहाँ—(सं पुं)
पलबीया, कांपूकष ।
भागनेवाला । कायर ।

भगवना—[क्रि अ] (याचवित
है) डक होवा, इठाते लेडू-
बिग्राई योवा अथवा नेकेछाई
बोख कटा ।

आश्चर्य से स्तब्ध होकर रह
जाना । अचानक लंगड़ाते हुए
चलना ।

भक्कना—(क्रि स) बोधा ।
खाना ।

भजना—[क्रि अ] प्रार्थना कबा,
बोथ कबा, धारण कबा वा

लोढा. पोढा ।

भजन करना । भोगना ! धारण
या बहन करना । प्राप्त होना ।

भजनी[क]—[सं पुं] गायक,
भजन गायक ।

भजन गानेवाला । गायक ।

भट—(सं पुं) बूँझक, गैरिक,
पालोद्धान ।

योद्धा । सैनिक । पहलवान ।

भटकना—(क्रि अ) बाट पार्श्व
इतिनि गिपिने घुबि कुबा, बाट
पार्श्व, आश्रित पना ।

इधर उधर भूलकर घूमते फिरना।
भ्रममें पड़ना । (क्रि स—भटकाना)

भट्टारक—(सं पुं) शनि, पण्डित,
सूर्य, बज्रा, देवता ।

ऋषि । पण्डित । सूर्य । राजा ।
देवता ।

(वि) माननीय ।
माननीय ।

भट्टा—(सं पुं) डांडर चोका,
ईटा आदि तैयार करिवर
निनिष्ठे गङ्गा अग्रिकुण्ड वा भाटा ।
बड़ी मट्टी । ईंट आदि पकाने
का पत्रावा ।

भट्टी—(सं स्त्री) ईटा आदिरे
गङ्गा डांडर चोका, देशीय मदक
दोकान ।

ईंटों आदि का बड़ा चुल्हा ।
देशी शराब की दुकान ।

भठियारा—[सं पुं] बडला अथवा
छबाई धरत थका आलसी सकलर
धका-मेला, थोवा-लोढा-र दिहा
करौता ।

सराय की देखरेख और उसमें
ठहरनेवालों के भोजन का प्रबंध
करनेवाला ।

भङ्गद्वार, भङ्गकीला—[वि]

ठाट् बाटरे थका, खँकखमकेवे
थका ।

तड़क-भड़क या चमक-दमक
वाला ।

भङ्गना—(क्रि अ) जोरबरे वा
वेगोई जलि उठ्ठा, हठाते
छकित होवा ।

तेजी से जल उठना । अचानक
चौकना । (क्रि स—भङ्गना)

भङ्गमङ्गाना—(क्रि स) डोढ
डोढोवा ।

भङ्ग भङ्ग शब्द उत्पन्न करना ।

भट्टभट्टिया—(वि) बड़ाई बड़ाई
अनर्थक कथा कोरा, उफाईदा
माबि कथा कोरा ।

बहुत बढ़ चढ़कर व्यर्थ बातें
करनेवाला ।

भट्टभूँजा—[सं पुं] हिन्दू जाति
विशेष । भुजा वा पोरा वस्त्र
वेश्यानि बिछौ करी बारगायी
जाति ।

भाड़में अन्न भूने का काम करने
वाली एक जाति ।

भट्टसाई—[सं स्त्री] ठोका
विशेष ।
भाड़ ।

भट्टास—[सं स्त्री] मनते गुजबि
गुजबि थका भाव ।
मनमें छिपा हुआ असन्तोष या
क्रोध की अवस्था ।

भट्टाभा—(सं पुं) वेश्याव दानाल ।
वेश्याओं का दलाल ।

भट्टर—(सं पुं) गणक जाति ।
सामुद्रिक आदि के द्वारा भविष्य
बतानेवाला ब्राह्मण ।

भणित—(वि) कोरा, कथित ।
कहा हुआ । कथित ।

भणिति—(सं स्त्री) ककबा,
बोखना ।

लोकोक्ति । कहावत ।

भतार, भरतार, भर्तार—(सं पुं)
डतार, श्वारी ।

पति ।

भतीजा—[सं पुं] भतिजा ।
भाई का लड़का ।

भत्ता—(सं पुं) बानठ (कर्मठा-
बोय्ये पोरा अतिबिद्ध मछुबि
वा थबठ ।

किसी कर्मचारीको मिलनेवाला
अतिरिक्त व्यय ।

भदंत—(वि) पूजनीय, माननीय ।
पूज्य । मान्य ।

भदई—[सं स्त्री] भदौया, भाद
मासत होरा फल ।
भादों में तैयार होनेवाली फसल ।

भदा—(वि) कुरूप, अनील ।
कुरूप । अश्लील ।

भद्रा—(सं स्त्री) गरु, दुर्गा,
पृथ्वी, एति निश्चिन्ना योग, वाशा-
चिनि ।

गाय । दुर्गा । पृथ्वी । ज्योतिष के
अनुसार एक अष्टम योग ।

भनक—(सं स्त्री) उबा बातवि,
गक गक ।

उड़ती हुई खबर । घीमा शब्द ।

भनकना, भनना—(क्रि स) कोरा ।
कहना ।

भभकना—(क्रि अ) उतला, बबटैक
जलि उठा, खंडत जलि-
पकि उठा ।

उबलना । जोर से जलना ।

भड़कना (आगका) ।

भभकी—(सं स्त्री) गिछा धमक ।
झूठी धमकी ।

भभरना—(क्रि अ) डीत होरा,
भय खोरा, गिछा पाकत पवा,
एकेबावे पवि योरा ।

भयभीत होना । घबरा जाना ।

भ्रममें पड़ना । एकदमसे गिर
पड़ना ।

भभूत—(सं स्त्री) भय भूलि ।
वह भस्म जिसे शैव मस्तक और
भुजाओं पर लगाते हैं ।

भयभीत, भयातुर—(वि) भयातुर,
डीत होरा ।

डरा हुआ ।

भयावन[1]—[वि] डर लगा,
भयावह ।

डरावना ।

भयो—[सं स्त्री] डरि बोरानी ।
छोटे भाई की स्त्री ।

(क्रि अ) ह'ल ।

'हुआ' का एक रूप ।

भर—[वि] सम्पूर्ण, मूठत, पुनरुद्देश
धका ।

कुल । पूरा । भरा हुआ या
पूरा ।

(क्रि वि) बलबे ।

बलसे ।

[सं पुं] बोझा, हिन्दू जाति
विशेष ।

बोझ । हिन्दुओं की एक जाति ।

भरकना—[क्रि अ] जलि उठा,
वाक्कि थोरा लाक आदि
काटि गिहँवति ऐ योरा ।

भड़कना । बँधे हुए लड्डू आदि
का फूटकर बिखर जाना ।

भरतखंड—(सं पुं) भारतवर्ष ।
भारत वर्ष ।

भरना—(क्रि स) पूर्णकवा, टालि
दिना, बाव पविशोध कवा ।
गह कवा ।

पूर्ण करना । उँड़ेलना । ऋण
चुकाना । निर्वाह करना ।
सहना ।

(क्रि अ) पूव होवा, ढला,
बाव आदि परिशोध होवा ।
हूँटे-पूँटे होवा !

पूर्ण होना । उँड़ेला जाना ।
ऋण या देन चुकाया जाना ।
शरीर का हूँट-पूँट होना ।
(क्रि स-भराना)

भरनी—(सं स्त्री) बाणि, अथावत
पानी जिँटा ।

करखे की ढरकी । खेत में पानी
भरने की क्रिया या भाव ।

भरपाई—[सं स्त्री] पावलगीया
श्रुबटेक पोवा, पावलगीया पाई
लिखि दिग्रा बटिप ।

पूरा पूरा पावना, पा जाना ।
पावना पाकर लिखी जानेवाली
रसीद ।

भरपूर—(वि) भवश्रुव ।

पूरी तरह से भरा हुआ । जिसमें
कोई कमी न हो ।

(क्रि वि) गम्पूर्ण भावे ।

पूरी तरह से ।

भरभराना—(क्रि अ) बोवाकित
होवा, शरीर नोय डाल डाल
होवा, डाय बोवा ।

शरीर के रोएँ लड़े होना ।
घबराना । अचानक नीचे आ
गिरना ।

भरमना—[क्रि अ] पकवाई पोवा,
वाँटे डूल करि घूनि कुवा, मिछा
कथा डुनि काबोबाव शतत
ठैग थाई घूनि कुवा ।

भ्रममें पड़कर इधर उधर घूमना ।
मारा मारा फिरना । भटकना ।
किसी के धोखे में आना ।

[क्रि स-भरमाना]

(सं स्त्री) डून, कँक ।

भूल । भ्रम । धोखा ।

भरमार—(सं स्त्री) श्रुवता ।
प्रचुरता ।

भर-सक—[क्रि वि] यथा गजव,
यथाशक्ति ।

जहाँ तक हो सके । यथा शक्ति ।

भरसाई—[सं स्त्री] ढोका विणेश ।
माड़ ।

भराई—(सं स्त्री) डोवावा वा
श्रुवावा कान वा डाय बावे
दिग्रा मछुवि ।

भरने की क्रिया, भाव या मजदूरी

भरो—(सं स्त्री) डबि, एडोलाव
डाव वा डजन ।
तोले की तौल ।

भरैया—[वि] डबौडा, पानक,
पाननकडा ।
भरनेवाला । पालक ।

भरोसा—(सं पुं) डावगा, आभा,
आश्रय, दृढ़ विद्याग ।
आशा । सहारा । दृढ़ विश्वास ।

भर्त्ता—[सं पुं] डबण-पोषण
करवाठा, अधिपति, स्वामी,
पति ।

भरण पोषण करनेवाला । अधि-
पति । स्वामी । पति ।

भर्त्सना—(सं स्त्री) गालि-गालाव,
डर्त्सना ।
फटकार ।

भराना—(क्रि अ) डोव डोवोवा ।
भरं भरं शब्द होना । भर
भराना ।

भलमनसत [सी]—(सं स्त्री)
गञ्जनडा, गोजन्या ।
सज्जनता । सौजन्य ।

भला—(वि) डेखन, डान, डेई ।
उत्तम, बढ़िया ।

(सं पुं) गञ्जन, गान ।
कुशल । लाभ ।
(अव्य) डान, कृणन ।
गच्छा । खैर ।

भलाई—(सं स्त्री) गञ्जगण, डेप-
काव, गञ्जन ।
भलापन । उपकार । लाभ ।

भल्ले—(क्रि वि) डानपदे ।
भली मांति ।
(अव्य) खबटेक ।
खूब । बाह ।

भव—(सं पुं) डेपति, निद,
वेप, गंगाव, कामदेव ।
उत्पत्ति । शिव । बादल ।
संसारो कामदेव ।
(वि) गञ्जन, गञ्ज ।
शुभ । उत्पन्न ।

भव-जाल—(सं पुं) गांशाविक
गञ्जाल, गोजाजाल ।
संसार का माया जाल । भ्रंशट ।

भवन—[सं पुं] खब, गहन, गठो-
लिका, गगण, गंगाव ।
मकान । महल । इमारत ।
आश्रम या आषार का स्थान ।
गगत, संसार ।

भव-भय—(सं पुं) बाटे बाटे
ज्जाले भवण ववण करा छय,
गंगाबछ्कब बाटे छय ।
बार बार जन्म लेने और मरने
का भय ।

भवसागर—[सं पुं] गंगा
कनौ गांगब ।
संसार रूपी सागर ।

भवानी—(सं स्त्री) पार्वती, दुर्गा ।
पार्वती । दुर्गा ।

भवितव्य—[सं पुं] श्वनगाया,
यवगाछावी ।
होनहार । भावी ।

भवितव्यता—[सं स्त्री] गि श्व-
नगाया आछ, भागा ।
भवितव्य ।

भविष्यद् वक्ता, भविष्यवक्ता—
[सं पुं] गर्वज्ञान, ज्ञोतिवी ।
भविष्य में होनेवाली बात बताने
वाला । ज्योतिषी ।

भवेश—[सं पुं] महादेव ।
महादेव ।

भय—(वि) डरा, डेपयुक्त,
सुलभ, बृहत्, डाडब-दीबल, वव
भक्त, भयनभय, गता ।

देखने में विशाल और सुन्दर ।
शुभ, मंगल कारक । सत्य ।

भसना—[क्रि अ] गँठोवा ।
ढँहि थका । पानी पर तैरना ।

भसाना—[क्रि स] पानीत भशै
दिया, पानीत पेनाई दिया ।
किसी चीज को पानी में तैरने के
लिये छोड़ना । पानी में डुबाना
या डालना ।

भसीड—(मं स्त्री) पङ्गब नली ।
कमल-नाल ।

भसुंड—(सं पुं) हाथी, हाथीब
डुँव ।

हाथी । हाथी की मूँड ।
(वि) भक्त-आवत ।
मोटा-ताजा ।

भसुर—[सं पुं] भाई शहब, गिबि-
येकब ककायेक ।
पति का बड़ा भाई ।

भस्म—(सं पु) छय, छई ।

राख । वैद्यक मे औषधिकी तरह
काममे लानेके लिये घातुओ आदि
का वह रूप जो उन्हे विशिष्ट
क्रियाओ से फूँकने से प्राप्त होता
है ।

[वि] भूवि छाई होवा ।
जो जलकर राख हो गया है ।

अस्मसात्,—[वि] भूवि छाई
होवा । उन्नीछूत ।
जो जलकर राख हो गया हो ।

भहराना—(क्रि अ) हठाते तलत
पवा, भाडि पवा ।

अचानक नीचे आ गिरना । टूट
फड़ना ।

भांग—[सं स्त्री] भांडव गंछ,
भां ।

एक पोधा जिसकी पत्तियाँ लोग
नशे के लिये पीसकर पीते हैं ।

भौजना—[क्रि स] तबण कवा, खपा,
मुदगव भूवावा ।

तह करना । मोड़ना । मुगदर
आदि घुमाना ।

भौजा, भानजा—(सं पुं)
भागिन ।

भागिनिय । (सं स्त्री—भांजी,
भानजी) ।

भौड़—(सं पुं) विदूषक, बह्वा,
नटे, बाछन, बह्मोद्घाटन ।

विदूषक । विनाश । बरतन ।

रहस्योद्घाटन । उपद्रव ।

भौड़ा, भांड—(सं पुं) बाछन;
ब्यनायब बड ।

बरतन । व्यापार की वस्तुएँ ।
माल ।

भौड़ना—(क्रि अ) मिठाटेक्ये
भूवि-कूवा, चाबिओ पिनने आनब
बदनाय बडि कूवा ।

व्यर्थ इधर-उधर घूमना । चारों
ओर किसी की निन्दा या बद-
नामी करते फिरना ।

[क्रि स] नष्ट कवा ।
बिगाड़ना । नष्ट करना ।

भांडागार, भांडार—[सं पुं]
भांडाल ।

भण्डार । कोश ।

भौंति—(सं स्त्री) पदे, निठिना,
बौडि ।
तरह । रीति ।

भौंपना—(क्रि स) दूबडे देखि
बुझि पोवा, देवा ।

दूर से देख कर समझ लेना ।
देखना ।

भौबर—[सं स्त्री] चाबिओपिनने
भूवा, बिगाव गयगुत बब-कडा
अग्निक अदक्षिण कवा कार्य ।

चारो ओर घूमना । अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के अवसर पर वर और वधू करते हैं ।

भा—(सं स्त्री) लीला, लीला, किरण, अकाश, विजुलि । दीप्ति । शोभा । किरण । बिजली । (अग्न्य) अथवा, वा, ईष्ठा कबिले । चाहे । या । वा ।

भाई, भैया—(सं पुं) भाई, लगबीया वा गमनीयाक कवा गन्धधन ।

भ्राता । बराबर वालो के लिये आदर सूचक सम्बोधन ।

भाईचारा—[सं पुं] भाईव निष्ठिना ममव भाव आरु वारुशव । भाई के समान परम प्रिय होनेका भाव और व्यवहार ।

भाई-दूज—[सं स्त्री] भाई-विधियाव पर्व । भैया दूज का पर्व ।

भाईबन्द, भाईबन्धु—(सं पुं) एके वंशव वा गोत्रवलोक्त, भाई, बन्धु-वाक्कव आदि । एक ही वंश या गोत्रके लोग । भाई और मित्र-बन्धु आदि ।

भाई-बिरादरी—[सं स्त्री] भाई अथवा एके गमाखर लोक । जाति या समाज के लोग ।

भाखना—[क्रि स] कोरा । कहना ।

भाखा—[सं स्त्री] भाषा, दैन्य भाषा । भाषा ।

भाग—[सं पुं] अंश, काल, भाग्य, कपाल गोभाग्य, भाग ।

हिस्सा । अंश । तरफ । भाग्य । ललाट । सौभाग्य । किसी राशि या संख्या को कई अंशों में बाँटने की क्रिया ।

भागदौड़—[सं स्त्री] लवा-उपवा, खव-खेपा, दोबि पलोवा । भगदड । दौड धूप ।

भागना—(क्रि अ) पलोवा, काम कबिले भय कवा वा पिछ होशेका । । दोबि पलोवा । पलायन करना । कोई काम करने से डरना या बचना । दौड़ना ।

भगिनेय—[सं पुं] भागिन ।

बहन का लड़का ।

बागी—[सं पुं] डांगी, अशुचि, अधिकारी ।

हिस्सेदार । अधिकारी ।

भाजन—(सं पुं) भाग कर्ता कार्य, वाहन, अश्व कविवर योग्य व्यक्ति ।

भाग करने की क्रिया या भाव ।
बरतन । कुछ लेने या पाने के योग्य पात्र ।

भाजी—(सं स्त्री) वाहन विशेष, तरकारी, भुजा आदि ।

तरकारी, साग आदि के रूपमें खाने की वनस्पतियाँ या फल ।

भाट—[सं पुं] चाबण, तोषानोष काबी ।

चारण । बन्दी । खुशामदी ।

भाटक—[सं पुं] भावा ।
किराया ।

भाटा—(सं पुं) भाटा—(छोटा) बाब विपरीत गति)

पानी का उत्तर ।

भाड़—(सं पुं) ठोका विशेष ।

भड़भूँजों की अनाज मूँने की भट्टी ।

भाड़ा—(सं पुं) भावा ।
किराया ।

भाण—[सं पुं] एक अकारब शंका अथवा अकारकीनाट । इस एक प्रकार की हास्य एकांकी ।
बहाना, मिस ।

भाति—[सं स्त्री] शोभा, चमक शोभा । चमक ।

भाथी—[सं स्त्री] भाती, झूठ बतलाना यत्न ।

भट्टीकी आग सुलगानेकी धौकनी ।

भान—[सं पुं] अकाश, चमक, ज्ञान, विचार, भूल भावना ।

प्रकाश । चमक । ज्ञान । प्रतीति ।
कल्पित विचार या भ्रमपूर्ण धारणा ।

भाना—[क्रि भ] जना, बुझा ।
पछुल होना ।

भान होना । ज्ञान पड़ना ।
पसन्द आना । शोभा देना ।
धूमना ।

(क्रि स) चमकोना भडा, चूबोना ।
चमकाना । तोड़ना । धूमना ।

भानु—(सं पुं) सूर्य, राजा ।
सूर्य । राजा ।

भानुजा—(सं स्त्री) यमुना ।

यमुना ।

भाप, भाफ—[सं स्त्री] भाप, वाष्प ।

वाष्प ।

भाबर—(सं पुं) आशुब नागनिब
शवि ।

पहाड़ों के नीचे तराई में का
जङ्गल ।

भाभी—[सं स्त्री] बहो, नन्दो ।

बड़े भाई की स्त्री ।

भाम, भामा, भामिनी—(सं स्त्री)

श्री, डिबोता ।

स्त्री । औरत ।

भायप—[सं पुं] भाईव निष्ठिना

प्रेम गन्ध ।

भाईचाग । भाई जैसा प्रेम
सम्बन्ध ।

भाबो—(सं स्त्री) बहन, गन्धती,
बाणी ।

वचन । सरस्वती । बाणी ।

भाब-बाह—(वि) भाववाही, याव
उपबत कोटो कार्य वा प्रदव
पाशिव धाक ।

बोझ डोनेवाला । जिसपर किसी
कार्य या पद के कर्तव्यों का
भार हो ।

भाबवाही—(वि) भाववा वा भार

कठिनाई, भाववाही ।

भार या बोझ डोनेवाला ।

भाबिक—(वि) गंधुव, सिका,

उबहा, भाववा काठवाँडाजन ।

‘भासी’, मूजा हुआ, बोझ डोनेवाला ।

भासीपन—[सं पुं] गंधुव होवाव

भार ।

भासी होनेका भाव ।

भार्गव—[सं पुं] ब्रह्म, १३ अक्ष

होवा प्रबन्ध, परब्रह्म ।

भृगु के वंश या गान्धर्व उरपन्न
पुरुष । परशुराम ।

(वि) ब्रह्म गन्धर्व, ब्रह्म ।

भृगु सम्बन्धी । भृगुका ।

भार्या—(सं स्त्री) पत्नी ।

पत्नी ।

भाल—(सं पुं) कपाल ।

कपाल । ललाट ।

भाला—(सं पुं) वर्षा, यात्रा ।

एक हथियार । वरछा ।

भालू—[सं पुं] भालूक ।

रीछ ।

भाब—[सं पुं] भाववा-क्रिया,

अच्छिद, भाव, मनन अथवा विचार

वां अडिधाय । धैर्य, नियम
मूला ।

होने की क्रिया या तत्व ।
अस्तित्व । मनमें उत्पन्न होनेवाला
कोई विचार । अभिप्राय । मत-
लब । प्रेम । तरीका । दर ।
मूल्यमान ।

भावइ—(अव्य) ईच्छा यदि इय तेखे ।
इच्छा हो तो ।

भावज—(सं स्त्री) भाई-बोदाबो ।
भाई की पत्नी ।

भावता—(वि) प्रेम पाऊ, धिय,
गबगब ।
प्रेमपात्र । प्रिय ।

भावना—(सं स्त्री) भावना, ईच्छा,
कोना काम कबाब मनोभाव ।
मनमें उत्पन्न होनेवाला विकार ।
ध्यान । इच्छा । कोई काम करने
का विचार ।

[क्रि अ] भवा, छिन्ना कबा ।
विचार करना । सोचना ।
(वि) गबगब ।
प्यारा ।

भावर[रि]—[सं स्त्री] गहन
होवा क्रिया, अडिक्कि ।

भाने या पसन्द आने की क्रिया ।
अभिरुचि ।

भावी—(सं स्त्री) भविष्यत्,
भविष्यत्काले श्रवणगीश । कथा,
ताग्य ।

भविष्यत् काल । भविष्यमें होने
वाली बात । भाग्य ।

[वि] भविष्यत्काले श्रवणगीश ।
भविष्यमें आने या होनेवाला ।

भावुक—(वि) भावुक, छिन्नामूल ।
भावना करने या सोचनेवाला ।
जिसके मनमें कोमल भावों की
प्रबलता हो या जिसपर कोमल
भावों का जल्दी और अधिक
प्रभाव पड़ता हो । [मैंटिमेंटल]

भावुकता—[सं स्त्री] भावुक, अथवा
छिन्नामूल होवा क्रिया वा भाव ।
भावुक, होनेकी क्रिया या भाव ।

भावै—(अव्य) ईच्छा करिबटेल ।
चाहे ।

भाषणा—[क्रि अ] भाषण दिया,
विशुद्धि दिया, धोवा ।
बोलना । भोजन करना ।

भाषित—[वि] कोवा, कथित ।
कहा हुआ । कथित ।

भास—[सं पुं] नौछि, अरुण,
किबन, ईष्टा ।

दीप्ति । प्रकाश । किरण । इच्छा ।

भासना—[क्रि क] उज्ज्वल होना,
देखा पौना, जना, कोना ।
चमकना । दिखाई देना । जान
पड़ना । कहना ।

भास्कर—[सं पुं] दिन, सूर्य ।
दिन । सूर्य ।

भिजाना(जोना), भिगाना, भिगोना—
(क्रि स) डिठ्ठना ।
किसी चीज को पानी या तरल
पदार्थ से तर करने के लिये
उसमें डुबाना ।

भिक्षु - (सं पुं) भिक्षावी, बोध
गन्नागी ।

भिक्षमंगा । बोद्ध सन्यासी ।

भिक्षमंगा, भिक्षारी—(सं पुं)
भिक्षावी ।

भिक्षुक । (सं स्त्री—भिक्षारिणी
भिक्षारिन)

भिजवाना—(क्रि स) पठिठ्ठना ।
'भेजना' का प्रेरणायक ।

भिजाना—[क्रि स] डिठ्ठना,
पठिठ्ठना ।

भिगोना । भिजवाना ।

भिन्न—(वि) अडिछ, जना ।
जानकार ।

भिदन्त—(सं स्त्री) गाल यूँजव
क्रिया, गालयूँज ।

भिदने की क्रिया या भाव ।

मुठ-भेड़ ।

भिड़—[सं स्त्री] बबल, एविश
विशाल ङः थका पडछ ।

एक प्रकार का उड़नेवाला जह-
रीला कीड़ा । बरें । ततैया ।

भिड़ना—[क्रि अ] धुन्ना थोड़ा,
अतिमागिताटेल आहि यूँज कबा,
नगठ नागि थका ।

टकर खाना । मुकाबले में आकर
लड़ना । साथ लगना ।

भितरिया—(सं पुं) डिठ्ठना,
डिठ्ठव डार्गठ थका, मनव
भावक दबाई बाथौंठा जन ।
भीतरों भागमें रहनेवाला । मन
की भावनः भीतर ही दबाये
रखनेवाला ।

(वि) डिठ्ठव ।

भीतरी । अन्दर का ।

भित्ति—[सं स्त्री] बेरः, डब ।
दीवार । डर ।

भित्तिचित्र—[सं पुं] वेबत
अंकित चित्रावली ।

दीवार पर अंकित किया हुआ
चित्र ।

भिइना—[क्रि अ] बाइल होरा,
आघात पोरा, बिरा पोरा ।
छेदा जाना । घायल होना ।

भिनकना—[क्रि अ] माखि भन्
भननि करा, भगत घृणा उपका ।
मक्खियों का भिनभिनाना ।
मनमें घृणा उत्पन्न होना ।

भिनभिनाना—(क्रि अ) भन्
भननि करा ।
(मक्खियोंका) भिन भिन शब्द
करना ।

भिनसार—[सं पुं] बातिपुरा ।
प्रातःकाल ।

भिन्न—[वि] पृथक्, अग्र,
द्वितीय, अइने धरण । भग्रांश
अलग । दूसरा । अन्य । ओर
तरह का । भगनांश ।

भिन्नाना—[क्रि अ] मूब घुबोरा,
गडत अलिपकि उठा ।

सिर चकराना । खिजलाना ।

भिलनी, भालनी—[सं स्त्री]

डील जातिब तिवोडा ।

भील की स्त्री ।

भिरत, भिस्त—(सं पुं) बेहेश्ठ,
श्वर्ग ।

बिहिस्त । (स्वर्ग)

भिरती—(सं पुं) चायबाब
पात्रवे पानी काठोरा लोक ।
मशक में पानी डोनेवाला व्यक्ति ।

भीचना—[क्रि स] टना । [चकूगुडा]
खीचना । भीचना ।

भीजना—(क्रि अ) तिता, पुल-
कित यथवा आग्नित होरा ।
भा-धोरा, डाल डारे भित्तबत
अवेण करा ।

भीगना । पुलकित या गद् गद्
होना । नहाना । अच्छी तरह
किसी के अन्दर समाना ।

भीट—(सं स्त्री) गरु गरु शाकलू
धका गांठि ।

वह जमीन जिसपर छोटे छोटे
टीले हों ।

भी—[अव्य] ओ, कारो गैगते
वा अधिश्तेन, अवश, देन ।

किसीके साथ या सिवा, निश्चय
पूर्वक या अवश्य । अधिक ।
तक ।

भीख—(सं स्त्री) डिका ।
भिक्षा ।

भीगना—(क्रि स) डिता, आर्द्र
होरा, डिबा ।

आर्द्र होना ।

भीटा—[सं पुं] पाशाबर टिलाबर
दवे उथ माँटि ।

टीले की तरह कुछ ऊँची जमीन ।

भीठा—(सं पुं) बविनग्य-
नाक-पाछलि होरा माँटि, डेँटि ।
वह जमीन जिसपर केवल रबी
की फसल होती है ।

भीड़—(सं स्त्री) जन समूह,
विपद, डिब ।
जनसमूह । किसी बात की अधि-
कता । संकट ।

भीड़-भड़का—[सं पुं] दल-
दोप, हेल्मोन दोप, माँइधर
वेछि गवागन ।
भीड़ भाड़ ।

भीड़भाड़—[सं स्त्री] जनसमूह,
डिब ।
जनसमूह । भीड़ ।

भीत—[सं स्त्री] देवाल, वेब,
छाल, छावि ।
दीवार । चटाई । छत ।

भीतर—[क्रि बि] डिब ।
अन्दर ।

[सं पुं] अलःकरण, अलुखपुव ।
अन्तःकरण । अन्तःपुर ।

भीतरी—(वि) डिबबर, नुकाई
थका ।
अन्दरका । छिपा हुआ ।

भीति—[सं स्त्री] डरा, आशंका,
वेब ।
डर । आशंका । दीवार ।

भीनना—(क्रि अ) कोना
बल्लवे पूव होरा ।
किसी वस्तुसे भर या युक्त हो
जाना ।

भीर—[सं स्त्री] डिब, कटे,
विपत्ति ।
भीड़ । कष्ट । विपत्ति ।
[वि] डीत, कांपूरुष ।
डरा हुआ । भयभीत । कायर ।

भीरु—(वि) डीर, डराऊव ।
कायर । डरपोक ।

भील—[सं पुं] जाति विशेष ।
एक जंगली जाति ।

भुँइ—[सं स्त्री] डूवि, पृथिवी ।
पृथ्वी ।

भुँइधरा (हरा)—(सं पुं)
माँटिब उमड थका आवागदार्क
धव । तहखाना ।

भुँजना—(क्रि स) डब ।

भूना जाना ।

[सं पुं] डब्रा छाडेल,
बूटे, वाप्राय आदि ।

भूना हुआ चावल, चना आदि
जो चबाकर खाया जाता है ।

भुँडा—(वि) लांठूबा, छुटे ।

बिना सींग का । दुष्ट ।

भुजंग[म]भुजंग, भुजग—(सं पुं)

गाप ।

साँप । (सं स्त्री—भुजंगिनी,
भुजगी ।)

भुकराई [रायँध]—(सं स्त्री) वन-

छत्रल गेलि ओलोवा दुर्गक ।

वनस्पतियो आदिके सड़ने की
दुगन्ध ।

भुक्खड—(सं पुं) थकूवा, पेट्रक ।

कडाल ।

पेट्ट । कंगाल ।

भुखमरा—[वि] डोकड बरा,

डोकातुर ।

जो भूखों मरता हो । भुक्खड ।

भुखमरी—(सं स्त्री) शक्ति ।

दुर्भिक्ष ।

भुगतना—[क्रि स] डेगकब ।

भोगना ।

[क्रि अ] गाववा, कटोवा,
अविनाश कब ।

निपटना । बीतना । चुकती
होना (क्रि स-भुगताना)

भुगतान—[सं पुं] अविनाश कब

क्रिया, भूना आदि भिया ।

भुगताने की क्रिया या भाव ।
मूल्य, देन आदि चुकाना या
देना ।

भुष [ड]—[वि] मूँ ।

मूँ ।

भुजंगा—(सं पुं) कंला बडब

छबाई विशेष । गाप ।

काले रंगकी एक चिडिया । साँप ।

भुज—(सं पुं) बाह, शत,

शतीव डड ।

बाहु । बाँह । हाथ । हाथी का
सूँड ।

भुजबंद—(सं पुं) बाहु, शतव

गहना विशेष ।

बाजूबन्द ।

भुजा—[सं स्त्री] बाह ।

बाँह ।

भुजाळी—[सं स्त्री] नेपालीगकले

बाबहार कब थुक्ती ।

नेपालियों की एक प्रकार की
खुखड़ी ।

भुनगा—(सं पुं) उबि कूबा गक
पोक ।

एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा ।

भुनना—[क्रि अ] उका ।
भूना जाना ।

भुनभुनाना—[क्रि अ] झुन-
झुननि ।

भुन भुन शब्द करना । बड़बड़ाना ।

भुनाना—(क्रि स) उका (प्रेरणार्थक,
तेका यावनि यादि खुचुता
रुदा ।

(भूतना) का प्रेरणार्थक । बड़े सिक्के
आदिको छोटे सिक्कोंसे बदलना ।

भुरकना—(क्रि अ) उकाई कनकरीना
दे'वा । पीशवा ।

सूखकर भुर भुरा हो जाना ।
भूलना ।

भुरकस [कुस]—(सं पुं) नाडी
डूबि उल्लावा अवस्था, पूर्ण-
विपूर्ण ।

किमी वस्तु का वह रूप जो उसे
खुब कुचलने या कूटने से प्राप्त
होता है ।

भुरता—(सं पुं) उका, उाँ उत दिया
नेउना, यागू ।

भरता । आलू, बैंगन आदिका
चोखा ।

भुरभुरा—(वि) नबनबीया, ठूँझका ।
जरा सा आघात पर चूर चूर हो
जानेवाला ।

भुरभुराना—(क्रि म) छाँ उवा,
नबनबीया नवा ।
छिडकना । भग भग करना ।

भुरहरे—[क्रि म] खुन बाँझुनाई,
दे'कनाकालित ।
वडे मबेरे ।

भुलकड़—[वि] प्राये पीशवा
बाझि ।
प्रायः भूलनेवाला ।

भुलना—(वि) योगकाले पीशवि
बोवा बाझि ।
जल्दी भूल जानेवाला ।

भुलवाना, भुलाना—[क्रि सं] याकित
पवा । पीशवाला ।

भ्रममें डालना । 'भूलना' का
प्रेरणार्थक ।

भुलावा—(सं पुं) कानि ।
घोखा ।

भुवः—[सं पुं] अन्तरीक्ष लोक ।
अग्नि ।

अंतरिक्ष लोक ।

भुवात्—[सं पुं] नक्षत्र ।

राजा ।

भुस, भूसा—(सं पुं) छूटि, प्रताप ।
धान, गेहूँ आदि के डंठलों का
महीन चूरा । (सं स्त्री—रमी, भुसी)

भूकना—(क्रि अ) कूटकर छूक-
छूकनि, अगाधक ७ वक्क वव ।
[कुत्तों का] भू भू करना । व्यर्थ
बकना ।

भूँचाल, भूँडोल, भूकंप—[सं पुं]
भूभिकम्प ।

पृथ्वी के ऊपरी भागका सहसा
हिलना ।

भू—(सं स्त्री) पृथिवी, ज्ञान ।
पृथ्वी । स्थान ।

भूखंड—[सं पुं] छूथण्ड, बाटिय गक
गक भाग ।

पृथ्वी का कोई खंड । जमीनका
छोटा टुकड़ा ।

भूख—[सं स्त्री] भोक, आवश्यकता ।
उत्प्रेक्षित ईच्छा । क्षुधा । जरूरत
(माल आदि खरीदनेकी)

भूख—हडताल—[सं स्त्री] अगमन ।
अनशन ।

भूखा—[वि] कूथित, ईच्छुक,
पवित्र ।

क्षुधित । इच्छुक । दरिद्र ।

भूगर्भ—(सं पुं) भूगर्भ, पृथि-
वीव भित्तव अर्थ ।
पृथ्वी का भीतरी भाग ।

भूचर—(सं पुं) छूचर, पृथिवीव
जल भागंत थका प्राणी ।
पृथ्वी पर चरनेवाले प्राणी ।

भूत—(सं पुं) छूत, जल्लिब मूल
तत्त्व, जल्लिब जल आक चेतन
प्राणी, अतीत काल, ऐत ।

वे मूल द्रव्य जिससे सृष्टि की
रचना हुई है । तत्त्व । सृष्टिके
ममी जड़ और चेतन प्राणी ।
बीता हुआ समय । अतीत
काल । प्रेत ।

(वि) अतीत, गन्तान ।

बीता हुआ । मिला हुआ । ममान

भूतना—(सं पुं) छूत ।
मृत (सं स्त्री—भूतनी) ।

भूषि—[सं स्त्री] वैभव, धन,
शोभ, उत्प्रेक्षित, इच्छा ।

वैभव । भस्म, राख । उत्पत्ति ।
वृद्धि ।

भू-देव, भूसुर—[सं पुं] ब्राह्मण,
वाग्मण ।
ब्राह्मण ।

भूधर—(सं पुं) आशान, पर्वत ।
पहाड़ । पर्वत ।

भूनना—[क्रि स] डुकान डखा,
रब कट्टे दिया ।
जल की सहायता के बिना गरम
करके पकाना । बहुत अधिक
कष्ट देना ।

भूप—(सं पुं) नञ् ।
राजा ।

भूमिज—(वि) नाटिव जवा
उपजा ।
भूमि से उत्पन्न ।

भूमिधर—(सं पुं) शक्ति वा
नाटिव उपरत श्वाशी अधिकार
पौरवा शक्तिशालक ।
वह खेतिहर जिसने भूमि या
खेतपर स्थायी अधिकार प्राप्त
कर लिया हो ।

भूमिया—(सं पुं) जमीनार,
आमदगुता ।
जमींदार । ग्राम देवता ।

भूमिसात—[वि] भूमिगा, नाटिव
लगत गिनि घोरा ।

जो गिरकर भूमिके साथ मिल
गया हो ।

भूमिहार—[सं पुं] विशाव आरु
उखव अदमश्वर शिन्धू जाति
विशेष ।

बिहार और उत्तरप्रदेश की एक
जाति ।

भूयसी—[वि] खूब बेछि ।
बहुत अधिक ।

(क्रि वि) बाबे बाबे ।
बार बार ।

भूरा—(सं पुं) खाकी रङ्ग,
नाटिव बरगैशा, छेनि ।

मिट्टी की तरह का या खाकी
रंग । कच्ची चीनी । चीनी ।

[वि] नाटिव रङ्ग, खाकी ।
मटमैले रंगका । खाकी ।

भूरि—(सं पुं) जन्मा, जोग ।
ब्रह्मा । सोना ।

(वि) बहूत ।
बहुत । भारी ।

भूल—(सं स्त्री) डून, पोव,
काँटि ।

भूलने की अवस्था या भाव ।
गलती । चूक । कसूर ।

भूलना—(क्रि स) पाशवा, मगत
नवथा ।

याद न रखना ।

[क्रि अ] मगत नथका, भूल
होवा, दोष होवा, आगळ
होवा, अहकावी होवा ।

याद न रहना । गलती होना ।
भासकत होना । घमण्डमें रहना ।

(वि) पाशवा जग ।

भूलनेवाला ।

भूल-भुलैया—[सं स्त्री] बेधा
आदिदेव गङ्गा देव पोछ थका
आकृति । वा नक्का ।

चकावू / रेखाओं आदि से बनाई
हुई चक्ररदार आकृति ।

भूलोक—[सं पुं] पृथिवी ,
जगत् ।

संसार ।

भूषण—(सं पुं) अलङ्कार ।
अलंकार । शोभा बढ़ानेवाली
चीज ।

भूषा—(सं स्त्री) अलङ्कार,
गङ्गादेव दादेगान श्री, गङ्गान-
काचान ।

गहना । सजावट । सजाने की
सामग्री ।

भूषित—[वि] अलङ्कृत, गङ्कित ।
अलंकृत । सज्जित ।

भृंग—(सं पुं) डोमोवा ।
भोरा ।

भृंगराज—[सं पुं] वनस्पति विशेष,
एविश बबल, पक्षी विशेष ।
भंगरैया नामकी वनस्पति ।
काले रंगकी एक चिड़िया ।

भृंगी—(सं पुं) शिवर एटि
गण ।

शिवजी का एक गण ।

(सं स्त्री) डोमोवा (पुं)
छक्र बधि ।

भृंग या भोरे की मादा । आँखों
की विलनी ।

भृकुटि—(सं स्त्री) छक्र चला-
डेवि ।

भोह ।

भृत, भृत्य—[सं पुं] दाग,
सेवक ।

दास । सेवक ।

भृति—(सं स्त्री) सेवा, वानच,
वेतन, धनवश, भूला, पालन

कबा । छब-छोख कबा ।

सेवा । मजदूरी । वेतन । तन-
खाह । मूल्य । पालन करना ।
जीविका निर्वाह के लिये मिलने
वाला धन ।

भेगा—[सं पुं] कैबा छकूबा ।
वह जिसकी आँखों की पुतलियाँ
टेढ़ी-तिरछी चलती या रहती हों

भेंट—[सं स्त्री] गाका९, उगशाब ।
मिलना । उपहार ।

भेंटना—(क्रि अ) गाका९ कबा ।
मुलाकात करना । मिलना ।
(क्रि स) आनिबटन कबा ।
गले लगाना ।

भेद [उ]—(सं पुं) बशगा, बर्थ ।
रहस्य । मर्म ।

भेक—[सं पुं] वेड, डेकूनि ।
मेंढक ।

भेख, भेष, भेस—[सं पुं] वेण,
डेण ।
वेष ।

भेजना—(क्रि स) भठिउबा ।
किसी को कहीं जाने के लिये
चलने में प्रवृत्त करना । कोई
वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान

के लिये रवाना करना । (प्रे०-
भेजवाना)

भेजा—[सं पुं] गूबर बिटे, बगछू ।
सिर के अन्दर का गूदा ।

भेड़, भेड़ी—(सं स्त्री) डेड़ा ।
बकरी की तरह का एक प्रसिद्ध
चोपाया । भेष । [सं पुं-भेड़ा]

भेड़िया—[सं पुं] कूकूव गेठीगा
बाघ ।

कुत्ते की जानि का एक प्रसिद्ध
जंगली हिसक जन्तु ।

भेद—[सं पुं] बिका नना, बर्थ,
गोर्बका, मऊपफब बशगा डेण
कबा ।

भेदने या छेदने की क्रिया । शत्रु
पक्ष के लोगों को एक दूसरे का
बिरोधी बनाकर कुछ लोगों को
अपनी ओर मिलाना । रहस्य ।
मर्म । अन्तर । प्रकार ।

भेदना—(सं पुं) बिका, बशगा
डेषाटन कबा कार्य ।

भेदने की क्रिया या भाव । छेदना ।
भेद लेने की क्रिया या भाव ।

भेदना—(क्रि स) बिका, कूटे कबा,
काटबा मनब कथा आनिबटन

तेउंठै गड़ीव आवे दृष्टिपाठ
कवा ।

बेघना । छेदना । किसी के मनका
आशय जानने के लिये उसकी
ओर गम्भीर दृष्टि से देखना ।

भेद-बुद्धि, भेदमति— (सं स्त्री)
भेद बुद्धि-पृथक्कावी बुद्धि ।

बह बुद्धि या विचार जिसके
अनुसार प्रायः समानता रखने
वाले मनुष्यों, पदार्थों आदि में
भेद-भाव किया जाता है ।

भेदिया, भेद-[सं पुं] चोनाऽचोवा ।
जासूम । भेद या भीतरी रहस्य
जाननेवाला ।

भेदी-[सं पुं] चोवाऽचोवा ।
भेदिया ।

[वि] बिक्रा वा कुठा कबोता
बाझि ।

भेदन करनेवाला । छेद करने
वाला ।

भेदी-[सं स्त्री] झूठी, एविष
डाउव नागेवा ।
दुन्दुभी ।

भेला—[सं पुं] गमुथा-गमुथिटेक
, बुद्धि । गाका, भेल (नदी,

नला आदि पाँव कविवर बावे
जका)

भिदन्त । मुलाकात । काठ, बाँस
आदि जोड़कर निर्मित नदी आदि
पार करने का ढाँचा ।

भेली-(सं स्त्री) खुब आदिब
डोथवा ।

गुड़ आदिकी गोल बट्टी या पिडी

भेव—[सं पुं] बठगा ।
रहस्य ।

भेषज, भैषज—(सं पुं) उषध ।
औषध । दवा ।

भैस—(सं स्त्री) गश् (गोईकी)
भैसे की मादा [सं पुं भैसा]

भैन [I]—[सं स्त्री] डनी ।
बहन ।

भैया—(सं पुं) भाई, गमनीयाक
कवा गधोधन ।

भाई । बराबरवालों के लिये
सम्बोधन का शब्द ।

भैरव—(वि) डीवण गक कबोता,
डगानक ।

भीषण शब्दवाला । भयानक ।

(सं पुं) पितर अछठव, बाग
विशेष ।

शिव के एक प्रकार के गण ।

छः रागों में से एक ।

भैरवी—[सं स्त्री] देववी, एकना देवी
नाम, बातिभूवा गोवा बागिनी
विशेष, भूवाव गौत विशेष ।
एक देवी का नाम । सबेरे गायी
जानेवाली एक रागिनी । सबेरे
होनेवाला संगीत ।

[वि] देवव गवकीय ।

भैरव सम्बन्धी ।

भैषज्य—[सं पुं] चिकित्सा, औषध ।
चिकित्सा । औषध ।

[वि] औषध अथवा चिकित्सा
गवकीय ।

औषध या चिकित्सा सम्बन्धी ।

भोंकना— (क्रि स) ढोडा वस्तु
ढोढेरव झुनाई दिना ।
नुकीली चीज जोरसे घुसाना ।

भोंडा— [वि] कूकण, बेग्रा ।
कूकण ।

भड़ा । बदसूरत । कुरूप ।

भोंदू— (वि) मूर्ख ।
मूर्ख ।

भोंपा (पू)— (सं पुं) भोंपा,
कल काबधानाव उकि ।
फूँक कर बजाया जानेवाला एक

प्रकार का बाजा । कल कार-
खानों की सीटी ।

भो—[क्रि अ] होवा ।
हुवा ।

भोक्ता— [वि] ढोडा, ढोग
कढेताछन ।

भोग करने या भोगने वाला ।

भोग—(सं पुं) ढोग । सूथ, दूथ
यादि अशुद्ध कवा । ढाग्य वा
कपाल अधिकार, नैन्दवछ, गैथून
(वति) ।

सुख दुख आदिका अनुभव करना ।
प्रारब्ध । अधिकार । खाना ।
नैवेद्य । मैथुन ।

भोगना— [क्रि स] सूथ, दूथ
यादि गछ कवा ।

सुख, दुख आदि सहना । भुगतना ।
(प्र०—भोगवाना, भोगाना)

भोग-विलास— [सं पुं] ढोग-
विलास ।

सुखपर्वक अच्छी अच्छी वस्तुओं
का उपभोग करना ।

भोगी—[सं पुं] ढोगी ।
भोगनेवाला ।

(वि) ढोगी । [इज्जिय सूथ]
ढोगी ।

भोगनेवाला । इन्द्रियों का सुख
भोगने या चाहनेवाला ।

भोग्य—(वि) छांगत वा कायत
नगावव योगा ।

भोगने या काममें लाने के योग्य ।

भोजी—[सं, पुं] खाँड्डा ।
खानेवाला ।

भोजू—[सं पुं] भोजन ।
भोजन ।

(वि) कायत नगावव उपयुक्त ।
काममें आने योग्य ।

भोज्य—(सं पुं) शीष्ट पदार्थ ।
खाद्य पदार्थ ।

[वि] खाव पत्रा ।
खाने योग्य ।

भोट—(सं पुं) झूठान बाख ।
मूटान देश ।

भोटिया—(स पुं) झूठिया, भोट
पेशव निवासी ।

भोट या मूटान देशका निवासी ।
[सं स्त्री] झूठान पेशव
डावा ।

मूटान देश की भाषा ।

(बि) झूठान पेशव ।
मूटान देश का ।

भोथरा—(वि) छाँठा, कुठित ।
जिसकी धार तेज न हो । कुंठित
कुन्द (शस्त्र आदि)

भोर—(सं, पुं) रातिपूरा ।
तड़का ।

[सं पुं] डून, काँकि ।

भ्रम । बोला ।

[वि] आचरित, यजना ।

चकित । भोचक्का । भोला ।

भोरना—(क्रि स) काँकि दिया,
छल कबा, कूटलावा ।

भ्रममें डालना । धोखा देना ।

बहकाना ।

भोरहरा—[सं पुं] अत्राय. राति-
पूरा ।

भोर । (क्रि बि—भोरहरे)

भोराना—[क्रि स] काँकि दिया,
गिछा पीकत पेटलावा ।

भ्रममें डालना । भुलाना ।

(क्रि अ) काँकित पत्रा ।

भ्रम या धोखे में आना ।

भोलना—[क्रि स] छाँठा-गड्ढा
कबा, गिछाटेक काँकि दिया ।

भुलावा देना । बहकाना ।

भोला, भोलामाला—[वि] गड्ढ,
गबल, यजना ।

मीषा सादा । सरल ।

भौ, भौह—[सं स्त्री] ठकुर
छेनाडेवि ।

आँख के ऊपर का हड्डी पर के
बाल । भूकुटि ।

भौकना—(क्रि अ) डुक् डुकनि ।
भूकना ।

भौराना—(क्रि स) घृवि कूबा,
बियाब जमयत यछकुडब चावि-
उपिटेन घृवि कूबा ।

चक्कर देना । घुमाना । विवाह के
समय भाँवर दिलाना ।

[क्रि अ] घृबा ।

चक्कर काटना । घुमना ।

भौरी—(सं स्त्री) गोबर ठकरी
यादि ।

पशुओ या मनुष्यो के शरीर के वे
चक्करदारबाल जिनसे शुभ अशुभ
का निर्णय करते हैं । भाँवर ।

भौचक—[वि] आकर्षक, आचरित
इव जगैश ।

हका बका । चकित ।

भौजाई [जो]—(सं स्त्री) भाई
बोवाबी ।

भावज । भाई की पत्नी ।

भौतिक—[वि] भौतिक, भौ

डूडव जगत गश्क शका, पाथिव,
गरीब गश्कीय ।

पंच भूतसे सम्बन्ध रखनेवाला ।
पाथिव । शरीर सम्बन्धी ।

भौतिक विज्ञान—(सं पुं)

पदार्थ विज्ञान ।

पदार्थ विज्ञान (फिजिक्स)

भौम—[वि] भूमि गश्कीय, माटिब
परा उपजा ।

भूमि सम्बन्धी । भूमि या पृथ्वीसे
उत्पन्न ।

(सं पुं) मङ्गल ग्रह ।

मङ्गल ग्रह ।

भौमिक—[सं पुं] माटिब गवाकी ।
भूमि का स्वामी ।

(वि) माटि गश्कीय, गान्धिव ।

भूमि सम्बन्धी । भूमिका ।

भ्रंश—(सं पुं) तलव परा,
पतन, नाश, क्षय ।

नीचे गिरना । पतन । नाश ।
ध्वंस ।

भ्रम—(सं पुं) बग, डूल-कॉकि,
मिष्टा छान, गमेश, अर्थात्काव
विप्लव ।

मिथ्या ज्ञान । बोखा । सन्देह ।
 एक अलंकार । मान (सं-भ्रम)
 भ्रमना—(क्रि अ) ध्रुवि कृवा,
 गल्गेश्ठ पंवा, ठंग थोवा ।
 चक्रर खाना या लगाना । भ्रम या
 सन्देह में पड़ना । बोखा खाना ।
 भ्रमात्मक—(वि) वयाश्चक,
 गल्गेश्ठ खनक ।
 भ्रम मूलक । संदिग्ध ।
 भ्रष्ट--[वि] पतिष्ठ, ध्रुविष्ठ,
 ध्रुवविष्ठ, निगनीय ।
 पतित । ध्रुवित । दुश्चरित्र ।
 निन्दनीय आचरणवाला (सं स्त्री-
 भ्रष्टा)
 भ्रष्टा चरण, भ्रष्टाचार-(सं पुं)
 वष्टोछाव ।
 नीति पथ से गिरा हुआ और
 समाजमें बहुत बुरा माने जाने
 वाला आचरण या व्यवहार ।
 भ्रांत—[वि] वाक्छ, विवृष्ट, निवृक्
 पोश्वा ।
 जिसे भ्रान्ति हुई हो । भ्रम या
 बोखे में पड़ा हुआ ।

भ्रांति—(सं स्त्री) वाक्छि, डूग,
 गल्गेश्ठ, पांगनावि ।
 भ्रम । सन्देह । पागलपन । भूल-
 चूक ।
 भ्राता—(सं पुं) डाई ।
 भाई ।
 भ्रातृत्व—(सं पुं) वातृत्व ।
 भाई होने का भाव या धर्म ।
 भाई चारा ।
 भ्रामक—(वि) वाक्छ, गल्गेश्ठ-
 खनक ।
 भ्रम उत्पन्न करनेवाला ।
 भ्रू—[सं स्त्री] ज्, छेनाउवि ।
 मोह ।
 भ्रूण—[सं पुं] गर्भत थाका गच्छान/
 स्त्री का गर्भ । बालक के गर्भ में
 रहनेकी अवस्था ।
 भ्रूण हत्या—[सं स्त्री] गर्भह
 गच्छान शता ।
 गर्भमें भ्रूण या बालक को मार
 डालना ।
 भ्रू विक्षेप—(सं पुं) ध्रुष्टि निवृक्छ
 कवा, छक्क बिय कवा ।
 दृष्टि डालना । तयोरी चढ़ाना ।

म

म—देवनागरी वर्णमाला में अष्टम अक्षर ।
आश्व ।

वर्णमाला का पच्चीसवाँ व्यंजन

मंगन—[सं पुं] भिक्षु ।
भीख मांगनेवाला ।

मंगनी—(सं स्त्री) श्रुद्धिसे बोलना
बहुत दिवा, मांगन, निजब काम
चलाकर बाँधे जानकर पत्नी बहुत
श्रुद्धि लेना । विद्या बलवान्
करा एक प्रकारका नियम ।

किसी के मांगने पर कोई चीज
देना । अपना काम चलाने के लिये
किसी से मागकर उसकी कोई
चीज लेना-इस प्रकार की दी
हुई चीज । विवाह में वह स्त्रियाँ
जिसमें वर और कन्या का संबंध
पक्का और त होता है ।

मंगलकलश (घट)— [सं पुं]
मङ्गल घट, माङ्गलिक कलश ।
मङ्गल अवसरों पर पूजा के लिये

या योंही रखा जानेवाला पानी
का घटा ।

मंगलपाठ, मंगलाचरण—[सं पुं]
मङ्गलाचरण, शुभकार्य या शुभकार्य
सम्बन्ध गौरी शीत या मन्त्रादि ।
वह पद्य जो शुभकार्य के पहले
मङ्गलकी कामनासे पढ़ा या कहा
जाता है ।

मंगल सूत्र— (सं पुं) देवता
आश्विनमास कपे पिक्का माना
वा अलङ्कार विशेष (उत्तम
भावका नियम)
देवता के प्रसाद रूपमें कलाई पर
बाँधा जानेवाला डोरा या तागा ।

मंगाना—[क्रि स] अनिष्ट शान्तिवले
पठित, कर्त्तव्यको कानो
बहुत अनिष्टको कानो, विद्या
बलवान् कर ।

मांगने का काम दूसरे से कराना ।
किसी से कोई चीज माँगकर देनेके
लिये कहना । मंगनी कराना ।

मंगेतर—(वि) याव जगत् विशाव
वल्गावल्गु दृष्टेष्ट ।

जिनके साथ किसी की मंगनी
हुई हो ।

मंगोल—(सं पुं) मध्य एशियात
वाग कबा जाति विशेष ।
मध्य एशियामें बसनेवाली एक
जाति ।

मंथ [क]—मथ, कांठ वा बाँहरे
गछा । उथ चार ।

खाट । छोटी पीढ़ी । वह ऊँचा
मंडप जिसपर बैठकर सर्वसाधा-
रण के सामने कोई कार्य किया
जाय ।

मंजन—(सं पुं) मञ्जन, क्रीडा वृद्धि
वादे वादशाव कबा चूर्ण ।
दाँत मांजनेका चूर्ण मा बुकनी ।

मंजना—(क्रि अ) अभाग होवा,
पनिष्ठाव कबा ।

मांजा जाना । अभ्यास होना ।

मंजरित—(वि) मञ्जरित, मञ्जुवि
लागि थका ।

जिसमें मंजरी लगी हुई हो ।

मंजरी—[सं स्त्री] नटून कुंशिपात,
गता । (आगव) गल ।

नयी कोंपल । आम आदिके सीके
में लगे हुए बहुत से दानों का
समूह । लता ।

मंजाई—[सं स्त्री] वंशा, पविष्ठाव
आदि कबा क्रिया वा ताव
वादे दिशा मञ्जुवि ।
मंजानी या मंजनेकी क्रिया, भाव
या मजदूरी ।

मंजिल—(सं स्त्री) वादव, वदव
अर्थ, लक्षा ।
पड़ाव । मकान का खण्ड ।

मंजोर—[सं पुं] नूपुर, भवि
अलङ्कार ।
नूपुर ।

मंजु—[वि] सुन्दर ।
सुन्दर ।

मंजुल—(वि) सुन्दर, मञ्जु ।
सुन्दर । मनोहर ।

मंजूर—(वि) मञ्जु, आश कबा ।
स्वीकृत ।

मंजूरी—(सं स्त्री) शोभति, मञ्जूरी ।
स्वीकृति ।

मंजूषा—(सं स्त्री) पेवा, कांठव
वाकठ, शोभिव गान्धी ।

पिटारी । हाथीका हीदा । छोटा
डिब्बा ।

मंझाधार—(सं स्त्री) नदीब याखलगाँव,
कोटोना कायब याख भाग ।
नदी या उसके प्रवाह का मध्य
भाग । किसी काम का मध्य ।

मंझोला, मंझोला—(वि) याख,
बीच का ।

मंझा—(वि) याखब ।
बीचका ।

(सं पुं) मध्य, माला ।
मध्य । पलंग ।

मंझार[री]—[क्रि वि] याखत ।
बीच में ।
(सं स्त्री) मध्य ।
मध्य ।

मंझोला, मंझोला—[वि] याख ।
बीच का ।

मंझई, मंझैया—[सं स्त्री] कुपूरी,
पंजा ।
भोपड़ी ।

मंझन—(सं पुं) गजोबा, मोडा-
काबक, अमान दि कोटोना कथा
अशानित कवा ।

मृंगार करना । सजाना । प्रमाण
देकर कोई बात सिद्ध करना ।

मंडनी—[सं स्त्री] नवगा नवा ।

खलिहान में रले हुए फसल के
डण्डलों आदिमें से अनाज के दाने
अलग करने की क्रिया ।

मंडप, मंडवा—(सं पुं) मंडप,
मंड ।

किसी उत्सव या मंगल कार्य के
लिये छाकर बनाया हुआ स्थान ।
मंच ।

मंडराना, मंडलाना—(क्रि अ)

कोटोना बखुब चाबिउ पिने
उबि कुवा, कोटोना उचरत
गकलो गमयत उपस्थित धका ।
किसी वस्तु के चारों ओर घूमते
हुए उड़ना । बराबर किसी के
आस पास रहना ।

मंडल—(सं पुं) परिविधि, मंडल,
शूर्या अथवा चन्द्र चाबिउकावे
देखा घूर्णन आकृति, विभाग,
श्रृंग, वेदक श्रृंग ।

परिधि । घेरा । सूर्य या चन्द्रमा
के चारों ओर दिखाई पड़नेवाला
घेरा । जिला । विभाग । ऋग्वेद
का कोई खण्ड ।

मंडलाकार—(वि) गोलाकाब,
घूर्णन । मोल ।

मंडली—(सं स्त्री) गमूह, गबाछ,
पल ।

समूह । समाज । दल ।

‘[सं पुं] श्रृंखला ।

सूर्य ।

मंडा—[सं पुं] डांडर बच्चा ।
बड़ी मण्डी या बाजार । (सं स्त्री
—मण्डी)

मंडित—(वि) अनङ्कत, डूबित,
धून लगेला ।
सजाया हुआ । छाया हुआ ।
भरा हुआ ।

मंडूक—[सं पुं] डेकूली ।
मेंढक ।

मंत्रणा—(सं स्त्री) प्रगामर्श, मन्त्रवा
मने मने कबा यालत ।
परामर्श । मन्तव्य ।

मंत्रद्रष्टा—(वि) वेदव मन्त्र
प्रकाशक, मन्त्र ज्ञेही ।
वेदों का मंत्र प्रकाश करनेवाला
(ऋषि)

मंत्रपूत—(वि) मन्त्रवे परित्र
कबा ।

मंत्र पढकर पवित्र किया हुआ ।

मंत्रालय—(सं पुं) मन्त्रालय,
मन्त्रीमण्डल अधीनस्थ कार्यालय ।

मंत्रियों के अधीनस्थ विभाग
(मिनिस्ट्री)

मंत्रित्व—(सं पुं) मन्त्रीव कार्य
वा पद, मन्त्रीष ।

मन्त्री का कार्य या पद ।

मन्थन—(सं पुं) मथा वा घोंटा
कार्य, गंभीर भावे निबीक्षण
कबा, मथनी ।

मथना । गहरी छान बीन ।
मथानी ।

मन्थर—(वि) शीब, अलग ।
धीमी गतिवाला । मन्द ।

मन्द—[वि] लेहेश, शीब, मूर्ख,
डूढे ।

धीमा । आलसी । मूर्ख । दुष्ट ।

मन्द-बुद्धि—[वि] मूर्ख ।
मूर्ख ।

मन्दर—(सं पुं) परबत विशेष
(गमुल मन्दन समयत मथनी
डिछावे बावहाब कबा) श्रृंखला,
दर्पण, गंभीर ध्वनि ।

एक पर्वत । स्वर्ग । दर्पण ।

गम्भीर ध्वनि या शब्द ।

[वि] लेहेश, शीब ।

मंद । धीमा ।

मंदा—(वि) कम मूल्य, या कम दाम
कम गल, बेग्या, अशुद्ध ।

कम मूल्यका । जिसका भाव या
दाम उतर या गिर गया हो ।
घटिया । बुरा । अशुभ ।

मदाग्नि—(सं स्त्री) अजीर्णता,
खोरा वस्तु जीर्ण खोरा शक्ति
ज्ञात ।

बद-हजमी ।

मंदार—(सं पुं) अर्धव प्राविष्टात
कूलव गच्छ, मंदार गच्छ, अर्ध,
शती, यन्त्रव अर्धव ।

स्वर्ग का एक पेड़ । आक या
मदार का पेड़ । स्वर्ग । हाथी ।
मंदर-पर्वत ।

मंदी—(सं स्त्री) दाम कम होना,
गुला होना, बजावत बिक्री कम
खोना ।

भाव कम होना । सस्ती । बाजार
में बिक्री कम होना ।

मंद्र—(वि) मनोबल, अंग,
आनन्दित, गंभीर, ज्ञेय ।

मनोहर । प्रसन्न । गंभीर । धीमा

मंशा—(सं स्त्री) ईच्छा, अतिशय ।
इच्छा । आशय ।

महंगा, महंगा—[वि] श्रृंग,
दाम बाढ़ि खोरा, धुव अविश्व
वा अर्थ बाध करि खोरा ।

जिसका मूल्य अधिक हो । बहु-
मूल्य । जो बहुत अधिक परिश्रम
या व्यय से प्राप्त हो ।

मकड़ी—[सं स्त्री] मकड़ा ।

एक कीड़ा जो जाल बुनकर कीड़ों
को फँसाता है । अणनाभ ।
मकंटक ।

मकधरा—(सं पुं) कवच ।
मजार ।

मकरंद—[सं पुं] कूलव यो,
कूलव भित्तवत थका गोदान-
वग ।

पुष्प रस । फूलोंका केसर ।

मकर—(सं पुं) मकर, मर्ग,
श्रृंग, गङ्गादेवीव वाहन,
माछ, ज्योतिषव बाणि चक्र
दण्ड बाणि, छलना ।

मगर या घड़ियाल नामक जल
जन्तु । मछली । बारह राशियों
में से दसवी राशि । छल ।
नखरा ।

मकसूद—(सं पुं) अतिशय, उद्वेग ।
अभिप्राय । अहंकार ।

(वि) अङ्घ्रिधत्त, गनेदे
छवा वा ऐष्ठा कवा ।

अभिप्रेत ।

मकान—[सं पुं] घर ।

गृह । घर ।

मकुना—(सं पुं) बचना ।

बिना दाँतवाला छोटा हाथी ।

[वि] टूटि-छापन ।

नाटा । छोटा ।

मकोड़ा—(सं पुं) गरु कौट

वा प्रख्या ।

छोटा कीड़ा ।

मकोय—(सं पुं) गच्छ विशेष

आरु ताव रत्न ।

एक प्रकार का छोटा पौधा या
उसका फल ।

मक्का—(सं पुं) गोबरान,

माकड़े, मुहलवानन तीर्थस्थान—

शुक्लत गन्धद्वय अन्न ठाँह ।

ज्वार । मकई । मुसलमानों का

प्रसिद्ध तीर्थस्थान ।

[सं स्त्री] एविष शांश ।

एक प्रकार की घास ।

मक्कार—[वि] बूँद, कपटीश ।

धूर्त । कपटी ।

मक्खन—(सं पुं) मांथन ।

नवनीत ।

मक्खी, मक्खिका—[सं स्त्री] मांथि,

बौ-मांथि ।

एक प्रकार की पतंग । मधुमक्खी ।

मक्खी-चूस—(सं पुं) कपन,

मांथिब नुनब पिडे कड़ा ।

भारी कंजूस ।

मक्ख—(सं पुं) यच्छ ।

यज्ञ ।

मक्खमल—[सं स्त्री] मक्खमल-एविष

चिकुण बह्मनीश काटोप ।

एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

मक्खौड—(सं पुं) ठाँहोयकवा ।

परिहास । हँसी ठुठा । [वि-

मक्खौलिया]

मग—[सं पुं] पथ, गगध देश ।

मार्ग । रास्ता । मगध देश ।

मगज—(सं पुं) मल्लिक, वीजव

डिउबव गाह ।

मस्तिष्क । बीजों के अन्दर की

गिरी ।

मगज-पक्षी—(सं स्त्री) नुन-पया ।

सिर खपाना ।

मगन—(वि) मग्न, अतिमग्न आनन्धित ।

परम प्रसन्न ।

मगर—(सं पुं) शँ विसाल ।

(अव्य) किछु, गिछे ।

लेकिन । पर ।

मगर-मच्छ—(सं पुं) गंगर वा
शँ विसाल गंगर जलपक्ष, डाडर
गाड ।

मगर या घड़ियाल नामक जल-
जन्तु । बहुत बड़ी मछली ।

मगरिख—[सं पुं] पश्चिम दिश ।
पश्चिम दिशा । [वि-मगरिबी]

मगरूर—(वि) अडिमानी, अशक्ती
अभिमानी । घमण्डी ।

मगही—(वि) गंगर देश, गंगरी
भावा ।

मगघ देश का ।

मचकना—(क्रि अ क्रि स) गटेगटे
गङ्ग कवि डाडिव लगी होवा,
गटे गटे कवा ।

मच मच शब्द कर जरा सा टूटने
को होना ।

मचना—(क्रि अ) यावञ्च कवा
(गोलवाल) विगपि होवा ।
(गण, कीछि) ।

(शोर आदि) आरंभ होना (धूम,
यश आदि) छा जाना या फैलना ।
(क्रि स-मचाना)

मचमचाना—(क्रि अ क्रि स) एने
गटे भाङ कवा वा शेछा दिया
गाते गचगच गङ्ग हय ।

इस प्रकार दबाना या दबना
कि मच मच शब्द हो ।

मचलना—[क्रि अ] कोनो वस्तु
वाते केरुवा वा तिरौताइ
कवा छिप ।

किसी चीज के लिये बालकों या
स्त्रियों की तरह हठ करना ।

मचान—(सं स्त्री) काठि वाँहरे
बहिन वाते गङ्गा उथ छाः ।
काठ और बाँस बाँधकर चौकी
की भाँति बनाया हुआ बैठने का
स्थान । मंच ।

मचिया—(सं स्त्री) गङ्ग ग्राटे । गिरा ।
छोटी चारपाई । पीढ़ी ।

मच्छड़, मच्छर—(सं पुं) मश ।
एक खून चूसनेवाला व उड़नेवाला
कीड़ा । मशक ।

मच्छरदानो—(सं स्त्री) आर्द्रवा ।
मसहरी ।

मच्छी, मछली—[सं स्त्री] गाड ।
मीन । मत्स्य ।

मछुआ (वा)—[सं पुं] गाडूटे,
केरुवा । मछली मारनेवाला ।

मजदूर, मजूर—[सं पुं] बहुरा।

श्रमिक।

मजदूरी, मजूरी—[सं स्त्री] मजदूरी,

बहुराब प्राविश्रमिक।

मजदूर का काम या भाव। मज-

दूर का पारिश्रमिक।

मजबूत—(वि) दृढ़, मरुत, बलवान।

दृढ़। पक्का। बलवान।

मजबूर—(वि) विवश, बाधा।

विवश। लाचार।

मजबूरन—(क्रि वि) बाधा देह,

विवश अवस्थात।

लाचारी की हालतमें।

मजमा—(सं पुं) बीज।

बीज-भाज।

मजमून—(सं पुं) निवक्त-प्रवक्त

आदिब विषय वस्तु, निवक्त, प्रवक्त, बचना।

किसी लेख आदि का विषय।

लेख।

मजलिस—(सं स्त्री) गडा,

मंजलिष्ट, (गान बाजनाब वा गोटे थोबा गमाज)

महफिल। सभा।

मजहब—[सं पुं] पंथ, मत, धर्म।

धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।

मजाक—(सं पुं) शैशि-तामचा,

ठाठो-मन्त्रवा।

हँसी, ठट्टा।

मज्जार—(सं पुं) गमाधि, कवव।

समाधि। कब्र।

मज्जाल—(सं स्त्री) गामर्था, मक्ति।

सामर्थ्य। शक्ति।

मज्जीठ—(सं स्त्री) मज्झिठा, मज्झाठि,

एविध बडा मता।

एक प्रकार की लता। इस लता

की जड़ और डण्ठलों से निकला

हुआ लाल रङ्ग।

मजीरा—(सं पुं) मज्जीरा, एविध

निच्छेइ गव्व खुट्टि ताल।

ताल देने के लिये कांसे की छोटी

कटोरियों की जोड़ी।

मजेदार—(वि) गोदाप लगा,

डाल, मनोबलक।

स्वादिष्ट। बढ़िया। मनोरंजक।

मज्जन—[सं पुं] ज्ञान, प्रादेशाबा।

स्नान। नहाना।

मज्जा—[सं स्त्री] शङ्ख बाजनाब

वस्तु, मज्जा।

हड्डी की नलीके अन्दरका गुदा।

मझार—[वि] माजत।

बीचमें।

मझियारा—(वि) माखर ।

बीचका ।

मटकना—[क्रि अ] गी बेलोई कुवा,
इष्टोनि कवि शउ अथवा छकूब
ठाव मिश्रा । केदाशीटेक चोरा

लचक कर नखरे से चलना ।

नखरे से हाथ या आँखें नचाना ।
देखना ।

[सं पुं] माटिब गरु बाठन ।

छोटा मटका । मिट्टीका पुरवा ।

मटका—(सं पुं) माटिब कलश ।

मिट्टीका घड़ा । (सं स्त्री-मटकी)

मटकना—(क्रि स) इष्टोनि कवि
जिदाताव पदव याइलुनि, शउ,
छकू आदि नहूवा ।

नखरे से स्त्रियों की तरह उँग-
लियाँ, हाथ, आँख आदि नचाना ।

मटर—(सं पुं) मटेब माथ ।

एक अन्न जिसकी दाल और
तरकारी बनती है ।

मटर-गश्त—[सं पुं] फूबा-छका ।

सेर सपाटा (सं स्त्री-मटर
गश्ती)

मटियाना—(क्रि स) माटिटेन धोवा,
पबिकाव कवा ।

मिट्टी लगाकर मांजना । मिट्टी
लगाना ।

मटिया-मेट—(वि) नई कवा ।
विनष्ट ।

मट्टा—(सं पुं) बोल ।
छाछ ।

मठधारी, मठाधोश—(सं पुं)
गत्ताधिकार ।

किसी मठका अधिकारी महन्त ।

मठिया—(सं स्त्री) गरु मठ-
बन्निव ।

छोटा मठ ।

मढ़क—[सं स्त्री] बहण पूर्ण कथा,
जुटिल तथा ।

ऐसा पेचीली बात जो जल्दी
समझ में न आवे । भेद ।

मढ़—(वि) छिद कवि एटेक
ठाउते बहि थका ।

अड़कर बैठनेवाला ।

मढ़ना—(क्रि स) (चाबिउकाटेन)

मेदिउवा, बाण यज्ञत चायवा
नगोवा, कितापत बाकनि
नगोवा, यइनव उपबत दोब
जापि मिश्रा ।

चारों ओर लगाना या लपेटना ।
बाजेके ग्रंथपर चमड़ा लगाना ।

पुस्तकपर जिल्द लगाना । किसी
के सिर काम या दोष थोपना ।
(क्रि ज) यावज्ज शोबा ।
आरम्भ होना । मचना । अस्ति-
त्वमें आना ।

मढ़ी—(सं स्त्री) गढ़ मठ,
गवाधि ।

छोटा मठ । समाधि ।

मणिघर—(सं पुं) गाग ।
साप ।

मणिबंध—(सं पुं) शोतब कछा ।
गणवद्ध । कलाई ।

मतंग (ज)—(सं पुं) शोती,
येथ ।
हाथी । बादल ।

मत—[सं पुं] मठ, गम्भीर,
धर्म, पंथ, इच्छा, निर्वाचन
गमयत प्रिया मण्ड, छोट ।

सम्मति । विचार । धर्म । पंथ ।
आशय । निर्वाचन के समय किसी
व्यक्ति के पक्षमें दी जानेवाली
सम्मति । (वोट)

[क्रि वि] नश्य, नाई
(नकाबाधक) ।

न । नहीं ।

मत-दान—[सं पुं] मठ दान ।
मतदेनेकी क्रिया या भाव (वोटिंग)

मतलब—[सं पुं] इच्छा, अभि-
धास्य, आर्थ ।

आशय । मानी । स्वायं । उद्देश्य ।
लगाव । (वि—मतलबी)

मतवाला—[वि] पागल, मठनीया
(निष्ठित)

नशेमें चूर । मस्त । पागल ।
(स्त्री—मतवाली)

मतवाली—[सं स्त्री] मठत
आभमान ।

मत्तता । अभिमान ।

मताधिकार—[सं पुं] छोटोधिकार ।
मत । वोट देनेका अधिकार ।

मतारी, महतारी—[सं स्त्री]
माई । आई ।
माता ।

मति—[सं स्त्री] बुद्धि, बुद्धिनि ।
बुद्धि । समझ ।

मति-भ्रम—(सं पुं) मतिव्यय,
कोनो कथा झूठके बुझा
अवस्था ।

बुद्धिमें होनेवाला वह विकार
जिसके कारण मनुष्य कुछका कुछ

समझने या कोई निराधार बात
मानने लगता है ।

मति-मंद—[वि] कम बुद्धियुक्त, मूर्ख ।
कम बुद्धिवाला । मूर्ख ।

मतिमान्—(वि) बुद्धियुक्त ।
बुद्धिमान ।

मनैक्य—[सं पु] एकमत होना ।
किसी विषयमें सब या कुछ लोगो
का विचार या मत एक होना ।

मत्था—(सं पु) मूत्र ।
माथा । सिर ।

मत्थे—[क्रि वि] मूत्रित, आश्रयित ।
मस्तक या सिर पर । आसरे या
भरोसे पर ।

मत्सर—(सं पु) डाह, जेहा, शं ।
डाह । ईर्ष्या । क्रोध ।

मथना—(क्रि स) घोटो, मथा,
थंब कबा, डालपट्टे गिफास्त कबा ।
बिलोना । नष्ट करना । घूम घूम
कर पता लगाना । अच्छी तरह
विचार करना ।

मथनियों, मथनी, मथानी—
[सं स्त्री] मथनी, घोटोनी,
घोटो-मावि ।
दही मथनेका बर्तन या डण्डा ।

मथित—[वि] मथा होना ।
मथा हुआ ।

मद—(सं पु) निद्रा, अशक्त, गर्क,
मत्तलीला अवस्था, मत्तता मत्त,
नाउपानी ।

नशा । धन, बल, विद्या आदिका
घमंड । मस्ती । मत्तता । आनंद ।
प्रसन्नता । मद्य, शराब ।

(सं स्त्री) शिष्टावर पक्षा,
थकन, भाग ।

विभाग । खाते । किसी लेखे या
विषय विभाग का शीर्षक ।

मदक—[सं स्त्री] मोपक ।
अफीम के सत्त से बननेवाला एक
मादक पदार्थ ।

मदद—(सं स्त्री) सहायता ।
सहायता ।

मदन—(सं पु) मदन, कामदेव,
छोटोमोरा, प्रेम ।
कामदेव । मोरा । प्रेम ।

मदपी—[वि] मदपी ।
शराबी ।

मद-मत्त—[वि] मत्तलीला ।
मत्तवाला ।

मदरसा—(सं पु) माझाठा ।
पाठशाला ।

मदांध—[वि] मदमछ ।

मदोन्मत्त ।

मदाद—[सं पुं] मदाद ।

आक ।

मदारी—(सं पु) बाजीर ।

बाजीगर ।

मदिर—[वि] मतलीया कबा बछ,

मछ ।

मत्तता उत्पन्न करनेवाला । नशा

लानेवाला । मत्त । मस्त ।

मदिरा, मद्य—(सं स्त्री) मद,

बाउपानी ।

शराब ।

मदीय—(वि) शराब ।

मेरा ।

मदोद्धत, महोन्मत्त—[सं पुं]

मदोन्मत्त, मदमछ ।

वह जो मद्य आदिके नशेके कारण

उन्मत्त हो । वह जो अधिकार

आदिके कारण उन्मत्त हो रहा

हो । जिसे घमंडके कारण भले

बुरे कां ज्ञान न हो ।

मद्विम—(वि) मश्याय, शिथिल-धायाक

मखलीया ।

मध्यम । कम अच्छा । कुछ

खराब या घटकर । मन्द ।

मद्यप—[वि] मदपी ।

शराबी ।

मधु—(सं पुं) शो, बगच्छ थंडू,

अमृत, पानी मद ।

शहद । वसन्त ऋतु । अमृत ।

पानी, मदिरा । महुआ ।

(वि) मिठा, सोदाप नगी ।

मीठा । स्वादिष्ट ।

मधुकर—(सं पु) डोमोबा ।

भ्रमर ।

मधुकरी—(सं स्त्री) गाधू गन्नागोद

थोदा नूचि, डात आमिर डिक्का ।

साधु-संन्यासियो की वह भिक्षा

जिसमें केवल पका हुआ भोजन

लिया जाता है ।

मधुचक्र—[सं पुं] शो-शक ।

शहद की मक्ली का छत्ता ।

मधुप—(वि) शो-थोउंठा,

डोमोबा ।

मधु पीनेवाला ।

(सं पुं) देवता, डोमोबा ।

देवता । भोरा ।

मधुपर्क—(सं पुं) मधुपर्क । दे,

मिठे, पानी, छेनी आरु नो

मिठलि देनावछ ।

देवताओं को चढ़ाने के लिये एक
में मिलाया हुआ दही, घी,
जल, चीनी और शहद ।

मधुमक्खी, मधुमक्षिका—(सं स्त्री)

जो मांखि ।

फूलोंका रस चूसकर मधु एकत्र
करनेवाली मक्खी ।

मधुमास—[सं पुं] वसन्तकाल, ठंठ

आरंभ वशात् मास ।

चैत और बैशाख के महीने ।

मधुमेह—[सं पुं] रक्तमूत्र ।

बढ़ा हुआ प्रमेह रोग ।

मधुरिमा—[सं स्त्री] मधुविभा,

स्मरवत्ता ।

मधुरता । सुन्दरता ।

मधुशाला—[सं स्त्री] शर्बत पोकान ।

शराब बनने और बिकने का
स्थान ।

मधूक—(सं पुं) मधुवा गन्ध आरंभ

फल ।

मधुवा । (पेड़ और फल)

मध्य—(सं पुं) मध्य, माज, ककाल ।

बीचका भाग । कमर । अंतर ।

(वि) माज्जत धका ।

जो बीचमें हो ।

मध्यम वर्ग—(सं पुं) मध्यम
वर्ग ।

समाज का बीचवाला वर्ग ।

मिडिल क्लास ।

मध्यस्थ—(वि) मध्यस्थ ।

जो बीच में हो ।

[सं पुं] पूछा प्रवा कवि दिउंठा ।

आपस में मेल या समझौता
करानेवाला । (सं स्त्री-मध्यस्थता)

मध्याह्न—(सं पुं) दृधवीणा ।

ठीक दोपहर ।

मनःपूत—(वि) मनःपूत, मनउ

लगा, यत्थष्टे ।

मन-चाहा । यथेष्ट । मनको

प्रसन्न करनेवाला ।

मनका—[सं पुं] जपिवर वा

बादशाह कवा मालाब गुटि ।

मेरुमण्डल उपर थङ्ग ।

माला का दाना । गरदनके पीछे

रीढ़ की सबसे ऊपरकी हड्डी ।

मनःगदंत—[वि] मन गंठा, मन

पठा ।

अरने मनसे गढ़ा हुआ । कपोल-

कल्पित ।

मनचला—[वि] मज्जिक । माइजी

साहसी । रमिक ।

मनचाहा—(वि) मनत लगी,
यत्नेष्ट ।

इच्छित । यथेष्ट ।

मनचीता—(वि) मनत प्रता,
काप्रनिक ।

मनमें सोचा हुआ ।

मनन—(सं पुं) मनन, चिन्तन,
भाननदेव भावि छिन्ति मनते
छादव कदा कार्या ।

चिन्तन । अच्छी तरह समझकर
किया जानेवाला अध्ययनया विचार

मननशील—(वि) मननशील, यि
गदाय मनन करे ।

जो बराबर मनन या चिन्तन
करता रहता हो ।

मनमाना—(वि) यि भान नाग,
इच्छाश्रुति, मनत यि आह ।

जो अच्छा लगे । यथेष्ट । जो
कुछ मनमें आवे ।

मनमुटाव, मनमोटाव—[सं पुं]
वैमनस्य, मत-उदय होवा ।
मन में होनेवाला वैमनस्य या
विराग ।

मनमोदक—[सं पुं] मनत
श्रुत कलना कदा अगस्त्य कथा ।

मनमें सोची हुई सुखद, पर
असम्भव बात ।

मन-मौजी—(वि) कोना छिन्ति
नरुति निष इच्छा मत काव
कदा । श्रेष्ठाटावी,
बिना किसी सोच विचार के मन
माने काम करनेवाला । स्वेच्छा-
चारी ।

मनसब—(सं पुं) पद, अधिकार ।
पद । अधिकार ।

मनसा—[सं स्त्री] मनसा, देवी
विश्वेश्वरी ।

एक देवी का नाम ।

(क्रि वि) मनते ।

मनसे । इच्छा या विचार से ।

मनसाना—(क्रि अ) उत्साह
अथवा आवेग पूर्ण होवा ।
उत्साह या उमंगमें आना ।

मनसिज, मनोज, मनोभव—[सं पुं]
काय, कायदेव, छलमा ।
कामदेव ।

मनसूबा—(सं पुं) शक्ति, वीर्य,
इच्छा, योजना ।
युक्ति । ढंग । इरादा ।

मनस्ताप—(सं पुं) मनो कष्ट,

मनताप, गन्ताप ।

मनमें होनेवाला कष्ट । पछतावा ।

मनस्वी—(वि) यशमना, अतिहा-

माली, बुद्धिमान ।

बुद्धिमान ।

मनहुँ—(अव्य) येन ।

मानो ।

मनहूस—(वि) अशुभ, कदाकांक्ष,

गमाई दुखी, उदासीन, आरु-
नीबद्ध थका ।

अशुभ । देखनेमें कुरूप और अप्रिय।
सदा दुखी, चुप और उदास
रहनेवाला ।

मना—(वि) निषिद्ध ।

निषिद्ध ।

मनाना—[क्रि स] गन्नुष्ट कवा,

थं; उठा, लोकरु कृष्णई बबाई
गन्नुष्ट कवा, प्रार्थना कवा ।

रुटे हुए को प्रसन्न करना । राजी
करना । ईश्वर, देवता आदि से
किसी काम या बात के लिये
प्रार्थना करना ।

मनावन—(सं पुं) थं; अथवा

अभिमान कवि थका गकलक
गन्नुष्ट कवा क्रिया अथवा भाव ।

रुटे हुए को मनाने की क्रिया या
भाव ।

मनाही—[सं स्त्री] निषेध, बाधा ।
निषेध । रोक ।

मनियारा—(सं पुं) लोण बेपारी,
लोण, मणि, भुजा आदिब भाज
बेसा पबीका कबोता ।
जौहरी । मनहार ।

मनिहार—[सं पुं] एक प्रकार
रुवि आनि अलङ्कार बिक्रेता ।
चुडी-हारा । (सं स्त्री-मनिहारिन)

मनीषा—[सं स्त्री] बुद्धि,
मनीषा, ज्ञान ।
बुद्धि । अक्ल ।

मनीषी—(वि) ज्ञानी, पंडित,
बुद्धिमंत । मनीषी ।
पंडित । ज्ञानी । बुद्धिमान ।

मनुआँ—(सं पुं) मन, मन्त्र ।
मन । मनुष्य ।

(सं स्त्री) एविध कपास ।
एक प्रकार की कपास ।

मनुज—(सं पुं) माहुर ।
आदमी ।

मनुजाद—[सं पुं] नवभक्ती
नवभक्तिगठोत्तरी ।

वह जो मनुष्यों को अथवा मनुष्य का मांस खाता है ।

मनुसाई—[सं स्त्री] अवाङ्मय, वश्रुता ।
मनुष्यता । पराक्रम ।

मनुहार—(सं स्त्री) शोचावृत्ति, कादो-कोकालि, प्रार्थना, शांति ।
मनावन । खुशामद । प्रार्थना । आदर । शांति ।

मनोह—[वि] आकर्षणीय, सुन्दर, मनोह्र ।
मनोहर ।

मनोनिग्रह—(सं पुं) मनव ईच्छा, प्रवृत्ति आदिक वश कर्ता ।
मनका निग्रह ।

मनोमय—(वि) मनोऋप, मानस, मानसिक ।
मनसे युक्त या पूर्ण । मानसिक ।

मनोविकार—(सं पुं) मनत उठे, आवराधि ।
मनमें उठनेवाले भाव ।

मनोति (सी), मन्मथ—(सं स्त्री) मानस, कोनो ईच्छा पूर्णव वाचे देवी, सेवुताटेल, आग-बढ़ोवा पूजा ।

किसी कामना की पूर्ति के लिये मानी हुई किसी देवताकी पूजा ।
मनोती ।

मम—(सर्व) मेरा ।
मेरा ।

ममिया—[वि] योमाव गवक्रर लेथीया ।
सम्बन्धमें मामाके स्थान का ।

ममीरा—(सं पुं) वनोषधि निरुष, चक्रव असूत्रव उषध ।
एक पीघो की जड जो आँख के रोगों की दवा है ।

मयंक—(सं पुं) छल ।
चन्द्रमा ।

मय—(सं पुं) मय नाशव दानव, आदेशविकार एटि छाति ।
एक असुर । अमेरिका की एक प्राचीन जाति ।

[प्रत्यय] उद्धरण, बुद्ध, प्रवृत्ता बोधक अत्यय ।
तद्रूप, विकार और प्रचुरता का बोधक ।

मयस्सर—(वि) झलझ, पोवा ।
प्राप्त, मुलभ ।

मयूख—[सं पुं] किरण, पोहव, शोभा, पर्वत ।

किरण । दीप्ति । प्रकाश ।
शोभा । पर्वत ।

मयूर—[सं पुं] मयूर, म'वा छाये ।
मोर ।

मरकट—[वि] शूब, कीच ।
बहुत ही दुबला-पतला और क्षीण
[सं पुं] बाल्मव ।
मकंट (बन्दर)

मरकत—[सं पुं] मरकत मणि,
पौष्पा ।
पद्मा (रत्न)

मरगजा, मलगजा—[वि] मिहि
वा शंशि विकृत कवि दिग्वा,
शहनि खोदा ।
जो मसलकर विकृत और विरूप
कर दिया गया हो । रौंदा हुआ ।

मरघट—(सं पुं) मणान ।
स्मशान ।

मरज, मर्ज—(सं पुं) बेसाबी,
बेसाब ।

रोग । बीमारी

मरजाद्—(सं स्त्री) जीवा, अतिष्ठा,
बीटि, बर्बादी ।

सीमा । प्रतिष्ठा । रीति ।

मरजी, मर्जी—[सं स्त्री] इच्छा,
कृपा, अग्रगता, खीरुडि ।

इच्छा । कृपा । प्रसन्नता ।
स्वीकृति ।

मरणासन्न—[वि] मरणागन्न, मरवाँ
मरवा अतन्हाउ थका ।

जो मरने के बहुत समीप हो ।

मरतबा—(सं पुं) पद, बार ।
पद । बार ।

मरदानगी—(सं स्त्री) पौक्य,
वीर्य, शक्ति ।
पौरुष । शूरता । साहस ।

मरदाना—(वि) पूक्य गश्कीय,
वीर्य शूचक ।
पुरुष-सम्बन्धी । वीरोचित ।
(सं पुं) वीर ।
वीर ।

मरना—[क्रि अ] मरा, मृडू
होवा, अकर्ण्य शै योवा ।
शरीर से प्राण निकलना । कुम्ह-
लाना । बेकाम हो जाना ।

मरमराना— (क्रि स क्रि अ)
मर मर शक कबा वा होवा ।
मर मर शब्द होना या करना ।

मरम्मत—(सं स्त्री) मरदानि,
ठिक कबा, भगा बटा कारी ।
किसी वस्तु का टूटा फूटा या

बिगड़ा हुआ अंश ठीक करने का काम । दुहस्ती ।

मरहम, मल्लम—(सं पुं) मलय, मित्रि वा गानि प्रिया उषध । घावपर लगाने का औषध का गढ़ा, चिकना लेप ।

मरहम-पट्टी—[सं स्त्री] कोना या आदिउ उषध लगाई काटोब बाकि प्रिया कार्य । घावपर दवा लगाकर पट्टी बांधने का काम ।

मरातिब—(सं पुं) पद, शबर अङ्ग, पतका । पद । मकान का खंड । तल्ला । मुगल बादशाहों का एक प्रकार बड़ा झण्डा ।

मराल—[सं पुं] शैश, बौबा । शाली । हंस । घोड़ा । हाथी ।

मरियल—[वि] बेगारी, दुर्बल । बहुत दुर्बल ।

मरीचि (का)—(सं स्त्री) मरीचिका, शृंग-तुला, किव । किरण । प्रभा । मृग-तृष्णा ।

मरीज—(सं पुं) बेमार । रोमी ।

मरुत्—[सं पुं] वायु, आँध । वायु । प्राण ।

मरुत्—(सं पुं) काटोबनि, कटे, वेपना । मरोड़ । पीड़ा ।

मरोड़ना, मरोड़ना—[क्रि स] बल अयोग्य कबा, मोचबा चक्रुब ईक्षित प्रिया, नाक मूत्र कोटोबा, कटे प्रिया । बल डालना । ऐंठना । आँख से इसारा करना । नाक भौंह चढ़ाना, पीड़ा देना ।

मर्ग—(सं पुं) काश्मीरब पञ्च चबौशा पाशबी नान । काश्मीर में पहाड़के ऊपर वह छोटा मैदान जिसमें पशु चरतेहों ।

मर्तबान—(सं पुं) आचाब, शिडे आदि बंधा चीनाशक्ति पथबा माटिब बाचन ।

अचार । ची आदि रखनेका चीनी मिट्टी या सादी मिट्टीका बरतन ।

मर्द—[सं पुं] मादृश, पुरुष, मादृजी आक धर्मीलोक, शायी ।

मनुष्य । पुरुष । साहसी और पुरुषार्थी व्यक्ति । पति ।

मर्दन - [सं पुं] मिश्र, ढपेटो

कबा, ढपेटा, नष्ट कबा ।

कुचलना । रौंदना । मसलना ।

नाश ।

[वि] मर्दन, नाश अथवा

गंशव कढोता ।

मर्दन । नाश या संहार करने वाला ।

मर्दना - (कि स) मिश्र, नष्ट कबा,

नाबिपेटोवा, मर्दन कबा ।

मर्दन करना । मसलना । नष्ट

करना । मार डारना ।

मर्दुम-शुमारी - [सं स्त्री] गं-

मिगल, खन मिगल ।

जनगणना ।

मर्दुमी - [सं स्त्री] पोरुष ।

पोरुष ।

मर्मज्ञ - (वि) उबछ ।

तत्वज्ञ ।

मर्मभेदी - [वि] मर्मउठनी, क्षम-

अर्थी, आखुबिक कष्टे मिश्र ।

हृदयमें चुभनेवाला । हार्दिक

कष्ट पहुचानेवाला ।

मर्मर - [सं पुं] पाठव

मर्मरबनि (क्षनि) मर्मर ।

पत्तों आदिका मर मर शब्द ।

मर्मवचन, मर्मवाक्य - (सं पुं)

झोताब अखुबत कष्टे मिश्र

वाक्य वा कथा ।

वह बात जिससे सुननेवाले का

हृदय दुखे ।

मर्मांतक (तिक) - [वि] क्षम-

विदारक, अखुबत बबटैक शोक

मिश्र ।

हृदयमें चुभनेवाला ।

मर्मा - (वि) उबछ ।

तत्वज्ञ ।

मर्यादित - [वि] गीशमिठ, मर्या-

मिठ, मि निखब गीश वा

मर्यादाब डिउनउठ थोकर ।

जिसकी सीमा या हृद निश्चित

हो । जो अपनी मर्यादा या सीमा

के अन्दर हो ।

मर्षण - [सं पुं] क्षम, पाव-खशब

एवा कार्य । कष्टे, अन्याय

यादि गश् कबा कार्य वा भाव ।

क्षमा । कष्ट, अन्याय, आघात

आदि धैर्यपूर्वक या चुपचाप

सहने की क्रिया या भाव ।

(वि) नाशक, मूव कढोता ।

नाशक । मूर करनेवाला ।

मल्ल—(सं पुं) गांव मलि, शू-मूठ,
मयला, पीप, कलक ।

मैल । विष्ठा । विकार । पाप ।

मल्लका—(सं स्त्री) गहाबागी ।
महाराणी ।

मल्लना—(क्रि स) मोचन, मोहाव,
गान ।

हाथ से घिसना या रगड़ना ।
मांजना । मालिश करना ।

मल्लवा—(सं पुं) जावन-छोथव,
डडा बबर शेठा, शिल आदिब
द'म ।

कूड़ा कर्कट । गिरी हुई इमारत
की ईंटे, पत्थर आदि या उनका
ढेर ।

मल्लमास—(सं पुं) मलमास,
ज्योतिषव गोव आरु छात्र
प्रयोगे मतव गणनाव मिल कवि-
बटेल प्रति तिनि बश्चव
बेचिटके लोवा माह ।
अधिक मास ।

मल्लय—(सं पुं) दक्षिणात्यव
अरुल विणव, मालावाव उपकुल,
उरु अरुल निवासी, वगी
कनक ।

दक्षिणका एक अंचल, मलाबार ।
उस अंचलके निवासी । सफेद
चन्दन ।

मल्लयज—(सं पुं) जप्पन ।
चन्दन ।

[वि] मलय, पर्वतत अम्मा वा
उपजा ।

मलय पर्वत पर या से उत्पन्न ।

मल्लयानिल—(सं पुं) मलय बाव,
वगच्च यावञ्चिते दक्षिण दिग्गव
पवा बला जगकि आरु नीतल
वताय ।

मलय पर्वत की ओरसे आनेवाली
वायु । वसन्त ऋतुकी सुखद और
सुगंधित वायु ।

मल्लाई—(सं स्त्री) खीव, कीव,
गावतड ।

देरतक गरम किये हुए दूधके
ऊपर का जमा हुआ सार भाग ।
साढ़ी । सार । तत्व ।

मल्लामत्त—(सं स्त्री) डावि-धक्कि,
मयला ।

डोट । फटकार । मैल । गंदगी ।

मल्लार, मल्लार—[सं पुं] गहाव,
वगच्च धाडुत गोवा एविध बाग,
वगगीडर एविध नाग, आर्य

गङ्गोत्तर एको खूब नाश ।
वर्षाकृतुमें गायी जानेवाला एक
राग ।

मल्लारी, मल्लारी—(सं स्त्री) रागिनी
विशेष ।

वर्षाकृतुमें गायी जानेवाली एक
रागिनी ।

मल्लाज—(सं पुं) शूत्र, शौक ।
दुःख । रंज ।

मल्लाह, मल्लाह—[सं पुं] बाटोवाला ।
केवट । माँझी ।

मल्लाही, मल्लाही—(वि) बाटोवाला
गश्कौश ।

मल्लाह सम्बन्धी ।

[सं स्त्री] बाटोवाला कार्य,
जाटोवा विशेष ।

मल्लाह का कार्य, पद या भाव ।
एक विशेष प्रकार की तैराई ।

[ब्रह्म स्तोक]

मल्लिन—(वि) मलिन, कूटिन,
पापी, भ्रान्त ।

मैला । कपट-भरा । विकार
युक्त । पापी । म्लान ।

मल्लिया-मेट (मटिया-मेट)—(सं पुं)

गर्वनाश, नष्ट कर्ता कार्य ।

सर्वनाश । बरबादी ।

मल्लोदा—[सं पुं] मलिका,
विशिष्ट डाल उधर चाप
विशेष ।

एक प्रकारका बकिया मुलायम
ऊनी कपड़ा ।

मल्लुक—(वि) खूब, धुनीश ।
सुन्दर । मनोहर ।

मल्ल—(सं पुं) नाल, पाटोवाला ।
पहलवानों की एक जाति ।
पहलवान ।

मल्ल-युद्ध—[सं पुं] नाल-युद्ध ।
कुस्ती ।

मल्लाना—(क्रि स) ठूसा धोवा,
निद्रूका ।

चुमकारना । पुचकारना ।

मवाह—[सं पुं] शूज, मल,
यावर्जना, गङ्गा ।
पीब । मल । गन्दगी ।

मवास—(सं पुं) शर्ज, आश्रय ।
दुर्ग । शरण या रक्षा का स्थान ।

मवेशी—(सं पुं) छठ्ठनी
वस्तु ।

चोपाया ।

मशक—(सं पुं) मश, नवीरव
थका डिल, माह आदि ।

मच्छड़ । शरीर पर का मसा ।
 (सं स्त्री) पानी काढ़ावब
 बाव चावबाव ठेगारी मोना ।
 बमड़े का बना बहु थैला जिसमें
 पानी भरकर लाते हैं ।

मशकत—[सं स्त्री] पवित्रम,
 मेहनत ।
 परिश्रम । मेहनत ।

मशीहूर—(वि) अग्निक, विधात,
 प्रसिद्ध । विख्यात ।

मशाल—[सं स्त्री] ज्यौब,
 आबिशा ।
 डण्डेमें चिथड़े लपेटकर बनाई हुई,
 जलाने की बहुत मोटी बत्ती जो
 हाथमें लेकर चलते हैं ।

मशालची—[सं पुं] आबिशा
 शारी, आबिशा वा ज्यौब हातत
 लै या उँठा जन ।

मशाल हाथमें लेकर चलनेवाला ।

मशीन—[सं स्त्री] कल, यन्त्र ।
 कल । यंत्र ।

मशक—(सं पुं) अभ्यास ।
 अभ्यास ।
 (सं स्त्री) पानी छवावले
 ठेगारी चावबाव मोना ।
 पानी भरनेकी मशक ।

मस—(सं स्त्री) छिगौशी, गौक
 टूँटिउवाव आगने गखा कोमल
 नोयबोव ।
 मसि । स्याही । मूँछे निकलने से
 पहले उसके स्थानपर होनेवाली
 रोमावली ।

मसकत, मसकत—(सं स्त्री)
 पवित्रम, मेहनत ।
 परिश्रम । मेहनत ।

मसकना—[क्रि स क्रि अ]
 भाङ्गि वा काटि योबाटैक शेछा
 वा पटोवा ।
 इस प्रकार दवाना या दबना कि
 टूट या फट जाय ।

मसखरा—(सं पुं) वख्खा, मख्खा ।
 परिहास करनेवाला । दिल्ली
 बाज ।

मसखरी—(सं स्त्री) मख्खा
 कार्या, विप्रप । पविशाग ।
 दिल्ली । परिहास ।

मसनइ—(सं स्त्री) डाँडव गोरु,
 गिंशागन ।
 बड़ा तकिया । सिंहासन ।

मसरफ—[सं पुं] बावबाव,
 खुबिधा, काव ।
 व्यवहार । उद्योग ।

मसल—(सं स्त्री) फकबा,
पट्टेछ । उनाशबन ।
कहावत ।

मसलन—[क्रि वि] उनाशबन
शिठाव ।
उदाहरणार्थ ।

मसलना—[क्रि स] कोना
बख छ्वाबटेक घोश, वा
शेफूकि दिया ।
दबाकर मलना, रगड़ना । [सं स्त्री-
मसलन]

मसला—[सं पुं] फकबा,
पट्टेछुब, जमगु, धन्न ।
कहावत । लोकोक्ति । समस्या ।

मसबिदा, मसौदा—[सं पुं]
प्राकप, खड्वा, मचाविदा ।
प्रालेख । युक्ति । तरकीब ।

मसहरी—(सं स्त्री) आँट्रेवा,
मश्वि ।
मच्छरदानी ।

मसा, मरसा—(सं पुं) गबीवत
होवा तिन, माश आदि । अर्ष
बेशावत उनाई अश मांग खण्ड,
मश ।

काले रंगका उमरा हुआ मांस
का वह दाना जो शरीरपर कहीं

कहीं निकलता है । बवासीरमें
निकलनेवाला मांसका दाना ।
मच्छड़ ।

मसान—(सं पुं) अनाम ।
मरघट । मसान ।

मसालेदार—(वि) मचला बूछ,
जिसमें मसाला मिला या पड़ा
हो ।

मसि—[सं स्त्री] चिगाँशी,
काखल ।
स्याही । कागज । कालिख ।

मसीत (इ)—[म स्त्री] मसजिद ।
मसजिद ।

मसीह (१)—(सं पुं) गौडू श्वटे
अंगशेष ।
ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा ।
पेगम्बर ।

मसीही—[सं पुं] श्वटियान ।
ईसाई ।

मसूदा—[सं पुं] दौडक धवि
थका शुख भितवव नांग थण्ड,
दौडव शुवि ।

मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें
दाँत उगे होते हैं ।

मसूर—[सं स्त्री] गहूब दाजि,
माश ।

एक प्रकार की दाल ।

मसृण—(वि) निशि, छिक्काव ।
चिकना ।

मसोसना—(क्रि अ) मनोवेग
बोध कर्ना, मनते दुःख कर्ना ।
किसी मनोवेग को रोकना ।
‘मनही मन खेद या दुःख करना ।
कुढ़ना ।

[क्रि स] मोहरा, छेपिऊ-
लिउवा ।

ऐठना । निचोड़ना ।

मस्त—(वि) मतलीया, मत्त, प्रमत्त
आरु निश्चिन्त, सोदनत
मतलीया ।

मतवाला । प्रसन्न और निर्दिष्ट ।
यीवन मद से भरा हुआ ।

मस्त-मौला—[वि] आपोन-ठोला ।
मनमौजी ।

मस्ताना—(वि) मतलीयाव निठिना,
मत्त ।

मस्तों का सा । मस्त ।

(क्रि अ) मतलीया होवा ।
मन्म होता ।

मस्तिष्क—[सं पुं] गण्डू, मानसिक
शक्ति, बुद्धि ।

मस्तक के अन्दर का गुदा ।
मानसिक शक्ति । बुद्धि ।

मस्ती—(सं स्त्री) मतलीया गुण,
मद ।

मतवालापन । मद ।

मस्तूल—(सं पुं) माञ्जल, पाल
आदि तबियव निमिष्ठे नाउ
वा आशाखर उपरत थियटैक
मगोरा उबं थूठा ।

बड़ी नावोंके बीचका वह लट्ट
जिसमें पाल बांधते है ।

महँ—(अव्य) “त” । कवितात
आयोग होवा अधिकरण कारक
छिन्न । में ।

महँगाई—(सं स्त्री) महडा, महडा
होवा बाटव पोवा वानठ ।
महँगी । महँगीके कारण मिलने
वाला भत्ता ।

महँगी—(सं स्त्री) मरग, महडा
होवा भाव । शक्ति ।

महँगे होने का भाव या अवस्था ।
दुःख ।

महक, महकान—[सं स्त्री] गोह ।
गंध । वास ।

महकना—(क्रि ध) गोठकावा ।
गंध देना ।

महकमा—(सं पुं) मश्कूमा ।
व्यवस्था करनेवाला विभाग ।
सरिस्ता ।

महज—[वि] केवल, मात्र ।
केवल । सिर्फ ।

महताब—(सं स्त्री) ज्वालांक ।
चांदनी । महताबी ।

महताबी—(सं स्त्री) एकप्रकारका
आठ बांधी, बागिचा बाझ
उथ वहा ठाई ।
एक प्रकार की आतिशबाजी ।
बाग के बीच का चबूतरा ।

महतो—[वि स्त्री] वर डांडव ।
बहुत बड़ी ।

महतो—(सं पुं) मुखियाल, गाँव,
गमाऊ अथवा अमूर्छानव
मुखियाल ।

कहार । प्रधान । गाँव, समाज,
मण्डली आदिका मुखिया ।

महत्ता—[सं स्त्री] मशह ।
महत्व ।

महनीय—[वि] माननीय, पूजनीय,
महान ।
मान्य । पूज्य । महान ।

महकिड—[सं स्त्री] गडा, गजोड
गकिरी ।

सभा । जलसा । नाच गानेका
स्थान या जलसा ।

महबूब—(सं पुं) प्रिय, प्रेमपात्र,
वशू ।

प्रिय । प्रेमपात्र । दोस्त ।

मह-मह—[क्रि वि] खर्गक शूक ।
सुगन्धि या खुशबू के साथ ।

महर—[सं पुं] आदर शूक मश,
पक्षी विशेष । 'निकाश' व मश,
व पक्ष के कपापक्षक प्रिया
उपलोकन, योडूक आदि ।

बड़े आदमियों के लिये व्यवहृत
एक आदर सूचक शब्द । एक
प्रकार का पक्षी । मुसलमानों में
वह धन जो विवाह के समय वर
पक्ष से वधू पक्षको मिलता है ।

(सं स्त्री) प्रिया ।

कृपा । दया ।

महरम—(सं पुं) प्रथम आशीश ।
परम आत्मीय ।

(सं स्त्री) छांटा ।

अँगिया । चोली ।

महरा—(सं पुं) मुखियाल । भाडी
कठिउवा एठि जाति ।

कहार । मुखिया । सरदार ।

महुरि(री)- [सं स्त्री] शृङ्गिणी,
छाकबनी ।

मालकिन । घरवाली । नौकरानी

महल्ला—[सं पुं] अंगण, अलखशूब ।
प्रासाद । अन्तःपुर ।

महल्ला— (सं पुं) छत्रवती (चरवती) ।
शहरका वह विभाग जिसमे बहुत
से मकान हो ।

महसूल— (सं पुं) गाछल, सब
छाड़ा, खोजना ।

कर । किराया । जमीन की
लगान ।

महसूस—(वि) अश्चय ।
जिसका ज्ञान या अनुभव हो ।
अनुभूत ।

महाकाय— (वि) महाकाय, शक्त
आवृत ।
जिसका शरीर बहुत बड़ा हो ।

महागति—(सं स्त्री) निर्क्षाण, मोक्ष ।
मोक्ष ।

महानिर्वाण—(सं पुं) महानिर्क्षाण ।
बुद्ध आश्व शोभा निर्क्षाण ।
वह उच्च कोटिका निर्वाण जिसके
अधिकारी अर्हंत या बुद्ध होते हैं ।

महानुभाव—[सं पुं] महाशुद्ध,
उदार शब्दावशुद्ध, मध्य ।

बड़ा और आदरणीय व्यक्ति ।

महापातर, महापात्र, महाप्राज्ञण—
[सं पुं] श्रेष्ठकार्य करनेवाला
आर्य दान लोता वायुग । प्रधान
मन्त्री । जगन्नाथ प्रधान पांडा ।
मृतक कर्मका दान लेनेवाला
प्राज्ञण । महामन्त्री ।

महाप्रसाद—[सं पुं] देवताद्वारा
आर्गवद्वारा नैवेद्य । जगन्नाथ
अंगण । गान्ध, (वाग्धत) ।
जगन्नाथ जी पर चढ़ाया हुआ
भात । मास (व्यंग) ।

महाप्राज्ञ—(सं पुं) सब विद्वान् ।
बहुत बड़ा विद्वान् ।

महाबल्लाधिकृत—[सं पुं] शुद्ध-
शुद्ध गेनाध्यात्मक : बाद
वाग्धत उपाधि ।

गुप्तकालीन भारतमें साम्राज्य का
वह सर्वप्रधान अधिकारी जिसके
अधीन सारी सेना होती थी और
जो सैनिक राजमन्त्री होता था ।

महाभाग—(वि) महाभागवान् ।
भागवान् ।

महाभियोग—(सं पुं) युद्ध
अनागत जकलब विकटक यना
छकडब अधिवाग ।

वह अभियोग जो बहुत बड़े
अधिकारियों (राष्ट्रपति, महा प्रशा-
सक आदि) पर कोई बहुत अनु-
चित या हानिकारक काम करने
पर चलता हो (अं—इम्पचमेंट)

महामना—(वि) उदार मनशक्ति,
महाशक्ति ।
बहुत उच्च ओर उदार मनवाला ।

महामात्य—(सं पुं) प्रधान मंत्री ।
महामंत्री ।

महामारी—[सं स्त्री] मशायी,
माउब, गंजायक रोग ।
संक्रामक भीषण रोग ।

महायान—[सं पुं] मशायान
गन्धदात्र ।
बौद्धों के तीन सम्प्रदायोंमें से एक

महारथ, महारथी—(सं पुं)
बब बीब, डांडब युद्धार, वि
अकल दश शस्त्राब क्षुब्धब
लगत युद्ध कबिबटल पावग
आक अन्न-मन्न विज्ञात निष्प ।
प्राचीन भारतमें वह बहुत बड़ा

योद्धा जिसके अधीन अनेक रथी
योद्धा रहते थे ।

महाराज्ञी—[सं स्त्री] मशायी ।
महारानी ।

महार्घ—[सं पुं] मशार्घ, मशत,
वेचि प्राप्ती ।
बहुत अधिक मूल्यका । महंगा ।

महाल—[सं पुं] छुन्नो,
माटिब बन्दोवस्तुब नाबे केवा-
बना गौद गिल कवा एकटि
शोटे ।

मुहल्ला । जमीन के बन्दोवस्त के
विचार से कई गाँवोंका समूह ।

महालया—[सं स्त्री] मशालया,
छात्र आशिन मशिन आँडेगो,
शूर्जी भूखाब आशब आँडेगो ।

आश्विन कृष्ण अमावस्या जो
पितृ पक्ष का अन्तिम और पितृ
विसर्जन का दिन होता है ।

महावट—(सं स्त्री) आवब दिनब
बबयुष ।
जाड़े की वर्षा ।

महावत—[सं पुं] माउब, शायी
छलाउडा ।
हाथीवान ।

महावर—(सं पुं) गधवा तिवोताई
उचित वश। खेडूका खोलव पदेन वं ।

वह लालरङ्ग जिससे सौभाग्यवती
स्त्रियाँ अपने पैर रेंगती हैं ।

महासंधि, विग्रहिक—[सं पुं] कुछ
कालव युद्ध आरु गक्ति गम्भीर
उक्त अधिकारीव पदवी ।

गुप्तकालीन भारतका वह उच्च
अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों से
सन्धि और विग्रह आदि करने का
अधिकार होता था ।

महि (ही)—गृथिरी ।
पृथ्वी ।

महिदेव, महिसुर—(सं पुं)
वायुव ।
ब्राह्मण ।

महिष—[सं पुं] गध, गधियाश्च ।
भैंसा । राजा ।

महिषी—[सं स्त्री] गधेकी गध ।
बागी ।
भैंस । रानी ।

महीन—(वि) पातल, कोयल ।
पतला । बारीक । भीना ।
कोमल (स्वर)

महीना—(सं पुं) गध,
गधेकीया वेतन, तिवोताव
गधेकीया धर्म (छ्वा होवा) ।
मास । मासिक वेतन । स्त्रियोंका
मासिक धर्म ।

महीष (ति)—(सं पुं) गध ।
राजा ।

महुधा—(सं पुं) गधवा गध ।
मधुक वृक्ष ।

महुख—(सं पुं) गधवा, गधिमधु,
नो ।

महुवा । मुलेठी । गहद ।

महूरस—(सं पुं) गुरुर्द्ध, उड-
कण ।
मुहूर्त । शुभारम्भ ।

महेरा, महेस—[सं पुं] निव ।
शिव ।

महोगनी—[सं पुं] गधेगनि ।
चीकू या स्पार्ट का वृक्ष ।

महोच्च—(वि) वर उच्च ।
बहुत ऊँचा ।

महोदधि—[सं पुं] गान्ध ।
समुद्र ।

माँ—[सं स्त्री] गधे, गधे ।
माता ।

मौग—[सं स्त्री] गगन, आर्धना,
कपीलव गिराभांग ।

मांगने की क्रिया या भाव । वह
बात जिसके लिये किसी से
याचना, प्रार्थना या आग्रह किया
जाय । किसी बात की चाह या
आवश्यकता होने की अवस्था या
भाव । माथे का सीमन्त ।

माँगना—[क्रि स] . खोजा,
कोटना वस्तु पावब वावे इच्छा
अकाश कबा, आर्धना कबा ।
किसी से कुछ लेने की इच्छा
प्रकट करना । यह कहना कि
यह करो या यह दो । प्रार्थना
करना । चाहना ।

मांगलिक—[वि] मङ्गल श्रृङ्ख,
उत्त ।

मङ्गल करनेवाला । शुभ ।

[सं पुं] नाटकउ मङ्गल छोट्ट
पाठ कबा पाठ ।

नाटक में मङ्गल पाठ करने
वाला पात्र ।

मांगल्य—(वि) माङ्गल्य, मङ्गल-
श्रृङ्ख ।

शुभ । मङ्गल कारक ।

(सं पुं) मङ्गलव भाव ।

मङ्गल का भाव ।

माङ्गना—(क्रि व) माँह, मोहाव,
माघ, पबिकाव कब ।

मेल छुड़ाने, चिकना करने या
मजबूत बनाने के लिये किसी
चीज को रगड़ना ।

[क्रि स] अभांग कबा ।
अभ्यास करना ।

माँझ—(अव्य) त ।
में ।

(सं पुं) पार्श्वका, द्विभुवत ।
अन्तर । फरक ।

माँझा—(सं पुं) माङ्गली, पाङ्ग-
विभ पिङ्गा एक अकार अनकार ।
मना कन्याई पिङ्गा शालबीरा
काटपाव ।

नदीमें का टापु । पगड़ीपर पहनने
का एक प्रकार का आभूषण ।
विवाह के अवसर पर पहनने के
लिये वर और वधूके पीले कपड़े ।

माँझी—[सं पुं] नावबीरा, बाटोवाल,
महाह ।

केवट । मध्यस्थ ।

माँड़—[सं पुं] माव, माड़,
भाउव एठा ।

मात पकानेपर निकलनेवाला
पानी ।

मौड़ना—(क्रि स) बंहा, गिहा,
लिपा, बेगोई योरा, धान
आदिब नबाब पवा बीज वा
फल उलिउवा ।

मलना । गूँधना । लेप करना ।
फैलाना । जोरों से चलना ।
फसलों के डण्ठलों आदि में से
अनाज के दाने अलग करना ।
रोदना । सामने करना ।

[क्रि अ] योरा ।
गमन करना । चलना ।

मौड़लिक—[सं पुं] कोना अक्षर
वा ठाईब अनागक, कबतनीया
बजा ।

किसी मण्डल या प्रान्त का
शासक । किसी बड़े राजा को
कर देनेवाला छोटा राजा ।

मौड़व, मौड़ौ, मौड़्यौ—[सं पुं]
गुण, अतिथि शाला ।

विवाह आदिका मण्डप । अतिथि
शाला ।

मौड़ा—(सं पुं) चक्रव एक-
प्रकारब बेमार, गुण, एविध
पबठा (डाँठ भुवि) ।

मांस की पुतली पर झिझा पड़ने

का रोग । मण्डप । एक प्रकार
की रोटी ।

मौड़ी—[सं स्त्री] काटपाव चूडात
मिया गार, बं ।

कपड़े या सूतपर लगाया जाने
वाला कलफ ।

मौद—(वि) काखिशोन, उदाग,
पबाजित, डूननामूलक भावे
बेग्रा वा पातल ।

श्री-हीन । उदास । अपेक्षाकृत
बुरा या हल्का । मात, पराजित ।
(सं स्त्री) शिंखु अशुब शुदा
वा थका ठाई ।

हिसक जन्तुओंके रहनेका बिल
या गुहा । गुफा ।

मौदा—[वि] बेगारी, पवित्राख,
भागवि पबा ।

थका हुआ । रोगी ।

मांस—[सं पुं] मण्ड ।
गोश्त ।

मांसल—(वि) मांसवे भवा,
मकत ।

मांससे भरा हुआ । मोटा ताजा ।

मांसाहारी—(सं पुं) मांसाशरी,
मांस खाँउता ।

मांस खानेवाला

माकूल—[वि] उच्छिड, डाल,
तर्कत प्रबाध, निरुद्ध ।

उचित । अच्छा । तर्कमें परास्त ।
कायल ।

माखना—(क्रि अ) अश्रम
अथवा यगक्षुष्ट होना, मनत दुःख
अथवा श्लाघ होना ।

अप्रसन्न या नाराज होना । मन
में खेद या दुःख करना ।

माखी—[सं स्त्री] माथि ।
मक्खी ।

मागध—[सं पुं] छावण, डाटे ।
भाट ।

[वि] मगध देश ।
मगध देशका ।

मागधी—[सं स्त्री] मागधी
भाषा ।

मगध देशमें प्रचलित पुराना
प्राकृत भाषा ।

माचा—[सं पुं] पाटल, चाटे ।
पलंग । खाट । मचान ।

माजरा—(सं पुं) विवरण,
बुझासु, शटना ।

विवरण । वृत्तान्त । हाल ।
जटना ।

माटा—(सं पुं) बड़ा पक्का बिलन ।
लाल बड़ी चूँटी ।

माइना—(क्रि स) गप्पावा,
आदर कर्ता, शायन कर्ता, निहा ।
सजाना । धारण करना । आदर
करना ।

मातंग—[सं पुं] शाही, छाल ।
हाथी । चाडाल

मात—[सं स्त्री] प्रबाध । पराजय ।
(वि) प्रबाधित कर्तावा,
डूलना हीन, उन्मत्त । पराजित ।
किसीकी तुलनामें फीका, मन्द या
हीन, उन्मत्त, मस्त ।

मातदिल—(वि) क्रूरशीला,
कटकाक्ष ।

न बहुत ठण्डा, न बहुत गरम ।

मातना—(क्रि अ) मत्तलीया होना ।
मस्त या मत्त होना । बहुत नशेमें
हो जाना ।

मातबर—[वि] विश्वजी ।
विश्वसनीय ।

मातम—(सं पुं) बुढ़ा-शोक,
नीबवता बुढ़ाव भिद्ध । किसी
के शोकमें होनेवाला रोना-पीटना

मातमपुर्सी—(सं स्त्री) बुढ़क
आपान बनक गाहना निगा ।

मृतक के सम्बन्धियों के पास जा कर उन्हें सात्वना देना ।

मातृहस—[वि] अधीनह ।

किसी की अधीनता या देखरेख में काम करनेवाला ।

(क्रि वि) अधीनता । अधीनता । नीचे ।

माता—[सं स्त्री] माँ, वगैरह वोग ।

जननी । शीतला या चेचक नामक रोग ।

(वि) मठलीया । मतवाला ।

मातुल—(सं पुं) मोमाई । मामा ।

मातृक—[वि] मातृ गश्कीय, माईव वा आईव । माता सम्बन्धी । माता का ।

मातृका—(सं स्त्री) माई, माई, देवीगकलव श्रेणी विमेष । माता । धाय । एक प्रकार की देवियों का वर्ग ।

मातृकुल—[सं पुं] मातुल वंश । माता अथवा नानाका वंश या कुल ।

मात्रा—[सं स्त्री] मात्रा, परिमाण, खूब कृशिश काल, आश्वव उपबत दिशा गक अा ।

परिमाण । घन-राशि, रकम । स्वर की सूचक रेखा या चिह्न ।

मात्रिक—[वि] मात्रा गश्कीय, ह्य विमेष ।

मात्रा सम्बन्धी । जिसमें मात्राओं की गणना या विचार हो ।

माथ, माथा—[सं पुं] मूव । मस्तक ।

माथना—[क्रि स] मथा वा बाँटा कार्या । मथना ।

माथापन्धी—(सं स्त्री) मूव वना । ऐसा काम जिसमें मस्तिष्क की बहुत अधिक शक्ति व्यय हो ।

माथुर—(सं पुं) मथुरा निवासी, कायस्थ गकलव उपजाति । मथुराका निवासी । कायस्थों की एक जाति ।

माथे—(क्रि वि) मूवत, आश्वत । मथे । सिर पर । भरोसे या आसरे पर ।

मादक—(वि) मादक, बांशियाल ।
नशीला ।

मादन—[वि] बांशियाल, गठनीया
कवा ।
मादक । मस्त करनेवाला ।
(सं पुं) कामदेवद्वय पञ्चवायव
एक वाय ।
कामदेव के पाँच वाणोंमें से एक ।

मादर—(सं पुं) मादल ।
एक प्रकार का ढोल ।

मादा—(सं स्त्री) स्त्री जातिव औद ।
स्त्री जातिका जीव ।

मादा—[सं पुं] गल उद, योगाभा ।
गामर्षी, शूँष ।
मूल तत्व । योग्यता । सामर्थ्य ।
मवाद, पीव ।

माधुरी—[सं स्त्री] गामर्षी, सुगन्धिता,
गद, गाम्धुरी ।
माधुर्य । मिठास । सुन्दरता ।
शराव ।

मान—[सं पुं] प्रविशान, याकाव
वा गंधुबताव ज्ञाथ, बाह, छेय,
गर्व, श्रुतिगता गन्धान । गामर्षी ।
परिमाण । पैमाना । मोमा,
महता आदि सूचित करनेवाले
क्रमिक विभाग । अभिमान ।

प्रतिष्ठा । इज्जत । रुठना ।
सामर्थ्य ।

मानक—[सं पुं] नागपुं ।
मान ढंड । सर्वमान्य मान या
माप । (स्टैंडर्ड)

मानचित्र—(सं पुं) नागचित्र,
येथ ।
नक्शा ।

मानदेय—[सं पुं] प्रदेय गतिकलाकक
दिया। कौन न प्रत्यक्ष ।
वह धन जो किसीके सम्मान पूर्ण
पारिश्रमिक के रूपमें दिया जाता
है । (अं—आनरेरियम)

मानना—[क्रि अ] गन्त होना,
जीना नना, गानना, अगम
कवा गवस कवा, गन्धान कवा ।

सहमत होना । गजी होना ।
प्रसन्न करना । कलना करना ।
ठीक रास्ते पर आना । आदर
भाव करना । महत्व समझना ।

(क्रि स) गन्त होना औकाव
कवा, गश् कवा ।

अंगीकार करना । स्वीकार
करना । सहन करना ।

मानवशास्त्र—[सं पुं] नागव शास्त्र,
बृहद विद्या ।

मानव की उत्पत्ति, विकास,
विभेद आदि का विवेचन करने
वाला शास्त्र । (अं—एन्थ्रोपो-
लॉजी)

मानवीय—[वि] मानवीय, गश्क्य
गश्क्रीय ।

मानव सम्बन्धी ।

मानस—[सं पुं] मन, श्रद्धा, मान
गटबोव, बाय चवित मानस ।

मन । हृदय । मान सरोवर ।

रामचरित मानस ।

[वि] मनब प्रवा उपजा, मनत
डवा, मन गश्क्रीय ।

मनसे उत्पन्न । मनमें सोचा हुआ ।

मन सम्बन्धी ।

(क्रि वि) मनदेव ।

मनके द्वारा ।

मान-हानि—(सं स्त्री) अपमान,
मानशानि ।

अपमान । बे-इज्जती ।

मानहुँ—[अव्य] येन ।

मानो ।

माना—(क्रि स) डवन करा,
प्रवीका करा ।

नापना या तोलना । जाचना ।

[क्रि अ] आँटन, यिमान जाटे

गिमान होवा ।

‘सयाना’ या ‘अमाना’

मानिंद—(वि) गमान ।

समान । तुल्य ।

मानिता—[सं स्त्री] गौरव ।

गौरव । अभिमान ।

मानी—[वि] अहंकारी, गमानौय ।

अहंकारी । घमण्डी । मान या

प्रतिष्ठा रखनेवाला ।

मानुख, मानुस, मानुष—[वि]

माइश्वर ।

मनुष्यका ।

[सं पुं] माइश्वर ।

मनुष्य ।

माने—(सं पुं) अर्थ ।

अर्थ । मतलब ।

मानो—(अव्य) येन ।

जैसे । गोया ।

मान्यक—(वि) अवैतनिक

शिष्टावे प्रतिष्ठित पदत काम
करा बाख्ति ।

बिना वेतन लिये प्रतिष्ठित पद
पर काम करनेवाला ।

मान्यता—(सं स्त्री) शीकृति,

मागृता ।

माना जाना । स्वीकृति ।

माप—(सं स्त्री) ज्ञात, परिमाण,
परीक्षा ।

मापने की क्रिया, भाव या नाप ।
वह मान जिससे कोई चीज मापी
जाय ।

मापक—(सं पुं) ज्ञातार्थता, ज्ञात
गामखी, तुलाचनी ।

वह जिससे कुछ मापा जाय ।
वह जो मापता हो ।

मापना—[क्रि स] ज्ञात ।
मान या परिमाण निकालना ।
नापना ।

(क्रि स) यत्नीया शब्द ।
मतवाला होना ।

माफिक—[वि] यत्कूल, यत्-
गव ।
अनुकूल । अनुसार ।

माफी—(सं स्त्री) क्षमा, निरुद्ध
दृष्टि ।

क्षमा । वह भूमि जिसका कर
सरकार या राज्य ने माफ कर
दिया हो ।

मामला—(सं पुं) बेपान,
काजिया-पेचाल, मोर्किया ।
व्यापार । लेनदेन, अदान-प्रदान

आदि कार्य । भगड़ा विवाद,
नालिश या मुकदमा ।

मामा—(सं पुं) शोभा ।
माता का भाई । [सं स्त्री-मामी]

मामूली—(वि) ग्राह्य, नियमोप-
नियमित । नियम । सामान्य ।

मायक—(वि) मायावी ।
मायावी ।

मायका—[सं पुं] मायक शब्द,
पितृालय ।

स्त्रीके विचार से उसके माता
पिताका घर । पीहर ।

माया—[सं स्त्री] माया, लक्ष्मी,
महामाया, धन, वांछि, मिष्टा
छान, अस्मानता, इलना, कपटता
यादृ, वाञ्छी, प्रकृति, मोह,
मयता ।

लक्ष्मी । धन । किसी प्रकार की
मिथ्या धारणा या विचार । भ्रम ।
अज्ञान । छल, धोखा । जादू ।
प्रकृति ।

मायावी—(सं पुं) चालाक, धूर्त
वाञ्छीकर, मायावी ।
चालाक । धूर्त । धोखेबाज ।
जादूगर ।

[वि] माया, बाँधीकर।
माया। जादू आदिमें सम्बन्ध
रखनेवाला।

मायिक—(वि) मायादेव गङ्गा,
याशुब, गङ्गा कथा, मायावी।
माया से बना हुआ। जादू का।
बनावटी। मायावी।

मार—(सं पुं) कामदेव, विष।
कामदेव। विष।

[सं स्त्री] मार, किला, आघात
करा, मारका।

मारने या पीटने की क्रिया या
भाव। आघात, चोट। लक्ष्य।
मार-पीट।

मारक—(वि) मारबाणक, क्षाण
शक्ति कारक।

मार डालनेवाला। किसी का-
प्रभाव दूर करनेवाला।

मारकाट—[सं स्त्री] कटो। मार,
शुक्र।
लड़ाई। युद्ध।

मारग—[सं पुं] मार्ग, राह
पथ।
मार्ग। रास्ता।

मारण—[सं पुं] मारि पेलोवा,
तांत्रिक क्रिया विशेष।

मार डालना। एक तांत्रिक प्रयोग

मारतौल—[सं पुं] डांडव
शत्रुदो।

एक प्रकारका बड़ा हथौड़ा।

मारना—(क्रि स) मारना, प्रहार
करना, किला, बध करना, मनो-
वेष आदि मार निशान, ठिकार
करना, बिना पाबन्धमें बहुत बेछि
पेलोवा, अन्याय भावे दमाई
बर्तना।

प्रहारकरना। पीटना। प्राणलेना।
आवेग, मनोविकार आदि रोकना।
शिकार या आखेट करना। बिना
परिश्रमके या बहुत अधिक प्राप्ति
करना या अनुचित रूपसे दबा
रखना।

मार-पेच—(सं पुं) चालाकी,
धूर्त्तता।

चालाकी। धूर्त्तता।

मारफत—(अव्य) मारते, योग्य,
मारफते।

द्वारा। जरिये। से।

मारा—[वि] मार मारा देखे,
मारे मार देखे।

जो मार डाला गया हो । जिस
पर मार पड़ी हो ।

मारी—[सं स्त्री] बाँटेब ।
महामारी ।

मारुत—[सं पुं] बडाइ ।
हवा ।

मारुति—[सं स्त्री] शूरमान,
भौन ।
हनुमान । भीम ।

मारु—(वि) मारबाँडा, शूरा
घाँठोडा ।

मारनेवाला । जान मारनेवाला ।
हृदय-वेधक ।

[सं पुं] शूकर गमयउ बलावा
क्षनि आरु गोवा बागिनी
विट्ठव ।

युद्धके समय बजाया ओर गाया
जानेवाला एक राग ।

मारे—(अव्य) काबटव ।
बजह से ।

मार्गण—(सं पुं) मार्गण, शोषा,
विठवा, अश्वेषण ।

मांगना । याचना । ढूँढ़ना ।
अन्वेषण ।

मार्ग-दर्शक—(सं पुं) पथ अदर्शक ।
पथ दिखानेवाला ।

मार्गशीर्ष—[सं पुं] यादवाण माश ।
अगहन महीना ।

मार्गी—[सं पुं] अधिक ।
मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति ।
यात्री ।

मार्जन—[सं पुं] उक्त वा पवित्र
करा, डूल, दोष, यादि नाई-
किया करा ।

शुद्ध या पवित्र करना । मूल,
दोष आदिका परिहार ।

मार्जनी—(सं स्त्री) बाटवि ।
भाडू ।

मार्जार—(सं पुं) मकुरी ।
बिल्ली ।

मार्जित—(वि) माजित, पवित्र ।
जिसका मार्जन हुआ हो ।

मार्तंड—[सं पुं] शूर्य ।
सूर्य ।

मार्दव—[सं पुं] निबशकाव, कोम-
लता, गशानुडुडि ।
निरहंकार । कोमलता । सहानु-
भूति । सरलता ।

मार्मिक—[वि] मर्मस्थली ।
जिसका प्रभाव मर्मपर पड़े ।

माला—[सं स्त्री] माला, माली ।

माला । पंक्ति ।

(सं पुं) मालोद्धान, जम्भलि,

माल वस्त्र, माल वस्त्र ।

पहलवान । सम्पत्ति । सामान ।

असबाब । कोई अच्छी और

बढ़िया चीज । वह द्रव्य जिससे

कोई चीज बनी हो ।

मालखाना—[सं पुं] डाल ।

भंडार ।

मालगुजारी—(सं स्त्री) मालिनी

शोखना वा कब ।

मूराजस्व । लगान ।

मालदार—(वि) धनी ।

धनवान ।

मालपूआ—(सं पुं) मालपोआ,

तेलत डाला एबिष पिठा ।

एक प्रकार का मीठा पकवान ।

मालव—(सं पुं) मालव राज्या,

मालव निवासी ।

मालव नामका प्रदेश । मालवका

निवासी ।

(वि) मालव देश मालवीय ।

मालव देश सम्बन्धी ।

मालवीय—(वि) मालव ।

मालवे का ।

(सं पुं) मालव देश निवासी,

मालव देश का निवासी ।

मालव देश का निवासी ।

मालामाल—(वि) बर धनी वा

जम्भ ।

बहुत सम्पन्न या धनी ।

मालिकाना—[सं पुं] माली ।

स्वामीत्व ।

[क्रि वि] मालिकीय दत्त ।

मालिकों का मा ।

मालिनी—(सं स्त्री) माली जाति

मालिनी, हल्क विदेश ।

माली जाति की स्त्री । 'सवैया'

छन्द का एक नाम ।

मालूम—[वि] ज्ञान, विदित ।

जाना हुआ । विदित ।

माल्य—(सं पुं) मूल, माल ।

मूल । माल ।

मावस—(सं स्त्री) मावसगया

मालिनी ।

मावसगया मालिनी ।

माशा—(सं पुं) माशा बलिब गमान

मालिनी, माल ।

माशा रत्ती का मान या तोल ।

माशुक—[सं पुं] मालिनी, मालिनी ।

मालिनी । मालिनी ।

मास—(सं पुं) मास ।

महीना ।

मासिक—(वि) मासिक, मासिकीय ।
महीनेका । महीने महीने पर
होनेवाला ।

[क्रि वि] मासिकीय ।
प्रति मासके हिसाब से ।

माहवार— (क्रि वि) अति मास,
मासिनी ।

प्रतिमास ।

[वि] मासिनी ।

मासिक ।

माहवारी—(वि) अतिमासिक ।

हर महीनेका ।

(सं स्त्री) अतिमासिक मासिकीय
धर्म ।

स्त्रियो का मासिक धर्म ।

माहि, माही—[अव्य] भित्तवत्, त,
गुण्यो विभक्तिर्ब टिङ्ग शिञात्
बादशाह इय ।

भीतर । अन्दर । 'में' या 'पर'

माही—(सं स्त्री) माह, मासिक
बादशाह ग़लब पठाका ।

मछली । मुगल बादशाहों का
एक प्रकार का झण्डा ।

माहुर—(सं पुं) विष ।

विष ।

मिडना— (क्रि अ) मिशनावा,
नगोवा, एठा नगोवा, नग
नगोवा ।

मीठा या मिलाया जाना ।
लगाया, सटाया या बिपकाया
जाना । साथ लगना या होना ।

मिबर—(सं पुं) मासिकद्वि त्रिवृत
मोक्ष यादित्व उपदेश दिया
उत्तर ठाई ।

ममजिद मे वह ऊँचा चतुरा
जिसपर बैठकर मुझा आदि
नमाज पढ़वाने या उपदेश आदि
करते हैं ।

मिकदार— (सं स्त्री) परिमाण,
मात्रा ।

परिमाण । मात्रा ।

मिचकाना—(क्रि स) बाँव बाँव
ठकू मला आँख झपकावा ।

बारबार आँखे म्बोलना और
बन्द करना ।

मिचकी—(सं स्त्री) ठकू
इन्जित, मोलनाब मोल ।

आँखे मिचकाने की क्रिया या

भाव । आँख का इशारा ।
छलाग । भूलेने की पेग ।

मिचलना—[क्रि अ] बगि भाव
होना ।

कै आनेको होना । मिचली आना ।

मिचली—[सं स्त्री] बगि कबाव
इच्छा ।

कै करने की इच्छा ।

—मिचोनी—(सं स्त्री) कपि मुनि
खेल ।

आँख मिचोनी का खेल ।

मिजराब—[सं स्त्री] छेताव
आदि बहोदा तावब जोडा
यत्न विशेष ।

सितार आदि वजाने का तार का
नुकीला छला ।

मिजाज—(सं पुं) खेजाज,
स्वभाव, मनर गति, अभिमान,
अहंकार ।

प्रकृति । स्वभाव । मनकी
अवस्था । अभिमान । घमण्ड ।

मिटना—(क्रि अ) (ठिन आदि)
नाइकीया कबा, नष्ट कबा,
गटा ।

अंकित चिह्न आदि नष्ट होना ।
न रह जाना । (क्रि स-मिटाना)

मिट्टी—(सं स्त्री) माटि, धुनि,
गर्बीव । मबा ग, गार्बीविक गठन ।
माटी । धूल । शरीर । मृत
शरीर । शारीरिक गठन या
बनावट ।

मिट्टू—(वि) नीबदे थाकौंठा ।
चुप रहनेवाला ।

(सं पुं) मिठा कथा कउंठा,
ठाटो ।

मीठा बोलनेवाला । तोता ।

मिठ-बोला—(सं पुं) मिष्ट भावी,
देखुवावब बावेष्ट मिठा कथा
कोरा ।

मधुर भाषी । वह जो केवल
दिखावे के लिये मीठी मीठी बातें
करता हो ।

मिठास—[सं स्त्री] माधुर्या,
माधुरी ।

माधुर्य । मीठा होनेका भाव ।

मितभाषी—(सं पुं) कम कथा
कउंठा, मिठ भावी ।

कम या थोड़ा बोलनेवाला ।

मितव्यय—(सं पुं) निगमित
भावे खंच कबा, मितव्याय,
आय बुझि व्याय कबा ।

कम खंच करना ।

मिताई—[सं स्त्री] मिठिबालि,

मिठ्ठा ।

मित्रता ।

मिति—[सं स्त्री] माग, जीमा,

अवधि ।

मान । सीमा । अवधि ।

मित्ति—(सं पुं) मिठ्ठा, बन्धु ।

मित्र ।

मित्र—[सं पुं] बन्धु, मित्र, श्रूया ।

दोस्त । बन्धु । सूर्य ।

मित्रता—(सं स्त्री) बन्धुता ।

दोस्ती ।

मिथुन—(सं पुं) मृनिश-तिबोता ।

एद्योव, गैधून, बाशि छक्रव

तृतीय बाशि ।

स्त्री-पुरुष का जाड़ा । ममागम ।

बारह राशियो मे एक ।

मिथ्याचार—(सं पुं) कर्णट

वाचशाव

कपट पूर्ण व्यवहार ।

मिनमिनाना—(क्रि अ) नाकटव

मडा, मिन गिन मन्त्र कबा ।

धीमे स्वरसे या नाकसे बोलना ।

मिन्नत—(सं स्त्री) मिनति, विनय ।

विनती ।

मिमियाना—(क्रि अ) छेड़ा वा

छागलौव नात ।

भेड़ या बकरी का बोलना ।

मियाद, मोयाद—(सं स्त्री)

मियाद, अवधि ।

किसी कार्यके लिये नियत समय ।

अवधि । [वि-मियादी, मोयादी]

मियाना—(सं पुं) एक प्रकार-

बन प्राप्ति वा दोला ।

एक प्रकार की गालकी ।

[वि] गल्लौयाव आकावव ।

मझाले आकारका ।

मिरग—(सं पुं) शृग, हरिण ।

मृग । हरिण ।

मिरगी—[सं स्त्री] भ्रूणी, मूर्च्छा

बोता एविष बोत ।

अपस्मार रोग ।

मिरचा—[सं पुं] डलकौगा ।

लाल मिर्च ।

मिरजई—[सं स्त्री] मिर्जाई

अ 'ल', आश्रव दिनवमडा मांछुहे

पिका एविष हाठ ठूटि बूझ खला

छाला ।

एक प्रकारका कुरता ।

मिरदंग—[सं पुं] शृग ।

मृदंग । (सं स्त्री-मिरगादंगी)

मिलनसार—(वि) गुरुलावे
गैलेते मिलाथीतिबे थका
उन ।
सबसे अच्छी तरह मिलने जुलने
वाला ।

मिलना—[क्रि अ] लग लगाना,
गमूहत वा गमावत एक टैश
योबा, मिशला, गमडुला होबा,
गाम्कास कबा ।
सम्मिलित या मिश्रित होकर
एक होना । समुदाय या समूह में
समा जाना । साथ लगना । बहुत
कुछ समान होना । सामना, भेंट
या मुलाकात करना ।
(क्रि स) आश्र कबा उपा-
र्जन कबा ।
प्राप्त या हस्तगत होना । [प्रि—
मिलवाना]

मिलान—(सं पुं) मिलोबा
कार्य, तुलना ।
मिलाने की क्रिया या भाव ।
तुलना । मुकाबला ।

मिलाना—(क्रि स) मिलोबा, योबा
लगोबा तुलना कबा, गाम्कास
कबोबा, गम्मी कबोबा, खूब
ठिक कबोबा ।

सम्मिलित या मिश्रित करना ।
जोड़ना ; तुलना करना । भेंट या
परिचय कराना । साथी बनाना ।
बजाने के पहले बाजों का सुर
मिलाना ।

मिलाप—(सं पुं) मिलनब क्रिया,
मिलन ।
मिलने की क्रिया या भाव । मेल ।

मिलावट—[सं स्त्री] मिशन, ভাল
बख्त बेग़ा बख्त मिशलोबा
कार्य, डेज्जाल ।
मिश्रण । बढ़िया चीजमें घटिया
चीज का मिश्रण । खोट ।

मिलिंद—[सं पुं] डोलोबा ।
भौंरा ।

मिलिक्यत—[सं स्त्री] मालिकाना-
श्रद्ध, धन-गम्पति ।

मालिक या स्वामी होनेका अधि-
कार या भाव । वह वस्तु जिसपर
स्वामीत्व का अधिकार हो ।
धन सम्पत्ति, त्रायदाद ।

मिलन—[सं स्त्री] मिलाथीति,
धार्मिक गन्थदाय ।

मेल जोल । मिलाप । मिलन
सारी । धार्मिक सम्प्रदाय ।

मिष, मिस—(सं पुं) छल, कण्ठ,
भाँ, डूबा, फँकि ।
छल । कपट । बहाना ।
पाखण्ड ।

मिष्ट—(वि) मधुर । मिठा ।
मीठा । मधुर ।

मिष्टान्न—(सं पुं) मिष्टान्न, मिठाई ।
मिठाई ।

मिसकीन, मिरकीन—(वि) दीनता,
टपना, निश्चन ।
बेचारा । निर्धन ।

मिसरा—(सं पुं) शूबाब, उर्दू,
कविताब एाँ अंश ।
किवाड़ । उर्दू-फारसी की कविता
का कोई चरण या पद ।

मिसरी, मिस्री—(सं स्त्री) मिष्ठ
देशब भाषा, मिहिबि [अग्राई
पविष्कार आरु गोठा कबा
छेनि] ।
मिस्त्र देशकी भाषा । साफ
करके जमाई हुई या रवेदार
चीनी ।

[वि] मिष्ठ देशब ।

मिस्त्र देशका ।

[सं पुं] मिष्ठ देशब अक्षिवागी ।
मिस्त्र देश का निवासी ।

मिसाल—(सं स्त्री) उभया, उदाहरण
योखना ।

उपमा । उदाहरण । कहावत ।

मिसिल, मिरल—[वि] गमान ।
समान । तुल्य ।

[सं स्त्री] कोना विषय वा
मोक्कमा गम्भीर गकला
नथी-पछ ।

किसी विषय या मुकदमें में रखने
वाले सब कागज पत्रोकी नत्थी ।

मिस्सी—(सं स्त्री) डिबोताई
झातत बँडा एक प्रकार मीखन,
कंला बडब फल होरा ननबीया
गछ ।

एक तरह का मंजन । काले फल
वाला एक जंगली पीधा ।

मिहिर—[सं पुं] सूर्य, छत्र ।
सूर्य । चन्द्रमा ।

मीजना—(क्रि स) शाउतेन बँडा,
वाजा ।
हाथोंसे मलना । मसलना ।

मीच, मीचु—(सं स्त्री) शूडा ।
मीत ।

मीचना—(क्रि स) छकू मुदा ।
(अखें) मूंदना ।

मीजान—[सं स्त्री] योग ।
संख्याओं का योग । जोड़ ।

मीटर—[सं पुं] दैर्घ्य ज्ञात्री
शिष्टान, मिठाई, निखूली आदि
गति शिष्टाव रक्ती, ज्ञात्री ।
बिजली आदि की गति आदि
मापनेका एक यन्त्र । लम्बाई की
एक नाप ।

मीठा—[वि] मिठा, मधुर, मोदाद-
लगी, प्रिय, डाल ।
मधुर । स्वादिष्ट । प्यारा ।
अच्छा । धीमा ।
[भं पुं] मिठाई ।
मिठाई ।

मीठी-छुरी—(सं स्त्री) विश्वासघातक,
कृतघ्न ।
विश्वास घातक ।

मीत—(सं पुं) मित्र, पति, धैर्यिक
मित्र । पति । प्रेमी ।

मीन—(सं पुं) माछ, मीन बानि ।
मछली । बारह राशियों की
अन्तिम राशि ।

मीन-मेख—(सं पुं) डबा-छिछा,
बिषा । अश्विन कायत दोष
क्षोभ ।

सोच विचार । द्विविधा । दूसरों
के लिये कामों में छोटे-मोटे दोष
ढूँढना ।

मीना—(सं पुं) बाजपूतव यूँ ज़ाक
छाति विशेष । मोक्षकपव
अलङ्कारव उपरत वरविबुध
काम कबा [गिना] ।

राज पूताने की एक योद्धा जाति।
चाँदी, सोनेपर किया जानेवाला
एक प्रकारका रंग-बिरंगा काम ।

मीनाकारी—[सं स्त्री] मोक्ष-कपव
अलङ्कार वा याजूषणत गिना
कबा कार्य ।

चाँदी या सोनेपर होनेवाला
मीना ।

मीनाबाजार—(सं पुं) धुनौशाटेक
मजोरा बखार ।

बहुत सुन्दर और सजा हुआ
बढ़िया बाजार ।

मीनार—[सं स्त्री] बर ३५ आक
ध्रुवगोश खड, मीनाब ।

बहुत ऊँचा और गोलाकार स्तंभ

मीमांसक—[सं पुं] न्याय कवि
पिण्डता, न्याय शास्त्रत अधिष्ठ ।
किसी बात की मीमांसा या विवे-

बन करनेवाला । मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता ।

मीमांसा—[सं स्त्री] गोचर आदि विचार आरंभ अक्षि-पूति कर्त्ता निम्पछि । हिन्दू छत्रन दर्शन शास्त्र छत्रन । (पूर्व आरंभ उद्यम मीमांसा वा वेदाङ्ग-दर्शन) ।

अनुमान और तर्कसे किसी विषय के निर्णय पर पहुँचना । छः-हिन्दू दर्शनों में से दो दर्शन ।

मीमांस—(सं स्त्री) उद्यमिका की श्रुति पोषा गम्पछि । उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति ।

मीमांसी—(सं पुं) गृह्यज्ञान आदि विदेश । एक मुसलमान जाति ।

मील—[सं पुं] माइल । दूरी की एक माप ।

मीलन—[सं पुं] वक्त्र कर्त्ता, चक्र भूषा । वन्द करना । मूँदना ।

मुँगरा—[सं पुं] डाँडर शङ्खरी (काष्ठ) । काठ का बड़ा हथौड़ा ।

मुँड—(सं पुं) लाउथोना, गुर । कर्त्ता गुर ।

खोपड़ी । सिर । कटा हुआ सिर ।

मुँडन—(सं पुं) गुर श्रुतावा, हजि श्रुताई दिया, हिन्दू गच्छाब विदेश । छुड़ाकरण । उत्तरे से सिर या और किसी अंग के बाल साफ करना । हिन्दुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चोंका सिर मूँड़ा जाता है ।

मुँकना—(क्रि अ) श्रुतावा, ऋग श्रुता ।

मूँड़ा जाना । लूटा या ठगा जाना

मुँड-माला—(सं स्त्री) कर्त्ता गुरब गाला, गुर-बाला ।

सिरों या खोपड़ियों की माला ।

मुँडमालिनी—[सं स्त्री] काली-देवी । कालिका देवी ।

मुँडा—(सं पुं) उपा, हजि श्रुतावा अनश्रुत बज्जि, माधु वा योगी, लाउथुवा अङ्ग, महाकनी जिपि, छोटिगागुपुब आदि विदेश ।

जिसके सिरके बाल न हो या मूँड़े हुए हों । साधु या योगी । वह पशु जिसके सिरपर सींग न

हो । महाजनी लिपि । एक जाति
(सं स्त्री) गुञ्जा भावा-भाषी
जाति ।

कुछ विशिष्ट अनार्य बोलियों का
एक वर्ग ।

मुँडाई (डाई)—(सं स्त्री) ठूलि
बुरावा कार्य वा मज्जुबि ।
मुँ डने या मुँ डाने की क्रिया, भाव
या मजदूरी ।

मुँडाना, मुँडाना—[क्रि स] ठूलि
बुरावा । मुँ डन करना ।
[क्रि अ] बुरावा, ठग थाई
टका-पहेटा नष्ट कबा, यकीनता
वा वञ्चता श्रीकार कबा ।
मुँ डा जाना । धोखेमें आकर कुछ
घन गंवाना । किसीकी अधीनता,
शिष्यता आदि ग्रहण करना ।

मुँडासा—(सं पुं) पाण्डुबि ।
पगड़ी । साफा ।

मुँडेरा—(सं पुं) छालव उपरबत
उलाई थका अश्व ।
छतकी दीवारका ऊपरी उठा
हुआ भाग ।

मुँडना—(क्रि अ) मुँदा, छपा, बककबा ।
खुली रहनेवाली या खुली हुई
वस्तुका बन्द होना । छिपना ।

मुँदरी—[सं स्त्री] आडठि ।
अंगूठी ।

मुंशी, मुनशी—(सं पुं) मुञ्जी,
शिवाव-पञ्च तथा विषया ।
लेख आदि लिखनेवाला । पंडित ।
विद्वान ।

मुँह—(सं पुं) मुख ।
मुख ।

—खुटना—(मु) बड़ाई कोवा
— गग होवा ।

बढ़ बढ़ कर बालने की आदत
पड़ना ।

—भरना—(मु) काको भेटा
दिशा ।

किसी को घूस देना ।

—में लगाम न होना—भूखत
लेकाय नोहोवा, नडवा
निच्छाटक यिश्के त्रिश्के
कोवा अभाग्य ।

बिना सोचे समझे बोलनेकी
आदत होना ।

—से फूल झड़ना—(मु) धुव
ध्रिय तथा कोवा ।

मुँहसे बहुत प्रिय बातें बोलना ।

—की खाना—(मु) अपमानित
वा नञ्चित होवा ।

अपमानित या लज्जित होना ।

—ताकना—(मु) आशा कबि
अपेक्षा कबा, आचरित टैश
काबो प्रिने छाई थका । आशा
कबा ।

आशा लगाकर या चकित होकर
किसी की ओर देखना ।

—फुलाना—(मु) मुख उल्लोमा,
अगस्त्यावर भाव देखा ।

अप्रसन्नता प्रकट करनेवाली
आकृति बनाना ।

मुँहकाला— (सं पुं) अपमान,
बदनाम ।

बेइज्जती । बदनामी ।

मुँहचोर— [वि] अश्विन गमुखलै
याबलै इतःस्तुत कबा जन ।

जो औरों के सामने जानेमें हिच-
कता हो ।

मुँहजोर—(वि) मुख चढ़ुर, मुखील ।
बकबादी ।

मुँह दिखावनी, मुँह देखनी, मुँह
दिखाई— [सं स्त्री] पानप्रथमे
शब्देकब बबलै अशत कइना
छोवा नियम विशेष । उछ
अवशत कइनाक मिया उपहार ।
पहले पहल ससुरालमें आनेपर

नयी बधूके मुँह देखने की रस्म ।
उक्त अवसरपर बधूको दिये जाने
वाला उपहार ।

मुँह-देखा—(वि) देखा देखि इलै
गच्छाच वगतः कबा (वावश) ।
केवल सामना होनेपर संकोचवश
होनेवाला (व्यवहार)

मुँह-फट—[वि] मुख चोका, अग्राय
वा कट्ट कभी कोरात
निःसङ्काच ।

अनुचित या कट्ट बातें कहनेमें
सकोच न करनेवाला ।

मुँह मांगा—[वि] गनब ईच्छागवि ।
मुँहसे मांगा हुआ । मनानुकूल ।

मुँहासा—[सं पुं] शाल गइना ।
मुँहपर के वे दाने जो युवावस्था
में निकलते हैं ।

मुअत्तल—(वि) अपराध वा अडि-
योग कबार पिछ्त अक्षि
निर्णय नोदोरावाकै पद वा
अधिकारव पबा द्युत कबा कार्य
गामगिब भावे बबथात कबा
कार्य ।

अपराध या अभियोग लगनेपर
जाँच या अन्तिम निर्णय के लिये
जो अपने पद से हटा दिया गया
हो [अं-ससपेड]

मुखाफक—(वि) अशूल,
निठिना ।

अनुकूल । सहश ।

मुधायना—(सं पुं) निबोधन,
प्रतिदर्शन ।
निरीक्षण ।

मुधायजा—(सं पुं) अतिमान,
कृतिपूर्वक ।
बदला । हानि आदि के बदलेमें
मिलनेवाला धन ।

मुकदमा, मुकदमा—(सं पुं)
मोक्षार्थ, अभियोग ।
अभियोग । दावा । नालिश ।

मुकदमेबाज—(वि) जि आये
मोक्षार्थ यादि थोला थाके ।
जो प्रायः मुकदमे लड़ता रहता
हो । [भाव—मुकदमेबाजी]

मुकम्मल—(वि) पूर्ण कबा कार्या ।
पूरा किया हुआ कार्य ।

मुकरना—(क्रि अ) कोना
कथा मानि लै अनिकार कबा
वा पिछ शोशक ।
कोई बात कहकर उससे इन्कार
करना या पीछे हटना ।

(वि) कोना कथा शोकार
कवि पिछत अशोकार कबा

वाछि ।

कोई बात कहकर उनसे इन्कार
कर जानेवाला ।

मुकरर—(वि) निश्चित, निश्चल ।
निश्चित । नियत । नियुक्त ।

मुकाबला—(सं पुं) विरोध,
युद्ध, तुलना ।

सामना । मुठभेड़ । तुलना ।
मिलान । विरोध ।

मुकाबिल—(क्रि वि) समुद्ध ।
सम्मुख । सामने ।

[सं पुं] अतिदृष्टी, शत्रु ।
प्रतिद्वन्द्वी । वैरी ।

मुकाम—(सं पुं) ज्ञान, वाश्व,
अनिधा ।
स्थान । पड़ाव । अवसर । मौका ।

मुकुर—(सं पुं) दाटपाण, कलि ।
दण्ड । कली ।

मुकुल—[सं पुं] कलि, शरीर,
याज्ञा ।
कली । शरीर । आत्मा ।

मुकुलित—[वि] कलि युक्त, कुल,
छोपा कलि ।

जिसमें कलियाँ निकली हों ।
कुछ खिली हुई कली ।

मुकेश, मुकैश—(सं पुं)

शुभा रक्षा कापीब विशेष ।

जरीका बना हुआ एक विशेष
प्रकार का कपड़ा ।

मुक्का—[सं पुं] डूक ।

आघात या प्रहार के लिये बाँधी
गयी मुट्ठी । घूँसा ।

मुक्की—(सं स्त्री) डूक, मल्ल-युद्ध,

डूकवा-डूक युद्ध वा खेल ।

घूँसा । मुक्केबाजी की लड़ाई ।

मुक्केबाजी—(सं स्त्री) डूकवा-

डूक खेल ।

घूँसेबाजी । (अं—वाक्संग) ।

मुक्तक—[सं पुं] स्वतन्त्र कविता,

छन्द विशेष ।

फुटकर या कई प्रकारकी कविता

मुक्त-हस्त—(वि) मुक्तलि शास्त्र

उद्गातृ भावे ।

जो खुले हाथों और बहुत उदा-
रतापूर्वक दान या व्यय करता
हो ।

मुख-चित्र—[सं पुं] बेट्टेप्रातः

चित्र ।

किसी पुस्तक के मुख पृष्ठपर या

बिलकुल आरम्भमें दिया हुआ
चित्र ।

मुखड़ा—(सं पुं) मुख, चेहरेवा ।

मुख । चेहरा ।

मुखतार, मुखतार—(सं पुं)

अतिनिधि ।

प्रतिनिधि । एक प्रकारका कानूनी
सलाहकार और कार्यकर्ता ।

(सं स्त्री—मुखतारी)

मुख पत्र—(सं पुं) मुख-पत्र,

याब यौबत थानि कोना काम
कबा श्य ।

वह जिसकी आडमें रहकर कोई
काम किया जाय ।

मुखबन्ध—[सं पुं] पाठनि,

छुटिका, अडावना ।

ग्रन्थ की प्रस्तावना ।

मुखबिर—(सं स्त्री) छावाः

छावा ।

खबर देनेवाला जासूस । भेदिया ।

मुखबिरी—[सं स्त्री] गोपने

बहाने कथा के दिशा ।

गुप्तरूप से भेद देना ।

मुखर—(वि) मुखवा, पन्थवा, बबटैक

कथा कोवा ।

अप्रिय या कटु बोलनेवाला ।
बहुत बोलनेवाला ।

मुखाम—(वि) मुखश्च,
जो जबानी याद हो ।

मुखापेक्षी—(सं पुं) मुखापेक्षी,
काबो मुखटेल छाई थका ।
जो दूसरे का मुँह ताकता हो ।

मुखारी—[सं स्त्री] मुखर आकृति ।
मुखाकृति । चेहरे की बनावट ।

मुखालिफ—(वि) विरोधी शब्द ।
विरोधी । शत्रु प्रतिद्वन्दी ।

मुखिया—(सं पुं) नेता,
मुख्यांश ।
नेता । अगुआ ।

मुखौटा—[वि] मुँहा, मुख
पिन्का, कोणो विशेष मुख
आकृतिबे होई, आकृति गलावर
अर्थे पिन्किले गजा मुख ।
धातु आदि का बना हुआ मुखके
आकार का खण्ड । नकाब ।

मुगहर—(सं पु) मुग्ध ।
मुद्गर । मुँगरीका भारी जोड़ा ।

मुग्धा—(सं स्त्री) एक प्रकारका
नामिका गबल श्रुतावर खुरती
नामिका ।

साहित्य में एक प्रकारका नायिका
भेद ।

मुचना—[क्रि अ] मोचन होना,
मूर्ख कना ।
मोचन होना ।

मुचलका—[सं पुं] मूल्मुका,
आदालतत जामीनर बाबे लिखि
दिया अत्रोकार पत्र ।
अदालत में जमानत के बारे में
लिखित पत्र ।

मुछंदर—(सं पुं) डांडर गोक
थका बाक़ि मूर्थ ।
बड़ी बड़ी मूर्खोंवाला । मूर्ख ।
बुद्ध ।

मुजरा—[सं पुं] कोनो टका-
पड़ेका काटि बका । सम्मानेबे
अभिवादन कना, बेन्याई मजलिछ
बहि गान गौवा ।
किसी रकम में से काटी हुई
रकम अथवा कुछ रकम काटना ।
अभिवादन । वेश्या का बैठकर
गाना ।

मुजरिम—(सं स्त्री) अपराधी,
दोषी ।
जिसपर जुर्म लगा हो । अस्ति-
युक्त ।

मुख—[सर्व] 'मे' व विभक्ति शुद्ध
कथ ।

मे का विभक्ति युक्त रूप ।

मुखे—(सर्व) मोक्ष ।
मुक्तको ।

मुद्गा—(सं पुं) याति, कागज
आदिब भूठा ।

घास, फूस आदिका पूला । कागजों
आदि का गोल लपेटा हुआ
पुलिदा ।

मुद्दी, मुठका, मुठी—(सं पुं)
भुक्ति ।

हाथकी उँगलियाँ मोड़कर हथेली
पर दबाने से बननेवाली मुद्रा या
रूप । उतनी वस्तु जितनी ऐसे
हाथमें आवे ।

मुठ-भेद—(सं स्त्री) गन्धर्व,
शता-शक्ति ।
भिदन्त । सामना ।

मुद्गना—(क्रि अ) घूरा, उलटो ।
घूम या बल लाकर किसी ओर
फिरना । घुमना । लोटना ।

मुद्गला—(वि) दूलि श्रुत्वादा नृव
शाश्व ।
मुंडा । घुटे हुए सिरका ।

मुद्गवाना—[क्रि स] मूढन करावा ।
मुण्डन कराना । किसीको मुंङ्गे
में प्रवृत्त करना ।

मुत्तलक—[क्रि वि] यलत्ता,
अकत्ता ।

कुछ भी । तनिक भी ।
(वि) एकवादे, सम्पूर्ण ।
बिलकुल । निपट । निरा ।

मुत्तसही—(सं पुं) लेखक, गठबी ।
लेखक । मुंशी । मुनीम ।

मुताबिक—(क्रि वि) अश्रगादे ।
अनुसार ।

(वि) अश्रकूल ।
अनूकूल ।

मुद्ग—(सं पुं) शर्ष, आनन्द ।
हर्ष । आनन्द ।

मुद्गा—[अव्य] अर्थात्, आशय, किञ्चु
तात्पर्य यह कि । मगर । लेकिन ।
परन्तु ।

मुद्दित—(वि) अगम ।
प्रसन्न । मुश ।

मुद्दे—[सं स्त्री] उद्दीमा, वादी,
शत्रु ।

दावा दायर करने या अभियोग
उपस्थित करनेवाला । वादी ।
शत्रु ।

मुद्रत—[सं स्त्री] जय, बहुत
दिन, अधिक काल ।

अवधि । बहुत दिन । अधिक
समय ।

मुद्रा—[सं पुं] अभिप्राय, उद्देश्य ।
अभिप्राय । आशय ।
(क्रि वि) तात्पर्य ।
तात्पर्य यह कि ।

मुद्रालेह—(सं पुं) याव उपरत
देवानी शोकर्कना कना इय,
अतिवादी ।

वह जिसपर दीवानी दावा हो ।
प्रतिवादी ।

मुद्दी—[सं स्त्री] बछीव पिछला
गौंठि । टौंठनि गौंठि ।

रस्मी की एक तरह की खिमकने
वाली गौंठ ।

मुद्रांकिन—(वि) मुद्रा वा मोहर
बुझ ।

जिसपर मुद्रा या मोहर लगी
हुई हो ।

मुद्रा—(सं स्त्री) मोहर, धातुव
मुद्रा, आडठि, छाप ।

मोहर (सील) । सिक्का । अंगूठी
छाप । सीसे के डले हुए अक्षर ।

मुद्रिका—(सं स्त्री) आडठि ।
अंगूठी ।

मुद्रित—(वि) छपा कबा, मोहर
बबा, छाबिउ कालब पबा आबद्ध,
मुद्रित ।

छपा हुआ । मोहर किया हुआ ।
चारो ओर से घिरा हुआ । मुँदा
हुआ ।

मुधा—(क्रि वि) वार्ध, बधा ।
व्यर्थ । वृथा ।

(वि) निवर्धक, मिथ्या ।
व्यर्थ का । मिथ्या ।

मुनसिफ, मुन्सिफ—[सं पुं]
मुनचिफ, देवानी आदालतब
तलब श्रेणीब विचारक ।
वह जो न्याय या इन्साफ करता
हो । न्याय विभागका एक अधि-
कारी ।

मुनादी—[सं स्त्री] नाल बखाई
कबा बोखण ।

ढोल आदि पीटकर की जानेवाली
घोषणा ।

मुनाफा—(सं पुं) लाड ।
लाभ । नफा ।

मुनासिब—[वि] उचित ।
उचिन । बाजिब ।

मुनीव, मुनीम—[सं पुं] आव-
वायव शिष्टांत रक्ता कर्षणावी ।
मशवी ।

आय व्ययका हिसाब लिखनेवाला ।

मुफलिस—[वि] निर्धन पविष्ट ।
निधन दरिद्र ।

मुफलिसी—[सं स्त्री] निव नता ।
नरीबी ।

मुफत्सल—(वि) वि० भावे ।
ब्योरेवार ।
[सं पुं] केन्द्रीय नगरव ओठव
कावव ठाई ।
केन्द्रस्थ नगरके आसपामके स्थान ।

मुफ्त—(वि) एनेत्ये पोवा, बिना-
मूल्य पोवा ।

जिसे प्राप्त करने मे कुछ धन न
लगे या व्यय न हो ।

(क्रि वि) बर्ष, नाउजीन ।
व्यर्थ । बे-फायदा ।

मुफ्तखोर—[वि] बिना पविष्टत्ये
धन श्रम करबोता ।

बिना परिश्रम किये मुफ्तका माल
खानेवाला ।

मुबल्लिग—(सं पुं) धनव गन्था । धन ।
धन की संख्या । रकम ।

मुबारक—[वि] शुभ, मङ्गलमय ।
जिसके कारण बरकत हो । शुभ ।
मंगठकारी ।

मुमकिन—(वि) गृह्यपव ।
जा हो सके । संभव ।

मुमानियत—[सं स्त्री] नाथा ।
मनाही ।

मुमूक्षु—[वि] मूळिकानी ।
मूक्षु ।

मुन्नत की कामना या इच्छा
करनेवाला ।

मुमूर्षा—[सं स्त्री] मृता कामना ।
मरने की इच्छा ।

मुभूषु—[वि] मृत्प्रथाय, मूच्छित ।
मृतप्राय । मूच्छित ।

मुरकना—[क्रि अ] घूना, फिवा,
दोटाबाबमोब कबा मटे होवा ।

मुडना । लौटना । मोच खाना ।
हिचकना । नष्ट होना ।

मुरगा—[सं पुं] कूकवा चबाई ।
कुकुट पक्षी (सं स्त्री-मुरगी)

मुरगाधी—[सं स्त्री] कूकवा चबाईव
निठिना एविध जनपदी ।
मुरगे की तरह एक जल पक्षी ।

मुरचंग—(सं पुं) मुरखेव बखोवा
एविश वाञ्छ यञ्च ।

मुहसे बजाया जानेवाला एक
बाजा ।

मुरजन—(सं पुं) पाटेशवाच,
बृषज ।

पत्तावज । मृदंग ।

मुरझाना—(क्रि अ) बरहि योवा,
उनाग होवा ।
कुम्हलाना । सुस्त या उदास
होना ।

मुरदा, मुर्दा—(सं पुं) मरा ।
शव ।

[वि] ब्रुत, बरहि योवा ।
मृत । बे-दम । मुरझाया या
कुम्हलाया हुआ ।

मुरदार—(वि) मरा, अपवित्र ।
मरा हुआ । अपवित्र । आसक्त ।

मुरझिका, मुरझी—(सं स्त्री)
दाँडी ।
बाँसुरी ।

मुरळवत, मुरौवत—(सं स्त्री) बैल ।
गठ्ठाठ ।
शील । संकोच । लिहाज ।

मुरशिद—(सं पुं) शूर, विनिष्ट
पूजा वाञ्छि ।

गुरु । कोई बड़ा और पूज्य
व्यक्ति ।

मुराद—(सं स्त्री) शक्तिशाल,
बनब कामना, अछिथाय ।
मनकी कामना या अभिलाषा ।
वासना । अभिप्राय ।

मुरासिला—[सं पु] गज,
बाजकीय गज ।
पत्र । राज दरबार से भेजा
जानेवाला पत्र ।

मुरीद—(सं पुं) शिष्य, अछ-
गाथी ।
शिष्य । चेला ।

मुरेठा—(सं पुं) पाण्डुरी ।
पगड़ी । साफा ।

मुर्बनी—[सं स्त्री] ब्रुताव लक्षण,
नव-यात्रा, उपागौनता ।
चेहरे पर दिखाई देनेवाले मृत्युके
लक्षण । शवकी अन्योष्टि क्रियाके
लिये लोगोंका उसके साथ जाना ।
उदासी ।

मुर्दाबादल—(सं पुं) एक प्रकार
गाम्भीर्य काव, (मंथ) ।
एक समुद्री जीव । (इस्पंज)

मुक्त (१)—(अव्य) किछ, तात्पर्य ।
मगर । लेकिन । तात्पर्य यह कि ।

[सं स्त्री] मर ।

शराब ।

मुलजिम—(वि) अपनाधी, दोषी ।

अभियुक्त ।

मुस्तबी मुलतबी—[सं स्त्री]

शृंगित ।

स्थगित ।

मुलम्मा—(सं पुं) कलाइ कबा,

वाशिक आउशर ।

कलई । ऊपरी तड़क-भडक ।

मुलाकात—[सं स्त्री]

मेथी-
गाका, मिलन ।

भेंट । मिलन । जान पहचान या

मेल मिलाप ।

मुलाजिम—(सं पुं) ठाकर, दाग ।

नौकर । सेवक ।

मुलायम—(वि) कोमल, नरम,

बिहि ।

कोमल । नरम । हलका ।

मुलाहजा—[सं पुं] निरीक्षण,

गढोच, बेशाई ।

निरीक्षण । शील संकोच ।

रियायत ।

मुलेठी—[सं स्त्री] जेठी, थो ।

जेठी । मधु ।

मुल्क—(सं पुं) बाबा, अदम्य,
गंगाव ।

देश । प्रदेश । संसार ।

मुवकिल—[सं पुं] बटवल ।

वह जो अपने कामके लिये बकील
नियुक्त करता है ।

मुशायरा—(सं पुं) उर्दू कवि-

गमिलन ।

उर्दू कवि सम्मेलन ।

मुश्क—(सं पुं) कश्मी, गाँक-

कलाइ । सुगंध ।

कस्तूरी । गंध ।

[सं स्त्री] बाह ।

भुजा । बाँह ।

मुश्क कसना या बाँधना—

(मु०) श्रुत्यार्थन शांत पिठिब

पिठे बाँधि धोवा ।

दोनों भुजाओं को पीठकी ओर ले
जाकर रस्सी से बाँधना । (अपरा
धियों आदि की) ।

मुश्किल—[वि] बकिल, कठिन,

ठान ।

कठिन । दुष्कर ।

[सं स्त्री] कठिनता, विपत्ति,

कठिनता । विपत्ति ।

मुख—(सं पुं) मुँठि ।

मुँठि ।

एकमुख—(पद) एककालीन ।

एक साथ एक ही बारमें दिया जानेवाला (धन या देन)

मुष्टि (का)—(वि) मुँठि, डूँठ ।

मुँठि । मुँठा ।

मुस्कान—(सं स्त्री) मिठिकीया
हँसि ।

मुस्कराहट ।

मुस्काना—[क्रि अ] मिठिकीया
हँसि बना ।

मुस्कराना ।

मुसना—(क्रि अ) गर्वशाल होना ।
मूमा या लूटा जाना ।

मुसम्मात—[वि] नामक तिताता ।
नाम धारिणी । नाम्नी ।

(सं स्त्री) तिताता ।

स्त्री । औरत ।

मुसम्मी—(वि) नामक ।
नामक ।

(सं स्त्री) कबलाब निठिना
एविश मिठा टेडा ।

एक प्रकार का बढ़िया नारंगी ।

मुसल्लम—[वि] पूर्ण ।
परा ।

मुसाफिर—[सं पुं] यात्री ।
यात्री ।

मुसाफिर-खाना—(सं पुं)
जिबनि धन । विश्रामालय ।

मुसाहब—(सं पुं) धनी अथवा
बड़ा मकलब लखवा ।

घनवान या राजा आदि का
पाश्वर्तनी ।

मुसीबत—(सं स्त्री) दुःख, कष्ट,
विपत्ति ।

तकलीफ । कष्ट । विपत्ति ।

मुस्कराना, मुस्काना—[क्रि अ]
मिठिकीयाहै हँस ।

बहुत ही मंद रूपसे या धीरे से
हँसना ।

मुस्कराहट—(सं स्त्री) मिठिकीया हँसि
मुस्करानेकी क्रिया या भाव ।

मुस्टडा—[वि] मकलब आदत,
बदमाश, मल्लट ।

मोटा-ताजा । बदमाश । गुंडा ।

मुस्तैद—[वि] तत्पर, कौनो
विवश वा काबलत बबटेक छिन्ना
कबा वा बन लगेवा ।

तत्पर । अच्छी तरह और पूरा
काम करनेवाला ।

मुहब्बत—[सं स्त्री] अश्रु, शोथि,

श्वेत,

प्रीति । प्रेम । लगन ।

मुहर्रिर—[सं पुं] मशहूर ।

लेखक । मुनशी ।

मुहल्ला—[सं पुं] छद्मनाम, बख्ति,

पाठि, शानि ।

महल्ला । बस्ती ।

मुहाफिज—[वि] गुरबन्धित,

बख्शनादेखकराबी ।

हिफाजत करनेवाला । रक्षक ।

मुहाल—(वि) अगलब, दूख ।

असम्भव । ना मुमकिन । दुष्कर ।

[सं पुं] शानि, पाठि ।

महाल । टोला

मुहाबरा—[सं पुं] खण्ड वाक्य,

जुलुवा ठाँठ ।

वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजना से निकलता हो । अभ्यास ।

मुहाबरेदार—(वि) खण्ड वाक्य

वा जलुवा ठाँठ मिलित ।

(भाषा)जिसमें मुहावरोंका प्रयोग ठीक ठीक हुआ हो ।

मुहूर्त—(सं पुं) मुहूर्त, कण, दिन

बातिब त्रिगु भागवत एक निश्चित

कण, ज्योतिषर नियमाङ्कगणि

गणि भित्ति उल्लिखित । शुद्धकण ।

दिन रात का तीसरा भाग ।

निर्दिष्ट क्षण या समय । फलित

ज्योतिष के अनुसार निकाला

वह समय जब कोई शुभ काम

किया जाय ।

मुह्य, मुह्यमान—(वि) मोहलानत

परा, मूर्च्छित ।

मोहमें पड़ा हुआ । बेहोश ।

मूँग—[सं पुं] मधुमाश ।

एक अन्न जिसकी दाल बननी है ।

मूँगफली—[सं स्त्री] वानाश ।

चिनिया वादाम ।

मूँगर(१)—[सं पुं] काठव शत्रुबी ।

काठका बना हथौड़ा ।

मूँगा—[सं पुं] प्रवाल ।

प्रवाल । विद्रुम ।

मूँछ—[सं स्त्री] गैँक ।

उपरी ओठपर के बाल जो केवल

पुरुषों के होते हैं ।

मूँज—[सं स्त्री] खराबि जादि

शाखिब परा एकाडीय वन विशेष,

कूण जाडीय वन ।

एक प्रकारका तृण जिससे दोने,

टोकरियाँ आदि बुने जाते हैं ।

मूँचना—(क्रि स) बक्क कबा, जटणावा,
छाकि धोवावा, श्रवाव अथवा मुखत
किवा थै बक्क कबा ।

बंद करना । ढाँकना । द्वार मुँह
आदि पर कुछ रखकर बन्द
करना ।

मूक—(वि) बोवा, आचबित, निरुपाय ।
गूँगा । अवाक । लाचार ।

मूठ—[सं स्त्री] गूँठि, यज्ञ भातिव
नाम, याज्ञ ।

मुट्टी । ओजार या हथियारकी
मुठिया । जादू टोना ।

मूड़—(वि) गूँथ, छक ।

मूख । बेवकूफ । स्तब्ध ।

मूचना—[क्रि अ] पेशाव कबा ।
पेशाव करना ।

मूर—(सं पुं) मूल, वनोषधि, मूल नक्षत्र ।
मूल । जड़ी बूटी । मूल नक्षत्र ।

मूरि(री)—[सं स्त्री] वनोषधि ।
मूल । जड़ी बूटी ।

मूर्च्छना—(सं स्त्री) मूर्च्छना, गहोडव
गुंथ खूबन उठा नगाव क्रम वा
विधि ।

संगीतमें नियमित रूपसे उतार-
चढ़ाव का ध्यान रखते हुए नीचे

स्वरसे ऊँचे स्वरपर जाने और ऊँचे
स्वरसे नीचे स्वरमें आनेकी क्रिया
या ऐसी क्रियामें गलेसे निकलने
वाला स्वर ।

मूर्त—(वि) गाकाव, गूँठ ।
माकार । ठोस ।

मूर्त्तिकार—(सं पुं) कावीश्वर,
गूँठि गट्टे गडा वा गाट्ठाठा ।
मूर्तियाँ बनानेवाला ।

मूर्त्ति-भंजक—(सं पुं) गूँठि क्षण-
कावी ।

वह जो मूर्तियोको व्यर्थ मानकर
तोड़ता हो ।

मूर्द्धा—(सं पुं) मूँव ।
सिर ।

मूल-भूत—(वि) मूल छूट । मूल
उद्भव गश्कित ।

किसी वस्तुके मूल या तत्व से
सम्बन्ध रखनेवाला ।

मूली—(सं स्त्री) मूला ।

एक पौधे की जड़ जो मीठी और
चरपरी होती है ।

मूल्यांकन—(सं पुं) मूला निर्धारण
कबा, खूबन गुणाध्यायी मूला
ट्रिक कबा ।

दाम आंकना । किसी वस्तुका
गुण उपयोगिता या महत्व
आंकना या समझना ।

मूष (क) — (सं पुं) एषूष, निगनि ।
चूहा ।

मूसना — (कि स) काट्वा बख
काटि निग्रा वा छुबि कबि
निग्रा, नुठे कवा, ठंगा ।

किसीका माल छीन या चुराकर
ले लेना । लूटना । ठगना

मूसलचंद — (सं पुं) शकट-आवत
निकर्षा लोक ।

हटाकट्टा पर निकम्मा मनुष्य ।

मूसलधार, मूसलाधार — (कि वि)
धावागार, कलश्वर कारणे छल
(बरतुण) ।

मूसलके समान मोटी धार से ।

मूसा — [सं पुं] निगनि । इछनी
गकलव पंगगश्वर देवदूत ।
चूहा । यहूदियोंके मूल पैगंबर ।

मृग — (सं पुं) जन्तु, श्विन, श्वनिवा
नक्षत्र, कामशास्त्राश्वनि पुरुषव
एटा श्वनी ।

पशु । हिरन । मृगशिरा नक्षत्र ।
काम शास्त्रमें चार प्रकारके

पुरुषोंमें से एक । (सं स्त्री —
मृगिनी मृगी),

मृग-चर्म — [सं पुं] श्विनव छाल ।
हिरनकी खाल । (सं स्त्री —
मृगछाला) ।

मृग वृष्णा — (सं स्त्री) श्वन-कुशा,
यग डाक गडा डूलि यम कवा,
गरु डूमित श्रृंखल किरण पवि
पानीवर मदेर श्रुतीयमान होवा ।
शबीटक ।

मरुभूमिमें जलकी भ्रान्ति उत्पन्न
करनेवाली मरीचिका । मृग-
मरीचिका ।

मृग-नैनी, मृगलोचनी, मृगाक्षी —
(सं स्त्री) श्वन नयनी, पक्ष
मदेर श्वनी चक्र थका तिरवाता,
श्वनबी तिरवाता ।

मृगके समान सुन्दर नेत्रोंवाली
स्त्री ।

मृगया — (सं स्त्री) श्वनया, पक्ष
चिकार ।

शिकार । आखेट ।

मृगांक — (सं पुं) छल ।

चन्द्रमा ।

मृणाळ — [सं पुं] पशुव कुलव
गज्व डंठा, पशुव डंठा ।
कमलनाल ।

मृणालिनी—(सं स्त्री) कमलिनी,
पद्म ।

कमलिनी ।

मृण्मय, मृन्मय—(वि) गाँव,
गाँव जग ।

मिट्टी का बना हुआ ।

मृत-प्राय—[वि] मराने वाला,
बुढ़ा आश्रम ।

मरे हुए के समान ।

मृत्तिका—(सं स्त्री) गाँव ।
मिट्टी ।

मृत्यु-लोक—(सं पुं) श्रेयलोक,
यमपुरी ।

यम लोक । मृत्यु लोक ।

मृदुल—(वि) कोमल, सूक्ष्म ।
कोमल । कोमल हृदय । कृपालु ।
सुकुमार ।

मृषा—(अव्य) मिथ्या, धार्मिक ।
झूठ-झूठ । व्यर्थ ।

[वि] मिथ्या ।

असत्य । झूठ ।

मैं—[वि म०] अधिकार कावक
छिन, उ, छितरत ।

अधिकरण कारकका चिह्न

अन्दर । भीतर ।

मैं—[सं स्त्री] अर्थात् पत्नी
आनि वा बाँध, गीता ।

खेतों की सीमा का सूचक मिट्टी
की ऊँची रेखा या बाँध । सामा ।
मर्यादा ।

मेघबन्दी—(सं स्त्री) आनि वा
बाँध बन्धना कार्य ।

मेघ बनाने का काम या भाव ।

मैं—(सं पुं) डेकली ।
दुर्ग ।

मैं, मैं—(सं पुं) वर्षा, वर्ष ।
वर्षा ।

मेख—[सं स्त्री] मला, काँठ-
छूटा ।

कील । लकड़ी का छूँटा ।

मेखला—(सं स्त्री) मेखला, अरुण,
पर्वत का मध्य भाग, साधु-
गङ्गागोत्रे गङ्गा नदी का नाम
विशेष ।

करवनी । मंडल । पर्वत का
मध्य भाग । वह कपड़ा जो साधु
लोग गले में डाले रहते हैं ।

मेघदम्बर, मेघादम्बर—(सं पुं)
मेघ का गवय । वर डाँड
छात्रिणा ।

बादल की गरज । बहुत बड़ा
शामियाना ।

मेचक—(वि) क'ना, आग,
एकाव ।

काला । श्याम । अन्धेरा
(सं पुं) धौंदा, गेय ।
धूँआ । बादल ।

मेज—(सं स्त्री) मेज ।
पढ़ने लिखने आदिके लिये बनी
ऊँची चौकी ।

मेजबान—[सं पुं] गृह्य, अतिथि
आशि याब सबत थाटक वा आछे,
अतिथि बुझवा करेता ।

वह जिसके यहाँ कोई अतिथि
आकर ठहरे । आतिथ्य करने-
वाला । (भाव-मेजबानी)

मेट—(सं पुं) बगुआव चक्राव ।
मजदूरों का सरदार ।

मेटक, मेटनहारा—(वि) नाई-
किया कबोता, गूँठोता जन ।
मिटानेवाला ।

मेटना—(क्रि स) नाईकीया कवा,
नोआवा कवा, मोठा ।
मिटाना ।

मेद—(सं पुं) ठसूँ, रुखरी ।
चरबी । कस्तूरी ।

मेदा—(सं स्त्री) सुगन्धि वनोबधि
विणव ।

एक प्रकार की सुगन्धित जड़ जो
औषध के काम में आती है ।

[सं पुं] पाकशुली ।
पकाशय ।

मेदिनी—(सं स्त्री) पृथिवी ।
पृथ्वी ।

मेदुर—[वि] मिश्रि, मोठा ।
चिकना । मोटा या गाढ़ा ।

मेघ—(सं पुं) यज्ञ ।
यज्ञ ।

मेघा—[सं स्त्री] धारणा शक्ति,
बुद्धि, बुद्धि पना शक्ति ।
बातें समझने और स्मरण रखने
की शक्ति ।

मेघावी—[वि] मेघावी, ठोका
बुद्धि, अतिष्ठ, विधान ।

बुद्धिमान । पंडित । विद्वान ।

मेध्य—(वि) यज्ञ गवकीय, पवित्र ।
यज्ञ सम्बन्धी । पवित्र ।

[सं पुं] पठा हागन, बईव,
यवधान ।

बकरा । जी । खैर ।

मेमना—(सं पुं) छेडाब पौदानी,
पौआब आति बिटव ।

• मेहड़ा बच्चा । घोड़ेकी एक जाति ।

मेमार—(सं पुं) सब गछा मिट्टी,
बाख । मकान बनाने वाला
कारीगर । राज ।

मेखन—[सं स्त्री] मिश्रण,
मिश्रि, छेडा ।

• मिश्रण । मिलाई हुई चीज ।

मेखना—(क्रि स) मिश्रण करना ।
मिलाना ।

मेरा—(सर्वं) मेरा ।

‘मे’के सम्बन्ध कारक का एक रूप ।

मेरु—(सं पुं) अत्यन्त पर्वत,
पौनना खरी बरुा खुँटा वा काँठ ।
सुमेरु पर्वत । हिडोले की रस्सी
बाँधनेवाली लकड़ी ।

मेरु-दंड—[सं पुं] बाखशाड़,
पृथिवीर माखन कप्लित रेखा ।
रीढ़ । पृथ्वीके बीचकी कल्पित
रेखा ।

मेला—(सं पुं) मिल, मिलन, मित्रता,
मिश्रि, मेल, डाक, डाकगाड़ी ।
मिलने की क्रिया या भाव ।
मिलाप । आपस का सहभाव ।

मित्रता । अनुरूपता । मिश्रण ।
ढंग । तरह । डाक । डाकगाड़ी ।

मेलाजोल, मेल-मिलाप—[सं पुं]
मिश्रण, मिल-झूल ।
घनिष्ठता ।

मेलान—[सं पुं] बाख ।
छहराव । पड़ाव ।

मेली—(वि) गच्छी याव लगत
मिल-झूल देखे । मिलि झुलि
थाकिव थोका गच्छि ।

जिससे मेल मिलाप हो । मिलन-
सार । साथी ।

मेलहना—[क्रि अ] विकल होना,
शैतःछतः कवि गयय कटोरा ।
विकल होना । आना कानी करके
समय बिताना ।

मेवा—(सं पुं) किठमिठ । मधु-
फल, मेवा ।
किशमिश, बादाम आदि सूखाये
हुए बढ़िया फल ।

मेवासा—[सं पुं] दुर्ग, अव्यक्त
स्थान, सब ।

किला । सुरक्षित स्थान । घर

मेहँदी—(सं स्त्री) खटुका ।
एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ पीस

कर स्त्रियां हथेली या तलवे रंगने के लिये लगाती है ।

मेह—[सं पुं] मूत्र, पेशाब, बछ-
मूत्र बेबाब, मेघ, वर्षा ।

मूत्र । प्रमेह रोग । मेघ । वर्षा ।

मेहतर—[सं पुं] मेह, इन्डिजन ।
भंगी ।

मेहनत—[सं स्त्री] परिश्रम ।
परिश्रम । (वि-मेहनती)

मेहनताना—(सं पुं) पारिश्रमिक ।
पारिश्रमिक ।

मेहमान—(सं पुं) अतिथि ।
अतिथि ।

मेहमाना—[सं स्त्री] अतिथि
जयकाव ।
अतिथि सत्कार ।

मेहर—(सं स्त्री) कृपा, दया, पत्नी ।
कृपा । दया । पत्नी ।

मेहरबान—(वि) कृपानु ।
कृपालु । (सं स्त्री-मेहरबानी)

मेहरा—(सं पुं) तिलोत्तार पद
अङ्गी-छद्मी कटोता, मेघ ।
स्त्रियों की सी चेष्टा या हाव-भांग
करनेवाला । जनसा । मेघ ।
बादल ।

मेहराना—(क्रि अ) मरमबोझ बछ
मेशकि घोड़ा ।

कुरकुरी चीजोका मुलायम पद
जाना ।

मेहराब—(सं स्त्री) दूबाब ७ पबठ
मेश आकृतिव गच्छा, मछमिब
इमान थिय द्वादा ठाई ।

द्वार आदि के ऊपरकी अर्द्ध मंड-
लाकार रचना ।

मेहरारू, मेहरी—(सं स्त्री) शूरी,
पत्नी ।

औरत । पत्नी ।

मैं—(सं पुं) मे ।

उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप ।
स्वयं । खुद ।

मैका—(सं पुं) माकव सब ।
मायका । पत्नीके पिता आदि का
घर ।

मैत्री—[सं स्त्री] मित्रता ।
मित्रता ।

मैथिल—(सं पुं) मिथिला वासी ।
मिथिला का निवासी ।

मैथुन—(सं पुं) अछोग, शी-पुरुष
गहवाग ।

स्त्री के साथ पुरुषका समागम ।
संभोग ।

मैदान—(सं पुं) पथार, युद्धक्षेत्र ।
लम्बा चौड़ा खालीस्थान । युद्ध-
क्षेत्र ।

मैन—(सं पुं) कामदेव, भोग,
वागना, यम ।
कामदेव । भोग । शहदकी मक्खी
का मोम । वासना ।

मैना—[सं स्त्री] महेना, पार्सडी
माक, मेनका ।
सारिका । पार्वता की माता ।

मैया—(सं स्त्री) माहे, आहे ।
माता ।

मैल—(सं स्त्री) मयला, दोष ।
किसी चीजपर जमी हुई गंद,
धूल आदि । दोष । विकार ।

मैला—[वि] मलिन, दूषित ।
जिसपर मैल जमी हो । दूषित ।
(सं पुं) बिछा, छ, आवर्जना
फटा-छिदा ।
बिछा । कूड़ा-कंकट ।

मैला-कुचैला—[वि] रब मलिन,
लेउता ।
बहुत मैल । गंदा ।

मों—[अव्य] महे, काश अत्याग ।
मै ।

मोंछ—(सं स्त्री) गोंक ।
मूँछ ।

मो—(सर्व) 'मोब'कविताव अद्याग ।
मेरा ।

मोक्ष—(सं पुं) मोक्क, मुक्ति ।
बंधन से मुक्त । मुक्ति ।

मोध—(वि) निबर्धक, एनेस
योदा, बादी ।
निरर्थक व्यर्थ जानेवाला । बाड़ा ।
परकोटा ।

मोच—(सं स्त्री) मचीब टाटना
अच्छ डेकाल गिफाल होदा,
मोछाका ।
शरीरके किसी अंगके जोड़का
कुछ इधर उधर हट जाना ।

मोचन—[सं पुं] मुक्त कर, दूर
करा, काढ़ि अना ।
मुक्त करना । दूर करना । छीन
लेना ।

मोची—[सं पुं] मुछि ।
जूता आदि बनानेवाला ।
[वि] मुकल करि पिठता,
एकपाठता ।
छुड़ानेवाला । दूर करनेवाला ।

मोट—(सं स्त्री) टोटापोला, झूठ
(राशि) ।

गठरी । राशि ।

[सं पुं] थैलित प्रानी गिछा
छायाबाब डांडव योना ।

चमडेका बडा थैला, जिससे खेती
सीचते है ।

मोटरी—(सं स्त्री) गरु टोटापोला ।
छोटी गठरी ।

मोटाना—(क्रि अ) शकत होना,
धनी होना, अशक्य होना ।

मोटा होना । धनी होना ।
धमंडी होना ।

[क्रि स] आनक शकत करा ।
हूसरे को मोटा करना ।

मोटो-मोटो—[क्रि वि] मोटो-
झूठ, गलतफे, आश्चर्यात्मिक ।
अनुमानत ।

मोटिया—(सं पुं) झूठिया, भाव
बा बोझा बोझा राशुह, थकव
निठिना डाँठ कापोन ।
बोझ ढोनेवाला मजदूर । खदर
जैसा मोटा कपडा ।

मोड़—(सं पुं) घुबन, केँरुवा,
डाँख (बाँझा वा कागज आदिब)
किसी ओर मुड़नेकी क्रिया या

भाव । रास्ते आदिका वह अंश
या स्थान जहाँ से वह किसी ओर
मुड़ता या घूमता है ।

मोड़ना—[क्रि स] घुबा, डाँख
मिया, कुठित करा ।
किसी को मुड़नेमे प्रवृत्त करना ।
कुछ अंश उलट या समेटकर
विस्तार कम करना । कुठित
करना ।

मोतिया-बिंद—(सं पुं) चक्रव रेखाब
विशेष ।

आँख की एक बीमारी जिसमें
पुतली के आगे भिछी पड जाती
है । (अं -कैटेरेक्ट)

मोती—[सं पुं] मूला ।

मौक्तिक । मुक्ता ।

मोतीझरा मोतीझिरा—(सं पुं)
झूटि आइ, गरु वगळ ।
छोटी गीतला का रोग ।

मोड़—(सं पुं) आनन्द, अगम्यता,
सुगंध ।

आनन्द । प्रसन्नता । सुगंध ।

मोड़क—(सं पुं) डांडव लाक, डांडव
कुबित चेनि, गछला आदि मिह-
लाई प्राक करा उबध । मोदक ।
कड़ु ।

मोदी—[सं पुं] बेगारी ।
बनिया ।

मोना—[क्रि स] तिउरा ।
भिगोना ।
[सं पुं] बंशब पात्र, बंशौ
आदि ।
पिटारा । फावा ।

मोमजामा—(सं पुं) मयब याव
जगोवा काटोव ।
वह कपड़ा जिसपर मोम का
रोगन चढ़ा हो ।

मोयन—(सं पुं) आटे वा मयदा
वाबिबब मययत दिया धिउटे वा
ढेल ।

गूँघे हुए आटेमें डाला जानेवाला
घी या तेल जिसके कारण उससे
बननेवाली चीजें खस खसी और
मुलायम हो ।

मोर—(सं पुं) म'वा ठबाई ।
मयूर पक्षी । (सं स्त्री—मोरनी)
(सर्व) मोव ।
मेरा ।

मोरचा—[सं पुं] मायब, माटो
नत बाक थोड़ा मलि, दुर्गब छाबि-
उपितेन थका बाँटे, दुर्ग अथवा
नगर बक्काब बाटे गेष्ठ वि

ठाईठ थाटक । मुकत मयूरीन
होवा ।

लोहे पर लगनेवाली जंग । शीशे
या दर्पण पर जमी हुई मेल । वह
गड्ढा जो किलेके चारों ओर
रक्षा के लिये खोदा जाता है ।
वह स्थान जहाँ से गढ या नगर
की रक्षा की जाती है । द्वन्द या
प्रतियोगितामें होनेवाला सामना ।

मोरचा बंदी—[सं स्त्री] मक्क
आक्रमण कबिबटेल वा आक्क
बक्काब बाटे कबा मयब अल्लुति ।
शत्रुपर आक्रमण करने या अपनी
रक्षा करनेके लिये मोर्चा बनाना

मोरछड़, मोरछल—[सं पुं]
मयूबब पोखिबे ठेसारी ठो'बब ।
मोरके परोसे बना हुआ चँवर

मोरी—[सं स्त्री] जेठेबा/पानी
वे योवा नक्का, मयूरी ।
गदा पानी बहनेकी नाली । मोरनी

मोल—(सं पुं) मूला ।
मूल्य ।

मोलाना—[क्रि स] मब मय कबा ।
मूल्य तय करना या पूछना ।

मोष (घु)—(सं पुं) मोक ।
मोश ।

मोहताज (मुँहताज)—[वि]
दविज, कोनो बख्त बावे
आनर उचरत निर्डबनैल ।
दरिद्र । विशेष कामना रखने
वाला ।

मोहना—(क्रि अ) मोहित होना,
मूर्च्छा पेटना ।
मोहित होना । मूर्च्छित होना ।
[क्रि स] मोहित कर्ना,
आकषित कर्ना ।
मोहित करना । लुभाना । भ्रममें
डालना ।

मोहरा—[सं पुं] मुख वा धोला
अंश, गमुख अंश, गैरुअ अङ्ग-
गामी नाबी, दवा खेलर गुटि
विशेष । अश्व-मश्व
मुँह या खुला भाग । सामने का
भाग । सेना की अगली पंक्ति ।
शतरंज की कोई गोरी । सिगिया ।
विष : जहर । मोहरा ।

मोहरी--[वि स्त्री] प्रायःआय
तलर अंश ।

पाजामें का वह भाग जिसमें टाँग
रहती है ।

मोहलस—(सं स्त्री) गमग्र, छूटि,
अवधि, मियाद ।
फुरसत । छुट्टी । अवधि

मोहि—(सर्व) मोक (कविताउहे
अयोग्य शय)
मुके ।

मौका—(सं पुं) आविधा, गमग्र,
घटना घटित होना ठाई ।
किसी घटना के घटित होने का
स्थान । अवसर । समय ।

मौज—(सं स्त्री) लो, मनर
हेमालनि, अश्व, आवाय ।
लहर । तरंग । मनकी उमंग,
सुख । मजा । [वि-मौजी]

मौजूद—[वि] उपस्थित, धका ।
उपस्थित । जो सामने हो

मौजूदा—(वि) एहे गमग्र । वर्तमान ।
इस समय का । वर्तमान

मौत—[सं स्त्री] मृत्तु ।
मृत्यु ।

मौनी—[वि] मोन धारण
करवाता ।

मोन धारण करनेवाला ।

मौर—[सं पुं] बरक पिछोवा
मुकूट, पिरोवनि, अधान, आवर

कूँडिपाठ, गलधन, मूब ।

विवाह के समय वरको पहनाया
जानेवाला एक प्रकारका शिरो-
भूषण । शिरोमणि । प्रधान ।
आमकी मंजरी । सिर । गरदन ।

मौरूसी—(वि) ढ़ैरुक् धन
गम्पछि ।

पैतृक (धन संपत्ति)

मौलसिरी—(सं स्त्री) बकुल
फूल ।

बकुल फूल ।

मौला—(सं पुं) शिख, गशाग्रक,
गंवाकी जेवर ।

मित्र । सहायक स्वामी । ईश्वर

मौलि—(सं पुं) टिकनि, मूद,
किबोटी, जटो, मूशियाल ।
चोटी मस्तक । किरीट । जटा ।
मुखिया ।

मौली—[वि] जटोशरी, टिकनि-
शरी ।

मौलि धारण करनेवाला ।

(सं स्त्री) मूवा जातिब वाटव
बः कवा मूठा ।

पूजा आदि के लिये रंगा हुआ
सूत ।

मौसम, मौसिम—[सं पुं] थंडू,
बडब, रुगल आदि जगोब गमय ।

ऋतु । आबो-हवा । वृक्षोंके फल
आदि प्राप्ति का उपयुक्त समय ।

मौसा—[सं पुं] यश ।

मौसी का पति ।

मौसी—(सं स्त्री) माशी ।

माताकी बहन ।

मौसेरा—(वि) माशीब गश्कर ।

मौसीके सम्बन्ध का ।

म्यान—(सं पुं) थाप ।

बहु खाना जिसमें तलवार आदिके
फल रहते हैं ।

म्रियमान—(वि) म्रियमान, बड ठुला ।

मरे हुए के समान ।

म्रजान—[वि] यान मलिन, शर्खल ।

कुम्हलाया हुआ । दुर्बल । मलिन ।

(सं स्त्री — म्लानता)

म्हार—(सं) आशाब ।

हमारा ।

य

य—देवनागरी वर्णमालाव् छास्विन
गन्ध्याव् आश्व ।

वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर ।

यंत्रणा—[सं स्त्री] कष्ट, यज्ञणी,
वेदना, पीड़ा ।

कष्ट । तकलीफ । पीड़ा ।

यंत्र-मंत्र—(सं पुं) जावा-कूका,
यज्ञ आदि, तन्त्र-यज्ञ ।

जादू-टोना ।

यंत्र-विद्या—[सं स्त्री] यज्ञ विद्या,
यज्ञ शास्त्र । यज्ञ, कल आदि
गण विद्या, [ऐन्जिनियरिंग]
कल विज्ञान विद्या ।

कलें या यंत्र चलाने या बनाने
की विद्या । (अं—इंजिनियरिंग)

यंत्रिका—[सं स्त्री] तला, गँठाव ।
ताला ।

यंत्रित—(वि) यज्ञवे बद्ध कवि
अथवा थगाई थोड़ा, तला बद्ध ।

यंत्र के द्वारा रोका या बन्द
किया हुआ । ताले में बन्द ।

यंत्री—[सं पुं] यज्ञ वा कल
चलाउता, बाँझ यज्ञ बजाउता ।
यंत्र-मंत्र करनेवाला । बाजा
बजानेवाला ।

यक्यक—[क्रि वि] ठठाँ ।
एकाएक । सहसा ।

यकीन—(सं पुं) विश्वास ।
विश्वास ।

यक्ष, यक्ष्ण—[सं पुं] यक्ष,
यक्ष, कुबेर ।

एक प्रकार के देवता । कुबेर ।

यजन—[सं पुं] यज्ञ कर्वा ।
यज्ञ करना ।

यजना—[क्रि स] यज्ञ कर्वा,
पूजा कर्वा, याजनिक कर्वा ।

यज्ञ करना । पूजा करना ।

यज्ञोपवीत—[सं पुं] लङ्गन,
उपनयन, यज्ञ चूड़ा ।

जनेऊ । उपनयन संस्कार ।

वति (वी)—(सं पुं) गङ्गागी,
वत्ताचारी ।

संन्यासी । ब्रह्मचारी ।

(सं स्त्री) पूर्ण विराम दिन ।

छन्दोंके चरणोंका वह स्थान जहाँ
पढ़ते समय कुछ विराम होता है ।

वर्त्तिकथित्—(क्रि वि) य९ कथित,
अलपमान ।

थोड़ा ।

यत्र—(क्रि वि) य'त' विठाईत ।
जहाँ । जिस जगह ।

यत्र-तत्र—[क्रि वि] य'ते-त'ते,
ठाये-ठाये ।

जहाँ तहाँ । जगह-जगह ।

यथायथ—[क्रि वि] यथायोग्य,
यथार्थ, यथोचित, येने उचित
तेने ।

जैसा चाहिये वैसा ।

यथावत्—(वि) यथावत्, यथाविधि ।
जैसा था, वैसाही । ठीक तरहका ।

यथेच्छ—(अव्य) यथेच्छा, ईच्छा
अनुसरि, यिमान वा यिमान भागे
निमान बा तेने ।

इच्छा के अनुसार । जितना या
जैसा चाहिये उतना या वैसा ।

यथेच्छाचार—[सं पुं] यथेच्छाचार,
निज ईच्छा यते चल ।

स्वेच्छाचार (वि स्वेच्छाचारी)

यथेष्ट—(वि) अत्र, यिमान
भागे निमान होवा, जोबाटेक
होवा । बहुत ।

जितना चाहिये उतना ।

यद्यपि, यद्यपि—(अव्य) यदि, यदि,
एने इले ।

यदि ऐसा है ही । अगरचे ।
गो कि ।

यदा-कदा—(अव्य) कदा कचित्,
केतियावा केतियावा ।

कभी कभी ।

यनक—[सं पुं] यनकान्कार-विशेष ।
शब्दालंकारों में एक भेद ।

यमज—[सं पुं] यँजा, एक
मर्गे अन्ना ।

जुड़वाँ बच्चे ।

यम-यातना—(सं स्त्री) यम
यातना, इष्टा-कष्ट ।

मृत्यु कष्ट ।

यवनिका—(सं स्त्री) अँर
कापोर, पर्दा, नाट बरत बन्द

हाव कवा अँर कापोर ।

पर्दा । [रंगशाला का ।]

अशस्वी, यशी—[वि] यश-
शानी, श्याति शक ।

कीर्तिमान ।

यशुमति, यशोमति—[स स्त्री]

यत्नोदा, नन्दर भार्या, कृष्ण
पालिका-माक ।

यशोदा ।

यष्टि (का) यष्टी—[सं स्त्री] नाशुटि ।
छड़ी ।

यह—[सर्वं] एहे, हे [गर्वनाम पद ।]

एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग
वक्ता और श्रोताके अतिरिक्त
निकटवर्ती सभी संज्ञाओं या
बातों के लिये होता है ।

यहाँ—(क्रि वि) हेयात, एहे ठाहेत ।
इस जगह ।

यहि—(सर्व, वि) हेयाक ।

इसको । इसे ।

यही—(क्रि वि) एहे ठाहेत ।

इसी स्थान पर ।

यही—(अव्य) एयेइ ।

यह ही ।

यहूदी—[सं पुं] ईजराहेल
अधिवासी जाति विदेश, हिज-
जाति, ईहूनी ।

इसराइलमें बसनेवाली एक जाति
[अ-ज्यू]

(वि) ईहूनी गकलर देश
गश्कीय, ईहूनी ।

यहूद देश सम्बन्धी । यहूद का ।

यहै—[सर्वं] एयेइ [कवितातहे
व्यवहृत ।]

यही ।

या—(अव्य) अथवा, वा, नाहेवा ।
अथवा ।

(सर्व, वि) एहे ।

यह ।

याग, याज—(सं पुं) यज्ज ।
यज्ञ ।

याचना—(सं स्त्री) थोखा, याच्ना ।
मांगना ।

[क्रि स] थोखा, प्रार्थना
कना ।

मांगना । प्रार्थना करना ।

याचक, याजी—(सं पुं) यज्ज
करेता, यज्ज कर्ता ।

यज्ञ करनेवाला ।

याज्जन—[सं पुं] यज्ज कना ।
यज्ञ करना ।

याचना—[स स्त्री] यज्ञना, याचना,
वेचना, पीड़ा ।
कष्ट । पीड़ा ।

यातुधान—(सं पुं) बाक्कन ।
राक्षस ।

याद—[सं स्त्री] श्रवण, श्रुति ।
स्मरण । स्मृति ।

यादगार—(सं स्त्री) श्रुतिचिह्न ।
स्मृति चिह्न ।

याददास्त—[सं स्त्री] मनत बधा
शक्ति, मनत बाधित नश्वर्या कथा,
श्रवणीय ।
स्मरण शक्ति । स्मरण रखने
योग्य बात ।

यादृश—[वि] येने, येने श्रवण ।
जिस तरहका ।

यानी, याने—(अव्य) अर्थात्, याने ।
अर्थात् ।

याम—[सं पुं] एक प्रश्न, गम्य ।
पहर । काल । समय ।

[सं स्त्री] राति ।
रात ।

यामिनी—(सं स्त्री) राति, राति ।
रात ।

यायावर—[सं पुं] यायावर,
अथवा, शिवाभि ना वर-वावी
नथका एकाति बाहुश । गङ्गागी
वह जो एक जगह टिककर न
रहता हो । खानाबदोश ।
संन्यासी ।

यार—(सं पुं) वस्तु, उपपत्ति ।
मित्र । किसी स्त्रीका उपपत्ति ।

यारी—[सं स्त्री] वस्तुता । स्त्री आर
पुरुषव अवैध सम्बन्ध ।
यार या मित्र होने का भाव ।
मित्रता । स्त्री और पुरुष का
अनुचित सम्बन्ध ।

यावत्—[अव्य] वेतिशालेन । यि पर्यन्त
जवतक । जहाँ तक ।
(वि) जकलो ।
सब ।

याहि—[सर्व] ईश्वर ।
इसको ।

युक्ति-युक्त—[वि] बुद्धिबुद्ध,
उचित, गङ्गत ।
तर्क संगत ।

युग—(सं पुं) युगल, एकावर, वा
बद्ध काल, वर नौबल काल,
गम्य, कालव एठा प्रधान आर
डाडव भाग ।

जोड़ा । बारह वर्षका काल ।
इतिहास का कोई दीर्घ काल-
मान । जमाना । पुराणानुसार
कालके चार विभाग ।

युग्म (क)—[सं पुं] युगल, योव,
झूठा ।

जोड़ा । द्वन्द्व ।

युक्त—(वि) गन्तव्य, एकत्र कवा,
लग्न लगौवा ।
मिला हुआ । युक्त ।

युवा—[वि] युवक ।
जवान ।

यूँ—[अव्य] एने, एने धरणर ।
यों । ऐसे ।

यूथ, यूह—(सं पुं) गमूह, गैग्र
दल ।
समूह । सेना ।

यूथप (ति)—[सं पुं] दलर नेता,
सेनापति ।
दलका सरदार ।

यूप—[सं पुं] युग, यज्जब अल्ल
बलि दिया काँठ ।
यज्ञका वह खंभा जिसमें बलि
चढ़ाये जानेवाले पशु का गला
बाँधा जाता है ।

ये—[सर्व] एहेदाव ।
'यह' का बहु वचन ।

येतो—(वि) इमान ।
इतना ।

येन-केन प्रकारेण—(क्रि स)
यिकोना अकावे, येने तेने ।
जैसे तैसे ।

येहू—[अव्य] एहेटोउ, एहेउ ।
यह भी ।

यों—[अव्य] एनेमवे ।
इस प्रकार ।

योंही—[अव्य] एनेमये ।
बिना किसी कार्य या कारणके ।

योग-क्षेम—[सं पुं] योग-क्षेम,
शांति आरु सुवार्त्ता, अलक्ष
वस्तुव लाठ आरु लक्ष वस्तुव
वरक्षण ।

जीवन-निर्वाह । कुशल-मंगल ।
शान्ति और सुव्यवस्था ।

योगीन्द्र—[सं पुं] महायोगी,
योगेन्द्र ।
बहुत बड़ा योगी ।

योगेश्वर—(सं पुं) ईश्वर, शिव,
महायोगी ।

धीकृष्ण । शिव । बहुत बड़ा योगी ।

बोजक—(वि) बोजक । लग्न लगोवा । परिवर्तन करना, दुर्बल बहल ठीक संयोग करना, भूमिभाग मिलाने या जोड़नेवाला । योजना करने या बनानेवाला ।

बोजन—[सं पुं] योग, योग लगोवा कार्य, काबल लगोवा चारि ज्ञान (४ माइल) योग । मिलान । किसी काममें लगाना । दूरी की एक माप ।

बोजना—[सं स्त्री] व्यवहार, परिवर्तन, निश्चि, आटोबोजन, बचना ।

प्रयोग । मिलान । रचना । परिकल्पना ।

बोनि—(सं स्त्री) उपपत्ति, ज्ञान, आकर, तिवोता माइश्वर गुण अक्ष । नवीर ।

उत्पत्ति स्थान । स्त्रियों का बनेन्द्रिय । देह ।

बोविसा—[सं स्त्री] ठौ, तिवोता स्त्री । औरत ।

बौ—(सं) अह । यह ।

बौतक [तुक]—(सं पुं) बोजू गं मन । दहेज ।

बौवेय—(सं पुं) बोजा, बौची कालर एटि बुद्ध पार्गत जाणि बुद्धिबल पुतेक अजनर नाम योद्धा । एक प्राचीन देश त उनके निवासियों का नाम ।

बौन—(वि) बौनि गवक्षीय, पुं पुरुष गवक्षीय गवक्षीय, बौन बौनि सम्बन्धी ।

बौवराज्य—[सं पुं] बुद्धराज पद । युवराज का भाव या पद ।

र

र—वर्णमालाव गाथाश्चैव गन्ध्याव
आश्व ।

वर्णमाला का सत्ताह्रसवां व्यंजन ।

रं—[वि] पवित्र, रूप, द्रुवीया,
निःकिन ।

दरिद्र । कन्जूस ।

रंग—[सं पुं] रं-धेमालि, नृत्य-
गौत आदि । नाट्यर, युक्कल्ल,
रं. शोभा, अभाव, अवस्था,
आनन्द, अश्रुवागं, योवन ।

नाचना-गाना । नृत्य या अभिनय
का स्थान । रण-क्षेत्र । वर्ण ।
वह पदार्थ जिससे कोई चीज
रंगी जाती है । युवावस्था ।
शोभा । प्रभाव । आनन्द उत्सव ।
युद्ध । मौज । हालत । अनुराग ।

रंगत—(सं स्त्री) रं, रवण, अवस्था ।
रंग । वर्ण । अवस्था ।

रंगना—(क्रि स) रट्टेव बोलावा,
गौठत ठना, निखर अश्रुकूल
करा ।

किसी चीज पर रंग चढ़ाना ।

किसी को अपने अनुकूल करना ।

(क्रि अ) काटो अति आगच्छ
होवा ।

किसीपर आसक्त होना ।

रंग-विरंग—(वि) बड-वेबडब,
बहटो बडब ।

अनेक रंगोंका । अनेक प्रकारका ।

रंग-भूमि, रंग शाला—(सं स्त्री)
नाट्यर, नाट्यशाला, युक्कल्ल ।
नाट्य शाला । रण क्षेत्र ।

रंग-मंच—[सं पुं] बज्रमक, नाट्य-
शाला ।

नाट्यशाला का वह स्थान जिस
पर अभिनेता अभिनय करते हैं ।

रंग-महल—[सं पुं] रंशर, डोग-
विनागर ज्ञान ।

भोग विलास करने का स्थान ।

रंग-रत्नी, रंगरेत्नी—(सं स्त्री)
धेल-धेमालि, आर्योप अर्योप ।
आमोद प्रमोद ।

रंग-राजा—(वि) भोग विलासते
लागि थका, अमृत ।

भोग विलासमें लगा हुआ । अनु-
राग पूर्ण ।

रंगरूढ—(सं पुं) न-निकार,
नतुनकै छडि होरा टैग्न वा
चिपाही ।

नया भर्ती होनेवाला सिपाही ।
नोसिलुआ ।

रंगरेज—(सं पुं) कापोरत बः
बोलोरा बावगायी ।

कपड़े रंगने का व्यवसाय करने
वाला । (सं स्त्री रंगरेजिन)

रंगसाज—(सं पुं) आचवाव पत्र
बः दिया लोक, बः तैग्राव
कबोता ।

बीजों पर रंग बढानेवाला ।
रंग बनानेवाला ।

रंगाई—[सं स्त्री] बोल दिया
कार्य वा डार अथवा ईशाव
बावे दिया वानच ।
रंगने की क्रिया, भाव या
मजदूरी ।

रंगा-रंग—(वि) विविध बडव, नाना
धवधव ।

अनेक रंगोंका । तरह तरहका ।

रंगावट—(सं स्त्री) बोलोरा कार्य,
बः लंगोरा कार्य ।

रंगने की क्रिया या भाव ।

रंगीन—[वि] बोलोरा, बजान,
विलासप्रिय, आमोदी ।

रंगा हुआ । विलास प्रिय ।
मजेदार ।

रंगीला—(वि) बडिगाल, धेमेनीया,
झुलब ।

रंगीन । रसिक । सुन्दर ।

रंग (क)—(वि) अनप ।
थोड़ा ।

रंज—[सं पुं] दुःख, शोक ।
दुःख । खेद । शोक ।

रंजक—(वि) आनन्द दिया,
बञ्जक ।

रंगनेवाला । प्रसन्न करनेवाला ।

रंजन—(सं पुं) बः लगाई शोडित
कबा कार्य, आनन्द वा गस्तोव
दिया कार्य ।

रंगनेकी क्रिया या भाव । विल
प्रसन्न करने की क्रिया ।

(वि) आनन्द दिगुता ।
मन प्रसन्न करनेवाला ।

रंजित—(वि) बः वा वधव थावा
शोडित, आनन्दित, अमृत ।

रंगा हुआ । आनन्दित । अनुरक्त ।

रंजिश—(सं स्त्री) रनोमानिया,
रतल्लेन ।

मनमुटाव ।

रंजीदा—[वि] दूःखित, अगम्युष्टे,
दुःख-युक्त ।

दुःखित । अप्रसन्न ।

रंझापा—(सं पुं) बेष्ठा अथवा
विधवा होरा अरुन्धा, वैधवा ।

राई या विधवा होने का भाव
या अवस्था । विधवा-पन ।

रंझी—[सं स्त्री] बेष्ठा, विधवा ।
वैधवा । विधवा ।

रंझुआ (वा)—(सं पुं) विपत्नीक ।
विपत्नीक ।

रंदना—[क्रि स] बेम्माटेव कांठ
निगळ कवा ।

रंदेसे छीलकर लकड़ी चिकनी
और साफ करना ।

रंदा—(सं पुं) बेम्मा, कांठ निगळ
कवा यज्ञ विलेख ।

लकड़ी छील कर चिकनी और
साफ करने का औजार ।

रंधन—(सं पुं) रकन, रक्षा कार्य ।
रसोई बनाना या पकाना ।

रंध्र—(सं पुं) चिक्का, कुंठा, कांठे ।
क्षिद्र ।

रंभण, रंभन—(सं पुं) गङ्गन ।
आगळि, हेथेलनि ।

आलिगन । रंभाना ।

रंभना—(क्रि अ) हेथेलनिगा,
जोबेबेव नञ कवा ।

जोर का शब्द करना । (गायका)
रंभाना ।

रंभाना—[क्रि अ] गार्इगम्ब नाठ
आदिब पदेव नञ कवा,
हेथेलनिगा ।

गायका शब्द करना ।

रँहट, रहट—(सं पुं) नामव पवा
पानो तुलिवटेल गळा यज्ञ
विलेख ।

कुएँसे पानी निकालने का एक
प्रकार का यंत्र जिसमें काठ का
एक बड़ा चक्र होता है ।

रँहटा, रहटा—[सं पुं] यँठव ।
सूत कातने का चरखा ।

रई—(सं स्त्री) रथनो, रौंठेनो ।
मथानी ।

(वि स्त्री) अश्वरुद्ध. युद्ध,
निगळित होरा ।

हूबी या पगी हुई । अनुरक्त ।
युक्त ।

रईस—(सं स्त्री) धनी ।
अमीर । बड़ा आदमी ।

रहरे—[सर्व] आपुनि ।
आप ।

रहबा—(सं स्त्री) क्षेत्रफल ।
क्षेत्रफल ।

रकम—[सं स्त्री] धन-गण्यति,
अलंकार, धनर परिवर्माण, प्रकार
वा विध, रकम ।
धन सम्पत्ति । गहना । धन की
राशि (अं—एकाउण्ट) । प्रकार ।

रकाब, रिकाब—(सं स्त्री) यौवार
जीनत डबि दिवटेल बाकि दिश
लोहार यतन विशेष ।
सवारीके छोड़ेकी काठी या जीनमें
लटकनेवाला पावदान ।

रकाबी—(सं स्त्री) तबाहि प्लेटो
तश्तरी ।

रक्त—[सं पुं] रक्त, रङ्ग, रङ्ग
गिन्दूर, रङ्ग, रङ्ग
खून । कमल । सिद्धर । लालरङ्ग
[वि] बडीन, रङ्ग
रङ्ग हुआ ।

रक्तिमा—[सं स्त्री] रक्तमय,
लालिमा ।
लाली । सुरखी ।

रक्तोत्पल—[सं पुं] रङ्ग पद्म
लाल कमल ।

रक्ष—(सं पुं) रक्षी, रक्षक ।
रक्षक । रक्षा । राक्षस ।

रक्षा—(सं स्त्री) रक्षा कार्य, रक्षा-
श्रेत नाहेवा बेगार आजावर
परा रक्षा परिवटेल रक्षपूत कवि
बाकि दिश रक्षादे रक्षा करी ।
रक्ष-पूत आप ।

बचाव । वह सूत्र या यंत्र जो
बालकों को भूत-प्रेत, रोग-नजर
आदि की बाधासे बचने के लिये
बांधा जाता है ।

रक्षा-बंधन—(सं पुं) रक्षाबन्धन ।
उपर अधेश्वर उरेश्वर विशेष ।
राखी बन्धन ।

रक्षिता—(सं स्त्री) पालिता,
उपपत्नी ।
रखेली ।

रखना—(क्रि अ) रक्षा, गति रक्ष
करा, बचावा, हानि-विधिनिर्
परा रक्षा करा, गारमान, रक्षकत
दिश, निरुद्ध करा, पालन करा
स्थित करना । ठहराना । धरना ।
रक्षा करना । नष्ट न होने देना ।

सौपना । बन्धक में देना । नियुक्त करना । पालना ।

रखनी, रखैल, रखेझी—(सं स्त्री)
भालिका, उभयपक्षी ।
उपपत्नी ।

रखवाना, रखाना—[क्रि स]
बर्खास्त ।

‘रखना’ का प्रेरणार्थक । रक्षा करना ।

रखवार, रखवाला—(सं पुं) बखीशा
पश्चीशा, ‘पश्वावाला’ ।

रक्षा या रखवाली करनेवाला ।
पहरेदार ।

रखवाली—(सं स्त्री) जावधान
छांदावना कबा अथवा
बक्का कबा कार्य । जावधानत ।

रक्षा या देख भाल करनेकी क्रिया
या भाव । हिफाजत ।

रखाई—(सं स्त्री) बर्खाब क्रिया वा
कार्य वा तब बाने दिशा बखूबी
रक्षा करने की क्रिया, भाव या
पारिश्रमिक ।

रग—[सं स्त्री] बग, नाड़ी, गिर,
ज्वेद ।

शरीरमें की नस । पत्तोंमें दिखाई
पड़नेवाली नसें । हठ, जिद ।

रगड़—(सं स्त्री) बँश कार्य ।
रगड़ने की क्रिया या भाव ।

रगड़ना—(क्रि स) बँश, गिशा,
बब अविश्रमत्वे शो, विबल
कबा ।

घिसना । पीसना । किसीसे बहुत
परिश्रम लेना । तंग करना ।
[क्रि अ] बब अविश्रम कबा ।
बहुत मेहनत करना ।

रगड़ा—[सं पुं] बँश कार्य, बब
अविश्रम कबि थका, काखिया ।
रगड़ने की क्रिया या भाव ।
अत्यन्त परिश्रम । भ्रगड़ा ।

रग-रेशा—(सं पुं) नाडी । काटा
बाब श्रुक्षातिश्रुक्षा कथा ।
नस । किसी की सूक्ष्म से सूक्ष्म
बाब ।

रगड़ना—(क्रि स) थका ।
खदेड़ना ।

रघुकुल, रघुवंश—(सं पुं) बभ्रु
वंश, बका बभ्रु बंश
राजा, रघुका वंश ।

रघुनाथ, रघुराई, रघुराज, रघुबर-
(सं पुं) श्रीरामछत्र
श्री रामचन्द्र ।

रचक—(सं पुं) बचक, बचना
कबौता, लेखक
रचना करने या बनानेवाला ।

रचना—(सं स्त्री) बचा, निर्माण
कबा, गाव, गद्याव कोमल,
बचना ।

रचने की क्रिया या भाव ।
निर्माण । बनाने का ढंग या
कौशल । साहित्यिक कृति ।

(क्रि स) लिखा, किताप आदि
लिखा, गद्याव, बोलावा ।

लिखना । ग्रन्थ आदि लिखना ।
सजाना । रंगना ।

(क्रि अ) अशुबल होवा, ठिक,
योग्य वा सुलभ होवा ।

अनुरक्त होना । ठीक, उपयुक्त
या सुन्दर होना ।

रचनात्मक—[वि] बचनावक,
गठनमूलक ।

जो किसी प्रकार की रचना या
निर्माण से सम्बन्ध रखता हो
और उसमें सहायक हो (अ—
क्रिएटिव) । किसी देश या

समाज की उन्नति और सम्पन्नता
में सहायक होनेवाला । (अ—
कन्स्ट्रक्टिव)

रचाना—(क्रि स) लिखावा, गद्याव,
कोनो उद्देश्य आदि पठा ।

'रचना' का प्रेरणार्थक । अनु-
ष्ठान करना या कराना । रंगना ।
(क्रि अ) हात, डबित शलधि
वा जेठुका नाईवा आमत
लगेवा ।

हाथ, पैरों में मेंहदी, महावर
आदि लगाना ।

रच्छा—[सं स्त्री] रक्षा ।
रक्षा ।

रज—(सं पुं) तिलोताव गदह-
कीया लार, कुलव पवांग,
बज्जोक्षण ।

स्त्रियों की ऋतु । फूलोंका पराग ।
रजोगुण ।

(सं स्त्री) धूलि ।
धूल ।

रजक—[सं पुं] बोवा ।
घोबी ।

रजस—[सं स्त्री] कप ।
चादी ।

(वि) बगा, बडा ।
सफेद । लाल ।

रजत-पट—(सं पुं) कपानौ पर्का
छिनमाव बाटे आँवि दिश
पर्का । छिनमा ।
बह परदा जिसपर सिनेमा के
चित्र दिखाये जाते हैं । सिनेमा ।

रजनी—[सं स्त्री] राति ।
रात ।

रजनी-चर—[सं पुं] निशाचर,
बाकस ।
रासस ।

रजनी-मुख—(सं पुं) गङ्गा-
बेना ।
संध्या का समय ।

रजवाड़ा—(सं पुं) बाज, बजा ।
रियासत । राजा ।

रजस्वला—(वि स्त्री) बखशना,
माहिकीया आव होवा, श्रु-
वती वा छुवा होवा तिवोता ।
बह स्त्री जिसका रज निकल रहा
हो । ऋतुमती ।

रजा—(सं स्त्री) इच्छा, छूटि, अश्रु-
प्रति, आदम, शीकृति ।
मरजी । इच्छा । छुटी । अनु-
प्रति । आज्ञा । स्वीकृति ।

रजाई—[सं स्त्री] आदम, अश्रुप्रति ।
आज्ञा । रजा ।

रजाई—[सं स्त्री] लेप, निशानी,
आदम ।

ओढने का लिहाफ । आज्ञा ।

रजामंद—(वि) गम्यत ।
सहमत ।

रजायसु—(सं स्त्री) बजाव आदम ।
राजा की आज्ञा ।

रजु, रब्जु—(सं स्त्री) बबी ।
रस्सी ।

रजो दर्शन—[सं पुं] तिवोताव
माहिकीया आव होवा कार्य ।
रजस्वला होना ।

रटंत—[सं स्त्री] मुखश्च कवा कार्य ।
रटनेकी क्रिया या भाव ।
(वि) मुखश्च ।
रटा हुआ ।

रटन—(सं स्त्री) मुखश्च कबिवटेल
बाटे बाटे आँवबादा ।
कोई शब्द या बात बार बार
कहने की क्रिया या भाव ।

रटना (क्रि स) बाटे बाटे कोदा,
मुखश्च कबिवटेल बाटे बाटे
पटा ।

कोई बात या शब्द बार बार
कहना । कंठस्थ करने के लिये
बार बार कहना या पढ़ना ।

रण, रन—(सं पुं) युद्ध, वध ।
युद्ध । जंगल ।

रणक्षेत्र रणांगण—(सं पुं) युद्ध-
क्षेत्र ।
लड़ाई का मैदान ।

रण-धीर—[वि] डाढ़र योद्धा वा
वीर ।
युद्धमें धैर्यपूर्वक लड़नेवाला ।
बहुत बड़ा योद्धा या वीर ।

रणन—(सं पुं) वन वनवि, वन
होवा ।
घाब या गुंजार करना । बजना ।

रणि, रनित—(वि) क्षणित होवा ।
बजता हुआ ।

रत—[सं पुं] गच्छाग, प्रेक्षित
पत्रा, लिङ्ग, योनि ।
मैथुन । प्रीति ।
[वि] यत्नवत्, आगच्छ. लीन ।
अनुरक्त । आसक्त । (कार्य
आदिमें) लगा हुआ ।

रतजगा—[सं पुं] उत्थागव ।
रात भर जागने की क्रिया या
भाव ।

रतनार(ी)—(वि) बड़ी, अल्प बड़ा
बडव ।
कुछ लाल । सुरक्षी लिये हुए ।

रति—(सं स्त्री) रति, कामदेव
भार्या, आगच्छि, हेपाह, शुद्धाव,
गच्छाग । शोभा
कामदेव की पत्नी । मैथुन ।
प्रीति । शोभा ।

रतिबाह, रतिपति, रतिराई, रतिराज—
[सं पुं] कामदेव ।
कामदेव ।

रतौधी—(सं स्त्री) कुकुबी-कणा,
(गधूलि वा वाति नेदीशो मन्त्रह)
एक बीमारी जिसमें रातके समय
दिखाई नहीं पड़ता ।

रतौडा—(वि) काबो अर्थात् आगच्छ
अथवा होवा हेपाह थका
लोक । प्रेमी इ'व हेपाह
थका लोक ।

किमी की ओर रत या अनुरक्त
होने का प्रवृत्ति रखनेवाला ।

रतल—(सं स्त्री) उज्ज्वल विशेष,
आय याधा सेव उज्ज्वल ।
आध सेरके लगभगका एक तोल ।

रत्नी—(सं स्त्री) एक यन्त्र छडागव
जोष. एटा लाटुमनिब जोष,
गच्छाग, अगच्छाग ।
आठ चावल का एक तोला ।
शोभा । संभोग । अनुराग ।

रथी—(सं स्त्री) छाडी, गवा न
कियावटेल कवा बीशर छाः ।
अरथी ।

रत्न-गर्भा—[सं स्त्री] बङ्गगर्भा,
पृथिवी ।
पृथ्वी ।
(वि स्त्री) याव बुकूत बङ्गव
डू बाल याट्छ ।

जिसके गर्भमें अनेकों रत्न भरे हों ।

रत्नाकर—(सं पुं) गाथव, शनि,
समुद्र । खान ।

रथी—(सं पुं) बथत उठि युक्त
कबौता नायक ।

रथपर चढ़कर चलनेवाला या
लड़नेवाला । बहुत बड़ा योद्धा ।

(वि) बथत उठि थका ।

रथपर चढ़ा हुआ ।

रद—[सं पुं] दौत ।
दौत ।

(वि) बहित कवा, यखाश् कवा,
परिवर्तन कवा ।

रह । परिवर्तित ।

रदच्छद, रद-छद -- [सं पुं]
छुँ, सज्जागव समान्त दौतेवे
कामोबा छिन आदि ।

होंठ । संयोग के समय अंगोंपर
दाँतों के गड़ने का चिह्न ।

रदन—[सं पुं] दौत ।
दौत ।

रह—(वि) परिवर्तन कवा, बहित
कवा, अकामिला अथवा अछोथा-
विछोथा होवा ।
बदला हुआ । परिवर्तित । खराब
या निकम्मा ठहराया हुआ ।

[सं स्त्री] बगि ।

बमन । उल्टी ।

रही—(वि) अकामिला, कोनो
कामत नश ।

जो किसी काममें न आ सके ।
बेकार ।

[सं स्त्री] पूरवि याक कामत
नलगा कागज ।

पुराने और व्यर्थके कागज ।

रनना—[क्रि अ] बाजि उठा, शंख
छोः ।

झनकार होना । बजना ।

रन-ग्रंका (बौकुरा)—(सं पुं)
गोक्रा, यूँडाक, बीव ।

योद्धा । वीर ।

रन-बास—[सं पुं] अलुनपूर ।
अन्तः पुर ।

रपट—[सं स्त्री] पिछला; दोब,
भूलिठ थानात दिया एकाहाब
आदि ।

फिसलना । दोड़ । थानेमें दी जाने
वाली किसी घटना की सूचना ।

(रिपोर्ट)

रपटना—(क्रि अ) पिछल थोदा,
वेगोई थोदा ।

फिसलना । तेजीसे चलना ।

रफा—[वि] दमिर, शास्त्र, दूर कदा,
निपटि, कोनो कार्य बा
थोककियाव शेष ।

दबा हुआ या शांत । मीमांसा
या दूर किया हुआ ।

रफू—(सं पुं) फटा बा टिवा
कापोबर कुटा बा बिक्का बोराब
दवे टिलाई करि ठिक कदा,
एनेनबने बद्ध कदा कुटा बा
बिक्का ।

फटे या कटे हुए कपड़ेके छेदमें
बुनावट की तरह तागे भरकर
उसे बन्द करना । इस प्रकार
बन्द किया हुआ छेद ।

रफू-बद्धर—(बि) पलाई थोदा,
निरुद्धेन, अशुद्धान ।

भाग जाना । गायब । अन्तर्धान ।

रब रब्ब—(सं पुं), जेथर ।
ईश्वर ।

रबड़ी—[सं स्त्री] टोनि मिशनाई
गाथीबब लगत पगाई तैयार कदा
क्षीर छातीय वस्तु ।

बसोधी । दूधको आगपर गाढ़ा
कर बनायी जानेवाली स्वादिष्ट
वस्तु ।

रबाब—(सं पुं) वाद्य विशेष,
रुद्रवीणा ।

सारंगी की तरहका एक प्रकार
का बाजा ।

रबाबी—(वि) बवान वाद्य
बजाउता ।

रबाब बजानेवाला ।

रबी—(सं स्त्री) वसन्त काल,
वसन्त कालत होरा धेतिवातिब
फूल ।

वसन्त ऋतु । वसन्त ऋतुमें काटी
जानेवाली फसल ।

रब्बत—[सं पुं] अज्ञात, गिला-
थोति ।

अभ्यास । मेल-जोल ।

रभस—[सं पुं] वेग, असमझता,
उत्साह, धृष्ट ।

वेग । प्रसन्नता । उर्मग । खेद ।

रमकना—(क्रि अ) ब्रूनिउ
छाना, गी शैलाई खोख कड़ा ।
भूलेपर बैठकर भूलना । भूमते
हुए चलना ।

रमण, रमन—[सं पुं] विलास
गछों । कुवा, आशी
विलास । मैथुन । विचरण । पति
[वि] खूब, प्रिय, विलास
अथवा क्रीडा नानक, गछोंग
कबौता अथवा खूब भोग
कबौता ।
सुन्दर । प्रिय । विलास का क्रीडा
करनेवाला । किसीमें रमने या
किसीका सुख भोगनेवाला ।

रमणी, रमनी—(सं स्त्री) श्री,
युवती । तिरौता ।
स्त्री । युवती ।

रमणीका, रमणीय—(वि) खूब,
मनोहब ।
सुन्दर । मनोहर ।

रमता—[वि] आश्रयै धुवि-
कुवा लोकर ।
जो बराबर धूमता-फिरता हो ।

रमना—(क्रि अ) बग्न कबा,
भोग-विलास बाटे कोनो
ठाईत थका वा बाग कबा,

यानक कबा, बाग होबा,
आगछ, लीन होबा, चला-
फिवा कबा ।

भोग विलासके लिये कही जाकर
ठहरना या रहना । आनन्द
करना । व्यास होना । अनुरक्त
या लीन होना । धूमना-फिरना ।
चल देना ।

(सं पुं) छबिया पंथाब, बागिचा,
बग्नोय हान ।

वह स्थान या घेरा जहाँ पाले
हुए पशु चरने के लिये छोड़ दिये
जाते हैं । बाग । कोई सुन्दर
और रमणीक स्थान ।

रमल—(सं पुं) खोतिब
डविद्य कब पंवा विद्या विशेष ।
पासे फेंककर शुभाशुभ फल या
भविष्य बनानेवाली विद्या ।

रमा—[सं स्त्री] लक्ष्मी ।
लक्ष्मी ।

रमाकान्त, रमण, रमापति, रम—
[सं पुं]—विष्णु ।
विष्णु ।

रमाना—(क्रि स) आगछ अथवा
लीन होबा ।
अनुरक्त वा लीन करना ।

रमित—[वि] सुगन्ध, याव मन
काबो अति आगच्छ हैछे ।
जिसका मन किसीमें रमा हो ।

रमैनी—[सं स्त्री] कबीर दागव
पदावलीव विनिष्टे अश्व
गन्ध ।

दोहे चोपाइयों में कहे हुए कबीर
दास के कुछ विशिष्ट वचन या
उनका संग्रह ।

रम्य—[वि] बगोश, सुन्दर ।
मनोहर । रमणीय ।

रयन, रैन—[सं स्त्री] राति ।
रात ।

रय्यत—(सं स्त्री) श्रद्धा, वायत ।
प्रजा ।

रलना—(क्रि अ) लग होना,
मिल होना, पूर्ण वा युक्त
होना ।

मिलना । पूर्ण होना । युक्त होना
(क्रि स)—रलाना ।

रलिका, रली—(सं स्त्री) शशाव,
आनन ।
बिहार । आनन्द ।

रव—[सं पुं] गन्ध, उज्ज्वल, स्वनि,
गोलगोल, मूर्छा ।

गुंजार । नाद । आवाज । शोर ।
सूर्य ।

रवा—[सं पुं] गन्ध टूट्ठवा, कण,
द्रुमि ।

बहुत छोटा । टुकड़ा । कण ।
सूजी ।

[वि] उचित, ठिक, अचलित ।
उचित । प्रचलित ।

रवाज—[सं स्त्री] श्रद्धा, नियम,
बीति ।

प्रथा । परिपाटी ।

रवानगी—(सं स्त्री) अज्ञान ।
प्रस्थान ।

रवाना—[वि] अहित, योरा,
पठावा ।

जो कही से किसी जगहके लिये
चल पड़ा हो । भेजा हुआ ।

रवानी—[सं स्त्री] गति, निर्यास
गति ।

गति । ऐसी गति जिसमें बाधा
न हो ।

रविश—(सं स्त्री) शवरण, अकार,
कुलनिब माखव गन्ध गन्ध बाँटे ।

चाल । तरीका । बागकी क्यारियों
के बीच का छोटा मार्ग ।

रवेया—(सं पुं) चाल-चलन, धवन ।

चालचलन । तरीका ।

रश्क—(सं पु) ज्वर । (ज्वर) शिथिल ।

ईर्ष्या ।

रश्मि—(सं पु) किरण, बन्धि, सौंदर्य लेकर वा लेगीम । किरण । घोड़े की लगाम ।

रस—[सं पु] आश्वाद, सोराद, तिहा-मिठा आदि गुण, हर्ष विवाद आदि भाव उत्पन्न करिब पवा काव्य वा नाटकन गुण, फूल आदिब छोल, कोनो वस्तु चेपि उलि उठा छोल, चर्कित, प्रेम, रुचि, उत्साह । वनस्पतियों या उनके फूल पत्तोंमें रहनेवाला वह तरल पदार्थ जो दबाने, निचोड़ने आदि पर निकलता या निकल सकना है । निर्याम । शरबत । नत्व । खाने पीने की चीज मुँहमें पड़ने पर उससे जीभ को होनेवाला अनुभव या स्वाद । काव्य का वह तत्व जिमसे आनन्द की अनुभूति होती है । प्रेम । रुचि । उमंग ।

रसकेलि—[सं स्त्री] विशाव, वं शेषालीबे लगन कवा, क्रीड़ा, हाँसि-तायछा ।

बिहार । क्रीडा । दिलगी ।

रसज्ञ—(वि) वगुष्ठ, वगजाही, कथा वा बचनार सोराद वृक्षा, कविता आदिब वग वा सोमर्य उपलब्धि करिब पवा ।

रमको जाननेवाला । काव्य और साहित्य का मर्म और गुण समझनेवाला ।

रसद—(वि) वग वा आनन्द दिग्गता, सोराद लगी ।

रस या आनन्द देनेवाला ।

स्वाददिष्ट ।

(सं स्त्री) बचन । शान्त-वस्तु ।

कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो । भोज्य-वस्तु ।

रसना—[सं स्त्री] जिह्वा, जिह्वाइ पोरा सोराद, ज्वरी, लेगीम । जीम । जीमसे मिलनेवाला स्वाद । रस्य । लगाम ।

(क्रि अ) लाह लाह बै सोरा वा टोप टोपटैक पवा, कोनो वस्तु गलि टपटपटैक पवा, उमंग होरा, प्रेमागुस्त होरा ।

धीरे धीरे बहना या टपकना ।
किसी पदार्थका गीला होकर
जल या रस छोड़ना या टपकाना,
तन्मय या मग्न होना । स्वाद
लेना । प्रेमासक्त होना ।

रसम, रश्म—[सं स्त्री] बीति,
पूर्वादि बीति-नौति, त्रिनाञ्चीति ।
पुरानी प्रथा । परिपाटी । मेल
जोल या आपसदारीका सम्बन्ध ।

रसर—[सं पुं] डाँडव जबी ।
मोटी ओर बड़ी रस्सी । (सं स्त्री
-रसरी)

रसा—[सं स्त्री] श्रुतिदी, जि० ।
पृथ्वी । जीम ।
[सं पुं] याज्ञाव ज्ञान आदि ।
पकी हुई तरकारी में का पानी
वाला अंश । झोल । शोरबा ।

रसाई—[सं स्त्री] पाथिल होवा,
उपनिधि ।
किसी तक पहुँचने की क्रिया या
भाव । पहुँच ।

रसाना—(क्रि स) बगपूर्ण, बगबुल,
आनन्दित कर्ता ।
रससे युक्त या रस पूर्ण करना ।
प्रसन्न करना ।
(क्रि अ) बगपूर्ण होवा, आनन्द,

आनन्द उपलब्ध कर्ता ।
रसयुक्त होना । आनन्द लूटना ।

रसाभास—(सं पुं) ग्राहिता बग
पूर्ण निम्नलि नटेश याभाग ग्राह
होवा—कावाव दोष विशेष ।
साहित्यमें रसके परिपाक या
पूर्ण रूपके अभावमें दिखाई पड़ने
वाला वक्त । आभास या छाया
मात्र । ऐसी उक्ति या कथन
जिसमें उक्त प्रकारके दोष हों ।

रसाल—(सं पुं) कूँश्चिब, आम,
बाज्र ।

गन्ना । आम । राजस्व ।
[वि] बगाल, बग थका, मधुब ।
रससे युक्त । रसिक । रसीला ।
मधुर ।

रसाला, रिसाला—(सं पुं)
अश्वकोशी गेहूँ, पटवकोशी
अथवा मादेशकोशी आलनाठनी ।
घुड़सवार सेना । पाक्षिक या
मासिक पत्र ।

रसिया—[सं पुं] बगिक, जल
अञ्जलत गोवा लोकगीत
विशेष ।

रसिक । एक प्रकारका गीत जो
फागुनमें ब्रजमें गाया जाता है ।

रसीद—(सं स्त्री) प्राप्ति पत्र, बटि, बटि ।

किसी चीजकी प्राप्ति या पहुँच ।
प्राप्ति का पत्र ।

रसीला—(वि) वसपूर्व, बगाल, गोवादि लता, बसिक, खल्ल ।
जिसमें रस हो । स्वादिष्ट ।
रसिक । सुन्दर ।

रसूल—(सं पुं) पञ्चगव्य, देवदेव दूत ।
ईश्वर का दूत । पैगम्बर ।

रसोईया, रसोईदार—(सं पुं)
वाक्कनि ।
रसोई पकानेवाला आदमी ।

रसोई—(सं स्त्री) बक्का बख्त,
वाक्कनि शाल
पकायी हुई खाने की चीजें ।
भोजन बनाने की जगह ।

रस्मी—[वि] बीति-नीति सम्प्रकीर्ण,
यि निश्चायगति शैष्ट ।

रस्म या प्रथासे सम्बन्ध रखने
वाला । जो नियमित रूपसे
अथवा मान्य रीतिके अनुसार हो ।

रस्सा—(सं पुं) मोटा खरी ।
बहुत मोटी रस्सी । (सं स्त्री -रस्सी

रहँचटा, रहचटा—(सं पुं) नालगा,
निछा ।

लालसा । चस्का ।

रहट, रहठ—(सं पुं) पथावत पानी
मिठिवले बलदे टना यत्न
विशेष
खेतमें बलोंकी सहायता से
सिचाई का एक यंत्र ।

रहन—[सं स्त्री] याचाव वावशाव ।
निष्ठा । थका कार्या वा भाव ।
रहने की अवस्था, क्रिया या
भाव । लगन । आचार-व्यव-
हार ।

रहन-सहन—(सं स्त्री) थका
मेलान बीति, छाल छलन ।
जीवन बिताने और काम करने
का ढंग ।

रहना—(क्रि स) बोझा, वाग
कवा, थका, गमय कटोठा,
ककवि कवा, खीझाई थका,
वाकौ थका, टैव बोझा ।

ठहरना । थमना । निवास करना ।
विद्यमान होना । समय बिताना ।
नौकरी करना । जीवित रहना ।
बाकी बचाना । छूट जाना ।

रहनि—(सं स्त्री) श्रौति, मन्त्र ।
रहन । प्रीति ।

रहम—(सं पुं) कृपा, मन्त्र,
दया, गर्भाशय ।
करुणा । दया । कृपा । गर्भाशय ।

रहम-दिल—[वि] दयानु, मन्त्र-
मिश्रण ।
दयालु ।

रहमान--[सं पुं] देव ।
दयालु ईश्वर ।

रहस, रहसि=(सं पुं) रहस्य,
गोपनीय रहस्य, क्रीडा, आनन्द,
गोपनीय ज्ञान, रति, गङ्गा, अर्ग
रहस्य । गुप्त भेद । क्रीडा ।
आनन्द । गुप्त या एकान्त स्थान ।
रति । समुद्र । स्वर्ग ।

रहस्यवाद—[सं पुं] मान्य
देवत्व लगत अत्यन्त कपे
मन्त्र ज्ञान कविबटल कबा
अष्टष्टाव रति वा बुद्धि, हिन्दी
काव्य गहिताव अष्टष्टि विशेष ।
बहु वृत्ति जिसमें मनुष्य प्रत्यक्ष
रूपसे ईश्वरसे सम्बन्ध स्थापित
करने का प्रयत्न करता है । (अ-
मिस्टिसिज्म)

रहस्यवादी—(सं पुं) रहस्यवाद
मिक्काखर अष्टमरण काबी ।
वह जो रहस्यवादके सिद्धान्तों
का अनुयायी हो ।
[वि] रहस्यवाद मन्त्रकीय ।
रहस्यवाद सम्बन्धी । रहस्य-
वादका ।

रहाई—[सं स्त्री] शक्ति, श्रुति,
आश्रम ।
रहन । सुख । आराम ।

रहीम—(वि) कृपानु, दयानु ।
कृपालु ।
(सं पुं) देवत्व नाम विशेष ।
ईश्वर का एक नाम ।

राँक, राँका—(वि) दुश्मनी,
निन्दिता ।
रंक । दरिद्र । बहुत ही दीन ।

रांगा—[सं पुं] रंगी ताम्र । गीह
निठिना कोमल किन्तु ताठक
वर्गी धातु, बाँ ।
सीसेके रंगकी एक प्रसिद्ध मुला-
यम धातु ।

रौजना—(क्रि स) बढोरा,
बोलोरा, आनन्दित कबा,
छकृत काजल लगेरा, झुटा
वाचन आदिब आलि मबा ।

रंजित करना । टाँका लगाना ।

आँखमें काजल लगाना ।

रौंड़—(सं स्त्री) विश्वास, वेषण ।

विधवा । बेव्या ।

रौंधना—(क्रि स) रक्षा, आश्रय

मिलाना ।

भोजन पकाना ।

राधा, राइ—[सं पुं] बच्चा, जरू
बच्चा ।

राजा । छोटा राजा ।

[वि] सकलमातृके डाढ़र,
उडम ।

सबसे बढ़कर । उत्तम ।

राई—(सं स्त्री) लाई-शक, कम
प्रमाण ।

एक प्रकार की छोटी मरसों ।

बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण ।

राइर—[सं पुं] अष्टवधू ।

रनिवास ।

[वि] आपोनाब ।

श्रीमान का । आप का ।

राका—(सं स्त्री) भूमिगत बाँठ ।
पूर्णमा की रात ।

राकेश—[सं पुं] चक्षुष्य ।

चन्द्रमा ।

राख—(सं स्त्री) डग, झाँई ।

भम्म ।

राखी—[सं स्त्री] 'बक्का बकन'

उत्सवक समयत शाठत पिच्छावा
छाप ।

रक्षा बंधनके समय कलाई पर

बाँधने का डोरा ।

रागना—[क्रि अ] अशुबक वा

आगच्छ होवा, निमग्न होवा ।

अनुरक्त होना । रंगा जाना ।

निमग्न होना ।

(क्रि स) गौत गौरा

गीत गाना ।

रागी—(सं पुं) अशुबागी, गायक ।

अनुरागी । गवैया ।

[वि] बोलोवा, बडा

विषय वागनात लिख ।

रंगा हुआ । लाल । विषय

वामना में लिख ।

राछ—[सं स्त्री] विज्ञीब यतन

विशेष, तात्कालिक बाँठ, समदल ।

कारीगरों का औजार । करघेमें

का वह उपकरण जिससे तानेके

तागे ऊपर नीचे होते रहते हैं ।

जुलूम ।

राज—(सं पुं) बाह्य, भागन,
अड्डा, भागनव गय, अमिदावी
गम्पडि, बह्म ।

राज्य । शासन । प्रभुत्व । राज्य
या शासन का काल । बड़ी जमी-
दारी और भू सम्पत्ति । रहस्य ।
[वि] बर आदवन, आदवनाय ।
परम प्रिय और आदरणीय ।

राजकीय—(वि) चवकावी, बाह्यव
नगठ वा चवकाव नगठ
गवक्र शंका ।

राजा या राज्य से सम्बन्ध
रखनेवाला ।

राजगद्दी—(सं स्त्री) बाह्यगिःशगन ।
राज सिंहासन । राज्याभिषेक ।

राजगीर—[सं पुं] बर गच्छावा
मिथ्या ।

मकान बनानेवाला कारीगर ।

राजना—[क्रि अ] शंका, अमङ्कत
शंका ।

विद्यमान होना । शोभित होना ।

राजन्य—(सं पुं) कक्षिग्र, बषा ।
अभिय । राजा ।

राज प्रासाद—[सं पुं] बाह्यगशन ।
राज महल ।

राज महिषी—(सं स्त्री) पाटेशाटप ।
पटरानी ।

राजस—(वि) बषा शुभ गम्पन्न,
बाह्यगिक शुभत शुनी ।

रजो गुणसे उत्पन्न या युक्त ।
रजोगुणी ।

(सं पुं) बाह्यगिक शुभ, शं,
बाह्यगन, वा जिःशगन, बाह्यग-
शिकाव ।

रजोगुण । क्रोध । राजाका पद
या सिंहासन । राज्याधिकार ।

राजसूय—(सं पुं) बाह्यसूय,
श्रेष्ठ बषा बुनि अतिप्रन्न कार-
बटेल कवा यछ सिनेव ।

एक यज्ञ जो सम्राट पदके अधि-
कारी राजा करते थे ।

राजस्व—(सं पुं) बाह्यश, शंका ।
कर, शुल्क आदिके रूपमें राजा
या राज्य को होनेवाली आय ।
(रेविन्यू)

राजाज्ञा—[सं स्त्री] बषाव आदपन ।
राजा या राजा की आज्ञा ।

राजि—[सं स्त्री] भावी, श्रेष्ठ,
बेधा, नाई ।
पंक्ति । श्रेणी । लकीर । राई ।

राजीव—(सं पुं) पशु ।

कमल ।

राज्याभिषेक— (सं पुं) बखार

बाजाबाज दिया जन्मार्क कब

उत्पन्न हुआ ।

किसी राजाके राजगद्दी पर बैठने

के समय होनेवाला औपचारिक

कृत्य या उत्सव ।

राज्यारोहण—(सं पुं) राजा पोष-

अर्थवशावसे वाटे मिश्रगन्त

वश ।

किसी राजाका पहले पहल राज-

सिंहासन पर बैठकर राज्य का

अधिकार प्राप्त करना ।

राजा—[वि] बड़ा बड़ब, बोलावा,

कावे श्रम अश्रुबल, राख,

बत, निगुल ।

लाल रंगका । रंगा हुआ । किसी

के प्रेममें अनुरक्त । किसी काम में

लगा हुआ । रत ।

राधन— [सं पुं] अंग अङ्ग

जुष्ट कब, आराधना वा

आर्चना कब ।

प्रसन्न और सन्तुष्ट करना ।

आराधना करना ।

रान—[सं स्त्री] कबड्डी, उर ।

जंघा ।

राज—[सं स्त्री] कुँहियाबड़ छत्र ।

पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने

का रस ।

राम-दूत—(सं पुं) शम्भान ।

हनुमानजी ।

राम-बाण—[वि] अवार्ध, अयोध ।

अचूक । अमोघ । तुरन्त लाभ

करनेवाला (औषध)

राम-रस—(सं पुं) निमग्न ।

नमक ।

रामा—[सं स्त्री] झलती तिलोत्ता,

नदी, लक्ष्मी, जीता, बाधा, ज्ञी ।

सुन्दर स्त्री । नदी । लक्ष्मी ।

सीता । राधा । पत्नी ।

राज—(सं पुं) बका, चक्राव, बाजा,

चाबण जकलन उपाधि विशेष ।

राजा । सरदार । राज्य । भाटों

की उपाधि ।

[वि] डाढ़ब, डाल ।

बड़ा । बढ़िया ।

[सं स्त्री] गन्धि, पदार्थ ।

सम्मति । सलाह ।

रास—[सं स्त्री] काजिया, विवाद ।
भगडा । विवाद ।

रासी—(वि) काजिया कटौत ।
भगडा या विवाद करनेवाला ।

[सं स्त्री] काजिया ।

रास (भगडा)

राल—(सं स्त्री) रफ विशेष ।
बुगान वग आलावा गऊ । जालटिण
एक प्रकारका वृक्ष । इस वृक्षका
निर्यास जो अपने सुगंधित धुँए
के लिये जलाया जाता है ।
धुना । लार ।

रावटी—[सं स्त्री] गरु तानी छ्वा,
तबू ।

छोटा तंबू । छोटा घर । बारह-
दरी ।

रावत—(सं पुं) गरु बच्चा, बीव,
छक्का ।

छोटा राजा । बीर । सरदार ।

रावर (१), रावरो—(सर्व)
आपनावा ।

आपका ।

रावल—[सं पुं] आशुबपुत्र,
राजपुतनाथ प्रचलित बजाव
उपाधि ।

रनिवास । राजपुताने के कुछ
राजाओं की उपाधि ।

रावली—[सं स्त्री] अशुबपुत्र ।
अंतपुर ।

राशि—[सं स्त्री] राशि, गमूह,
दम, उडबासिकाव, राशि चक्र
(ज्योतिष शास्त्रमें) ।

ढेर । उत्तराधिकार । क्रान्ति वृत्त
में पडनेवाले तारोंके बारह समूह ।

राष्ट्र—(सं पुं) बाज्या, देश, एक
गणनव अङ्गगत देश, राष्ट्र ।

राज्य । देश । एक राज्यमें
बसनेवाला जन समूह ।

राष्ट्रिय राष्ट्रीय—(वि) जातीय,
गमूह राष्ट्र देश, सम्पत्तीय ।

राष्ट्र सम्बन्धी । राष्ट्रका ।

रास—(सं स्त्री) रास, कूँडई गोपी
गकलव गैतेत कबा आदि वगव
धेवाली, धेवाबाव लेगाव, धान
आदिन दम, पोवा पुन लोवा
कार्या, खूँ, पञ्चव दल ।

श्रीकृष्ण की रासलीला या उमका
अभिनय घोड़े की लनाम । बाग
डोर । खलिहानमें लगाया जाने
वाला अन्नका ढेर । जोड़ । गोद
या दत्तक लेनेकी क्रिया या भाव ।

सूद । चौपायों का झुण्ड ।

(वि) अशकूल, उच्छिन्न ।

अनुकूल । वाजिव ।

रासक—[सं पुं] शाय बग अथवा
एकांकी नाटक ।

हास्य रसका एक प्रकार का
एकांकी नाटक ।

रासभ—(सं पुं) शोध, शोधन ।
गधा । खच्चर ।

रास-विहास—[सं पुं] नागकीड़ा ।
रास क्रीड़ा । आनन्द मंगल ।

रासो—(सं पुं) अपवर्ण वा प्रवर्ण
दिग्गीत लिखी राजागणन वीर-
पूर्ण युद्ध-विन्दन दिग्गा अथ
विदेश ।

किसी राजाके वीरतापूर्ण युद्धके
विवरणों से युक्त पद्यमें लिखा
जीवन-चरित्र ।

रास्त—(वि) उच्छिन्न, शोणप्रतिभा,
अशकूल, शिक ।
मीधा । दुस्त । वाजिव ।
अनुकूल ।

राह—(सं स्त्री) राखी, उष्ण ।
रास्ता । तरकीब ।

राहगीर, राही—(सं पुं) अधिक ।
पथिक ।

राह-चलता—[सं पुं] अधिक ।
आलोचा वस्तु लगत गश्क
नथका ।
पथिक । जिसका प्रस्तुत विषयसे
कोई सम्बन्ध न हो ।

राहत—(सं स्त्री) आराम, सूख,
उदकांश ।
आराम । सुख ।

रिंगना, रंगना—[क्रि अ] ठोठावि
बोला ।
पेट के बल चलना ।

रिंद—(सं पु) नास्तिक, श्रेष्ठाचारी ।
धार्मिक बन्धनों का व्यर्थ समझने
या न माननेवाला । स्वेच्छाचारी
और स्वच्छन्द पुरुष ।
(वि) मठलीया ।

मनवाला । मस्त ।

रिवायन—[सं स्त्री] अशुद्ध,
दशाष्ट, मुंछ, दशापूर्ण वादशाव,
अभाव ।
कोमल और दयालुतापूर्ण व्यव-
हार । अनुग्रह । छूट । कमी ।

रिवाया—(सं स्त्री) अष्ट ।
प्रजा ।

रिक्त—(वि) भूया, उन्, शून्य।
खाली / निर्धन।

रिक्तता—[सं स्त्री] रिक्तता,
भूयाता, शून्यता, खाली भाव।
रिक्त या खाली होनेकी अवस्था
या भाव।

रिक्तावना, रिक्ताना—(क्रि स)
काटका गच्छे करा, आकषित
करा।
किसीको अपने पर प्रसन्न या
मोहित कर लेना।

रिक्ताव—(सं पुं) आनलित अथवा
आकषित करा कार्य।
रीझने की क्रिया या भाव।

रित, रितु—(सं स्त्री) शृङ्ग।
ऋतु।

रिपु—(सं पुं) शत्रु।
घातु।

रिम-झिम—[सं स्त्री] किण किणिया
बबबूण पवा, कूँवलि पवा।
बर्षाकी छोटी छोटी बूँदें गिरना।
फुहार।

[क्रि वि] किणकिणिया बबबूण।
छोटी छोटी बूँदोंके रूपमें (वर्षा)

रियासत—(सं स्त्री) बाज्या, देशीय
बाज्या, वैज्यव।

राज्य। देशी राज्य। अमीरी।
वैभव।

रियासती—(वि) बाज्या गश्कोश,
बाज्याव।

रियासत सम्बन्धी। रियासत का।

रिरना, रिरियाना—[क्रि अ] देना
अकाश करा।
गिडगिड़ाना।

रिल-मिल—(सं स्त्री) मिना-झोति।
मेल-मिलाप।

रिबाज—(सं पुं) बीति, अथा।
प्रथा।

रिश्तेदार—[सं पुं] गश्कोश,
कुटुंब।
सम्बन्धी। नातेदार।

रिश्वत—(सं स्त्री) डोटी।
घुस। कुत्कोच।

रिश्वतखोर, रिश्वती—(वि) डोटी-
खोच, डोटीखोच वा लोचा। लोच।
रिश्वत या घुस लेनेवाला।

रिष, रिषय, रिषि—[सं पुं] शशि।
ऋषि।

रिस, रिसानो—[सं स्त्री] खं।
क्रोध।

रिसाना, रिसियाना—(क्रि अ क्रि स)
खं उठा वा खं डोला।

क्रुद्ध होना या दूसरे को क्रुद्ध करना ।

रिहा—(वि) मुक्त, मुक्त ।
बन्धन आदिसे छुटा हुआ । मुक्त ।

रिहाई—[सं स्त्री] मुक्ति ।
छुटकारा । मुक्ति ।

रीझना—(क्रि स) बका, गिछोवा ।
रांघना । सिझाना ।

रीछ—[सं पुं] भानूक ।
भालू ।

रीझना— (क्रि अ) ग्रथ वा अंग्रस
होना ।

किसीके रूप, गुण आदिके कारण
उसपर प्रसन्न होना ।

रीढ़—[सं स्त्री] बाकशाढ़, मेरुदण्ड,
मूल तन्त्र वा बन्ध ।

पीठके बीच की लम्बी हड्डी ।
मेरुदण्ड । वह तत्व या चीज
जिसके आधार पर कोई चीज
सड़ी रह सके ।

रीति—(सं स्त्री) नीति ।
रीति ।

रीतना—(क्रि अ क्रि म) मूना वा थानी
होना वा कना ।

साली या रिक्त होना या करना ।

रीता—[वि] थानी, मूना बिछ ।
साली । रिक्त ।

रीस : [सं स्त्री] देखा, दाह, अति
शक्ति ।

ईर्ष्या । डाह । स्पर्धा ।

रीसना—[क्रि अ] रं कना ।
क्रोध करना ।

रुंड—[सं पुं] कबक, मूव कठोव
पिछत धका गाबि यरन ।

सिर कट जानेपर बाकी बचा
हुआ घड़ ।

रूँघना—[क्रि स] पथत बाधा
दिश, बाधा आश्र होना,
आश्रुता, अज्ञानत पना ।

मार्ग रुकना या घिरना । उल-
झना । घेरा जाना ।

रुकना—[क्रि अ] थमका, ठेव योवा,
आश्र नवठादेक थका ।

अवरोध होना । अटकना । ठहर
जाना ।

रुकाव—[सं पुं] बाधा ।
रुकावट ।

रुकावट—(सं स्त्री) बाधाव भाव,
बाधा दिश-कथा वा बन्ध ।

रुकने या रोके जाने की क्रिया वा

भाव । अङ्कन । बाधा । रोकने वाली बात या चीज ।

रक्षा—[सं पुं] छिछि ।
पत्र । चिट्ठी ।

रक्ष—(वि) रक्षणे, रक्षण, अग्निरक्ष (गो) नीरस आरु टान (मांति) ।

जिसमें चिकनाहट न हो । खुर-दरा । नीरस । शील रहित ।

रक्ष—(सं पुं) मुख, चेहरेवा, आकृति, मनोवृत्ति, आगव अंश ।

मुँह । आकृति । चेहरे या आकृति से प्रकट होनेवाली मनकी इच्छा । सामने का भाग । पार्श्व ।

(क्रि वि) शिष्ट, काल, गयुथ ।

तरफ । सामने ।

रक्षसस—[सं स्त्री] छूटि, अवकाश । छुट्टी । अवकाश ।

रक्षाई, रक्षावट—(सं स्त्री)
रक्षणता, नीरस वा कष्ट बाधशर
रक्षापन । व्यवहारमें संकोच या शील का अभाव ।

रक्षाना—(क्रि अ) नीरस होना, क्रोधाश्रित होना ।

रक्षा या नीरस होना या करना ।

रुग्ण—(वि) बेमार, बेमारी । बीमार ।

रुचना—[क्रि अ] रुचिकर होना, डाल लगी ।
अच्छा लगना ।

रुचिकर, रुचिकारक—(वि)
रुचिकर, डाल लगी ।
अच्छा लगनेवाला । रुचि उत्पन्न करनेवाला ।

रुचिमान, रुचिर—[वि] सुन्दर, मधुर ।
मनोहर । सुन्दर । मधुर ।

रुचिरता, रुचिराई—(सं स्त्री)
गोमर्षा, रुचिकर ।
रुचिर या सुन्दर होनेका भाव ।

रुज—[सं पुं] रोग, कष्ट, डाल ।
रोग । कष्ट । भाग ।

रुजा—(सं पु) बेमारी, कूट ।
बीमारी । कोढ़ ।

रजू—(वि) प्रवृत्ति ।
प्रवृत्ति ।

रुक्षान—(सं पुं) प्रवृत्त होना, क्रिया वा भाव, साधारण प्रवृत्ति ।
किसी ओर प्रवृत्त होनेकी क्रिया ।

या भाव । साधारण या हलकी
प्रवृत्ति

रुणित, रुणित—(वि) क्षणित ।
बजता हुआ ।

रुतवा—[सं पुं] गंद, रसियापन ।
पद । ओहसा ।

रोदन—(सं पुं) काट्मान ।
रोनेकी क्रिया ।

रुद्राक्ष—(सं पुं) एविष ७४
डांडव गंछ आरु ताव गुटि,
ईशाव माला विशेषतः शिव
उपासक निह्ने ।

एक वृक्षके गोल बीज जिनसे
माला बनती है ।

रुधिर—(सं पुं) रक्त ।
रक्त ।

रुपहला—(वि) कपाली, कपव
पदे ।

चांदीके रंगका ! चांदी का सा ।

रुटना—(क्रि अ) टाकनि दिया,
आच्छादित होना ।
आच्छादित होना ।

रुहआ—(सं पुं) डांडव फेंटा
विशेष ।

एक प्रकारका बड़ा उल्लू

रुहआई—[सं स्त्री] काट्मान,
काट्मानव ईह ।

रोनेकी क्रिया या भाव । रोनेकी
प्रवृत्ति ।

रुलाना—[क्रि स] कट्मावा,
छुवावे छुवावे वा ईनाई विनाई
धुवि कुबिवटेल दिया, अग्राध
कवा ।

हमारे को रोनेमें प्रवृत्त करना ।
इधर उधर मारामारा फिरने
देना खराब करना ।

रुसना, रुसना—[क्रि स] अगच्छ
होना, अधिमानत थं कवा ।
नाराज या असन्तुष्ट होना ।

रुसवा—[वि] वदनाम ।
बदनाम ।

रुह—(वि) उत्पन्न, जन्म ।
उत्पन्न । जात ।

रुंधना—[क्रि स] कंठा आदि
कोनो ठाई आडवा । बन्ध कवा,
थमा ।

कंटीले पीछों आदिसे कोई स्थान
घेरना । बन्द करना । रोकना ।

रुआ—[सं पुं] अंश ।
धूआ । किसी चीजका रोंआ ।

रुई—[सं स्त्री] निमनू वा
कपाशव डूना ।

कपास के या सेमलके डोडेमें का
रेसोदार धूआ ।

रुख—(सं पुं) गछ ।
पेड़ ।

रुखा—[वि] बंशठा, श्वापशीन,
नीरवग ।

जो चिकना न हो । स्वाद रहित ।
नीरस ।

रुखापन—(सं पुं) कर्कशता ।
खसई ।

रुठना—[सं पुं] अगशुष्टे, उनामीन,
पृथक् देख योग्य । निराश होना ।
अप्रसन्न होकर उदासीन, चुप या
अलग हो जाना ।

रुढ़—[वि] कठ, अगिद्ध, उ९पन्न,
गूथ, अचलित, वेष्टिके भजा
तदकारी आदि ।

बढ़ा हुआ । प्रसिद्ध । गँवार ।
प्रचलित । (तरकारी आदि)
जिसमें बहुत कड़ापन आ गया हो ।

रुढ़ि—(सं स्त्री) अगिद्धि बहुत
दिनव पना छल अश अथवा वा
नौति ।

रुढ़का भाव । प्रसिद्धि । बहुत
दिनोंसे चली आई प्रथा या चाल ।

रूपक—(सं पुं) गूढि, नाटक,
अर्थानुकाव विवेचन ।

मूर्ति । नाटक । एक अलंकार ।

रूपकार—(सं पुं) गूढि गाढोता,
काविकर ।

मूर्ति बनानेवाला ।

रूप-रेखा—(सं स्त्री) कण, बेधा,
बंझा, गछा-विधा, आँछनि ।

किसी बनाये जानेवाला रूप या
किये जानेवाले काम का वह
स्थूल अनुमान जो उसके आकार
प्रकार आदिका परिचायक होता
है । (अं-प्लान) किसी कार्यके
सम्बन्ध की वह मुख्य बात जो
उसके स्थूल रूपकी सूचक होती
है । (अं—आउट लाइन)साका ।

रूपसी—[सं स्त्री] अगनी ।
सुन्दरी ।

रूपा—(सं पुं) कण, वगाँ बोंरा ।
चाँदी । सफेद घोड़ा ।

रुबरु—[कि वि] गगूथ ।
सम्मुख । सामने ।

रूरा—[वि] श्रेष्ठ, उत्तम, वर
डाँडव ।

उत्तम । श्रेष्ठ । बहुत बड़ा ।

रूसी—(सं पुं) रूसिया देश
निवासी ।

रूस देशका निवासी ।

[वि] रूसिया देशगणकीय,
रूसिया देशव ।

रूस देश सम्बन्धी । रूस देशका ।

(सं स्त्री) रूसिया देशव भाषा
उक्ति ।

रूस देशकी भाषा । सिरके चमड़े
की वह पतली झिल्ली जो बहुत
छोटे टुकड़ोंके रूपमें फट या कट
कर निकलती है ।

रूह—[सं स्त्री] याज्ञा, गन्, आत्मा
विशेष ।

आत्मा सत्ता । एक प्रकार का
इन्द्र ।

रूकना—(क्रि अ) गीतव यात, वर
बेसा खूब गोरा वा कथा
कोरा, गर्जित वागिनी यवा ।
गधेका बोलना । बहुत भद्दे ढंगसे
गाना या बोलना ।

रूँड—[सं पुं] एड़ा, एवागछ ।
एरंड ।

रूँड—(सं स्त्री) एबी ।

रूँडके बीज ।

रे—(अव्य) मर्यादन वाचक अवयव,
देना ।

छोटे या तुच्छ आदमियों के लिये
एक सम्बोधन ।

रेख—(सं स्त्री) रेखा, चिह्न, नटुनटुक
गंजा गोक ।

लकीर । चिह्न । नयी निकलती
हुई मूँछे ।

रेग—(सं स्त्री) बालि ।

बालू । रेत ।

रेगिस्तान—(सं पुं) मरुभूमि ।
मरुस्थल ।

रेचक—(वि) पेटे चलावा उवध ।
(वह पदार्थ) जिसे खाने में दस्त
आवे ।

(सं पुं) एक नाकेदि बाथोन
शरीरव भित्तव गोठोवा वायु
उमिवाइ दिग्वा प्राणायम योगव
कार्य विशेष ।

प्राणायाममें सांससे खींची हुई
हवा बाहर निकालनेकी क्रिया ।

रेचन—(सं पुं) डेढ, पेटे चला
कार्य, जलाप । जल्लाव ।

रेज—(वि) अलग, किस्म ।

बहुत थोड़ा, अल्प ।

रेजगारी (गो)—[सं स्त्री] धूलवा ।

टकाब-निम्न मूला, आधनि, गिकि
यना आदि ।

छोटे फुटकर सिक्के । छोटे टुकड़े
या कतरन आदि ।

रेजा—[सं पुं] रब गरु वस्त्र ।

बहुत छोटा टुकड़ा ।

रेडना—(क्रि स) बागवा ।

लुढ़काना ।

रेदी—(सं स्त्री) गरुगाड़ी ।

छकड़ा । बैलगाड़ी ।

रेणु, रेनु—[सं स्त्री] धूलि, धूलि-

कणी ।

धूल / कण ।

रेस—[सं स्त्री] बालि ।

बालू ।

रेतना—(क्रि स) बेठीवे धरा ।

रेतीसे रगड़ना ।

रेती—(सं स्त्री) बालिमय गाँटि,

माछुलीव मटेर नदीव बीप,

कोनो धातव वस्तु मिशि

कविनव वा छोडावव बाटे

बादशाह कबी मोन यत्न

विशेष, बेठी ।

एक औजार जिसे किसी धातुपर
रगड़नेसे उसके महीन कण कट
कर मिरते हैं । रेतीली या बलुई
भूमि ।

रेतीला—[वि] बालिमय ।

बालूवाला ।

रेतना—(क्रि सं) ठकिया, ठका गया ।

ढकेलना ।

रेत-पेल—(सं स्त्री) रब छिब ।

भारी भोड़ । भर-मार ।

रेला—[सं पुं] आनीव तीव जौंज,

आक्रमण, आतनाशन कबा,

आशिका, श्रेणी, मूस ।

पानी का तेज बहाव । चढ़ाई ।

जन समूहका जोरोसे आगे बढ़ना ।

अधिकता, समूह, पंक्ति ।

रेवड़—(सं पुं) डेड़ा, छांगनी

आदिब जाक ।

भेड़, बकरियों आदिका झुण्ड ।

रेशम—(सं पुं) पाँटे ।

एक प्रकार के कीड़ेसे तैयार किये

हुए महीन, चमकीले और हड़

तंतु जिनसे कपड़े बनते हैं ।

रेशा—(सं पुं) आँश ।

तंतु ।

रह—(सं स्त्री) शीघ्र निशानि गति,
बेधा ।

खाद मिली हुई वह मिट्टी जो
ऊपरी मैदानमें पायी जाती है ।
रेखा ।

रहन—[सं पुं] बहक ।
बंघक ।

रन—(सं स्त्री) बाति ।
रात्रि ।

रैयत—(सं स्त्री) बायत ।
प्रजा ।

रिंगटा, रोआँ—(सं पुं) लोम,
लोम, आश वा शुः ।

शरीरपर के बहुत छोटे और
पतले बाल । वनस्पति आदि पर
के उक्त प्रकारके तंतु ।

रोध—(सं पुं) अवरोध, बाधा ।
अवरोध । रोक ।

रोना, रोबना—(क्रि अ) कम्पा ।
रुदन करना ।

(सं पुं) दूःख, कष्ट ।
दुःख । कष्ट ।

(वि) अलग कथाते कान्तिव
पना, नाटक कम्पा ।

जरा सी बात पर रो पड़नेवाला ।

रोपना—[क्रि स] (पुलि आदि)

बोधा, बधा, थमोधा, बीष
गँठा (शत वा भवि)
बेलि निशा ।

(पौधे आदि) जमाना, लगाना
या बैठाना । स्थित करना ।
ठहराना । बीज डालना । फैलाना
(हाथ या पाँव) रोकना ।

रोब—(सं पुं) आतंक, डेव,
धृताप ।
अतंक । दबदबा ।

रोम—[सं पुं] लोम-लोम, कूटी
वा बिक्रा, उल ।
रोमां । लोम । छेद । ऊन ।

रोमांच—(सं पुं) गिंशब,
आचरित कथा शुनि वा कोनो
आनन्द दाना गीब नोम
शिंशना न धिग होवा कार्य ।
आनन्द या भय से रोए खड़े
होना ।

रोमिल—(वि) नोमाल ।
रोएँदार ।

रोर—[सं स्त्री] गङ्गागोल, उपद्रव ।
कोलाहल । उपद्रव ।

[वि] अचङ्ग, उपद्रवी ।
प्रचंड । उपद्रवी ।

(सं पुं) गिनछटि, पाविछा ।
रोड़ा । निर्धनता ।

रोरी, रोशी—(सं स्त्री) दोड़ी-
दोड़ि, शानधि छूषणव ठेग्याबी
बडा बं ।

चहल-पहल । रोली ।

(वि) स्नम्ब ।

सुन्दर ।

रोल—(सं मत्रा) क्षनि, शक ।
ध्वनि ।

(सं पुं) पानीव शव ।
पानी का बहाव ।

रोल्ला—[सं पुं] कोलाहल, शहे-
उकमि, भयानक युद्ध, यात्रिक
छन्द विशेष ।

कोलाहल ! शोर (हल्ला) । घमा-
सान युद्ध । एकमात्रिक छंद ।

रोआसा (रुआसा)—(वि)

काट्मान भूषा ।

रोनेको उद्यत ।

रोएँदार—(वि) नोशन, सुः आदि
थका ।

जिसके शरीरपर बहुत अधिक
रोएँ हों । जिसपर रोएँ की तरह
सत-रेखे आदि हों ।

रोक—[सं स्त्री] बाधा, अतिवक्त ।

रोकने की क्रिया या भाव । अव-
रोध । मनाही । प्रतिबन्ध ।

[त्रि] नगद ।

रूपये पैसे आदिके रूपमें । नगद ।

रोक-टोक—[मं स्त्री] बाधा, निषेध ।
मनाही । निषेध ।

रोकड़—[सं स्त्री] नगद टका-पड़ेका
आदि । जमा, धन, पूँछि ।
नगद रूपया पैसा आदि । जमा ।
धन । पूंजी ।

रोक-थाम—[सं स्त्री] बाधा-निषेध,
रोक-टोक, अवरोध ।

रोकना—(क्रि स) आग वाटवटेल
निदिशा, बाधा दिशा, गति वा
छलि अश अथा आदि बक कबा ।
किसीको आगे बढ़ने न देना ।
कहीं जाने या कोई काम करने से
मना करना । चली जाती हुई
बात या प्रथा बन्द करना ।

रोगन—(सं पुं) डेल, बिडे आदि ।
मिश्र अनाथ, बहन ।

तेल घी आदि मसुण पदार्थ ।
वह चिकना लेप जो कोई वस्तु
चमकाने के लिये उसपर लगाया
जाता है । (अं-वारनिश)

रोचक—[वि] ভাল লগা, रुचिकर,
मनोरञ्जक ।

अच्छा लगनेवाला । मनोरंजक ।

रोचन—[वि] रोचान, दीप्तवान,
बड़ा ।

रोचक । गोभा बढ़ानेवाला ।
लाल ।

(सं पुं) गोरोचन, एविश
शलशैश बस्त (कैंट लोवात
बावस्त शय) ।
गोरोचन ।

रोज—[सं पुं] दिन, समय ।
दिन । दिवस ।

[अव्य] गदाय, दैनिक ।
प्रतिदिन । नित्य ।

रोजगार—(सं पुं) जीविका,
बावगाय, बावकार ।
व्यापार । तिजारत ।

रोजगारी—(वि) बेपाबी ।
व्यापारी ।

(सं स्त्री) बावगाय, आयब पथ ।
व्यापार । आय का जरिया ।

रोजनामचा—[सं पुं] डायेबी,
दिनलिपि ।
दैनिक । (डायरी)

रोजमर्मा—(अव्य) गदाय ।
नित्य ।

(सं पुं) कथित भाषा बडुवा
ठाँठ, कँकवा आदि ।
नित्य के व्यवहार में आनेवाला
बोलचाल की भाषा का विशिष्ट
प्रयोग ।

रोट—[सं पुं] बब डाँडर रुती,
छबब, मिठा रुती ।
मोटी और बड़ी रोटी । मोठी
रोटी या पूआ । गरबत ।

रोटा—[वि] मिश्रात गुबि होवा ।
जो पिसकर चूर हो गया हो ।
(सं पुं) चूर्ण, गुडा, गुडि ।
चूर्ण ।

रोटी—[सं स्त्री] रुती, खाँच,
जीविका ।
चपाती । भोजन या रसोई ।
जीविका ।

रोटी दाल चलाना(मु०)—गाथावन
डाँट जीविका निर्वाह कवा ।
साधारण जीवन निर्वाह होना ।

रोड़ा—(सं पुं) रेटा, शिलब टुकड़ा ।
आदि ।
ईंट या पत्थर का बड़ा टुकड़ा ।

रोड़ा अटकाना—(मु०) बाधा प्रिया ।

विभिन्न षटोरा ।

विघ्न डालना ।

रोदन—(मं पुं) कादम्ब ।

रोना ।

रोड़ा— (मं पुं) श्वेत

ज्वार वा क्षुण्ण ।

घनुष की डोरी । चिल्ला ।

रोशन—(वि) प्रज्वलित, प्रदीप्त,

विश्रांत, प्रकाश ।

जलता हुआ । प्रदीप्त । प्रसिद्ध ।

जाहिर ।

रोशन-चौकी—(सं स्त्री) छानाई,

कानिब निठिना मुखेरे कूँदि

बखोवा एविध बाग्य यज्ञ ।

साहनाई ।

रोशनदान—[सं पुं] शिविकी ।

झरोखा ।

रोशानाई—(सं स्त्री) छिन्नाशी

स्याही ।

रोशनी—(सं स्त्री) प्रकाश,

पोशव, चाकि ।

उजाला । दीपक ।

रोष, रोस—(सं पुं) रं, राग,

शक्तता, झुँझिव वा काँझि

कविवर बादर अहा आवेग ।

क्रोध । गुस्सा । चिढ़ । कुढ़न ।

वैर विरोध । लड़ने का आवेश ।

रोहित—(वि) बड़ा बड़ब ।

लाल रंग का ।

(सं पुं) बड़ा रं, केशव, तेज ।

लाल रंग । केसर । खून ।

रोही—[वि] आटाशी ।

चढ़नेवाला ।

रौंदना—[क्रि सं] डबिरे गच्छकि

नष्टे-वष्टे करा, गच्छकि वा पिहि

पेलोवा ।

पैरों से कुचल या दबा कर नष्ट

भ्रष्ट करना । मर्दित करना ।

रौ—(क्रि सं) गति बेग, धाव

(पानीव) ।

गति । चाल । तेजी ।

रौद्र—(वि) रुद्र गणकीय, डीवण,

खड्ग । गर्भ ।

रुद्र सम्बन्धी । प्रचंड । क्रोधपूर्ण ।

गरमी ।

रौनक—(सं स्त्री) चमकवि,

प्रकृतता, शोभा, शोभा ।

चमक दमक । प्रफुल्लता । शोभा ।

सुहावनापन ।

रौरव—(वि) डरकर ।

भयंकर ।

(सं पुं) नवक विशेष ।

एक नरक का नाम ।

रौरे—(सर्व) आपुनि [संशोधन] ।

आप (संशोधन)

रौस—[सं स्त्री] चाल-चलन, बरन

कवण, बाबाआ, पताका ।

तौर-तरीका । छज्जा या बरा-
मदा । निशान ।

रौसली—(सं स्त्री) पलग ।

वह चिकनी मिट्टी जो बरसाती
नदी अपने किनारों पर छोड़
जाती है ।

ल

ल— बाह्यन वर्णमाला एकवि
आठ मन्त्राव आश्व ।

वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ वर्ण ।

लंक—[सं स्त्री] कैकाल, गिंशन
शोप ।

कमर । कटि । लंका द्वीप ।

लंग—[सं स्त्री] शूतिर लंगटि,
काछाँन ।

घोती का काछा ।

[सं पुं] धोवा होवाँन

भाव ।

लंगड़ापन ।

लंगड़ा, लंगी—(वि) धोवा ।

जिमका एक पैर बेकाम हो या
टूट गया हो ।

[सं पुं] आश्व नाग वा
जाति विशेष ।

एक प्रकार का आम ।

लंगड़ाना—[क्रि अ] लेकेछियाई
धोख कड़ा ।

लंगड़े होकर चलना ।

लंगर—(वि) शूटे, छेनी ।

नटखट । दुष्ट । ठीठ ।

लंगर—[सं पुं] लज्जब, शिकलि
लगाई न पानीत पैलाई थोरा
नां वा आशङ्कत थका लोब-
गछुलि ।

लोहे का वह बहुत बड़ा कांटा
जिसे नदी या समुद्रमें गिरा देने
पर नावें या जहाज एकही स्थान
पर ठहरे रहते हैं । (अं—एनकर)

लंगूर—[सं पु] एविश डाडर
बान्द्र, बान्द्रब नेछ ।

एक प्रकार का बड़ा बन्दर ।
बन्दर की दुम

लंगोट [१]—[सं पुं] लेश्टि,
दुई तपिनाब माङ्कत सुमाई
गुण्डीक माटेशन टाकि पिक्का
ठेक काटपाब ।

• कमरपर बाँधने का वह पहनावा
जिससे केवल उपस्थ और चूतड़
ढँके रहते हैं । (सं स्त्री—लंगोटी)

लंघन—[सं पुं] लघान, अतिक्रमण ।
लज्जन ।

लंघने की क्रिया या भाव ।
अतिक्रमण । उपवास । फाका ।

लंघना—[क्रि स] लौप यावि
पाव होरा, डेहै योरा ।
लौघ जाना ।

लंठ—(वि) मूर्थ, उपड ।
मूर्ख । उहंड ।

लंडूरा—[वि] नेछ खंवा [अस्तु] ।
कटी, पूँछवाला [पशु]

लंपट—[वि] पबड्डीत आगछ-
लोक । ब्यडिचारी ।
व्यभिचारी । बद चलन ।

लंब—[सं पुं] लम्ब, एडाल
बेखाब उपरत यान एडाल नेखा
थिय है यदि ठाब झुग्याकालब
कोण छुटी गमान हय, तेहे
गेई थिय है थका बेखाटो ।
किसी रेखापर मीधी आर खड़ी
गिरनेवाली रेखा ।
(वि) दीयल ।
लम्बा ।

लंबाई, लंबान—(सं स्त्री) लैर्या ।
लंबा होनेका भाव या अवस्था ।
लंबापन ।

लंबित—(वि) दीयलीया कबा,
कार्य, श्रुगित ।

लम्बा किया हुआ । विचार
निश्चय आदि कुछ समय तक
रोका या टाला हुआ । [अं--
पेंडिंग]

लंबोतरा—(वि) दीर्घ आकार ।

लम्बे आकारवाला ।

लकड़बग्घा—(सं पुं) बाघ
निठिना अशु विशेष ।

चीते की तरह का एक पशु ।
लगघड़ ।

लकड़हारा—(सं पुं) शिकारी ।
जंगल से लकड़ी काटकर बेचने
वाला ।

लकड़ी—(सं स्त्री) शबि, नाछि,
कांठ ।

पेड़ का कटा हुआ कोई ठोस या
स्थूल अंग । काठ । इन्धन ।
छड़ी या लाठी ।

लकड़ा—[सं पुं] पक्षाघात बेबाब ।
पक्षाघात रोग ।

लकीर—(सं स्त्री) बेबा, श्रेणी,
पुर्वणि प्रवर्णन वा मर्यादा ।
रेखा । परम्परा या मर्यादा ।
पंक्ति ।

लकुटी—[सं स्त्री] लाठी ।
लाठी । छड़ी ।

लकड़—(सं पुं) कांठ व टुकड़ा ।
लकड़ी का टुकड़ा ।

लक्ष—[वि] एलाश ।

एक लाख ।

लक्षणा—[सं स्त्री] शक विलाकर
पौन अर्धतकै बेलगं भाव
बुझावा, शक शास्त्र विधा
विशेष ।

शब्दकी तीन शक्तियोंमें एक ।

लक्षित—(वि) दृष्ट, कोठा, टैक
मिया लक्षित ।

बतलाया हुआ । देखा हुआ ।

लक्ष्मी पुत्र—(सं पुं) धनी ।
धनवान ।

लक्षण—[सं पुं] लक्षण ।
लक्षण ।

लक्षना—(क्रि स) लक्षण देखि
वा चाहे अनुमान करवा वा बुझा,
देखा ।

लक्षण देखकर अनुमान करना या
समझना । देखना । [क्रि स—
लक्षाना]

लक्षपति [ती]—[सं पुं] लक्षपति
लाक्षपति ।

जितके पास लाखों की सम्पत्ति
हो ।

लखेरा—[सं पुं] लख छुड़ि बिक्री
करौता, हिन्दू उपजाति
विशेष ।

लखकी चूड़ियाँ आदि बनाने
वाला ।

लखौटा—(सं पुं) चलन, केशव
आदिदेव डैतनाबी अंगकि लेपन
विशेष, गिन्दूर धोवा पात्र
आदि ।

चन्दन, केसर आदि से बनाया
जानेवाला उबटन । बहु छिन्वा
जिगमें स्त्रियाँ सिन्दूर आदि
रखती है ।

लग—(अव्य) टेल, उच्च, काबल,
टैगल ।

तक । निकट । बास्ते । साथ ।
(सं स्त्री) निष्ठा, प्रेम ।
लगन । ली ।

लगान—(सं स्त्री) निष्ठाशुद्ध
प्रेम, लक्ष्म, शुद्धकर्म [विवाह
वाने] ।

किसी व्यक्ति या कामकी ओर
पूरी तरहसे ध्यान लगाना ।
स्नेह । हिन्दुओं में वे विशिष्ट
दिन जिनमें विवाह होते हैं ।

लगना—[क्रि अ] लग लगा,
एकत्र कर्ता, मिला, खंच होवा,
जना, जलन आदिव अलुभर
होवा, गहरा लगा, आघात
पोंवा, बालू होवा, बनत
अलव पंवा, शईकाजिया कर्ता ।
सटना । जुड़ना । मिलना ।
व्यय होना । जान पड़ना । जलन,
चुनचुनाहट आदि मालूम होना ।
सम्बन्ध या रिस्ते में कुछ होना ।
आघात या चोट पहुँचना । कार्य
आदि में रत होना । मन पर
किसी बात का प्रभाव या असर
होना । छेड़छाड़ करना ।

लगभग—(क्रि वि) आश ।
प्रायः । बहुत कुछ ।

लगवार—[सं पुं] उपजाति,
प्रेमी, प्रेमी ।
उप-पति । यार ।

लगातार—[क्रि वि] नेबा-नेपेबा
निरन्तर ।

बिना क्रम टूटे । निरन्तर ।
(वि) एकदि क्रम ।

बराबर क्रम से होतो रहने
वाला ।

लगान—(सं पुं) आकर्षण
छाव, बाध आदि ।

लगने की क्रिया या भाव । भूमि पर लगने वाला कर ।

लगाना—(क्रि स) योग कर्ना, गन्धयोग कर्ना, मिला, बँठा, आधात कर्ना कायत लगोवा, ठिक ठाँइत वटोवा, पबिनिम्ना कर्ना, अर्ण कर्ना, वदनाम कर्ना । सटाना । सम्मिलित करना । जमाना । चुनना । आधात करना । काम में लाना । ठीक स्थान पर बैठना । चुगली खाना । कार्य में संलग्न करना । स्पर्श करना । दोष या अभियोग का आरोप करना । (प्रे.-लगवाना)

लगाम—[सं स्त्री] लेगीय । घोड़े की रास ।

लगार—[सं स्त्री] नियमित भावे काम कर्ना, आकर्षण, प्रेम । नियम पूर्वक नित्य या बराबर काम करना । लगाव । मिल-मिला । लगन । प्रेम । [वि] मिला-जुटा, गन्धक बाँटोता ।

मेल मिलाप या सम्बन्ध रखनेवाला

लगाव—(सं पुं) आकर्षण, गन्धक । लगे होने का भाव । सम्बन्ध ।

लगि—[अव्य] टैन, उचव, कारव । तक । समीप । वास्ते ।

लगड़—[सं पुं] लाठी । लाठी ।

लग्ना—(सं पुं) आबखनि, खूदात दिया धन बाणि वा दाव । कार्य का आरम्भ या सूत्रपात । किसी दाँव पर जुआरी के सिवा दूसरे लोगो का लगने वाला धन या दाँव ।

लग्घा—[सं पुं] दीवल वंश । लम्बा वाँस ।

लग्घी—(सं स्त्री) लगौ. छवि, नाउ छलोवा दीवल वंश । वह बाँम जिसे नदी के तल तक पहुँचा कर उसके जोर से नाव चलाते हैं ।

लगु—(वि) गरु, पातल, गामाङ्ग, कम. अलगौगा, छोटिके उक्ताव कर्ना ।

छोटा । हलका । नि सार । कम । वह अक्षर या वर्ण जिनमें एक ही मात्रा हो ।

लघुचेता—(सं पुं) कू-डावनाब लोक ।

तुच्छ या बुरे विचारां वाला ।

लघुता—[स स्त्री] लघुता ।

लघु या छोटा होने का भाव ।

लघु-शंका—(स स्त्री) पेछाव
करा कार्या वा ईशाव वेग ।
पेछाव करने की क्रिया या उसका
वेग ।

लक्षकना, लक्षका—(क्रि स) हना
झुला कबा, कोमल होरा नावे
वा भाव भङ्गा देखुबाव बावे
कैकाल वा अहेन अङ्ग शलि
योरा [श्री] व ।

मार पड़ने पर बीच से दबना
या झुकना । कोमलता आदि के
कारण या हाव-भाव के समय
स्त्रियों की कमर या दूसरे अंग
झुकना ।

लक्षपत्र—[वि] शिथिल, दुर्बल,
निःकिन ।
ढीला ढाला । शिथिल । दुर्बल ।
हीन ।

लक्षारी—(स स्त्री) उपहार,
लोकप्रति विशेष-लेखावि ।
मेट । उपहार । एक प्रकार का
देहाती गीत ।

लक्ष्मी—(वि) कोमल, गहव
ठाँव आदि दिव पवा ।

नमनीय । जिसमें सहज में परि-
वर्तन, उतार चढ़ाव या कमी-बेशी
हो सकती ही ।

लच्छन—[स पुं] लक्षण ।
लक्षण ।

लच्छमी, लच्छि, लछमी—
[स स्त्री] लक्ष्मी ।
लक्ष्मी ।

लच्छा—[स पुं] कौंछा, लेछा,
[सुताव] अलङ्कार विशेष ।

गुच्छे के रूप में गूथे हुए सूत या
तार । एक गहना ।

लच्छित—[वि] लक्षित, गृष्टे ।
देखा हुआ । अंकित ।

लच्छेदार—[वि] लेछा थका,
कौंछा थका, बगल कथा ।
जिसमें लच्छे बने हों । बिकनी
चुपड़ी और मजेदार (बात) ।

लज्जाना (लजना)—(क्रि अ-)
क्रि स] लज्जित होरा,
अथवा लाज पोरा वा दिया ।
लज्जित या शरमिन्दा होना या
करना । [प्रेरण.-लज्जाना]

लज्जा—(स पुं) निमाजी बन,
आजब बालजी ।

एक पीघा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ या कुछ मुरझा सी जाती हो ।

लज्जाला—[वि] लावकुबीया, लावूरा ।

लज्जाशील । जिसे जल्दी लज्जा आती है ।

लज्जत—[सं स्त्री] गोदाद । स्वाद ।

लट—(सं स्त्री) ठूलिब कौंठा, गिठबिठ है थका, ठूलि मिथा । बालो का गुच्छा । उलभे हुए बाल । लपट ।

लटक—(सं स्त्री) उलभा, अञ्जी-भञ्जी ।

लटकने की क्रिया या भाव । अंग-भंगी ।

लटकन—[सं पुं] उलमि थका वख वा अञ्ज, नाक छोटो, सुनब आक सुगन्धि वनबीया छुटि विणेश ।

लटकती हुई चीज या अंग । नाक में पहनने का एक गहना । एक प्रकार की वनस्पति के दाने जिनसे बढ़िका और सुगंधित बसन्ती रंग निकलता है ।

लटकना—(क्रि अ) उलमि थका, कोनो काम अगम्पूर्ण है बोदा ।

भूलना । काम का कुछ समय तक अधूरा पड़े रहना । (प्रि.-लटकाने)

लटका—(सं पुं) थकाव, भाव-भञ्जी, ठिकिण्णार गर याक गबल उभाय ।

हंग । हाव-भाव । उपचार आदि की छोटी और सहज युक्ति ।

लटना—(क्रि अ) भागवि यवण होदा, ठूर्खल होदा, लोबलि योवा, प्रेम वा लोभत मवा, उण्णव होदा ।

थककर वेकाम होना । दुबला और अशक्त होना । मुरझाना । क्षीण होना । चाह या लोभ में पड़ना । तत्पर या लीन होना ।

लटपट—[सं स्त्री] लट्ठेण्टे, अञ्जिरता, अगती, छण्ण ।

कुछ साधारण और आरंभिक पर अनुचित या बुरे उद्देश्यसे किया जानेवाला सम्बन्ध । लटापटी ।

लटपटा—(वि) लटकठिउदा, थक वक होदा, ठिला, ठूर्खल, मथायीया उबल थोदा वख ।

लटलड़ाता हुआ । ढीला ढाला ।
अस्त व्यस्त । अशक्त । जो न
बहुत गाढ़ा हो और न बहुत
पतला [खाद्य पदार्थ, रस आदि] ।

लटपटाना—(क्रि अ) जेकैटिया,
ठिक बरने काम कबिब नोवावा
मूँध वा अझबझ होवा ।

लटलड़ाना । ठीक तरह से कोई
काम न कर सकता । मोहित
होना । लीन या अनुरक्त होना ।

लटापटी—(सं स्त्री) लट् पट्
करा कार्या, क'जिया प्रेचालन
छावना ।

लटपट होनेकी दशा या भाव ।
किसीसे उलझने या लड़ने झगड़ने
का भाव ।

लट्टू—(सं पुं) लार्डूय, बिछुरा
बाति ।

एक प्रकार का गोल खिलौना जो
जमीनपर फेंककर नचाया जाता
है । शीशेका वह गोला जिसमें
बिजली का प्रकाश होता है ।

(अं—बलब)

लट्टू—[सं पुं] डांडव लाठी ।
बड़ी लाठी ।

लट्टुबाज—[वि] लाठीदेव मूँध
करवाता ।

लाठी चलाने या उससे लड़ने
वाला ।

लट्टुमार—(वि) मूँझार, अश्रिन्न
आरु करुण (कथा) ।

लट्टुबाज । अप्रिय और कठोर
(बात)

लट्टा—[सं पुं] मांछि जोधा
डूँब, डाँठ कापोर, च'ति वा काँठ
धाय ।

लकड़ी का शहतीर । एक प्रकार
का कपड़ा ।

लटैत—[सं पुं] लार्डूवा, लाठी
चलाउता ।

लाठी चलानेवाला ।

लट्टू—(सं पुं) शारी, श्रेणी, शाय,
अबीत मालाब निठिनटोक ग्रंथ
मवि वा फूलब शारी ।

एकही तरह की चीजोंकी श्रेणी या
माला । रस्सी या डोर के कई
तारोंमें एक तार । (सं स्त्री—
लड़ी)

लटकपन—(सं पुं) ल'बानि,
लबाव श्रभाव, अवुजन ।
बाल्यावस्था । नासमझी ।

लङ्का—(सं पुं) लंका, गुतेक ।
बालक । बेटा ।

लङ्काई, लङ्कानि, लङ्कैयाँ—
लंका ।
लङ्कपन ।

लङ्कौरी—[वि] गङ्गानरती
(तिरौता) ।
बच्चेवाली (स्त्री) ।

लङ्कलङ्काना—(क्रि अ) खरक-
बरक होना, कँपा ।
डगमगाना ।

लङ्कना—[क्रि अ] झुंझा, काजिया
कबा, तर्कातर्क कबा, गफलता
लाभर बावे काबो विरुद्ध
छेष्टा कबा ।
भिड़ना । झगड़ा या तकरार
करना । बहस करना । टकराना ।
सफलता प्राप्त करने के लिये
किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना ।

लङ्काई—(सं स्त्री) झुंझ, काजिया-
पेछाल, विरोध ।
संग्राम । झगड़ा : वाद-विवाद ।
विरोध ।

लङ्काका—[वि] झुंझार, काजिया
कबा, मनोबुद्धिब लोक ।
योद्धा । झगडाल ।

लङ्कैता—[वि] मयमय, चनेहब,
झुंझार ।

दुलारा । प्रिय । योद्धा ।

लङ्कू—[सं पुं] लाडू ।
मावक ।

लत—(सं स्त्री) बद् अङ्गाग ।
अङ्गाग ।
बुरी आदत । आदत ।

लत-खोर—(वि) नाठि खोरा,
दुर्दशा भोग करिवलगौया लोक,
नीच ।

प्रायः लत खाने या दुर्दशा भोगने
वाला । नीच ।

लत-खोरा—(सं पुं) डबि मोछा
कापोर, नीच, नाठि खोरा
लोक ।

पैर पोंछने का कपड़ा । लतखोर ।

लत-मर्दन—(सं स्त्री) डबिरे
मोहबा ।

पैरसे रोंदने की क्रिया या भाव ।

लतर—(सं स्त्री) लता ।
लता ।

लताङ्क, लथाङ्क—[सं स्त्री] शक्ति,
डबिरे गच्छा ।

लताङ्कने की क्रिया या भाव ।
झिड़की ।

लताङ्कना—(क्रि स) डबिबे
गङ्का, विबळ कबा, शमकि
दिया ।

पैरोसे कुचलना । तंग करना ।
झिड़की देना ।

लतिका—[सं स्त्री] गङ लता,
लतिका ।
छोटी लता ।

लतियाना—(क्रि म) लठिउवा,
डबिबे पिहा, लाठि गावा ।
पैरोसे दबाना । लाते मारना ।

लतीफा—(सं पुं) शास्त्रद्वारा
लघु-कथा (गुरु गङ्ग) ।
चुटकुला ।

लत्ता—(सं पुं) कटा-छिटा
काटनाव, कटा काणि ।
फटा पुराना कपड़ा या उसका
चीथड़ा ।

लथ-पथ—(वि) तिता, (बोक)
आदिबे) लुठु-पुठु ।
भीगा हुआ । [कीचड़ आदि से]
सना हुआ ।

लथेङ्कना—[क्रि स] बोक गांठि
गानि लेउवा कबा, गांठित
पेलाई लै मोडबा वा पिहा,
विबळ कबा, शमकि दिया ।

धूल मिट्टी लगाकर मैला या गंदा
करना । जमीन पर पटक कर
बसीटना । तंग करना । डाटना ।

लदना—(क्रि अ) बोझाई दिया ।
किमी पर माल आदि चीजें रखा
या लादा जाना ;
(वि) डारवाही ।
बोझ ढोनेवाला ।

लदनो, लदान—(सं स्त्री)
बोझाई, बोझाई दिया ।
लादने की क्रिया या भाव ।
वाहनों पर माल लादना ।

लदनुआँ—(वि) डारवाही जङ्ग,
बोझाई दिउता ।
माल, बोझ आदि लादनेवाला ।
(पशु) जिसपर बोझ लादा जाता हो ।

लदाई—(सं स्त्री) बोझाई, बोझाई
दिया बाबे पोरा पाबिश्रमिक ।
लादनेकी क्रिया भाव या मजदूरी ।

लदु—(वि) डारवाही जङ्ग ।
जिसपर बोझ लादा जाय (पशु)

लपकना—[क्रि अ] तङ्कणां नाईवा
बेगेवे आउवा ।

झपटकर या तेजीसे आगे बढ़ना ।
भाव (लपक) ।

लपका—[सं पुं] कृ अभाग ।

लत । चस्का ।

लपट—[सं स्त्री] झूठे मित्र, गंभ

वताह, गोक ।

अग्नि शिला । गरम हवा का

भोंका । गंध ।

लपटना—[क्रि अ] आलिङ्गन कर्त्ता,

श्रुता आदि लोरा ।

लिपटना । (क्रि स—लपटाना)

लपना—(क्रि अ) लिक्लिकिया, एकतीया

होरा, इला, पातल होरा,

विरह होरा, अरुण होरा ।

इधर उधर या ऊपर नीचे लचना

या झुकना । लपकना । हैरान

होना ।

लपलपाना—[क्रि अ] लिक्लिकोरा,

एकतीया होरा, छुबी, तबोबाल

आदि झिकमिक कर्त्ता ।

लपना छुरी तलवार आदि का

चमकना ।

[क्रि स] छुबी. तबोबाल आदि

झिकमिकोरा, झिडा नपनप

कर्त्ता ।

छुरी, तलवार आदिका चमकाना ।

जीम बाहर भीतर करना ।

लपसी—(सं स्त्री) अलप बिटे दि

तैयार कर्त्ता लेतेका डालोरा ।

एक प्रकारका पतला हलुआ ।

लपेट—[सं स्त्री] येबोरा कार्वा,

अप, बेब, जङ्गल ।

लपेटने की क्रिया या भाव ।

ऐठन । घेरा । उलभन ।

लपेटना—[क्रि स] येबोरा, श्रुता

आदिब लेहा कर्त्ता, जङ्गल

आदिता काको नाशी कर्त्ता

तेडक निखर लग नगोरा—

गाढोरा ।

घुमाते हुए चारों ओर लगाना ।

सूत आदि लच्छेके रूपमें करना ।

उलभन या भंभटके लिये किसी

को उत्तरदायी बनाकर उसे

अपने साथ लगाना ।

लपंगा—[वि] बपगाछ, लप्पट ।

लपट । बढमाश ।

लपज—[सं पुं] शब्द ।

शब्द ।

लपदा—[सं पुं] चोला ।

चोंगा (पहनावा)

लपार—(वि) मिष्टा, मिष्टीया ।

भूटा । गप्पी ।

लुबारी, लुबासी—(सं स्त्री) मिश्रा
आरु वार्ध कथावे बड़ाई
कोरा ।

व्यर्थ की झूठी और बहुत बढ़
चढ़कर बातें करना ।

लुबालुब—[वि] चपचपीया मुथनेके
पूर वा भुवा, काणर गमानेके
भुवा ।

ऊपर या किनारे तक भरा हुआ ।
झलकता हुआ ।

लुबेद—(सं पुं) लोक अचलित
यन्त्रीन कथा वा अथा ।
लोकाचार की भद्दी या भौंडी
बात या प्रथा ।

लुब-प्रतिष्ठ—[वि] लक अतिष्ठ,
अतिष्ठित ।
प्रतिष्ठित ।

लुभ्य—(वि) पावलगीया, पोदाव
योगा, लड्य ।
जो मिल सके । मुनासिब ।

लुभ्यांश—[सं पुं] लाड, लड्यांश ।
मुनाफा ।

लुमछड़—[वि] वर पोषण ।
बहुत लंबा ।
(सं पुं) बर्णी, बल्लभ ।
माला । बरछा ।

लुम-तड़ंग (लुम धड़ंग)—(वि)
वर पोषण वा उथ ।
बहुत लम्बा या ऊँचा ।

लुमधी—(सं पुं) विद्येय पेडुताक ।
विद्येय अहेन विद्येयक ।
समधीका बाप । समधीका दूसरा
समधी ।

लुमहा—(सं पुं) कण, मुहूर्त ।
क्षण ।

लुय—(सं पुं) नाश, लीन होना,
एक लग होना, अलग, आश्रय,
विश्राम, खूब आरु तानर
मज्जति, ग्रीत-वादाव तान, नान
आरु नाचर पबम्पर मिल ।
विलीन होना । ध्यानमें लीन
होना । प्रलय । विश्राम । रहने का
स्थान । गाने की धुन । संगीत
की तान ।

लुटिका—[सं पुं] ल'वा ।
लडका ।

लुलक (न)—(सं स्त्री) बलवती
इच्छा, गंभीर कामना, लालना ।
ललकने की क्रिया या भाव ।

ललकना—(क्रि अ) बरदेक
लालना कवा, अथेय पूर्ण होना,
आवेग पूर्ण होना ।

बहुत अधिक लालसा करना ।
प्रेम या चाहसे भरना । उमंग या
जोशमें आना ।

ललकार—(सं स्त्री) यूँ खब बावे
खनोरा आखान ।

ललकारने की क्रिया या भाव ।

ललकारना—(क्रि स) यूँ खब बावे
थुंठाखान खनोरा, छिंछि
यूँ जिबटेल मठा वा निगल्लण कवा ।
अपने साथ लड़ने या किसीपर
आक्रमण करनेके लिये चिल्लाकर
बुलाना या कहना ।

ललखना—(क्रि अ) लो७ कवा,
लालछ कवा ।
लालच करना ।

ललखाना—[क्रि स] काटेरा मनत
लोठ वा लालछ खनोरा ।
किसीके मनमें लालच उत्पन्न
करना ।

ललख, लला—[सं.पुं] गबगब, बाछा-
बन, खानी वा नासक ।
प्यारा, बच्चा । नायक या पति ।

ललाना—[सं स्त्री] खनबी छिंछोठा,
मनना ।
सुन्दर स्त्री ।

ललाई—(सं स्त्री) बडा बडा ।
बल्लिम ।

लालिमा । लाली ।

ललाट—[सं पुं] गुर, भागी ।
मस्तक । भाग्य ।

ललाम—(वि) बगनीस, बडा, श्रेष्ठ ।
रमणीय । लाल । श्रेष्ठ ।

ललामी—[सं स्त्री] खनबता,
गोमर्या । बल्लिम ।
सुन्दरता । लाली ।

ललित—[मं स्त्री] गनोनग, खनब,
खकोयल, एक अर्थालकुंठ ।
सुन्दर । प्रिय । एक अलंकार ।
मनोहर अंग भंगी ।

लली—(सं स्त्री) छोरालीक
गता गबगब गनोखन, नायिका,
थेमिका ।
'लड़की' का वाचक प्यार का
शब्द । नायिका । प्रेमिका ।

लल्लो—[सं स्त्री] जिंठा ।
जीभ । जवान ।

लल्लो-चप्यो—(सं स्त्री) छाँटूकारी
कथा, कुल्लनि पूर्ण कथा ।
चिकनी चुपड़ी और खुशामब
की बातें ।

लवंग—(सं पुं) लं ।

लौंग (मसाला)

लव—[सं पुं] अलप अभिशाप,
क्षयनाश ।

बहुत छोटी मात्रा । क्षणभर का
समय ।

लवण (न)—[सं पुं] निमज्ज ।
नमक ।

लवणी—[सं स्त्री] माथन, पंका
मञ्च कटो कार्या ।

अनाज की पकी फसल काटने
की क्रिया । मक्खन ।

लवलीन—(वि) तन्मय, मग्न ।
तन्मय । मग्न ।

लव-लेश—(सं पुं) लेश, अंश, अङ्ग,
अकथन ।

बहुत थोड़ा अंश या संसर्ग ।

लवा—[सं पुं] पत्थी विदेश,
धान आदि आटे ।

तीतरकी जातिका एक पत्थी ।
धान आदिका लावा ।

(वि) लगाउंटा ।

लगानेवाला ।

लशकर (लशकर)—[सं पुं] गैज,
गैजब छाँटेनि, गिबिब, सेना-
निवाज । फौज । सेना की छावनी ।

लशकर [लशकरी]—(वि) सेना
गश्दीय ।

लशकर सम्बन्धी । लशकर का ।
(सं पुं) गैजिक, जाशकत
काय कबा लोक ।

वह जो लशकरमें काम करता हो ।

लस—(सं पुं) चिकमिकीया,
लागि धवा गुण, एठा. लेप-
लेणीया, जेपेनीया, बिजुलीया ।
लासा ।

लसना—[क्रि स] लागि धवा,
उपरत थोदा ।

चिपकाना । ऊपर रखना ।

(क्रि ध) एठा लागि धवा,
उदनि होदा ।

चिपकना । शोभित होना ।

लसित—(वि) सुशोभित ।
सुशोभित ।

लसी—[सं स्त्री] एठा आदि,
मन बहा, आशिं अथवा लाड
योग, देवे तेराबी चर्चित
विदेश ।

लस । मन लगनेकी बात । प्राप्ति
या लाभ का योग । लगाव ।
लस्सी ।

लसीका—(सं स्त्री) धू , धूँइ ।

थूक । पीब ।

लसीला—(वि धुनीया, छेप-
टिया । छेप छेपीया ।

जिसमें लस हो । मनोहर ।

लसटम पसटम—[क्रि वि] कोना-
मठ, येनतेन ।

किसी तरहसे । जैसे तैसे ।

लस-पस—[वि] बब भांगवि
पवा, झाँझ होवा ।

बहुत शिथिल या क्लान्त ।

लस्सी—[सं स्त्री] टेदटे टेडयाबी
चर्यित ।

मठा । दही खोलकर बनाया
गया पेय ।

लहंगा—(सं पुं) लहङ्गा, धुबी
बेचैला, फेरबेला ।

घाघरे की तरहका एक पहनावा।
साया ।

लहकना—(क्रि अ) छूँइ कुँडा,
टै टै लब टब करा ।

आग सुलगना । रह रहकर
हिलना । [क्रि स—लहकाना]

लहना—[सं पुं] थाव दिया
वा पावलश्रीया वाकी प्रैछा ।

उधार दिया हुआ या बाकी रुपया
जो मिलने को हो ।

[क्रि स] पोवा ।

प्राप्त करना ।

लहर—(सं स्त्री) लो । बेबाब
आमिठ टै टै उइ दिया गति,
आनन्द आवेग, बङ्कबेबा ।
तरंग । उमंग । रोग या पीड़ा
आदिका लहरहकर होनेवाला
वेग । आनन्द की उमङ्ग । टेढी
तिरछी चाल या रेखा ।

लहरना—(क्रि अ) लहरित
होवा, लो रेखा ।

तरंगित होना ।

लहरा—(सं पुं) लो, आनन्द,
नृता-नौतक आंगते बङ्कवा
वाञ्छ गङ्गीत ।

लहर । आनन्द । नाच या गाना
आरम्भ होने से पहले सारंगी,
तबले आदि साजोंपर बजने वाली
गत ।

लहराना—(क्रि अ) लो रेखा,
मनत भाव उथलि उठा, छूँइ
बलि उठि होवा छुबिडा ।

लहरें खाना । तरंगें उठना ।
मनका उमंगमें होना । आग
भड़कना या सुलगना । शोभित
होना ।

[क्रि स] ठोब पवे हैकाले
गिकाले लब ठब कबा, बख-
गतिवे योबा बा टेल योबा ।
लहरी की तरह इधर उधर
हिलाना । टेढ़ी चालसे चलाना
या ले जाना ।

कहरी—(सं स्त्री) ठो, बब-
लहरी ।
तरंग । स्वर तरंग
(वि) आठपान-डोलना,
गमन अगमन याक
भूख डोंग करवाता ।
मन मौजी । सदा प्रसन्न रहने
और सुख भोग करनेवाला ।

कहलहाना—[क्रि अ] लहलहोना
होना, लह लहटेक बाँट अहा,
आनन्दित होना ।
हरी पत्तियोंसे युक्त या हरा भरा
होना । प्रफुल्लित या प्रसन्न होना ।

कहसुन—[सं पुं] नहर ।
एक पीघा जिसकी जड़ मसाले के
काममें आती है ।

कहा-कहे—[सं पुं] नाच गति
विशेष । चक्कलता ।
नाचनेमें एक प्रकारकी गति ।
फुर्ती । चंचलता ।

[वि] तीव्र गतिव । चक्कल ।
तीव्र गतिवाला । चंचल

कहू—(सं पुं) तेज ।
रफ्त ।

कहू-लुहान—(वि) तेजसे नुडुबि-
नुडुबि, तेजसे डुबाना होना ।
चोट आदिके कारण जिसका
सारा शरीर लहूसे भर गया हो ।

लांघना—(क्रि स) पाव होना ।
[अग्निवादि वा गौतुवि] ।
इसपार से उसपार जाना । ऊपर
से डाँकना ।

लांछन—[सं पुं] दोष, छिन, पाग,
लाक्षण ।

दोष । चिह्न । निशान । दाग ।

लाई—[सं स्त्री] आदेश, प्रबन्धना ।
थल वा कूट । धानका लावा । चुगल

लाक्षा—(सं स्त्री) लाख, ला ।
लाख । लाह ।

लाक्षागृह—(सं पुं) पाण्डुरगजक
बध कबाब डेफेण्डे शूर्योदयेन
लाटे गच्छावा वबटे ।

लाहका बना हुआ वह घर जो
दुर्योधन ने पांडवों को जला
डालने के लिये बनवाया था ।

ला-खिराज—[वि] निरुप याँ, लाखेबाख ।

जमीन जिसका खिराज या लगान न देना पड़े ।

लाग—(सं स्त्री) सम्पर्क, गवस, काजिया लगी ।

सम्पर्क । प्रीति । लगन । मुठमेड़ा-
(क्रि वि) टेल ।

तक ।

[अडय] काबले ।

लिए । वास्ते ।

लाग-डौट—(सं स्त्री) शकृता, प्रति योगिता ।

शत्रुता । प्रतियोगिता ।

लागत—[सं स्त्री] गुला, खबलेवे ।
किसी चीज की तैयारी या बनाने में होने या लगनेवाला व्यय ।

लागि—(अव्य) काबले, वे ।

कारण । वास्ते । से ।

(क्रि वि) पर्याखु, टेल ।

पर्यंत । तक ।

[सं स्त्री] दीवल काँठ ।

लम्बी लकड़ी ।

लागू—[वि] अयोग्य, बारहाब, अयोग्य, याक अयोग्य कबा हर, याब हड्डाई कोनो काम

करवावा हर ।

जो कही लग सके या प्रयुक्त हो सके । जो कही प्रयुक्त किया या लगाया गया हो । जो कहीं लगाया जा सकता हो या लगाया जानेको हो ।

लाघव—(सं पुं) कम, लघुता, उपशम, हाज, हातब कोशल ।

लघुता । कमी । हस्त कोशल ।

लाचार—[वि] विरुधि, निरुपाय बाधा, अजमर्थ ।

विवश । मजबूर । असमर्थ ।

(क्रि वि) निरुपाय टै, बाधा टै ।

विवश होकर ।

लाचारी—(सं स्त्री) विवशता, दुर्बलता ।

विवशता ।

ला-जबाब—[वि] अनुपम, निरुद्ध ।

अनुपम ।

लाजा—(सं स्त्री) आटेख, खे ।
घान आदि का लावा ।

लाजिम (मो)—[वि] आवश्यक, अनिवार्य, उचित ।

आवश्यक । अनिवार्य । मुनासिब ।

लोट— (सं स्त्री) डाढ़र आरु
उथ गिन, धाड़ अथवा काठर
धुठो नाइवा छळ ।

मोटा, ऊँचा और बहुत बड़ खंभा
या इस आकारकी कोई इमारत ।

लोट (इ)— [सं पुं] मबब, म'बा-
छोराबीर निरूकनि ।

बच्चों के साथ किया जानेवाला
प्रेमपूर्ण व्यवहार । दुलार ।

लोटला— [वि] मबबब, छेनश्ब ।
दुलारा ।

लोट— (सं स्त्री) नाथि, गोब,
छदिब कवा आघात ।

पैर । पैर से किया जानेवाला
आघात ।

लोट— (सं स्त्री) बोकाइ दिग्रा
कारा, पेट, अन्न ।

लादने की क्रिया या भाव । पेट ।
भात ।

लोटनां— (क्रि स) बोकाइ दिग्रा,
मागिब गटोवा, डाव अर्पण
कवा ।

किसी के ऊपर बहुत सी चीज
रखना । बोझ आदि ले जाने के
लिये बस्तुएं ऊपर रखना या

भरना । देन आदि का भार
रखना ।

लोटनत— [सं स्त्री] थिक्कर, गांनि-
गांनोष ।
थिक्कार ।

लाना— (क्रि स) अना, उपश्रित
कवावा, नग मगोवा ।
कहीं से कुछ लेकर आना । उप-
स्थित करना । जलाना । संलग्न
करना ।

लाने— (अव्य) कावण, निमिछे ।
वास्ते । लिये ।

लान-पता— [वि] निरुद्ध, शेबोवा,
थंब नोहोवा ।
जिसका पता न लगे या न हो ।

लान-परवाह— (वि) निरुद्ध, मागिब
शोन ।
बे-फिक्र ।

लाम— (सं पुं) गेना, मन, मूह ।
सेना । भीड़ । समूह ।

लायक— (वि) उचित, ठिक,
सुयोग्य, मयर्ष ।
उचित । ठीक । मुनासिब ।
सुयोग्य । सामर्थ्यवान ।

लार— [सं स्त्री] नाग, नागटि,
मेनावाटि, खेने, पाबी ।

मुँह से निकलनेवाली पतली लस-
दार वस्तु । पंक्ति, कतार ।

(अव्य) गैरते ।

संग । साथ ।

[क्रि वि] गैरते, पिछत ।

साथ । पीछे ।

लाल—[सं पुं] क्षियत्तम लोका,

मरमर गदगद, वज्र ।

बेटा । प्यारा लड़का या आदमी ।

किसी प्रिय व्यक्ति के लिये
सम्बोधन । मानिक ! रत्न

(वि । बडावन, वर वर, पोना
अथवा ज्यो होरा देखूँ ।

रक्त वर्ण का । बहुत क्रुद्ध ।
खेलमें पहले जीतनेवाला खिलाड़ी ।

लालच, लालस— (सं स्त्री)

लालसा, लोभ, हेपाश ।

कुछ पाने की बहुत अधिक और
अनुचित इच्छा । लोभ ।

लालचा—(वि) लोभी ।

लोभी ।

लालटेन—(सं स्त्री) लम्प, लठन

कंदील ।

लालबुझकड़—[सं पुं] अर्ध

बुझाटेक मूर्ध भावे कोनो
कथाव अर्ध कवा लोक, अगम्य
कथाओ बुझाबुझि पावी कवा
लोक ।

बातोंका अटकल पच्चू और
मूर्खतापूर्ण मतलब लगाने या
अनुमान करनेवाला ।

लालसा—[सं स्त्री] लोभ,

हेपाश ।

कुछ पाने की बहुत अधिक इच्छा
या चाह ।

लाला—[सं पुं] महाशय,

गदगद, वादगात्रीलोक ।

महाशय । एक आदर मूचक
सम्बोधन ।

(सं स्त्री) लाल, धुँडे ।

लार । थूक ।

लालायित—[वि] लालायित,

बगैक हेपाश कवा ।

जिसे बहुत लालसा हो ।

लालित्य—[सं पुं] मधुरता,

अनिबदेन उबला गुण, लालिता ।

सरसता पूर्ण । सुन्दरता ।

लालिमा—[सं स्त्री] रक्तिम, रङ्गा

होवा । लाल होने का भाव ।

छात्री—[सं स्त्री] बख्ति, अतिष्ठा,
गौरव ।

लालपन । प्रतिष्ठा । गौरव ।

छात्रे—[सं पुं] अधिनाय, श्रेष्ठा ।
अभिलाषा ।

छात्रे पड़ना (मु०)—यत्नारोहण ।
अभाव होना ।

छावण्य—[सं पुं] निवर्त्तमान,
कोयलतादेव पूर्ण योग्य ।
'लवण' का भाव या धर्म । सरस
सुन्दरता ।

छावनी—(सं स्त्री) लोकगीत
विशेष ।

एक प्रकार का लोकगीत ।

छाव-लश्कर—[सं पुं] जैन-
जायन्ती ।

सेना और उसके साथ रहनेवाले
लोग तथा सामग्री ।

छावा—[सं पुं] पक्षी विशेष,
आटे, धान कटा बछ्छा ।
लवा पक्षी । धान आदिकी खील ।
फसल काटनेवाला मजदूर ।

छा-बारिस—(बि) उद्बोधिकावी
नोशोरा लोक, मानिक
नोशोरा, गवाकी विशीन,
(बद्ध) ।

जिसका कोई बारिस या उत्तरा-
धिकारी न हो । (वस्तु) जिसका
कोई मालिक न हो ।

छाश—(सं स्त्री) मवा न ।
मृत शरीर । शव ।

छास, छास्य—(सं पुं) वृत्त,
नाश, नाग, वज ।

नृत्य । शृंगार आदि कोमल
रसोंका उद्दीपन करनेवाला कोमल
और स्त्रियों का सा नृत्य ।

छासा—(सं पुं) जेपलपौशा,
जेपलपौशा वस्तु, वस्तुका वस्तु ।
कोई लसदार चीज । जिससे
कागज आदि चिपकाया जाता है ।

छाहु—(सं पुं) नाड ।
लाम ।

छिए—(अव्य) ज्योत्स्नान कागद्वर
विभक्ति, कावच ।
सम्प्रदान कारकका चिह्न । हेतु ।

छिक्खाइ—[सं पुं] डाडव
लेखक (वाटिकाङ्क) ।
बहुत बड़ा लेखक । (व्यंग्य)

छिखना—(क्रि स) जिधा, छिद्ध
अंका, कितान, प्रवक्त, काव्य
आदि बचना कवा ।

लिपिबद्ध करना । चित्र बनाना ।
ग्रंथ, लेख, काव्य आदिकी रचना
करना । (प्र०-लिखाना)

लिखा—(वि) लिखिब जग ।
जिसे लिखना आता हो ।
[सं पुं] लिखित रचना ।
लिखित लेख ।

लिखाई - [सं स्त्री] लिखनि, छिन्न
आदिब अङ्कन कार्या ।
लिखनेका कार्य, भाव, ढंग वा
पारिश्रमिक । चित्र अंकित करने
की क्रिया या भाव ।

लिखा-पदी—(सं स्त्री) लिखा-
पत्र, छिन्नि-पत्रब आदान प्रदान,
कोटो कथा पत्रा बट्ना-
द्वस्त कविब वाटव गम्भापित
शब्दा लिखित कार्या ।
लिखने और पढ़नेका काम । पत्र
व्यवहार । किगी बात या व्यव-
हार का लिखकर निश्चित और
पक्का करना या होना ।

लिखावट—(सं स्त्री) आश्व,
लिखाव पञ्चति ।
लिखने की क्रिया भाव वा ढंग ।

लिखान—[क्रि स] सुवाइ दिया,
नाटि-वाट आपित देखटो

सुवाइ दिया ।
लेटाना । किसीका शरीर मिट्टी
या चीकी आदिपर फैला देना ।

लिट्ट—(सं पुं) झूठे वा जठ-
ठाठ गेका डाडव कटि ।
आगपर सेककर पकाई हुई बड़ी
और मोटी रोटी । (सं स्त्री-लिट्टी)

लिपटाना—(क्रि अ) आटका-
दानी धवा, आनिङ्गन करा,
कामत गम्पूर्ण नन लटोवा ।
चारो ओर से घेरते हुए सटना
या लगना । आलिगन करना ।
काममें पूरी मेहनत से लगना ।
[क्रि स-लिपटाना ।]

लिपाई—(सं स्त्री) लिपा कार्या,
लिपन ।

लीपनेकी क्रिया, भाव या मजदूरी ।

लिप्सा—[सं स्त्री] भावटेल इच्छा ।
पाने की इच्छा ।

लिबाम—[सं पुं] पोछाक ।
पहनने के कपड़े । पोशाक ।

लियाकत—[सं स्त्री] योगाता ।
योग्यता ।

लिखाट (र) — (सं पुं) कपाल,
भांग्य ।
ललाट । कपाल ।

लिबैया—(वि) ले याँउता ।

लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला ।

लिहाज—[सं पुं] लाक-गंटाक, ग्यान, मर्यादाब प्रति लक, लाख ।

शील संकोच । सम्मान या मर्यादा का ध्यान । लज्जा ।

लिहाड़ा—(वि) (नया(नइ), अपमार्ध - लोकर ।

खराब पदार्थ । बाहियान मनुष्य

लिहाफ—[सं पुं] लेप, निशानी । भारी रजाई ।

लीक—[सं स्त्री] बेथी, छलि यश कथा, अतिटो, नियम, गीमा, कलक, माटिब उपबत बहा गंडीब चकार लोब ।

लकीर । रेखा । बँधी हुई मर्यादा या क्रम । प्रतिष्ठा । प्रथा । सीमा । कलंक ।

लोख—[सं स्त्री] एकगिर कगे । जूँ का अंडा ।

लीकड़—(वि) छिला, निकर्या, सहजे पिछ नेवा लोक । सुस्त । निकम्मा । जल्दी पीछा न छोड़नेवाला ।

लोह—(सं स्त्री) जल वा चवाईब विई ।

घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल ।

लीपना—(क्रि स) लिपा, लेओ लोरा बख शंहि नगोरा । गीली वस्तुका पतला लेप चढाना ।

लीपा-पोती—(सं स्त्री) लिपा-टपाटा, माटि-वेवा आदि लिपा कार्य, दोष, डूल आदि नुकावर बावे कबा अछेष्टा, नाश ।

जमीन, दीवार आदि लीपने ओर पोतने का काम । दोष, मूल आदि छिपाने के लिये ऊपर से की जानेवाली या दिखोआ कारं-वाई । नाश ।

लुंछन—[सं पुं] छानि छुलि उडना । चुटकी से बाल ऊखाड़ना

लुज (1) —(वि) निःकलक, आउडवि मोहोरा लोक, पात आदि मोहोरा गछ ।

लंगड़ा, लूला । ठूँठ पेड़ ।

लुंठन—(सं पुं) माटित बागवा कार्य, बलेवे लोकब बख अपहरण करि निवा कार्य । लुडकना । लूटना ।

लुंङा--(वि) नेज-पाथि नोहोवा
छाई, नेज्ज चौरवत नोम
नथका गक आदि ।

पक्षी जिसकी दुम और पर झड़
गये हों ।

लुभाठा--(सं पुं) आधाटोपावा थवि ।
जलती हुई लकड़ी । (सं स्त्री--
लुभाठी) ।

लुभाब--(सं पुं) एठा ।
लासा ।

लुकना--[क्रि अ] नूकोवा ।
छिपना ।

लुकाना--(क्रि अ) नूका-छुनूका ।
लुकना-छिपना ।
[क्रि स] आबत नूकोवा ।
आड़ में करना ।

लुगादी--[सं स्त्री] गक पनीया
पिण्ड ।
छोटा गीला पिंड ।

लुगाई--(सं स्त्री)झी, तिवोता, पञ्जी ।
स्त्री । ओरत ।

लुङ्वा--[वि] बदमाश, नीच, नूष्ठा,
कामुक ।

नीच और पाजी । बदमाश ।
[सं स्त्री--लुङ्गी]

लुटना--[क्रि अ] नूछित होवा ।
लूटा जाना ।

लुटाना--(क्रि स) नूटोवा, अइनक
नूटिवले दिया, बर सञ्जात बिक्री
करी, अनाइकत थवट करी ।
दूसरों को लूटने देना । बहुत सस्ते
दाम पर बेचना । व्यर्थ बहुत
अधिक व्यय करना ।

लुटिया--(सं स्त्री) गक लोटा ।
छोटा लोटा ।

लुटेरा, लूटक--(सं पुं) नूटियाब,
छकाईत ।
लूटनेवाला ।

लुङ्कना, लुङ्ना--[क्रि अ] माछित
बागवा ।
ढुलकना ।

लुनरा--(वि) टुटेकीया, बदमाश ।
चुगल खोर । पाजी ।

लुनना--(क्रि स) पका भगा कटा ।
खेत से पकी फसल काटना ।
(सं स्त्री-लुनाई)

लुभाना--(क्रि अ क्रि स) मोहित
होवा, आकषित होवा, आननित
होवा, लालच देखूवा ।
मोहित होना या करना । रीझना
या रिझाना । ललबाना ।

लुहरी—[सं स्त्री] काण्व बाला,
काण्व कुलब दबे अलङ्कार
विशेष ।

कान की बाली (गहना) ।

लुहना—[क्रि अ] उलगा, उलवि
पना, माटित बागवा, शठाटे
आदि उपस्थित होवा ।

भूलना । लटकना । ढल या झुक
पडना । जमीन पर इधर उधर
लोटना । अचानक आ पहुँचना ।

लुहार—[सं पुं] कमाव ।
लोहार ।

लु—(सं स्त्री) गर्ब्य बतार्ह ।
गरम और तेज हवा ।

लुक—(सं स्त्री) झूहै शिखा, आवा
पोवा काँठ । उका, गर्ब्य
बतार्ह ।

आग की लपट । जलती हुई
लकड़ी । उल्का । लू ।

लूट—[सं स्त्री] नूटपात । नूटपात
कवि अना वड्ड ।

लूटने की क्रिया या भाव । लूटने
से मिला हुआ माल ।

लूटलसोट—(सं स्त्री) नूटपात कवा,
बल्लेबे नामवड्ड काटि अना ।

लोगों को लूटना और उनका
माल छीनना ।

लूटना—(क्रि स) डारि धमकि दि वा
माँवधर करि धन सम्पत्ति काटि
अना, ठगोवा नूट कवा ।

किसी को मार या डरा-धमका
कर उसका धन ले लेना । ठगना ।

लूती—[सं स्त्री] मकवा, झुल्लिङ्ग ।
झूहेशिखा ।

मकड़ी । स्फुल्लिङ्ग । लूका ।

लूम—[सं पुं] नेज, बाग विशेष ।
पूँछ । एक राग ।

लूला—[वि] हात-कटा योवा माझ्ह ।
अगमर्थ, दुर्खल ।

जिसका हाथ कटा हो । असमर्थ ।

लेंडी—(सं स्त्री) छागली उठे आदिब
लाद ।

बंधे हुए मल की कंडी । बकरी
या ऊँट की मेंगनी ।

लेंहड़ (१)—(सं पुं) जम्ह आदिक
दल वा जाक ।

पशुओं का झुंड या दल ।

लेई—[सं स्त्री] लेहै । आठाशुबि
मिजाइ तैझाव कवा कैवाल ।

गाढ़ा उबाला हुआ मैदा जो

कागज आदि चिपकाने के काम में आता है। अवलेह।

लेख—[सं पुं] रचना, आशय, लिपि।

मजमून। लिखावट। लिपि।

[सं स्त्री] प्रकाश, कथा, वार्ता (अभिष्टे)।

अभिष्टे या पक्की बात।

लेखना—(क्रि स) लिखना, गणना करना, चिन्ता करना।

लिखना। कुछ समयभरना या गिनना। विचारना।

लेखनी—[सं स्त्री] कलम।

कलम।

लेखा—(सं पुं) शिष्टाव, गणना, विवरण।

हिमाव। गणना। विवरण।

(सं स्त्री) रचना, चिन्ता, शायी, किरण।

लेख। चित्र। रेखा। पंक्ति। किरण।

लेखा-बही—(सं स्त्री) शिष्टाव लेखा बही।

वह बही जिसमें आय व्यय आदि का हिसाब लिखा जाता हो। (अं—एकाउंट-बुक)

लेटना—(क्रि अ) बागबानी, खेती आदि में मिट्टी लगाई बागबानी करना।

फल आदि से पीठ लगाकर सारा शरीर उसपर ठहराना। बगल की ओर झुक कर जमीन पर गिर जाना।

लेन—(सं पुं) लोना, पावनीया। लेने की क्रिया या भाव। वह धन जो किसी से लिया जाने को हो। भावना।

लेनदार—(सं पुं) धन खाते व्यक्ति या पावना बाकी धन।

जिसका कुछ धन या पावना बाकी हो।

लेन-देन—[सं पुं] अना निया, बेचा-किना, काबाब, जंगल। लेने और देने का व्यवहार।

लेना—(क्रि स) लोना, ग्रहण करना, धन, प्रायः दि लोना, दायित्व लोना।

ग्रहण या प्राप्त करना। पकड़ना। मोल लेना। जिम्मे लेना।

लेप—(सं पुं) लेप, लिपि दिया पद।

लीपने, पोतने या चुपड़ने की चीज ।

लेपना—[क्रि स] लेण लगेवा ।
लेप लगाना ।

लेलिहान—[सं पुं] गाप ।
साप ।

(बि) गुनाहे थका, मेलि थका,
लेलिहान ।

बार बार चखने या चाटनेवाला ।
ललचाया हुआ ।

लेवा—[सं पुं] लेण, निशानी ।
गिट्टी का वह लेप जो बर्तन को
भाग पर चढ़ाने से पहले उसकी
पेदी में लगाते हैं । लेप । कंथा ।
[वि] लउंठा ।
लेनेवाला ।

लेश—(सं पुं) अणु, अकणमानव,
छिह, गश्क, अलकाव विशेष ।
अणु । बहुत ही थोड़ा भंश ।
निशान । सम्बन्ध । एक
अलंकार ।

लेह—[सं पुं] लेहकि खोवा
उबध, छाँटेनी ।
चाटकर खायी जानेवाली चीज ।
चटनी ।

लेहन—(सं पुं) लेहकि खोवा
कार्य ।

चखने या चाटनेकी क्रिया या
भाव ।

लेह—[वि] लेहकि खोवा
थाछ, लेश ।
जो चाटकर खाया जाता हो ।

लै—(अव्य) ले ।
तक ।

लैस—(वि) यहु—गुहरे गच्छित ।
गकला थकावे गाछू ।
हथियारों आदिसे सजा हुआ ।
सब तरह से तैयार ।
(सं पुं) काटपोरत लगेवा
फिता ।
कपड़ेपर लगाने का फीता ।

लौदा—[क्रि स] पनीया रखव
लाडू ।
गीले पदार्थ का पिंड ।

लोई—[सं स्त्री] कटौत बाद
लेखाबी आठाव लारु ।
गुँधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेल
कर रोटी बनाई जाती है ।
[सं पुं] उन गश्क ।
जन समुदाय ।

लोक—(सं पुं) लोक, अंगार
जनता । भूवन । पृथिवी, स्वर्ग,
आरु पाताल एहे तिनिर एठा ।
पृथ्वी के अपर नीचे कुछ कल्पित
स्थान । संसार । जनता ।

लोक-तन्त्र—[सं पुं] गण तन्त्र ।
गणतन्त्र ।

लोकना—(क्रि स) उपनयन परि
बोरा बख हातेबे धवि बधा ।
माङ्गते काटि लोरा ।
ऊपर से गिरती हुई चीज हाथोंमें
रोकना । बीच में से ही उड़ा ले
जाना ।

लोकमत—(सं पुं) जनमत ।
जन-मत ।

लोक-सत्ता—(सं स्त्री) जनशक्ति,
जनताब अधिकार ।
जन सत्ता ।

लोकाचार—(सं पुं) लोके
वा कोनो ठाईर माशह कबा
आचार-व्यवहार ।
जनता में प्रचलित व्यवहार ।

लोकापवाद—[सं पुं] जनशक्ति-
जत होरा बदनाम ।
लोगों में होनेवाली बदनामी ;

लोकायत—[सं पुं] चार्वाक
पंथी, चार्वाक दर्शन ।
एक दर्शन जिसे चार्वाक ने
चलाया था ।

लोकाढोक—[सं पुं] चक्रवाल,
दिश्वलय बेधा, जगतक बेधि
थका काल्पनिक प्रसृत विशेष ।
ब्रह्मांड में फैले हुए अनन्त लोक ।
सातों समुद्रों को परिवेष्टित करने
वाली पौराणिक पर्वत श्रेणी ।

लोकेश (श्वर)—(सं पुं) देव ।
सब लोकों का स्वामी, ईश्वर ।

लोकोक्ति—(सं स्त्री) ककबा ।
कहावत ।

लोकोत्तर—[वि] अलौकिक ।
अलौकिक ।

लोग—(सं पुं) जन समूह, लोक ।
जन-समूह ।

लोच—(सं स्त्री) टिप्पणी, कोमल,
अभिलाषा ।
लचक । कोमलतापूर्ण सौन्दर्य ।
अभिलाषा ।

लोचन—(सं पुं) चक्र ।
आँख ।

लोहन—(वि) बागबा ।
लोहनेवाला ।

[सं स्त्री] बागवा कार्य, कांशे
टीसा खजल ।

लोटने की क्रिया या भाव ।
कँटीली झाड़ी ।

[सं पुं] माटित बागवा ।
एक प्रकार का बागवा । गांवा ।
एक प्रकार का कबूतर जो जमीन
पर लुढ़का देने से लोटने लगता
है । साँप ।

लोटना—(क्रि स) बागवा ।
चित्त धीर पट होते हुए इधर
उधर करना । लुढ़कना ।

लोट-पोट—[सं स्त्री] बागवा
अथवा विज्ञान कवा कार्य ।
लेटने या आराम करने की क्रिया
या भाव ।

(वि) शैशि वा आनन्द
अथवा होवा, श्रुव वेचि आनन्दित ।
हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट
जानेवाला । बहुत अधिक प्रसन्न ।

लोट्टा—(सं पुं) लोटा ।
पानी रखनेका एक गोल पात्र ।

लोढ़ना—(क्रि स) मूल छिड़ा,
नेछा ।

फूल चुनना या तोड़ना । ओटना ।

लोढ़ा—(सं पुं) पटा-छुटि, पठाड
बख पिशा गोठा मिल ।
सिल का बट्टा ।

लोथ—[सं स्त्री] मवा न ।
मृत शरीर । शव ।

लोथड़ा—[सं पुं] मारग पिछ ।
मांस-पिंड ।

लोना—(वि) मूनीश । नादण मूछ ।
नमकीन । लावण्य युक्त ।
[क्रि स] धान आदि कटा ।
फसल काटना ।

लोनाई (लुनाई)—[सं स्त्री] लावण्य ।
मनोहर ।
लावण्य ।

लोम—[सं पुं] लोम, निशान ।
रोआ । लोमड़ी ।

लोमड़ी—(सं स्त्री) निशान
जातीय मक जङ्गली खड्ड ।
गोदड़ की तरह का एक जंगली
छोटा पशु ।

लोम हर्षक—(वि) भयानक, ग्राव
नोम विश शोवा वा निशवा
कार्य ।

(ऐसा भीषण) जिसे देखकर रोंगटे
खड़े हो जायें । भयानक ।

छोय—(सं पुं) जोक, बाइश,
खनडा, छकू।
लोग । आँख ।
[सं स्त्री] छकू ।
आँख ।

छोर—(वि) छक्कल, आँधरी ।
चंचल । उत्सुक ।
[सं पुं] काणव कुण्डल, छकू
पानी ।
कानका कुंडल । आँसू ।

छोरी—(सं स्त्री) निद्रकनि गौड ।
बच्चों को सुलाने के लिये गाया
जानेवाला एक लोक गीत

छोल—(वि) लबि-चबि, शलि-खालि,
अबिबखित, आँधरी, छक्कल ।
हिलता हुआ । बदलता हुआ ।
उत्सुक ।
[सं पुं] बर डाँडब आक
अथ छो ।
बहुत बड़ी और ऊँची लहर ।

छोलुप—[वि] नोडी-नालटी,
छेत्तूक, आँधरी ।
लोभी । लालची । परम उत्सुक ।

छोष्ट—(सं पुं) गिल ।
पत्थर । डेला ।

छोहसार—[सं पुं] इन्नाड ।
फोलाद ।

छोहा—[सं पुं] जो । अन्न । अन्न-
भक्ष ।

लोह धातु । अस्त्र । हथियार ।

छोहा मानना -- [मु०] अड्ड
शोकाव कबा ।

(किसी का) प्रभुत्व स्वीकार
करना ।

छोहा लेना --(मु०) युद्ध कबा ।
युद्ध करना । किसी प्रकार की
लड़ाई लड़ना ।

छोहार—[सं पुं] कमाव ।
लोहे की चीजें बनानेवाली एक
जाति ।

छोहू—(सं पुं) उज्ज ।
लहू । रक्त ।

छौं—(अव्य) तैल, गमान ।
तक । बराबर ।

छौंग—(सं पुं) ल०, ग्रहना विशेष ।
मसाले और दवा के काम में
आनेवाली एक झाड़ की कली ।
एक गहना ।

छौंडा—[सं पुं] नवा [तृष्णार्थ] ।
लडका (तृष्णार्थक) ।

लौंडी (डी)—(सं स्त्री) पांगी,
छाकवनी ।

दासी ।

लौ—[सं स्त्री] छूँने निशा, दीप-
निशा, मनोयोग ।

आग की ज्वाला । दीप-शिखा ।

मन की सच्ची लगन ।

लौकना—(क्रि अ) देखी ।

दिखाई देना ।

लौकी—[सं स्त्री] बाति जाडे ।
कद्दू ।

लौटना—(क्रि अ) डेडाटि अशा,
धूँवि अशा ।

वापस आना । मुड़ जाना ।

लौटाना—(क्रि स) डलटाई दिग्रा ।

(कोई वस्तु) वापस करना ।

उलटना ।

लौह—[सं पुं] लोहा ।

लोहा ।

लौहिय—[वि] लोहाव, बड्ड
बड्ड ।

लोहे का । लाल रंग का ।

(सं पुं) जम्नापूत्र नद ।

ब्रह्मपुत्र नद ।

ल्याना (बना)—(क्रि स) अना ।

लाना ।

व

व—वर्णमालाव एकुवि न गन्थाव
वाञ्छन वर्ण ।

वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन
वर्ण ।

[अव्य] आरु ।

ओर ।

वंक, वंकिम—(वि) टेवा, वैका ।
टेढ़ा ।

वंचक—(वि) धूर्छ, ठग, बञ्चक ।
धूर्त । ठग ।

बंचना—[सं स्त्री] काकि ।

बोसा ।

(क्रि स) काकि निशा, ठंश, पाठि कवा ।

ठगना / धोखा देना । पदना (लेख आदि) ।

वदन—[सं पुं] उक्ति, अनाय ।
स्तुति । प्रणाम ।

वदनीय—(वि) वदना कवा
योगा, प्रवनीय ।

वदना करने योग्य ।

वदी—(सं पुं) वदी, कयदी,
अशक्ति, गायक, छावण, टेवता-
निक ।

कदी । चारण ।

वंशानुक्रम—[सं पुं] वंशाश्रम,
वंश प्रवर्णन ।

किसी वंशमें बराबर चलता रहने
वाला क्रम या परंपरा ।

वंशावली—[सं स्त्री] वंशा-
वली, प्रवर्णनाया ।

किसी वंशके लोगों की काल क्रम
से बनी हुई सूची ।

वंशी—(सं स्त्री) वंशी ।

मुरली ।

वकालत—(सं स्त्री) वकालति,
दूतव काम ।

वकील का काम या पेशा । दूतका
काम ।

वकील—[सं पुं] वकील, दूत,
अतिनिधि ।

दूत । प्रतिनिधि । दूसरे के पक्ष
का समर्थन करनेवाला । वकालत
करनेवाला ।

वक्त—(सं पुं) वक्त ।
समय । अवकाश ।

वक्र—(वि) वक्र, टेव ।
टेव ।

वक्र-दृष्टि—(सं स्त्री) वक्र दृष्टि,
वक्र-छावनि ।
टेवी दृष्टि ।

वक्रोक्ति—[सं पुं] वक्र, वक्र
वा निश्चित कथाव शिखर
मुकाशे वक्रा निम्नावाद, काव्य
अलंकार विनय ।

परिहास, व्यंग्य आदिके लिये कही
हुई ऐसी बात जिसमें द्रिष्ट
शब्दों का प्रयोग हो । साहित्यमें
एक अलंकार ।

वक्षः स्थल, वक्ष—[सं पुं] वक्ष,
क्षय, वृद्ध ।
छाती ।

वक्षोज, वक्षोरुह—(सं पुं) उद, पिश्याद ।

स्तन ।

वक्षोरुह—[अव्य] आदि, शैत्यादि ।
आदि । इत्यादि ।

वक्षजन—(सं पुं) उद, गंधुवता, माप, गौरव ।

भारीपन । तील । भार । गौरव ।

वक्षह—[सं स्त्री] कावण ।
कारण । हेतु ।

वक्षीफा—(सं पुं) वनपानो वृद्धि, जप
अथवा पाठ ।

वृत्ति । जप या पाठ ।

वक्षीर—(सं पुं) मञ्जी ।
मंत्री ।

वक्षीरी—[सं स्त्री] मञ्जी ।
वक्षीर का भाव या पद ।

वक्षू—(सं पुं) उद, मुहलमानव
नामावब मल्ल माति शत भवि
आदि शोवा कार्य ।

मुसलमानों में नमाज पढ़ने से
पहले हाथ पैर और मुँह धोनेकी
क्रिया ।

वक्षू—[सं पुं] अक्षि, मधूत ।
अस्तित्व । मौजूदगी ।

वावजूद—(मु०) शैमान शल्ले, शोवा गच्छे ।

इतना होने पर भी ।

वट—(सं पु) वट गच्छ ।
बरगद ।

वटिका, वटी—(सं स्त्री) गरु वटि ।
छोटी गोली या टिकिया ।

वटु (क)—(सं पुं) न'वा, जन्माचारी ।
बालक । ब्रह्मचारी ।

वणिक—(सं पुं) वावगात्री,
वेपाबी ।
व्यापारी ।

वतन—[सं पुं] वन भूमि, मातृभूमि ।
जन्म-भूमि ।

वत्—(सं पुं) गमान, व९ ।
समान । तुल्य ।

वत्स—[सं पुं] मायूबी, वोपा ।
गौका वच्चा । छोटीके लिये प्यार
सूचक संबोधन ।

वत्सल—[वि] गङ्गानव प्रेम
पूर्व, प्रेम आरु मया कवा
लोक, मयानु ।

संतानके प्रेमसे भरा हुआ । छोटी
से अत्यन्त स्नेह और उनपर कृपा
रखनेवाला ।

वदन—[सं पुं] मुख, मुख गङ्गल ।
मुँह ।

वदान्य—(वि) सब दानी, मिष्टेडाबी ।
बहुत बड़ा दानी । मधुरभाषी ।
[सं स्त्री—वदान्यता] ।

वदि (दी)—[सं स्त्री] कृष्ण पक्ष ।
कृष्ण पक्ष ।

वधू, वधूटी—(सं स्त्री) कहेना,
बोवाबी ।

दुलहन । पत्नी । पुत्र की बहू ।

वन-माला—[सं स्त्री] वन माला,
वन कुलब माला ।
जंगली फूलोंकी माला ।

वन-स्थली—(सं स्त्री) वन भूमि,
जङ्गल ।

वन भूमि ।

वनम्पति—[सं स्त्री] अति वृहत्
गच्छ । कुल शवा कुल नशवा गच्छ,
वनम्पति ।

पेड़ पौधे । बिना फूलोंका वृक्ष ।

वनिता—(सं स्त्री) तिरिबोता ।
औरत ।

वपन—[सं पुं] गुट्टि मिंठा ।
बीज बोना ।

वपु—(सं पुं) शरीर ।
शरीर । देह ।

ववात—(सं पुं) बोवा, आपत्ति ।
बोरु । आपत्ति ।

वमन—(सं पुं) वमि कबा, वमि ।
कै करना । कै किया हुआ पदार्थ

वय—(सं स्त्री) अवस्था, वयस ।
अवस्था । उम्र ।

वयस्य—(सं पुं) गति ।
सत्ता ।

वयोवृद्ध—[वि]वयोवृद्ध, वयस्ययाल ।
वयस्यत डाढ़व ।

वृद्ध-अवस्था वाला ।

वरं च, वरन्—(अव्य)किञ्चु ।
बल्कि । लेकिन ।

वर—(सं पुं) देवता यादिये दिया
गफल याशीर्खाप । दबा, श्वासी,
वब ।

देवता आदि से मांगा हुआ मनो-
रथ । वह जिसके साथ कन्या
का विवाह निश्चित हो । पति ।
(वि) श्रेष्ठ, उछय, उछ ।
श्रेष्ठ । उच्चकोटि का ।

वरक—(सं पुं) छिछि, कितापब
पृष्ठा, श्वातव पदार्थब पातल
पता वा औंश ।

पत्र । पुस्तकों का पत्ता या
पृष्ठ । धातु का पतला पत्तर ।

वरण—(सं पुं) मनोनयन, विवाह
एति विधाय गच्छाव ।

किसी को किसी कामके लिये
चुनना । विवाह में वरको अंगीकार
करने और विवाह पक्का करने
की रीति ।

वरदो, वर्दी—[सं स्त्री] पोशाक ।
पोशाक ।

वरना—(क्रि स) वरन कना,
अन्वर्धना कना ।

वरण करना ।
(सं पुं) डेटे ।
ऊँट ।

(अव्य) नहले ।
नहीं तो ।

वराटिका—(सं स्त्री) कड़ि ।
काड़ी ।

वरानना—[सं स्त्री] सुनबी तबोता ।
सुन्दर स्त्री ।

वराह—(सं पुं) ग्राहवि ।
सूअर ।

वरिष्ठ—[वि] श्रेष्ठ, उडय ।
श्रेष्ठ । उच्चकोटि का ।

वरुणाक्षय—[सं पुं] गार्गव ।
सागर ।

वरुथिनी—[सं स्त्री] देगना ।
सेना ।

वरेण्य—(वि) अध्वान, भूषणीय ।
प्रधान । पूज्य ।

वर्ग—[सं पुं] वर्ग, श्रेणी, आक,
अध्याय, चाबिहूकोया ठाई ।
श्रेणी । समूह । समा । अध्याय ।
चौकोर क्षेत्र ।

वर्गीकरण—[सं पुं] श्रेणी-विभाजन ।
श्रेणी-विभाजन ।

वर्चस्व—[सं पुं] नज्जि, श्रेष्ठता
तेज । श्रेष्ठता । (वि-वर्चस्वी)

वर्ण—[सं पुं] वर्ण, रंग, मानव-
जातिव पाँच भेद, हिन्दूव चाबि
जाति, प्रकार, आधर, रूप ।
रंग । मानवजातिके पाँच भेद ।
हिन्दुओंके चार भेद । प्रकार ।
अक्षर । रूप ।

वर्ण-भेद—(सं पुं) जाति भेद,
श्रेणी भेद ।
जाति-भेद । श्रेणी-भेद ।

वर्ण-संकर—(सं पुं) वर्णगठन,
एजातिव मता आरु आन
एजातिव तिवोताव पना होरा
लोक । दोगला ।

वर्ण्य— [वि] वर्णना कर्ता उपाधि-
योगी । वर्णना करि शक्य ।
वर्णन करने योग्य । जिसका
वर्णन हो रहा हो ।

वर्तन—[सं पुं] वारंवार, आचरण,
धीरिका बेतन, वाचन ।
बरताव । फेरना । पान्न । वेतन ।

वर्तिका—[सं स्त्री] कापोंर वा
कपाशर शलिता । तुलिका ।
पकड़े, रुई आदि की बत्ती ।
रेखा चित्र बनाने के काममें आने
वाला पेंसिल की भाँति एक
उपकरण । तुलिका ।

वर्तुल—[वि] घूर्णीय ।
गोल ।

वर्त्म—(सं पुं) बाटे, पथ, पार,
चक्रव पलक ।

मार्ग । किनारा । आँख की पलक ।

वर्द्धक—[वि] बढोढ़ा, वर्द्धक ।
बढाने वाला ।

वर्म—(सं पुं) कवच, घब, शरीर
रक्षा कर्ता कवच । शोध ।

कवच । बकतर । मकान । शोध ।

वर्मा—(सं पुं) वर्धन उपाधि,
कृत्रिम आतिर उपाधि विशेष ।

क्षत्रियों की उपाधि ।

वर्ष—(सं पुं) वर्ष । पृथिवीर
न भागव एडाग ।

साल । पृथ्वी का खंड ।

वर्षक—(वि) वर्षण दिठता ।
वर्षा करनेवाला ।

वर्षा—[सं स्त्री] वर्षण । कोनो
वड चाबिउपिनर पवा बेछिटैक
अश ।

बरसात । किसी वस्तु का बहुत
अधिक मात्रामें चारो ओर से
आना ।

वक्ष्य—(सं पुं) वलया । एडनीया
शंक । कङ्कण । छुई छुई
शरीर गैनाय अवस्थान ।
मंडल । घेरा । कंकड़ । चूड़ी ।

वलाक—(सं पुं) वर्गनी, वरपङ्क्ति
बगला (सं स्त्री—वलाका)

वलाहक—(सं पुं) मेघ, पाशवर ।
मेघ । पर्वत ।

वलि—[वि] पाक खोला, गाढ
मानि शक्य । मिना । घूर्णीय ।
बल खाय या घुमा हुआ । लिपटा
हुआ । मिला हुआ ।

वली—(सं स्त्री) श्रेणी, बेवा,
गृह, टैम ।

सिक्कवट । श्रेणी । रेखा । समूह ।

(सं पुं) मालिक, गाधू,
अभिभावक, वनमुख, वनवान ।
मालिक । साधू । अभिभावक ।
बल्कल—(वि) गह्वर छाल । वाकलि
वृक्षकी छाल ।
बल्द—(सं पुं) भूख ।
बेदा ।
बल्मीक—(सं पु) उई शरुगू,
गापव गौड ।
दीमककी बाँबी । साँपका बिल ।
बल्लभ—(वि) प्रियलोक, प्रियतम ।
प्रियतम ।
(सं पुं) चाँगी, अध्याक, मालिक ।
पति । अध्यक्ष । मालिक ।
बल्लभा—[सं स्त्री] द्रव्यगो ।
प्रेयसी ।
बल्लरी, बल्ली—(सं स्त्री) नडा ।
लंता ।
बसति [सी]—[सं स्त्री] निवाग,
शव, वगति ।
निवास । घर । बस्ती ।
बसन—(सं पुं) काँपोर ।
कपड़ा । निवास ।
बसा—(सं स्त्री) ठवौ ।
चरबी ।

बसीयत—(सं स्त्री) बुझाव भिछत
उडवाशिकार गम्पके ईष्ठा-पत्र
वा मान-पत्र ।
मरनेके बाद सम्पत्तिके उत्तराधि-
कार के बारेमें लिखना ।
बसुंधरा, बसुधा, बसुमति—[सं स्त्री]
पृथिवी ।
पृथ्वी ।
बसु—[सं पुं] आठजन देवतां
गमूश, नड, धन, झूई, पानो,
गोश, चूँया ।
आठ वैदिक देवताओंका एक गण ।
रत्न । धन । अग्नि । जल ।
सोना । सूर्य ।
बसूल—(वि) आनाय पोरा ।
प्राप्त । उगाहा हुआ ।
बसुली—[सं स्त्री] आनाय कवा,
गंजइ कवा ।
लोगोंसे लेकर धन आदि इकट्ठा
करना । उगाही ।
बह—[सर्व] एई, एउँ, गर्वनाम
पंचव तृतीय पुरुषव एक वचनव
रूप ।
किसी अन्य मनुष्य या दूर के
पदार्थका संकेत करनेवाला सर्व-

नाम या परोक्ष वस्तुओंका सूचक शब्द ।

[वि] बहन कटौती, बाश्क ।
बहन करनेवाला । बाहक ।

बहम्—(सं पुं) गन्धश, शंका,
कन्नना बिछा, धावण ।
मनमें होनेवाली मिथ्या धारणा
या मन्देह । भ्रम ।

बहशत—(वि) पागलपन, बलियालि
बहशी होनेकी अवस्था या भाव ।
पागलपन ।

बहशी—(वि) छलनी, अगता ।
जंगली । असभ्य ।

बहौ—[अव्य] तात ।
उस जगह ।

बहिरंग—(सं पुं) बाहिरव अंग ।
बाहरी या ऊपरी भाग ।

[वि] उपरव बा बाहिवा ।
ऊपरी या बाहरी ।

बही—[अव्य] तात ।
उसी स्थान पर ।

बही, बहै—[सर्व] सेवेई, तेरेई
वह ही ।

बहि—(सं पुं) झुई ।
आग ।

बांछा—(सं स्त्री) अमिलावा ।
अमिलावा ।

बांछित—(वि) पावने कायना
कना, वांछित ।
चाहा हुआ ।

बा - [अव्य] अथवा ।
अथवा

[सर्व] गेई ।
वह । उस ।

बाकू—(सं पुं) बागी, कथा,
गवशती ।

बाणी । सरस्वती ।

बाकई—(अव्य) गटौटेकगे ।
सचमुच ।

बाकिफ—[वि] जना, परिचित ।
ज्ञाता । परिचित ।

बागीश—[सं पुं] बृहस्पति,
जन्मा कवि ।

बृहस्पति । ब्रह्मा । कवि ।

[वि] कथाकोरात पार्श्व
गोक, सुबला, बाकछुब ।

अच्छा बोलनेवाला । सु-वक्ता ।

बागीश्वरी, बागदेवो—[सं स्त्री]
वागीश्वरी, गवशती ।

सरस्वती ।

वाग्वाच—(सं पुं) कथा वचन-
पाठ ।

व्यर्थ बातोंका आहम्बर ।

वाग्दत्ता—(सं स्त्री) वाग्दत्ता । दिव
बुलि कथा दिग्वा (छोबाली),
मुत्थेव दिव बाला ।
वह कन्या जिसके विवाहकी बात
किसी के साथ पक्की का जा चुकी
हो ।

वाग्मी—[स पुं] कथा कोरात
पट्टे, विज्ञान ।

अच्छा वक्ता । विद्वान् ।

वाक्मय—[सं पुं] गहिता ।
साहित्य ।

वाक्मालय—(सं पुं) पूँथिडालत
वाक्मि आनि पठाव बाव
ज्वरकित ठाई ।

वह स्थान जहाँ लोगोंके पढ़ने के
लिये अक्षर आदि रखे रहते हैं ।

वाक्वाच—(वि) वच कथकी, वाक्
पट्ट ।

बहुत बोलनेवाला । वाक्पट्ट ।

वाक्चि—[वि] वाक्चि गवकीय ।
वाणी सम्बन्धी । वाणीसे कहा
या किया हुआ ।

वाक्ची—(वि) बोधक, सूचक ।
प्रकट करनेवाला । सूचक ।

वाजिब(व)—(वि) उचित । कर्तव्य
उचित । मुनासिब ।

वाजी—[सं पुं] बाँवा ।
घोड़ा ।

वाट—(सं पुं) बाटे । पथ ।
मार्ग । रास्ता ।

वाटिका—(सं स्त्री) वाग्निष्ठा ।
बाग । बगीचा ।

वाङ्वाग्नि—[सं स्त्री] वाग्निवत
अग्नि थका झूठे । वाङ्वाग्नि ।
वह कल्पित अग्नि जो समुद्र के
अन्दर जलती हुई मानी गयी है ।

वाण—[सं पुं] कैंड । शर ।
तीर ।

वाणिज्य—(सं पुं) बेहा । बेपार ।
व्यापार ।

वाणी—[सं स्त्री] वाक् । अवगती,
वाणी ।

वचन । सरस्वती ।

वात—[सं पुं] बतार । वात-
वेपार ।

वायु । शरीर में की वह वायु
जिसके बिगड़ने से अनेक प्रकार
के रोग होते हैं ।

वासायन—(सं पुं) विविकी ।
करोसा । खिड़की ।

बातावरण—(सं पुं) प्राविपाथिकता ।

परिवेश । वातावरण ।

वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है । परिवेश ।

बातुल—(सं पुं) पागल, बलिया ।
बावला । पागल ।

बातुलता—(सं स्त्री) बलियालि ।
पागलपन ।

बात्या—(सं स्त्री) धूसर ।
बवंडर ।

बाद—[सं पुं] उर्क विउर्क । शास्त्रार्थ,
सौकर्य । विवाद ।
शास्त्रार्थ । तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित
तत्व या सिद्धान्त । विवाद ।
मुकदमा ।

बादक—(सं पुं) वादक । शास्त्रार्थ
करोता ।

बाजा बजानेवाला । वाद या
शास्त्रार्थ करनेवाला ।

बादा—(सं पुं) कथा । अतिशय ।
वचन । इकरार ।

बादानुवाद—[सं पुं] उर्क-विउर्क ।
वाद-विवाद ।

बाद्य—(सं पुं) वाद्य यन्त्र । वाजना ।
बाजा ।

बानप्रस्थ—(सं पुं) वानप्रस्थ ।

ग्रहन्ती अथ ऋषि कवि पाण्डित्य
देखने छिन्न कान्धे शक्ति
बोवा धर्म ।

भारतीय जीवन के चार आश्रमों
में से तीसरा आश्रम जिसके
अनुसार पचास वर्ष के होने पर
लोगों के वन में जाकर रहने का
विधान है ।

बानर—(सं पुं) बानर ।
बन्दर ।

बापस—(वि) उलटि अश । निज
ठाईलेन उलटि अश । उलटोटावा,
घुमाई दिया ।

लौटकर फिर अपने स्थान पर
आया हुआ । लौटने का कार्य ।

बापसी—(वि) फिर्ति अश । उलटि
अश ।

लौटाया या फेरा हुआ । जिसमें
वापस आने का परिणय भी
जुड़ा हुआ हो ।

[सं स्त्री] प्रत्यावर्तन ।

लौटने या लौटाने की क्रिया या
प्रत्यावर्तन ।

बाम—[वि] बाँपिने । प्रतिकूल,
बाम । टेरा । बैका । विरुद्ध ।
बायाँ । प्रतिकूल । डेरा ।

वामन—(वि) वाङ्मा माहुर । गम् ।
बीना । छोटा ।

[सं पुं] विष्णु पञ्चम अवतार ।
विष्णु का एक अवतार ।

वाग-मार्ग—[सं पुं] तार्किक मत
अथवा धर्म ।
तात्रिक मत या धर्म ।

वामा — (सं स्त्री) श्री । शर्मा ।
औरत । दुर्गा ।

वामावर्त्त—[वि] वाङ्मतेन घुमा ।
बाईं ओर घूमता हुआ ।

वायस—(सं पुं) काडेरी ।
कोआ ।

वायु—(सं स्त्री) बतार ।
हवा ।

वार—(सं पुं) श्राव । वांश ।
जय । वाव । पाव । आवात ।
आक्रमण ।

द्वार । रुकावट । अवसर । सप्ताह
का कोई दिन । किनारा । चोट ।
आक्रमण ।

[प्रत्य] क्रमाश्रुताव । क्रमे ।
क्रमां ।

क्रमसे । सिलसिलेवार । के अनुसार ।

वारण—[सं पुं] वारण । निवेश ।
शङ्ख ।

निषेध । रुकावट । हाथी ।

वारदात—[सं स्त्री] डीबण अथवा
डवानक दुर्घटना । मार धर ।
भीषण या विकट दुर्घटना । मार-
पीट ।

वारना—[क्रि स] जगर्पण कर्ता ।
गंठाई दिया ।

निष्ठावर करना ।

(सं पुं) उत्सर्ग । जगर्पण ।

निष्ठावर । उत्सर्ग ।

वार-नारी, वारवधु, वारांगना—
[सं स्त्री] वेश्या ।

वेश्या ।

वार न्यारा—[सं पुं] जगधान ।
योगांग । जगर्पण कर्त्तृ शेष ।

किसी बात का पूरी तरह से
निपटारा ।

वाराह—(मं पुं) बवा । गौशवि ।
विष्णु अवतार विशेष ।

सूअर । विष्णु का अवतार ।

वारि—(सं पुं) पानी ।
पानी ।

वारिचर—(मं पुं) माह ।
मछली ।

वारिज—(सं पुं) पट्टन । गंध ।

गोण ।

कमल । शंख । सोना ।

वारिद्र—(सं पुं) लेश ।

बादल ।

वारिधि, वारीद्र (शशी)—(सं पुं)

गांगर ।

समुद्र ।

वारिस—(सं पुं) उडवाधिकावी ।

उत्तराधिकारी ।

वारुणो—[सं स्त्री] मय ।

मदिरा ।

वार्त्ता—(सं स्त्री) शृङ्गाळ, विषय,

कथा, श्रुतना ।

वृत्तान्त । विषय । बात-चीत ।

वार्त्ताज्ञाप—(सं पुं) कथा-बतवा ।

बातचीत ।

वाला—(प्रत्य) कर्तृष्व, श्रामीष्व थका

आदि श्रुतक प्रताय ।

कर्तृत्व, स्वामित्व, सम्बन्ध आदि

का सूचक प्रत्यय ।

वालिद्र—(सं पुं) पिता ।

पिता ।

वावैला—[सं पुं] विलाप, शशा-

काव गोलशाल ।

विलाप । कोलाहल ।

वाव्य—(सं पुं) भाग ।

भाग ।

वास—[सं पुं] वाग, निवाग,

थका घर ।

रहना । स्थान । घर ।

(सं स्त्री) गोकु ।

गंध । बू ।

वासक, वासर—[सं पु] दिन,

मना कहना प्रथम बाति थका

कोठालि । वाशक गच्छ अथवा

इयाव छुटि ।

दिन । वरवधू के सुहाग रात

मनाने का कमरा । वासर ।

अडूसा नामक वृक्ष और उसका

फल ।

वासव—[सं पु] इच्छ ।

इन्द्र ।

वास्ता—[सं पु] गश्क, आकर्षण ।

संबंध । लगाव ।

वास्तु—(सं पुं) घर, अष्टोक्तिका ।

घर । इमारत ।

वास्तुकला—(सं स्त्री) घर, महल

यादि गच्छ कला वा शिल्प ।

वास्तु या मकान, महल आदि

बनाने की कला ।

वास्तुकार—(सं पुं) अष्टोमिका,
वा पकी शब गाछोंता ।

इमारतें आदि बनाने वाला ।

वास्ते—[अव्य] काबण, निमित्ते ।
लिये । निमित्त । कारण ।

वाह—[वि] वाहक ।

वहन करने वाला ।

[अव्य] प्रशंसा, आश्चर्या,
दृष्टा अथवा तिरस्कार सूचक शब्द ।

प्रशंसा, आश्चर्य, दृष्टा या
तिरस्कार सूचक शब्द ।

वाइक—[वि] वाहक, कोने
वस्तु वै निर्भूत ।

घोष होने या खींचने वाला ।

वाइन—(सं पुं) यान-वाहन, गाश्ह
वा कोने वस्तु कटिवा यान
वा जम्बु ।

सवारी । वह चीज जिसके आधार
पर कोई चीज कहीं पहुँची हो ।

वाह-वाही—[सं स्त्री] प्रशंसा
करा कार्य ।

साधुवाद । लोगों की प्रशंसा ।

वाहित—[वि] बहन करा, कटोबा ।

वहन किया हुआ । बिताया हुआ ।

वाहिनी—(सं स्त्री) सेना ।
सेना ।

वाहियात—(वि) चार्ज, अपचार,
कायत नहा, बेग्रा ।

व्यर्थ । फिजूल । बुरा ।

विंदु (सं पुं) अति सूक्ष्म कणा
वा टोपा, बिन्दु, अक्षराब । शृङ्ख ।

तरल पदार्थ की बूँद । बिंदी ।

अनुस्वार । शून्य ।

वि—(अव्य) उद्भव, नथका, नाना,
विपरीत, बेग्रा, मल, विषम
आदि सूचक उपसर्ग ।

एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर
विशेष, अनेक रूपता, निषेध या
विपरीतता आदि अर्थ-सूचित
करता है ।

विकच—(वि) अशुद्धि, छुनि
नथका ।

खिला हुआ । जिसके कच या
बाल न हो ।

(सं पुं) छुनिब कोछा ।
बालों की लट ।

विकट—[वि] उग्ररुचि, कठिन,
हर्षम, देखिले भय लगा ।
भयंकर । कठिन । दुर्गम ।

विकराल—(वि) भौषण, भयावह ।
भीषण । 'हरावना ।

विकर्षण - [सं पुं] आकर्षण,
शक्तिव निदिशा, विकर्षण ।
आकर्षण । खिचाव । न रहने
देना ।

विकल—(वि) विकल, ब्याकुल,
अशांति, अगम्यपूर्ण, विकृत ।

जिसके मनमें शान्ति न हो ।
जिसमें 'कला' न हो । अधूरा ।

विकलता—[सं स्त्री] ब्याकुलता,
कला-हीन अवस्था ।
व्याकुलता । कला हीनता ।

विकलांग—(वि) अक्षयोन, शून्य ।
खंडित अंग वाला ।

विकल्प - (सं पुं) अश्वेन एटा,
विकल्प ।

एक कल्पना के बाद उसके विरुद्ध
या उससे मिलती जुलती की
जानेवाला दूसरी कल्पना । वह
अवस्था जिसमें सामने आये हुए
कई विषयों या बातों में से कोई
एक विषय या बात अपने लिये
चुनने का अधिकार रहता है ।

विकसना—[क्रि अ] फूल खिल
होना, अंकुरित होना, आनन्तित
होना ।

विकसित होना । (कलियों आदि
का) खिलना । प्रसन्न होना ।

विकसित—(वि) अंकुरित, भूकृतित,
आनन्तित ।

जिसका विकास हुआ हो । खिला
हुआ ।

विकार—(सं पुं) परिवर्तन, गलन
होना अवस्था, मनव अवस्था ।
[वस्तु का] बिगड़ना । दोष ।
खराबी । मनमें उत्पन्न होने वाला
कोई प्रबल भाव या वृत्ति ।

विकारी—[वि] परिवर्तनशील,
मायावे आश्रित, बेधा ।
जिसमें किसी प्रकार का विकार
या बिगाड़ हुआ हो । खराब,
जिसके मनमें राग द्वेष आदि
विकार उत्पन्न हुए हो ।

विकास—(सं पुं) अदर्शन, अकाश,
विस्तार, अंगार, कोटोना वस्तु
निखर गाथावन अवस्थाव पत्रा
वांति देग पूर्णता आश होना
कार्य । विकास ।
किसी वस्तु या बात का बढ़कर
कुछ नया, बड़ा अथवा अधिक
प्रभावक रूप धारण करना ।
फैलाव । वह प्रक्रिया जिससे कोई

वस्तु अपनी सामान्य अवस्था से बढ़ती हुई पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है।

विकिरण—[सं पुं] जिं चरति होरा, बेलि दिया, किरण गमू-हक एक ठाईत गोठोरा।

बहुत सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना या होना।

विलराने की क्रिया या भाव।

विकीर्ण—(वि) चाबिउपिने जिं च-रित टैह थका, बिच्छुत, अगिद्ध।

चारों ओर बिखरा या फैला हुआ। प्रसिद्ध।

विकृत—(वि) विकृत शब्दाव परिवर्तन होरा, नबम कप वा गुण लोरा।

बिगड़ा हुआ। जिसका रूप बिगड़ गया हो।

विकृति—[सं स्त्री] विकार, विकृत कप, मनब क्कोड।

विकार। किसी वस्तुका बिगड़ा हुआ रूप। मन का क्षीम।

विक्रम—(सं पुं) पवाक्रम, अताप, शक्ति।

पराक्रम। ताकत।

विक्रेता—(सं पु) बेचोता। बेचनेवाला।

विक्षिप्त—(वि) विक्रिथ, जिं चरति होरा; बिगपि थका।

फैला, बिखरा या छितराया हुआ।

(सं पुं) पागल।

पागल।

विक्षुब्ध—[वि] अतिशय क्रुद्ध होरा खन, चकल, अश्विब।

जो विशेष रूपसे क्षुब्ध हुआ हो।

विक्षेप—(सं पुं) निष्केप, नलि बाबि पेलोरा कार्य। मनन चकलता।

ऊपर या इधर फेंकना। मनका इधर उधर भटकना। विघ्न।

विक्षोभ—[सं पुं] मनन चकलता, अश्विबता।

मनकी चंचलता। उथल-पुथल।

विगत—[वि] अतीत, पाब टैह थोरा। बहित। बकित।

बीता हुआ। रहित।

विग्रह—[सं पुं] दूर अथवा पृथक् कवा। बिभाग। काजिया-पेहाल,

आकृति। देवताव मूर्ति।

दूर या अलग करना। विभाग।

लड़ाई भगड़ा। आकृति। मूर्ति।

विघटन—(सं पुं) भाङ्ग। छूर्ण कवन। घटित करनेवाले या संयोजक

अंगोंको अलग अलग करना ।
 बिगाड़ना । नष्ट करना ।
विधूर्णन—[सं पुं] मूब धूबोरा ।
 धूबण धोरा ।
 चक्रर खाना ।
विचक्षण—(वि) पार्श्व । अम्भ ।
 उडम । देदीप्यामान ।
 चमकता हुआ । निपुण । पंडित ।
विचयन—(सं पुं) बिचरा । तालाच ।
 तलाश । खोज ।
विचरण—(सं पुं) इकाले-गिकाले
 घूबा-फिना कार्या ।
 चलना । घूमना फिरना ।
विचरना—(क्रि अ) कूबा-चका कबा ।
 कूबा ।
 चलना फिरना । घूमना ।
विचलना—[क्रि अ] बिचलित होरा,
 लबचर होरा ।
 बिचलित होना ।
विचार—(सं पुं) अह्नग्नान । गँटा-
 मिश्र बिबेचना । गोश ।
 शोककर्मणार लोश आरु निर्णय ।
 संकल्प । भावना । किसी बातके
 सब अंग देखना या सोचना-

समझना । मुकदमें की सुनवाई
 और फैसला ।
विचारना—(क्रि अ । क्रि स) बिचार
 कबा । गोश । खबर कबा ।
 बिचावि अना ।
 विचार करना । पूछना ।
 पता लगाना ।
विचारवान, विचारशोल—(सं पुं)
 डालपरे बिचार कबा शक्ति थका
 लोक । विटायशूल ।
 जिसमें अच्छी तरह विचार करने
 की शक्ति हो ।
विचारी—(सं पुं) बिचारक ।
 म्भट । धूवि-कूबोरा ।
 वह जो विचार करता हो । लंपट ।
 धूमने-फिरनेवाला ।
विचिकित्सा—(सं स्त्री) गलेश ।
 अनिच्छिता । डूल ।
 सन्देह । अनिश्चय । भूल ।
विचेतन—[वि] मूर्छा । अज्ञान ।
 बेहोश ।
विछोह—[सं पुं] वियोग । बिबह ।
 वियोग । विरह ।
विजन—[वि] निर्जन । एकाङ्क ।
 जिसमें जन या मनुष्य न हों ।
 एकान्त ।

विजय-यात्रा—[सं स्त्री] अग्र-यात्रा ।

काटोवाक अग्र कबिब बवे
कबा यात्रा ।

किसी को जीतने के लिये की
जानेवाली यात्रा ।

विजया—(सं स्त्री) दुर्गा । छन्द

विजय । विजया दशमी । भा० ।

दुर्गा । एक छन्द । विजया दशमी ।

भाग ।

विजित—[वि] पराजित ।

जीता हुआ ।

विजेता—(वि) विजयी ।

विजयी

विज्ञ—(वि) जानी । ज्ञान वृद्ध ।

निगूण ।

जानकार । बुद्धिमान । विद्वान् ।

विज्ञप्ति—(सं स्त्री) सूचना । जाननी ।

विज्ञापन ।

सूचना । विज्ञापन ।

विज्ञापित—(वि) जाननी दिया होना ।

जिसकी सूचना दी गयी हो ।

विट—(सं पुं) कायुक । बेध्यागङ्ग ।

चट्ट । चबाई-ठिकिठिक विट ।

कायुक । चालाक । विष्ठा

(पक्षियों की)

विटप—[सं पुं] गङ्ग ।

वृक्ष ।

विदुम्बना—(सं स्त्री) छलना । भा०,

इतिकिं । कांकि । उपहास ।

नैराश । ठेकाई कबा ।

किसीको चिढ़ाने या उसको तुच्छ

ठहराने के लिये की जानेवाली

उसकी नकल । उपहास । दंभ ।

विह्वरना—[क्रि स] जिँ चबित है

योरा । चेदेनि-डेदेनि होरा

पगोरा ।

तितर-बितर होना । भागना ।

(क्रि स—विह्वरना)

विद्वान्—[सं पु] श्रेष्ठ ।

बिलास ।

वितंडा—(सं स्त्री) निखर मठ

बाथिबटेल कबा मिष्टा डर्क ।

गालि । तिरकाव ।

दूसरों की बातों की उपेक्षा करते

हुए अपनी बात कहते चलना ।

व्यर्थ का विवाद ।

वित्त—[वि] जना वृद्ध । चट्ट ।

जाननेवाला । चतुर ।

[सं पुं] धन । टका ।

वित्त ।

वितति—(सं स्त्री) विलास ।

विस्तार ।

वितनु—(वि) शरीर शीन । अति
पूञ्ज । निःशर ।

बिना तन या शरीर का । बहुत
छोटा ।

[सं पुं] कामदेव ।

कामदेव ।

वितरक—(सं पुं) विलनीय ।

बाँटनेवाला ।

वितरण—[सं पुं] दिया । भगाई
दिया । बिगाई दिया ।

देना । बाँटना ।

वितरित—(वि) भगाया अथवा

बिगाया होया । विडवित ।

बाँटा हुआ ।

विहान—[सं पुं] विस्तार । डाँडव
तझू । यज्ञ ।

विस्तार । बड़ा तम्बू या खेमा ।
यज्ञ ।

वितु—(सं पुं) धन , टका ।

वित्त ।

वित्त—[सं पुं] धन सम्पत्ति । आर्थिक
अवस्था । विड ।

धन । सम्पत्ति । आर्थिक प्रबंध ।

विस्तीर्ण—(वि) अर्ध गवहीर ।

वित्त सम्बन्धी ।

विथराना—[क्रि स] विग्रहोपासना ।

गिँछविड करवा ।

फैलाना । छितराना ।

विधा—(सं स्त्री) वाधा । दूःख ।

व्यथा ।

विदग्ध—(सं पुं) बगिक । विहान ।

गावधान । अतिशय पागर्भ ।

अठवागिरे पकि उठता । अन्ध ।

रसिक । विद्वान् । होशियार ।

दक्ष । निपुण । जठराग्निसे पका

हुआ । सुन्दर ।

विदरना—[क्रि अ] फला । छिंवा ।

फाँट केला ।

फटना ।

[क्रि स] फला ।

फाड़ना ।

विदलन—(सं पुं) दला, पिशा

अथवा दमन करवा । काँधी, फला,

नष्टे करवा ।

रौंदने, मलने, दबाने आदि की

क्रिया या भाव । फाड़ना । नष्ट

करना ।

विदा—(सं स्त्री) अज्ञान, विनाश,

बोझाव अश्रुवति ।

प्रस्थान । जाने की अनुमति ।

(वि) विदाय, यात्रा ।

प्रस्थित । रवाना ।

विदाई—[सं स्त्री] विदाय, यात्रा
समयत दिया टका पछा, यात्रा
समयत शुभकामना जनार्दन बावे
माझह गोटे खोला कार्य ।

विदा होने की क्रिया या भाव ।

प्रस्थान करने के समय दिया

• जानेवाला धन । किसी के प्रस्थान
करने के समय उसके प्रति शुभ
कामना प्रकट करनेके लिये लोगो
का एकत्र होना ।

विदारक—(वि) विदीर्ण करनेवाला ।
फाड़नेवाला ।

विदारना—(क्रि स) विदीर्ण करना, फटना ।
फाड़ना ।

विदित—(क्रि स) ज्ञात, जना ।
ज्ञात ।

विदीर्ण—(वि) विदारण करना,
फटना, छिना ।
फाड़ा हुआ ।

विदुषी—(सं स्त्री) विदुषी, शिक्षिता,
विद्वान्मती ।
विद्वान् स्त्री ।

विदूषक—[सं पुं] बह्वा, मरुवा,
विदूषक ।

मसखरा ।

विद्—(वि) जनार्दन लोक ।
जानकार ।

विद्व—(वि) विद्वान्, आघात पोता,
श्रवविद्व ।

छेदा हुआ । घायल । सटा हुआ ।

विद्युत्—(सं स्त्री) बिजली ।
बिजली ।

विद्रुम—[सं पुं] प्रवाल मृत्तिका ।
मूँगा । प्रवाल ।

विद्वेष—(सं पुं) शत्रुता, हिंसा
भाव, विरोध ।

शत्रुता । वैर । विरोध

विधना—(सं स्त्री) श्रवणश्रिया,
भविष्य, अदृष्ट, देव, जन्मा ।
विश्व का विधान करनेवाली
शक्ति । होनी ।

विधवा—(सं स्त्री) विधवा ।
वह स्त्री जिसका पति मर चुका
हो ।

विधान—(सं पुं) विधि, नियम,
कार्य करार दिशा वा व्यवस्था ।
किसी कार्य का आयोजन ।

अवस्था । प्रणाली । विधि ।
कानून ।

विधायक—[वि] वावश्चाकारी,
नियमकारी ।

विधान करनेवाला । जिसके द्वारा
कोई विधान या आज्ञा दी जाय ।

विधि—[सं स्त्री] नियम, वावश्चा,
कार्यार प्रणाली, वावश्चा शास्त्र,
अकृति, नियति, ज्ञेय, आदेश-
वर्क क्रियाव रूप, अनुष्ठान ।

प्रणाली । व्यवस्था । शास्त्रीय
विधान । कानून । प्रकृति या
नियति । भाति । क्रिया का वह
रूप जिसमें किसी को कोई काम
करने का आदेश दिया जाता है ।
[सं पुं] ज्ञाता, विधाता ।
ब्रह्मा ।

विधिज्ञ—(सं पुं) विधि-विधान
जाना लोक, आयेनछ ।

विधि का ज्ञाता । कानून जानने
वाला ।

विधिवत्—(अव्य) नियमानुगति,
विधिनुते ।

विधि या नियम के अनुसार ।
उचित रूप से ।

विधुतुद—[सं पुं] छत्तक शब्दोंता,
आग करवाता, बाह ।

चन्द्रमा को पकड़नेवाला । राहू ।

विधु—[सं पुं] छत्त, ज्ञाता ।
चन्द्रमा । ब्रह्मा ।

विधुर—[सं पुं] शूरी, बाकूल,
अगमर्थ, विपद्गीक ।

दुखी । व्याकुल । असमर्थ । वह
पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो ।

विधेय—(वि) नियम अनुगति
कविवलगैश, शास्त्र गमाति,
पावलगैश ।

किये जाने के योग्य । जिसका
विधान होने को हो ।

(सं पुं) कोदना वाक्यात
'कृष्ण' लै उद्देश्य कवि यि कथा
कोदा द्य ।

वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा
किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा
जाता है ।

विधेयक—[सं पुं] आयेनव
गमाविना ।

कानून का मसौदा । (अं-बिल)

ध्वंसक—(वि) नाशकर्ता ।
नाश करनेवाला ।

बिनस—(वि) बिनस, बिनयी ।

भुका हुआ । नम्र ।

बिनम्र—(वि) बिनयी, नम्र, विनीत ।

बहुत विनीत या नम्र ।

बिनय—[सं स्त्री] नम्रता, भिक्का, भिनति ।

नम्रता । शिक्षा । प्रार्थना ।

नीति ।

बिनरवर—(वि) गदाय नथका, अनिष्ट, नाशवान ।

नाशवान । अनित्य ।

बिनसना—(क्रि अ) नष्ट होना-वा कना ।

नष्ट होना ।

बिनायक—(सं पुं) गणेश ।

गणेश ।

बिनाशक—(वि) नाश वा नष्ट करवाता ।

नष्ट करनेवाला ।

बिनाशन—[सं पुं] क्षय कना वा नष्ट कना कार्य ।

नष्ट करना । संहार करना ।

बिनासना—(क्रि स) नष्ट कना ।

क्षय कना । नाश पेटना ।

नष्ट करना । मार डालना ।

बिनिमय—(वि) बदल । गमन ।

बिनिमय ।

एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना । परिवर्तन ।

बिनिमयत्रण—[सं पुं] निमयण उठाई लोवा ।

निमयण हटाया या दूर किया जाना ।

बिनियोग—[सं पुं] निमोग । उप-योग । वैदिक क्रिया कर्मण्ड

मन्त्र अयोग । धन खटोवा ।

किसी वस्तु का किसी काम में लाया या लगाया जाना । उप-

योग । वैदिक कृत्योंमें होनेवाला मंत्र का प्रयोग । व्यापारमें पूँजी

लगाना ।

बिनियोजक—(वि) बिनियोग करवाता, व्यवसायक धन खटोवा लोक ।

बिनियोग करनेवाला । व्यापारमें पूँजी लगानेवाला ।

बिनिवर्तन—[सं पुं] दिया आदेश वा वज्र, पाछ कना अन्तार अथवा

अचलित कोना वज्र उठाई लोवा वा उडटाई दिया ।

दी हुई वस्तु या आज्ञा, किया हुआ प्रस्ताव अथवा प्रचलित की

हुई चीज लौटा देना ।

विनिवर्तित—(वि) उठाई लोदा ।
वापस लिया हुआ । (अं-विद्वान)

विनोद—(सं पुं) बं धेमानि ।
आश्वास । बहन् । परिहास ।
निन्ना । धेयलोया ।

तमासा । क्रीडा । परिहास ।
प्रसन्नता ।

विन्यास—[सं पुं] स्थापन । यथा-
ज्ञानत ठिक भावे बन् । बन् ।
स्थापन । यथास्थान या ठीक
क्रमसे लगाना । जड़ना ।

विपंची—(सं स्त्री) वीणा विशेष ।
वाही ।

एक प्रकारकी वीणा । बांसुरी ।
[वि] स्वरणी मात ओलोदा बन् ।
जिससे मनोहर शब्द निकले ।

विपथ—(सं पुं) कूपथ । विभ्रुति
बांटे ।

बुरा या खराब रास्ता ।

विपन्न—[वि] विपन्नत पत्र । आर्त ।
दुःखी । आर्त ।

विपर्यय—[सं पुं] विरुद्ध । ओलोटा ।
अमिल । वातिक्रम । विपरीत ।
डूना । दोष । गोलमाल ।
इधर उधर या आगे पीछे होना ।

व्यतिक्रम । क्रम परिवर्तन भूल ।
गलती । गड़बड़ी ।

विपर्यय—[वि] विपर्यय होदा
लोक । उचित वा मान्य बुझि
नेभावि नाकट कर्वा कथा वा
बन्तु ।

जिसका विपर्यय हुआ हो । जिसे
ठीक या मान्य न समझकर उलट
या रद्दकर दिया गया हो ।

विपर्याय—(सं पुं) विपरीतार्थक
शब्द ।

विरोद्धार्थक शब्द ।

विपाक—[सं पुं] परिपक्व होदा ।
पूर्णता पोदा, फल, दुर्दृष्टी, गकट ।
परिपक्व होना । पूरी अवस्था को
पहुँचना । फल । दुर्दृष्टा ।

विपिन—[सं पुं] वन । शरि ।
बागिछा ।

वन । जंगल । बाग ।

विपुल—(वि) विस्तृत । अनेक ।
अतिशय । डांडव । बहल । विपुल ।

संख्या परिमाण आदिमें बहुत
अधिक ।

विप्र—(सं पुं) वाम्पु ।
ब्राह्मण ।

विप्रलम्भ—(सं पुं) काजिया ।
विच्छेद, विवह । विद्यागं शृङ्गाव,
काकि । अत्रावणा ।

प्रिय वस्तु या व्यक्तित का न
मिलना । वियोग । वियोग
शृंगार । घोखा ।

विप्रलब्ध—(वि) अत्रावित ।
कायना कनि नोपोरा वस्तु ।
जिसे चाही हुई वस्तु न मिली हो ।

विवुध—(सं पुं) छल । ज्ञान ।
विधान । बुद्धयुक्त । देवता ।
चन्द्रमा । विद्वान् । बुद्धिमान् ।
देवता ।

विवुधाकर—[सं पुं] ज्ञान ।
चन्द्रमा ।

विवुधेश—[सं पुं] ईश्वर ।
इन्द्र ।

विभक्त—[वि] अंश कर्ता । भाग
कर्ता ।
विभाजित । अलग किया हुआ ।

विभव—[सं पुं] धन । ऐश्वर्य—
विभूति ।
धन । सम्पत्ति । ऐश्वर्य ।
अधिकता ।

विभा—[सं स्त्री] लोचि । अकाश ।
व्याप्ति ।

दीप्ति । चमक । प्रकाश ।

विभाकर—[सं पुं] शूर्य । जूहे ।
बज्रा ।
सूर्य । अग्नि । राजा ।

विभाजक—[वि] विभाग वा अंश
कर्त्ता । विनयी ।

विभाग या टुकड़े करनेवाला ।
बाँटनेवाला ।

विभाजन—[सं पुं] विभाजन ।
भाग कर्ता ।
विभाग करना । बाँटवारा ।

विभाव—(सं पुं) कोनो व्यक्ति
अश्वत्थ वृत्ति, हागा आदि श्वाश्री
भाव आश्रित कर्ता तत्त्व वा कथा ।
चिनालोक । शिव ।

वे बातें जो किसी व्यक्तिमें रति,
हास आदि स्थायी भावों को
जाग्रत या उद्दीप्त करती हैं ।
परिचित व्यक्ति । शिव ।

विभावना—(सं स्त्री) गठिक वा
मूठेक अश्वत्थ कर्ता । गतिशाय
अर्थान्तराव विशेष ।
किसी बात या वस्तुकी विशिष्ट

रूपसे भावना या कल्पना करना ।

एक अर्थालंकार ।

विभावरी—[सं स्त्री] बाढि ।

रात ।

विभीषिका—(सं स्त्री) भय । भय

छटनावा बह ।

भयभीत करना । भयानक काड

या दृश्य ।

विभु—[वि] प्रबलशब्द । सर्वव्यापी ।

सर्व व्यापक । बहुत बड़ा, महान ।

सदा बना रहनेवाला ।

[सं पुं] प्रबलशब्द । जेश्वर ।

परमात्मा । ईश्वर ।

विभुता, विभूति—(सं स्त्री) देवदेव,

ऐश्वर्य । ऐश्वर्यिक शक्ति ।

जगन्निद्र आरु जगन्नाथीय गौड

शश भय । प्रभाव, लक्ष्मी, शक्ति ।

अधिकता । वैभव । सम्पत्ति ।

दिव्य या अलौकिक शक्ति ।

महा पुरुष शिव या सन्यामियो

के अगमें लगानेकी राख या भस्म ।

लक्ष्मी । मृष्टि ।

विभूषण—[सं पुं] अलङ्कार,

धून ।

गहना । अलंकार ।

विभेद—(सं पुं) श्रद्धा ।

अन्तर । अनेक भेद । विशेष रूप

से किया हुआ भेद या अलगवा ।

भेद न करना । छेदना या बेधना ।

विभोर—(वि) विडाल, मग्न, मूर्ख,

निष्कल आश्रय ।

विह्वल । मग्न । मस्त । मत्त ।

विभ्रम—[सं पुं] वन, वाङ्मय,

जगन्मय ।

भ्रान्ति । सन्देह । किसीके भावको

भी भ्रमसे गलत समझना ।

विमन—[वि] मन-मवा, आनन्द

हीन, विमर्श ।

अनमना । उदास ।

विमर्श (र्ष)—(सं पुं) विमन, मन

मवा, दू-शक्ति, अंगीका, आलो-

चना, अवागर्श ।

विचार या विवेचन । आलोचना ।

परीक्षा । जांच । परामर्श ।

विमल—[सं पुं] निर्मल, निका,

अनिष्ट, शुद्ध ।

स्वच्छ । पवित्र । सुन्दर ।

विमता—(सं स्त्री) माही आइ ।

सौतेली मां ।

विमान—[सं पुं] वायु-यान,

आकाशीयान, मवा वायुशक्ति-

साहे निग्रा यतन ।

वायुयान । मरे हुए वृद्ध मनुष्य
की अरथी ।

विमानवेधी-(सं स्त्री) डेवरु आकाश
यानदेखे खुली वा बोया भावि
पठियाव पवा कामान ।

एक प्रकारकी तोप जो उड़ते हुए
हवाई जहाजोंपर गोली चलाती है

विमुक्त—[वि] स्वतन्त्र, मुक्त ।
स्वतंत्र । स्वच्छन्द । बचा या
छूटा हुआ । व्यक्त ।

विमुख—[सं पुं] मुखशून्य,
विबुध, पबाङ्ग, मुख, आश्च नथका,
आन एकात्म मुख कबा, निबान
कवि ओलाटाई पठेबा,
अनुपस्थित ।

जिसे मुँह न हो । विरत । उदा-
सीन । विरुद्ध । अप्रसन्न । निराश ।

विमोचन—(सं पुं) मुक्त, मुक्त
कबा, मुक्तिले होबा ।

बंधन आदिसे छूटा हुआ । मुक्त
होना ।

[वि] मुक्त करवाता, निवाचन
करवाता ।

मुक्त करनेवाला ।

वियुक्त—(सं पुं) वियोग होबा,
पृथक्, वक्षित ।

जिसका किसीसे वियोग हुआ हो।
अलग । रहित ।

वियोग[सं पुं] वियोग विच्छेद, विरह,
मनस्य लोकप पंवा आँतव है
थका अदृष्टा, कम कबा, घटोबा।
किसीसे बिछुड़ने या दूर होनेकी
क्रिया, अवस्था या भाव । विरह ।
अलग होनेका दुःख । घटाया या
कम किया जाना ।

वियोगान्त—(वि) दूःखपूर्ण अस्त याव ।
जिसका अन्त या पर्यवसान
दुःखपूर्ण हो ।

वियोगी—(वि) विरहो ।
विरही ।

विरचि—[सं पुं] जन्मा ।
ब्रह्मा

विरक्त—(वि) आगच्छि नथका,
उपागौन । अग्र ।

विमुख । उदासीन । अप्रसन्न ।

विरक्ति—(सं स्त्री) विरक्ति । अना-
गच्छि । निष्पृष्टा, बेछाव, आभनि ।
विराग । वैराग्य । उदासीनता ।
अप्रसन्नता ।

विरचित—(वि) निमित्त ।
निमित्त ।

विरत—(वि) काख ।
विमुख । निवृत्त ।

विरति—[सं स्त्री] विरत होवा
कार्य ।
विरत होनेकी क्रिया या भाव ।
कार्य, पद, सेवा आदिसे अलग
होना ।

विरमना—(क्रि अ) मन लगोवा,
काबो गैते कबवात आगच्छ
होवा । थका ।
किसीसे या कहीं मन लगाना ।
सकना ।

विरल—(वि) सेबेडाटेक थका,
पावटैल टान, पाउल, निजान
ठाई, दुर्लभ ।

दूर दूर पर का भाव । स्थित ।
दुर्लभ ।
कम । निर्जन ।

विरह—(सं पुं) विद्याप, श्रिय
जनव पंवा विच्छेद ।
किसी से अलग या रहित होने
का भाव ।

विरही—(वि) विरही ।
वियोगी ।

विराग—[सं पुं] उदासीन
भाव, वैराग्य ।
रुचि या इच्छा का अभाव ।
वैराग्य ।

विराजना—[क्रि स] डूबित होवा,
विबाध कब, वहा, विद्यमान ।
शोभित होना । बैठना । विद्य-
मान होना (आदर-सूचक) ।

विराजमान—(वि) डूबित,
उपस्थित ।
शोभित । उपस्थित । बैठा हुआ ।

विराम—(सं पुं) थका । विश्राम ।
रुकना । विश्राम ।

विरासत—[सं स्त्री] उद्बधाधिकार ।
उत्तराधिकार ।

विरुद्ध—(सं पुं) यशवर्णन, यश ।
अशक्ति ।
यश-वर्णन । प्रशस्ति । यश ।

विरुदावली—(सं स्त्री) अशशंगा,
गुणावली ।
प्रशंसा । गुणावली ।

विरचन—[सं पुं] गीत कारवा
उषध, छुलाप, उलोवा ।
दस्त लानेवाली दवा । जुलाब ।
निकालना ।

विरोधाभास—(सं पुं) विरोधास
आभास था।

दो बातोंमें दिखाई देनेवाला
विरोध ।

विलंब—(सं पुं) पलम् ।
देर ।

विलंबना—[क्रि अ] पलम् कर्ना,
उलम् थका, आश्रय लोदा,
थमा ।

देर करना या लगाना । लटकान ।
सहारा लेना, रुकना ।

विलाक्षण—(वि) अछूत । असाधारण ।
अदभुत् । असाधारण ।

विलग—[वि] बेलग, पृथक् ।
अलग ।

विलगाना—[क्रि अ क्रि स] बेलग
होदा, पृथक् होदा वा कर्ना ।
अलग या पृथक् होना या करना ।

विलय(न)—(सं पुं) विलय, ध्वंस,
नाश, लीन होदा, कोनो
बाह्य आन अथनब लगत लग
लगा ।

लय या लीन होना । एक वस्तु
का दूसरी वस्तुमें मिलकर समा
जाना । विघटित होना । किसी

राज्यका दूसरे राज्यमें मिलकर
एक हो जाना ।

विलाप—(सं पुं) विननि । विलाप ।
रो कर दुःख प्रकट करना ।

विलीन—(सं पुं) अदृशा । अदृष्ट
मिश्रि होदा । एके लग
होदा ।

अदृश्य । मिला या घुला हुआ ।
छिपा हुआ ।

विलोकना—[क्रि स] देखी, चोदा ।
देखना ।

विलोडन—[सं पुं] आलोडन ।
गहन । गङ्गालन ।
आलोडन । मथना ।

विलोम—[वि] विपरीत ।
विपरीत ।

[सं पुं] उपबब पदा तललै
अश क्रम ।

ऊपरसे नीचे आनेका क्रम ।

विचर—(सं पुं) कूटा, विक्रा, कौटे,
कुश । गौत ।

छिद्र । दरार । गुफा । कंदरा ।

विचर्तन—[सं पुं] पविक्कमा, चाविउ-
पिने घूबा, घूबा-किबा । अद-
हाश्व, पविचर्तन, क्रमविकान ।

चक्रर लगाना । घूमना-फिरना ।
परिवर्तित अवस्था ।

विशरा—[वि] बुद्धि हेबोरा,
विबुद्धि, विवश ।

लाचार । लाचार किया हुआ
(व्यक्ति)

विवसन, विवस्त्र—[वि] नाडठ ।
नंगा ।

विवादास्पद—(वि) विवाद झुल,
काझिया लगा ।

जिसके विषयमें विवाद हो ।
विवाद-युक्त ।

विविकन—[वि] विडड । निबले
थका वा निजानत होरा ।
निबले गोपनीय भावे होरा
किसी से अलग या पृथक किया
हुआ । एकान्तमें रहने या होने
वाला । एकान्तमें कुछ गुप्त रूप
से होनेवाला ।

(सं पु') अकजशबोरा । निबल
निजान स्थान ।
अहेलापन । एकान्त स्थान ।

विवृत—[वि] विडानित । झुल ।
विवरण, व्याख्या आदिरे स्पष्ट
कबा ।

विस्तृत । खुला हुआ । विवरण,
व्याख्या आदिके द्वारा स्पष्ट
किया हुआ ।

विवृति—(सं स्त्री) विवृति । बड्ढना
स्पष्ट कटपे कोरा कथा ।

बहु कथन या वक्तव्य जो अपने
किसी कार्य या बातके स्पष्टी-
करण के लिये हो ।

विवृत—[वि] वृषण कोरा, डेनटि
यश ।

घूमता हुआ । लीटा हुआ ।

विवेकी(सं पु') विवेकी नाश-अन्याश
बुझा । उचित-अवचित बुझा ।
बुद्धिगक ड्डानी ।

भले बुरे का ज्ञान रखनेवाला ।
बुद्धिमान । ज्ञानी । न्यायशील ।

विवेचन—(सं पु') डानटैक डारि-
डिडिडि कोरा । डाल बेयाब
बोध । बीशांगा ।

भली भांति परीक्षा करना ।
विवारपूर्वक निर्णय करना । तर्क
वितर्क ।

विशद—[वि] स्पष्ट । पबिकाब ।
डाडड डीथल, विडुत भावे ।
अल्लर ।

लम्बा चौड़ा । विस्तृत रूपसे ।
स्वच्छ । स्पष्ट । सुन्दर ।

विशारद—[सं पुं] पण्डित । ज्ञान-
बुद्धि, परिगत ।
पंडित । कुशल ।

विशिख—[सं पुं] शर, बाण ।
बाण । तीर ।

विशुचिका, विसूचिका—(सं स्त्री)
कलमबा, शिष्टिका ।
हैजा ।

विश्रुखल—(वि) याउल-वाउल ।
श्रेणी वा लानि डगी । विश्रुखल ।
जिसमें क्रम या श्रृंखला न हो ।

विशेषाधिकार—[सं पुं] विशेष-
धिकार ।

वह अधिकार जो साधारणतः
सब लोगों को प्राप्त न हो, पर
कुछ विशिष्ट अवस्थाओंमें किसी
को विशेष रूपसे प्राप्त हो ।

विश्रंभ—[सं पुं] विश्राम । श्रम-
कलह । श्रेयसाश्रय । आश्रयता ।
गोपनीय । बंध । निश्चय ।

दृढ़ या पक्का विश्वास । प्रेमी और
प्रेमिकामें संभोगके समय होने
वाला विवाद या झगड़ा । प्रेमा-

लाप । आत्मीयता । गोपनीय ।
बध । विश्राम ।

विश्रब्ध—(वि) शांत । विश्रान्ति ।
निर्भीक । विनश्य ।

शान्त । विश्वास के योग्य ।
निडर । विनम्र ।

विश्रांत—(वि) विश्राम कवि शक्य ।
कान्ति शक्य । शांत । क्रांत ।
जो विश्राम करना हो । ठहरा
या रुका हुआ । थका हुआ ।

विश्रांति—(सं स्त्री) श्रम-
भांति ।

विश्राम । थकावट ।

वि-भ्री—(वि, श्री) शून्य । शून्य । शून्य ।
श्री या कान्ति रहित या हीन ।
भद्र ।

विश्रुत—(वि) श्रुति । विश्रुत ।
प्रसिद्ध । विख्यात ।

विश्लिष्ट—(वि) विश्लेषण कर्ता ।
विकसित ।

जिसका विश्लेषण हुआ हो ।
विकसित ।

विश्वंशर—(सं पुं) श्रेष्ठ । विश्व ।
ईश्वर । विष्णु ।

विश्व-कोष—(सं पुं) विश्व-कोष ।
मकलम विषय अथवा कोना

विश्व-व्यापी—एक विशुद्ध
भावे वर्णित अभिधान ।

वह ग्रन्थ जिसमें सभी विषयो या
किसी विषय के सभी अंगों का
विस्तार से वर्णन हो।

विश्व-व्यापी—(वि) विश्व-व्यापी,
संगत विधि ।

सारे विश्वमें व्याप्त या फैला
हुआ ।

विश्वसनीय—[वि] विश्वसनीय ।
विशुद्ध ।

जिसका विश्वास किया जा सके ।
विश्वस्त ।

विषण्ण—[वि] वेष्टावृत्ता, विमर्श ।
जिसे विषाद हुआ हो । दुःखी ।

विषम—(वि) असमान । कठोर ।
ठान । अक्षय । वेष्टा वक्र ।
अर्थालङ्कार विशेष ।

जो समान या बराबर न हो ।
बहुत कठिन । तीव्र । भयंकर ।
अलंकार विशेष ।

विषय—[सं पुं] कोनो वर्णनीय
कथा वा कार्य । ऐन्द्रियक सूत्र
दिया वस्तु । सम्पत्ति । श्री-गङ्गा ।
सांगतिक सूत्र । विषय ।

जिसके बारेमें कुछ कहा या
विचार किया जाय । जिसका
विवेचन करना हो । स्त्री-सभोग ।
सम्पत्ति । वह जिसे इन्द्रियाँ
ग्रहण करे ।

विषयासक्त—(वि) विषयागल ।
विलासी ।

जो विषय या सासारिक भोग-
विलासमें आसक्त हो । विलासी ।

विषयासक्ति—[सं स्त्री] विषया-
गति । ऐन्द्रिय भागों की प्रति
अधिक आसक्ति ।

सासारिक विषयो अर्थात् भोग
विलासकी ओर होनेवाली बहुत
अधिक प्रवृत्ति ।

विषयी—(सं पुं) विषयागल ।
विलासी । कामत आगल ।
कामदेव । धनी ।

भोग विलासमें आसक्त रहनेवाला-
विलासी । कामदेव । धनवान् ।

विष वमन—[सं पुं] वर कट्टे वा
तिलु कथा । अश्रिय कथा
कोटा ।

बहुत ही कटु और अप्रिय लगती
हुई बातें कहना ।

विषाण—(सं पुं) निंदा वाञ्छ ।

गाश्चिब कौठ ।

मींग । सूअर का दाँत । मींग का एक प्रकारका बाजा ।

विषाद--[सं पुं] मनब दुःख वा

वेजाव । मन मवा अरुहा ।

अगस्त्राव , खेद या दुःख ।

जड़ता । निश्चेष्टता ।

विषुव—(सं पुं) सूर्य विषुव रेखाव

उपरटेल अशाठ दिन बाति गमान होरा काल ।

वह समय जब सूर्यके विषुवत् रेखापर पहुँचनेसे दिन और रात बराबर होते हैं ।

विषुवत् रेखा—[सं स्त्री] पृथिवीव

उत्तर आरु दक्षिण मेरुव पवा

गमान दूरव पूरव पवा पश्चिमटेल टेना कलित आरु ।

वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तलके पूरे मानचित्र पर ठीक बीचों बीच गणनाके लिये पूर्व पश्चिम खींची गयी है ।

विष्ठा—[सं स्त्री] मल, गू ।

मल । मैला ।

विषांवाद—[सं पुं] गद्गद, एकरूपता,

मिल आदि नोहोरा । अरुक्का ।

कौकि ।

मादृश्य, एकरूपता मेल आदिका

अभाव । छल । धोखा ।

विसदृश—(वि) विपरीत । उलटा ।

असमान । विभिन्न ।

विपरीत । उलटा । असमान ।

विलक्षण ।

विसर्ग—(सं पुं) दान । एवा ।

विसर्ग (:)आश्च । शोक्क बुद्ध्या ।

प्रलय ।

दान । छोड़ना । वर्णमालामें एक

चिह्न । मोक्ष । मृत्यु । प्रलय ।

विसर्जन—(सं पुं) विसर्जन । परि

ताग । विदाग दिया । न्यायालय

गडा आदि डक करवा वा गामबनि

मवा । पूजाव शेषत देवताक

विदाग दिया कार्य ।

परित्याग । विदा करना । न्याया-

लयमें वाद आदिका रह या

खारिज होना । आहूत देवताओं

से जाने की प्रार्थना करना ।

विस्तर—(वि) डांडव दीयल । खुब

बेचि । अरुव ।

बड़ा और लम्बा चौड़ा । बहुत

अधिक ।

(सं पुं) टाबि-पाटी । नया ।

विहना । शेतेली ।

विछावन ।

विस्तार—[सं पुं] बलु ठाई खोबा

अवस्था । डाउबदीयल ।

। बस्ताव ।

लम्बाई और चौड़ाई । फैलाव ।

विस्तीर्ण—[वि] बहल है छुवि थका ।

विस्तृत । बहल ।

विस्तृत ।

विस्थापन—(सं पुं) निजब ठाईत

थाकिब निद्रिया । कोनो बाग

कबा ठाईब पबा बलपूर्वक

उच्छेद कबा ।

किसी को अपने स्थानपर न रहने

देना । किसी स्थानपर बसे हुए

लोगों को वहाँ से बलपूर्वक हटा

देना ।

विस्थापित—(वि) विस्थापित ।

निज बागभूमिबपबा अताडित ।

जो अपने स्थानसे हटा दिया गया

हो । (अ—डिसप्लेस्ड)

विस्फारण—[सं पुं] (पात्रि) मेला ।

खोला ।

खोलना । फाड़ना ।

विस्फारित—[सं पुं] डालनबे

खोला बा मेला । चक्र बहलाई

बा मेलि । विस्फारित ।

अच्छी तरह से खोला या फैलाया

हुआ । फाड़ा हुआ ।

विस्फोट—[सं पुं] कौंशोबा ।

विषयुक्त डाउब थं । विस्फोदन ।

अन्दर की गरमीसे बाहर उबल

या फूट पडना । जहरीला और

खराब फोड़ा ।

विस्फोटक—(सं पुं) विषाक्त

कोशोबा । गनमर बावे ओलोब

कोशोबा । बसुष्ठु बोण ।

विस्फोबक ।

जहरीला फोड़ा । गरमी या

आघात के कारण भभक उठनेवाला

पदार्थ । गीनला का रोग ।

विस्मरण—(मं पुं) पाहबल । निश्चय

भुलावा ।

विस्मित—[वि] याचबित ।

जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ

हो ।

विस्मृत—(वि) पाहवि योबा ।

भुला हुआ ।

विहंग—[सं पुं] पक्षी । चबाई ।

शब । मेघ ।

पक्षी । बाण । मेघ ।

(वि) याकाणत विचरण करोता ।

स्वाधीन भावे फुबोता ।

आकाशमें उड़नेवाला । स्वच्छन्द
रूपसे विचरण करनेवाला ।

बिहँसना—[क्रि अ] ईश ।
हँसना ।

बिहरना—(क्रि अ) विशाव कबा ।
घूमा-कूबा ।
बिहार करना । घूमना-फिरना ।

बिहान—(सं पुं) बाढ़िगूबा ।
सबेरा ।

बिहार—[सं पुं] कूबा । ननब जानन
आक सूथ आनिब बाटव कबा
क्रीड़ा वा कार्य ।
टहलना । मनोविनोद और सुख
प्राप्ति के लिये होनेवाली क्रीड़ा ।
बौद्ध भिक्षुओं या साधुओं के
रहनेका मठ ।

बिहिह—(वि) उठित । उपश्रुल ।
विशान कबा । विशित ।
जिसका विधान हुआ या किया
गया हो । विधान या कानून के
रूपमें लाया हुआ । नियमों के
अनुसार उचित या ठीक ।

बिहीन—(वि) नथका । शून्य । शून
रहित । त्यागा हुआ ।

बीचि—[सं स्त्री] जो ।
तरंग ।

बीटक—(सं पुं) तामोजब गूबा ।
पान का बीड़ा ।

बीतराग—[सं पुं] निम्बृश । निवा-
गल ।

जिसने सांसारिक वस्तुओं और
सुखोंके प्रति राग या आसक्ति
बिल्कुल छोड़ दी हो ।

बीथी—(सं स्त्री) बाटे । नाटकब
एटि थकाव डेव ।
भाग । नाटकों का एक भेद ।

बीभत्स—[वि] अतिभय कूकप ।
बिष जगा । निरुब । पापी ।
बबरगब डितबत एक बग ।
जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो ।
क्रूर । पापी । साहित्य में नौ रसों
में से एक ।

बीर गति—(सं स्त्री) शूक केखड
शूचि बड़ा बबव कबा कार्य ।
युद्ध क्षेत्रमें बीरतापूर्वक लड़ते हुए
मरनेपर प्राप्त होनेवाली गति ।

बीर प्रसू—(वि स्त्री) बीरब अन्न-
दायिनी ।
वीरोंको जन्म देनेवाली ।

बीरान—[वि] जन-ध्यानी-शून ।
उजाड़ ।

वीरुध (व)—(सं पुं) लडा । गङ् ।
डान ।

लता । पोषा ।

वीर्य—[सं पुं] बल । पराक्रम ।
धातु । वीर्य । वीर्या ।
शुक्र । बल । पराक्रम ।

वृंस—(सं पुं) बेहू । कुल वा
फलरूपि । गुरु फल ।
बहु पतला डण्ठल जिसपर फूल
या फल लगा रहता है । कच्चा
और छोटा फल ।

वृंह—(सं पुं) पल । वृन् ।
दल । भुण्ड ।

वृक—(सं पुं) शिवाल । कूकबनेटीया
बाघ । चोब ।
गीदड़ । भेड़िया । चोर ।

वृत्त—(सं पुं) वृत्तान्त । अवस्था ।
जीवनरूप । वृत्त । वृत्त । वृत्त ।
कैत्र ।

वृत्तान्त । हाल । जीवनका साधन ।
मण्डल । गोला । घेरा ।

वृत्ति—(सं स्त्री) जीविका ।
व्यवसाय । व्यवहार । प्रकृति ।
हालवृत्ति । जीविकी ।
जीविका । पेशा । किसीके भरण ।

पोषण आदि के लिये दिया जाने
वाला धन । स्वभाव ।

वृत्र—[सं पुं] अकृपा, वेष,
ध्वनि, काष्ठापन महा-वृत्राणि
पुत्रक, एकाग्र दैवता,
दक्षीणि मुनिव अश्विने निर्माणा
कवा वृत्रेण ईशाक-वध कवे ।
अंधेरा । मेघ । एक असुर ।

वृथा—(वि) निवर्धक ।
व्यर्थ का ।
(क्रि वि) व्यर्थ, निष्फल ।
व्यर्थ ।

वृद्ध—(सं पुं) बुढ़ा, विद्वान् ।
बुढ़ा । विद्वान् ।

वृष—(सं पुं) बाँड़, व्याधिवर
वितीय बाणि ।
सांड । बारह राशियों में से एक ।

वृषल—(सं पुं) शूद्र, शूद्र
करोता, नीच ।
गूढ़ । दुष्कर्मी ।

वे—(सर्व) गिहंत, तृतीय गुरु-
वर [गर्वनाम] बहुवचन ।
'वह' का बहुवचन ।

वेग—[सं पुं] प्रवाह, गति, तीव्रता,
वेग ।
प्रवाह । जोर । तेजी । तीव्रता ।

वेणी—[सं स्त्री] चेला, गौठा
मूली, वेणी ।

स्त्रियोंके सिर के बालों की गूँधी
हुई चोटी ।

वेणु—(सं पुं) बाँस, बाँशी ।
बाँस । बाँसुरी ।

वेतन—(सं पुं) दबयश, कामब
मजूरी ।
तनखाह ।

वेताल—(सं पुं) मणिगालिब छूत,
गाथनाब बलत विक्रमादिता
बछाई पोरा शिबब एक छूत ।
शिव का एक गण । एक प्रकार
की भूत योनि ।

वेत्ता—[वि] छाता, जानेंता ।
ज्ञाता ।

वेदना—(सं स्त्री) यज्ञणा, विष,
शरीरत होरा पीड़ा ।
पीड़ा । व्यथा ।

वेधना—(क्रि स) कुटा कबा,
दुबवोक्क यज्ञेब ऐहनक्कत्रब
गतिविधि लक्क कबा ।

छेदना । दूर दर्शक यंत्रों से ग्रह
नक्षत्र आदि की गतिविधि
देखना ।

वेधशाला—(सं स्त्री) ऐहनक्कत्र
आदिब गतिविधि यज्ञब गहायेबे
निबोक्क कबा ठाई ।

वह स्थान जहाँ ग्रहों, नक्षत्रों
और तारों का वेध करने के यंत्र
रहते हों । [अं-ऑबजर्वेटरी]

वेला—[सं स्त्री] गमय, गमूझब
छो, पाब, जीमा ।

काल । समय । समुद्र की तरंग ।
तट । सीमा ।

वेश—(सं पुं) गाऊ, पोछाक
वस्त्र आदि पहनने का ढग ।
पोशाक ।

वेष्टन—[सं पुं] बेबा कार्या,
कोनो वस्तु मेथियाई दिया
कापोब ।

घेरना या लपेटना । कोई चीज
लपेटने का कपड़ा ।

वै—[वि] सिद्ध, ज्ञे ।

वे । दो ।

(प्रत्यय)७, निष्कार्थक अताय ।
भी । ही ।

वैकल्पिक—[वि] एकाङ्गी, वैक-
ल्लिक, इच्छाशुभासी ।

एकाङ्गी । जो अपनी इच्छा के
अनुसार चुन कर ग्रहण किया जा
सके ।

वैखरी—[सं स्त्री] वाणीव
मुखविठ कप, गवशती ।

वाणी का व्यक्त रूप । वाग्देवी ।

वैचारिक—(वि) विचार गवशाय,
ग्याय विभागव जेते गवश
थका ।

विचार सम्बन्धी । न्याय विभाग
और उसके विचार या व्यवहार-
दर्शन से सम्बन्ध रखनेवाला ।

वैजयन्ती—(सं स्त्री) पताका,
कठव पता भविलेक ओलया
विश्वव पाँच ववणव माला ।

पताका । एक प्रकार की माला ।

वैताल (लिक)—[सं पुं] वैतालिक,
गायन, सुति पाँठक ।

चारण ।

वैदेही—(सं स्त्री) जीता ।
सीता ।

वैद्य—(सं पुं) चिकित्सक, वेज,
पण्डित ।

पण्डित । वैद्यक शास्त्र के अनु-
सार चिकित्सा करनेवाला चिकि-
त्सक ।

वध—(वि) विधि गिद्ध वा आइन
मते कवा, वैध ।
कानून के अनुसार ठीक ।

वैधानिक—(वि) विधान वा आइन
आदिते गवशित, विधान वा
आइनव कपत थका ।
विधान या संघटन के नियमों से
सम्बन्ध रखनेवाला । जो विधान
के रूप में हो ।

वैभव—[सं पुं] विभूति, धन-
गम्पति, ऐश्वर्य ।
धन सम्पत्ति । ऐश्वर्य ।

वमनस्थ—(सं पुं) शक्तता ।
शत्रुता ।

वैमात्र (त्रेय)—[वि] विमात्रा
वा माशी माकव मवा ।
विमात्रा से उत्पन्न ।

वैयक्तिक—(वि) व्यक्तिगत ।
व्यक्तिगत ।

वैर—(सं पुं) शक्तता ।
शत्रुता ।

वैरी—(सं पुं) शक्त ।
शत्रु ।

वैसा—[वि] तेने, तेनेधवणव ।
उस तरह का ।

वैसे—(क्रि वि) तेनेधवणव
उस तरह ।

बोट—[सं पुं] मत्त, निर्वाचन
समयत निम्ना मत्त ।

चुनाव में दी जानेवाली राय या
मत ।

व्यञ्जक—[वि] वाञ्छ वा अंकट
कबोता ।

व्यक्त, प्रकट या सूचित करने
वाला ।

व्यञ्जना—[सं स्त्री] अकाश कवा
कार्या वाञ्छना, शब्द वा वाक्य
गुट अर्थ अकाश करिव पवा
शक्ति, शब्द शक्ति विशेष ।

व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया
या भाव ।

शब्द की तीन शक्तियों में से
एक ।

व्यक्त—(वि) विदित, अकाश
कवा वा होवा ।

प्रकट । स्पष्ट ।

व्यक्तित्व—[सं पुं] कोनो
वाञ्छि वा माहूश निञ्छ । वाञ्छिह ।

‘व्यक्ति’ का गुण या भाव । वे
विशेष गुण जिसके द्वारा व्यक्ति
की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता
सूचित होती है ।

व्यग्र—(वि) उतन, डीत, वाञ्छ,
कोनो वञ्छ पावले वव
आग्रह कवा ।

घबराया हुआ । डरा हुआ ।

व्यस्त ।

व्यतिरेक—(सं पुं) विने । वाञ्छे ।
साहित्य अलङ्कार विशेष । बाहिरे ।

अभाव । अन्तर । एक अर्था-
लंकार ।

व्यतीत—(वि) अतीत ।
बीता हुआ ।

व्यभिचार—[सं पुं] अनाचार ।
वेग्रा आचरण । पवव तिवोता
वा गुरुवर सैते सहवास ।

अनाचार । दुश्चरित्रता । छिनाला ।
(वि-व्यभिचारी)

व्यवधान—[सं पुं] आँतव । ठूठा
वञ्छव माञ्छत थका शून्य ठाई ।
बाधा । पर्का । विन्नाग ।

जोट । परदा । ह्कावट ।
विभाग ।

व्यवस्थित—(वि) व्यवस्थित । निय-
मित । व्यवस्था वा नियम थका ।
जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था
या नियम हो ।

व्यष्टि—(सं पुं) व्यक्ति । गणित
एकक ।

‘समष्टि’ का विरुद्धार्थक । व्यक्ति ।

व्यसन—(सं पुं) विपत्ति । विषय-
वागनाब अति आगच्छि । बेग
अभ्यास ।

विपत्ति । विषयों के प्रति
आसक्ति । कोई बुरा शौक या
बुरी लत ।

व्याख्यान—[सं पुं] व्याख्या ।
भाषण । वक्तृता ।

व्याख्या या वर्णन करनेका काम ।
भाषण ।

व्याघ्र—[सं पुं] बाघ ।
बाघ ।

व्याज—(सं पुं) छल । बाधा । पलम ।
छल । बाधा । विलम्ब ।

व्याध—(सं पुं) व्याध ।
चिकित्सी ।
बहेलिया ।

व्याधि—[सं स्त्री] बेमार । विपद ।
रोग । विपत्ति । बखेड़ा ।

व्यापन—(क्रि अ) विगपि पना ।
विपण ।
किसी चीज के अन्दर व्याप्त होना
या फैलना ।

व्यामोह—(सं पुं) अज्ञान । मोह ।
किंकर्तव्य विमूढ़ अवस्था ।

अज्ञान । मोह । किंकर्तव्य
विमूढ़ता ।

व्याल—(सं पुं) गाप । बाघ । बघा ।
बिहू ।

साँप । बाघ । राजा । विष्णु ।

व्यावर्तन—[सं पुं] छाँड़पिने
आगुवा वा घुवा । मनाय है
थका परिवर्तन । पार्थक्य ।

चारों ओर से घेरना । चक्कर
लगाना । घुमना । बराबर होता
रहनेवाला परिवर्तन । अन्तर ।

व्यास—(सं पुं) ‘कथा’ कर्तृता ।
वेदव्यास । महाभाष्य के लेखक ।
विष्णु । बुद्ध के केन्द्रेण लोका
पथालि ज्ञात ।

कथा वाचक । वेदों के सम्पादनकर्ता
और महाभारत के रचयिता ।
विस्तार । फैलाव । वृत्त के केन्द्र से
होकर परिधि के दोनों ओर
विस्तृत रेखा ।

व्यासाद्—(सं पुं) व्यास आधा ।
किसी वृत्त के व्यासका आधा
भाग ।

व्यास—(वि)वर्जन कर्ता । निषिद्ध ।
वार्ध । विरोधी ।

वर्जित । निषिद्ध । व्यर्थ । पर-
स्पर विरोधी ।

व्युत्पत्ति—[सं स्त्री] उद्गम वा
उत्पत्तिज्ञान । शब्द मूल, शब्द
जन्म कथा । ज्ञान । निगुण ज्ञान ।

उद्गम या उत्पत्तिका स्थान ।
शब्द का वह मूल रूप जिससे
वह निकला या बना हुआ हो ।
शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञान ।

व्यूह—(सं पुं) वेष्ट । निर्माण,
शरीर, वेष्ट (युद्ध)सैन्यावलाक
भाग भाग कै बनाव अंगाली ।
समूह । निर्माण । शरीर । सेना ।
युद्धमें सेना विन्यास ।

व्योम—[सं पुं] आकाश, शरीरत
धका वायु ।

आकाश । आकाश में व्यास पार-
दर्शी तत्व (अं—ईश्वर)

व्योमकेश—[सं पुं] महादेव ।
महादेव ।

व्योमचारी—(सं पुं) आकाश
पथत विचरणकारी, देवता ।

वह जो आकाशमें विचरण करता
हो । देवता । चिड़िया ।

व्योमथान—[सं पुं] आकाशी
आशान्न । विमान ।
हवाई जहाज ।

व्रजन—(सं पुं) गमन, लग्न,
यजामिनव एति प्रुत ।

चलना । गमन । भ्रमण । अजा-
मिलका एक पुत्र ।

व्रग—[सं पुं] श्व कौश होरा
फोड़ा । घाव ।

व्रात—(सं पुं) शारीरिक परिश्रम,
माह, पल, मनुष्य, बबयाजो ।
शारीरिक म । मनुष्य । भुण्ड ।
समूह ।

व्रात्य—(सं पुं) उपनयन गङ्गाव
नकरा, गङ्गाव शीन, जातिहृत
जातन, वर्ग शक्क ।

यज्ञोपवीत संस्कार से हीन या
रहित । वर्ण शंकर ।

व्रीडा—[सं स्त्री] लाज, छव ।
लाज । शर्म ।

व्रीहि—[सं पुं] चाटल । धान ।

श

श—वर्णमालाव एकविंशतः दश गणनाव
वाङ्मन वर्ण ।

वर्णमाला का तीसवाँ व्यंजन वर्ण ।

शंक—[सं पुं] डग्न, शङ्का ।
डर । शंका ।

शंकर - [वि] मङ्गल मन्त्र ।
मङ्गल कारक । [सं पुं] शिव ।
शिव । (सं स्त्री—शंकरी)

शंषा—(सं स्त्री) विखूली, कैकाल ।
विद्रुत । कम्पर ।

शंखर—(सं पुं) एक वाङ्मन.
पर्वत, हविर्गव प्रकाश, युद्ध,
मायाजाल, पानी । मेघ । धनसम्पत्ति
एक राक्षस । पर्वत । एक प्रकार
का हिरन । युद्ध । इन्द्रजाल ।
जल । मेघ । धन-सम्पत्ति ।

शंखु, शंखुक, शंखुक—(सं पुं) शंखुक ।
घोंघा ।

शंभु—(सं पुं) महादेव ।
शिव ।

शऊर—(सं पुं) डालदेव काम कबाव
योग्यता वा प्रणाली, युद्धि ।
अच्छी तरह काम करनेकी योग्यता
या ढंग । बुद्धि ।

शक—[सं पुं] शक्य एहिशाव
जातिदिदेश, शक्य, शंका,
मन्दिर ।

एक प्राचीन अनाथ जाति ।
शकाब्द । शंका । सन्देह

शकट—(सं पुं) बथ, गन्गाड़ी,
रथ । बैलगाड़ी ।

शकर, शकर—(सं स्त्री) चेनि ।
चीनी । कच्ची चीनी ।

शकरकन्द—[सं पुं] मिठा यात्रु ।
एक प्रकार का मीठा कन्द ।

शकल, शकल—[सं स्त्री] मुखव
छेश्वर । छेश्वर । आकृति ।
मुखकी आकृति । चेहरा । मुखका
भाव । बनावट ।

शकुंत—(सं पुं) एविश चबाई ।
एक चिड़िया ।

शकुन, शगुन—(सं पुं) उड वा
अउड लक्षण, उडमुहूर्त, उड
अवड शोभा कार्य ।

किसी विशेष कार्य के आरम्भ में
दिलाई देनेवाले शुभ या अशुभ
लक्षण । शुभ मुहूर्त । शुभ मुहूर्तमें
होनेवाला कार्य ।

शक्ती—(वि) गम्भीरी लोक ।
हर बातमें शक या सन्देह प्रकट
करनेवाला ।

शक्य — [वि] गाथा, गजद्वयव योग्य
क्रियात्मकरूपसे हो सकने योग्य ।

शक्र—(सं पुं) ऐश्वर्य ।
इन्द्र ।

शकुल—[सं पुं] बगुल, गाँव ।
व्यक्ति ।

शगल—[सं पुं] वायवाय, मनो-
विनोद, उगवानव ध्यान ।
व्यापार । काम धन्वा । मनो-
विनोद ।

शगूफा—(सं पुं) क'लि । कुलव क'लि
आचरित कथा ।
कली । फूल । कोई विलक्षण
घटना वा बात ।

शठ—(वि) धूर्त, बहक, झूठ,
कौंकि मिया गाँव ।
धूर्त । लुच्चा । मूर्ख । पापी ।

शत—[वि] एश ।
सौ ।

शत-दल—[सं पुं] कमल, पद्म
फूल ।
कमल ।

शतधा—(अव्य) एश प्रकार,
एश प्रकार ।
सैकड़ों बार । सैकड़ों प्रकारसे ।
सैकड़ों टुकड़ों में ।

शतरंज—(सं पुं) खेल विशेष,
पाशी खेल ।
एक प्रकार का खेल ।

शतशः—(वि) एश गुण, श्रुव बेछि ।
सैकड़ों । सौगुना । बहुत अधिक ।

शतायु—(वि) शतायु, एश बह्व
वयसीय ।
सौ वर्षों की आयुवाला ।

शनाखत—(सं स्त्री) चिनाख ।
पहचान ।

शनैः—[अव्य] नाट्य, शीघ्र ।
धीरे । आहिस्ता ।

शपथ—(सं स्त्री) शपथ, अडिछा ।
कसम । प्रतिज्ञा ।

शब्दनम—[सं स्त्री] नियम, बब
पाठन गिहि काटोव ।

ओस । एक प्रकार का बहुत
पतला कपड़ा ।

शब्दर—(सं पुं) भावतवागी-एँटि
प्राचीन अनार्य जाति ।

भारतमें बसनेवाली एक प्राचीन
अनार्य जाति ।

शब्दल (लित)—(वि) नाना बडव,
बड बडव, बं विबडव, छितबा-
पथवा ।

चितकबरा । रंग-बिरंगा ।

शब्दी—[सं स्त्री] छिज ।
चित्र ।

शब्द-बेधी—[सं पुं] शब्दभेदी,
शब्दभुनि दिक्निर्णय कनि शब्द
निष्केप करौता ।

केवल सुने हुए शब्दसे दिशा का
ज्ञान करके किसी वस्तु को वाण
से मारनेवाला ।

शब्दशः—[क्रि अ] आश्वे आश्वे
अश्वकबण कवा ।

प्रत्येक शब्द के अनुसार या अनु-
करण पर ।

शब्दित—(वि) क्षनिष्ठ, बाणित,
शब्द शोभा ।

जिसमें शब्द उत्पन्न होता हो ।
बोलता हुआ ।

शम—(सं पुं) शांति, शोक,
इच्छिन्नक वशत बन्धा, क्षमा ।

शान्ति । मोक्ष । अन्तःकरण तथा
इन्द्रियों को वशमें रखना । क्षमा ।

शमन—(सं पुं) शान्ति, शोक ।
विकाश आदि प्रयत्न कवा, यश ।

दोष, विकार आदि दवाना ।
शान्ति । यमराज ।

शमशेर—(सं स्त्री) उडवादान ।
तलवार ।

शमा—[सं स्त्री] गगदांति, ठाकि
मोमबत्ती ।

शमादान—(सं पुं) गगदांति शमादान
पौछ ।

वह आधार जिमसे मोमबत्ती
जलायी जाती है ।

शयन—(सं पुं) शयन, शोबा
कार्य, आलस, विचन ।

सोना । लेटना । पलंग । विस्तर ।

शयनागार, शयनालय—[सं पुं]
शोबा कोठालि ।

सोनेका कमरा ।

शय्या—[सं स्त्री] विचन ।
विस्तर ।

शर—(सं पुं) शर, वाण, गांधीबन
शर ।

वाण । दूध या दहीपरकी मलाई ।

शरभ—(सं स्त्री) कोवागत मित्र ।
निशम, पबिपाटी, झूलमानव
धर्मशास्त्र ।

कुरान में बतलाया हुआ विधान ।
परिपाटी । मुसलमानोंका धर्म
शास्त्र ।

शरण—(सं स्त्री) शरण, आश्रय,
शर ।

आश्रय । बचाव की जगह । घर ।

शरणागत—(वि) शरणगत, आश्रय
निमित्त उठर चला ।

शरणमें आया हुआ ।

शरतिआ, शर्तिया—(क्रि वि)
निश्चयपूर्वक, निश्चित भावे
निश्चयपूर्वक ।

[वि] ठिक, अवार्थ, बिनाचर्चे
बिलकुल ठीक ।

शरबती—[वि] चरबतब बडब,
शरबत के रंग का ।

शरभ—(सं पुं) उट, हाथीब
पोरानी, जिंश, आठ भविष्य
एति कल्पित अशुभ, वास्तविक
जाति, हम्प विशेष, काकतिकविः

टिड्डी । हाथीका बच्चा । शेर ।
ऊँट । आठ पैरोंवाला एक कल्पित
जन्तु । पशु । बानरों की एक
जाति । एक प्रकार का छन्द ।

शरम, शर्म—(सं स्त्री) लाज,
चरम, गल्फाट, शर्मिष्ठा ।
लज्जा । लिहाज । संकोच ।
प्रतिष्ठा ।

शरमाऊ, शरमीला—[वि] लाज
कूबीश ।
जिसे जल्दी लज्जा या शरम
आती हो । लज्जालु ।

शरमाना—(क्रि अ) लज्जित होना,
लाज करना ।
लजाना । लज्जित होना ।
[क्रि स] लाज करना ।
लज्जित करना ।

शरमिंदा—(वि) लज्जित ।
लज्जित ।

शराकत—(सं स्त्री) अंगीकार । अंश ।
साम्ना ।

शराफत—(सं स्त्री) गज्जनता ।
गाम्भीर्य ।
सज्जनता ।

शराब—[सं स्त्री] मद ।
मदिरा । (वि-शराबी)

शराबखोरी—[सं स्त्री] गद खोरा ।

मद्य पान ।

मदिरा-पान ।

शराबोर—(वि) एकवादे तिति

योरा, तिति-बुवि ।

बिलकुल भीगा हुआ ।

शरावत—[सं स्त्री] शृङ्खला ।

पाजीपन । दुष्टता ।

शरासन—(सं पुं) श्वश्रु ।

धनुष ।

शरीक—(वि) उपस्थित । गमनित ।

किसी काम में साथ देनेवाला ।

सम्मिलित ।

(सं पुं) गशायक । अश्वीपाव ।

साथी और सहायक । हिस्सेदार ।

शरीफ—[सं पुं] गणनाक । गणन ।

भला आदमी । सज्जन ।

शरीफा—[सं पुं] आतेकन ।

फल । वनेश । आतनग-कैठान ।

सीता-फल ।

शरीरांत—(सं पुं) शृङ्खला ।

मृत्यु ।

शर्व—(सं पुं) शिव । विश्व ।

शिव । विष्णु ।

शर्वरी—(सं स्त्री) शक्ति । रात ।

शक्त—[सं पुं] पतञ्ज । काकतिरुविः ।

फतिगा । टिड्डी ।

शक्ताका—(सं स्त्री) शला । काठ,

बाँह, लो आदिब कोठा

गोठा काठी । शब ।

सलाई । सीक । बाण ।

शल्य—(सं पुं) शङ्ख । गानि, गजान,

शला । गद देशर बजा । पाङ्गु-पङ्गी

माश्रीर भायक ।

हड्डी । गाली । मद्र देश के

राजा । माद्री के भाई ।

शल्यकर्म—(सं पुं) चिकित्सक

कर । वेमार आदिब कठा-छिडा

कार्य । अट्ठापठाब कार्य ।

फोड़ों, रोग युक्त अंगों आदि को

चीरने-फाड़ने और टूटी हुई

हड्डियाँ आदि जोड़ने या उसड़ी

हुई हड्डियाँ आदि बैठाने की विद्या

या काम । (अ-सर्जरी)

शल्य चिकित्सा—(सं स्त्री) अट्ठा-

पठाब । शल्य कर्म ।

शब—(सं पुं) शब न ।

मृत्यु शरीर ।

शबर—(सं पुं) शूराणि शरावी वाति

विनेश ।

एक प्राचीन जंगली जाति ।

शश, शसा—(सं पुं) शशपक्ष ।

खरगोश ।

शशक—[सं पुं] शशपक्ष । छत्र
कलक ।

खरगोश । चन्द्रमामें का कलक ।

शशधर, शशांक, शशि—(सं पुं)

छत्र । ज्ञान ।

चन्द्रमा ।

शशधर, शशिशेखर—(सं पुं)

महादेव ।

महादेव ।

शशत्राणार—[सं पुं] यज्ञागार ।

शस्त्रों के रखने का स्थान ।

शइ—(वि) बड़ा-बाड़ा । बड़ा-छोटा ।

बड़ा-चढ़ा ।

(सं स्त्री) उद्देश्य दिया वा

प्रवर्धित कर्माकार्य । पाशा

खेलब टाल विशेष ।

बढावा देने या भड़काने की क्रिया
या भाव । शतरंज के मोहरे
की एक चाल ।

शहजोर—(वि) बलवान । शक्तिमान ।

बली । बलवान ।

शहसीर—[सं पुं] अष्टालिका

आदिब गमबुद्ध ।

(इमारत में) लकड़ी का बड़ा

और लम्बा लट्टा ।

शइतूत—(सं पुं) इति गच्छ ।

मझोले आकार का एक वृक्ष ।

शहद—[सं पुं] श्वेत, मधु ।

मधु ।

शहनाई—[सं स्त्री] छानाई । मुखवे

कूँकोटा एविष बाण्ड यज्ञ ।

रोशन-चौकी ।

शहवाला—[सं पुं] विद्याय दिन

वर्ष लगत गुरु लंबा । [गशा-

वर्णते वर्ष वर्षादिक ।

विवाह के समय दूल्हे के साथ

जानेवाला छोटा बालक ।

शहराती—(वि) नगरीया । नागरिक ।

नागरिक ।

शहरी—(वि) नगरेव ।

शहर का ।

(सं पुं) नगरेवासी । नागरिक ।

शहर में रहनेवाला ।

शहादत—[सं स्त्री] गवाही ।

गवाही ।

शाक—[सं पुं] तरेकारी । शाक

भुजा ।

भाजी । तरकारी ।

[वि] शक जाति गृहक्रीडा ।

शक जाति सम्बन्धी ।

शाकाहार— [सं पुं] निवाशिव
भोजन । शाक-पात आदिवे
कबा भोजन ।

वनस्पति जन्य पदार्थों और अन्न
का भोजन (वि-शाकाहारी)

शाक्त—[वि] शाक्त । शक्ति गृहक्रीडा ।
शक्ति सम्बन्धी ।

(सं पुं) शक्तिव उपासना ।
शक्ति या देवी की उपासना ।

शाक (१)—(सं स्त्री) डाल । ठानि ।
शांखा । विभाग ; अंश । अध्याय
गच्छाया ।

टहनी । डाल । किसी मूल
वस्तु के अंग जो स्वतंत्र विभाग
के रूप में विकसित हुए हो ।
किसी संस्था का अंग ।

शाखा-मृग—(सं पुं) बाणव ।
बन्दर ।

शागिर्ह—[सं पुं] विद्यार्थी । शिष्य
चेला । शिष्य ।

शाण—[सं पुं] शान । अन्न खाँड़े
ढोका कबा एविश कोयल मिल ।
मिल, कबाटि । पबीका ।

सान रखने का पत्थर । पत्थर ।
कसौटी ।

शादी—(सं स्त्री) विद्या । आनन्दोत्सव-
गद । आनन्द ।

विवाह । खुशी । आनन्दोत्सव ।

शाद्वल (वि) शरद्वान ।
रेगिस्तान के बीच की हरियाली
और बस्ती । (अं-ओएसिस)

शान—(सं स्त्री) दर्प । डवाडा ।
शक्ति । प्रतिष्ठा । ठाटे । जाँक-
जमक ।

ठाट-बाट । दर्प । भव्यता ।
शक्ति । प्रतिष्ठा ।

शान-शौकत—[सं स्त्री] ठाटे ।
ऐश्वर्य । जाँक जमक ।

ठाट बाट । सजावट ।

शाप—(सं पुं) शाप । लोकव
अमञ्जल कबा वाक्य । गानि ।
किसी की अनिष्ट-कामना से
कहा हुआ वाक्य या शब्द ।
भर्त्सना ।

शापना—[क्रि स] शाप दिया ।
शाप दिया ।

शाप देना ।

शापित—[वि] शापित । शापित
परा । अभिशप्त । शाप-ग्रस्त ।

शाब्दिक—(वि) शब्द गणकीय । शब्दों के
[कोठा] । आंशों के आंशों
[अक्षुब्ध रूप] ।

शब्द सम्बन्धी । शब्दों में (कहा
हुआ) । (अनुवाद में) प्रत्येक
शब्द के विचार से ठीक और
ज्यों का त्यों ।

शाम—[सं स्त्री] गङ्गा ।
साँझ । संध्या ।

शामत—(सं स्त्री) श्रद्धा । विपन्न ।
दुर्भाग्य । विपत्ति ।

शामियाना—(सं पुं) तामीरवा ।
डाँढ़ तन्तु ।

एक प्रकार का बड़ा तम्बू या
खेमा ।

शामिल—(वि) गम्लित । मिलित ।
सम्मिलित ।

शाब्दक—(सं पुं) वाण, नव,
तबोदान ।
वाण । खड़ग ।

शायद—(अव्य) शक्यतः, कदाचित् ।
कदाचित् । सम्भव है ।

शायर—(सं पुं) कवि ।
कवि ।

शायरी—[सं स्त्री] कविता निधा
कारि, काव्य ।

कविताएँ रचना । काव्य ।

शारद, शारदीय—[वि] शरद
काल ।

शरद काल का ।

शारदा—[सं स्त्री] गवश्चती ।
सरस्वती ।

शार्ग—(सं पुं) धृष्ट, धृष्ट, विद्वत्
धृष्ट ।

धनुष । विष्णुका धनुष ।

शारंगधर (पाणि)—[सं पुं]
विष्णु, श्रीकृष्ण ।
विष्णु । श्रीकृष्ण ।

शार्दूल—[सं पुं] बाघ, चबाई
विशेष, बाकस ।

बाघ । एक प्रकार की चिड़िया ।
राक्षस ।

(वि) गर्वित, श्रेष्ठ ।
सर्व श्रेष्ठ ।

शास्त्री—(वि) विनीत, नम्र, गन्ध-
शुद्ध, नम्र, शरीर ।

विनीत । नम्र । अच्छे आचार-
विचारवाला । धनवान । दक्ष ।

शार्लमलि—[सं पुं] शिखर, गङ्ग,
पृथिवी, गङ्गा, शीतल एता ।

सेमल का वृक्ष । एक पौराणिक द्वीप ।

शावक—[सं पुं] पोखानि, छलिव वा उदिव अवा जङ्ग वा चबाईव पोखानि ।

पशु या पक्षी का बच्चा ।

शाश्वत—(वि) चिरकालीन, चिर-शायी, अविनष्ट ।

जो सदा बना रहे ।

शाहंशाह—[सं पुं] डाडव बजा, गखाटे ।

बहुत बड़ा बादशाह ।

शाह—(सं पुं) मशानाज, बजा, मुछलमान फकीरव उपाधि ।

महाराज । बादशाह । मुसलमान फकीरों की उपाधि ।

(वि) महान ।

बहुत बड़ा या महान ।

शाह खर्च—(वि) वर खर्चो, बह्व्याग्री । बहुत खर्च करनेवाला ।

शाहजादा—(सं पुं) बाखकुमार । बादशाह का लड़का ।

शाही—(वि) बाखक्रीश, बखार । बादशाहों का ।

शिजन—(सं पुं) मधु क्षनि, यन-कावर नय वा क्षनि ।

मधुर ध्वनि । आभूषणोंकी झंकार ।

(वि) मधुर नय कबोता ।

मधुर ध्वनि करनेवाला ।

शिजिनी—(सं स्त्री) नूपुर, आङ्ठि । धश्वर गुण ।

नूपुर । अंगूठी । धनुषकी डोरी ।

शिकंजा—[सं पुं] कठोर शक्ति दिय अविध प्राचीन यज्ञ, छेपा-गान ।

दवाने, कसने आदिका यन्त्र ।

कठोर दंड देने के लिये एक प्राचीन यन्त्र ।

शिकन—(सं स्त्री) कौट गोदा, गङ्गुचित होदा, मोकोटा, चाप खाई ठेक वा छूटि होदा यदश्या । सिलवट ।

शिकमी—(वि) पेटव, जगगत, आशुबिक ।

पेट सम्बन्धी । किसीके अन्तर्गत रहनेवाला ।

शिकस्त—(सं स्त्री) पवाजय । पराजय ।

शिकायत—(सं स्त्री) निम्ना, आपात,
दोष वर्णन, बेमार ।

निदा । चुगली । उलाहना । रोग ।

शिकार—(सं पुं) टिकाव, ग्रास ।
आखेट । मांस ।

शिखंड—[सं पुं] गंगा चबाई
पाथि, टिकनि ।
मोरकी पूछ । चोटी ।

शिखंडी—[सं पुं] गंगा चबाई,
शब, शिखा, टिकनि, उपद बजाव
कन्या । [अश्रुत] । पाछत उपर
बलत पुरुष इय, एउंक समुखत
बाधिग्येई अछूने तीयक कूक-
क्रेत्रत पराजय कवे ।

मोर । मुर्गा । वाण । शिखा ।

शिखा—(सं स्त्री) टिकनि, झुईव
आग, चाकिब झुई-शिखा ।

चोटी । दीपक की लौ । आग की
लपट । नोक ।

शिखि—(सं पुं) गंगा चबाई,
कामदेव, अग्नि वा झुई ।
मोर । कामदेव । अग्नि ।

शिखी—(वि) टिकनि थकालोक
शिखा या चोटीवाला ।

[सं पुं] गंगा चबाई, कूकवा
चबाई, बलद, घोवा, झुई, शब ।

मोर । मुर्गा । बेल । घोड़ा ।
अग्नि । वाण ।

शित—(वि) तीव्र, अश्रुबधाव
थका ।
घारदार ।

शिति—(वि) बगा, नीला ।
स्वेत । नीला ।

शितिकंठ—[सं पुं] महादेव, गव
चबाई ।
महादेव । मोर (पक्षी)

शिथिल—(वि) शिथिल, छिला
लोला, आत नोटापारा ।
ढीला । धीमा ।

शिनःस्त—(सं स्त्री) चिनास्त ।
पहचान ।

शिकर—[सं पु] छाल ।
ढाल ।

शिरमौर—(वि) सर्वश्रेष्ठ, शिब
भूषण ।
सबमें श्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।

शिरस्त्राण—[सं पुं] मुख गमन
पिक्का मोहाय टूनी ।

युद्धके समय सिरपर पहना जाने
वाला लोहेका टोप ।

शिरोधार्य—[वि] गानिव जगल,
निबत तुलिव जगौषा, निबोधार्य ।
आदरपूर्वक ग्रहण करने योग्य ।

शिरोभूषण—(सं पुं) मूकूटे ।

मुकुट ।

(वि) गर्वदण्ड ।

सर्वश्रेष्ठ ।

शिरोमणि—(सं पुं) मूबब मणि
वा मूकूटे ।

सिरपर पहनने का रत्न ।

(वि) श्रेष्ठलोक, छुडामणि ।

सबसे अच्छा ।

शिरोरुह—(सं पुं) मूबब तूलि ।
सिरके बाल ।

शिला—(सं स्त्री)गिल, गिलब डाडब
दौबल टुकुवा ।

पत्थर की पटिया या बेड़ा । चौड़ा
टुकड़ा ।

शिलाजीत—[सं स्त्री] सूर्याब
तापत गिलब पबा ओलोवा क'ला
बस-चिकिण्मकर मते गरीबब
पूछि माधनकाबी उषध ।

चट्टानोंसे निकलनेवाली एक
पोष्टिक काली औषधि ।

शिलान्यास, शिला रोपण—(सं पुं)
शब आदिब पोण ग्रथमे बुनिग्राम

अथवा छेदित निर्माण कार्य
आरम्भ करा ।

भवन आदि बनाने से पहले
उसकी नींवका पत्थर रखा जाना ।

शिलीमुख—[सं पुं] डोडोमोबा ।
भौरा ।

शिवा—[स स्त्री] पार्वती, गिवाली,
मोक् ।

पार्वती । शृगाली । मोक्ष ।

शिवालय, शिवाला—[सं पुं]

गिलब मन्दिर ।

शिवका मंदिर ।

शिविका—(स स्त्री) दोला, पाक्री ।
पालकी ।

शिविर—(सं पुं) गिलब, बाहब,
हर्ष ।

पड़ाव । खेमा । दुर्ग ।

शिशिर—(सं पुं) शीत शीत ।
शीत काल ।

शिशन—[सं पुं] जननेन्द्रिय, (पुरुषब)
निग्र ।

जननेन्द्रिय ।

शिष्ट—[सं पुं] डड, गाधू,
सूशील ।

मला आदमी । सम्य ।

शिष्टता—[स स्त्री] उल्लास, गज
जुग वा आचरण ।
सभ्यता । उत्तमता ।

शिष्टमंडल—(सं पुं) अतिनिधि
मंडल ।
प्रतिनिधि-मंडल ।

शिस्त—[स स्त्री] लक्ष्य, वस्ती ।
निशाता ।

शीत—[वि] शीत, ठंडा, जाब,
जाबकालि ।
ठण्डा । जाड़ा । जाड़ेके दिन ।

शीतल्वर—[सं पुं] मेलबिसा
ल्वर ।
मलेरिया बुखार ।

शीतला—[सं स्त्री] वनस्पति बोग ।
वनस्पति बोग उपशम कवा गोमानी ।
चेचक रोग । इस रोगकी अधि-
ष्ठात्री देवी ।

शोरा—(सं पुं) चर्खत । कोनो
वस्तु छुटि वा खुलि तैयार कवा
पानीय वन ।
चांशनी ।

शीर्ष—[सं पुं] शिखर । उपविभाग ।
कपाल । शीर्षक ।
सिरा । चोटी । मस्तक । खाते
आदि की मद या विभागका नाम ।

शोल—[सं पुं] शिवाव । अशुद्धि ।
छलन-खुरण । गण-अशुद्धि । गणकोश
शील ।

स्वभाव की प्रवृत्ति या रुत ।
शाल-ढाल । सदवृत्ति । संकोच ।
[वि] अशुद्ध । निशुद्ध । तृणपर ।
बब मनोयोगी ।
प्रवृत्त । तत्पर ।

शीश—(सं पुं) मूत्र ।
मस्तक । शीर्ष ।

शीशम—[सं पुं] चक्षुष्य लेखीया
गज एविष ।
शिशपा का वृक्ष ।

शुंड—[सं पुं] शतीर डूँड ।
हाथीकी सूँड ।

शुंडी—[सं पुं] शती । नद तैयार
करवाता आर बेठाता ।
हाथी । मद्य बनाने और बेचने
वाला ।

शुक—[सं पुं] भाटों चबाई ।
तोता ।

शुक्ति (का)—(सं स्त्री) शुद्धा ।
शामूक ।
सीपी ।

शुक्रिया—(सं पुं) धन्यवाद ।
धन्यवाद ।

शुक्ल—(वि) वगा । उच्छल ।

सफेद । उजला ।

शुचि—[सं स्त्री] पवित्र अशुद्धता ।

पवित्रता । स्वच्छता ।

(वि) उद्ध । अशुद्ध ।

शुद्ध । स्वच्छ ।

शुचिता—[सं स्त्री] पवित्रता ।

पवित्रता ।

शुतुर—[सं पुं] उटे ।

ऊँट ।

शुतुमुर्ग—(सं पुं) उटे चबाई ।

ऊँट-पक्षी ;

शुनासीर—(सं पुं) ऐल ।

इन्द्र ।

शुबहा—(सं पुं) गल्मश ।

सन्देह ।

शुभचितक—(सं पुं) मङ्गलाकांक्षा ।

शितेक्षी ।

हितैषी ।

शुभमस्तु—(अव्य)उठ हउक । मङ्गल

हउक ।

शुभ हो ।

शुभा—(सं स्त्री) पोछा, पोश्व ।

बेडैति । देवता मकल मडा ।

शोभा । कांति । देवसभा ।

शुभ्र—[वि] वगा । उच्छल ।

सफेद । उजला ।

शुमार—(सं पुं) गणना । हिचाव ।

गिनती । हिसाब ।

शुश्रूषा—(सं स्त्री) उद्धवा, सेवा ।

बेमाबीव परिचर्या ।

सेवा । रोगी की परिचर्या ।

शूक—[सं पुं] झोडा । आलपिन,

झोडा झुड ।

अन्न की बाल या सीका । जी ।

आलपीन ।

शूकर—(सं पुं) गोरबि ।

सूअर ।

शूर—[सं पुं] वीर । युद्धारू ।

वीर । योद्धा ।

शूरता (ईं)—(सं स्त्री) वीरता ।

वीर्य ।

वीरता ।

शूरवीर—(सं पुं) वीर योद्धा ।

अच्छा वीर और योद्धा ।

शूरा—(सं पुं) वीर । शूर्या ।

वीर । सूर्य ।

शूल—[सं पुं]झोडा अन्न । दोबीक

आण दणु दिवटेल पोछा झोडा

शाल । पेटेट खोच मारि बा

ठिकूट नाबि धवा एविध बेबाब ।
कष्टे । वेदन ।

एक अस्त्र । बड़ा लम्बा और
नुकीला कांटा । वायुके प्रकोपसे
पेट में होनेवाली एक प्रकार की
प्रबल पीड़ा । दर्द ।

शुक्लना— (कि अ) कांटाब दवे
विक्र । छुःख वा कष्ट दिया ।
कांटेकी तरह गड़ना । दुःख देना ।

शुक्ली—(सं पुं) महादेव ।
महादेव ।

(सं स्त्री) दोषीक ध्याय दण्ड
दिवलेन पोता मोशब झोडा
भाल ।

सूली । प्राण दण्ड देनेका लोहेका
नुकीला डण्डा ।

शुक्ल—[(सं स्त्री) श्रेणी वक्त्र ।
परिपाटीदेक गच्छावा । निकलि ।
श्रेणी । क्रमाश्रयाव ।

एक दूसरे में पिरोई हुई बहुत सी
कड़ियोंका समूह । क्रमसे जाने या
होनेवाली बहुत सी बातें, चीजें,
घटनाएँ आदि । जंजीर । एकही
प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदिका
क्रम । कतार । सिलसिला ।

शृंग— (सं पुं) पर्वतब टिं ।
अश्रुव शिं ।

पर्वत की चोटी । सींग ।

शृंगार—[सं पुं] बलि-क्रीडा ।
गश्वाग । गाछान-काछान ।
गाश्चिवाव नन बगव श्रेष्ठवग ।
सजावट । नौ रसोंमें से एक ।

शृंगारिक—(वि) शृङ्गाव गश्चोय ।
शृंगार सम्बन्धी ।

शृंगी—[सं पुं] शशी । गश् ।
पर्वत । शिं थका अश्रु । शिडा,
महादेव ।

हाथी । वृक्ष । पर्वत । सींगवाला
पशु । सींगका बना हुआ एक
प्रकार का बाजा । महादेव ।

शृंग, शृंगाङ्क—[सं पुं] शिशाल ।
गीदड़ ।

शेख-खिल्ली—(सं पुं) काल्पनिक
महाशूर्य व्यक्ति । आलागड
छां पता लोक ।

एक कल्पित और महामूर्ख
व्यक्ति । व्यर्थ बड़े बड़े मनसुबे
बाँधनेवाला ।

शेखी—(सं स्त्री) अश्विवाव ।
अश्ववाव । आश्व प्रशंग कवा ।

अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णना ।

अभिमान । घमंड । अकड़ । डीगा ।

शेर—[सं पुं] बाघ । बब डाडब
वीन । उछूँ कविता विशेष ।

एवम् उछूँ छन्द ।

बाघ । बहुत बड़ा वीर और माहसी
व्यक्ति । उर्दू का एक प्रकारकी
कविता या छन्द ।

शेखानी—(सं स्त्री) एक प्रकार
दीबल चोलाखातीय पोछाक ।

एक प्रकारका अंगा या लम्बा
पहनावा ।

शेषनाग—[सं पुं] अनन्त नाग ।

पूर्वाग अक्षुगवि हेजाब रणा
थका गाप विशेष ।

पुराणों के अनुसार हजार फन
वाला एक नाग ।

शेषशायी—(सं पुं) विष्णु ।
विष्णु ।

शैतान—[सं पुं] चयतान । बाइ-
बेल आब कोबागंत लिखा
मते मानूश्क पापटेल निग्रा
एटा झूत ।

एक तमोगुणी देव जो मनुष्यों को

ईश्वरके विरुद्ध चलाता और धर्म
मार्गसे भ्रष्ट करता है ।

शैतानी—(सं स्त्री) दुष्टता । चयतानी
दुष्टता । पाजीपन ।

(वि) चयतान गश्कीय । चय
तानब । चयतानी ।
शैतान सम्बन्धी । शैतान का
दुष्टतापूर्ण ।

शैथिल्य—(सं पुं) शिथिलता । ढिला
अभावधानता ।
शिथिलता ।

शैत्य—(सं पुं) प्रसृत ।
पवंत ।

शैल-कुमारी—[सं स्त्री] पार्श्व
छोवाली । पार्श्वती ।

पहाड़ी देश की कन्या या कुमारी
पार्वती ।

शैलजा, शैल-पुत्री, शैलात्मजा-
(सं स्त्री) पार्श्वती ।
पार्वती ।

शैली—[सं स्त्री] चलन । धरण
अगानी । बीति । वाक्यरचना
बीति । शैली ।

वाल । ढंग । प्रणाली । रीति

वाक्य रचना का विशिष्ट प्रकार,
जो लेखक की भाषा सम्बन्धी
निजी विशेषताओंका सूचक होता
है। (अं—स्टाइल)। हाथ से
बनाई जानेवाली वस्तुओं में ऐसी
बातों का समूह जिसकी विशेष-
ताओंमें उनके कर्ताओंकी मनोवृत्ति
की एक रूपताके कारण साम्य हो।

शैलेन्द्र—[सं पुं] शिवालया । शिवि-
वाञ्छ ।

हिमालय ।

शैव—(वि) शैव । शिवगन्धर्व ।
शिव ।

शिव सम्बन्धी । शिवका ।

[सं पुं] शिव उपासक गन्धर्वाय ।

शिवका उपासक एक सम्प्रदाय ।

शैबलिनी—[सं स्त्री] नदी ।
नदी ।

शैबाल—[सं पुं] शैवाल । जगत्वन
तलतल थका वन आदि ।
सेवार ।

शैशव—[वि] शैशव । न'वाकाल ।
शिशु अवस्था ।

शिशु सम्बन्धी । बाल्यावस्था का ।

(सं पुं) न'वाकाल ।

बचपन ।

शोख—(वि) खेनो, झूठे, चक्कन-
गडोब, बडोडोया ।

ठीठ । धूष्ट । पाजी । चंचल ।

गहरा और चमकदार । (रंग)

शोखी—(सं स्त्री) उद्विगता ।
उद्विगता ।

शोच—(सं पुं) दुःख, चिन्ता, अश्रु-
ताप, आक्छाट ।

दुःख । अफस । चिन्ता ।

शोचनीय—[वि] शोक वा दुःख
लगेवा [अवस्था], दर्शनीय ।

जिसकी दशा देखकर दुःख या
चिन्ता हो । बहुत हीन या बुरा ।

शोण—(सं पुं) बड़ा बर, तेज,
शोण नामक नदी ।

लाल रंग । रक्त । सोन नामक
नदी ।

शोणित—(सं पुं) तेज ।
रक्त ।

[वि] बड़ा । लाल ।

शोथ—[सं पुं] शोथ रोग, शोथ
रोग । सूजन ।

शोध—[सं पुं] शुद्ध कर्वा, गन्धक,
शुद्ध कर्वा, पर्वीका कर्वा, अश्रु-
गन्धान ।

शुद्ध करनेवाला संस्कार । दुस्स्ती ।
चुकता या अदा होना (ऋण)
जांच । खोज ।

शोधक—[वि] शुद्ध करवाता,
अवश्यक । अनुसन्धान कर्त्ता, पवि-
काव करवाता ।

शोध करने, ढूँढ़ने या पता लगाने
वाला । शुद्ध करनेवाला ।

शोधन—[सं पुं] शोधन, निर्मल
वा पवित्र कवा कार्य, तलाश
कवा, शोध आदि पवित्राश कवा
शुद्ध या साफ करना । सुधारना ।
छान-बीन । तलाश करना । ऋण
देन आदि चुकाना ।

शोधना—[क्रि स] शोधित वा शुद्ध
कवा ।

शोधित करना ।

शोभन—[वि] शोभा शुक्ल, सुन्दर,
छकृत नगा, शोभा ।
सुन्दर । सुहावन । उत्तम । शुभ ।
[सं पुं] अलकाव, गङ्गल,
जोमर्ष ।

गहना । मंगल । सुन्दरता ।

शोभना—(सं स्त्री) सुन्दरी
डिवाता ।
सुन्दरी स्त्री ।

[क्रि अ] शोभा कवा, धनीया
नगा, डाल नगा ।

शोभा देना । भला लगना ।

शोर—[सं पुं] शशाकव, गोल-
माल, अग्निक्रि, श्याति ।
कोलाहल । प्रसिद्धि ।

शोरवा—[सं पुं] तबकारी, मांस
यागिब ज्ञान ।

उबाली हुई तरकारी आदि का
रस । अंजूस ।

शोला—[सं पुं] यन्नि निधा, छूहेव
निधा ।

अग्नि शिला ।

शोहदा—(सं पुं) वाडिछावी, नम्पट ।
व्यभिचारी । आवारा ।

शोहरत—(सं स्त्री) श्याति, किश-
दन्ती, उबावातधि ।

प्रसिद्धि । किवदन्ती । अफवाह ।

शौक—(सं पुं) विनाग-वागना,
निहा, वेग अभाग वा शब्दव ।
व्यसन । चस्का ।

शौक-से (मु०)-आवहेव, आनन्दव ।
प्रसन्नतापूर्वक ।

शौकत—(सं स्त्री) ठाठ, आक-
अगक, आभयान ।
शान । अभिमान ।

शौकिया—[क्रि वि] मनब आनन्दब
वादेब, निख ईच्छादेब, आग्रहेदेब ।
शोकसे । दिल बहलावके लिये ।

शौकीन—(सं पुं) छथ थका,
निछा थका, गदोग ठाँठेत थका ।
बह जिसे किसी बातका बहुत
शोक हो । सदा बना-ठना रहने
वाला ।

शौच—(सं पुं) शुद्धता, शौच वा
मलत्याग । निर्द्धा ।

शुद्धता । पाखाने या टट्टी जाना ।

शौर्य—(सं पुं) वीरबग गुण, वीरध
धार्य ।
वीरता । बहादुरी ।

शौहर—[सं पु] शायी, पति ।
स्त्रीका पति ।

श्याम—(वि) श्याम बरब, कला बडब ।
ग १७ बरबोश ।
साबला ।

[सं पु] कृष्ण एटि नाय ।
कृष्णका एक नाम ।

श्यामता—(स स्त्री) श्यामल, कला
छानेकीय, क'ला-गेडेबीश ।
कालापन । साबलापन ।

श्यामा—(स स्त्री) बाधिका, चबाई
एविध, १७ बडबीश। युवती,
यमुना टैन, बाडि ।

राधिका । एक पक्षी । सोलह वर्ष
की युवती । यमुना नदी । रात ।
(वि) श्याम बडब छिटाता ।
श्याम रंगवाली ।

श्येन—(स पु) बाख वा शेन चबाई ।
शिःसूक चबाई विशेष ।
बाज (पक्षी)

श्रम-कण—(सं पुं) शाय कण ।
परिश्रम के कारण निकलनेवाली
पसीने की बूँदें ।

श्रम-जल, श्रमवारि, श्रम विन्दु,
श्रमसीकर—[सं पुं] शाय ।
पसीना ।

श्रमण—(सं पुं) बोद्ध गज्जागी,
मुनि ।
बौद्ध सन्यासी । मुनि ।

श्रमित—(वि) क्लेश, भागवि प'वा ।
श्रम के कारण थका हुआ ।

श्रवण—(सं पुं) काण, गुना, २२
न० नक्क़ ।
कान । सुनना । बाइसवाँ नक्षत्र ।

अवना—[क्रि स] वै योवा,
टोप टोपटैक पवा ।

बहना । टपकना । गिराना या
बहाना ।

अव्य—(वि) सुनिव पवा वा लगी,
निख काणवे सुनिव पवा,
अवा ।

जिसे कानसे सुन सकें । सुनने
योग्य ।

अन्त—(वि) क्राखु ।
थका हुआ ।

अन्ति—(स स्त्री) परिवर्तन, क्रांति,
परिवर्तन, भागव ।

परिश्रम । परिश्रम के कारण
होनेवाली थकावट । विश्राम ।

आप—(सं पुं) अभिर्णाप ।
अभिशाप ।

श्री—(सं स्त्री) लक्ष्मी, गरुडश्री,
धन सम्पत्ति, शोभा, निखर वा
आन माण्डव नाम आगत
बादशाह कवा गङ्गा नृपक नर ।

लक्ष्मी । सरस्वती । धन-दौलत ।
शोभा । नामके पहले लगाया
जानेवाला एक आदर सूचक शब्द ।

श्रीखंड—(सं पुं) चन्दन, पौन
पदार्थ विशेष ।

हरि-चन्दन ।

श्रीफल—(सं पुं) बेल, नाबिकल ।
बेल । नारियल ।

श्रीरमण, श्रीश—(सं पुं) विष्णु ।
विष्णु ।

श्रीहत—(वि) निष्प्रभ, निश्छिन्न
हृत् । शोभागा सम्पत्ति नाश ।
निष्प्रभ । निश्छिन्न ।

श्रुत—[वि] सुना, श्रुतिज्ञ,
सुना हुआ । प्रसिद्ध ।

श्रुति-पथ—(सं पुं) काण । वेद
शाखा निश्चित पथ ।
कान । वेद विहित मार्ग ।

श्रुवा—(सं पुं) होम बाबि, होम
चिह्न दिशा यत्न विशेष ।

काठकी वह कलछी जिससे हवन
के लिये आगमें धी छोड़ा जाता है

श्रेय—[वि] अहिनतकै डाल,
श्रेष्ठ, उत्तम ।

अधिक अच्छा । श्रेष्ठ । उत्तम ।

[सं पुं] शिष्ट, मङ्गल जनक,
मदाचार, यश ।

अच्छापन । कल्याण । मङ्गल ।

सदाचार । किसी कार्य के लिये
मिलनेवाला यश ।

श्रेयस्कर—[सं पुं] यशस्वलादी, कल्याण
कर ।

श्रेय देने या श्रेष्ठ बनानेवाला ।

श्रेष्ठी—[सं पुं] यशजन, गदांगर ।
महाजन । सेठ ।

श्रोत्र—(सं पुं) कान ।
कान ।

श्रोत्रिय—[सं पुं] वेद जना
ब्राह्मण, ब्राह्मण गन्धर्वादि विशेष,
वेद अध्याशन कर्त्ता ।
वेद वेदांगों का अच्छा ज्ञाता ।
ब्राह्मणों में एक जाति ।

श्रौत—(वि) कान, कान गन्धर्वादि
वेदोक्त, वेद गन्धर्वादि, वेद अङ्ग-
गवि ।

श्रुति सम्बन्धी । श्रवण सम्बन्धी ।
जो वेदों के अनुसार हो ।

श्लथ—(वि) शिथिल, ढिला, शूर्चल,
मिथिल इति शब्दाः ।
शिथिल । ढीला । घीमा ।
कमजोर ।

श्लाघनीय, श्लाघ्य—(वि) श्लाघनीय,
उत्तम ।

श्लाघा या प्रशंसाके योग्य । उत्तम ।

श्लाघा—[सं स्त्री] श्लाघा, श्लाघा ।
श्लाघा, कुटुंब वा कावो कर्त्ता ।
श्लाघाति ।

प्रशंसा । तारीफ । खुशामद ।

श्लिष्ट—[वि] श्लिष्ट, श्लिष्ट, श्लिष्ट-
लित, गन्धर्वादि ।

एक में मिला या जुड़ा हुआ ।

श्लेष युक्त ।

श्लीपद्—(सं पुं) डबिकूला रोग ।
फीलीपाव (रोग)

श्लील—(वि) उद्वेग, वि अङ्गीकृत नश्य,
डाल, श्लेष्म ।

उत्तम । शुभ ।

श्लेष—(सं पुं) आलिङ्गन, गन्धर्वादि,
आकर्षण, एकात्मिक अधिक
अर्थत एकात्मिक शब्दों का व्यवहार,
अर्थालङ्कार विशेष ।

संयोग । जुड़ना । एक शब्द के
दो या अधिक अर्थ होनेकी अवस्था
या भाव । साहित्यमें एक अलंकार ।

श्लेष्मा—(सं पुं) कफ ।
कफ ।

श्लेषच—[सं पुं] चण्डाल ।
चांडाल ।

श्वान—(सं पुं) कुत्ता ।
कुत्ता ।

श्वापद—(सं पुं) शिख-छावि

ठेडीया, जङ्ग ।

हिमं क पशु ।

श्वास—(सं पुं) उन्हाइ, उदकाइ

बोग ।

सांस । दमा नामक रोग ।

श्वेत—(वि) बगी, निर्मल ।

सफेद । निर्मल ।

श्वेतांग—(वि) बगी वरवरा माझ्हा ।

जिसके अंगका वर्ण श्वेत हो ।

(सं पुं) किरिडि ।

गोरी जाति का कोई व्यक्ति ।

ष

ष—वर्णमालाब एकूनि एषाब गण्थाब

आश्रव ।

वर्णमाला का इकतीसवाँ वर्ण ।

षंड (ढ)—(सं पुं) नपुंसक ।

नपुंसक ।

षट्—(वि) छः ।

छह ।

षट्कोण—(सं पुं) छः कोण युक्त ।

छः कोणोंवाला ।

षट्पद—(वि) छः ठेडीया ।

छः पदों या पैरोंवाला ।

(सं पुं) डोसोबा ।

अमर ।

षट्-राग—[सं पुं] संगीतब छः राग,

अनाइकत कबा काझिया ।

संगीत के छः राग । व्यर्थ का

भगड़ा या बलेड़ा ।

षडानन, षण्मातुर—(सं पुं)

कार्तिक ।

कार्तिकेय ।

षडज—(सं पुं) भावतीय संगीतब

संज्ञानव प्रथम स्वर ।

संगीतके मात स्वरोंमें से पहला ।

षड्वरस—(सं पुं) गिठा, 1 तता,

कैशा, जला, टेढा, खाव--एई

छविश्व आश्वाद ।

छः प्रकारके रस या स्वाद ।

षष्ठ—(वि) छत्र गङ्गाब, बर्छ ।

छठा ।

षाडव—(सं पुं) गान, बाग विशेष ।

—य'त केवल छ'टि अर हे थाके ।

वह राग जिसमें केवल छः स्वर
लगते हों ।

षाडव-ओडव—[सं पुं] गङ्गाब
बाग विशेष ।

(संगीतमें) एक राग ।

षाष्मासिक—(वि) छत्रश्री ।

छठे महीने होने या पड़नेवाला ।

षोडश—(वि) षोल, षोल गङ्गाब ।
सोलह ।

षोडशी—[सं स्त्री] षोल बछ्बीया-
बुद्धी ।

सोलहवीं । सोलह सालकी युवती

—(सं स्त्री) छेठ कर्म
विशेष ।

वह कृत्य जो किसी के मरने के
दस या ग्यारहवें दिन होता है ।

षोडशोपचार—(सं पुं) देवता
पूजाब षोलटि अङ्ग ।

पूजन के सोलह अंग ।

स

स—वर्णमालाब बहिन गन्धार
आश्रव ।

उपसर्ग कपे बुद्ध है, गेटे,
गहिते, गमान, अभिन्न, एक
आदि अर्थ करे ।

वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन ।
उपसर्ग रूपमें लगकर-सहित, एक
ही में का, पूर्वक आदि अर्थ
देता है ।

सं—(अव्य) 'सम' व गङ्गित कप ।
शोभा, गमान, उद्गृष्टता आदि
बुद्धावब वादे मन्त्र आगत
वाक्कृत उपसर्ग ।

एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले
शोभा, समानता, उत्कृष्टता
आदि सूचित करने के लिये
लगता है ।

संकट—(सं पुं) विपत्ति, दुःख,
आघात, ठेक बाधा ।

विपत्ति । दुःख । दर्द । जल या
स्थल के दो बड़े विभागों को बीच
से जोड़नेवाला तंग रास्ता या
संकीर्ण अंग ।

संकना—(क्रि अ) शंका अथवा
गल्फ कबा, डय कबा ।

शंका या सन्देह करना । डरना ।

संकर—[सं पुं] मिश्रण, दूई जातिव
मिश्रण, एठात मिश्रि होवा ।

दो चीजोंका आपसमें मिलना या
मिलकर एक हो जाना । दोगला ।

[बि] मशामेद ।

शंकर ।

सँकरा—[बि] गङ्गीन, ठेक ।

पतला और कम चौड़ा । तंग ।

संकर्षण—(सं पुं) टानि डेनिडा,

उठवटेल अना, शान खोवा ।

खींचना । हल जोतना ।

संकलन—[सं पुं] गन्धर्व कला,
गन्धर्व, गन्धर्व, गिनन ।
संग्रह या जमा करना । संग्रह ।
जोड़ ।

संकल्प—(सं पुं) इच्छा, निश्चय,
अवधारण, उद्देश्य, अतिष्ठा,
कल्पना, देवकर्म वा दान आदि
दिगुंते मन्त्राकार कवि अतिष्ठा
कवा, एते कार्यार मन्त्र ।
कोई कार्य करने का दृढ़ विचार ।
देव कार्य या दान आदि करने के
समय विशिष्ट मंत्र पढ़ते हुए
उसका दृढ़ निश्चय करना । इस
प्रकार पढ़ा जानेवाला मंत्र ।

संकल्पित—[वि] - गन्धर्वित,
गन्धर्व कवा ।
जिसका संकल्प किया गया हो ।

संकाश—(वि) निचिना, गमान,
उच ।
सदृश । बराबर समीप ।

संकीर्ण—(वि) गन्धर्व, ठेक, मूष
गन्धर्व, उदाहर, विपरीतार्थक ।
कम चौड़ा । संकुचित । 'उदार'
का विरुद्धार्थक । क्षुद्र । छोटा ।

संकुचित—(वि) कौटुम्हिक, चापकुम्हिक,
मन आग नवर्ग, ठेक, कुम्हिक, मन्त्र

शुद्ध ।
जिसे संकोच हो । मिकुड़ा
हुआ । तंग । जो औरोंके अच्छे
विचार ग्रहण न करे ।

संकुल—(वि) अविवर्ण, गन्धर्व,
गन्धर्व भक्ता, ठेक, गन्धर्व ।
संकीर्ण । परिपूर्ण । मिला हुआ ।
(सं पुं) शुद्ध, मन, अगन्धर्व
वाक्य ।
युद्ध । समूह । भीड़ । परस्पर
विरोधी वाक्य (वि-संकुचित)

संकेत—[सं पुं] गन्धर्व, विपद ।
संकट या कठिनता की अवस्था ।

संकेत—(सं पुं) इन्द्रित, ठावर,
चिन्ता, कोटनी कार्य कवा
बन्धु, किटिप, निखान, मन्त्र
अभिधार्थ ।
इंगित । शब्द का अभिधा शक्ति
से निकलनेवाला अर्थ । चिह्न ।
एकान्त स्थान ।

संकेत-लिपि—(सं स्त्री) आश्विन
गन्धर्व आन्ध्र गन्धर्व चिन आदि ।
अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त
संकेत (अ-शाट्टेह)

संकेतित—[सं पुं] गन्धर्व कवा,
याव विषये गन्धर्व कवा इच्छे ।

जिसके सम्बन्धमें संकेत किया जाय

संकोच—(सं पुं) कौंच, चाप खोरा, यागङ्गा, कूछित होरा, यनप लाञ्छन कवा ।

सिकुड़ने की क्रिया या भाव । आगा-पीछा । हल्की या थोड़ी लज्जा या शर्म ।

संकोचन—(सं पुं) कौंच वा चाप खोरा । सिकुड़ना ।

संकोचा—[सं पुं] गङ्गाकोट कना, लोकर । सिकुड़नेवाला । संकोच करने वाला ।

संक्रमण—[सं पुं] प्राय होरा कार्या, लगन, अटवण, यावड, एटा अटवण पंवा याग अटवण्टेल होरा, अश्व एटा पंवा याग एटा वागिण्टेल गनन । जाना या चलना । एक अवस्थासे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना । एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकारमें जाना ।

संक्षेपण—(सं पुं) संक्षिप्त रूप टैठगार कवा ।

संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करना ।

संखिया—(सं पुं) एविशव चोका निश, उभक्षातु विगश ।

एक सफेद उपधातु जो उत्कट विष है । (अं—आमोनिक)

संख्यान—[सं पुं] गणना, गिटाव, चोरा ।

आय-व्यय या लेन-देनका लिखा हुआ हिसाब (एकाउंट)

संग—[सं पुं] लग्न योग, मिलन, मिल ।

मिलना साथ रहना । आमक्ति । पत्थर ।

[किं वि] गैरत ।

साथ ।

संगत—(वि) गृह, उचित ।

ठीक बैठनेवाला या मेल खाने वाला ।

[सं स्त्री] लगत थका, केब-लोया डकत यादि थका ठाई, गंगर्ग । बाद-यत्र यादिदेव गंगी-उछर गशगडा कवा कर्ष ।

संग रहना । सोहबन । उदासी या निरमले साधुओंके रहने का

मठ । संसर्ग । संगीतमें वाद्य
आदि के द्वारा किसी कलाकार
का किया जानेवाला साथ ।

संगतरा—(सं पुं) सूत्रविद्या,
कमला छेडा ।

संतरा । नारंगी ।

संगतराश—[सं पुं] मिलन का
कटबौता, मिल काटोता अथवा
मिलन मूखि गटोता ।

पत्थर काटने या गढ़नेवाला ।

संग-दिल—[सं पुं] निर्धूब ।
कठोर हृदय ।

संगम—[सं पुं] मिलन, प्रेक्षे वा
अधिक तेजस मिलन ज्ञान, मूर्च्छा ।

मिलाप । मेल । दो नदियों का
मिलन स्थान । मैथुन ।

संग-मरमर—[सं पुं] मार्बल
प्राथव ।

एक प्रकार का चमकीला बढ़िया
सफेद पत्थर ।

संगर—(सं पुं) युद्ध, विपत्ति, निग्रह,
वेवा, युद्धव जमयत गज्ज वेव
वा शंटेव आदि ।

युद्ध । विपत्ति । नियम । मोरचा
या खाई ।

संगीन—[सं पुं] वज्रकृब आगठ
नगोवा छेडा तबोवा ।
वह बरछी जो बन्दूकके सिरेपर
लगायी जाती है ।

[वि] मिलने देतगारी । टोन ।
कठिन । मजबूत । डीव ।

पत्थर का बना हुआ । मोटा या
मारी । बिकट । भीषण ।

संग्रहणी—[सं स्त्री] ग्रन्थी वेवा ।
एक रोग, जिसमें पतले दस्त
आते हैं ।

संग्रहालय—[सं पुं] वाइ घर ।
ग्रन्थालय ।
जादू घर ।

संग्राहक—(सं पुं) ग्रन्थ कटबौता ।
गोटाउता ।

संग्रह करनेवाला ।

संग्राह्य—(वि) ग्रन्थ कविरनगोवा ।
संग्रह करने योग्य ।

संगट—(सं पुं) गमूह । डूँव ।
मिलन ।

समूह । युद्ध । मुठ-मेड़ । मिलन ।

संचास—(सं पुं) गमूह । गमूह ।
निबिड़ ग्रन्थाग । आवात ।
इता ।

समूह । रहने की जगह । संग ।
गहरी या भारी चोट । वध ।

संचाती—(सं पुं) वक्र । लगबीया ।
साथी । दोस्त ।

संचारना—(क्रि स) नाश कना ।
इठा कना । गंशब कना ।
संहार या नाश करना । मार
डालना ।

संचना—(क्रि स) जमा कना ।
गोठोवा ।
इकट्ठा करना ।

संचरना—[क्रि अ] गतिकना, लवचन
कना । विगमि पना । अचलित
होना ।

चलना या घूमना फिरना ।
फैलना । प्रचलित होना । (क्रि स-
संचारना)

संचार—(सं पुं) गति । गमन ।
सूर्याब अहेन बगित अद्वेष कना ।
पथ ।

गमन । फैलना । सूर्यका दूसरी
राशिमें प्रवेश । रास्ता ।

संचारिका—(सं स्त्री) दूती । दूरेकीया ।
दूती । कुटनी ।

(वि) गंशब कर्वांता (ज्ञी) ।
संचार करनेवाली ।

संचारी—(सं पुं) गच्छीउब बाग
विगेष । बगनिगिखिब वावे
शशी डारब गशयक डार ।
गीत के चार चरणोंमें से तीसरा ।
स्थायी भावको पुष्ट करनेवाला
भाव ।

(वि) गतिनीन । वयनकारी ।
संचरण या संचार करनेवाला ।

संचिका—[सं स्त्री] नधि ग्रीठि
दिग्या । नत्थी । (अं-फाइल)

संजात—[वि] उत्पन्न । जन्म ।
उत्पन्न ।

संजाफ - (सं स्त्री) कापोबब दहि
आदि । डलमि थका कापोबब
दहि ।

कपडे पर टंकी हुई झालर ।

संजीवन—(वि) पुनर्जीवित कना ।
जीयाइ थका । थका । नबक
विगेष ।

जीवन शक्ति उत्पन्न करने या
देनेवाला ।

[सं पुं] डालनवे जीवन
कटोवा । गंजीवन ।

बहुत अच्छी तरह जीवन बिताना ।
सह जीवन ।

संजीवनी—(वि) जीयादे वत्था ।

प्राण वक्ता कर्ता ;

जीवन देनेवाला ।

[सं स्त्री] सवा गाश्शक ओरित
कराव ऐवथ अथवा विष्ठा ।

मरे हुए मनुष्यों को जीवित
करनेवाली एक औषधि या विद्या ।

संजोना—(क्रि स) गट्ठावा, यलङ्कत
करा । छग करा ।

अलकृत करना । सजाना । इकट्ठा
या जमा करना ।

संज्ञा—[सं स्त्री] छेठना । छेत्तु
छान । बुद्धि । नाम ।

चेतना शक्ति । बुद्धि । ज्ञान ।
नाम ।

संज्ञा-भाव—(सं पुं) वीक शास्त्रा-
श्रुति प्राणैव गमाहित अवस्था ।
बौद्ध शास्त्रों के अनुसार वह
अवस्था जिसमें चित्त सदा समा-
हित रहता है ।

संज्ञा-हीन—[वि] गःछाशीन ।
अछान । मूर्ख । योवा ।
बेहोश ।

सँझला—(वि) गझिया । गक नाछु ।
संध्या । मँझले से छोटा ।

सँझवातो—[सं स्त्री] गझिया जलनावा
छाकि । गझिया गोंवा गौठ ।

संध्या समय जलाया जानेवाला
दीया । संध्या समय गाया जाने
वाला गीत ।

संज्ञा—(सं स्त्री) गझिया ।
संध्या ।

संड-मुसंड—(वि) शंकत-यातत ।
हट्टा-कट्टा । मोटा-ताजा ।

सडमना—(क्रि अ) छेक बाछावे देग
वक्क शेवा । विपदत गरा ।
तग जगहके बीचमें पड़कर फँसना ।
संकटमें पड़ना ।

सँडसा—(सं पुं) छिगटो । छेठपना ।
बड़ा चिमटा ।

सँडा—(वि) छेठे-भूठे । शंकत-यातत ।
हृष्ट-पुष्ट ।

सँडास—(सं पुं) पायथाना ।
जमीनमें गहरा गड्ढा खोदकर
बनाया हुआ पाखाना ।

संतत—(अव्य) गजाय । एकानिक्रम ।
लगातार । हमेशा ।

संतति—(सं स्त्री) गझान ।
सन्तान ।

संतप्त—(वि) गच्छ । शोकाकूल ।

गच्छां प्रोवा ।

अच्छी तरह या खूब तपा हुआ ।

परम दुखी ।

संतरण—[सं पुं] गोंडोब । जोंडूवि

पीब होवा ।

अच्छी तरह तैरना या तैर कर

पार होना

संतरा—[सं पुं] समर्थिबा । कयना

ढेडा ।

नारंगी ।

संतरी—(सं पुं) बथीया । छबरी ।

पथीया । धरबी ।

पहरेदार ।

संताप—(सं पुं) अलुबब श्रुं । मनव

दुश्च । शोक । वेखाब ।

ताप । मानसिक कष्ट या दुख ।

संतापना—(क्रि स) गच्छां प्रोवा

सन्ताप या कष्ट देना ।

संतुलन—[सं पुं] गमान कबा ।

भावजाय बथी । 'मान' आदि

स्थि बथी । गमता बथी ।

अपेक्षित तौल या भार बराबर

और ठीक करना या होना । दो

पक्षों का बल बराबर रखना या

होना ।

संतोषना—(क्रि स-क्रि अ) गच्छे

कबा वा होवा ।

संतुष्ट करना । सन्तुष्ट होना ।

संत्रस्त—[वि] भीत । भीडित ।

बाकूल ।

डरा हुआ । व्याकुल । पाडित ।

संत्रास (सं पुं) डर

डर ।

संदर्भ—[सं पुं] बचना । श्रवण ।

धवक ।

रचना । लेख । प्रसंग

सदर्शन—(सं पुं) भासना । छाया ।

अच्छी तरह देखना ।

संदल—(सं पुं) चन्दन ।

चन्दन ।

संदीपन—[सं पुं] उद्दीपन ।

उद्दीपन ।

संदूक—[सं पुं] चम्बूक । बाक ।

अ'न'माबी ।

पेटी । आलमारी ।

संदूकड़ी—(सं स्त्री) गक चम्बूक ।

छोटा सन्दूक ।

संदेश—(सं पुं) श्रवण । वाणी ।

गच्छां (ज्ञानाब मिठाई विमल)

समाचार । किसीके उद्देश्यसे कही

या कहलाई हुई कोई महत्वपूर्ण
बात । (अ-मेसेज) । एक प्रकार
की मिठाई ।

संदेशा—[सं पुं] शोधित खबर ।
जबानी कहलाया हुआ समाचार ।

सँदेशी—[सं पुं] खबर ले यादा
लोक । दूत ।
सन्देश ले जानेवाला । दूत ।

संदेहात्मक, संदेहास्पद—[वि]
गल्लेखनक ।
जिसमें या जिसके कारण सन्देह
हो ।

संदोह—[सं पुं] ग्राहीव शीबोदा
कार्य । प्रयत्न, शोध ।
दूष दुहना । किसी वस्तु का
समूचा मान या रूप । भुण्ड ।
ढेर ।

संधानना—(क्रि प्र) गच्छान कर्त्तव्य ।
लक्ष्यलक्ष्य कर्त्तव्य । जोबा-नगोदा
सन्धान करना । निशाना लगाना ।
जोड़ना ।

संपत् (सी)—[सं स्त्री] सम्पत्ति ।
सम्पत्ति ।

संपद्—[सं स्त्री] वैभव । लोभागा,
धन सम्पत्ति ।
वैभव । पूँजी । सीमाग्य ।

संपदा—(सं स्त्री) धन-सम्पत्ति ।
वैभव, वैभव ।

धन दौलत । ऐश्वर्य । वैभव ।

संपन्न—(वि) धनी । गिद्ध । युद्ध ।
जैत ।

सिद्ध । युक्त, सहित । धनी ।

संपात—(सं पुं) गमागम । विच्छेद
प्रवा । प्रतन । एकलगे प्रवा
वा मिला । गमन । अंतर्बोदा ।

समागम । गिरना विद्युत्
(आदि का) गमन । हटाया जाना

संपाद्य—(वि) सम्पादन वा प्रवि-
चालना कवि नगैश [अभिहित] ।
कोनो बेथी, कोन वा फेदापि
अंकित नगैश अतिष्ठ ।

जिसका संपादन करना हो । वह
बात या सिद्धान्त जिसे विचार-
पूर्वक ठीक सिद्ध करने की आव-
श्यकता हो ।

संपुट—(सं पुं) अंशलि । बाटि ।
पात्र के आकार की कोई वस्तु ।
डिब्बा । अंजुली ।

संपुटी—(सं स्त्री) काप, पित्रना ।
प्याली ।

संपृक्त—(वि) मिश्रित, गन्धुल, गन्धक ।

जिसका या जिससे सम्पर्क हो ।

सँपेरा—(सं पुं) गौश नरुवा माशह सांप पालनेवाला । मदारी ।

संपोला, संपोलिया—(सं पुं) गौश गन्ध पोलालो । सांप का बहुत छोटा बच्चा ।

संप्रति—(अव्य) वर्तमाने, एतिश्रा, गदाशत । इस समय । अभी ।

संप्रद—(वि) दिठुंठा । देनेवाला ।

संप्रदान—(सं पुं) दान, गन्धदान दिया कार्य । दान देने की क्रिया या भाव ।

संप्राप्त—(वि) उपश्रित, प्राप्त । उपस्थित । प्राप्त । घटित ।

संप्रेक्षण—[सं पुं] शिवाव आदि परीक्षा कवा कार्य ।

संप्रेक्षित—(वि) शिवाव परीक्षा कवा, शोवा ।

जिमकी जांच हो चुकी हो । आय व्यय आदि का लेखा जांचने का काम । (अं-आडिटिंग)

संबद्ध—[वि] गन्ध युक्त, गन्धित, वक्ता वा लग्न गठोवा ।

जिससे सम्बन्ध हो या हुआ हो । बँधा या जुड़ा हुआ । सम्बन्ध युक्त ।

संबोधना—(क्रि अ) गन्धोधन कवा । वृक्षावा-वृक्षावा । सम्बोधन करना । समझाना-बुझाना ।

संभरण—[सं पुं] डबन पोषण वारुश अथवा गोमयी । भरण पोषण आदि की व्यवस्था या सामग्री ।

संभरना, संभलना, सम्हालना—(क्रि अ) कर्तव्य निर्वीह कवा, वक्त कवा, छावा, गावधान वा जमीनता बांशि काम कना । किसी बोक आदि का रोका या किसी कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना । किसी आधार या सहारे पर रुका रहना । सावधान होना । चंगा होना ।

संभव—(सं पुं) उपवा ।

उत्पत्ति ।

(वि) जगद्वा, श'व पवा, गल्ल ।

उत्पन्न जो हो सकता हो ।
मुमकिन ।

संभार—(सं पुं) गायत्री, भूँ बाल,
तेराब होरा, गवाशब वश, धन
गम्पति, डबन-पोषण, चोरा-
मेला, बारब, चेतना ।

मंचय । एकत्र करना । भण्डार ।
तैयारी । साज-सामान । सजा-
वट । धन सम्पति । पालन-
पोषण । देख रेख । इत्तजाम ।
चेतना ।

संभारना—[क्रि स] चछाला, श्रवण
कना, गेरा कना, खोरा ।

संभालना । स्मरण करना ।
सेवन करना ।

संभालना—[क्रि स] दाखिद
लोरा, दमन कना, वन कना,
पनिब निदिश, बक्का कना,
पालन पोषण कना, दाखिद
निर्वाह कना ।

भार ऊपर लेना । रोक कर
बग में रखना । गिरने न देना ।
रक्षा करना । पालन-पोषण या
देख रेख करना । ठीक तरह
से किसी कार्यका निर्वाह करना ।

संभाला—[सं पुं] बड़ाब आग-
गुइरुत अनप चेतना अश ।

मृत्यु के पहले कुछ चेतनता सी
जाना ।

संभावित—(वि) गछावा, इव
परा, होराब गछावाना थका,
आडिगानी ।

जिसके होने की सम्भावना हो ।
स्वाभिमानी ।

संभाव्य—(वि) जब परा, गछावा ।
जिसके होने की सम्भावना हो ।

संभाषण—[सं पुं] कथन, बात
बोल कना कार्य, कथापकथन ।
कथोप कथन । बात चीत ।

संभूत—(वि) उपका, होरा,
अथ, उपपत्ति होरा ।

एक साथ उत्पन्न होनेवाले ।
उत्पन्न । सहित ।

संभूय—(अव्य) लग लागि, महा-
यतावे । युटिया ।
सामे में ।

संभूय-समुत्थान—[सं पुं]
अशीदाबी बारगायब परा होरा
आय ।
सामे में होनेवाला रोजगार ।

संभोग—(सं पुं) श्रुत ङोर्ग, आश्रय अश्न, मैथुन, बतिक्रिया अच्छी तरह होनेवाला भोग या व्यवहार । रति-क्रीड़ा, मैथुन ।

संभ्रम—(सं पुं) आनन्द, वाकूलता लवा धर्पवा गन्धान । दीङ्-धूप । व्याकुलता । गौरव ।

संभ्रांत—(वि) मग्न, गन्धान प्राप्त योग्य । भय धोरा । भ्रम में पड़ा या घबराया हुआ । सम्मानित ।

संयमन—[सं पुं] गन्धमव भाव वा क्रिया, (मन आदिक) बाधा दि बन्धा ।

सयम करने की क्रिया या भाव । (मन आदि) रोकना ।

संयमित—(वि) गन्ध, गन्धन थका, बन्धित होरा ।

जिस पर किसी प्रकार का संयम हो । संयम के द्वारा रोका हुआ ।

संयुक्त कुटुम्ब, संयुक्त परिवार—
[सं पुं] एकाम्रवर्द्धी परिवार, एकजने थका परिवार । वह कुटुम्ब या परिवार जिसमें

भाई भतीजे सब मिल कर रहते हों ।

संयुत—[वि] युक्त थका । जुड़ा या लगा हुआ ।

संयोग—[सं पुं] मिल, गन्धक, गन्धोग, योग । मेल । सम्बन्ध । दो या कई वातो का अचानक एक साथ होना ।

संयोजक—(सं पुं) गिलाउंठा, युक्त कर्वाँठा । गन्ध, गन्धित आश्वासक ।

जोड़ने या मिलानेवाला । सभा, समितियों का आह्वायक ।

संरक्षक—[सं पुं] चोरा-गिला, बन्धा कर्वाँठा, यत्तिभावक । देख रेख या रक्षा करनेवाला । अभिभावक ।

संरक्षण—[सं पुं] बन्धा कर्वा, (विपत्ति, कृति आदिब पन्धा) बन्धा, चोरा मेला, अधिकार ।

हानि विपत्ति आदि से बचना । हिफाजत । देख रेख । कब्जा ।

संरक्षित—[वि] बन्धित, गन्धकवत् थका ।

सम्माल कर रखा हुआ । अपनी
देख-रेख या संरक्षण में लिया
हुआ ।

संज्ञाप—[सं पुं] कथोपकथन ।
बातचीत ।

संज्ञेख—(सं पुं) आश्रितः आश्र-
यिक छिठि अथवा अश्रित कागल
पद ।

वह पत्र या लेख जो कानून के
क्षेत्र में प्रामाणिक माना जाता
हो ।

संवत्सर—(सं पुं) বছर ।
वर्ष । साल ।

संवरण—(सं पुं) निर्वीचन कबा,
दूर कबा, गमाथ बा गेव कबा,
विचार बा इच्छाक प्रमन कबा ।
नूकोबा ।

चुनना । दूर करना । समाप्त या
अन्त करना । विचार या इच्छा
दबाना । छिपाना ।

संवरना—[क्रि अ] वेशा वख
डाल होबा, ठिक होबा ।

बिगड़ी हुई चीज का फिर से
सुधरना, बनना या ठीक होना ।

[क्रि स] मनत गेलोबा ।
स्मरण करना ।

संबर्द्धन—[सं पुं] बड़ा, बृद्धि, होबा,
पोलन-पोषण ।
बढ़ना । पालना । बढ़ाना ।

संवाद—(सं पुं) कथोपकथन, श्रव,
विवरण, दाबी ।
वार्तालाप । खबर । विवरण ।

संवारना—(क्रि स) ठालके गछोबा,
ठिक कबा, डाल कबा, ठिक-
ठाकटैक बथा ।

दुरुस्त या ठीक करके काममें लाने
के योग्य बनाना । सजाना ।
काम बनाना ।

संविदा—(वि स्त्री) ठिका, छुई ।
ठीका । शर्त । (अ-कंद्रे कट)

संवृत—(वि) गुथ । छानि दि बथा ।
नूकाई बथा बन्धित । अम्पष्टे ।
ढका या छिपा हुआ । रक्षित ।

संवेग—(सं पुं) तीव्र उद्वेगना,
कोड, तीव्र गति, उग्रता,
अचञ्छता, गौडला, आतुर अवस्था ।
मन अशांत कबा आवेग अथवा
अवस्था ।

तत्र उत्तेजना, क्षोभ, भय, तीव्र
वेग, जोर, उप्रता, प्रचण्डता,
शीघ्रता, आतुरता, बेचैन करने
वाली पीडा ।

संवेदन—(सं पुं) छान, अन्वृद्धि,
खोजना, अन्वेषण करना ।

ज्ञान । अनुभूति, सूचित करना,
प्रकट करना ।

संवेदना—(सं स्त्री) यश्रुद्धि,
गशश्रुद्धि । अन्वेषण करना ।
अनुभूति । सन्नानुभूति । प्रकट
करना ।

संशय—[सं पुं] आशङ्क । गल्मश,
छय ।

आशङ्का । सन्देह ।

संशयात्मक—(वि) आशङ्कात्मक ।
गल्मशशङ्क ।

जिसमें कुछ संशय या सन्देह हो ।

संशयात्मा—(सं स्त्री) गल्मशशङ्क
आत्मा वा आत्मा ।

जिसके मनमें संशय या सन्देह
बना हुआ हो ।

शंयो—[वि] गल्मश शब्दनाश्रित
गच्छि । गल्मश ।

जो प्रायः संशय या सन्देह
करता हो ।

संश्लिष्ट—[वि] गल्मश । गल्मश ।
मिला । सटा या लगा हुआ ।

संश्लेषण—(सं पुं) लग्न लक्षण, वा,
मिलन शब्दोदा, गल्मश करना ।
एकमें मिलाना, लगाना या
सटाना । मिलान करना ।

संसरण—[सं पुं] गन्त । लग्न ।
गन्त । गन्तव्य । गन्तव्य । गन्तव्य ।
गन्तव्य ।

चलना । रास्त । गन्तव्य जीवन ।
गन्तव्य और गन्तव्य ।

संसार-यात्रा—(सं स्त्री) जीवन-
निर्वाह । जीवन ।
जीवन निर्वाह । जिन्दगी ।

संस्पृष्ट—(सं स्त्री) स गन्तव्य आत्मा-
गन्तव्य कार्य ।
गन्तव्य ।

संस्पृष्ट—[वि] गल्मश । (एकलक्षण
गन्तव्य) गन्तव्य । गन्तव्य ।
किसीके साथ मिला या लगा
हुआ । किसीके अन्तर्गत आया
हुआ ।

संस्पृष्टि—[सं स्त्री] लग्न लक्षण
शब्दोदा । गल्मश । गल्मश ।
मिलन । गल्मश । निर्वाह ।
गल्मश । गल्मश । निर्वाह ।

किसीके साथ होनेवाली सृष्टि, उत्पत्ति या आभिर्भाव । लगाव । मिलावट । मेलजोल । साहित्यमें एक अलंकार ।

संस्कार—(सं पुं) गणनाधन वा षोडशकार्य । जातकर्षण प्रवा अष्टाष्टि क्रियाटेल हिन्दू धार्मिक कृता । पूर्वकर्म्य कर्म्य वागना वा श्रेष्ठा । गणकार ।

सुधार । हिन्दुओं के कुछ विशेष कृत्य । मृतक की अंत्येष्टि क्रिया । मन, रुचि आदि को परिष्कृत और उन्नत करने का कार्य । पूर्वजन्मों के कृत्य की वासना ।

संस्कारो—[वि] कोनो प्रकारक गणकार करवाता । गणकार वा गण गुरु लोक ।

वह जो किसी प्रकारका संस्कार करता हो । वह जो अच्छे संस्कारों या गुणोंसे युक्त हो ।

संस्कृत—[वि] वृद्ध । निर्धन वा पवित्र कर्वा । भाल कर्वा ।

जिसका संस्कार किया गया हो । परिमार्जित । सुधारा और ठीक किया हुआ ।

[सं स्त्री] भावतन्त्रवर्ध आर्यावाडिब आठौन गतिताक भाव ।

भारत की प्राचीन आर्य भाषा ।

संस्कृत—[सं स्त्री] विज्ञा, निष्ठा आदिब प्रवा पोवा उत्कर्ष । कृष्टि । शक्ति । गणकार । शुद्धि । संस्कार । किसी व्यक्ति या राष्ट्र की परम्परा से आयी हुई वे सब बातें जो उसके बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं ।

संस्था—(सं स्त्री) वादस्था । उपाग । बर्ध्याप । गमूह । गमाव । गमिति । अतिष्ठान । स्थिति । व्यवस्था । मर्यादा । समूह । संबंद्धित समाज या मण्डल । प्रतिष्ठान ।

संस्थान—(सं पुं) गणति । भाल उपाग । आश्रय । अतिष्ठ । देश । अमीनारो । गुरुवार कला आदिब उत्कर्ष वादव स्थापित गडा वा गमिति ।

स्थिति । स्थापन । अस्तित्व । देश । जागीर । कला आदि की उन्नतिके लिये स्थापित समाज ।

संस्मरण—(सं पुं) कोनो व्यक्तिब यवगैर बटना वा भाव उत्प्रेष

कवा ।

किसी व्यक्ति के सम्बन्ध की स्मरणीय घटनाएँ या उनका उल्लेख ।

संहृत—(वि) गन्धुक । गहन । गन्धित । खूब मिला या सटा हुआ । कड़ा । घना । मिलाकर एक किया हुआ । संगठित ।

संहति—(सं स्त्री) एक जगह थका । बाणि । प्रेम । एकता । गन्धित । डाल उपाय ।

बहुतों को मिलाकर एक करना । राशि । घनता । एकता ।

संहारना—(क्रि स क्रि अ) खिन्न कवा वा होवा । श्वंग कवा । संहार करना या होना ।

संहारना—(क्रि स) छान्नि-पिठि नाइकिया कवा । गन्धार कवा । संहार या नाश करना । बध करना ।

संहित—(वि) एक जग कवा वा होवा । दूठिनि अना । गन्धित । इकट्ठा किया हुआ । बटोरा हुआ । संकलित ।

संहिता—(सं स्त्री) गन्धित । मिन्न । गन्धि (गन्धक) ।

वेदव गन्ध गन्धि । गन्ध आनि श्रितिये कवा नाइ । वेदव कर्म-काण्ड विवरण कवा नाइ । निग्न वा आइन आनिव गन्ध । संहित या मिले हुए होनेका भाव । मेल । व्याकरणमें संधि । बहु ग्रन्थ जिसके पद-पाठ आदि क्रम परम्परासे एक निश्चित रूप में चला आ रहा हो । अधिकारिकी द्वारा किया हुआ नियमों, विधियों आदिका संग्रह । (अं-कोड)

सकत—[सं स्त्री] वज्र, पकड़ि, गन्धित ।

बल । ताकत । सम्पत्ति ।

[क्रि वि] योमान दूर गन्धव, यथाशक्ति ।

जहाँ तक हो सके । यथा शक्ति ।

[सं पुं] नाइ । शाक्त ।

सकता—[सं पुं] गूँछ । बाग (वृक्ष), छकता, यतिभंग मोख । बेहोशी या उसकी बीमारी । स्तब्धता । (कवितामें) यति । यतिभंग का दोष ।

सकना—(क्रि अ) गन्ध होवा, योग्य होवा, गन्ध होवा,

मन ठ छय आदि छारि ७५५।

कुछ करनेमें ममर्थ होता । कुछ करने के योग्य होता । मनमें

डरना, घबराना या संकुचित होना । [प्रेरणा०-सकाना]

सकपकाना, सकपकाना—[क्रि अ]

हेतुःसुतः कर्त्ता । याचवित् दै
इतिग्न मि'अत्न छावा ।

सकपकाना आश्चर्य से इधर
उधर देखना भौचक्का होना ।
चौकना ।

सकरना—(क्रि अ) चौकाव करना।

सकाग या माना जाना ।

सकलाती (वि) उपशान्त उप-

शान्ति द्वाद भाव, मन्त्रमलर ।

उपहारमें देने योग्य । बहुत अच्छा ।

सकसना [क्रि अ] भार्ता होवा

छालत पत्नी, दशर ५६७ पत्नी ।

मयभीत होना । अडना । फँसना ।

सकाना—[क्रि अ] गदगद करना,

हेतुःसुतः कर्त्ता, छव कर्त्ता द्रुवी
होवा ।

सन्वेह । करना । हिचकना । डरना ।

दुखी होना ।

सकाम—(सं पुं) कामना कवि कर्त्ता

काव, कायुक, श्रेयो ।

वह जिसके मनमें कामना हो ।

वह जिसकी कामना पूरी हुई
हो । कामुक ।

सकारना—[क्रि स] चौकाव करना,

गञ्ज कर्त्ता, मना ।

स्वीकार करना ।

सकारात्मक—(वि) चौकति यथावा

गञ्जति चूक ।

स्वीकृति या सहमति सूचक ।

सकारे—[क्रि वि] दा उ भूवा,

उठादेउठादेक, ताताताति ।

मरेरे । जल्दी ।

सकुचना—(क्रि अ) लाज वा गं-

कोच करना, छाप वा कौच

प्रीति, वक्क होवा ।

लज्जा या संकोच करना । सिक्कु-

इना । बन्द होना ।

सकुचाई—[सं स्त्री] गदगद,

लाज ।

संकोच ।

सकुचाना—[क्रि अ] च, कर्त्ता ।

संकोच करना ।

[क्रि स] गदगदित करना,

मञ्जित करना ।

सकुचित करना । लज्जित करना ।

सकृत—[अव्य] अव्यय ।

एकवार ।

सकेत—[सं पुं] गन्धकृत, रेखित ।

विशेष ।

संकेत । विपत्ति ।

(वि) गङ्गीर्ष, गङ्गुच्छित ।

तंग । संकुचित ।

सकेलना—(क्रि स) छमा कबा,
गामबि लोवा, एके लथ कबा ।

जमा करना । समेटना । इकट्ठा
करना ।

सकोचना—[क्रि अ] गन्धकाष्ठ कबा ।
संकोच करना ।

[क्रि स] केँछि लोवा ।

मिकोडना ।

सका—(सं पुं) चाशबादेब गङ्गा
गोनादेब पानी कऱियाई बिउबन
कराँता ।

मशक में पानी भरकर लोगों को
पिलाने या घर घर पहुँचानेवाला ।

सक—(सं पुं) ऐल, येव ।

इन्द्र । बादल ।

सकरा—(वि) पानीदेब गिखोवा
शङ्ख ।

जलके = प्रागस पका हुआ भोजन

(दाल, भात, रोटी आदि)

सखरी—[सं स्त्री] कैँछा शङ्ख ।

दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई ।

सखुआ—(सं पुं) शाल गछ ।

शाख या शाल नामक वृक्ष ।

सखुन—[सं पुं] कथन, बचन,
डेङ्गि, काबा ।

कथन । उक्ति । काव्य ।

सखुन-तकिया—[सं पुं] मृष्टा-
दोष मृच्छक मक ।

बह शब्द जो बातचीत में कुछ
लोगों के मुँहमें प्रायः निकला
करता है ।

सख्त—(वि) होन, मुझिल, कठिन ।
कठोर । मुश्किल । कठिन ।

(क्रि वि) खूब वेङ्गि ।

बहुत अधिक ।

सख्य—(सं पुं) गन्धि, मित्रता,
नबधा डङ्गिन् एति विडाथ ।

सखा का भाव । मित्रता । नबधा
भक्ति में से एक भेद ।

सगन्धग—[वि] तिङ्गि-बुबि, बबटैक
तिङ्गि, प्रविङ्ग, प्रविगुर्व ।

भीग कर तरबतर । द्रवित ।
परिपूर्ण ।

[क्रि वि] ताबाताबटेक, त५-
क५।९ ।

जल्दी से । तुरन्त ।

सगवगाना—[क्रि अ] बबटेक तिता,
छयकित्त (शोरा) ।
बहुत भीगना । चकित होना ।
(क्रि स) भानीबे बबटेक तिता।
याछबित्त (शोरा) ।
गीला या तर करना । चकित या
भीचक्का करना ।

सगारा—(वि) गकला ।

सारा ।

(सं पुं) गूधूबी, दप, विल ।
तालाब । झील ।

सगा—[वि] गट्हाप्रब, निछू पविशानब ।
सहोदर । अपने ही कुल या परि-
वार का ।

सगाई—(सं स्त्री) बनिष्ठ पानिवाबिक
गवक्ष, विशाव बट्नावख कबा।
विशवा बा पविताय्काव भूष विवाह
गवक्ष ।
घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्ध ।
विवाहका निश्चय, मंगनी । विधवा
का पुनर्विवाह । रिश्ता ।

सगुन—(सं पुं) ग५७१, उ७लक५ ।
शकुन ।

सगुनिया—(सं पुं) उ७ल लक५ बा
गुइरुं आदि छाई मिठुता ।
शकुन बतानेवाला ।

सगुनीती—[सं स्त्री] गुइरुं आदि
छोरा काम बा क्रिया, गल्लाछबन ।
शकुन विचारने की क्रिया या
भाव । मगलाचरण

सगोती, सगोत्र, सगोत्रिय—
(सं पुं) गट्हा७, एकडे व५७७
उप७७ ।

जो एक ही पूर्वजसे उत्पन्न हुए हों ।
एक ही गोत्रके लोग ।

सगगढ़ - (सं पुं) बोषा कठि७७ा
गाडी वि७७७ ।

बोझ ढोनेकी एक प्रकारकी गाड़ी।

सघन—(वि) गघन, घन ।
घना । ठोस ।

सच—[वि] ग७७, आ७ल, ठिक ।
सत्य । वास्तविक । ठीक ।

सचन—[क्रि स] गक७७ कबा,
गन्पूर्व कबा, निर्माण कबा ।
संचय या इकट्ठा करना । पूजा
करना । निर्माण करना ।

सचमुच—(अव्य) आसलठे,
गँठाटेकरे ।

वास्तव में । अवश्य ।

सचरना—(क्रि अ) गंधाविड होरा,
गिँठबडि होरा ।

संचरित होना । फैलना ।

सचराचर—(सं पुं) चर याक
अचर गकला आनी अथवा वड ।

संसारके चर और अचर सभी
प्राणी और पदार्थ ।

सचल - (वि) लवि-ठवि कुवा, ठकल,
गतिनैल ।

चलता हुआ । चंचल । जगम ।

सचाई—[सं स्त्री] गठाठा,
यथार्थता ।

सत्यता । यथार्थता ।

सचान - (सं पुं) वाछ अथवा नैन
चबाई ।

बाज पक्षी ।

सचिंत—(वि) छिछुा बूछ, छिछिड ।
चिंता युक्त ।

सचु—(सं पुं) सूख, आंवाय, अग-
ब्रता । गच्छाव ।

सुख । आराम । प्रसन्नता ।
संतोष ।

सचेत—[वि] गावधान, छेठना
थका ।

जो चेतना युक्त हो । सावधान ।

सच्चा—[वि] अकूठ, गठावादी,
आठल ।

सत्यवादी । यथार्थ । असली ।

सच्चाई—[सं स्त्री] गठाठा ।
सत्यता ।

सज - [सं स्त्री] गच्छावा, मोछा,
गोकर्षा ।

सजावट । बनावट । शोभा ।
सुन्दरता ।

सजग—[वि] आअठ, आगवक,
गावधान ।

जाग्रत । सावधान ।

सजगता—(सं स्त्री) गठकता,
आगवकता ।

होशियारी । सतर्कता ।

सज-धज—[वि] गाजि काँठ,
गाछान-काटान ।

बनाव सिंगार । सजावट ।

सज्जन—(सं पुं) बानी, अथवा,
पनि । प्रियतम ।

सजना—(क्रि स क्रि अ) गच्छावा,
गच्छिड होरा ।

सज्जन होना या करना ।

सञ्ज्ञ—(वि) प्रानौ धका । छकू-
प्रानौद्वय प्रुप ।

जलसे युक्त । आमुसे भरा ।

सजा—[स स्त्री] १ छि, ८७, कावा-
प्रावत वक्क कवि थोवा नाछि ।
दण्ड । कारागारमे बन्द रखने का
दण्ड ।

सजाई—(सं स्त्री) गछावा कार्या
वा भाव वाचक प्रिया वानछ ।
सजाने की क्रिया, भाव या मज
दूरी ।

सजात—(वि) गछावा, एकलक्षण
जन्म होवा ।
जो साथमे उत्पन्न हुआ हा ।

सजाति (तीय)—[वि] अजाति,
एक जाति, एक मन, एक उच्छेद
पात मिलित देश होवा एक-
मन ।

एक ही जाति या वर्ग के । एक
ही प्रकृति, स्वरूप या प्रकार के ।

सजान—[स पुं] जना, छकू ।
जानकार । चतुर ।

सजाना—(क्रि स) गछावा वा
अलंकृत कवा ।
सज्जित या अलंकृत करना ।

सजा-याफा—(वि) कावागाव
नाछि थोवा टाक ।

जिसे कैदकी सजा मिल चुकी हो ।

सजावट—(सं स्त्री) गछान ।
सजे हुए होनेकी क्रिया या भाव ।

सज्जीला—(वि) तबक-डबकटेक
थाटकाता, सुन्दर ।
सज धजसे रहनेवाला । सुन्दर ।

सजोव—[वि] खीरित धका खीर
धका, खीर ।

जिसमें जीवन या प्राण हो ।
जिसमें ओज या तेज हो ।

सटक—(सं स्त्री) नाट्य नाट्य छुटि
थोवा, पाठन वा गव नाठि,
शेकाव नलिछा ।

धीरेसे चल देना । पतली छड़ी ।
हुक्का पीनेकी लचीली नली ।

सटकना—[क्रि स] बने बने
जाँडवि थोवा ।
चुपचाप या धीरेसे सिसक जाना ।

सटकाना—[क्रि स] नाठि वा
छाटकेव मवा ।

छड़ी, कोड़े आदि से मारना ।

सटकारा—[वि] मिशि आरु नौषल
(छलि)

चिकना, मुलायम और लम्बा
(बाल)

सटकारो—[सं स्त्री] प्रथम पाठन
नाछि ।

पतली लम्बी छड़ी ।

सटना—(क्रि अ) नाचि धका,
मावपिठि शोबा एठा नटगावा ।

चिपकना । मारपीट होना ।

बिलकुल लगे रहना । [प्रेरणा०—
सटाना]

सट-पट—[सं स्त्री] अ'ब उ'ब
अनाइकठ कथा कोदा, गःटकाठ,
छय ।

इधर उधर की व्यर्थ की बातें या
काम । संकोच । घबराहट ।

सटर पटर—(सं स्त्री) गःटकाठ, छय ।
सट पट ।

[वि] मिश्रटैकटय, छुछ ।
व्यर्थका, निकम्मा या तुच्छ ।

सटीक—[वि] ब्याबाव गेटेठ,
एकबाटे ठिक, याठन ।

टीका या व्याख्या सहित । बिल-
कुल ठीक ।

सटोरिया, सट्टेबाज —[मं पुं]
खुब नाछव यागाठ बिपपव

यागका धकाटो दछावव वछ
किटनाठ ।

सट्टा करनेवाला ।

सट्टा—(सं पुं) अठिछा पत्र,
छेबाव आदि, विक्री पत्र, किना-
वेबाव एठि विपपव अकिषा ।
इकरार नामा । खरीद बिक्री का
एक प्रकार ।

सट्टा बट्टा—(नं पुं) मिल-टोलन,
छडुबानी, छुटे कोशल, अछाय-
गश्क ।

मेल मिलाप । चालबाजी ।
अनुचित सम्बन्ध ।

सठियाना—(क्रि अ) नाछि वछन शोबा ।
बु'ग शोबाव कलित बुद्धिहीन
शोबा ।

साठ वर्षका होना । बुढ़े हो जाने
पर बुद्धिका ठीक काम न देना ।

सङ्गन—[सं स्त्री] पँछा वा गेलन ।
सङ्गने की क्रिया या भाव ।

सङ्गना—(क्रि अ) गेलि योदा,
पँछा उठानि योदा, हीन अव-
स्था पवि धका ।

किसी चीजमें ऐसा बिकार आना
जिससे उसके अंग गलने लगें और
उसमें दुर्गन्ध आने लगे । हीन

अवस्था में पड़ा रहना । [प्रेरणा-
सङ्गाना]

सहाय्य—[सं स्त्री] गेला, गँठाव
दुर्गन्ध ।

किसी चीजके सङ्गनेपर उसमें से
आनेवाली दुर्गन्ध ।

सहाव—(सं पुं) गेला, पठा कार्य ।
सङ्गने की क्रिया या भाव ।

सह्यत—[वि] गेला, निकटे ।
सड़ा हुआ । निकृष्ट ।

सह—(सं पुं) बन्ध, गन्ध ।
बन्ध ।

[वि] गता, गच्छन, निता, शुद्ध ।
सत्य । सज्जन । नित्य । शुद्ध ।

संतत, सतत—(अव्य) गदाग,
एकबादर ।
सदा । हमेशा । लगातार ।

सत-फेरा—(सं पुं) गजुपदी,
विश्रांत पदी-कड़ाई गात पाक
एकलग्न गश्न कबा कार्य ।
सप्तपदी । बिबाहके अवसर पर
सात भाँवर देना ।

सतर—(सं स्त्री) देखा, छेनी,
छाँटा (छो पुरुष) । पतना ।
रेखा । पंक्ति । स्त्री या पुरुषका

गुप्त इन्द्रिय । ओट ।

[वि] टेबा, थंडाल ।

टेढ़ा । क्रुद्ध ।

(क्रि वि) ताबाताबिटक ।

शीघ्रता पूर्वक ।

सतरौहों—[वि] क्रोशित, थंडाल,
थंडावर ।

कुपित । कोप-सूचक ।

सत-लड़ो—[सं स्त्री] गाउनवी माना ।
सात लड़ों की माला ।

सतह—[सं स्त्री] कोटना बखर उपर
अर्थ वा तल भाग ।

किसी वस्तुका ऊपरी भाग या
तल ।

सताना, सतावना—(क्रि स) कटे
दिया, बिबडि दिया,
पीड़ित करना ।

सतुआ—(सं पुं) लका रुटे-
गटे बापि माशर छवि ।
सत्तू ।

सतून—(सं पुं) लुप्त ।

खम्भा ।

सदृश्य—[वि] गिपागा बूझ,
छुषा बूझ । तुष्णा से युक्त ।

सतो गुण—(सं पुं) गावक ७५ ।
सत्व गुण ।

सत्कार—[सं पुं] गवा ७५, गवान ।
आतिरदारी । सेवा ।

सत्त—(सं पुं) खीरनी भक्ति, खीर
गती, कोना पदार्थ पदा
७५, गवा ७५ ।
किसी पदार्थमें से निकाला हुआ
उसका सार भाग । जीवनी
शक्ति । स्त्रीका सतीत्व ।

सत्ता—(सं स्त्री) अखि, शक्ति,
भक्ति, गार्वा, अधिकार भक्ति ।
अस्तित्व । भाव । हस्ती । शक्ति ।
सामर्थ्य । वह शक्ति जो अधिकार
बल या सामर्थ्यका उपयोग करके
अपना काम करती हो । (अं—
पावर)

सत्ताधारी—[सं पुं] अधिकारी,
अधिकार भक्ति भक्ता लोक ।
जिसके हाथमें सत्ता हो ।

सत्यता—[सं स्त्री] गता ।
सचाई ।

सत्य-प्रतिज्ञ—[वि] गृह अखि ।
अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहनेवाला ।

सत्य-लोक—(सं पुं) गतावन
वर्ग निरुद्ध ७५, गवा,
लोक ।

सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्म
रहता है ।

सत्य-संध—(वि) गतावन ।
अपने वचनका पालन करनेवाला ।

सत्यानाश—(सं पुं) गर्वनाश ।
सर्वनाश । बरबादी ।

सत्यानाशी—(वि) गर्वनाश
करनेवाला ।
पूरी बरबादी करनेवाला

सत्यापन—(सं पुं) गतावन ।
ठीक वृत्ति को, गतावन ।
मिलान कर या जांचकर यह
सिद्ध करना कि यह ठीक है ।
(अं—सर्टीफिकेशन, वेरीफिकेशन,
एटेस्टेशन)

सत्र—(सं पुं) गतावन, वि
गतावन, विगतावन, विगतावन
विगतावन । कार्यकाल । निर्दिष्ट
गतावन ।

यज्ञ । मकान । वह स्थान जहाँ
गरीबों को भोजन बाँटा जाता
है । वह नियत काल जिसमें कोई

कार्य एक बार आरम्भ होकर
कुछ समय तक बराबर होता
रहता है। [अं-सेसन]

सत्त्व—[सं पुं] अखिब, गाव,
छतना, बीरनी शक्ति, डोल काम।
सत्ता। अस्तित्व। सार। चैतन्य।
जीवनी शक्ति। अच्छा काम।

सत्त्वर (क्रि वि) गैरख, उ०कना०
शीघ्र।

सत्संगति—(सं स्त्री) ग०गव, गाव
लोकब गव।
सत्संग।

सधिया - [सं पुं] दूराव, कलह
आमिड अँका बाकलिक छिन।
स्वस्तिक चिह्न।

सद्—(वि) गखव कल, श्रुवाक्षव
पूठक एखन।
वृक्ष का फल। धृतगष्ट का एक
पुत्र।

सदन—(सं पुं) घर, छवन, बिधान
गडा वहा ठाँई, बिधान गडाउ
उपस्थित थका गमन आमिब
गोठे।
घर। मकान। भवन। वह
स्थान जहाँ बिधान-सभा का
अधिवेशन होता हो। बिधान-

सभा या उसमें उपस्थित लोगों
का समूह।

सद्मा—(सं पुं) आषाउ, दूःख,
लोकब आषाउ।

किसी दुखद घटना का आघात
या चोट।

सद्य—(वि) पयानू।

दयालु।

सदर—[वि] अशान।

प्रधान।

(सं पुं) केलखान, गडा-
पठि।

केन्द्र स्थल। सभापति।

सदसद्विवेक—(सं पुं) डान
बेशाब परिछन।

सद् और असद् या अच्छे और
बुरे की पहचान या विवेक।

सदाचारी—[सं पुं] गव आछवन
कटाठा।

नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरण
वाला मनुष्य।

सदा-बहार—(वि) गदाय गेटे-
खोला दै थका, गदाय अनाम्भउ
दै थका।

सदा हरा रहनेवाला वृक्ष।
हंस-मूख।

सद्वारत—(स स्त्री) गडापतिष ।
सभापतित्व ।

सदावर्त—(सं पुं) कडाबी डोहनव
ज्ञान अथवा शान्ति ।

वह स्थान जहाँ गरीबों को नित्य
भोजन मिलता हो ।

सदाशय—[वि] गच्छन, उड डेखा-
शुद्ध ।

सज्जन । भला मानस ।

सदा-सुहागिन—[सं स्त्री] बेना,
(बाजारवाँ)

वेक्या । [परिहास]

सदी—(सं स्त्री) गडाकी ।
शताब्दी ।

सदृश—(वि) गगन, निचिना ।
समान । तुल्य ।

सनेह—[क्रि वि] गों शनीव,
अच्छा ।

मशरीर । प्रत्यक्ष ।

सदैव—(अव्य) गगाय ।
सदा । हमेशा ।

सद्गति—[सं स्त्री] गगाव शुद्धि
वा उच्छाव ।

मरने के बाद अच्छे लोक में
जाना ।

सद्भावना—(सं स्त्री) गडावना
गदिशा ।

अच्छी और शुभ भावना । [अं-
गुडविल]

सद्य—(सं पुं) सब युद्ध ।
घर । युद्ध ।

सद्य (:)—(अव्य) याजि, अतिशय,
गच्छा ।

आज के दिन । अभी । तुरन्त ।

सधना—[क्रि अ] काश गिद्ध
शोरा, यर्थ उलिउरा गरावा-
कडागुगवि गिद्ध शोरा,
लगावडन कवा ।

कार्य मिद्ध होना । मतलब निका-
लना । प्रयोजन मिद्ध के अनुकूल
होना । निशाना ठीक बैठना ।
[प्रेरणा—सधाना]

सधवा—(सं स्त्री) गधवा, गानो
थका तिनो (डिवाडा) ।
वह स्त्री जिसका पति जीवित हो ।

सधुक्की—[वि] गधुगकलव गदव वा
निचिना ।

साधुओं का सा । साधुओं की
तरह का ।

[सं स्त्री] साधुता ।

साधुता ।

सन—(सं पुं) शय ।

एक पीछा जिसके रेशों से रस्सियां
और टाट बनते हैं ।

(सं स्त्री) बोलबोल वा बेगबे
बोला वा उल्लाहा शब्द ।

वेग से चलने या निकलने का
शब्द ।

[प्रत्य०] गैडेते ।

साथ ।

(अन्य) वे ।

से ।

सनक—[सं स्त्री] पागल गिटा वा
अश्रुति, मत्तल ।

पागलों की धुन, प्रवृत्ति या
आचरण ।

सनकना—(क्रि स) पागल होना,
मत्तलबी होना, पागल गिटे पर
कथा कोना वा आचरण करना ।

पागल होना । पागलों की सी
बातें या आचरण करना ।

सनद—(सं स्त्री) अमान, अमान
पत्र ।

प्रमाण । प्रमाण पत्र ।

सना—(क्रि अ) गलि वा भिजि
वा भित्ति मिश्रित होना, मय वा
लीन होना ।

गीला होकर किसी में मिलना ।
लीन होना ।

सनम—(सं पुं) प्रिय नायक,
नायिका, प्रियतमा ।

प्रिय नायक या नायिका ।

सनसनी—(सं स्त्री) डग, आन्तर्य
आदि पत्र होना सुकृता वा
उत्तेजना, उत्तेजनापूर्व परिवर्ण ।

भुन भुनी । किसी विकट घटना
के कारण लोगों में फैलनेवाली
स्तब्धता या उत्तेजना ।

सनहक (की)—[सं स्त्री] गाँठ
वाटन विदेश ।

मिट्टी का एक प्रकार का बरतन ।

सनाढ्य—[सं पुं] ज्ञानवान् उपाधि
विदेश ।

ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

सनावन—(सं पुं) मदाश पत्रा,
चिरकलीया, बहुकलीया, पुनरि
धर्म बहु दिन पत्रा छलि अशा
परम्परा । सनावन ।

अत्यन्त प्राचीन काल । बहुत

दिनोसे चला आया हुआ व्यवहार,
क्रम या परम्परा । शास्त्रत ।

सनातनी—[वि] गनातन धर्म
अष्टगवकाबी मल ।

सनातन धर्म का अनुयायी ।

सनेस (1)—[सं पुं] श्वर, धाननी ।
सन्देश ।

सनेह (रा)—[सं पुं] स्नेह, प्रेम ।
स्नेह ।

सनेही—(वि) श्रेयिक ।
प्रेमी ।

सन्न—(वि) गच्छाशीन, अछेडन,
छक, छगट नौबर ।
संज्ञा शून्य । निश्चेष्ट । स्तब्ध ।
डर से चुप ।

सन्नद्ध—(वि) गाछ, कानड बाछ वा
गच्छेश थका ।
तैयार । काम में पूरी तरह लगा
हुआ ।

सन्नाटा—[सं पुं] नौबरता, निष्ठ-
कता, निर्जनता ।

नौरवता । निस्तब्धता । निर्ज-
नता । पूरा मौन ।

(वि) निर्जन, नौबर ।

निर्जन । नौरव ।

सन्निकट—(अव्य) छटवड ।
पास ।

सन्नधि—(सं स्त्री) छटवड, छटवड
थका, गन्निधि ।

आपस में आमने सामने होने की
स्थिति । समीपता ।

सन्नविष्ट—(वि) अन्धारा,
डानटैक अन्धरा ।

किसी के अन्तर्गत आया या
मिलाया हुआ ।

सन्नवेश—[सं पुं] लगत बहा
वा थका, अन्धारा, एक ठाईड
गच्छा ।

साथ बैठना या स्थित होना ।
अटना या समाना । इकट्ठा
होना ।

सन्नहित—(वि) निकटवर्ती, छटवड,
छटवड थका ।

माथ या पास रखा हुआ ।
पाग का ।

सपत्नीक—[वि] पत्नीके गैर ।
पत्नी के साथ ।

सपन—[सं पुं] गप्पान ।
स्वप्न ।

सपरना—(क्रि ध) काग गन्ध
होना, काग श्व पना ।

काम का पूरा होना । काम का हो सकना । [क्रि स-सपराना]

सपाट—(वि) गयउल ।

समतल । जो ऊबड़ खाबड़ न हो ।

सपाटा—(सं पुं) तग, छाँटि, मोब ।

चलने या दौड़ने का वेग । दौड़ ।

सपिंडी—(सं स्त्री) शूद्रकब गाइकीया उक्किष पाछ दिन कबा कृता-गभिडी ।

मृतक के श्राद्धमें वह क्रिया जिसके अनसार वह दूसरे मृत पूर्वजोंके साथ मिलाया जाता है ।

सपुर्द—[वि] गयर्पण कबा । गेटोवा । लाखाई दिया ।

किमीको सौपा हुआ । उचित कार्य या विचार आदिके लिये किसी अधिकारी के हाथ सौपा हुआ ।

सपूत—(सं पुं) सुपूत । योग्य पूत ।

अच्छा और योग्य पुत्र ।

सप्तक—(सं पुं) गयक । एक धवनन गाठति बडन गयूश । गयूशेडन गयूशब ।

एकही तरह की सात वस्तुओं, कृतियों आदिका समूह । संगीत में सातों स्वरोंका समूह ।

सप्तपदी—(सं स्त्री) गयपदी । बियात दबा कनाई गायपीक एक लगे, गयन कबा कारी ।

विवाह के समय दूर और बधूका अग्निकी सात परिक्रमाएँ करना ।

सप्तशती—(सं स्त्री) गाड न छन्दब गयूश ।

मान सौ [छन्दों आदि] का समूह ।

सफ—(सं स्त्री) खेनी । तलोवाब । पंक्ति । तलवार ।

सफर—[सं पुं] यात्रा । यात्रा ।

सफरी—(वि) यात्रा गयकी । यात्राब उपयोगी ।

सफरमें काम आनेवाला ।

(सं स्त्री) पुठि बाछ ।

सोरी मछली ।

सफलीभूत—[वि] गयलता बाछ कबा ।

जिसने सफलता प्राप्त कर ली हो ।

सफा—[वि] गयकार । साफ ।

[सं पुं] कड़ाकर गूँडा ।
पुस्तकका पृष्ठ ।

सफाई—[सं स्त्री] पवित्रता । काष्ठिया-
पेशाब नोशाना करना, मोचीव
निष्क निष्करी प्रमाणित करना ।
'साफ' होने की क्रिया या भाव ।
लड़ाई झगड़े आदिका निबटारा ।
अभियुक्त का अपनी निर्दोषिता
प्रमाणित करना ।

सफा-चट—[वि] एक बात पवि-
काय आकर चिकित्सीय ।
बिल्कुल साफ या चिकना ।

सफाया—[सं पुं] गन्नाष्ट्र ज्ञान ।
नाम । गन्नाष्ट्र ।
पूरा विनाश । समाप्ति ।

सफेद—[वि] वगी वः । उज्ज्वल ।
उज्ज्वल । श्वेत वर्णका ।

सफेद-पोश—(सं पुं) वगी
काटपाव भिन्नता । गन्नाष्ट्र
गृह्य, निष्ठे किन्तु दूरीय ।
साफ कपड़े पहननेवाला । साधा-
रण गृहस्थ, पर भला आदमी ।

सफेदी—(सं स्त्री) उज्ज्वलता । उज्ज्वलता ।
श्वेत वेव आदिज हूँ दिया कार्य
श्वेतता । उज्ज्वलपन । दीवारों

आदि पर चूनेकी सफेद रंगकी
पोताई ।

सब—(वि) गकटला । गन्नाष्ट्र ।
समस्त । सारा ।

सबक—[सं पुं] भाठे । निष्का ।
पाठ । शिक्षा ।

सबद—[सं पुं] गन्नाष्ट्र । गन्नाष्ट्र
नाम । गन्नाष्ट्र उपपन्न ।

शब्द । किसी माधु महात्मा के
वचन । धर्म नीति आदि की उप-
देश पूर्ण बात ।

सबब—(सं पुं) कारण ।
कारण ।

सबर, सब्र—(सं पुं) गकटला ।
दर्श ।
सन्तोष । धैर्य ।

सबल—[वि] बलवान । गकटला गकट
शक । गकटला गकट ।
बलवान् । जिसके साथ मेना हो ।

सबील—(सं स्त्री) बूझि । उपाय ।
युक्ति । तरकीब ।

सबुनाना—[क्रि स] काटपाव आदिज
छाटवान निष्का ।
कपड़ों आदिमें साबुन लगाना ।

सबूत—[सं पुं] अमाण ।

प्रमाण ।

[वि] नछडा । गम्पूर्व ।

जो टूटा न हो । पूरा ।

सबेरा—(सं पुं) बातिपूरा ।

प्रमात ।

सब्ज—(वि) जेडेजोग्रा बः । केछा

आरु नतुन (फल, फूल आदि) ।

सूजन आरु लहपहीया ।

हरा [रंग] । कच्चा और ताजा

[फल फूल आदि] सुन्दर और

लहलहाता हुआ ।

सब्ज-कदम—[सं पुं] अखड ।

वह जिसका आना अशुभ सिद्ध

हो । मनहूस ।

सब्जी—(सं स्त्री) जेडेजोग्रा ।

शगा-श्याबल । शीक-पात ।

हरापन । हरियाली । साग भाजी ।

सभी—(वि) सकल ।

सब कोई ।

सभीत—(वि) डौत । डग खोदा ।

डरा हुआ ।

सभ्य—(वि) गल्य । गिटे ।

अच्छे आचार विचार रखने और

भले आदमियों का सा व्यवहार

करनेवाला । शिष्ट ।

[सं पुं] कोनो गतिवि बा

कविटिब गल्य । डाल आरु

गिटे लोक ।

सभा का सदस्य । भला और

शिष्ट आदमी ।

समंदर—[सं पुं] गागर । डाडब

पूधुवो अथवा इद ।

सागर । बड़ा तालाब या झील ।

सम—(वि) गम । युग्म गंध्या ।

जो आदिसे अन्त तक एक साथ

चला गया हो । युग्म संख्या ।

(अव्य) गमान ।

ममान या बराबर ।

[सं पुं] गलीतब गतिब 'गव'

अवस्था । अर्बालकाब विमेष ।

विष । शपथ ।

संगीत में वह स्थान जहाँ लयके

विचार से गति की समाप्ति होती

है । साहित्यमें एक अलंकार ।

विष । शपथ । सोगन्ध ।

सम-कक्ष—(वि) गमान । गमानब ।

गमकक्ष ।

समान । बराबरी का ।

समकालीन—[वि] गमगायनिक ।

एक कालतथेका वा शोबा ।

जो एक ही समयमें हुए हों ।

समक्ष—(अव्य) गशुखंठ । गशुखं ।

सामने, सम्मुख ।

समक्ष—(सं स्त्री) दूखनि । दूकि,
जानने और समझने की शक्ति ।
अक्ल ।

समक्षद्वार—[वि] दूक्षिगक ।
बुद्धिमान ।

समक्षद्वारी—(सं स्त्री) दूखनि, दूकि
बुद्धिमत्ता । अक्लमन्दी ।

समझना—[क्रि स] दूछा । घना ।
कोई बात अच्छी तरह विचार
करके ध्यानमें लाना ।

समझाना—[क्रि स] दूछावा । दूखनि
दिशाना ।

ऐसी बात करना जिससे कोई
समझ जाय ।

समझौता—(सं पुं) यादग्राछ कबा ।
यादग्राछ बीशांगग कबा । मिनि-
गाठि कबा ।

लेन देन, व्यवहार, झगडे, विवाद
आदि के सम्बन्ध में, सब पक्षोंमें
आपसमें होनेवाला निपटारा ।
[अं—एग्जिमेंट, कम्प्रोमाइज]

समतल—[वि] गमन । उग्रछापन
नथंका

जिसकी सतह या तल बराबर हो ।

समता—(सं स्त्री) गबडा । गवान
वा एके अकारब होवा अववा ।
बराबरी, तुल्यता ।

समतूल, सम-तोल—[वि] गयक क ।
गवान महकव ।
महत्व आदिके विचारसे बराबर ।

समदर्शी—[वि] गकलोक गवान
मेवा । अथकनाती । गमनी ।
सबको एक मा समझनेवाला ।

समधिक—(वि) वव नेछि । यनेक
यधिक ।
बहुत अधिक ।

समधी—(सं पुं) विटेश । जी वा
गोव गहवक ।
किसीके लडके या लडकीका ससुर ।

समन्वय—[वि] मिलन । गवक ।
कार्य आक कानगव गवडि
वशी वा निर्विवाद कबा ।

मिलान । कार्य या कारण की
संगति या निर्वाह ।

समय-सारिणी—(सं स्त्री) गवग
तालिका वा सूची ।

किमा कार्य की समय-तालिका ।

समर—[सं पुं] दूक । कायनेव ।
युद्ध । कामदेव ।

सम-रस—[वि] एक प्रकार का रस
 था [वस्तु] गद्यांश एक शब्दवा
 एकही प्रकारके रसवाले [पदार्थ] ।
 सदा एक सा रहनेवाला ।

समरांगण—(स पुं) युद्ध क्षेत्र ।
 युद्ध क्षेत्र ।

समर्थ—[वि] गम्भीर । पौरुष, शक्ति
 था ।
 सामर्थ्य या शक्ति रखनेवाला ।
 समर्थ ।

सम-वयस्क—[वि] समान वयस के ।
 बराबर की उमर का ।

समवेत—[वि] सम्मिलित । एकलगे
 उपस्थित ।

इकट्ठा या जमा किया हुआ

समष्टि—[सं स्त्री] मूल । सम्पूर्णता,
 गणनकाल भोजन । विधान गठान
 गणनकाल एकलका । गणित ।
 जितने हों उन सबका समूह ।
 साधुओं का भण्डारा ।

समौ—[सं पुं] गम्य ।
 समय । वक्त ।

समौ-बँधना (मु०)—गान आदि
 ब्रह्मदेव मानुषिक प्रभावित कर
 इतनी उत्तमता से सम्पन्न होना
 कि लोग स्तम्भ हो जाय ।

समान्तर—[वि] गंगाधरान (वैश्व)
 आदि ।

रेखाएँ आदि जो सदा समान
 अन्तर पर रहें ।

समागत—(वि) उपस्थित । आशि
 पोदा ।

कहीं से आया हुआ । उपस्थित
 या वर्तमान (समस्या आदि)

समागम—[सं पुं] अशा घोड़ा ।
 यातायात । गाँगा । वैष्णव ।
 गङ्गा ।

आगमन । मिलना । इकट्ठा होना ।
 मैथुन ।

समाचार—(सं पुं) शब्द । अवस्था ।
 खबर । हाल ।

समाहत—(वि) समाहित । आपस का
 गन्धान पोदा ।
 जिसका खूब आदर हुआ हो ।

समाधि—(सं स्त्री) समाधि । बाह्य छान
 एवि श्रेष्ठ चिह्नित भव्य देश कर
 उपनिषद् । शान । शास्त्रिक
 अलङ्कार विशेष ।

ईश्वर के ध्यान में मग्न होना ।
 कर्मगाह । साहित्य में एक अलङ्कार ।

समाधिस्थ—[वि] गमाविष्ठ यश्च ।
 होवा । शान्त उग्रय होवा ।
 समाधि में स्थित ।

समाना—(क्रि अ) अवस्थ कवा ।
 पूर्ण कवा । उबोवा । उपस्थित
 होवा ।

प्रविष्ट होना । भरना । पहुँचना ।
 [क्रि स] डिउरटेन अना ।
 उबोवा ।
 अन्दर करना । भरना ।

समापन—(सं पुं) सम्पन्नकवन ।
 गमाथ व गमाथा कवा कार्य ।
 गावि शेष कवा । समापन ।
 कार्य समाप्त या पूरा करना ।
 विवाद बिचार आदि के समय
 उसका अन्त करने के कोई विशेष
 बात कहना । मार डालना ।

समायोग—(सं पुं) गन्ध्याग ।
 गश्क । गाछ । युक्त कवा । मक्य-
 ठिक कवा । उद्वेष्ट । बहुत
 लोक गोटोवा ।

मंयोग, सम्बन्ध, तैयारी, युक्त
 करना, निशाना ठीक करना,
 उद्देश्य, बहुत आदमियों को
 एकत्र करना ।

सम रंज—(मं पुं) आरंज । अङ्गीकृत ।
 गमावोश ।

अच्छी तरह आरम्भ या शुरू
 होना । समारोह ।

समारोह—(सं पुं) आरंज कयक ।
 आरंजव । उद्गव । धूम-धाम ।

भारी आयोजन । धूम-धाम ।
 धूम धामसे होनेवाला कोई उत्सव
 या बड़ा काम ।

समार्पितन—[सं पुं] उडाँटि अश ।
 पदवी दान वा गमावर्जन उद्गव ।
 वापस आना । पदवी-दान समा-
 रम्भ ।

समावेश—[सं पुं] गमावेश । एक
 लग कवा कार्य ।
 एक साथ या एक जगह रहना ।
 एक वस्तुका दूसरी वस्तुके अन्त-
 र्गत होना ।

समासीन—(वि) गमाक बरटण ववा
 वा थका ।
 अच्छी तरह बैठा हुआ ।

समाह्वय—[क्रि अ] गमूहीन होवा ।
 सामना करना ।
 [क्रि स] धवा ।
 पकड़ना ।

समाहरण—[सं पुं] गन्धुक कवा ।

एकद्व कवा । एके लग कवा ।

छाया, बबडवि ठोला ।

इकट्टा करना । राशि । कर,

चन्दा आदि उगाहना । मिलाना ।

समाहार—(सं पुं) द्रवक । गन्धक ।

एक प्रकार इन्ध, जमाग । गन्ध ।

जमश्च ।

एक प्रकार का द्रव्य समास ।

संग्रह । समन्वय । संक्षेप ।

समाहित—(वि) एकाग्र । जमाहित ।

सुम्नन भावे एठाईत लग

लगोवा । शाखु । जमाग्र । श्रीरुत

सुन्दर ढंगसे एक जगह इकट्टा

किया हुआ । शांत । समाप्त ।

स्वीकृत ।

समिद्ध—(वि) प्रज्वलित । उल्ले-

खित ।

प्रज्वलित । उत्तेजित ।

समिधा—(सं स्त्री) यज्ञ काष्ठ । जमिध

गह ।

हवन कुण्डमें जलानेकी लकड़ी ।

समीकरण—(सं पुं) समीकरण ।

कोनो निकपत बानिटेन

तेनेकुरा कोनो आन बानिब

परिमाण निर्णय कवा कार्य ।

गणितब नियम विनय ।

दो या अधिक राशियों, वस्तुओं

आदिको समान या बराबर करने

की क्रिया वा भाव । एक प्रसिद्ध

गणितीय क्रिया ।

समीक्षक—(सं पुं) समालोचक ।

यालोचक ।

वह जो समीक्षा करता हो ।

समालोचक ।

समीक्षा—(सं स्त्री) विचार । अधे-

य । समालोचना । समीक्षा ।

छान बीन या जांच पड़ताल

करने के लिये कोई वस्तु या बात

अच्छी तरह देखना । समालोचना

समीचीन—(वि) योग्य । उपयुक्त,

जबत । यथार्थ ।

उपयुक्त । उचित ।

समीप—(वि) ७८५ । निकट ।

निकट । पास ।

समीर, समीरण—(सं पुं) बताह ।

बायू । समीरण ।

हवा ।

समुंदर—(सं पुं) समुद्र । सागर ।

समुद्र ।

समुंदर फेन—(सं पुं) गागर
केन । गागरवत उष्णन्न होरा
डाँठ केनर निठिना आरु
डितवत अगन्था विक्ता थका
लोटापाका आरु पानी नोहा
छुप थका एविध बन्धु ।
समुद्र के पानी पर तैरनेवाला
फेन या भाग जिसे सुखाकर
औषधिके रूपमें काममें लाते हैं ।

समुचित—(वि) दूछत । उचित ।
उपयुक्त ।
उचित । जैसा चाहिये वैसा ।

समुच्चय—(सं पुं) गमूह । अर्था
जड़ाव विशेष ।
कुछ वस्तुओंका एकमें मिलना ।
ममूह । एक अलंकार ।

समुज्ज्वल—[वि] गमूज्वल । विशेष भाव
उज्ज्वल । चिकनिकीया ।
विशेष रूपसे उज्ज्वल या प्रकाश-
मान । चमकीला ।

समुत्थान—(सं पुं) उद्गम ।
उद्गम । आवृत्ति ।
उठने की क्रिया या भाव ।
उत्पत्ति । आरम्भ ।

समुत्सुक—[वि] विशेष भाव
आग्रही ।
विशेष रूपसे उत्सुक ।

समुदाय(व)—[सं पुं] गमूह । दल ।
समूह । झुण्ड ।
(वि) गकटो । गमूह । गव ।
सब । कुल ।

समुन्नत—(वि) यति उन्नत ।
भली भाँति उन्नत ।

समूचा—(वि) गकटो । गोटेहे ।
अथवा । सम्पूर्ण ।
सारा । कुल । अवण्ड । पूरा ।

समूह—[वि] गकटो । एकत्रित कर्ता ।
ठिक । विनाशित । गमूजात ।
संचित । ठीक । जो अभी
उत्पन्न हुआ हो । विवाहित ।
(सं पुं) द'न । डूँबाल ।
ढेर । भण्डार ।

समूल—[वि] कावण थका ।
जिसका मूल या हेतु हो ।
(क्रि वि) मूलव गैरत । गुविरे
गवा ।
जइसे ।

समृद्ध—[वि] गमूह, सम्पन्न, धनी ।
सम्पन्न । धनवान् ।

समृद्धि—[सं स्त्री] गम्भीर, जगत्,
विभूति, ऐश्वर्य ।

सम्पन्नता ।

समेटना—[क्रि स] छडाना, मिट-
ना । बड़ि टै थका बड़ गोठोवा ।
बिलरी या फैली हुई चीजें इकट्ठी
करना ।

समेत—[वि] गबरू, जग शोभा ।
संयुक्त । मिला हुआ ।

(अव्य) गैठे ।

सहित । साथ ।

समोना—(क्रि अ) गबरू शोभा, छुव
दिना ।

निमग्न होना । डूबना ।

[क्रि स] मिलनावा ।

मिलाना ।

समोसा—(सं पुं) ठिठावा ।
एक प्रकार का पकवान ।

समौरिया—(वि) गम बगरीया ।
समवयस्क ।

सम्मत—(वि) गमत ।
सहमत ।

सम्पत्ति—[सं स्त्री] उपपन्न, आपन्न,
अश्रुति, कोटना विषयत एक-
वच शोभा ।

सलाह । आदेश । राय । किसी
विषय में कुछ लोगोंका एकमत
होना । अनुमति ।

सम्मान—[सं पुं] छमन, आयाजय
परा शक्ति बबल दिना आछा
पञ्च ।

न्यायालय का आज्ञापत्र ।

सम्मानना—(क्रि स) गमान कवा ।
सम्मान करना ।

सम्मार्जनो—(सं स्त्री) बाढ़नी ।
भाड़ू ।

सम्मुख, सम्मुखौ—(अव्य) गभूथ ।
सामने ।

सम्मोहन—[सं पुं] मोह-
जनक, मोहित कवा, भूथ कवा,
गमनव पाठ पाठ पबव एपाठ ।
मोहित करनेकी क्रिया या भाव ।
कामदेव के पाँच बाणोंमें से एक ।
(वि) भूथ कवा ।
मोहित करनेवाला ।

सम्यक्—(वि) गम्पूर्ण ।
पूरा ।

[क्रि वि] गम्पूर्णकप, तेनेई,
तालतावे ।
सब तरहसे । अच्छी तरह ।

सम्राज्ञी—[सं स्त्री] यशस्वी,
गयाछी ।

सम्राट की पत्नी । साम्राज्य की
अधीश्वरी ।

सयानपन—[सं पुं] छट्ठबानि,
गावानक होवा ।

‘सयाना’ होनेका भाव । चतुरता ।

सयाना—(सं पुं) व्यांष्ट वयस्क,
गावानक, वृद्धियुक्त, छट्ठव, ठानाक ।
वयस्क । बुद्धिमान । चतुर ।
चालाक ।

सरंजाम—[सं पुं] कायब गयाछि ।
वाबन्दा, जँछूनि ।
कार्यकी समाप्ति । प्रबन्ध ।
सामान ।

सर—(सं पुं) भूखरी, मूव, निव,
नैव गौवा, उपभूक्त मय्य, नव,
गव ।

तालाब । सिर । सिरा । चरम
सीमा । ऐसा अबसर जो किसी
काम के लिये उपयुक्त न हो ।
वाण ।

[सं स्त्री] गयान ।

समानता ।

[वि] बनेबे दमन कवा,
विधिउ, ज्जिहुउ ।

बलपूर्वक दबाया हुआ । जीता
हुआ । अभिभूत ।

सरकंडा [सं पुं] कुन वा नन
काठोय राइ ।

सरपत या सन जातिकी एक
बनस्पति ।

सरक—[सं स्त्री] काबब होवा
भाव, मदब गोलामो निठा, मदब
पियला ।

सरकने का भाव या प्रकार ।
शराबके नशेकी खुमारी । शराब-
पीनेका प्याला ।

सरकना—[क्रि अ] काबब होवा ।
खिसकना ।

सरकस—[सं पुं] टावकाठ, जल्लु वा
माइहब कला कौशल देखुंवा
मल, एनेधबवब थेल देखुंवा
धुबगैवा काठ ।

पशुओं और कलाबाजी आदिका
कौशल या ऐसा कौशल दिस-
लानेवालों की मण्डली ।

सरकार—(सं स्त्री) मालिक, ठवकाव ।

मालिक । देशका शासनक रनेवाली
संस्था या सत्ता ।

सरस्वत—[सं पुं] जल-जलन पलित-
पत्र ।

लेन देन आदिका दलील-पत्र ।

सरगना—(सं पुं) चर्काव ।

सरदार ।

सरगम—[सं पुं] गंगोत्तर

गाढोति श्रवण गुरु, श्रवण ।

संगीतमें सातों स्वरोंका समूह ।

सरजना—(क्रि स) श्रुति वा बचना
करी ।

सृष्टि या रचना करना ।

सरजा—(सं पुं) चर्काव, गिरि,
शिवाजीव उपाधि ।

सरदार । सिंह ।

सरजोर—(वि) अवलोकनी, उच्छ्रित,
विद्रोही, नख्खिली ।

बलवान । उद्दण्ड । विद्रोही ।

सरणी, सरनी—[सं स्त्री] पथ,
उपाय, रेषा ।

मार्ग । ढंग । लकीर ।

सरसाज, सिरसाज—(सं पुं)

मुकुट, शिरोमणि, चर्काव ।

मुकुट । शिरोमणि । सरदार ।

सरद, सर्द—(वि) ठाँडा, ठिना ।
ठण्डा । सस्त । धीमा ।

सरदियाना—(क्रि अ) शीतल
ठाँडा होवा, आवेश वा श्रं
आदि शीत होवा ।

सर्दी के कारण ठंडा होना ।
आवेश आदि शांत होना ।

सरदी, सर्दी—(सं स्त्री) शीतलता,
बार, पानी लगा कर, चर्का ।
शीतलता । जाड़ा । जुकाम ।

सरन—(सं स्त्री) श्रवण ।
शरण ।

सरना—(क्रि अ) रूँचवि होवा,
हला डूला करी, काम चला वा
शेष होवा, रावशायत लगी,
करी, पंचमंश गडाव बंधी ।

सरकना । हिलना-डोलना । काम
चलना या निकलना । किसी के
उपयोगमें आना । किया जाना ।
आपसमें सद्भाव बना रहना ।

सरनाम—[वि] अगिह, विश्रुत ।
प्रसिद्ध ।

सरनामा, सिरनामा—(सं पुं)
शैर्षक, ठिक्का ।

शीर्षक । पत्रों आदिके ऊपर
लिखा जानेवाला पता ।

सरपंच—(सं पुं) पञ्चायत
गठानिधि ।

पंचायत का सभापति ।

सरपट—(सं पुं) षौंवार ठाल
विशेष ।

घोड़ेकी एक प्रकारकी तेज चाल ।

[क्रि वि] षौंवार बेगवे दोबि ।

उक्त चाल की तरह तेज या
दीड़ते हुए ।

सरपत—(सं पुं) शप वा कुन
आपिब नबे बाँह ।

सनकी भीति एक प्रकारकी तृण ।

सरपेच—[सं पुं] पाण्डवी वा
मुकुटत लंगोरा अलङ्कार
विशेष ।

पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ
कलगी ।

सरबरी—(सं स्त्री) राति ।
शर्वरी । रात्रि ।

सरमाया—(सं पुं) प्रीति, गम्पति ।
पूँजी । सम्पत्ति ।

सरली करण—[सं पुं] कठिन
विषय गबल कबा कार्या ।
किसी कठिन विषय को सरल
बनाने की क्रिया या भाव ।

सरवर—(सं पुं) चक्रावर, गदावर ।
सरोवर सरदार । अफसर ।

सरसना—(क्रि म) गेऊकीया होवा,
उम्लत होवा, शोभायुक्त होवा,
बगभूर्ण होवा ।

हरा होना । उम्लत होना ।
शोभित होना । रसपूर्ण होना ।

सरसराना—(क्रि अ) गडाहब
गनगननि-हौहोबनि । तावाताबि
कै कोना काम कबा ।
वायुका सर सर करते हुए
चलना । जल्दी जल्दी कोई काम
करना ।

सरसरी—(क्रि वि) उपदे उपदे,
योठाग्रुठैक ।

अच्छी तरह ध्यान लगाकर नहीं,
बल्कि जल्दी में । मोटे तौरपर ।

सरसिज, सरसोरुह—(सं पुं) पशुम ।
कमल ।

सरसो—(सं स्त्री) गक गदावरब,
छम विशेष ।

छोटा सरोवर । एक मात्रिक
छन्द ।

सरसों—(सं स्त्री) गविश ।
एक पोधा जिसके बीजोंसे तेल
निकलता है ।

सरहद—(सं स्त्री) गीमा, गीमा-
बेनी ।

सीमा । सीमा-रेखा ।

सरहदी—(वि) गीमा गश्कीय,
गीमाखुत थका ।

सीमा सम्बन्धी । सीमा पर रहने
वाला ।

सरापना—[सं पुं] अङ्गिनाप
दिवा ।

शाप देना ।

सरापा—[सं पुं] आपात मल्लक,
नखच्छत्र पत्रा केन छच्छेल ।
नख सिख ।

सराफ—(सं पु) लोण-कणव बेपारी ।
सोने चाँदी का व्यापारी ।

सराफा—[सं पुं] लोण-कणव
बारगाय, लोण कणव लोकानव
बजार ।

सराफका काम या पेशा । सराफों
का बाजार ।

सराबोर—(वि) एकैवादे भित्ति ।
बिलकुल भीगा हुआ ।

सराय—(सं स्त्री) जानशी घर । छाई-
खाना । मुसाफिरखाना ।

सरासर—(अव्य) एकैवादे, अथाक् ।
विलकल । प्रखल ।

सराहना—(क्रि स) अशङ्का कर्ता ।
प्रशंसा या बढ़ाई करना ।

[सं स्त्री] प्रशङ्गा ।
प्रशंसा ।

सराहनीय—(वि) अशङ्कनीय ।
प्रशंसा के योग्य ।

सरि—[सं स्त्री] नदी, गमान,
नृथला ।

नदी । बराबरी । शृङ्खला ।

[वि] गमान, निठिना ।

समान । तुल्य ।

(क्रि वि) जे ।

तक ।

सरिता—[सं स्त्री] नदी, अवाह ।
नदी । धारा ।

सरियाना—[क्रि स] क्वाश्रुगवि
बनी, मारगिटि कर्ता ।

क्रमसे लगाकर चीजें यथास्थान
रखना । मारना पीटना ।

सरिस्ता—[सं पुं] कार्यालय,
कार्यालयव विभाग ।

कार्यो अथवा कार्यालय का
विभाग । कार्यालय ।

सरिस—(वि) गदून, गमान ।
अवकाश । समान ।

सरो—[सं स्त्री] गऊ भूखूँवा, निषवा
छोटा तालाब । झरना ।

सरोस्त्रा—[वि] गयान, निठिना ।
समान । तुल्य ।

सरूर—(सं पुं) गौनागौ निठा ।
हल्का नशा ।

सरोकार—[सं पुं] गश्क ।
आपस के व्यवहार का सम्बन्ध ।
वास्ता ।

सरोज, सरोरुह—[सं पुं] पद्म ।
कमल ।

सरोजिनी—(सं स्त्री) पद्मदेव
डवा भूखूँवी, पद्म ।

कमलों से भरा हुआ तालाब ।
कमल ।

सरोद्—(सं पुं) गढवाण, वाछ
विशेष
एक प्रकार का बाजा ।

सरोवर—(सं पुं) गढावर, भूखूँवी
तालाब ।

सरोष—(वि) खंडाल । क्रूर ।
क्रोध युक्त ।

[क्रि वि] ।, खंडेव ।
जोखपंडक ।

सरो-सामान—(सं पुं) गऊना
बख बा गावडी ।

सारी सामग्री या उपकरण ।

सर्ग—(सं पुं) गंगाव, रूढि,
दवाइ, आगै, शिव, कपूर
एहि भूख, महाकाव्य अवधार,
डाग, लौच कबा ।

संसार । सृष्टि । प्रवाह । प्राणी ।
सन्तान । महाकाव्य का अध्याय ।
त्याग मल त्याग ।

सर्जन—[सं पुं] डाग, एवा,
निर्माण, लौच कबा, अर्पण,
गनाव पृष्ठडाग, गला छिक्किगक ।
त्याग, छोड़ना, निर्माण, मल-
त्याग, अर्पण । सेना का पृष्ठ-
भाग । शल्योपचारक ।

सर्प—[सं पुं] गोंग ।
साँप ।

सर्पिल—(वि) गैग थका गोंगव ददे
एँ का-वेँका, गणिग ।
साँप की तरह टेढ़ा या टेढ़ा-
तिरछा ।

सर्वस—[सं पुं] गर्कश ।
सर्वस्व ।

सर्व—(वि) गऊना, गर्क ।
सब । समस्त ।

सर्वज्ञ—(वि) गर्वज, यिमे, गकलो
कथा खाटन, गववजान ।

सभी बातें जाननेवाला ।

सर्वतः—(अव्य) छाबिउगिने,
गकलो अकावे ।

चारों ओर । सब प्रकार से ।

सर्वतोभाष—[क्रि वि] गकलो
अकावे, डाल धवण, गुब्धाति
गुब्धादे ।

सब तरह से । भली भाँति ।

सर्वत्र-- (अव्य) गकलो ठायेते ।
सब जगह ।

सर्वथा—[अव्य] गकलो अकावे,
एकवादे, गर्वज ।

सब प्रकार से । बिलकुल ।

सर्वदा—(अव्य) गदाय ।
हमेशा । सदा ।

सर्व-प्रिय—(वि) गकलोदे डाल
पोदा लोक ।

जो सबको प्रिय या अच्छा लगे ।

सर्व-मंगला—(सं स्त्री) दुर्गा, लक्ष्मी ।
दुर्गा । लक्ष्मी ।

[वि] गकलो अकावे मज्जल
अथवा कल्याणकाविगी ।

सब प्रकार मंगल या कल्याण
करनेवाली ।

सर्वस्व—[सं पुं] गर्वज, गकलो
गम्पहि ।

सारी सम्पत्ति या पूँजी ।

सर्वांगीण—[वि] गम्पूर्ण, गकलो
अज्जवे गवक थका । गर्वज्जीव ।
सब अंगोंसे सम्बन्ध रखनेवाला ।
सब अंगों से युक्त ।

सर्वात्मा—(सं पुं) ब्रह्म ।
ब्रह्म ।

सर्वेश (ईश्वर)—(सं पुं) देव ।
सब का स्वामी । ईश्वर ।

सर्वेस्वा—(वि) गर्वज-गर्वा, गकलो
कामते निखव अज्जुव कवा ।
पूरा अधिकारी या मालिक ।

सर्वोपरि—(वि) गकलोदे उपरत
वा अर्थ ।
सबसे ऊपर या बढ़कर ।

सल्ल—[सं स्त्री] कौँठ खोदा, ठेपा
खोदा, खलप ।
सिकुड़न ।

(सं पुं) पानी, कुकुर, गबल
गछ ।

पानी । कुत्ता, सरल वृक्ष ।

सल्लनत—(सं स्त्री) बाका,
खुविधा । बावन्हा ।
राज्य । प्रबन्ध । सुभीता ।

सलवार—(सं स्त्री) पात्रधार
छात्रीय पोष्टक विनिव,
छेलोवार ।

जाधिया । एक प्रकार का पाय-
जामा ।

सलहज—[सं स्त्री] झूलनालिव
वैद्यैयक ।

साले की स्त्री ।

सलाई—[सं स्त्री] झूझना, नल ।
काठ या धातु का पतला छड़ ।
दिया सलाई ।

सलाह—[सं पुं] कैँठा शाक पाठ,
नेमू बज आदिब ठेठगारी बाछ
विनिव । अविष आगू ।

एक प्रकार के कन्द । एक तरकारी

सलाम—[सं पुं] अणाय, नमस्कार ।
प्रणाम ।

सलामत—(वि) झूनल थका,
शानि विविनिव प्रवा बन्का प्रदा,
सूबकित ।

हानि या आपत्ति से बचा हुआ ।
सकुशल । कायम ।

सलामी—(सं स्त्री) नमस्कार, बज
आदिब बावड दिया आगशन बा
छानागि, उपटोकर ।

सलाम करनेकी क्रिया या भाव ।
मकान आदि की पेशगी या
पगड़ी ।

(वि) अणप हेलनीया (ज्ञान)
थोड़ा ढालुर्वा (स्थान) ।

सलाह—[सं स्त्री] गमति, प्रवार्ण ।
सम्मति । परामर्श ।

सलिल—(सं पुं) पानी ।
पानी ।

सलोका—(सं पुं) डाल बरल
काम कवा अक्रिया, गिठेठा ।

अच्छी तरह काम करनेका ढंग ।
शिष्टता ।

सलूक—(सं पुं) डाल बावडा ।
आपसदारीका अच्छा बरताव या
व्यवहार । भलाई ।

सलोना—(वि) निशरीया, सूखन,
लावगा बूझ ।

नमकीन । सुन्दर ।

सवर्ण—[वि] गमान, एकखातिब ।
समान । एक ही वर्ण या जाति
के ।

सवा—(वि) छोटा एक ।
पूरे के साथ और एक चौथाई
अधिक ।

सवाई—(सं स्त्री) मूल धनव
छोटा (अंश)

मूल धन का सवा (हिस्सा)

सबाब—(सं पुं) पूजा, उपकार ।
पुण्य । उपकार ।

सबाया—[वि] छोटा गुण, अष्टौतव,
वेष्टि । सवा गुना । श्रेष्ठतर ।

सवार—(सं पुं) आवाही ।
वह जो किसी वाहन पर चढ़ा
हो ।

सवारी—(सं स्त्री) वाहन । देवमूर्ति
आदिब लगेत उल्लाहा गमपन ।
वाहन । देवमूर्ति आदि के साथ
चलनेवाला जुलूस ।

सबाब—(सं पुं) अन्न । पावो ।
प्रश्न । माग ।

सवाल-जबाब—[सं पुं] तर्क-वितर्क ।
तर्क-वितर्क ।

सविता—(सं पुं) जेन्व । पूजा ।
वाव जन्वा ।

ईश्वर । सूर्य । बारहकी संख्या ।

सबेरा—[सं पुं] बातिपूवा ।
प्रातःकाल ।

सबैया—(सं पुं) छोटा गेबब ओवन ।
छम्प बिगैब ।

मठा सेरका बाट । एक छन्द ।

सव्य—(वि) बाय । अधिकूल ।
मौकाल । विज्ञ । लक्षण । वृत्तक
शरीरत जन्मयोग कवा अग्नि ।
बाया । प्रतिकूल । दाहिना ।
विष्णु । जनेऊ । किसी व्यक्ति
की मृत्युके समय जलाई गयी
अग्नि ।

सव्यसाधो—(सं पुं) अर्द्धून ।
अर्जुन ।

सशंक—(वि) शकाशित । डोड ।
भयभीत ।

सशक्त—(वि) शक्तिमानो ।
शक्तिशाली ।

सशस्त्र—(वि) अश्वशायी । गजश्व
शस्त्र सहित । शस्त्रसे युक्त ।

ससक, ससा—(सं पुं) शशांग ।
खरगोश ।

ससहर, ससि, ससिधर, ससिहर,
ससी—(सं पुं) छल । ध्यान ।
चन्द्रमा ।

ससुर—(सं पुं) गह्वर ।
स्त्री या पुरुषके विचारसे उसके
पति या पत्नीका पिता ।

ससुराल—[सं स्त्री] गह्वर घर ।
ससर का घर ।

सस्ता—(वि) कम मात्रा । खलब ।

कम मूल्यका । साधारण । जो बहुत थोड़े ही परिश्रम या व्ययसे या सहजमें मिल जाय ।

सस्ती—(वि) गन्तु शोका । गकलना

बख गखाएत पोरा मय ।

सरतापन । वह समय जब सब चीजें सस्ती मिलती हों ।

सस्मित—(वि) शैश्वर्य ।

मुस्कुराता हुआ ।

[क्रि वि] शैश्वर्य ।

मुस्कुरा कर ।

सह—(अव्य) टैगट ।

सहित ।

(वि) सहनशील । मर्याद । पोषण ।

सहनशील । समर्थ ।

सहकार—(सं पुं) आमगण ।

गहयाग ।

आमका वृक्ष सहयोग ।

सह-गमन—[सं पुं] काटवा नगठ

वा गह्वत पोरा । गती शोका ।

किसीके साथ चलना या जाना ।

सती हो जाना ।

सह-गान—[सं पुं] वृक्ष गान । गानू-

शिक गौत ।

कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना । वह गाना जो इस प्रकार गाया जाय । (अं—कोरम)

सहचर—(सं पुं) गन्नी । अक्षर ।

अक्षरी । लग्नरी ।

साथी सेवक । मत्वा ।

सहचरी—(सं स्त्री) गन्नी । गन्नी ।

पत्नी । मत्वा ।

सहजबुद्धि—[सं स्त्री] आभाविक

गह्वत वा छान (औन-छह्वत) ।

जीव जन्तु या से होनेवाली वह स्वाभाविक शक्ति या ज्ञान ।

सहज-समाधि—(सं स्त्री) अक्षर

अक्षर गह्वत वा छान गह्वत वा छान । गह्वत वा छान गह्वत वा छान । गह्वत वा छान गह्वत वा छान ।

वह ध्यान या समाधि जो सह-गुरु के बतलाये हुए सहज या सरल रूपमें लगायी जाती है ।

सहजात—(वि) एकलगत जन्मा वा

उत्पन्न । यज्ञ ।

साथ साथ जन्म लेने या उत्पन्न होनेवाला । यमज ।

(सं पुं) गह्वत ।

सहोदर ।

सहधर्मिणी—(सं स्त्री) पत्नी ।
पत्नी ।

सहनशील—(वि) गहनशील । गहिरा
परा धृष्ट था ।

सहने या बरदास्त करनेवाला ।

सहना—(क्रि स) गह्र कर्त्ता । डार
वहन कर्त्ता ।

भेलना । बरदास्त करना । भार
वहन करना ।

सहपाठी—[सं पुं] एकमतगण पठा ।
जो किसीके साथ पढ़ा हो ।

सहृषाला—[सं पुं] विशाव दिना
वर्द्धा प्रभाव लगत र्यौवा । अथवा
प्राकृत उठि पशु म'वा जन ।
वह छोटा बालक जो विवाह के
समय वरके साथ घोड़े या पालकी
पर बैठकर उसके सखाके रूपमें
जाता है ।

सह-भागी—(सं पुं) अन्वेषाव ।
हिस्सेदार ।

सहम—[सं पुं] डग । गटकाठ ।
ईतःछतः ।

भय । संकोच । हिचक ।

सहमत—[सं पुं] एकमत । गम्यत
एक मत का ।

सहमति—(सं स्त्री) गम्यति ।
किसीके साथ एक मत होना ।

सहमना—(क्रि अ) डग कर्त्ता ।
डरना ।

सहलाना—[क्रि स] शीत कूटवा वा
त्रलि दिश ।

किसी वस्तु या अंगपर धीरे धीरे
हाथ फेरना । मलना ।

सहवास—[सं पुं] गन्गर्ग । गैधून ।
साथ रहना । मैथुन ।

सहसा—(अव्य) दृष्टा । अकस्मात् ।
अकस्मात् ।

सहसाक्षि, सहसाक्षी—[सं पुं]
ईल ।

इन्द्र ।

सहसानन, सहस्रफण—(सं पुं)
अगस्त्यनाग ।

शेषनाग ।

सहस्र—(सं पुं) शेषाव ।
हजार ।

सहस्रदल—(सं पुं) अश्म ।
कमल ।

सहायता— [सं स्त्री] गहायता ।
गहाय ।
मदद ।

सहारा—[सं पुं] आश्रय । गशाय ।
भाषया ।

आश्रय । भरोसा । सहायता ।

सहिष्—[वि] उचित भावि कोटा,
प्रकृत । दृष्ट आरु निश्चित ।
पोनभट्टिया । गविलव गश्था
विदग्ध ।

ठीक मानकर साफ कहा हुआ ।

वास्तविक । दृढ़ और निश्चित ।

सीधा । गणितमें 'घन' सख्या ।
(अं--पौजिटिव)

सहिजन—[सं पुं] छविना ।

एक प्रकार का वृक्ष जिसकी
फलियों की तरकारी बनती है ।

सहिदानी [सं स्त्री] छिः । भवि-
छय । । श्रुति छिः ।

निशानी । पहचान । स्मृति के
लिये दी गयी वस्तु ।

सहिष्णु—(वि) गहनमैल ।
सहनशील ।

सहिष्णुता—(सं स्त्री) गहनमैलता ।
सहन शीलता ।

सही—(वि) गत । शुद्ध ।
सत्य । शुद्ध ।

(क्रि वि) गँटाटेकटय । आठगटठ ।
सचमुच । वस्तुतः ।

(सं स्त्री) पतुथत । छही ।

हस्ताक्षर । दस्तखत ।

सही-सलामत-(वि) डाले कुणल ।
भला चंगा ।

(क्रि वि) कुणलपूर्वक ।

कुशल पूर्वक ।

सहृदियत—(सं स्त्री) श्रुविषा ।
सुविधा ।

सहेजना—[क्रि स] छडाला । डालटेक
बथा ।

संभालना । ठीक करके रखना ।

सहेली—[सं स्त्री] गथी ।
सखी ।

सहेया—[वि] गहनमैल ।
सहनेवाला ।

[सं पुं] गशायक ।
सहायक ।

सहोदर—(सं पुं) आठपान भाई ।
सगा भाई ।

सौई, साई—(सं पुं) शायी । जेथव ।
अति । रुक्मिण ।

स्वामी । ईश्वर । पति । फकीर ।

सौंकरा—[वि] गकीर्ण । ठेक ।
संकीर्ण । कम चौड़ा ।

(सं पुं) कष्ट । विभद । विभदा-
वशा ।

कष्ट । संकट । संकट की स्थिति ।

सांख्य— (सं पुं) दर्शन विमेष ।

महर्षि कपिल बठिठ गांथा-
दर्शन । गंथा गवकौय ।

छः दर्शनोंमें महर्षि कपिल कृत
दर्शन ।

सांख्यिकी—(स स्त्री) गंथा यापित

पवा कोना विषयब निरुद्ध
उल्लिखित विष्ठा । गंथा विज्ञान ।

किसी विषयकी संख्याएँ आदि
एकत्र करके निष्कर्ष आदि निका-
लने की विद्या या पद्धति । (अं-
स्टेटिस्टिक्स)

सांग—[सं स्त्री] एविश गांठि ।

नकल वा ड्रॉइंग करना ।

एक प्रकार की बरछी । स्वांग या
नकल ।

सांग [वि] अश्रुबुद्ध । गम्पूर्ण ।

सब अंगोंसे युक्त । पूरा ।

सांगोपांग—[वि] गम्पूर्ण । गम्पूर्ण

सब अंगों आर उपांगोंसे युक्त ।
सम्पूर्ण ।

सौंच—(वि, सं पुं) गंठा, गठा ।

सच । सच्चा ।

सौचना—(क्रि स्) गणन करना ।

संचित करना ।

सौचा—(सं पुं) गाठ । नमूना ।

कोना वस्तु ठामि अड्डत कर
गाधन ।

ठप्पा । नमूना । वह उपकरण
जिसमें कोई गीली चीज ढालकर
उसीके आकार की दूसरी और
चीजें बनाई जाती है ।

(वि) गंठा । अड्डत ।

सच्चा ।

सौझ—(सं स्त्री) गन्धिया ।

शाम । संध्या ।

सौंटी—(स स्त्री) गरु नांठि ।

छोटी पतली छड़ी ।

सौंठ-गांठ—[सं स्त्री] बनिष्ठ, गुंथ

गवक, बड़बड़ ।

बनिष्ठ या गुप्त सम्बन्ध । षड्यंत्र ।

सौइ—(सं पुं) बाध ग्रन्थ । उठे ।

केवल मन्तान उत्पन्न कराने के
लिये पाला हुआ गौ का नर ।
नर ऊँट ।

सौइनी—(सं स्त्री) उठे (गधेकी ।)

ऊँटनी ।

साँढ़ साढ़ू—(सं पुं) मामलपति ।
किसी की साली का पति ।

सांत—(वि) अखु श्व नगैश, अगम,
माखु ।

जिसका अन्त अवश्य होता हो ।
शान्त ।

साँप—(सं पुं) गाप, विश्वर ।
सपं । भुजंग ।

सांप्रत—(अव्य) गच्छति, एतिग्रा ।
इस समय ।

सांप्रतिक—(वि) वर्तमाने छलि
थका, मायमिक भाँव उपयोगी ।
जो इस समय चल रहा हो ।
जो समय की आवश्यकता को
देखते हुए ठीक और उपयुक्त
हो ।

साँबर—[सं पुं] शबिनव एक
अक्राव, बाँजपुतनाब एटि रूप ।
एक प्रकार का हिरण । एक
भील का नाम ।

साँबर, साँबला—(वि) अलप कला,
माखुव वरगैश ।

कुछ कुछ काला ।

[सं पुं] कृष्ण, श्यामी, प्रेमिक ।
कृष्ण । पति । प्रेमी ।

साँस—(सं स्त्री) निश्वास, जिवनि ।
स्वास । दम । अवकाश ।

साँसत—(सं स्त्री) यातना, माखि ।
यातना । सजा ।

साँसा—(सं पुं) उनाश, जिवनि,
गल्मश, छश ।
स्वास । जीवन । सन्देह । भय ।

सा—(अव्य) गमान, निठिना-मूठक
मक ।
समान । एक परिमाण सूचक
शब्द ।

साइत, सायत—(सं स्त्री) गमय,
मुहूर्त, उडकन ।
पल । समय । मुहूर्त । शुभ
समय ।

साइयों—[सं पुं] जेवर ।
साईं (ईश्वर)

साईस—(सं पुं) छशि, बोंबाव
आमटेपचान शर्बोता ।
घोड़े की देख रेख करनेवाला ।

साकत—[सं पुं] माऊ, शूटे,
बलमाच ।

शाक्त । दुष्ट । पाजी ।

साकला, साकल्य—(सं पुं)
तिल, धान, चाउल आदि होमव
आहूतिव दिय गान्धी ।

जो, तिल आदि होममें हवन की सामग्रियाँ ।

साका—(सं पुं) गन्ध, रस, श्रावक, अग्नि, ठाँठे ।
संवत् । यश । स्मारक । प्रसिद्धि । धाक ।

साकार—[वि] मूर्तिमान् ।
रूप या आकारवाला । मूर्तिमान् ।
[सं पुं] देवदेव मूर्तिमय कण ।
ईश्वर का आकार युक्त रूप ।

साकिन—(वि) निवासी ।
निवासी ।

साकेत—(सं पुं) वैकुण्ठनाक,
अयोध्या नगर ।

वैकुण्ठ लोक । अयोध्या नगरी ।

साख—[स स्त्री] डेय, ठाँठे,
मर्यादा, लेन-देन का संबंध
प्रतिष्ठा । गाँधी ।

धाक । मर्यादा । लेन-देन या
व्यवहार के खरेपन की मान्यता ।

साखी—[सं पुं] गाँधी, गंगाधर,
गङ्ग ।

गवाह । आपसी झगड़ों का
निबटारा करनेवाला पंच । वृक्ष ।

[सं स्त्री] गाँधी दिया ।
गवाही ।

साखू—(सं पुं) गाल गङ्ग ।
गाल नामक वृक्ष ।

साग—(सं पुं) शाक, उबकागी ।
शाक । तरकारी ।

साग्रह—(क्रि वि) आग्रह ।
आग्रह पूर्वक ।

साज—[सं पुं] गाँजा, ठाँठे,
बाँछ ।

सजावट । ठाट-बाट । बाजा ।
(वि) गाँजा ।
बनानेवाला ।

साजन—(सं पुं) शायी, श्रमिक,
गणन, गाँधीनाक ।
पति । प्रेमा । सज्जन ।

साज-बाज—(सं पुं) धूम-धाम,
मिल-जुल, गाँधी शोरा ।
तैयारी । धूमधाम । मेल जोल ।

साज-सामान—[सं पुं] गाँधी,
ठाँठे ।

सामग्री । ठाट-बाट ।

साजिश—[स स्त्री] षडयंत्र ।
बनावट । षडयंत्र ।

साक्षा—(सं पुं) अंगीकारी, अंश ।
हिस्सेदारी । भाग ।

साक्षि, साक्षी, साक्षेदार—
[सं पुं] अंगीकार ।

किसी काम या रोजगारमें साझा
रखनेवाला । हिस्सेदार ।

साठ—(वि) याँठि ।

साठा—(सं 'पुं') कुँहियाव ।
ईख ।

(वि) याँठि बहब ।
साठ वर्ष का ।

साढ़ी—(सं स्त्री) गाँधीब गब ।
मलाई ।

सात्त्विक—[वि] गार्हिक शुभ, पवित्र ।
सतोगुणी । पवित्र । सत्त्व गुणसे
उत्पन्न ।

साथ—(अव्य) गैतेत, प्रति, बाबा ।
सहित । प्रति । द्वारा ।

[सं पुं] गह्वी, मिल, गैत ।
साथी । मेल । संगीत ।

साथी—(सं पुं) गह्वी, लगवैया ।
संगी । मित्र ।

साढ़ी—[सं स्त्री] निष्कपट भाव ।
गह्व, गबल भाव ।
सादापन । निष्कपटता ।

साढ़ा—[वि] गाँधीब, आड़ब
हीन, कपट नोहावा ।
साधारण बनावट का । आहम्बर

हीन । जो छल कपट न जानता
हो ।

साह्रय—(सं पुं) गदगता तुलात,
एके शुभर होवा अदहा ।
एक रूपता । तुलना ।

साध—(सं स्त्री) अभिलाषा, ईष्ठा,
उत्कृष्टा ।

अभिलाषा । उत्कंठा ।
(सं पुं) गार्हलोक ।
साधु । सज्जन ।
[वि] उद्यम, भाव ।
उत्तम । अच्छा ।

साधन—(सं पुं) गिद्धि कवा, कार्य
निर्णय वा आदेश आदि पालन
कवा, उपकरण, उपाय ।
कार्य आरम्भ करके पूर्ण करना ।
निर्णय, आज्ञा आदि पालन
करना । कोई चीज तैयार करने
का सामान । उपकरण । उपाय ।

साधार—[वि] आधार मुक्त ।
आधार युक्त ।

साधारणी करण—[सं पुं] काव्य
नायक आदिब लगत पाठक
बा श्रोताब मनब तादात्म्य वा मिल
होवा मानसिक स्थिति ।

वह मानसिक व्यापार जिसके द्वारा काव्य के नायकादि के साथ श्रोता या पाठक का तादात्म्य होता है।

साधिकार—(क्रि वि) अधिकारबल
गैते, अधिकार पूर्वक।
अधिकार पूर्वक।

साधुवाद—[सं पुं] श्लाघा कवा,
गमान कवा।
प्रशंसा या आदर करना।

साध्वी—[वि] प्रति भक्ति-परायणा,
गती, प्रतिष्ठता स्त्री।
पतिव्रता। पवित्र आचरणवाली।

सानंद—(क्रि वि) आनन्दबल।
आनन्द पूर्वक।

सान—[सं पुं] नाप मिन।
वह पत्थर जिस पर रगड़कर
अस्त्रों आदि की धार तेज की
जाती है।

सानना—(क्रि स) आटा आदि
गना, मिश्रित कवा, दोष, अप-
बाध आदि का बो गैते विना
कारण लोपित।

आटा आदि गुँथना। मिश्रित
करना। दोष, अपराध आदि के

लिये किसी के साथ अकारण
दोषी या उत्तरदायी बनाना।

सानो—[सं स्त्री] पाना-पानी।
पानी में भिगोया हुआ गो, भैंसों
का चारा।
(' वि) अहेन, गमानव।
दूसरा, बराबरी का।

सानु—(सं पुं) पर्यन्त शिखर,
प्राथम्य, उज्ज्वल, शक्ति।
पर्वत का शिखर। पत्थर।
जंगल।
(वि) डाँडर दोषल।
लम्बा चौड़ा। चौरस।

सानुकूल—(वि) अनुकूल।
अनुकूल।

सान्निध्य—(सं पुं) उच्च। गायीत्री
समीपता। निकटता।

सापना—(क्रि स) नाप दिना।
शाप देना।

सापेक्ष—(वि) अपेक्षा कवा।
निर्भर कवा।

• जिसमें किसीकी अपेक्षा हो। जो
• • दूसरे पर अवलंबित हो।

साफ—(वि) शुद्ध। निर्मल। पवित्र,
निर्दोष। उज्ज्वल। पवित्र।

स्वच्छ । निर्मल । पवित्र ।
निर्दोष । उज्ज्वल । निखरा हुआ ।
निष्कपट । सादा ।

[क्रि वि] दोष, कलंक आदि
नोहोरा ।

बिना किसी दोष, कलंक या
हानि के ।

साफा—[सं पुं] गर प्राशुवी ।
छोटी पगड़ी ।

साक्षिक—(वि) आगम । शैलिक ।
आधुनिक ।
पहले का ।

साक्षिका—(सं पुं) गच्छ ।
सम्पर्क ।

साक्षित—[वि] अवाचित । गम्भीर ।
पका । कबा ।
प्रमाणित । पुरा । पक्का ।

साक्षुत, साक्षुत—(वि) अशुद्ध । निर्दोष-
छान ।
जो खंडित न हुआ हो । सब ।

साभार—(क्रि वि) कृतज्ञता पूर्वक ।
कृतज्ञता पूर्वक ।

सामंजस्य—(सं पुं) अनुकूलता ।
अव्यक्त बिल । उचितता ।

अनुकूलता । एक-रसता ।
ओचित्य ।

सामंत—[सं पुं] वीर । गाथाना वा
तुलसीदास बला । कबतुलसीदास
बला ।

वीर । अधीनस्थ राजा । कर
देनेवाला राजा ।

साम—(सं पुं) गोदा वेदमन्त्र ।
गाम वेद । बाधनीतिर अथान
छाबिटा नीतिर एटा कला ।
तोषण मित्रता ।

गाये जानेवाले वेद मंत्र । साम-
वेद । राजनीति में शत्रुसे मीठी
बातें करके अपनी ओर मिलाने
की नीति । मित्रता । श्याम ।

सामना—(सं पुं) गम्भीर होना,
गाथा । प्रकाशित । अति-
योगिता ।

समक्ष या सम्मुख होने की क्रिया
या भाव । मुलाकात । सामने या
आगेवाला भाग । मुकाबला ।

सामने—[क्रि वि] गम्भीर । आगंत ।
विरक्त । अतियोगिता ।

सम्मुख । आगे । सीधे आगेकी
ओर । विरुद्ध । मुकाबले में ।

सामरस्य—(सं पुं) गमरगत ।

ममरसता ।

सामान—(सं पुं) गमनी । अत्यन्त ।

आठवाव पत्र ।

सामग्री । आयोजन । घर गृहस्थी
आदि की या कोई काम चलाने
की सब चीजें ।

सामान्य—(वि) गामाना । गमाय

देखा सुना । विशेषण नथका ।

गाथावण । ईतर ।

जिसमें कोई विशेषता न हो ।

मामूली । सार्वजनिक ।

सामान्यतः [तथा]—[कि वि] गामाना

धरणे । गाथावणते ।

सामान्य रूपसे । साधारणतः ।

सामासिक—(वि) गमाय गमकीय ।

गामूहिक । गमकीय । मिश्रित ।

समास से सम्बन्ध रखनेवाला ।

समास का । सामूहिक । संक्षिप्त ।

सामिष—[वि] माछ, मांस धका ।

गमिष ।

मांस धुक्त ।

सामीप्य—(सं पुं) ७८४ । निकट ।

निकटता ।

सामुद्रिक [वि] गमूय गमकीय ।

समुद्र सम्बन्धी ।

(सं पुं) इच्छा बेखा विच्छा ।

शांत छाव अना लोक ।

हस्तरेखा-विद्या । इस विद्याका
ज्ञाता ।

साय—(सं पुं) गका ।

संध्या । शाम ।

[वि] गमिषा इवलगमिषा ।

संध्याके समय होनेवाला ।

सायक—(सं पुं) गम । खड्ग ।

बाण । खड्ग ।

सायन—(सं पुं) चूया विव्व बेखात

श्रित होवा गमय-येतिगमिषा दिन

बाति गमान इय ।

वर्षमें दो बार आनेवाला वह

समय जब सूर्य भू-मध्य रेखापर

पहुँचनेपर दिन और रात दोनों

बराबर होते हैं ।

सायल—[सं पुं] अन्न कर्त्ता । आर्षी,

मावी कर्त्ता, धोता ।

सवाल या प्रश्न करनेवाला ।

प्राची । मांगनेवाला ।

साया—[सं पुं] ईशा । अडाव ।

डिबोताव पोछाक विषय ।

छाया । परछाई । प्रभाव । एक
जनाना पहनावा ।

सायास—[क्रि वि] परिश्रमसे ।
आयास या परिश्रम पूर्वक ।

सायुज, सायुज्य—[सं पुं] गौड-
विश्व मुक्तिव एविश्व । पञ्चमन्त्रवत
लग्न है मोठा मुक्ति ।

सम्पूर्ण मिलन । जीवात्मा का
परमात्माके साथ पूर्ण मिलन ।

सारंग—(सं पुं) हविष विनेष ।
कुल चबाई, शौह । मंदा चबाई ।
पानीपिया चबाई । शोडी ।
बोरा । बाध । डोमोरा । पुखुरी
बाञ्छ विनेष । गावेन्नी)

एक प्रकारका हिरन । कोयल ।
हंस । मोर । पपीहा । हाथी ।
घोड़ा । शेर । भौरा । तालाब ।
सारंगी ।

[वि] बञ्छित । झूलव । बगल ।
रंगा हुआ । सुन्दर । सरस ।

सारंगपाणि—(सं पुं, विष्णु) शिखर ।
विष्णु ।

सारंगी—(सं स्त्री) शास्त्रपात्र ।
वेशांगार निठिना एविश्व बाञ्छयज्ञ ।
एक प्रकारका तारोवाला बाजा ।

सार [सं पुं] तब । मूथा । जर्ब,
कला बल । महीना । मोहन-मोहन ।
मोहनः । बाई । बूलमालि ।
तत्व । तात्पर्य । अर्थ । परिणाम,
फल । बल । मैना(पक्षी) । पालन
पोषण । पलंग । कपूर । मनमें
खटकनेवाली बात । साला ।

सार-गर्भित—(वि) गाव कथा थका ।
जिसमें सार हो ।

सार-माही—(वि) गाव भाग ग्रहण
कबिब पत्रा । भागपत्रा ग्रहण
कबिब पत्रा । गावमाही ।
वस्तुओं या विषयों का तत्व या
सार ग्रहण करनेवाला ।

सारथी—(सं पुं) गावथि । बथ
चलाउता ।
रथ चलानेवाला ।

सारदा—[सं स्त्री] शारदा । गवच्छो
दुर्गा ।

शारदा । दुर्गा । सरस्वती ।

सारना—[क्रि अ] सम्पूर्ण कर्ना ।
सम्पूर्ण गच्छावा । गच्छावा ।
बन्ना कर्ना । मवा । ग्रहाव कर्ना ।
[काम] पूरा या ठीक करना ।
सुन्दर बनाना । सजाना । रक्षा
करना । प्रहार करना ।

सारवान—[सं पु] उष्टव चरिष्ठ ।

वह जो ऊँट चलाने या हाँकनेका काम करता है ।

सारल्य—[सं पु] गवतडा ।

सरलता ।

सारस—(स पु) एविश चवाइ ।

शंश । खान । प्रदूष ।

एक प्रकारका पक्षी । हंस ।

चन्द्रमा । कमल ।

सारिका—(सं स्त्री) शालिका । गधेना
छाडे ।

मैना [पक्षी] ।

सारिणी—(सं स्त्री) शालिका,

रुक्म, निर्धर्मे, चूटी प्रद ।

एक पृष्ठमें अलग अलग स्तंभों या
खानोंके रूपमें दिये हुए शब्दों
पदों, अंकों आदिका विन्यास ।

कोष्ठक । [अं—टेबुल]

सारी—[सं स्त्री] गधेना । खूब धनवान
प्राणी ।

मैना । जुआ खेलनेका पासा ।

(वि) गकलो ।

समस्त ।

सारूप्य—(सं पु) शीठ विध श्रुतिव
एविश । देशांत प्रवचनवन

गैठेठ एके रूप वा गंत प्राप्त
हुनि कथ ।

वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने
उपास्य देव का रूप प्राप्त कर
लेता है । सरूपता ।

सार्ध—[वि] अर्धशुद्ध ।

अर्थ सहित ।

सार्धबाह—[सं पु] वनिक । दूर देशमें

बहु विकिवटेल घोड़ा वावगात्री ।

वह व्यापारी जो अपना माल
बेचने दूर तक जाता हो ।

सार्ध कालिक—[वि] गकलो गमयटव

उपयोगी । गकलो कालगश्कीय ।

सब कालोंमें उपयुक्त । सब काल
सम्बन्धी ।

सार्व भौम—[सं पु] चक्रवर्ती राजा ।

गज्राटे । शही ।

चक्रवर्ती राजा । हाथी ।

[वि] पुराण मत पृथिवीक धवि
थका आठ दिग्गज आठोटा ।

शहीव उखन दिग्गज शहीटो ।

विश्वविख्यात । गकलो छुनि
गश्कीय ।

कुबेर का हाथी । विश्वविख्यात ।

सारी भूमि सम्बन्धी । सर्व-सत्ता
सम्पन्न ।

साल—(सं पु) बख्त । गमय ।

वर्ष । काल-मान ।

(सं स्त्री) गनारुष्टे । खरब ।

कौंठा । विक्र । शाल गच्छ ।

मनमें होनेवाला कष्ट । लकड़ियाँ जोड़ने के लिये उनमें किया जाने वाला चौकोर छेद । सुराख । शाखू

साल- गिरह—[सं स्त्री] जय वाशिकी ।

बरस-गाँठ ।

सालना—(क्रि अ) मनत बुझवनि उपजा । जेतोमावा ।

मनमें खटकना । चुभना ।

[क्रि स] कष्टे दिशा, विक्र कबा । अटवण कबा ।

दुःख पहुँचाना । छेद करना । प्रविष्ट करना ।

साला—[सं पु] धूलनालि । किसीकी पत्नीका भाई ।

सालाना—[वि] बख्तकीया । वाशिक ।

सालू—[सं पु] बडा कापोव । एक लाल कपड़ा ।

सावधि—(वि) अवधि बूझ । अवधि युक्त ।

सावन—(सं पु) शीत ऋतु ।

श्रावण का महीना ।

सावनी—(वि) शीत ऋतु गच्छीय, शीत ऋतु होवा ।

सावन सम्बन्धी । सावन का ।

सावनमें होनेवाला ।

(सं स्त्री) शीत ऋतु गौवा लोकगीत विशेष ।

सावनमें गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत ।

सावित्री—(सं स्त्री) सूर्याव अधि-ष्ठात्री देवी, गायत्री, गवन्धरी, गवदा, उपनयन गमयत होवा गच्छाव विशेष ।

गायत्री । सरस्वती । सुहागिन । उपनयनके समय होनेवाला एक संस्कार ।

साशु—(क्रि वि) चक्र पानोवे चललीया ।

आँखोंमें आँसू भरकर ।

[वि] अक्षपूर्ण ।

अश्वपूर्ण ।

साष्टांग—[क्रि वि] जाठ अष्टांग ।

आँठ, भवि, हात, बूझ, नूर दृष्टि, बुझि- बाका एहे आठ अष्ट

अंग मग्राहे ।

आठो अंगोंसे ।

सास—(सं स्त्री) माह ।

स्त्री या पुरुषके विचारसे उसके

पति या पत्नी की माता ।

सासना—(क्रि स) शास्त्र दिया,
कष्ट दिया ।

दण्ड देना, अधिक कष्ट पहुँचाना ।

[सं स्त्री] शास्त्र, शारीरिक
यातना ।

सजा । बहुत अधिक शारीरिक
कष्ट ।

साह—(सं पुं) बेप्रायी, बादशाह ।

साहूकार । बादशाह ।

साहचर्य—(सं पुं) गह, गैठे,
गहगहन, गहृति ।

सहचर होनेका भाव । संग ।

साथ ।

साहसी—(वि) छाया वा ईश्वर
पद ।

साहबों या अंग्रेजों का सा ।

[सं स्त्री] ऐश्वर्य, ऊँ
अधिकार ।

प्रभुता या ऐश्वर्यसे युक्त उच्च
अधिकार ।

साहस—[सं पुं] गाहन ।

हिम्मत ।

साहसी—(वि) गाहनौ, गाहियाँ ।
हिम्मती ।

साही—(सं पुं) बख ।

शाह । राजा ।

साहिब—(सं पुं) छाया, ऐश्वर्य ।
साहब । ईश्वर

साहिल—(सं पुं) प्राय, तीव्र ।
किनारा ।

साही—(सं स्त्री) बनबीया जन्तु,
पुर्वणि तबोवान ।

एक जंगली जन्तु । पुराने ढंगकी
तलवार ।

साहु—(सं पुं) गहजन, बेप्रायी,
महाजन, शक्ति ।

सज्जन । सेठ । महाजन । बनिया ।
ईमानदार ।

साहूकार—(सं पुं) डाँडव महाजन
गदाग्रव ।

बड़ा महाजन ।

सिंगार—[सं पुं] शृंगार, शोभा ।
मजावट । शोभा ।

सिंगारदान—[सं पुं] कनि, आशेन
आदि थोड़ा गह पोटोबी, चन्दक ।

शीशा, कँची आदि रखनेकी
छोटी सन्दूक ।

सिंध—(सं पुं) जिंह ।
सिंह ।

सिंघाई—(स स्त्री) छटिया, गिरन
कबा, छटिओबा, पानी जिँठा,
पानी जिँठा बाबे दिया पाबिञ्च-
मिक ।

सींचने या पानी छिड़कनेका काम
या भाव । खेतीबारीके लिये
खेतोंमें जल पहुँचाने की क्रिया,
भाव या उसका पारिश्चमिक ।

सिंचित—(वि) गिरित, जिँठा ।
सींचा हुआ । भीगा हुआ ।

सिंजित—(वि) ध्वनि, शब्द, अन्-
ध्वनि शब्द, अङ्कित ।
जिसमें ध्वनि, शब्द या अङ्कार
हो ।

सिंदूर—(सं पुं) गिन्दूर, गीह वा
पाबाब गबा तैयार कबा एबिध
बडा बबगीरा गुबि, गधबाई
कौंठ लोबा बडाशुबि ।

एक प्रकारका लाल रंगका चूर्ण
जिसे हिन्दू सुहागिनें मांगमें
भरती हैं ।

सिंदूरी—[वि] गिन्दूरी ।
सिन्दूर के रंगका ।

सिंधु—(सं पुं) गिन्दू नद, गांगर ।
नद । समुद्र ।

सिंधुजा—(सं स्त्री) लम्बी ।
लक्ष्मी ।

सिंधूरा—[सं पुं] गङ्गीतब एठा
बाग ।
सं गीतका एक राग ।

सिंधोरा—(सं पुं) तिरवाता गक-
लब गिन्दूर बधा काठेब कोठा ।
स्त्रियोंका सिंदूर रखनेका काठ
का डिब्बा ।

सिंह—(सं पुं) जिंह, डांडव बीब,
बाब बाशिब एठा [ज्योतिष] ।
बबर घेर । बहुत बड़ा बीर ।
बारह राशियोंमें से एक ।

सिंह-द्वार—[सं पुं] प्रमुख-द्वार,
बजाब नगर वा टोलटोल मोमोबा
बाई दूबाब ।
सदर और बड़ा फाटक ।

सिंहावलोकन—[सं पुं] जिंहब
दबे पिछले चाई आगबडा,
गङ्कपते अतीतब कथाब
आलोचना वा वर्णन कबा ।

सिंहकी तरह पीछे देखते हुए
आगे बढ़ना : संक्षेपमें पिछली
बातोंका दिग्दर्शन या वर्णन ।

सिंहिनी--(सं स्त्री) जिंशी ।
सिंह की मादा ।

सि- (बि स्त्री) गयान, निठिना ।
समान । तुल्य ।

सिकड़ी--(सं स्त्री) निकलि, गश्ना
विट्णव ।
जंजीर । एक गहना ।

सिकत, सिकता--(सं स्त्री) बानि,
भुलि, बालिछशीमा बाटि, छनि ।
बालू । रेतीली जमीन । चीनी ।

सिकछो--(सं स्त्री) निकलि, अङ्ग-
भङ्ग आदि अधिकार कर्ता ।
सिकड़ी । अस्त्र आदि मौजकर
साफ करनेकी क्रिया ।

सिकडर--(सं पुं) छिका ।
छीका ।

सिकुड़न--(सं स्त्री) कौंठ खोदा,
छपा खोदा ।
सिकुड़ने के कारण पड़ा हुआ बल ।

सिकुड़ना--(क्रि अ) गङ्गछिउ
खोदा, कौंठ खोदा ।
संकुचित होना । बल या शिकन
पड़ना । [क्रि स-सिकोड़ना]

सिक्का--(सं पुं) मूद्रा, मोहर,
टका-पट्टा आदि, अधिकार,
अङ्गुष्ठ ।

मुद्रा । मोहर । छाप । रुपया पैसा
आदि । अधिकार । प्रभुत्व ।

सिक्ख, सिख--[सं पुं] शिक्षा,
निश्चयाति ।

शिष्य । गुरुनानक के पंथ का
अनुयायी ।

(सं स्त्री) शिक्षा, शिक्षा-टिकनि
शिक्षा । शिक्षा या चोटी ।

सिक्त (वि) गिळ, डिङा, तिडा ।
भीगा हुआ ।

सिखंड--[सं पुं] बंवा चबाड़े,
बवा चबाड़े आदि ।
मोर । मोरका पंख ।

सिखाना--[क्रि स] शिक्षा दिया,
प्रांठ भेटावा ।
शिक्षा देना ।

सिखापन (वन)--(सं पुं) उपदेश ।
उपदेश ।

सिगरा, सिगरो--(वि) गङ्गून,
सम्पूर्ण । पूरा । सारा ।

सिजदा--[सं पुं] अंगार, नव-
काव । प्रणाम ।

सिद्धान्त—[क्रि स] कर्षण, गिराव ।

आँचपर पकाकर गलाना । कष्ट देना ।

सिटकिनी—[सं स्त्री] इन कला, छुवाव आदि बद्ध कला यत्न ।

किवाड़ बन्द करने के लिये लोहे या पीतल का एक विशेष उपकरण ।

सिटपिटाना—[क्रि अ] झगड़ रूप शै थका, मोटोकाश पना ।

डरकर चुप हो जाना । दुविधामें पड़ जाना ।

सिट्टी—(सं स्त्री) अतिशयोक्ति पूर्ण कथा कोवा वाचालता । डींग मारना ।

सिट्ठी—[वि] पागल, ठेका बलिया । पागल । सनकी ।

सितकंठ—(सं पुं) नीलकंठ, महादेव, महा देवा । शितिकंठ । महादेव । मोर ।

सितम—(सं पुं) अताछाव । दूधम जल्योचार । जुलम ।

सितलाई—(सं स्त्री) शीतलता । शीतलता ।

सितार—(सं पुं) छेताव ।

तारों का बना एक प्रकार का बाजा ।

सितारा—(सं पुं) तारा । भागा । उच्छल (गोण, कणर पातव) । टोप ।

आकाश का तारा । भाग्य । चमकीले पत्तर की गोल बिन्दी ।

सिथिलाई—(सं स्त्री) शिथिलता । शिथिलता ।

सिद्ध-हस्त—[वि] दक्ष ! पार्श्व । निपुण । निपुण ।

सिद्धाई—(सं स्त्री) शिद्ध अथवा महाशक्ति होवा अवस्था । सिद्ध या महात्मा होने की दशा या भाव ।

सिद्धासन—[सं पुं] योगासन विशेष योगसाधन का एक प्रकार का आसन ।

सिद्धाई—(सं स्त्री) गवतता । चिन्ता । सीधापन । सरलता ।

सिद्धना—[क्रि अ] छोटेबेने निष्ठा । छेनियाई नाकब शक्ति दूब कवा । जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना ।

सिपर—(स स्त्री) ढाल । बल्लन ।
ढाल ।

सिपह सालार—(सं पुं) सेनापति।
सेनापति ।

सिपाही—[सं पुं] ठिपाही । योद्धा।
ऐनिक । अश्वी । वीर ।
योद्धा । सैनिक । पहरेदार ।
वीर ।

सिफत - [मं स्त्री] विशेषता । गुण ।
विशेषता । गुण ।

सिफर—(स पुं) शून्य ।
शून्य ।

सिफारिश—(सं स्त्री) कारवा विषये
भाल भावे कार । कारोबार
कोटोना काम कवि दिवटेल
आनक अश्वदाश । थोछामति ।
किसी के पक्षमें कुछ अनुकूल
अनुरोध ।

सिफारिशो - [वि] थोछामति ।
अनुकूल अश्वदाश थका ।
जिसमें सिफारिश हो । खुशामदी

सिमटना—[क्रि अ] ढौंछा थोबा ।
छेपा थोबा । काम लेश होबा ।
सिकुड़ना । बल या शिकन पड़ना,
कार्य समाप्त होना ।

सिय (1)— [सं स्त्री] गीता ।
आनकी ।

जानकी ।

सियना—[क्रि अ] बचना ।
रचना
(क्रि स) ठिलाई कबा ।
सीना ।

सियार—[सं पुं] गियाल ।
गीदड ।

सिर—[सं पुं] मूब । गौर ।
मस्तक । माथा । चोटी ।
(वि) महान । उडम । डाल ।
महान । उत्तम । अच्छा ।

सिरका—(सं पुं) ब'नत सुकाई टेढा
कबा कुँहियाब, आश्रुब आदिब बग ।
धूपमें पकाकर खट्टा किया हुआ
किसी फल का रस ।

सिरजनहार—[सं पुं] श्रष्टि कर्त्ता ।
परमात्मा ।

सृष्टि रचनेवाला । परमात्मा ।

सिरजना - [क्रि स] बचना । श्रष्टि
कबा । उपपन्न कबा वा गजा ।
रचना । बनाना । उत्पन्न या
तैयार करना ।

सिरपच्ची—(सं स्त्री) मृद-बटोबा ।
सिर-खपाना । माथा पच्ची ।

सिरपेच—(सं पुं) प्राग्बोध शिक्षा ।

अलङ्कार विदेश ।

पगड़ी पर बाँधने का एक गहना ।
कलगी ।

सिरमौर—(सं पुं) शिबदूषण ।

शिवोन्मत्ति ।

सिरका मुकुट । शिरोमणि ।

सिरहाना—(सं पुं) शूद्र निजान ।

मोने की जगह पर सिरकी ओर
का भाग ।

सिरा—(सं पुं) अश्व । उपर अश्व ।

पार । श्वेत ।

छोर । ऊपरी भाग । किनारा ।
नोक ।

सिराना—[क्रि अ] शीतल होना ।

मन होना । अतीत होना । बह
होना ।

ठंडा होना । मंद पड़ना । बीतना ।

बंद होना ।

सिरोरुह—(सं पुं) अश्व ।

कमल ।

सिराही—[सं स्त्री] कर्ना चबाई

विशेष, तबोदात ।

एक प्रकार की काली चिड़िया ।

तलवार ।

सिर्फ—(वि) केवल ।

केवल ।

सिल—(सं स्त्री) शिल । पत्ठा (गठना
बटो शिल)

शिला । पत्थरका टुकड़ा जिसपर
मसाले आदि पीसते हैं ।

सिलसिला—[सं पुं] क्रम, श्रृंखला,
बादशाह ।

क्रम बंधा हुआ तार । श्रेणी ।
व्यवस्था ।

सिलसिलेदार—(वि) क्रमाश्रित ।
सिलसिले से । क्रमानुसार ।

सिलह—[सं पुं] अश्व-शस्त्र ।
हथियार ।

सिलाई—(सं स्त्री) चिनाई का काम,
पद्धति अथवा तार बाँधे द्वारा
बाना ।

‘सीने’ का काम, ढंग या मजदूरी ।

सिलह—(सं पुं) कवच, अश्व-शस्त्र ।
कवच । हथियार ।

सिलसिल—(सं पुं) शिलीमुख,
एक विशेष बर टोका काँड़, मो-
नाभि, फोटावा ।

शिली मुख [भौरा, बाण]

सिलौटा—(सं पुं) गठना बटो
पटा आरु पटाछुटि ।

सिल । सिल और उसका बट्टा ।

सिल्ली—(सं स्त्री) नाव पाथर,
बबक आदिब टुकुरा ।

हथियार की धार तेज करने की
सान । पत्थर, बर्फ आदि की
पटिया ।

सिवा[य]—(अव्य) अतिबिछु,
बाशिर ।

• अतिरिक्त । अलावा ।

सिवान—(सं पुं) जीवा ।
हृद । सीमा ।

सिवार—[सं स्त्री] शैवाल, पानीत
होवा मौषल शौह ।

शैवाल । पानीमें होनेवाली एक
तरह की लम्बी घाम ।

सिसकना—(क्रि अ) केंकुरी कन्ना ।
सिसकी भरकर रोना ।

सिसकी—[सं स्त्री] उठ्रुपि उठ्रुपि
कन्ना ।

• धीरे धीरे रोने का शब्द ।

सिहरन, सिहरी—(सं स्त्री)
गिह्वा कार्य ।

सिहरने की क्रिया या भाव ।

सिहरना—(क्रि अ) गा गिह्वा
होवा गिह्वा ।

शीत या भय से कांपना ।

सिहाना—(क्रि ध) बर्षा कवा,
लालायित होवा, शुष्क, गच्छुटे
होवा ।

ईर्ष्या करना । लालायित होना ।
मुग्ध होना । संतुष्ट होना ।

सीक—(सं स्त्री) गला-शौह, खेव
आदिब मौषल, पातल आरु
उकान शबिका ।

घास आदि का लम्बा, पतला,
कड़ा डंठल । सरकंडा ।

सींग—(सं पुं) गिः ।
पशुओं के सिरपर के कठोर,
लम्बे, नुकीले अवयव ।

सींचना—(क्रि स) पानी गिँठा ।
डिक्कावा ।

खेतों आदिमें पानी देना । मिगोना ।

सीकर—[सं पुं] पानीब कप । सिन्धू ।
जलकण । बूँद ।

सोख—[सं स्त्री] गिक्का, उपपेन,
परावर्ष ।

शिक्षा । उपदेश । परामर्श ।

सोखचा—(सं पुं) जनाव मौषल गवि
लोहे का लम्बा छड़ ।

सीखना—[क्रि स] शिकनि पोदा ।
शिक्षा पाना ।

सीझना—(क्रि अ) जिझ, ज्झावा,
जिझा कहे जश कबा ।
आंचपर पकना या गलना । कष्ट
सहना ।

सीटी—(सं स्त्री) झुझवि, बाञ्छ विदेश ।
होंठ सिकोड़ कर मुँह से किया
जानेवाला तेज शब्द । एक प्रकार
का बाजा ।

सीठी—[सं स्त्री] बग छेपि उलि-
उवा फल मूलब गिठा वा शिठा,
गावडीन वस्तु ।
चूसे या रस निचोड़े हुए फल
आदि का नीरस अंश । सार-हीन
पदार्थ ।

सीढ़ (ढ़)—[सं स्त्री] छेँका ।
सीली या तर जमीनके कारण
होनेवाली नमी ।

सीढ़ी—[सं स्त्री] खड्गना । शंखों
निसेनी । जीना ।

सीताफल—(सं पुं) कोयोबा ।
आतलठ ।
शरीफा । कुम्हड़ा ।

सीदना—(क्रि अ क्रि स) झूःब
पोदा । नाश होवा वा कबा ।

दुःख पाना या देना । नाश होना
या करना ।

सीध—(सं स्त्री) ठिथी । पोथ
बेथी । लक्का ।
सीधापन । सीधी रेखा या दिशा ।
निशाना ।

सीधा—[वि] गबन । अजना ।
नाखु आरु गप्पडावर ।
सरल । भोला । शांत और
सुशील । सहज ।
(सं पुं) आगव अग्न । जिबा-
बाकि खावटेन दिया छाँडन,
माश आदि बोवा वस्तु । डोहनौ ।
सामने का भाग । बिना पका
हुआ अन्न (ब्राह्मण आदि को
देनेका)

सीधे—(क्रि वि) गयूखर गितन ।
निहे रावशाबरेव ।

सामनेकी ओर । शिष्ट व्यवहारसे ।

सीना—(क्रि अ) छिगाई कबा ।
सिलाई करना ।

(सं पुं) बक ।

छाती ।

सीप—(सं पुं) बखनोवा नायूक,
गार्गव नायूकब बोध ।

कड़े आवरणमें रहनेवाला एक
जल जंतु । समुद्री सीपका सफेद
चमकीला आवरण ।

सीपी—[सं स्त्री] शीशुकब शैल ।
सीपका आवरण या सम्पुट ।

सीमंत-(सं पुं) तिरिवाताव जै उता ।
स्त्रियो के सिर की मांग ।

सीमोल्लंघन—(सं पुं) रर्यादाव
विकृष्ट काम कवा गोमा
यत्किम कवि योवा । अयेनव
वाछात अवेण कवा ।
मर्यादाके विरुद्ध कार्य करना ।
किसी राज्यपर आक्रमण करने के
लिये अपनी सीमा पार करके
उसकी सीमामें पहुँचना ।

सीय—[सं स्त्री] जीता ।
जानकी ।

सीर—(सं पुं) नाडल । गाडलत
छुरि दिया बलद । शूर्य ।
इल । सूर्य । हलमें जोता जानेवाला
बैल ।

[सं स्त्री] अश्व । आशिया,
रूकानि आदि नाटिब बल्मावली
बीति ।

साभा । किसी के साम्ने में जमीन
जोतने-बोने की रीति ।

सीरा—(सं पुं) छात्रि छावा वख ।
नशुनाब वख । गोवांन । शूब
मिठान ।

चाशनी । सिरहाना ।
[वि] शीशु, मोन । मौडल ।
ठंडा । शांत । मोन ।

सील—(सं स्त्री) नाटिब खेका गुण ।
भूमि की आद्रता ।

सीवन—[सं स्त्री] जिगा काम ।
काटि ना बिका ।
सीने का काम । सिलाई के टाँके ।
दरार ।

सीस—(सं पुं) शूब ।
सिर ।

सुँघनी—[सं स्त्री] नगा । नाटखवि ।
नस्य ।

सुँघाना—[क्रि स] खूडावा ।
किसीको सुँघने में प्रवृत्त करना ।

सुँड, सुँडा—(सं पुं) उँड ।
सूँड ।

सुंदरताई, सुंदराई—[सं स्त्री]
सुनबता ।
सुन्दरता ।

सु—[सप०] सुनब, खेडँडा खूक
उपगर्ग

सुन्दर या श्रेष्ठ का वाचक एक
उपसर्ग ।

(सर्व) जैसे / उ३३ वा 'ग' ।

सो । वह ।

(अव्य) छुट्टीया, पक्षयो याद
यष्टि विभक्ति (शिरो) ।

तृतीया, पंचमी और पष्ठी विभ-
क्तियों का चिह्न ।

[वि] निष्ठा । मनान ।

स्व (अपना) । सम ।

सुधन--(सं पुं) पुत्र ।

बेटा ।

सुधा--[सं पुं] भाटो ।

तोता ।

सुधार--(सं पुं) बाकनि ।

रसोइया ।

सुकंठ--[वि] सुन्दर गल थका, सुदनी

मात थका ।

जिसकी गरदन सुन्दर हो ।

जिसका स्वर मधुर हो ।

[सं पुं] सुधीव ।

सुधीव ।

सुकर--[वि] गश्क, सुगम ।

जो सहज में किया जा सके ।

सुगम ।

सुकाल--[सं पुं] भाल गनय, गडौया
गनय ।

अच्छा समय । सस्तीका समय ।

सुकुआर, सुकुबार--(वि) निट्टे

कोमल बगनय, सूकूबार ।

सुकुमार ।

सुकुल--(सं पुं) उडम कुल, उड

नामर उपाधि विशेष ।

उत्तम कुल । सुकुल ।

सुकुत्--(वि) धार्मिक, उड कार्या

करेता ।

उत्तम आरक्षुम कार्य करनेवाला ।

धार्मिक ।

सुकुत--(सं पुं) पुण्य, गश्कर्ष ।

पुण्य । सत्कर्म ।

(वि) उपासना, धार्मिक ।

भाग्यवान । धर्मशील ।

सुकुनि, सुकुती--(सं स्त्री) सुकर्ष ।

अच्छा कार्य ।

[सं पुं] भाल काय करेता

वाङ्मि ।

अच्छे काम करनेवाला व्यक्ति ।

सुखंढी--(सं स्त्री) प्रयागती ।

बच्चोंका मूला रोग ।

सुखद, सुखकर, सुखदाता, सुख-
दानि (नी), सुखदायी सुखदेव,
सुखप्रद, सुखकर—(वि) अश्वजनक,
आनन्द कर ।

सुख देनेवाला ।

सुखधाम—[सं पुं] स्थी-निवास,
वैकुण्ठ, स्वर्ग ।

सुख का घर । बैकुण्ठ । स्वर्ग ।

सुखमन, सुखमा—(सं स्त्री)

शुनीया, मनोबल ।

सुषमा ।

सुखबंत, सुखवार—[सं पुं] स्थी,
आनन्दकर ।

सुखी । सुख दायक ।

सुखान्त—[सं पुं] स्थ पूर्य अरु
शोभा (नाटिक) ।

जिसका अंत सुखपूर्ण हो ।

सुखाना—(क्रि स) ब'प वा छुशेठ
उत्कोठा, प्रक्षाल कर ।

घूममें या आगपर रखकर आद्रंता
हूर करना । दुबल बनाना ।

सुखारा, सुखाबह (रो)—(वि)
स्थप, गह्व ।

सुखद । सहज ।

सुखेन—[क्रि वि] स्थपद ।

सुखपूर्वक ।

सुगत—[सं पुं] गशावा वृक्ष आन
एति नाश, वृक्ष ।

महात्मा बुद्धका एक नाम । बौद्ध ।

सुगति—(सं स्त्री) वृक्ष, गद्गति ।
मोक्ष ।

सुगना, सुगगा—(सं पुं) डाटों ।
तोता ।

सुगम—(वि) उच्च, चिना, गह्व,
गह्व याव पत्र ।

जिसमें जाना या पहुँचना कठिन
न हो । सहज ।

सुगर—(वि) स्थान, स्थान ।
सुन्दर । सुकंठ । सुगम ।

सुघट—(वि) स्थान, गह्व ।
सुन्दर । सुगम ।

सुघट, सुघर—(वि) स्थान, शोभ
कायत पावर्ग ।

सुन्दर । हाथ के काम करने में
निपुण ।

सुघरी—(सं स्त्री) उच्च वृक्ष ।
शुभ समय या साइत ।

सुचंद—[वि] उच्च । जान ।
उत्तम । बढ़िया ।

(सं पुं) शुनिवाव ज्ञान ।
पूर्णमा का चन्द्रमा ।

सुचाल—(सं स्त्री) ভাল চাল-
চলন । উভয় ব্যবহার ।

अच्छी चाल । उत्तम आचरण ।

सुचाली—(वि) जहाजाबी ।
सदाचारी ।

सुचिमत—(वि) जहाजाबी ।
सदाचारी ।

सुचिभन—[बि] পবিত্র মন থকা ।
पवित्र मनवाला ।

सुचिर—[वि] श्राद्धी । शुद्धि ।
स्थायी । पुराना ।

सुजन—(सं पुं) গজনলোক । পবিত্র-
প্রাণ ।

सज्जन पुरुष । परिवार के लोग ।

सुजस—[सं पुं] স্মরণ । যশস্শা ।
सुयश ।

सुजान—(वि) बुद्धिमान । गाढधान ।
प्रावण । गज्जन ।

बुद्धिमान । होशियार । निपुण ।
सज्जन ।

(सं पुं) স্বামী । ঐশ্বরিক ।
केशव ।

पति या प्रेमी । ईश्वर ।

सुझाना—[क्रि स] আনক বুঝাবা
বা দৃষ্ট গোচর করা ।

दूसरे की सूझ या ध्यानमें लाना ।

सुझाव—[सं पुं] दिशा, प्रवर्तन ।

परामर्श । सुझाने की क्रिया
या भाव ।

सुटकुन—(सं स्त्री) বাইব গরু নাঠি
ছোটী পতলী ছड़ी ।

सुटकुना—(क्रि अ) মনে মনে লাঠে
লাঠে খোঁচা ।

चुपचाप या धीरे से चल देना ।

सुठ, सुठि सुठैना, ठौन—[बि]
স্মরণ । ভাল । বহু ।

सुन्दर । अच्छा । बहुत ।

(अव्य) গল্প । একেবারে ।

पूरा पूरा । बिलकुल ।

सुठार—[वि] স্মরণ । জড়-গুড়ে ।
सुठौल । सुन्दर ।

सुठौल, सुठार—[वि] স্মরণ ।
सुन्दर ।

सुठर—[वि] दगानू । स्मरण ।
कृपालु । सुठौल ।

सुव—(सं पुं) शुद्ध ।
पुत्र ।

सुतहर [हार], सुतार—[सं पुं] विधो ।

काविगव । स्रविश ।

बढई । कारीगर । सुविधा ।

(वि) भान । श्रेष्ठ ।

अच्छा । उत्तम ।

सुतीक्ष्ण, सुतीछन, सुतीछा—(वि)

शुब चोका । तीक्ष्ण । अञ्जना
श्रवि ।

बहुत तीक्ष्ण या तीखा । एक
ऋषि ।

सुथर्न—(सं स्त्री) यानू विशेष ।

तिठोताइ ऐक्का टिना पाय-
जामा ।

पिडालू । स्त्रियो के पहनने का
ढीला पायजामा ।

सुथरा—(वि) शृङ्ख । परिवार ।

स्वच्छ । साफ ।

सुदरसन, सुदर्शन—(सं पुं) विष्णु

चक्र । शिव ।

विष्णु का चक्र । शिव ।

(वि) देखिवटेल धूनीया ।

देखने में सुन्दर ।

सुदि (दो)—[सं स्त्री] शुक्लपक्ष ।

शुक्ल पक्ष ।

सुध—(सं स्त्री) श्रुति । चेतना ।

श्रवण ।

स्मृति । नेतना । खबर या हाल ।
पता ।

सुधरना—[क्रि अ] बोझ हटाना

बन्धु भाल करवा । दोषयुक्त वस्तु
ठिक करवा ।

बिगड़ी हुई या सदोष वस्तु का
अच्छे या ठीक रूप में आना ।

सुधांशु, सुधाकर, सुधाघट, सुधा-
दाधिति, सुधाकर—[सं पुं]

ज्योत ।

चन्द्रमा ।

सुधा—(सं स्त्री) यक्षुड । पानी ।

गायत्री । पृथिवी ।

अमृत । जल । दूध । धरती ।

सुधानिधि—(सं पुं) ज्योत, गगन ।

चन्द्रमा । समुद्र ।

सुधार—(सं पुं) गङ्गाव, कोनो

वस्तु का दोष हटाना ।

संस्कार । किसी चीज को और

अच्छा या उपयोगी बनाना ।

सुधारक—(सं पुं) गङ्गावक ।

दोषो या त्रुटियों का सुधार

करनेवाला ।

सुधारना—(क्रि स) दोष हटाना

दूर करवाना, सुधारना ।

दोष या त्रुटि दूर करके ठीक करना ।

सुधि—[सं स्त्री] श्रुति, छठना ।
सुध । याद ।

सुधी—[सं पुं] बुधियक, ज्ञानावुका, विद्वान् ।

बुद्धिमान । समझदार । विद्वान् ।
(सं स्त्री) तीव्र बुद्धि ।
अच्छी और तीव्र बुद्धि ।

सुन-गुन—[सं स्त्री] अष्टौ चर्का, उबावातवि, गच्छुप पोवा, झुपोवा ।
वह भेद या पता जो इधर उधर से कोई बात सुनने से लगता हो ।

सुनना—(क्रि स) सुना, काटना कथा वा आर्शनाव अति लक्ष्य कर ।
श्रवण करना । किसी की बात या प्रार्थना पर ध्यान देना ।
[प्रे०-सुनाना]

सुनवाई, सुनाई—[सं स्त्री] सुनाव कार्या, अडिटागत आदि सुनानो ।

सुनने की क्रिया या भाव । अभि-योग आदि का विचार के लिये सुना जाना ।

सुनवैया—(वि) सुनौठा ।
सुननेवाला ।

सुनसान—[वि] निजान, 'एकाङ्क ।
निर्जन । एकान्त ।
(सं पुं) नीबड़ ।
सन्नाटा ।

रुनहरा (ला)—(वि) गोशाली बडब ।
सोने के रंग का ।

सुनार—[सं पुं] गोशाली ।
सोने चाँदी के गहने आदि बनाने वाला । कारीगर ।

सुन्न—(वि) अन्नशून्य । शून्य ।
निःशुद्ध ।
स्पन्दन हीन । निश्चेष्ट । शून्य ।

सुपच—[सं पुं] गोमकाट्टे शख्य शोवा, जाति दिग्ग ।
इवच । एक जाति ।

सुपर्व—[सं पुं] देवता ।
देवता ।

सुपास—[सं पुं] यावान, सूयोग ।
आराम । सुयोग ।

सुप्त—(वि) निद्रित, टोपनिद्रित ।
पवि धका ।
निद्रित ।

सुप्ति—(सं स्त्री) निद्रा ।

निद्रा ।

सुप्रतिष्ठा—(सं स्त्री) डानपदे

पौरा गमान वा अठिहा ।

अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत ।

[वि-सुप्रतिष्ठित]

सुबह—(सं स्त्री) रातिपूरा ।

प्रातःकाल ।

सुवास, सुवास—(सं स्त्री) सुगंध ।

सुगंध ।

[सं पुं] ब्रह्मलोक ।

ब्रह्मलोक ।

सुबोध—[वि] जाना-बुझा, गहख

बुझिब पना, गहख बोधा ।

समझदार । [विवेचन आदि]

जो सब लोग सहज में समझ
सकें ।

सुभग—(वि) सुख, आग्यवान,

गवय, सुखक ।

सुन्दर । भाग्यवान् । प्यारा ।

सुखद । (सं स्त्री—सुभगा)

सुभट—(सं पुं) डाडव बुझाक ।

बड़ा योद्धा ।

सुभाह [व]—[सं पुं] शडाव ।

स्वभाव ।

(क्रि वि) गहख डाडवेन, वर

गहख ।

सहज भाव से । बहुत सहज में ।

सुभाव, सुभाय—(सं पुं) शडाव ।

स्वभाव ।

सुभाषित—(वि) डान डावे

कोरा, डेगपेन मूलक डेडि ।

अच्छे ढंग से कहा हुआ (कथन

आदि) । सूक्ति ।

सुभाषी—(वि) डान डावे कर पना

वा कउंठा ।

अच्छा, सुन्दर, या मीठा बोलने

वाला ।

सुभीता—[सं पुं] सुविधा, सुग-

मता, डान गमय ।

सुगमता । सहूलियत । सुअवसर ।

सुभ—[सं पुं] गक-घोंबाव बुवा ।

गौ, घोड़े आदि का लुर ।

सुमत्, सुमति—(सं स्त्री) डान

बुद्धि, गद्विवेक ।

अच्छी बुद्धि । सह विवेक ।

(वि) बुद्धिगक ।

बुद्धिमान ।

सुमन [स]—(सं पुं) देवता, मूल,

विधान ।

देवता । फूल । विद्वान् ।

(वि) गहनय, आनन्दयन ।
सहृदय । प्रसन्न चित्त ।

सुमरन—(सं पुं) श्रवण ।
स्मरण ।

सुमरना, सुमिरना—[क्रि स] मनत
पेलोवा । (नाम) खनी ।
स्मरण करना । (नाम) जपना ।

सुमरनी—[सं स्त्री] जप कविवर
बादे वावश्चत माला । जपमाला ।
जपने की छोटी माला ।

सुमुख—(वि) सुन्दर मुख ।
सुन्दर मुखवाला ।
[सं पुं] गणेश । शिव । गरुड ।
गणेश । शिव । गरुड ।

सुमुखी—[सं स्त्री] सुन्दर मुख
तिरोता । छन्द विणेश ।
सुन्दर मुखवाली स्त्री । एक
प्रकार का छन्द ।

सुमेरु—(सं स्त्री) पुत्रावर गते श्रवण
गिबि पर्वत । पृथिवीव उखर
केन्द्र वा मूर । जपमालाव माखर
वाइ छुटि । छन्द विणेश ।
एक कल्पित पर्वत । उत्तरी
ध्रुव । जप करने की माला में
सबसे ऊपरवाला दाना । एक
प्रकार छन्द ।

[वि] गकलोतके भाग ।
सबसे अच्छा ।

सुयश—(सं पुं) श्रुताव । श्रुति ।
अच्छी ओर बहुत कीर्ति या यश ।

सुरंग—(वि) सुन्दर वन ।
विच्छिन्न वः सुख । बड़ा नडव ।
अच्छे रंग का । लाल रंग का ।
रस पूर्ण । सुन्दर ।

(सं स्त्री) माटि, पानी वा
पर्वतव तले तले माटि भित्तवे
काटि उल्लिखता । वाटि । गमुद्र
गर्भव पत्रा वावशाव कविव पत्रा
आधुनिक मावण अत्र ।

जमीन खोदकर या बारूद से
उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ
रास्ता । एक आधुनिक यंत्र जिससे
समुद्र में शत्रुओं के जहाजों को
घायल कर डुबाया जाता है ।

(अं-माइन)

सुर—[सं पुं] देवता । श्रुति ।
श्रव । श्रव । श्रवि ।
देवता । सूर्य । ऋषि । स्वर ।

सुरकना—[क्रि स] कोटना तबल
बच्च उनाशव । जगत नाटकवे
उकाइ निग्रा ।

नाक या मुँह से धीरे धीरे सुड़-
सुड़ शब्द करते हुए (तरल पदार्थ)
ऊपर खींचना ।

सुरसाध—[सं पुं] छक्काक ।
छाँटेक-छक्कावा छाई ।
चकवा [पक्षी]

सुरखी—(सं स्त्री) श्व आदि
नाक्षत्रब बाने हून, छिमेके
आदिब ठेगाना कवा मछना ।
निवक्क, श्वक्क आदिब शीर्षक ।
- इमारत के काम में आनेवाला
एक प्रकार का लाल चूर्ण या
मसाला । लाली । लेखों आदि
का शीर्षक ।

सुरत—[सं पुं] बलिजिया । मेथून,
संभोग । मेथुन ।
(सं स्त्री) श्रुति । छठना ।
छान ।
सुधि । ज्ञान । ध्यान । लगन ।

सुरति—(सं स्त्री) बलिजिया ।
रति । सुरत ।

सुरती—(सं स्त्री) शपाठब श्वि ।
'तम्बाकू के पत्तों का चूरा ।

सुरधाम, सुरपुर, सुरलोक—[सं पुं]
श्वर्ग ।
स्वर्ग ।

सुरधामिनी, सुरधुनी, सुरनदी,
सुरसरि—[सं स्त्री] गङ्गा ।
गंगा !

सुरधेनु—(सं स्त्री) कामधेनु ।
कामधेनु ।

सुरनाथ, सुरनाह, सुरप [पति],
सुरपाल [क], **सुरराई, सुरराज,**
सुरराव, सुरसाई, सुरेन्द्र, सुरेश—
(सं पुं) ईश्वर ।
इन्द्र ।

सुर-बाला, सुरबधु, सुर-सुन्दरी—
[सं स्त्री] मेढताब तिलोता ।
मेदी । अष्टमश्वरी । श्वर्गब श्रमबी ।
देवांगना ।

सुरभि—[सं स्त्री] पृथिवी । गाई ।
कामधेनु । श्रवति । श्रगक ।
पृथ्वी । गौ । कामधेनु । सुगन्ध ।
[वि] श्रगकित । श्रमब ।
सुगंधित । सुन्दर । उत्तम ।

सुरभित—[वि] श्रगकित ।
सुगंधित ।

सुरमई—[वि] पाँउल नीला बडब ।
हलके नीले रंग का ।

सुरमा—(सं पुं) छक्का नगावा
[शनिब पदार्थब] काखल विमेल ।

एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण
आँखों में अंजन की भाँति लगाते
हैं ।

सुरभीला—(वि) चकूत सुबमा
[काण्ड] नटगीरा ।
जिसमें सुरमा लगा हो ।

सुरम्य—(वि) सुन्दर । बगीच ।
मनोहर ।
अत्यन्त रम्य या मनोहर ।

सुर सुगाना—(क्रि अ) कौटे पतञ्ज
आदि बञ्जरा बाई (यावा), सूब-
सुबनि उठा, गाथाबन भावे
खजूबति उठा ।
कीडो आदि का रेंगना । हलकी
खुजली होना ।
[क्रि स] सूबसुबनि तोला ।
हलकी खुजली उत्पन्न करना ।

सुरसुरी—[सं स्त्री] गाथाबन खजूबति ।
हलकी खुजली ।

सुरा—[सं स्त्री] यद ।
मदिरा । शराब ।

सुराग—(सं पुं) अपराध, बड्यञ्ज
आदि गोपन गञ्ज, सुन्दर
बाग ।
अपराध, बड्यञ्ज आदि का गुप्त

रूपसे लगाया हुआ टोह । अच्छा
राग ।

सुरा-गाय—[सं स्त्री] वनरीशा गात्र,
(डेयाब नेखब पंवा ठोहर कवा
इय)
चमरी गाय ।

सुरानीक—(सं स्त्री) जेद-जना ।
देवताओं की सेना ।

सुरापी—[वि] गमाशी ।
मद्यप ।

सुरारि—[सं पुं] बाकग ।
राक्षस ।

सुरा-सार—[सं पुं] यदब गार ।
अ-अलकोहल ।

सुराही—(सं स्त्री) कलश ।
जल रखने की मिट्टी, धातु आदि
का एक प्रसिद्ध पात्र ।

सुराहीदार—(वि) कलश आकृति ।
सुराही के आकार की भाँति ।

सुरीला—[वि] सुबनि मातब ।
मीठे स्वर वाला ।

सुरुचि—(सं स्त्री) सुगन्धि, गांधित
प्राप्ति ।
उत्तम रुचि ।

सुरील—[वि] वर शील, शिष्ट,
नम्र श्लाघ्य ।

अच्छे शील या स्वभाववाला ।

सुरोभन—(वि) सुन्दर, धनीया,
मनोहर ।

खूब शोभा देनेवाला । सुन्दर ।

सुषमा—(सं स्त्री) देखिवटेल धनीया,
मनोहर ।

बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता ।

सुषुप्त—[वि] गंभीर निद्रात निद्रित ।
गहरी नींद में सोया हुआ ।

सुषुप्ति—(सं स्त्री) गंभीर टोपनि ।
गहरी नींद ।

सुषुम्ना—(सं स्त्री) ईडा आर
प्रिक्कना नाडीब माळत थका
नाडी डाल ।

वैद्यक और हठ योग के अनुसार
एक नाडी ।

सुष्ठु—[वि] डाले थका अरुणा,
सुन्दर ।

उत्तम । सुन्दर ।

सुसंगति—[सं स्त्री] डाल माळश्व
माधुलोकक अङ्ग ।

अच्छे आदमियों की संगत ।

सुसकना, सुसुकना—(क्रि अ)

उठूनि उठूनि कना ।

सिसक सिमक कर रोना ।

सुस्त—[वि] उदास, वलहीन, बेग
डीन, एलखना, फिला ।

उदास । जिसका बल या वेग घट
गया हो । आलसी । मन्द । घीमा ।

सुस्ताई, सुस्ती—(सं स्त्री) उपा-
गीनता, गान्ध, मिथिलता ।

सुस्त होनेका भाव शिथिलता ।

सुस्ताना—[क्रि अ] क'ग कवि भांगरि
पर'त विज्ञान कना ।

काम करने करते थक कर विश्राम
करना ।

सुश्वातु—[वि] वर गानाव मग्री,
वर मिर्ठा ।

बहुत स्वादिष्ट ।

सुहाग, सोहाग—(सं पुं) यागडी
वा गववा रेश थका अरुणा,

गोडागा ।

सषवा रहनेकी दशा । मीभाग्य ।

सुहागरात—(सं स्त्री) विवाह अर्थम
बाति । म'वा कडेनाब गिलनब

अर्थम निशा । कुल अयाव बाति ।

विवाहके बादकी वह पहली रात

जिसमें वर और वधू का पहले
पहल समागम होता है ।

सुहागिन (ठ), सोहागिन—[सं स्त्री]
लोभागावती, गंधवा ।
सौभाग्यवती । सधवा ।

सुहाना—[क्रि अ] स्त्रोत्पत्ति
होना, भाल लगी ।
अच्छा या भला जान पड़ना ।
सुशोभित होना ।

सुहावना, सुहावन—[वि] देखिवले
स्लब ।
देखने में भला और प्रिय जान
पड़नेवाला ।

सुहृद—(सं पुं) श्रिय, ईष्टे, वक्त्र ।
अच्छे और शुद्ध हृदयवाला
मनुष्य । सखा ।

सुहेल—[सं पुं] एति कश्चित्
नक्षत्र ।

एक कल्पित तारा ।

सुहेलरा, सुहेला—(वि) स्लब, श्रु-
कव, गटनावग ।

सुहावना । सुन्दर । सुख देनेवाला ।
(सं पुं) वाङ्मयिक श्रौत, आर्चना,
श्रुति, वक्त्र, ईष्टे ।

मंगल गीत । स्तुति । मित्र ।
सखा ।

सूँ—(अव्य) वे ।
से ।

सूँचना—[क्रि स] सूडा, धोटा
(गौण)

नाकसे गंधका अनुभव करना ।
(साँप का) काटना ।

सूँड—[सं पुं] सुँड ।
हाथीका सुँड ।

सूँस [सं स्त्री] गिह ।
एक जल जन्तु

सूअर, सूकर—(सं पुं) गोशवि ।
शूकर [जन्तु] ।

सूआ—(सं पुं) डाढौं, डाडव
बेखी ।

तोता । बडी सूई ।

सूई—(स स्त्री) बेखी, चिकित्सक
बेखी यतन (इन्जेक्शन-चिकित्सा)
तुलाचनिव काटा ।

लोहेका पतला उपकरण जिसके
खेदमें घागा पिरोकर कपड़ा सीते
है । किमी विशेष परिणाम, अंक,
दिशा आदिका सूचक तार या
काँटा । चिकित्सा क्षेत्रमें एक
छोटा उपकरण जिसकी सहायता
से कुछ तरल दवाएँ शरीर के

रगों या पुट्टोंमें पहुंचाई जाती है ।

[अं—सीरिज]

सूक्त—(सं पुं) वैदिक यज्ञ गव्यश्च
गन्धश्च ।

वेदके मंत्रों या ऋचाओं का कोई
संग्रह ।

सूक्ति—(सं स्त्री) उगमेश मूलक
वाक्य, उक्ति ।

उत्तम या सुन्दर उक्ति, पद,
वाक्य आदि ।

सूक्ष्म—(वि) अति सूक्ष्म, बर मिश्रि ।
बहुत छोटा । पतला या थोड़ा ।

[सं पुं] गतिविद्यार अलङ्कार
विशेष ।

साहित्य में एक अलंकार ।

सूक्ष्मदर्शी—[वि] छोटा दृष्टि शक्ति,
सूक्ष्म विचार कर्ता, तीक्ष्ण दृष्टि
शक्ति ।

बहुत ही सूक्ष्म या छोटी छोटी
बातों तक सोच या समझ लेने
वाला ।

सूक्ष्मदृष्टि—(सं स्त्री) छोटा
दृष्टि, तीक्ष्ण दृष्टि ।

छोटी छोटी बातें सहजमें समझ
या देख लेनेवाली दृष्टि ।

सूखना—[क्रि अ] बाँग, छिछाट
शर्करा होना, सुकना ।

शुष्क होना । रोग, चिन्ता आदि
से दुबला होना ।

सूखा—(वि) सुखान ।

जिसमें जल या उसका कोई अंश
न हो या न रह गया हो । जिसमें
आर्द्रता या नमी न हो या न
रह गयी हो । जिसमें कोमल
गुणोंका अभाव हो । शुष्क ।

(सं पुं) अनावृष्टि, कृष्ण विटम्बर ।
अनावृष्टि । स्थल । एक प्रकार
की खासी ।

सूचक—(वि) बोधक, सूचोवा ।
सूचना देनेवाला । बोधक ।

सूचना—(सं स्त्री) सूचना, कानून
कथा उद्घोषणा, कानून कथा
वा विषयबोध उद्घोषणा, उद्घोषणा,
उद्घोष ।

वह बात जो किसी को किसी
विषयका ज्ञान या परिचय कराने
के लिये कही जाय । विज्ञापन ।
दुर्घटना आदिके सम्बन्धमें अदा-
लती या और किसी तरहकी
कार्रवाई करने के पूर्व किसी उप-
युक्त अधिकारी से उसका ज्ञान

कहना ।

[क्रि स] छनोवा, उश्किउवा ।

सूचित करना । बतलाना ।

सूचित—(वि) सूचित, सूचना,
जाननी दिया ।

जिसकी सूचना दी गयी हो ।

सूची—(स स्त्री) बेछि, सूटी-पत्र ।
सूई । अनुक्रमणिका ।

सूजन—(सं स्त्री) उथल ।
सूजने की क्रिया या भाव ।

सूजना—(क्रि अ) उथल उठा,
फूलि योवा, शोथ बेमाव,
गोधा बेमाव ।

शरीरके किसी अंगका पीड़ा लिये
हुए फूलना । शोथ होना ।

सूजाक—(सं पुं) गुंठाजब बाग
विशेष । गनोबिशा
मूत्रेन्द्रिय का एक रोग ।

सूक्ष्म—[स स्त्री] सूक्ष्मि । दृष्टि ।
अद्भुत कल्पना ।

सूक्ष्मेका भाव । दृष्टि । अनोखा
कल्पना ।

सूक्ष्मना—(क्रि अ) देखा पोवा ।
बुझि पोवा ।
दिखाई देना । ध्यानमें आना ।

सूक्ष्म-बुद्धि—(सं स्त्री) दूरदर्शिता
यात्र बुद्धिमत्ता ।

दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता ।

सूत—(सं पुं) सूता । छाति
विशेष । चावण । गायक ।
कक्षा बाँक ।

धागा । डोरा । एक जाति ।
चारण । पौराणिक कथा कहने
वाला ।

(वि) उत्पन्न । डाल ।
उत्पन्न । भला ।

सूतक—(सं पुं) जन्म वा शूद्राव
अशौच ।

घरमें सन्तान होने या किसी के
मरनेपर परिवारवालों को लगने
वाला अशौच ।

सूतिका—[सं स्त्री] पौवाडी ।
गच्छ गच्छान जन्म दिया तबोका ।

वह स्त्री जिसे अभी हालमें बच्चा
पैदा हुआ हो ।

सूतिकागार[गृह]—(सं पुं) सूतिकागृह,
अंगर होवा घर । प्रसव-गृह ।

सूत्र—[सं पुं] सूता । ओंश ।
नियम । बाबन्हा । बताना यादिव
उं । दर्शन,

वाक्यद्वय आदि वाक्य गणना
वाक्य । कथाव ७२ । श्रुत ।
तागा । डोरा । नियम । व्यवस्था
घटना आदिका संकेत या सुराग ।
वह सांकेतिक पद या शब्द जिसमें
कोई वस्तु बनाने या कार्य करने
के मूल सिद्धान्त, प्रक्रिया आदि
का संक्षिप्त विधान निहित हो ।

सूत्रकार—(सं पुं) मृदु बचन कर्त्ता ।
मिश्रा । ठाँठो ।

सूत्र-रचयिता । बढई । जुलाहा ।

सूत्रधर, सूत्रधार—[सं पुं] श्रुतशाय,
मिश्रा ।

नाट्यशाला का प्रधान और नाटक
की व्यवस्था करनेवाला नट ।
बढई ।

सूत्री—(वि) श्रुत गणकोश । श्रुतव ।
श्रुत शूक ।

सूत्र सम्बन्धी । सूत्र का । सूत्रों
से युक्त ।

सूदन—(वि) नाश करवाता ।
विनाश करनेवाला ।

[सं पुं] शत्रु वा नाश कर्ता ।
वध या विनाश करना ।

सूना—[वि] निर्जन । एकाक ।
निर्जन । एकान्त ।

(सं पुं) निवान ठाँडे ।

निर्जन स्थान ।

[क्रि स] अश्व कर्ता ।

प्रसव करना ।

(सं स्त्री) छेदनी । शत्रु ।

कटाईशाना ।

बेटी । कसाई खाना । हत्या ।

सूप—(सं पुं) कुला । तबकाबीव
छोल । शब ।

अनाज फटकने की छाज । रसे-
दार तरकारी । बाण ।

सूपकार—(सं पुं) वाक्त्रि ।
रसोइया ।

सूपकारिता—(सं स्त्री) बक्ता-बता
कर्ता । पाक-शास्त्र ।

रसोई बनाना । पाक-शास्त्र ।

सूप—[सं पुं] ऊन ।
ऊन ।

सूपियाना—[वि] रूकी गकलब ।
रूकी गणकोश ।

सूपियों का । सूफी सम्बन्धी ।

सूपी—(सं पुं) रूकी । मुहल्लानब
शास्त्रिक जण्यदाय ।

मुसलमानों का एक धार्मिक
सम्प्रदाय ।

सूबा—[सं पुं] बाबा । अल्प ।
राज्य । प्रदेश ।

सूबेदार—[सं पुं] हुवेदार । लैल
विभागद पद ।

किसी प्रान्त या सूबे का शासक ।
मेना विभाग का एक पद । इस
पद पर रहनेवाला अधिकारी ।

सूबेदारी—(सं स्त्री) हुवेदारी
पद वा काम ।
सूबेदार का पद या काम ।

सूम—[सं पुं] रूप ।
कंजूस ।

सूर—(सं पुं) सूर्य । आकष ।
विज्ञान । वीर । अक्ष ।
सूर्य । आक । विद्वान । वीर ।
अन्धा ।

सूरज—(सं पुं) सूर्य ।
सूर्य ।

सूरस—[सं स्त्री] कण । लोछा ।
आकृति । अवस्था । कार्यजिज्ञि ।
रूप । शोभा । चेहरा । अवस्था ।
कार्य सिद्धि का मार्ग । युक्ति ।

सूरता (ई)—(सं स्त्री) वीरता ।
शूरता । वीरता ।

सूरन—(सं पुं) उल ।
त्रिमी कंद । ओल ।

सूरमा—(सं पुं) वीर ।
वीर ।

सूराख—(सं पुं) विका ।
छेद ।

सूरि—(सं पुं) मूर्खा । भूकावी ।
विज्ञान ।
सूर्य । ऋत्विज । बड़ा विद्वान ।

सूखना—(क्रि अ क्रि स) खोडा
बख्तर विका । भूलत दिया ।
कष्ट प्रिया ।
नुकीली चीजसे छेदना या छिदना
कष्ट देना या पीड़ित होना ।

सूली—(सं स्त्री) भूल । आणदण्ड ।
लोहे का वह नुकीला डण्डा जिस
पर बैठाकर प्राचीन काल में
अपराधियों को प्राण-दंड दिया
जाता था । प्राण-दण्ड ।
(सं पुं) निव ।
शिव ।

सृंगारना—[क्रि स] मृगार कना ।
मृंगार करना ।

सृक, सृग—(सं पुं) वर्णा । नव ।
बताश । गोला ।

बरखा । बाण । हवा । माला ।

सृजनहार—[सं पुं] सृष्टि कर्ता ।
सृष्टि कर्ता ।

सेकना—[क्रि स] गेकना । उअ प्रिया ।

आग पर या उसके सामने रखकर
साधारण गरमी पहुँचाना ।

सस—[सं स्त्री] कोटो बखु पाँडेत

थरठ कविब लग्ग नोटोवा ।

विनामूल्य, विनाश्वरठ ।

कुछ खर्च न होना ।

सेत-सेत—[क्रि वि] विनामूल्य ।

एटनट । वार्थ ।

मुफ्त में । व्यर्थ ।

सेंदुर, सेंधुर—(सं पुं) गिन्दुर ।

सिन्दूर ।

सेंध—[सं स्त्री] गिन्धि ।

दीवार में किया हुआ वह छेद
जिसमें से घुसकर चोर चोरी
करते हैं ।

सेधा—[सं पुं] गैश्व निग्रथ ।

सेधव नामक नमक ।

सेहुँक—(सं पुं) कौठा थका कोटपोश

गछ विटनव । गिन्दुरगछ

थूहर नाम का कंटीला पौधा ।

से—[विभ] 'वे' । कबन आरु अपा-

दान काबकब छिह ।

करण और अपादान कारक का
चिह्न ।

सेबक—(वि) छटियाँडता । गिँछोता ।

सींचनेवाला ।

सेबन—(सं पुं) छटिओवा वा गिँछा

कार्य । आडबेक ।

सिचाई । छिड़काव । अभिषेक ।

सेज—[सं स्त्री] शया । आलस ।

शय्या । पलंग ।

सेठ—[सं पुं] गहाछन । गणगण ।

बड़ा साहूकार ।

सेबु—(सं पुं) गौक । दल ।

गोमा ।

पुल । बाँध । सीमा ।

सेना—[सं स्त्री] गेना ।

फौज ।

सेनादार, सेनाध्यक्ष, सेना-नायक,

सेनानी—(सं पुं) गेनापति ।

सेनापति ।

सेनावास—(सं पुं) गैश्व वाशव ।

सेना की छावनी ।

सेब—[सं पुं] आटन ।

नाशपाती की तरहका एक फल

और उसका पेड़ ।

सेम—[सं स्त्री] लेट्टेवा माइ आरु

ओबहि जातीय छैहै ।

एक प्रकारकी फली जिसकी तर-
कारी बनती है ।

सेमर, सेमल--(सं पुं) शिमरू गश् ।
शात्मली वृक्ष ।

सेराना—[क्रि अ क्रि स]
भीतल कबा, गबाश कबा, बिग-
र्जन दिया, तृथ होदा वा कबा ।
ठंडा होना या करना मर जाना ।
समाप्त होना या करना । मूर्ति
आदि जलमें प्रवाहित करना ।
तृप्त होना या करना ।

सेल—[सं पुं] बर्णा ।
बरछा ।

सेब—(स पुं) वेष्टनदेव देवशास्त्री
शास्त्र विदेश, दुर्जिया, आटपल ।
बेसनका एक प्रकारका पकवान ।
सेब नामक फल । सेवा ।

सेबई—[सं स्त्री] गगनादेव देवशास्त्री
दुर्जियाब मदेव वस्तु । गोबीब वा
पानीदेव जिह्वाइ श्राव पाबि ।
गूँथे हुए मैदे से बनावे हुए पतले
लच्छे जो दूध या पानीमें पका
कर खाये जाते हैं ।

सेबट(1)—(सं पुं) नदीब मोहनात
मम होदा माटि ।

नदियों के मुहाने या संगम पर
जमा होनेवाली मिट्टी ।

सेवती—(सं स्त्री) बर्णा गोलाप ।
सफेद गुलाब ।

सेवन—[सं पुं] परिचर्या, शुद्धता,
वाग्दश, उपोसना ।
पङ्क्तिर्मा । उपासना । इस्तेमाल ।
उपभोग ।

सेवनीय—(वि) सेवा, पूजनीय ।
सेवन करने योग्य ।

सेवा—(सं स्त्री) अणाय, नमस्कार,
परिचर्या, आलपेचान, निःस्वार्थ
भाव लोक मङ्गलर वादे कबा
काय ।

परिचर्या । नौकरी । लोकोपयोगी
विषयों के हितमें किया जानेवाला
स्वार्थ रहित काम । आश्रय ।

सेवापंजी—(सं स्त्री) र'त टाकरि अथवा
सेवा काय गश्कीय बेकर्ड पाति
बथा बही ।

वह पंजी या पुस्तिका जिसमें
सेवा काल की कुछ मुख्य बातें
लिखी जाती है । (अं-सर्विस बुक)

सेवी—(वि) सेवाक ।

सेवन करनेवाला । सेवा करने
वाला ।

सेव्य—(वि) पूजनीय, सेवा ।

जिसकी सेवा, पूजा या आराधना

हो या की जाय । सेवन करने योग्य ।

(सं पुं) शायी, मालिक, गनाकी ।

स्वामी । मालिक ।

सेहत—(सं स्त्री) शाय ।

स्वास्थ्य ।

सेहरा—(सं पुं) वियाव जगज
शिका मुकुट ।

विवाह का मुकुट या मोर ।

(सिर) सेहरा बँधना—(मु०)

कोटना कथांत शरंगा पोवा ।

किसी बातका श्रेय मिलना ।

सै—(विभ०) बे ।

से ।

(अव्य) गमान ।

समान ।

सैकड़ा—[सं पुं] एगव जगूह,
गठकबा, एग ।

सौ का समूह । एक सौ ।

सैकड़ों—(वि) केबा न, रह
गस्थक ।

कई सौ । गिनतीमें बहुत अधिक ।

सै—(वि) एग ।

सौ ।

(सं स्त्री) गाव, भक्ति, बुद्धि ।
सरव या सार बल । बुद्धि ।

सैकत (तिक)—(वि) बालिमग्न ज्ञान ।
बालितव टैग्राबी ।

रेतीला स्थान । रेत या बालू का
बना हुआ (पदार्थ) ।

सैद्धान्तिक—[सं पुं] शिक्काख
जना लोक ।

सिद्धान्त का ज्ञाता ।

(वि) शिक्काखु जवकीय,
शिक्काखुब, शिक्काखुत आश्रित ।

सिद्धान्त सम्बन्धी । सिद्धान्त का ।
सिद्धान्तके आधार पर आश्रित ।

सैन—(सं स्त्री) गस्टकठ, छिन,
गविछय, नक्का टैगग्र ।

संकेत । चिह्न । पहचान ।
निशानी । सेना ।

सैनी—(सं पुं) नाशित ।
हज्जाम ।

(सं स्त्री) खेनौ ।
पंक्ति या कतार ।

सैयों—(सं पुं) पठि, शायी ।
पति ।

सैर—[सं स्त्री] जगज, गटनाबोहा
कृपा, ठागठ ।

मन बहलाने के लिये कहीं जाना
या धूमना-फिरना । मौज । मनो-
रंजक दृश्य । तमाशा ।

सैल- (सं स्त्री) वन, नदीब वाढ़नी
पानी, पानीब शब्द ।

सैर । नद, नदी आदिकी बाढ़ ।
पानी का बहाव ।

[सं पुं] पर्वत ।
शैल । पर्वत ।

सैलानी- (वि) वनशकाबी ।
सैर सपाटा करने या मनमाना
धूमनेवाला ।

सैलाव- (सं पुं) वानपानी ।
पानी की बाढ़ । (वि--सैलाबी)

सों, सौं- (अव्य) शब्द ।
द्वारा ।

(क्रि वि) गेटे ।

संग । साथ ।

[वि] येने, निठिना ।

जैसा । सा ।

[सं स्त्री] अपठ ।

सौह । शपथ ।

सोंटा- [सं पुं] डाँडव नाँठि ।
मोटा डण्डा । (सं स्त्री-सोंटी)

सोंठ- [सं स्त्री] शुकान आना,
छूँठ ।

सुलाया हुआ अदरक ।

सोंधा- [वि] सुगन्धित, अथवा वनस्पति
शोदाब । पिछ्त बाँटिब
पना उल्लोवा, बुटे छुवा वा
बेचन आदि छानिले उल्लोवा
गोक्ष । मशमशीशा गोक्ष ।
सुगन्धित । मिट्टी पर वर्षा का
पहला पानी पड़ने या भूने हुए
चने, बेसन आदिसे निकलनेवाली
सुगन्ध के समान ।

सो- [सर्व] जेहे, तेउं, जि ।

वह ।

(अव्य) जेहे, एतेउके ।

इसलिये । अतः ।

[वि] निठिना, येने ।

सा । जैसा ।

सोइ [ई]- [सर्व] जेहे ।

वही ।

[अव्य] तेने ।

सो ।

सोऊ- (वि) निजित ।

सोनेवाला ।

(सर्व) तेबे ।

वह भी ।

शोक, सोग—(सं पुं) शोक ।

शोक । मातम ।

शोखना—(क्रि स) पानी यथवा

खेका शुद्धि निग्रा, पोषण करा ।

जल या नमी चुसना । शोषण करना ।

शोखू—(वि) शुद्धि निष्ठता ।

शोखनेवाला ।

शोख्ता—[स पुं] ब्रूटिंग कागज ।

स्याही शोखनेवाला कागज ।

शोच—[सं पुं] चिन्ता, दुःख,

अश्रुतांश ।

चिन्ता । दुःख । पश्चाताप ।

शोचना—(क्रि स) चिन्ता करा,

दुःख करा ।

मनमें विचार करना । चिन्ता

करना । खेद या दुःख करना ।

(प्रे० — सोचाना)

शोच-विचार—(सं पुं) उवा,

चिन्ता ।

शोचने और समझने या विचार

करने की क्रिया या भाव ।

शोख (1)—[वि] शोख, चिन्ता ।

सीधा ।

शोख, सोखा—[सं पुं] निखरा ।

उपनदी । खाल ।

झरना । नदीकी शाखा । नहर ।

सोती—(सं स्त्री) पानीब झर्र अवश ।

पानी का छोटा सोता ।

सोधना—(क्रि स) शुद्ध करा ।

शुद्धता प्रतीका करा । शोधन

करा । विचारा । शोध प्रविश्लोष

करा । शोध करा ।

शुद्ध करना । शुद्धताकी जांचकी

परीक्षा करना । दोष या भूल दूर

करना । ढूँढना । ऋण चुकाना ।

निश्चित करना । (प्रे० — सोधाना)

सोन-चिरी—(सं स्त्री) नदी ।

नदी ।

सोन-जूही सौनजाह, सौनजुही—

[सं स्त्री] युक्ति-छाँदेव पद

कुल । सोपानी बडब श्रृङ्खलि

कुल ।

स्वर्ण युधिका । पीली चमेला ।

सोनहार—[सं पुं] छाँदे विप्लव

(सोपानी बडब) ।

एक प्रकार की चिड़िया ।

सोना—[सं पुं] सोप । शुभ धूनी

अद्वय बहुमूल्य वस्तु ।

स्वर्ण । बहुत सुन्दर या बहुमूल्य

पदार्थ ।

(क्रि अ) शयन । सोबा ।

नींद लेना । शयन ।

सोनार, सोनी—[सं पुं] गोधावी ।

स्वर्णकार । सुनार ।

सोपान—(सं पुं) चढ़ना ।

सीढ़ी । जीना ।

सोभ, सोभा—[सं स्त्री] गोडा ।

शोभा ।

सोभना—[क्रि अ] छुबित होना ।

शोभा देना ।

सोम—[सं पुं] आठौन वैदिक

देवता । खान । गोमवाव ।

अश्वत्थ । पानी । नता विशेष ।

एक प्राचीन वैदिक देवता ।

चन्द्रमा । सोमवार । अमृत ।

जल । एक प्रकार की लता ।

सोमपाथी—(वि) गोमलताव बग

पान करनेवाला ।

सोम लताका रस पीनेवाला ।

सोमवंश—(वि) छत्र वंश ।

चन्द्र वंश ।

सोय—(सर्व) लगे ।

वही । सो ।

सोर—[सं स्त्री] गेहूँ गुड़ा वा मिठा ।

पेड़ोंकी जड़ ।

[सं पुं] गोमगान ।

सोर । कोलाहल ।

सोरठा—(सं पुं) छत्र विशेष ।

एक प्रकार का छंद ।

सोलह—(विं) खान ।

सोला—(सं पुं) कूँडिना । काप-

कूमा वा कूमा—इयादेव ट्रेनि

आदि तैय्यार कवा श्य ।

एक प्रकार का भाड़ जिसके

छिलके से टोप बनता है ।

सोल्लास—(क्रि बि) उल्लासदेव ।

उल्लास पूर्वक ।

सोवैशा—[वि] छत्र थका लोक ।

सोनेवाला ।

सोहन—(वि) खूब । शौडनीय ।

सुन्दर । सुहावना ।

[सं पुं] खूब पुरुष । नाश

छवाई पक्षी ।

सुन्दर पुरुष । नायक । एक प्रकार

का पक्षी ।

सोहना—(क्रि अ) छुबित होना ।

कठिक्क होना ।

शोभित होना । रुचिकर लगना ।

(बि) खूब ।

सुन्दर ।

सोहनी—[सं स्त्री] बाढ़नी । बागिनी
विदग्ध ।

भाड़ू । एक प्रकारकी रागिनी ।
(वि स्त्री) खूब
सुन्दर ।

सोहबत—(सं स्त्री) गन्धति ।
श्री अगन्ध । बलि क्रिया । टेम्बून ।
संग-साथ । संगत । स्त्री प्रसंग ।
संभोग ।

सोहर—(सं पुं) न'वा ऊच्य श्ल
गोदा नोक्तगोत ।

बच्चा पैदा होनेके समय घरमें
गाये जानेवाले गीत ।

सौहि—[क्रि वि] नपठ ।
सौह । शपथ ।

सौही, सौहै—(क्रि वि) गमूथत ।
सामने ।

सौधा—[वि] डाल । उद्यम । उचित ।
गुला ।
अच्छा । उत्तम । वाजिब ।
सस्ता । (सं स्त्री—सौधई)

सौचना—(क्रि स) शीघ्र कर्त्तव्य ।
शौच कार्य करना ।

सौदना—[क्रि स] गना । शक्तिव
गणना कर्त्तव्य ।

सानना । मिट्टी आदिके योग से
गंदा या मैला करना ।

सौधना—(क्रि स) सुगन्धित कर्त्तव्य ।
सुगन्धित करना ।

सौधा—[वि] डाल लगी । गटनाश्वर,
उचित । गन्धगीता गोकुल शब्द ।
सौधा । अच्छा लगनेवाला । मनो
हर । उचित ।
(सं पुं) सुगन्ध ।
सुगन्ध ।

सौपना—(क्रि स) गन्धर्पण कर्त्तव्य ।
समर्पण या सुपर्व करना ।

सौफ—(सं स्त्री) छुवा नरि ।
एक छोटा पीछा जिसके बीज दवा
और मसाले के काममें आते हैं ।

सौरना—(क्रि अ) डाल कर्त्तव्य ।
गच्छित कर्त्तव्य । गच्छावा ।
सँवारा जाना । अच्छा या ठीक
किया जाना ।
(क्रि स) गच्छावा । श्रवण कर्त्तव्य ।
सँवारना । स्मरण या याद
करना ।

सौह, सौहै—[सं स्त्री] नपठ ।
शपथ । कसम ।

(सं पुं) गमूथीन
सामना ।

[क्रि वि] गमूथत ।

सामने ।

सौहं—[क्रि वि] गमूथत ।

सामने ।

सौ—(वि) न ।

(अव्य) निठिना ।

सा (समान)

सौकर्य—(सं पुं) सुविधा । सुगम ।

सुकरता । सुभीता ।

सौकुमार्य—(सं पुं) सुकुमारता ।

सुोदन ।

सुकुमारता । जवानी ।

सौख्य—(सं पुं) सुख भाव ।

विश्राय । आनन्द ।

'सुख का भाव । आराम ।

सौगंढ (घ)—(सं स्त्री) नगल ।

शपथ ।

सौगात—[सं स्त्री] उगशाव ।

भेंट । उपहार ।

सौजन्य—(सं पुं) उज्जता । लोचन ।

नमोचरण ।

संजनता ।

सौत, सौतन (तिन)—(सं स्त्री)

गठिनी ।

सपत्नी ।

सौतेला—(वि) गठिनीय नव । उपजा

गठिनी । गठिनीय नव ।

गठिनी ।

सौतसे उत्पन्न । जिसका सम्बन्ध

किसी सौतके पक्षसे हो ।

सौदा—[सं पुं] किना-वेचा कार्या ।

खरीदने और बेचने की चीज ।

खरीदने बेचने या लेन देन की

बात-चीन या व्यवहार ।

(सं स्त्री) प्रागलाबी ।

पागलपन ।

सौदागर—(सं पुं) गदागद ।

वेपारी ।

व्यापारी ।

सौदागरी—(सं स्त्री) वादगात्र । वनिज

व्यापार

सौदामनी, सौदामिनी—(सं स्त्री)

विखूनी ।

बिजली ।

सौदेबाजी—(सं स्त्री) खूब बूझि देन

लेन-देन गणतर्क कथा-वतना

होवा ।

खूब समझ बूझकर लेन देन या

व्यवहारके सम्बन्धमें की जाने

वाली बात चीत ।

सौध—(सं पुं) प्रांगण । गृहलक्षण
प्रासाद । चाँदी ।

सौम्य—[वि] शोभन बलपूर्वक
कृत । शान्त । नम्र । सुशील ।
सुमन । सुदृग् ।

सोम या उसके रससे सम्बन्ध
रखनेवाला । ठंडा और शांत ।
नम्र और सुशील । सुन्दर ।

[सं पुं] बुध । शोभयच्छ ।
आपत्तान् माह ।

बुध । सोमयज्ञ । अगहन का
महीना ।

सौर—[वि] सूर्य गणकाय । सूर्याय ।
सूर्याय गणन वा प्रशस्तय भित्तव ।
सूर्याय गति अङ्गुलादेव गणना
करी ।

सूर्य सम्बन्धी । सूर्यका । सूर्यके
प्रभाव से होनेवाला ।

(सं पुं) सूर्याय उपासक ।
सूर्याय वंशी । शनि ।

सूर्यका उपासक । सूर्यवंशी । शनि
ग्रह ।

सौरभ—(सं पुं) डाल गोक ।
सुगन्ध । आनन्द ।
सुगन्ध । सुशब्द । आम ।

सौरी—(सं स्त्री) शूद्रिका ।

प्रगल्भ । ग्राह्य विशेष ।
सूतिका गार । जन्मा खाना ।
एक प्रकारकी मछली ।

सौवर्ण—(वि) शोभन ।

सोनेका ।
[सं पुं] शोभन ।
सोना ।

सौष्ठव—[सं पुं] शोभन । शोभन ।
'सुष्ठु' होनेका भाव । सौन्दर्य ।

सौहार्द (र्ध)—(सं पुं) वक्र ।
आश्चर्य ।

'सुहृद्' होनेका भाव । सज्जनता ।
मित्रता ।

स्कन्ध—(सं पुं) उलगाव । नम ।

काष्ठिक । शरीर । पूजाय विशेष ।
निकलना या बाहर आना ।
विनाश । कार्तिकेय । शरीर ।
एक पुराण ।

स्कंध—[सं पुं] काष्ठ । बाह्य उपाय
आयु डिडिब तलभाग । शरीर ।
गम्य । उद्गम । कृतायु
अध्याय । युद्ध । शरीर ।

कंधा । वृक्षके तनेका ऊपरी भाग ।
शाखा । समूह । मंडार । ग्रंथका
विभाग । शरीर । युद्ध ।

সক্কাবাব—[সং পু] বজাৰ শিবিৰ ।
 সৈন্যৰ বাহৰ । ছাওনী । সৈন্য ।
 ৰাজাৰ শিবিৰ । সৈন্যৰ পড়াব ।
 ছাবনী । সৈন্য ।

সক্কাবাব—(সং পু) জ'ব পৰা । ল'ৰা
 বা পিছল কাৰ্য্য । পতন ।

চীৰনা ফাড়া । হুত্যা গিৰানা ।

সক্কাবাব—(বি) পতিত । পিছলি
 পৰা । বিচলিত ।

গিৰা হুয়া । বিচলিত ।

সুঁম—[সং পু] ওখ ডাঙৰ খুটা ।
 অশুদ্ধি । কাৰ্য্য আদিৰ মূল
 ভন । আলোচনীৰ বিভাগ ।
 গা-গজ । জুডতা । লৰচৰ কৰিব
 নোৱাৰা অবস্থা । তত্ত্ব-মন্ত্ৰেৰে
 কোনো শক্তি বোধ কৰা কাৰ্য্য ।
 লুপ্ত । সংস্থা কাৰ্য্য সিদ্ধান্ত
 আদিকা আধাৰ । পত্ৰ পত্ৰিকাৰ
 কা বিশেষ বিভাগ । পেছকা তনা ।
 অংগীকা শিখিল হো জানা । তঁৰ
 মেন্ কিসী শক্তিকো বোকাৰো
 প্ৰয়োগ ।

সুঁমি—(বি) নিস্তৰ্জ । বন্ধ কৰা ।
 আচৰিত হোৱা ।
 নিস্তৰ্জ । বন্ধা যা বোকা হুয়া ।
 শক্তি ।

স্থাবৰ—[বি] আচল । একে ঠাইতে
 বহু কাল থকা । স্থানান্তৰিত
 কৰিব নোৱাৰা ।

অচল । জো অপনে স্থানসে ন হুট
 সকে ।

স্থাবৰ-সম্পত্তি—(সং স্ত্ৰী) অচল
 সম্পত্তি ।

অচল । সম্পত্তি ।

স্থিতিমজ্জা—(বি) স্থিত মজ্জা । বিষয়
 বাসনা এৰি আত্মাৰ চিন্তাতে
 মগ্ন । যি মুখত মুখ বোধ
 নকৰে আৰু চুখত চুখী নহয় ।
 জিসকী বিবেক বুদ্ধি স্থিৰ হো ।

স্থিতি-স্থাপক—(বি) টানি, ভিৰাই
 বা মোকোটাই এৰি দিলে পুনৰ
 আগৰ অবস্থা বা আকাৰ পোৱা
 গুণ থকা ।

লচীলা ।

স্থিৰ-বুদ্ধি—(সং স্ত্ৰী) বুদ্ধি স্থিৰ
 স্থিৰ ।

জিসকী বুদ্ধি স্থিৰ হো ।

স্থূল—[বি] শকত । গা-ডাঙৰা, পুটে ।
 কম বুদ্ধিৰ লোক । ওপৰে ওপৰে
 হিচাব কৰি অহমান কৰা ।
 মোটা । মোটা হিচাবসে অনুমান
 কৰা হুয়া । মন্দবুদ্ধি ।

स्थूलता—[सं स्त्री] बृलता ।
मोटाई ।

स्नात—[वि] स्नान करि उठा ।
नहाया हुआ ।

स्नातक—[सं पुं] स्नातक । विद्या
शिक्षाब शेषतः यि ब्रह्मचर्या
समापन करकप स्नान करिछे ।
कोनो विश्वविद्यालयब उपाधि
परीक्षा उद्दीर्ण लोक ।

वह जिसने विद्याध्ययन या ब्रह्मचर्य
व्रत समाप्त कर लिया हो । वह
जिसने किसी विश्व विद्यालय की
कोई परीक्षा पासकी हो । (अं—
ग्रेजुएट)

स्नान—(सं पुं) गी धोना ।
नहाना ।

स्निग्ध—[वि] सूथजनक । मिहि ।
मिछ्म । टिक्टिकीया । तेल
थका ।

जिसमें स्नेह या श्रेम हो । जिसमें
तेल हो या लगा हो ।

स्नेह—[सं पुं] स्नेह । शरम । तेल
आधि ।

प्यार । तेल आदि चिकने पदार्थ ।

स्तोत्र—[सं पुं] स्तुति वाचक
गच्छत श्लोक ।
स्तुति ।

स्तोम—[सं पुं] स्तुति, गमूह ।
स्तुति । समूह । राशि ।

स्त्री प्रसंग, **स्त्री समागम**—(सं पुं)
गच्छाश, बति किगा, गैधुन ।
संभोग । मैथुन ।

स्त्रौण—[वि] स्त्री प्रकृतिब, तिरवाता
लेखना, तिरवातात यकूनक ।
स्त्री सम्बन्धी स्त्रियों का ।
स्त्रियों का-मा । स्त्री या पत्नी
के वश में रहनेवाला ।

स्थ—[प्रत्य०] स्थित, थका, लीन ।
स्थित, विद्यमान । लीन ।

स्थगन—(सं पुं) श्रुतिब बन्ध
कार्य ।

कुछ समय तक स्थगित करना ।

स्थल-जल-डमरु-मध्य—(सं पुं)
प्राञ्चक ।

दो बड़े भू-खंडों को जोड़नेवाला
जल से घिरा लम्बा संकरा
भू-भाग ।

स्थली—(सं स्त्री) ठाँह, गाँठ ।
जगह । जमीन ।

स्थाणु—[सं पुं] छुछ, मांथाशीन
बक, शिव ।

लम्भा । ठूँठ । शिव ।

(वि) अचम ।

अचल ।

स्थानापन्न—(सं पुं) प्रतिनिधि
कबा, आनन गमनि काय कबा,
स्थानापन्न ।

किसीके न रहने पर उसके स्थान
पर बैठने या काम करनेवाला ।

स्थापत्य—(सं पुं) सब आदि गङ्गा
काय वा विष्ठा ज्ञापत्य ।

वास्तु शास्त्र ।

स्थायी भाव—(सं स्त्री) बाह्य
मनव छिबछुन भाव, ग्राह्यता
बन उपपत्ति मूल । श्रुति-भाव ।
साहित्य में वे मूल तत्व या भाव
जो मूलतः मानव मन में सदा
निहित रहते हैं ।

स्तन—(सं पुं) तिरिवाताव प्रियाह,
शृङ्ग ।

स्त्रियों या पशुओं का वह अंग
जिसमें दूध रहता है ।

स्तनन—[सं पुं] मेघे गवया,
यार्जनाद ।

बादल का गरजना । आर्त्तनाद ।

स्तनित—[सं पुं] मेघव गवयि ।
बादल की गरज ।

(वि) गवयनिव मय ।

गरजता या शब्द करता हुआ ।

स्तन्य—(वि) स्तन गवकीय ।

स्तन सम्बन्धी ।

[सं पुं] गांथीव, प्रियाह ।

दूध ।

स्तब्ध—(वि) तुल्लित, दृढ़, मन,
नबच कबिब नोवावा ।

स्तम्भित । दृढ़ । मन्द ।

स्तब्धता—[सं स्त्री] तवध, जड़ता,
नीबवता, तुल्लता ।

स्तब्ध होने की दशा या भाव ।
जड़ता । मौनकापन । सन्नाटा ।

स्तरी-भूत—[वि] तवगीया, तवप
तवप होवा ।

जो जमकर स्तर के रूपमें हो
गया हो ।

स्तव—(सं पुं) जति, प्रशंसा,
आर्चना ।

स्तुति । प्रशंसा ।

स्तवन—(सं पुं) जति अथवा
प्रशंसा कबा ।

स्तुति या प्रशंसा करना ।

स्तिमित—[वि] निम्न, डिम्बा,
तिता ।

निश्चल । गीला । तर ।

स्तुत्य—[वि] प्रशंसनीय ।
प्रशंसनीय ।

स्तेन—(सं पुं) चोर, दूबि ।
चोर । चोरी ।

स्तेय, स्तैन्य—(सं पुं) दूबि कार्य ।
चोरी ।

स्तोता—[वि] स्तुति करनेवाला ।
स्तुति करनेवाला ।

स्नेही—[वि] प्रेमी, प्रेमी ।
प्रेमी ।

स्पंद—(सं पुं) झलन, कम्पन ।
धीरे धीरे कांपना या हिलना ।

स्पंदित—[वि] कम्पित, कम्पमान,
झलित ।

हिलता, कांपता या फड़कता
हुआ ।

स्पृष्टा—(सं स्त्री) स्पर्शा, छुःगाह,
बवाई ।

होड़ । सामर्थ्य या योग्यता से
अधिक करने या पानेकी इच्छा ।

स्पर्श—(सं पुं) स्पर्श, छेदा कार्य ।
सटना या छूना ।

स्पष्टतया—[क्रि वि] स्पष्ट भाव ।
सफासाफ ।

स्पृहनीय—(वि) श्रेणीय, वांछनीय,
पावने इच्छा कविवर्य । भाग ।
जिसकी इच्छा या कामना करना
उचित या योग्य हो । बहुत
अच्छा ।

स्पृहा—(सं स्त्री) वांछा, शक्ति, शक्ति,
पावने इच्छा, श्रृंश ।
इच्छा । कामना ।

स्फटिक—[सं पुं] शक्ति, एविश
वर्ग चक्रकीय शक्ति ।
एक प्रकार का सफेद पारदर्शी
पत्थर ।

स्फीत—(वि) उभरा, फिका, कुल
उठा, उफान उठा, गहरा ।
बढ़ा या फूला हुआ । समृद्ध ।

स्फीति—(सं स्त्री) अवाभाविक रूप
कुल उठा ।

अवाभाविक रूपसे बढ़ना या
फूलना ।

स्फुट—[वि] अफुटित, विकसित,
भूत, देखनेवाला पोता ।

दिखाई देनेवाला । विकसित ।
फुटकर ।

स्फुटित—[वि] कुला, खेल खोला ।
खिला हुआ ।

स्फुलिंग—(सं पुं) फिबिडति ।
चिनगारी ।

स्फोट[न]—(सं पुं) कुटा । गैब
एविध डाडर खल्ल वा कौहोवा ।
फूटना । फोड़ा, फुत्सी आदि ।

स्मर—(सं पुं) कामदेव, श्रुति,
श्रवण, श्रेय, संगीतब वाग
विमेष ।
कामदेव । स्मृति । स्मरण । प्रेम ।
एक राग ।

स्मरण-पत्र, स्मृतिपत्र—(सं पुं)
श्रवण पत्र, कोटनो कथा पुनव
जौदबाई दिया छिठि ।
किसी को कोई बात याद दिलाने
के लिये लिखा जानेवाला पत्र ।

स्मरणीय—(वि) श्रुतिविव वा मनत
बाखिबलगीया ।
याद रखने योग्य ।

स्मारक—[वि] जौदवन, श्रवणीय ।
स्मरण करनेवाला ।
(सं पुं) जौदवन, श्रवण ।
यादगार ।

स्मार्ति—(सं पुं) श्रुति नाश्रुव पञ्च
अक्षरवण कटौता ।

वह जो स्मृतियों का अनुयायी
हो ।

[वि] श्रुति नाश्रु गश्कीय ।
स्मृति सम्बन्धी । स्मृति का ।

स्मित—[सं पुं] मिठिकीया शँशि ।
धीमी हँसी । मुस्कराहट ।
[सं स्त्रा-स्मिति]

(वि) कुलि उठा, शँशि थका ।
खिला हुआ । मुस्कराता हुआ ।

स्मृति—(सं स्त्री) श्रवण, जौदवन,
पूर्ववाग (श्रेय) व एठि अवस्था,
धर्म-गरहिता, आचार आदिब
लगत गश्क बथा हिन्दूब वादहा
नाश्रु । श्रुति-नाश्रु ।

याद । माहित्य में पूर्वराग की
दस दशाओं में से एक । धर्म,
दर्शन आचार-व्यवहार आदि से
सम्बन्ध रखनेवाले हिन्दू-धर्म-
शास्त्र ।

स्मृदन—(सं पुं) नथ ।
रथ ।

स्यात—(अव्य) गञ्जतः कदाचित् ।
कदाचित् 'शायद ।

स्थाना—(वि) चड्ढ, गावधान,
गावालक ।

चतुर । होशियार । चालाक ।
बालिका ।

(स पुं) बुद्ध, उज्जा, चिकित्सक ।
बड़ा बूढ़ा । ओझा । चिकित्सक ।

स्थापा—[सं पुं] पञ्चाव यादि बाज्यात
कानोबाव बुद्ध्यात तिवोता-
विलाके एक लग लागि किछु-
दिनटेल शोक प्रकाश कवा प्रथा ।
मरे हुए व्यक्तिके शोकमें स्त्रियों
का एकत्र होकर कुछ दिनों तक
शोक प्रकट करना ।

स्थाह—(वि) कला ।
काला ।

[सं पुं] घोड़ाबाव जातिविशेष ।
घोड़ेकी एक जाति ।

स्थाही—(सं स्त्री) चित्रांशी, मही ।
एलाङ्गु ।

रोशनाई । कालापन । कालिस ।

स्थों, स्थौ, स्थौ—(अव्य) सैतेत,
उचवत ।
साथ । पास ।

स्नाना—(क्रि अ-क्रि स) वे योबा,
चिब चिब के वे थका । पबा बा
पेलोबा ।
बहना या बहाना । टपकना या
टपकाना । गिरना या गिराना ।

स्नष्टा—[सं पुं] २.१६ कर्डी, बन्ना,
विष्णु, शिव ।

सृष्टि बनानेवाले । ब्रह्मा । विष्णु ।
शिव ।

(वि) सृष्टि करेता ।

कोई चीज बनानेवाले ।

स्नस्त—(वि) छूत, शिथिल, पतित,
उलामे थका ।

अपने स्थान से गिरा हुआ ।
शिथिल ।

स्नाव—[सं पुं] कबज, वै पबा,
गर्जपात, स्नाव ।
झरण ! गर्म-पात । निर्यास ।

सुबा—(सं स्त्री) स्फुर, स्फुरत तलत
बाधि होमव झुइत बिडे तला
कोषाव आकृतिव दीपलीया
हेता । आहृति 'दया हेता ।
लकड़ी की वह कलछी जिससे
हवन के समय अग्निमें धी आदि
की आहुति दी जाती है ।

स्रोत—(सं पुं) स्रोत, गति, नदी,
निजबा, याव स्रोत आछे,
बाष्पीय वा झुलीय बन्दव गति ।
पानीका बहाव । नदी । झरना ।
वह आधार जिससे कोई वस्तु
बराबर निकलती या आती रही ।

स्रोतस्विनी—(सं स्त्री) नदी ।
नदी ।

स्व—(वि) निखर ।
अपना ।

स्वकीय—(वि) निखर ।
अपना । निजका ।

स्वकीया—(सं स्त्री) पर पुरुषव
प्रति आगच्छ नोदोरा नायिका
(गार्हिता) ।
साहित्यमें वह नायिका जो पर
पुरुषका ध्यान न करती हो ।

स्वागत—(क्रि वि) स्वगत [निखे] ।
आपही आप । (कुल कहना) ।
[वि] आश्वगत, मने मने ।
आत्मगत । मनोगत ।

स्वतन्त्र—(वि) आधीन, अबाध ।
स्वाधीन । निरंकुश ।
(क्रि वि) कोटो नडवा निछि-
छाटेक ।
बिना किसी सोच या विचार के ।

स्वच्छ—(वि) निर्मल, खलकनीया,
शुद्ध ।
निर्मल । उज्ज्वल । शुद्ध । (सं स्त्री)
स्वच्छता ।

स्वजन—[सं पुं] निखर लगा
डगा माझ, गवकीय लोक वा
आश्वीय लोक ।

अपने परिवारके लोग । संबंधी ।

स्वतंत्र—[वि] आधीन, बेलेग,
पृथक । निग्रम आदिन परा बन्धन
हीन ।

स्वाधीन । अलग । नियमों आदि
के बन्धन से रहित ।

स्वतंत्रता—(सं स्त्री) आधीनता,
अतद्धता ।
स्वाधीनता । आजादी ।

स्वतः—(अव्य) आपोना-आपुनि,
स्वयं, निखे निखे ।
आपही आप । खुद ।

स्वतःसिद्ध, स्वयंसिद्ध—(वि) आपोना
आपुनि प्रमाण होरा, आपुनि
गिद्ध होरा, स्वतःगिद्ध ।
जो किसी तर्क या प्रमाणके बिना
आपही ठीक और सिद्ध हो ।
सर्व-मान्य ।

स्वत्व—(सं पुं) अधिकार, आर्ष,
स्व ।

‘स्व’ का भाव । अधिकार ।
हक । स्वार्थ ।

स्वत्वाधिकारी—[सं पुं] श्वर पोवा
वा थका लोकर, गवाकी, श्वा-
धिकारी ।

वह जिसे स्वत्व या अधिकार
प्राप्त हो । मालिक ।

श्वधा—[सं स्त्री] पित्र पुत्रश्च
सकलत्र उक्तेषां दियः आशः ।
पितरोंके उद्देश्यसे दिया जाने
वाला भोजन ।

(अव्य) श्वाहा, होश वा यज्ञर
समयत आश्रयण कर्ता यज्ञ, अग्नि
देवतापर पत्नी ।

एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञमें
हवि देनेके समय होता है ।

श्वन—(सं पुं) श्वर, श्वनि ।
शब्द । आवाज ।

श्वन्तिल—(वि) श्वइ थका,
गपोन देखि थका, गपोन
सहस्यीय ।

सोया हुआ । स्वप्न देखता हुआ ।
स्वप्न सम्बन्धी ।

श्वयं—(अव्य) श्वयः, निष्पे, आपोना-
आपूनि । आप । आपसे आप ।

श्वयंपाकी—(सं पुं) निष्पे शाते
बाकि बाट्टे थोड़ा लोकर ।
जो स्वयं भोजन बनाता हो ।

श्वयंभव, श्वयंभू(त)—(सं पुं)

श्वयं वा आपोना आपूनि जन्म
होवा, कामदेव, शिव ।

ब्रह्मा । कामदेव । शिव ।

[वि] लोकर श्वन वा उपपन्न
नकरा, निष्पे निष्पे होवा जन्म ।
आपसे आप कुछ बन जानेवाला ।

श्वयंवर—(सं पुं) श्वयंवर, आगव
दिनत कन्हाई वर बाछि लोवा
प्रथा ।

प्राचीन भारत की एक प्रथा
जिसमें कन्या अपने लिये आपही
वर चुन लेती थी ।

श्वयंवरा—(सं स्त्री) निष्पे श्वयंवर
बाछि लोवा कन्हा ।

अपना पति आपही चुननेवाली
कुमारी या स्त्री ।

श्वयमेव—(क्रि वि) नौष्पे, श्वयमेव ।
आपही ।

श्वर-ग्राम—(सं पुं) गच्छीतव
गूच्छनां उक्तं तानव माखर पर्का
वा वेव, श्वर-ग्राम । श्वर-ग्राम ।
संगीतमें सातो स्वरो का समूह ।
सप्तक ।

श्वरित—[वि] श्वर वा श्वनि थका ।
जिसमें स्वर होता हो ।

स्वरोदय—[सं पुं] खर अथवा

उशाह-निशाह द्वारा सुभासुभ
जना विद्या ।

स्वरों या स्वासो द्वारा सब प्रकार
के शुभ और अशुभ फल जानने
की विद्या ।

स्वर्गारोहण—(सं पुं) श्वर्गटेल गमन
कवा, ब्रूडा ।

स्वर्गकी ओर चढ़ना या जाना ।
मरना

स्वर्गिक—(वि) श्वर्गीय ।
स्वर्गीय ।

स्वर्ण [सं पुं] सोण ।
सोना ।

स्वर्ण-युग—[सं पुं] अष्टम काल ।
श्वर्ण-युग ।
सबसे अच्छा या श्रेष्ठ समय ।

स्वर्णिम—(वि) सोणानी । सोणानी
वक्त्र ।
सोने के रंग का । सुनहला ।

स्वल्प—[वि] अल्प ।
बहुत थोड़ा ।

स्वस्ति—[अन्य] कल्याण वा मङ्गल
शुक्र (आशीर्वाद) ।
कल्याण हो । (आशीर्वाद)

(सं स्त्री) कल्याण ।
कल्याण ।

स्वस्तिक—[सं पुं] मङ्गल चिह्न ।
एक प्रकार का प्राचीन मङ्गल
चिह्न ।

स्वस्तिवाचन—(सं पुं) मङ्गलाचन,
पूजा आदि आरम्भ करवाते
जैसे कार्यय सङ्गमनताव अर्घ्य
करा मङ्गलाचन ।
मङ्गल-कार्य में माङ्गलिक मंत्रों
का पाठ ।

स्वस्थ—(वि) स्वस्थ । निरोगी ।
गाढधान ।
नीरोग । चंगा । सावधान ।

स्वर्ग—(सं पुं) डेण्डन । नकल ।
आइडन ।
बनावटी वेश या रूप । नकल ।
आइडन ।

स्वर्गना—(क्रि स) डेण्डन करा ।
स्वर्ग बनाता ।

स्वात—[सं पुं] अक्षःकर । निखर
अक्ष वा नाभि ब्रूडा । निख बांका ।
अंतःकरण । अपना अन्त । मृत्यु ।
अपना राज्य ।

स्वागत—[सं पुं] अवाधना ।
अभ्यर्थना ।

स्वाति, स्वाती—(सं स्त्री) श्राती,
नक्षत्र गणना नक्षत्र वा उवा ।
एक नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल
से मोती की उत्पत्ति मानी जाती
है ।

स्वादिष्ट (ष्ठ), स्वादु-(वि) गोवाप
लगा ।
जिसका स्वाद अच्छा हो ।

स्वाध्याय—[सं पुं] वेद-पाठ ।
वेद-पठन कार्य, अध्यायन[निष्पे]
वेदों का नियम पूर्वक, पूरा और
ठीक अध्ययन । अध्ययन ।

स्वाभिमान—(सं पुं) निज अतिष्ठ
अथवा गौरव अभिमान
वा अहकार । आभिमान ।
अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का
अभिमान । (वि०-स्वाभिमानी)

स्वामित्व—(सं पुं) अर्जुन । श्रावित्व
'स्वामी' होने का भाव । मालिक-
पन ।

स्वामिनी—(सं स्त्री) गवाकिनी ।
श्रुतिनी । गिरिईतनी ।
मालकिन । गृहिणी ।

स्वायत्त—(वि) निज अक्षिप्त
थका । श्रायत्त । निज कार्य
चलावा ।

जिस पर अपना ही अधिकार
हो । जो अपने कार्यों का स्वा-
लन अपने आप करता हो ।

स्वाहा—(अव्य) यज्ञत शिष्टे दिवस
मयत उक्तावित यज्ञ वा नक्ष ।
श्राहा ।

एक शब्द जिसका उच्चारण यज्ञ
में हवि देते समय होता है ।

(वि) भुवि छाँटे है योवा ।
स्वयं होवा ।

जो जल कर राख हो गया हो ।
बरबाद ।

स्वीकार्य—(वि) शीकार कवि-
लगीया । एनेई जानिवा वा
दुखिवा लगा ।

स्वीकृत या ग्रहण करने या
मानने योग्य ।

स्वीय—(वि) निज । निज ।
अपना । निजका ।

स्वेच्छया—[क्रि वि] निज इच्छासे ।
अपनी इच्छा से ।

स्वेच्छाचार—[सं पुं] निज इच्छा
मते चल । निज मन अनुसार
करा आचरण, स्वेच्छाचार ।
यथेच्छाचार । [वि-स्वेच्छाचारी]

स्वेद—(सं पुं) शय । भाप । मल ।
पसीना । भाप ।

स्वेद-कण—(सं पुं) शय-कण ।
पसीने की बूँद ।

स्वेदज—[सं पुं] मल वा गेला
पटा बखव पत्रा उपजा (मह,
उदह) आदि ।
पसीने से उत्पन्न होनेवाले जीव ।

स्वै—(वि) निष्ठा ।

अपना ।

[गर्वं] गेह

सो । वह ।

स्वैच्छि—[वि] निष्ठा ईच्छा अङ्गुलि
निष्ठा । ईच्छाएव रुचि पत्रा ।
अपनी इच्छा से सम्बन्ध रखने
वाला । अपनी इच्छा से किया
जानेवाला ।

स्वैद—(वि) श्लेष्माचाबी । श्वाधीन ।
निधिन ।

स्वेच्छाचारी । स्वतंत्र । धीमा ।
मनमाना ।

स्वैराचार—(सं पुं) निम्न वा
वाक्छेन नेमानि निष्ठा ईच्छा
मते कवा आचरण ।
नियमों या बन्धनों की उपेक्षा
करके किया जानेवाला मनमाना
आचरण ।

स्वैराचारो—[वि] श्लेष्माचाबी ।
वाङ्मिताबी ।

मनमाना काम करनेवाला ।
व्यभिचारी ।

स्वैरिणी—(सं स्त्री) वाङ्मिताविनी
वा श्लेष्माचाविनी ।
व्यभिचारिणी ।

ह

ह—वर्णमालाब (वाञ्छन वर्णब) तेत्त्रिंश
गन्थाब आन्ध्र ।

वर्णमालाका तैतीसवाँ व्यंजन ।

हँकड़ना—(क्रि अ) प्रत्याख्यान कबा ।

बाड़ गकरे डांडब डांडबटैक
हौकबा ।

ललकारना । चिल्लाना । साँड
आदिका जोरसे बोलमा ।

हँकवा—[सं पुं] गिंह, वाघ, हविर्ग
आदिब चिकाबब समयत गोलमाल
कबि बा बाञ्छ आदि बझाई अछु
बोब चिकाबी बओब छपाई अना ।

बहुतसे लोगोंका शेर, चीते आदि
को चारों ओरसे घेरकर शिकारी
के सामने लाना ।

हँकाई—(सं स्त्री) धेना, गकर
आदि छुबि दि धेना कार्या ।
हाँकनेकी क्रिया, माव या मजदूरी

हँकाना—(क्रि स) धेना, मता ।
हाँकना । पुकारना । हँकवाना ।

हँकारना—(क्रि स) चिःआवा, धेना ।
पुकारना ।

[क्रि अ] हँकार मबा ।

हँकार करना ।

हँकारी—[सं पुं] दूत ।
दूत ।

(मं स्त्री) निमन्त्रण ।
बुलाहट ।

हंगामा—(सं पुं) उपद्रव, हलहूल,
हैँछा ठैला ।
उपद्रव । शोर-मुल । भीड़ भाड़ ।

हंडा—[सं पुं] हाड़ी, डांडब बाटन ।
हाँडी जैसा बड़ा बरतन ।

हंडी—(सं स्त्री) हाड़ी ।
हाँडी ।

हंत—(अव्य) दूःख सूचक शब्द ।
एक दुःख सूचक शब्द ।

हंता—[वि] शत्रु कबोता ।
हत्या या वध करनेवाला ।

हँफनी—[सं स्त्री] कोटपोता।
कार्य ।

हँफनेकी क्रिया या भाव ।

हंस—(सं पुं) शंख, शूर्य, जल,
जीवाश्वा आग, गन्नागो गकलव
श्रेणी विशेष, नूपुर, जेधव ।

एक पक्षी । सूर्य । ब्रह्म ।

जीवात्मा । प्राण । सन्यासियोंका

एक भेद । नूपुर । ईश्वर ।

हंस-गति—[सं स्त्री] गहोन, शीर
शेख । जलशक्ति, योग्य ।

सायुज्य मुक्ति । हंस की सी
मोहक गति ।

हंसना—[क्रि अ] ईश ।

हास करना ।

[क्रि स] काटका ठाँठो कब ।

किसी की हँसी उड़ाना ।

हंस-मुख—(वि) शंख मुख,
आनमिष्ठ मुख ।

सदा हँसता रहनेवाला । विनोद
शील ।

हंसली, हँसली—[सं स्त्री] गलब
उठवन बुकुर श्रेणीगिने धका

शङ्ख छुडाल । गहना विशेष ।

गले के पासकी छातीकी दोनों

उभरी हुई हड्डियाँ । एक गहना ।

हँसाई—(सं स्त्री) गवाजत होवा
बदनाय, निम्ना ।

लोकमें होनेवाली बदनामी या
निन्दा ।

हँसाना—[क्रि स] आनव शंख
ढोलना, ईश्वर ।

किसीको हँसनेमें प्रवृत्त करना ।

हंसिनी, हंसी—[सं स्त्री] शंख-
गाइकी ।

हंस पक्षी की मादा ।

हंसिया, हंसुआ—[सं पुं] काठि ।
फसल, घास आदि काटनेका एक

बीजार ।

हंसी—(सं स्त्री) शंख ।

हास ।

हंसोड़—[वि] गदाय शंख उठा
कथा कउंठा, बहवा ।

सदा हँसीकी बातें करनेवाला ।

दिल्लीबाज ।

हई—(क्रि अ) आच्छे ।

है ही ।

[सं पुं] आच्छावाही ।

घुड़ सवार ।

[सं स्त्री] आच्छा मृदक मज-
देर, छात्र ।

आश्चर्य सूचक शब्द । डर ।

हक—(वि) गता, उचित ।

सच । उचित । मुनासिब ।

(सं पुं) अधिकार, कर्तृत्वा,
अधिकारश्च, दावी, [ज़िन्न]

मूह्लमान ।

अधिकार । कर्तव्य । वह वस्तु

जिसपर न्यायसे अधिकार प्राप्त

हो । उचित या ठीक बात या

पक्ष । ईश्वर (मुसलमान)

हकदार—[सं पुं] अधिकारी ।

अधिकारी ।

हक-नाहक—(अव्य) जोब जूलुग,

अनाश्कत ।

जबरदस्ती । व्यर्थ ।

हकबकाना—[क्रि स] विवृद्धि

होना, भय होना, थत मत

होना ।

घबरा जाना ।

हकलान—(क्रि स) खोना, कथा

बकना, बोकोबार मदे कथा

बकना ।

शब्दोंका ठीक तरहसे उच्चारण

नकर सकने के कारण बीच बीच

में कोई शब्द बहुत हक हककर

बोलना ।

हकीकत—(सं स्त्री) वास्तविक तथा

वा कथा, यथार्थ, आचल ।

वास्तविक तथ्य या बात । अस-

लियत ।

हकीम—(सं पुं) विद्वान, चिकित्स-

गक ।

विद्वान । यूनानी रीतिसे चिकित्सा

करनेवाला चिकित्सक । [वि

सं स्त्री—हकीमी]

हकूमत, हुकूमत—[सं स्त्री]

शासन, आधिपत्य ।

शासन । आधिपत्य ।

हक्का-बक्का—(वि) बर विवृद्धित पना ।

हतभय । खूब डर होना । डेवा-

लगा ।

बहुत घबराया हुआ । भौचक्का ।

हगना—[क्रि अ] हगना । मल त्याग

करना । शौच करना ।

मल त्याग करना ।

[क्रि स] बाधा है धार पवि-

शोध करना वा पिना ।

विवश होकर देन चुकाना या

कुछ देना ।

हक्कना—(क्रि अ) दह दह गव

कवि शब्दोंत बोना ।

हच हच शब्द करते हुए बाचमें
रकना या भुकना ।
हचकोला—(सं पुं) गाड़ी आगि
हेटमागि ।
गाड़ी आदिका धचका ।
हजामत—[सं स्त्री] दाढ़ ठूलि
कटा कार्य । कौबकर्त ।
बाल काटने और दाढ़ी बनाने का
काम । क्षीर ।
हजार—[वि] एहेखार ।
दस सौ ।
[कि वि] बहते ।
बहुतेरा ।
हजारों—(वि) केवा हेखार । बहत
बेछि ।
कई हजार । बहुत अधिक ।
हजूम—[सं पुं] छिब ।
भीड़ ।
हजूर, हुजूर—(सं पुं) हजूर ।
केछारी । पबराब ।
किसी बड़े की सक्षमता । कच-
हरी । बहुत बड़ोको सम्बोधन
करने का शब्द ।
[कि वि] गमूथत । उपस्थिति ।
(किसी बड़े के) सामने । समय ।

हजूरी, हुजूरी—(सं पुं) सेवक ।
अगुचव ।
सेवक ।
(वि) हजूरव ।
हजूर का ।
—जी हजूरी करना—(मु०)
धोछावति कवा ।
चापलुसी या खुशामद करना ।
हज्जाम—(सं पुं) नापित ।
नाई ।
हटकना—[कि स] निषेध कवा ।
बाधा दिया । छल्लुक कोनो
पिनन धेदा ।
मना करना । रोकना । पशुओं
को किसी ओर हाँकना ।
[कि अ] बाधा दियात गानि
लोदा वी थमा ।
मना करनेपर मानना या रुकना ।
हटना—[कि अ] कावव होवा ।
आठव होवा । दिया कथा पालन
नकवा ।
खिसकना । सामनेसे हथर उधर
या दूर होना । टलना । वचन
आदिका पालन न करना ।
(कि स—हटाना) ।

हटा—(सं पुं) निषेध ।

निषेध । मनाही ।

हटा कटा—(वि) शटे-पुटे । बलवान ।

हृष्ट पुष्ट । बलवान ।

हठ—(सं पुं) जेद । दृढ़ अतिज्ज्ञा ।

जिस । हड़ प्रतिज्ञा । दुराग्रह ।

हठ-धर्मी—(सं स्त्री) दुराग्रह । गोड़ामि ।

दुराग्रह । कटुरपन ।

(वि) जेदो । दुराग्रहो । गोड़ा ।

हठी । दुराग्रही । कटुर ।

हठयोग—(सं पुं) युद्ध वा योग

आसनब चाबा इन्द्रियादि

गन्धम कवा विधान । शारीरिक

कोशलात्मक योग विशेष ।

योगका वह अंग जिसमें शरीर

वशमें करनेके लिये कठिन मुद्राओं

या आसनों का विधान है ।

हठी—(वि) जेदो ।

हठ करनेवाला । जिद्दी ।

हठीला—[वि] जेदो । युद्धत

टैधर्ष्य धवि तिविध कवा ।

जिद्दी । लड़ाईमें धीरतापूर्वक

जमा रहनेवाला ।

हड़—(सं स्त्री) मिलिधा ।

हरें । हरितकी ।

हड़कंप, हड़कम—(सं पुं) आतंक ।

तहलका ।

हड़कना—[क्रि अ] उत्रावल होवा ।

पांगल होवा (कुकुर) ।

बहुत व्याकुल होना । (कुत्तेका)

पागल होना ।

हड़कना—[क्रि स] वर विवस्त्र कवा ।

वर कटे दिया । ठेलि आँठबोवा ।

(किसी को) बहुत तंग करना ।

बहुत तरसाना । दूर हटाना ।

हड़ताल—(सं स्त्री) धर्मघटे ।

विवेकाद अदर्शनार्थ दोकान-

पोशाक वस्त्र बधा कार्य ।

दुःख, विरोध या असंतोष प्रकट

करने के लिये सब कारबार

दूकानें आदि बन्द कर देना ।

(अ-स्ट्राइक)

हड़ताली—(वि) धर्मघटेकाबी ।

धर्मघटे गश्कीय ।

हड़ताल करनेवाला । हड़ताल

सम्बन्धी ।

हड़पना—[क्रि स] गिनि पेनोवा ।

आश्चर्या कवा ।

निगल जाना । अनुचित रूपसे ले

लेना ।

हृदयदाना—[क्रि अ क्रि स] शहा-
काब नगोरा । ताबातावि
नगोरा ।

जल्दी मचाना ।

हृदयदी—(सं स्त्री) शौचता । बेगी-
बेगि । उत्राबल ।

जल्दी । शीघ्रता । उतावली ।
घबराहट ।

हृडी—[सं स्त्री] शड़ । वंश ।
अस्थि । वंश ।

हृत्—[वि] बध होरा । प्राण होरा ।
नष्टे ।

जो मार डाला गया हो । रहित ।
नष्ट । बिगड़ा हुआ ।

हृत्तना—[क्रि स] मारि पेलोरा ।
नेमाना । डाँडि पेलोरा ।

मार डालना । न मानना । तोड़ना ।

हृत्-प्रभ, हृत्श्री—(वि) श्रीहीन ।
स्वयं सम्पन्न नष्टे होरा । आगुल
शानि होरा ।

श्रीहीन ।

हृत्-बुद्धि, हृत्-बोध—[वि] मूर्ख ।
बिबुद्धि । किंकरुव्या बिबूठ ।
मूर्ख । किंकर्तव्य विमूढ़ ।

हृत्—[क्रि अ] आछिल ।
या ।

हृत्तोसाह—(वि) निबान ।

जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो ।

हृत्थ—(सं पुं) हात । हाथ ।

हृत्था—(सं पुं) यन्त्रपातिव मुठिटो,
यतन विनेष । (हातुबी लेबीया)
ओजारका दस्ता या मूठ ।

हृत्थे—(क्रि वि) हातत । हातेबे ।
हाथमें । हाथसे ।

हृत्थारा—(वि) शतयाकारी । बर
पाणी ।

हत्या करनेवाला । बहुत बड़ा
पापी ।

हृथ—(सं पुं) हात ।

‘हाथ’ का संक्षिप्त रूप ।

हृथकंडा—(सं पुं) हातब कोणल
बडयन्त्र ।

हाथकी चालाकी । छिपी हुई
चालबाजी ।

हृथकड़ी—[सं स्त्री] हात-कबेरया ।
बहु जंजीर जिससे कैदियोंके
हाथ बांधे जाते हैं ।

हृथ-गोला—(सं पुं) हात बोला ।
बहु गोला जो शत्रुओंपर हाथसे
फेका जाता है ।

हथ-फेर—[सं पुं] शठ ब्रूलावा,
कोशलेन दे वृत्ति कबा ।

प्यारसे किसीके शरीरपर हाथ
फेरना । चालाकी से किसी का
माल उड़ा लेना ।

हथ-लेवा—[सं पुं] पाणिग्रहण ।
विश्रा कटावा ।
पाणिग्रहण ।

हथिनी—[सं स्त्री] शठी[शेकी]
शक्तिनी ।
हाथी की मादा ।

हथियाना—[क्रि स] निखर शठलेन
अना । काकि दि शक्तिगत कबा ।
अपने हाथमें करना । बोले से
लेना ।

हथियार—(सं पुं) शक्तिग्राह ।
शठलेन वादहार कबा अश्रु—
ना, कूठाव, ठाँठ आदि ।
औजार । हाथसे चलाया जाने
वाला अस्त्र ।

हथियार-बंद—(वि) गणज ।
अश्रु-शठलेन श्रुगन्धित ।
सशस्त्र ।

हथेली, हथेली, हथोरी—(सं स्त्री)
शठव तनूवा ।
कर-तल ।

हथौड़ा—[सं पुं] शक्रुनी ।

बहु औजार जिससे कारीगर कोई
चीज तोड़ते, ठोकते या गढ़ते
हैं । (सं स्त्री-हथोड़ी)

हथ—(सं स्त्री) जीमा । मर्याणा ।
सीमा । मर्यादा ।

हदस—(सं स्त्री) भय ।
भय ।

हदसना—(क्रि स) मनत भय उपलब्ध ।
मनमें भय उत्पन्न होना । [क्रि स-
हदसाना]

हनन—(सं पुं) बबा । शठ्याकबा ।
आघात कबा । श्रुवण कबा ।
मार ठालना । आघात करना ।
गुषा करना ।

हनना—(क्रि स) शठ्या । (नागबं
आदि) बलावा । [अश्रु] ठलावा ।
हनन । (नगाड़ा आदि) बजाना ।
(शस्त्र) चलाना ।

हनु—[सं स्त्री] शश्रु । गोलब
उपबंर आकं चक्रव तलब शठ ।
बाढ़की हड्डी । ठोड़ी ।

हफ्ता—[सं पुं] गणधार ।
सप्ताह । सात दिन ।

हवकना—(क्रि अ क्रिस) फाँटेवर
कामुबिबटेल छनिउवा । फाँटेवर
काटमाबा ।

(दाँतोसे) काटने या खाने के लिये
भपटना । दाँतोसे काटना ।

हवसी—(सं पुं) आक्रिकाव शब्द
पेश निवासी । निष्ठा ।
अफ्रीकाके हवस देशका निवासी ।
निग्रो ।

हबीब—(सं पुं) वक्त्र ।
मित्र ।

हम—[सर्व] आशि ।
'मे' का बहुवचन ।
[सं पुं] अशक्ताव ।
अहंकार ।
(अव्य) गैतेत । गमान ।
साथ । समान ।

हमजोली—(सं पुं) गझी । नगरीया ।
साथी । संगी ।

हम द—(वि) गशश्रुति बाधैता ।
सहानुभूति रखनेवाला ।

हमदही—(सं स्त्री) गशश्रुति बाधैता ।
सहानुभूति रखनेवाला ।

हमला, हम्मला—[सं पुं] आक्रमण,
आघात ।
आक्रमण । प्रहार ।

हमाम, हम्माम—[सं पु] गीधारा
वध ।

स्नानागार ।

हमारा—(सर्व) आशाय ।

'हम' का सम्बन्ध कारक रूप ।

हमाहमी—[सं स्त्री] गुरुलाटव
माछत निष्ठा निष्ठा । लाठव बाटव
छोटा छेटी । अशक्ताव ।

सब लोगोंमें अपने अपने लाभ के
लिये होनेवाला आतुर प्रयत्न ।
अहंकार ।

हमें—(सर्व) आशाय ।
हमको ।

हमेशा—(अव्य) गलाय ।
सदा ।

हय—(सं पुं) घोड़ा । इन्द्र ।
घोड़ा । इन्द्र ।

हय-मेघ—(सं पुं) जंबूमेघ यज्ञ ।
अश्वमेघ [यज्ञ]

हया—(सं स्त्री) लाज । चवच ।
लज्जा । शर्म ।

हर—[वि] शवण कटाता । लै
याँउटा । शत्रुकावी । अतोका ।
हरण करनेवाला । ले जानेवाला ।
वध करनेवाला प्रत्येक । एक एक ।

[प्रत्य०] दूर करेता । खबरटेल
याँउता-भूत । बर, ठाई आदि ।
दूर करनेवाला । सन्देश ले जाने
वाला । घर, स्थान आदि ।
[सं पुं] निव । भाषक ।
शिव । भाजक ।

हरकस—[सं स्त्री] छेटी । शला-
खला ।

हिलना डोलना । चेष्टा ।

हरकना—[क्रि स] गुच्छावा । नै
भंक ।

हटाना । रोकना ।

हरकारा—(सं पुं) डाटकावाला भूत ।
दूत । डाकिया । डाक देनेवाला ।

हरज, हर्ज—[सं पुं] वाधा । लोक-
चान

रुकावट । नुकसान ।

हरजाई—(वि) एतेत्ये बुबिबूबा
लोक । बखरवा ।

हर जगह व्यर्थ घूमनेवाला ।
अवारा ।

[सं स्त्री] वाडिछाविनी । कुलटा
वा भिचारिणी स्त्री ।

हरजान, हर्जाना—[सं पुं] कृति-
पूजन ।

क्षति-मूल्य ।

हरण—(सं पुं) हवन । बनेटेल लै
बोवा । नाईकिया कबा । हवन
कबा (गणितव) ।

बलपूर्वक ले लेना । मिटाना । ले
जाना । भाग देना [गणित] ।

हरष, हरषी, हलषी, हल्दी—
[सं स्त्री] शालबि ।

एक पौधेकी पीली जड़ जो रंगाई
और मसालेके काममें आती है ।

हरना—(क्रि स) हवन कबा । पूबि
कबा ।

हरण करना ।

हरफ—[सं पुं] आश्व ।
अक्षर ।

हरषा—[सं पुं] शक्तियाव । जा-
गँझुलि ।

हथियार ।

हरम—(सं पुं) अन्धबपुन ।
अंतःपुर ।

हरवाइ, हलवाटा—(सं पुं) शाल
बड़ता । शक्तिशालक ।

हल चलानेवाला । किसान ।

हरषना—(क्रि अ) आनान्दित होवा ।
हर्षित या प्रसन्न होना ।

हरयाना—[क्रि अ क्रि स] आनमिउ

होवा वा कवा ।

हर्षित या प्रसन्न होना या करना ।

हर-सिगार—(सं पुं) एविश सुगन्धि
कुलब गछ । शेरालि ।

एक पेड़ जिसमें छोटे सुगन्धित
फूल लगते हैं ।

हरांस—(सं स्त्री) डय । दुःख
भागव ।

भय । दुःख । थकावट । हरातर ।

हरा—(वि) सेउकीया । अगन्न ।
नतून । गतेछ । बहित ।

हरित । सन्न । प्रसन्न । ताजा ।
रहित ।

[सं पुं] सेउकीया बडव ।
हरित वर्ण ।

हराना—[क्रि स] पवाञ्जित कवा ।
भागव लगेवा ।

पराजित करना । थकाना ।

हराम—(वि) निषिद्ध । बेया ।
निषिद्ध । बुरा ।

‘(सं पुं) अधर्म । पाप । ब्याडिचार ।
अधर्म । पाप । व्यभिचार ।

हराम-खोर—[सं पुं] अग्न
उपायेवे खाँडता ।

शराबी ।

मुफ्तका माल खानेवाला ।

हरामजावा, हरामी—[सं पुं]
नौचब गस्तान । छूटे । शराबखापा ।
वर्ण शंकर । परम दुष्ट ।

हरारस—(सं स्त्री) गवम । गानाञ्ज
जब ।

गरमी । हलका ज्वर ।

हराश—[सं पुं] डय । आगन्ना ।
दुःख ।

भय । आशंका । दुःख ।

हरि-जन—[सं पुं] देवव डक्त ।
अमृत श्रेणीव लोक [महाभा
गाकीये दिया नाम] ।

ईश्वरका भक्त । पद दलित या
अस्पृश्य जातियों का सामूहिक
नाम ।

हरिताभ—(वि) सेउकीया बडव
आभा बूझ ।

जिसमें हरे रंगकी आभा हो ।

हरिद्रा—(सं स्त्री) शालधि ।
हलदी ।

हरियाना—(क्रि अ-क्रि स) गछ-गहनि
सेउकीया होवा । अगन्न होवा ।
पञ्जाब अकन विशेष ।

पेड़ पौधोंका हरा होना या पेड़
पौधोंको हरा भरा करना ।
प्रसन्न होना या करना ।

हरियाली—[सं स्त्री] गेउँबीया ।
गेउँबीया वनस्पति गमूश ।
गेउँबीया बर ।
हरे भरे पेड़ पौधोंका समूह या
विस्तार ।

हरिस—(सं स्त्री) केशमावि । नाडलव
डिना ।

हलका वह लट्ठा जिसके एक सिरे
पर फालवाली लकड़ी और दूसरे
पर जुआ रहता है ।

हरीसिमा—(सं स्त्री) गेउँबीया ।
गायना ।
हरियाली ।

हरीरा—[सं पु] गाथीबत गा-मछना
नि ठेत्याब कबा बाँझ विनेब ।
दूधमें मेवे-मसाले डालकर बनाया
हुआ एक पेय पदार्थ ।
(वि) गेउँबीया । आनमिठ ।
हरा । हर्षित ।

हलकाना—[क्रि अ] पातल होवा,
आनम कबा, खबख मगोवा ।
हलका होना । फुरती करना ।
जल्दी मचाना ।

हरेक—(वि) प्रत्येक ।
हर एक । प्रत्येक ।

हरेबा—[सं पु] गेउँबीया बडव
एबिष चबाई ।
हरे रंग की एक चिड़िया ।

हरे—(सं स्त्री) निमिषा ।
हरीतकी ।

हर्ष—[सं पु] आनम, असन्नता ।
रोमांच । प्रसन्नता ।

हर्षित—[वि] असन्न, शक्ति,
आनमिठ ।
प्रसन्न ।

हल—(सं पु) नाडल, शिछाव कबा,
गमूशाब गमाथान ।

जमीन जोतने का एक उपकरण ।
हिसाब लगाना । समस्या का
निराकरण ।

हलक—[सं पु] गलब नली, कुँठा ।
गले की नली ।

(सं स्त्री) ठो ।
तरंग ।

हलकना—(क्रि अ) बाछनत पानी
डवि बागवि पबा शक्, ठो
थेला । शला-थला
बरतन में भरे हुए जल का हिलने

से शब्द करना । हलराना ।
हिलना ।

हलका—[वि] पीतल, वायु, मध्यम
श्वेत, कम, गह्वर, पीतल
(कूब, शिवाल) ।

जो भारी न हो । जो गहरा न
हो । कम अच्छा । कम । ओछा ।
सहज, प्रसन्न । पागल (कुत्ते,
गोदड़ आदि के लिये)
(सं पुं) छो, इठ, धेव, मण्डी,
अकल ।

तरंग । वृत्त । घेरा । मंडली ।
अंचल ।

हलकापन—(सं पुं) पीतल भाव,
तुच्छता, अतिरिक्ता नोदोद ।
'हलका' होने का भाव या गुण ।
ओछापन । तुच्छता । अप्रतिष्ठा ।

हलकोरा—[सं पुं] छो ।
तरंग ।

हल-चल—(सं स्त्री) शांकाव,
हलचल ।
हिलने डुलने की क्रिया या भाव ।
खलबली ।
(वि, ध्वज-वक्र शोभा वा शलि-
आलि प्रवा ।
डगमगाता या हिलता हुआ ।

हलफ—(सं पुं) शपथ ।

कसम । शपथ ।

[सं स्त्री] छो ।

लहर । तरंग ।

हलराना—(क्रि अ क्रि स) झिपने
झिपने लब छब कबा, शांत
तनुवात लै लंबा छेवालीक
निगुनिगु निगु ।

इधर उधर हिलना-डोलना या
[बच्चों को] हाथ पर लेकर इधर-
उधर हिलाना ।

हलवा, हलुआ, हलुवा—[सं पुं]
शालोवा, छुजि भंगीइ कबा
मोहन भोग ।

एक मीठा खाद्य-पदार्थ । मोहन-
भोग ।

हलवाई—(सं पुं) मिठाई निकाला ।
मिठाई, पूरी आदि बनाने और
बेचनेवाला ।

हल्लाक—(वि) मारि पेटलावा ।
जो मार डाला गया हो ।

हल्लाकन—(वि) विरक्त ।
परेशान । तंग ।

हलाल—(वि) धर्म मनुष्य, उचित,
मुहलमानब धर्ममते कबा पत

वा प्राणी. निधन ।

धर्म सम्मत । जायज ।

हृत्कालका—(पद) आय गच्छत भावे
अर्थ ।

ईमानदारी से कमाया या लिया
हुआ ।

हृत्काल—(सं पुं) विष । श्लाशन ।
कालकूट विष ।

(वि) गन्धर्ग ।

पूरा पूरा ।

हृत्काल—(सं पुं) गोलमाल, युद्ध
शांकाकार श्वनि, आक्रमण ।

शोरगुल । युद्ध के समय का
कोलाहल । आक्रमण ।

हृत्काल (सं पुं) शोभ ।
होम ।

हृत्काल, **हृत्काल**—[सं स्त्री] लालसा,
वागना, तृष्णा, पिशाह ।

लालसा । वासना । तृष्णा । दिल
का अरमान ।

हृत्काल—[सं स्त्री] वायु, भूत-प्रेत,
कीर्ति । गोचर ।

वायु । भूत-प्रेत । कीर्ति । साक्ष ।

हृत्काल—[वि] आकाशी ।

हवा का । हवा सम्बन्धी । हवा
में चलनेवाला ।

हृत्काल—(सं पुं) विमान कोठ ।
आकाशी आकाशवायु वाटि ।

वह स्थान जहाँ हवाई जहाज
यात्रियों को उतारने चढ़ाने के
लिये आकर ठहरते हैं ।

हृत्काल—[सं पुं] आकाशी
आकाश, विमान ।
वायुयान ।

हृत्काल—[वि] बड़ा आश्रित
परा दृष्टाव शिबिकी थका ।

जिसमें हवा जाने जाने के लिये
खिड़किया, द्वार आदि हों ।

हृत्काल—[सं पुं] जलवायु ।
जल-वायु ।

हृत्काल—(सं पुं) अवस्था, परिणाम,
विवरण ।

हाल । परिणाम । वृत्तान्त ।

हृत्काल—[सं पुं] उदाहरण, दायित्व,
प्रमाण के उल्लेख ।

प्रमाण का उल्लेख । दृष्टान्त ।
जिम्मेदारी ।

हृत्काल—(सं स्त्री) शब्दावली,
वर्णनावली, शब्द ।
बधा, विचार शेष मोहोपा-
लैके दोषीक बधा ठाई ।

पहरे में रखा जाना । वह स्थान
जहाँ बिचार होने तक अभियुक्त
पहरे में रखा जाता है ।

हवास—(सं पुं) श्वाश्व, चतुर्ना,
ज्वान ।

इन्द्रियाँ । चेतना । होश ।

हवि—[सं पुं] शिष्टे, यज्ञ-गामिनी ।
आहुति देने की वस्तु ।

हविष्य—(वि) यज्ञव कारणे उप-
योगी, शिष्टे मिश्रि चाडेल ।
हवन करने योग्य । घी मिला
हुआ चावल ।

(सं पुं) शोभन जूँइत पदमा शिष्टे
मिश्रलोभा वस्तु ।

अग्नि में डाली जानेवाली हवि ।

हवेली—(सं स्त्री) डांडव घन,
पञ्ची, पैगौ ।

बड़ा मकान । पत्नी ।

हव्य—(सं पुं) यज्ञव शोभन वस्तु ।
हवन की वस्तु ।

हसरत—(सं स्त्री) दुःख, आञ्चलिक
कामना । दुःख । हार्दिक कामना ।

हसित—(वि) शान्तास्पद, कुलि
उठा, शैशि थका ।

हास्यास्पद । हँसता हुआ । खिला
हुआ ।

[सं पुं] शैशि, उपशान्त ।

हास्य । उपहास ।

हसीन—(वि) ध्रुव धुनीमा (लोक) ।
बहुत सुन्दर [व्यक्ति]

हस्त—(सं पुं) हात, ज्योतिष विभाग,
एटा नक्षत्र, श्वं ।

हाथ । एक माप । एक नक्षत्र,
हाथी की सूँड़ ।

हस्त-कौशल—[सं पुं] हातव
कोशल—कारुकार्य ।
हाथ की कारीगरी ।

हस्त-लाघव—(सं पुं) हातव चट्ट-
बालि-कोशल ।

हाथ की चालाकी या सफाई ।

हस्तांतरण—[सं पुं] अक्षनव
अधिकावर्त वा हातव वस्तु आन
अक्षनक दिग्ग कार्य ।

[सम्पत्ति, स्वत्व आदि का] एक
के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना
या दिया जाना ।

हस्तांतरित—(वि) श्रृङ्गासुख कर्ता ।
जिसका हस्तांतरण हुआ हो ।

हस्ती—(सं पुं) हाठी ।
हाथी ।

(सं स्त्री) अक्षिप्त, वाक्षिप्त ।
अस्तित्व । व्यक्तित्व ।

हाँ—[अव्य] अँ, गमर्धन, खारुति
मूठक शब्द ।

स्वीकृति, समर्थन आदि सूचक
शब्द ।

हाँक—(सं स्त्री) गता, चिन्ता,
आगवठाई ध्वनि ।
दुकार / ललकार । बढ़ावा ।

हाँकना—(क्रि स) गन्ध आदि
ध्वनि, गाड़ी आदि चमोरा,
छोटोबे चिन्ता, अतिशयोक्ति
पूर्ण कथा कोरा, बिछनोबे
बिछा ।

जानवरों को चलाने या हटाने
के लिये आगे बढ़ना या इधर
उधर करना । गाड़ी, रथ आदि
चलाना । जोर से पुकारना या
बुलाना । हुंकार करना । डींग
मारना । पंखे से हवा करना ।

हाँका—(सं पुं) गवर्धन, चिकार
वादे अन्ध आदि ध्वनि निम्न
कार्य, गता कार्य ।

जंगली जानवरों को हाँक कर
ऐसी जगह ले जाना जहाँ सहज
में उनका शिकार हो सके ।
पुकार । गरज ।

हाँड़ी—(सं स्त्री) शड़ी ।
हँडिया ।

हाँपना—(क्रि अ) कौभनि उठा ।
जोर जोर से साँस लेना ।

हाँसी—(सं स्त्री) शंश । शंशि ।
हँसी ।

हा—(अव्य) दुःख, शोक आनन्द,
आदि मूठक शब्द ।

दुःख, शोक आदि सूचक शब्द ।
आनन्द या प्रसन्नता का सूचक
शब्द ।

हाऊ—(सं पुं) कान्तिनिक जीव ।
एक कल्पित जीव ।

हाकिम—(सं पुं) विचारक, शास्त्र
उक्त कर्मचारी ।
शासक । बड़ा अधिकारी ।

हाजत—(सं स्त्री) आवश्यकता,
इच्छा, शङ्क, शङ्कोत ।

आवश्यकता । चाह । पहरेंमें रखा
जाना । हवालात ।

हाजमा—(सं पुं) शक्ती, शक्क कर्मा
शक्ति ।

भोजन पचानेकी क्रिया या भाव ।

हाजिर—(वि) उपस्थित ।
उपस्थित । मौजूद ।

हाजिरी—(सं स्त्री) उपस्थिति ।
उपस्थिति ।

हाजी—(सं पुं) शख यात्रा कवि
यश । शखि ।

वह जो हजकर आया हो ।
(मुसलमान)

हाट—(सं स्त्री) दोकान, बजार ।
दूकान । बाजार ।

हाटक—(सं पुं) सोण ।
सोना ।

हाथ—(सं पुं) हात ।
हस्त ।

हाथा—[सं पुं] यन्त्र प्रातिब मुठि
वा नाल ।
हस्ता । औजारों आदिकी मूठ ।

हाथा-हाई—(सं स्त्री) इताहति,
किला-किलि ।

हाथ पैरसे खींचने और ढकेलने
की लड़ाई ।

हाथी—(सं पुं) हाथी ।
गज ।

हाफिज—(सं पुं) कोवान मुख्श
थका लोका ।
जिसे कुरान कंठस्थ हो ।

[वि] बक्क ।
हिफाजत करनेवाला । रक्षक ।

हामी—(सं स्त्री) शीकाव कबा,
शीकृति ।

‘हां’ करने की क्रिया या भाव ।
स्वीकृति ।

हार—(सं स्त्री) पराजय, निधिलता ।
हार । शिथिलता । हानि ।

[सं पुं] सोणव वा शीरा मुकुताव
माला-मणि, शवि ।

गलेमें पहननेकी सोने, चांदी,
मोतियों, फूलों आदि की माला ।
जगल ।

(वि) लै याउंजा, शवण कबोता
वहन करने या ले जानेवाला ।

हारना—[क्रि अ] पराजित होना,
भागवि परा, छेछे कवि विफल
होना ।

पराजित होना । थक जाना ।
प्रयत्नमें विफल होना ।

(क्रि स) अतियोगितात अज-
फल वा विफल होना ।

प्रतियोगिता में सफल न होकर
गंवाना ।

हारी—[वि] शवण कबोता ।
हरण करनेवाला ।

(सं स्त्री) प्रवाजय ।

पराजय । हार ।

हारीत—(सं पुं) ढोब, डकाईत ।
चोर । डाकू ।

हाल—[सं पुं] अवस्था, परिस्थिति,
वातवि, विवर्ण ।

दशा । परिस्थिति । समाचार ।
विवरण ।

(वि) वर्तमान ।

वर्तमान ।

(अव्य) एतिग्रा, ठुबन्ते ।

अभी । तुरन्त ।

[सं स्त्री] हला वा कैंपा
कार्पा, गरु वा मंशु गाड़ीव
छकाव उपरत येबाई दिग्रा
लोबपात ।

हिलनेकी क्रिया या भाव । कंप ।
काठके पहिये पर चढ़ाया जाने
वाला लोहेका गोल बंद ।

हालत—(सं स्त्री) दशा, अवस्था,
आर्थिक अवस्था ।

दशा । अवस्था । आर्थिक स्थिति ।
परिस्थिति ।

हाक्षरी—[सं स्त्री] लोकश्रोत
विदेश ।
लोरी ।

हाळोंकि—(अव्य) यदि ।
यद्यपि ।

हाला—(सं स्त्री) मद ।
भराव ।

हालाहल—(सं पुं) हलाहल विष ।
हलाहल । कालकूट विष ।

हालै—(अव्य) এই समय, एतिग्रा,
तत्काल ।

इसी समय । अभी । तुरन्त ।

हाव—(सं पुं) आश्रान, प्रेम भाव
उदय होवाव कलउ नायकक
आकृष्ट कबिबटेल नागिन्याई कबा
अछोडग्री ।

(नायिका की) नायकको मोहित
करने अथवा उसपर मिलनकी
इच्छा प्रकट करनेके लिये की
जानेवाली स्वाभाविक चेष्टाएँ ।

हावन-दस्ता—(सं पुं) शयुमन्ता,
कविनाडी उषध आदि तैयार
कबिबरावावे ब्यवस्था कबा पात्र
खरलके आकारका घातुका बना
हुअ; एक प्रकारका पात्र । इमाम-
दस्ता ।

हाव-भाव—(सं पुं) पुरुषक
आकषित कबिबटेल नाबीये कबा
छेटी वा अछी डग्री ।

पुरुषोंको मोहित करने के लिये
स्त्रियोंकी मनोहर चेष्टाएँ ।

हाशिया—(सं पुं) आँछल,
निश्चय गमयक निमित्ताटक बधा
कागजब ठाँह । टीका-टिप्पणी
कदा ।

किनारा । गोट । लिखनेके समय
कागजके किनारे खाली छोड़ी हुई
जगह । किसी बातपर की हुई
टीका-टिप्पणी ।

हास—(सं पुं) शँदि, विदनाद ।
हँसनेकी क्रिया या भाव । दिल्ली ।

हासिल—(वि) पोवा ।
पाया या मिला हुआ ।
(सं पुं) गणित शास्त्र आदि ।
जमीन का लगान । जमा । कर
आदि ।

हास्य—(वि) शँदिब लक्ष्मि, उप-
हास्य योग्य ।
हँसनेके योग्य । उपहासके योग्य ।
[सं पुं] शँदि, ठाँह । मज्जा ।
हँसनेकी क्रिया का भाव ।
दिल्ली । मजाक ।

हास्यास्पद—[वि] ठाँह वा उपहास्य
पाद, निम्न भाषन ।

जिसके बेढंगपन की लोग हँसी
उड़ावें । हँसी उत्पन्न करनेवाला ।

हा इंत—[अव्य] हे जेब-हे कि
इंत ?

हे ईश्वर, यह क्या हो गया ।

हाही—(सं स्त्री) कोना बख्त
पावटल उपका बाधता ।

किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये
व्यग्रता ।

(वि) अञ्जल-लोडी ।
अत्यन्त लोभी ।

हिंगु—(सं पुं) शिं ।
हींग ।

हिंडोरना, हिंडोरा, हिंडोल,
हिंडोला—(सं पुं) पोला, पोलाना ।
कविता के श्रेणी विभाग ।

पालना । झूला । वह कविता
जिसमें हिंडोलेमें झूलनेका वर्णन हो ।

हिंदू, हिंदी—(वि) हिन्दूधर्म,
भावभाव ।
हिन्दुस्तान का ।

(सं पुं) हिन्दूधर्म निवासी,
भावभाव वागी ।

हिन्दुस्तान का निवासी ।

[सं स्त्री] हिन्दूधर्म भाषा,

भाबतव भाबा ।

हिन्दुस्तान की भाषा ।

हिन्दुस्तान—[सं पुं] भाबतवर्ष ।
भारतवर्ष ।

हिन्दुस्तानी—(वि) भाबतीय, हिन्दुस्तान
गवक्षीय ।

हिन्दुस्तानका ! हिन्दुस्तान संबंधी ।

[सं पुं] भाबतवासी ।

भारतवासी ।

(सं स्त्री) हिन्दुस्तानव भाबा ।

हिन्दुस्तान का भाषा ।

हिसक—[वि] हिंख । वातक ।

(पशु) जो पशुओं को मार कर
उनका मांस खाता हो ।

[सं पुं] हिंख पशु । हिंख ।

हिंखाकूबीया । शक्र । जाखिक,
जाखन ।

हिंसा करने या मार डालनेवाला ।

खूंखार जानवर । शत्रु । तांत्रिक ।
ब्राह्मण ।

हिस [क]—(वि) हिंख । हिंखा
कबोडा ।

हिंसा करनेवाला ।

हि—(अव्य) निष्कृष्ट ।
ही ।

हिवा (१)—(सं पुं) गाश्ग ।

साहस ।

हिक्मत—[सं स्त्री] बुद्धिमानी ।
छट्बालि । बुद्धि । उपाय ।
ठिकिङ्गा कार्य ।

कोई नयी बात ढूँढ़ निकालने
की युक्ति । तरकीब । हकीमी ।

हिक्का—(सं पुं) हैकति । शिकटि
अश बेमाव ।

हिचकी । हिचकी का रोग ।

हिचक—(सं स्त्री) इतःछतः । गंठकाठ
आगा पीछा ।

हिचकना—(क्रि अ) इतःछतः
कबा । गंठकाठ कबा । शिकटि
अश ।

आगा-पीछा करना । हिचकिया
लेना ।

हिचकिचाना—(क्रि स) गंठकाठ
कबा । धमा ।

हिचकना । रुकना ।

हिचकी—(सं स्त्री) हैकति ।

वह शारीरिक व्यापार जिसमें
पेट या फेफड़े की वायु कुछ रुक
कर गले के रास्ते निकलने का
प्रयत्न करती है ।

हिजड़ा—[सं पुं] नपुंसक ।

नपुंसक ।

हिजरी—(सं पुं) मुहलमान गकलब
बख्त गवना । [७२५ खःब पब
बख्त गवना] ।

मुसलमानी सन् ।

हिज्जे—[सं पुं] वानान ।

वर्तनी ।

हित—(सं पुं) शिद । कल्याण ।
मङ्गल । भाउ प्रेम् ।

कल्याण । भलाई । लाभ । प्रेम ।
स्नेह ।

(अव्य) कावणे । निमित्त ।

लिये । बास्ते । निमित्त ।

हितकर (कारक), हितकारी—[वि]

मङ्गलकर । भाउदायक ।

हित या भलाई करनेवाला ।
लाभ दायक ।

हितचिन्तक—(सं पुं) शिदेठबो ।

भला चाहनेवाला ।

हित-चिन्तन—[सं पुं] मङ्गल
आकाङ्क्षा ।

किसी की भलाई की बातें
सोचना ।

हिताई—[सं स्त्री] गश्कीय ।

मङ्गल छिछा कबा । मिल-झूल ।

रिस्तेदारी । हित चिन्तक ।

मेल-जोल ।

हिताहित—[सं पुं] भाग बेग ।

भाउ लोकछान । शिदाशित ।

भलाई और बुराई । लाभ और
हानि ।

हितु, हितुकर—(वि) शिदेठबो ।

हित कारक । हितैषी ।

हितेच्छु, हितैषी—[वि] उठाकाङ्क्षी
हित-चिन्तक ।

हिदायत—[सं स्त्री] निर्देश ।

ज्ञाननी ।

अभि सूचना । निर्देश ।

हिनहिनाना—[क्रि अ] षोबाब

भाउब गश्-हिँ हिँ हिँ । हैहनि

घोड़े का हिन हिन शब्द करना ।

हिना—(सं स्त्री) खेतुका ।

मेंहदी ।

हिफाजत—(सं स्त्री) रक्षा ।

गारवाने रक्षा कबा ।

रक्षा । रखवाली ।

हिम—(सं पुं) बरफ । शीत ।

जावकालि । खोन । कपूर ।

तुषार । शीत । जाड़े का मौसम ।

चन्द्रमा । कपूर ।

[वि] भीतल वा ठाँ।

ठडा या शीतल ।

हिम-कण—(सं पुं) निग्रव कण ।

ओस की बूँदे ।

हिमकर, हिममानु, हिमांशु,—

(सं पुं) ज्ञान ।

चन्द्रमा ।

हिमांशु—[सं पुं] कणू व । पानी

बदक होवा अदृश्या शूचक छिह ।

ताप (मापक यन्त्र) ।

कपूर । तापमापक यंत्र में वह
अंक या स्थान जो ऐसे शीत का
सूचक होता है जिसमें कोई द्रव
पदार्थ विशेषतः जल, जमने
लगता है ।

हिमाचल, हिमाद्रि—(सं पुं)

हिमालय ।

हिमालय ।

हिमानी—(सं पुं) छुआव, बरफ ।

हिमालय ।

तुषार । बरफ । हिमालय ।

हिमायत—(सं स्त्री) पक्षपाती ।

पक्षपात ।

हिम्मत—(सं स्त्री) गाहग ।

साहस ।

हिय (रा)—(सं पुं) झगड़ । गाहग
हृदय । साहस ।

हिया—[सं पुं] अलुःकरण । दुरु ।
गाहग ।

हृदय । वक्षःस्थल । साहस ।

हियाब—[सं पुं] गाहग ।

साहस ।

हिरण, हिरन—[सं पुं] हरिण ।

पंछ ।

मृग ।

हिरण्मय—(वि) गोपाली । गोणव ।

सोने का । सुनहला ।

हिरण्य—[सं पुं] गोण ।

सोना ।

हिरना—(सं पुं) हरिण ।

हिरन ।

हिरनोरा—(सं पुं) पंछ गोपाली

हिरन का बच्चा ।

हिराना, हेगना—[क्रि अ-क्रि स]

हेदोवा । भुंछ होवा । काबो

अभुंछत गान टैह पंवा । अत्रित

होवा ।

पास से निकल या लो जाना ।

लुप्त हो जाना । किसी के सामने

फीका या मन्द पड़ना । सुष-बुष

भूलना । कोई चीज खोना ।
हिरासत— [सं स्त्री] शब्दात्,
 आबद्ध कर्ता । बन्धुता बन्ध ।
 किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला
 पहरा या चौकी । हवालात ।
हिलकना—(कि स) शिकटि धर्त्ता ।
 डूबना ।
 हिचकी लेना । सिसकना ।
हिलकोर (१)—(सं पुं) ढो ।
 हिलेरे । तरंग ।
हिलगना—(कि अ) नाशि धर्त्ता ।
 मिलि योर्ता ।
 अटकना । उलझना । हिलना-
 मिलना । सटना ।
हिलना— [कि अ] श्ना । कम्पित
 होर्ता । ढो खेला । दृढ़ है
 नथका । पानीत प्रवेण कर्ता ।
 छल्ल होर्ता । मिलि योर्ता ।
 अपने स्थान से कुछ हलर उधर
 होना । कम्पित या चलाय मान
 होना । लहराना । जमा या दृढ
 न रहना । (पानी में) पैठना ।
 [मन का] चंचल होना । हेल-मेल
 में आना ।

हिलोर—(सं स्त्री) पानीत ढो ।
 पानी की तरंग ।

हिलोरना—(कि स) ढो उठा । ढो
 खेला ।

पानीमें लहरें उठाना । लहराना ।

हिल्लोल—(सं पुं) पानीत ढो ।
 आनन्द ढो, उल्लस ।

पानी की लहर । आनन्द की
 तरंग । उमंग ।

हिसना—[कि अ] क्षीण होर्ता ।
 कम या क्षीण होना ।

हिसाब—[सं पुं] शिचाव । उपाय ।
 गितवागिता । मन ।

लेखा । तरीका । भाव । किकायत ।

हिसाबी—[सं पुं] शिचाव वा अक
 नाश्रुत अभिष्ठ ।

हिसाब या गणित का जानकार ।
 (वि) शिचाव गश्कीय ।

हिसाब का । हिसाब सम्बन्धी ।

हिस्सा—(सं पुं) अंश, अक,
 टुकड़ा, भाग, वादगायब अंश ।

अवयव । अंग । टुकड़ा । भाग ।
 व्यापार आदि में होनेवाला
 साम्ना । अंश ।

हिस्सेदार—[सं पुं] अंशपाव ।
 साझेदार । सह-भागी ।

हिस्सेदारी—[सं स्त्री] अंशोंवाली
हिस्सेदार होने की अवस्था या
भाव ।

हीग—(सं स्त्री) शिं ॥
एक पीछे का जमाया हुआ गोंद ।

ही—(अव्यय) निष्कृष्ट, केवल, हीनता
वा उपेक्षा सूचक अव्यय ।

एक अव्यय जिसका प्रयोग
निश्चय, केवल, हीनता या उपेक्षा,
किसी बात पर जोर देने के लिये
आदि अर्थों में होता है ।

(कि अ) आछिल ।

थी ।

हीजड़ा (सं पुं) नपुंसक ।
नपुंसक ।

हीन—(वि) शि०, निकृष्ट, तुच्छ वा
नगण्य, दुर्लभात् कम् ।
रहित । निकृष्ट । बहुत छोटा,
तुच्छ या नगण्य । औरों या
बहुतों की अपेक्षा घट कर ।
अपेक्षाकृत हलका ।

हीनक भावना, हीन-भावना—
(सं स्त्री) नौछाड़िका भाव ।
मनमें बैठी हुई यह भावना कि
हम अमुक अथवा औरों को
अपेक्षा हीन हैं ।

हीन-बुद्धि—(वि) मूर्ख ।
मूर्ख ।

हीनयान—(सं पुं) बौद्ध धर्म
मूल आठ गुरुवि भाषा ।

बौद्ध धर्म की मूल और प्राचीन
शाखा ।

हीय (१)—[सं पुं] क्षय, वृद्ध ।
हृदय ।

हीर—[सं पुं] जाव, शब्द जाव
भाग, वीर्य, शक्ति, शौर्य ।

किसी वस्तुके अन्दर का भाग ।
इमारती लकड़ीके अन्दरका भाग।
घातु या वीर्य । शक्ति । हीरा ।

हीरक, हीरा—(सं पुं) वज्रमूर्ती
वज्र । शौर्य ।

एक बहुमूल्य रत्न ।

(वि) शौर्य निष्ठिना चिक्वि-
कीया आन वज्रमूर्ती ।

हीरेके समान स्वच्छ, उज्ज्वल
और बहुमूल्य ।

हीला—[सं पुं] धा०, निमित्त ।
बहाना । निमित्त ।

हुंकार—(सं पुं) गौश्रवण, आश्वासन,
लज्जा ।

मयभीत करने के लिये जोर से किया जानेवाला शब्द । गर्जन । ललकार ।

हुंकारना—(क्रि अ) डग देबूबाबब बावे शक्कबा, गोज्जबबि बबा । डराने के लिये जोरका शब्द करना । गरजना ।

हुंडी—[स स्त्री] टका दिवटेल दिया आदेश-पद्व । एठाईत धन बा ताब मुल्य आगते लै सेई धन आन। एठाईब पबा घूबाई पावटेल दिया क्यता पद्व । हुंठी । पुराने डंगका एक प्रकारका ऋण पत्र ।

हुँत—(प्रव्य)—वे, निमिडे, काबणे । से । लिये । वास्ते ।

हु—[अव्य] ७ । भी ।

हुक्क—(सं पुं) बेका गजाल, दूराव शिविकीब शकोटा । टेढ़ी कील । अंकुशी । [सं स्त्री] बेग विशेष । शरीरमें होनेवाला एक प्रकार का दर्द ।

हुक्कम, हुक्म—[सं पुं] आदेश । आदेश ।

हुक्का—[सं पुं] होका—धोबा धोबा ।

तम्बाकू पीनेका एक प्रकार का उपकरण ।

हुक्का-पानी—(सं पुं) होकापानी, एके समाजत होका पानी आदिब बारहाब थका । सामाजिक शक्क ।

एक बिरादरी के लोगोंका आपस में जल, हुक्का आदि पीने-पिलाने का व्यवहार ।

हुक्काम—[सं पुं] शाकिमब बहवचन । 'हाकिम' का बहुवचन ।

हुक्मी—(वि)आछा पालक, पबाशीन, अवार्थ ।

आज्ञा पालक । पराधीन । अचूक ।

हुक्कना—(क्रि अ) हिकटि थबा । हिककिया लेना ।

हुज्जत—(सं स्त्री) अनाहकत कबा काजिया । काजिया ।

व्यर्थका विवाद । तकरार ।

(वि—हुज्जती)

हुक्कना—(क्रि अ)कादेवा वियोगत दूबी होबा । डीत आक चिन्तित होबा । उद्बीर होबा ।

वियोगके कारण बहुत दुखी होना ।
भयभीत और चिन्तित होना ।
तरसना ।

हुङ्ग—(मं पुं) उभयपक्षी । लाफा-
लाफि ।

उपद्रव-युक्त उछल कूद ।

हुत—(वि) आहुति चिन्ता दिया ।
आहुतिके रूपमें दिया हुआ ।

[क्रि अ] आछिन ।

था ।

[अन्य] श्राव । बे ।

द्वारा । से ।

हुताशन—[सं पुं] जूहे ।
अग्नि ।

हुते, हुतो—(सं पुं) बे, श्राव,
भिनव पत्र ।

से । द्वारा । तरफ ।

(क्रि अ) आछिन ।

थे । (बहुवचन) ।

हुनर—[सं पुं] कला, काबिगरी,
कौशल ।

कला । कारीगरी । कोई काम
करने का कौशल ।

हुनरमंद—(वि) कलाविद्, निपुण,
प्रावर्ग ।

कलाविद् । निपण ।

हुमचना, हुमसना—(क्रि अ)

कोटना वज्र उभय उठि उठा,
उपि उठा ।

किमी चीजपर चढ़कर उसे बार-
बार जोरसे नीचे दवाना । उछ-
लना । कूदना ।

हुमसाना—(क्रि स) उपि उठा,
वड़ावा । उद्विग्न करना, मन
इच्छा यादि उद्विग्न ।

उछालना । बढ़ाना । उत्तेजित
करना मनमें कामना, इच्छा,
विचार आदि उठाना ।

हुमा—(सं स्त्री) काव्यनिक उवाच ।
एक कल्पित पक्षी ।

हुलरना—[क्रि अ] श्ला ।
हिलना ।

हुलराना—(क्रि स) उल्लावा ।
हिलाना ।

हुलसना—[क्रि अ] ध्रुव उशी होवा,
उथल उठा ।

बहुत प्रसन्न होना । उभरना ।

उमड़ना । [क्रि स—हुलसाना]

(क्रि स) आनन्दित करना ।

आनन्दित या प्रसन्न करना ।

हुलसित—[वि] उद्विग्न, यत्नित
आनन्दित । परम प्रसन्न ।

हुलसी--(स स्त्री) उल्लास, तुलसी

दागव गाकर नाय ।

उल्लास । तुलसीदास की माता का नाम ।

हुलास-(सं पुं) उल्लास उत्साह ।

उल्लास । उत्साह ।

(स स्त्री) नम्र ।

सूँघनी ।

हुलिया--(सं पुं) कप, आकृति, कोनो लोकव परिच्छा पावटेल दिया विवरण ।

रूप / आकृति । किसी आदमीके रूप, रंग आदिका ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान हो सके ।

हुल्लाह--(सं पुं) कोर्झल,

उपद्रव, गोलगोल ।

कोलाहल । उपद्रव ।

हुल्लावाजो--[सं स्त्री] कोलाहल,

टैटै वा हाहाकाव अथवा

उपद्रव कवा कार्य ।

हो हल्ला या शोर गुल मचाने या उपद्रव करने की क्रिया ।

हुरन--[सं पुं] सौन्दर्य ।

सौन्दर्य ।

हू--(अव्य) हय, उ ।

हौ । भी ।

[क्रि अ] हउं ।

'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक उत्तम पुरुष एक वचन रूप ।

[सर्व] मई ।

हौ [मे]

हूँकना--(क्रि अ) हूँकवि दिश ।

हूँकार करना ।

हूँसना--[क्रि स] दृष्टि बधा । शनकि दि थका । थाप दिया ।

नजर लगाना । बराबर डाँट सुनाते रहना । कोसना ।

हू--[अव्य] उ ।

भी

हूक--(सं स्त्री) श्रमय वेपना । यागका ।

हृदयकी पीड़ा । आशंका ।

हूडना--[क्रि प्र] गौड़ा वा कटे पोवा

पीड़ा या कसक होना ।

हूठना--[क्रि अ] काबो थं तुलिवटेल डेउँव डारडङ्गी नकल करि देखुवा । डेड्डुछालि कवा ।

किसीको चिढ़ाने के लिये उसकी भाव मंगी, मुद्रा आदि की नकल करना ।

हूठा—(स पु) दूग आङ्गुली पेशुवा
अशठ आचरण । कुकन याक
अन्नील आचरण अथवा डको
अगूठा दिखाने को अशिष्ट मुद्रा ।
भद्दी या अद्मील चेष्टा ।

हूण—(सं पु) निर्झर नखाल जाति,
हण जाति ।
एक प्राचीन बर्बर मंगोल जाति ।

हूत—(सं पु) निमन्त्रित ।
बुलाया हुआ ।

हू-बहू—(क्रि स) अविकल । छवछ ।
ठिक तेने । एक बरबर ।
ज्यो का त्यो । (किसीके) बिल्कुल
अनुरूप या समान ।

हूना—(क्रि स) डूबि डोछन करा ।
मावा ।
बहुत अधिक भोजन करना ।
मारना ।

हूह—(सं स्त्री) हृकार ।
हूँकार ।

हूत—(वि) डूबि करा । अपश्रुत ।
हरण किया हुआ ।

हूत्कंप—[सं पु] क्षयव कंपनि ।
डूकूब कंपनि ।
हृदयकी घड़कन ।

हृत्तल, हृत्पिंड—(स पु) अशुभ ।
हृदय । दिल ।

हृदयंगम—(वि) मनत लगा ।
बुझि पोवा । क्षयक्षय ।
अच्छो तरह समझमें आया हुआ ।

हृदयमाहो—(सं पु) अशुभत तृप्ति
दिया । मनोमाहो ।
मनको आकृष्ट करनेवाला ।

हृदयविदारक—(वि) अशुभ विदीर्ण
करा । बर छूःथ दिया ।
मनको बहुत अधिक कष्ट पहुँ-
चानेवाला ।

हृदयहारो (वि) मनोहर । शूलर
मनोहर ।

हृदयेश श्वर—(सं पु) श्रियतम,
शायी ।
प्रियतम । पति ।

हृद्गत—[वि] क्षयस्थ । मनोगत ।
हृदयमें का ।

हृद्य—(वि) मनोमत्त । प्रणयी ।
अशुभ ।
हृदयसे सम्बन्ध रखनेवाला
हृदय का ।

हृषिकेश—(सं पु), माहेश्वर मन
बुद्धिब गवाकी । विज्ञ । कृष्ण ।
विष्णु । कृष्ण ।

हृष्ट—[वि] आनन्दित । प्रसन्न ।
प्रसन्न ।

हृष्ट पुष्ट—[वि] नोटाका । मोटा,
बड़े पृष्ठ ।

मोटा-साजा ।

हैगा—(सं पुं) खेतिर गाँव गवान
कवा यत्न । गै ।

खेतमें मिट्टी चूर करने का एक
उपकरण ।

हेकड़, हैकड़—[वि] नोटाका ।
प्रबल । अँकवा ।

हृष्ट पुष्ट । प्रबल । अक्खड़ ।

हेकड़ी, हैकड़ी—(सं स्त्री) अँकवागि,
पाटकार गौडालि ।

अक्खड़पन । औद्धत्य ।

हेच—[वि] तुच्छ । नीच ।
तुच्छ । हीन ।

हेठ—[क्रि वि] तलत ।
नीचे ।

हेठा—(वि) तलत । पातल । तुच्छ ।
नीचा । हलका । तुच्छ ।

हेठी—[वि] अशक्ता । अशक्तिता ।
धर्मंड । अप्रतिष्ठा ।

हेत—[सं पुं] प्रेम ।
प्रेम ।

हेतु—[सं पुं] हेतु । कारण । अंति-
आय । शक्ति । साधक ।

अभिप्राय । वजह । दलील ।
साधक ।

हेतुवाद—[सं पुं] तर्कशास्त्र ।
कृतर्क । कृशुक्ति । नास्तिकता ।
तर्क शास्त्र । ओछी दलील ।

हेमंत—[सं पुं] श्रेष्ठ काल ।
आद्यावन्तु-ह माहर् श्वेतु ।
अगहन-पूसकी ऋतु ।

हेम—[सं पुं] नवरु । धतुवा । गोण ।
हिम । सोना । घतुरा ।

हेमाद्रि—[सं पुं] श्रेष्ठ पर्वत ।
सुमेरु पर्वत ।

हेमाध—[वि] गोपाली ।
मुनहला ।

हेय—[वि] हेय । तागव उपशुक्त ।
एवि पेलार लग्नीया । ह्वनीय ।
तुच्छ ।

त्याज्य । बुरा । तुच्छ ।

हेरं—[सं पुं] गणेश ।
गणेश ।

हेरना—[क्रि सं] विचरा । देखा ।
परीक्षा कवि चोरा । हेबोरा ।
कटोरा ।

ढूँटना । देखना । परखना ।
खोना । बिताना ।

हेर-फेर—[सं पुं] हेब फेब । अनप
नब-ठब वा कय-वेछि होरा
अवस्था । अपन-बपन ।

घुमाव-फिराव । चक्कर । दाँव-
पेंच । अदल-बदल ।

हेरा—(सं पुं) शाश्वक गणेश्वर
कवि मठा मात । तलाच ।

किसी को पुकारने या बुलाने का
शब्द । तलाश ।

हेराना—(क्रि अ) नुछ होरा ।
हेबोरा । छान भुण होरा ।
खो जाना । लुप्त हो जाना । सुष-
बुध भूलना ।

(क्रि अ) कोनो वस्तु हेबोरा ।
कोई चीज खोना ।

हेरा-फेरी—[सं स्त्री] अपन-बपन ।
बाबेबाबे अहा योदा ।
अदल बदल । बराबर जाना
जाना ।

हेलना—[क्रि अ] खेल धरानि कबा,
मन आनलित कबा । पानीत
नया, गौतोबा ।
क्रीड़ा या मनोविनोद करना ।

मन बहलाव । पानीमें पैठना ।
तेरना ।

[क्रि स] हेय अथवा ठुछ छान
करा ।

हेय ता तुच्छ समझना ।

हेलमेल—[सं पुं] गिला-झीठि,
गिल-झूल ।
मेल-जोल ।

हेला—(सं स्त्री) हेली, अगम्य,
अवछा, तिरकाव, याँउहेला ।
तुच्छ या उपेक्ष्य समझना । तिर-
स्कार । खिलवाड़ ।

[सं पुं] मठा । छिन्न, टका,
शबिजन ।
पुकार । भीड़ या धक्का । भंगी
या मेहतर ।

हेली-मेली—(वि) शिष्टेब गिला-
झीठि थका ।
जिससे हेल-मेल हो ।

है—(क्रि अ) आद ।

‘होना’ क्रिया का वर्तमान कालिक
बहुवचन रूप ।

(अव्य) आश्चर्य-अगम्यति
शूच अव्यय ।

आश्चर्य, असम्भति सूचक एक
अव्यय ।

है—(क्रि अ) शय वा आछ, (वर्तमान कालव एकवचनव कण) ।
‘होना क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप ।

हैजा—(सं पुं) कलवा, शंखवा ।
विशूचिका रोग । [अ-कोलेरा] ।

हैफ—[अश्य] बर दुःख शूचक शब्द ।

‘परम दुःखकी वत है, का सूचक,

हैम—[वि] गोमयव तैयारी, गोमाली नुब, बरकर, गौतकालत होवा ।

सोनेका बना हुआ । सोनेके रंग का । हिम या बरफ का । जाड़ेमें होनेवाला ।

हैरान—[वि] शंकावाञ्छि, शंखवाण, आचञ्चित ।

चकित । परेशान ।

हैवान—[सं पुं] पशु ।

हैसियत—[सं स्त्री] जायर्बा, भक्ति, आधिक भक्ति, धन सम्पत्ति ।
सामर्थ्य । शक्ति । आधिक योग्यता । धन-सम्पत्ति ।

हौठ—(सं पुं) ठूठ ।
अघर ।

होइ, होइबाजो, होइहोवी—
(सं स्त्री) छुई, अतिरोगिता लक्षण ।

शतं । बाजी । प्रतियोगिता ।
हठ ।

होता—[सं पुं] यज्ञ कर्त्ता, होता ।
यज्ञमें आहुति देनेवाला ।

होनहार—(वि) श्वनग्रीवा, शूलक्षण जो अवश्य होने को हो । होनी ।
अच्छे लक्षणोंवाला ।

होना—(क्रि अ) होवा । अस्ति, उपस्थिति शूचक क्रिया, विश्वमान, परिवर्तित होवा, गङ्गा, बेराव आदिब लक्षण प्रकट होवा, उग्र होवा ।

सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करनेवाली क्रिया । अस्तित्व में आना या वर्तमान रहना । पहला रूप छोड़कर दूसरे नये रूपमें आना । बनाया या तैयार किया जाना । रोग आदिका अपना रूप प्रकट करना । जन्म लेना ।

होनी—(सं स्त्री) होवा, उचित, ब्यापक ।

होने की क्रिया या भाव । भावी
या भवितव्यता ।

होम—[क्रि स] होम । यज्ञ ।
हवन । यज्ञ ।

होमना—[क्रि स] होम वा यज्ञ
करा, नष्ट करा । होम वा
हवन करना । नष्ट करना ।

होरा—[स स्त्री] अश्वत्थ गन्तव्य
मन्त्र, केशि, अथ पत्रिका ।
दिन रातका चौबीसवाँ भाग ।
जन्म-कुण्डली ।

होरिल [१]—(सं पुं) केहूरा ।
बहुत छोटा बच्चा ।

होलिका होली, होरी,—[सं स्त्री]
कःशुभ राहव भूषिमात्र होरा
उत्सव, काहूरा उत्सव, होलीव
मन्त्रत प्रोवा ग्रीत । होलीत
अलोवा खि आदिब द'म ।
फालगुनकी पूर्णिमाको होनेवाला
हिन्दुओंका एक प्रसिद्ध त्योहार ।
लकड़ियों आदिका बहू डेर जो
उसदिन जलाया जाता है । उन-
दिनों गाय्रा जानेवाला एक प्रकार
का गीत ।

होश—(सं पुं) चेतना, बुद्धि ।
बुझनी, हँच, गम ।
चेतना । बुद्धि । समझ ।

होश-हवास—(सं स्त्री) बुद्धि आर
चेतना ।

बुद्धि और चेतना ।

होशियार—(बि) गारवान । दक्ष ।
उपदेशगार । ठडूर ।

समझदार । कुशल । सावधान ।
सयाना । चालाक ।

होस—[सं पुं] हँच । चेतना ।
गम ।
होस ।

हौं—(सर्व) नहे ।

मैं ।

(क्रि अ) हँउ ।

हूँ ।

हौंस—(सं स्त्री) कामना, इच्छा ।
उत्साह ।

कामना । चाह । उत्साह ।

हौआ [सं पुं] गोपायवा जातीय
कलित प्राणि [न'वा होवालीक
अथ मेधुवावव बावे] ।

बच्चोंको डरानेके लिये एक
कल्पित जीव ।

हौदा —(सं पुं) गरु पुधुवी वा
कूड ।

पानीका छोटा कुण्ड ।

—(सं पुं) शांतीर गानी ।
 हाथीकी अम्बारी ।
 हौदी—(सं स्त्री) गरु गानी ।
 गरु लोवाका, घबरा नरगा
 पानी जमा होका ठाई ।
 छोटा ह्रीदा । छोटा हौज । वह
 छोटा नगा जिसमें मकान का
 सारा गंदा पानी आकर जमा
 होता हो ।
 हौन—(सं पुं) निवृत्ति । होम ।
 अपनापन । हवन ।
 हौरा—[सं पुं] गोलमाल । कोलाहल ।
 कोलाहल ।
 हौल—[सं पुं] उग्र ।
 डर ।
 हौलबिल—(सं पुं) हलकन्मन बोध ।
 कलेजा धड़कने का रोग ।
 हौली—(सं स्त्री) देखीय नय बिक्री
 कवा ठाई ।
 देखी धाराय बिकने की जगह ।
 हौले—(क्रि वि) नाट्य नाट्य ।
 आहिस्ते ।

हौवा—(सं स्त्री) अथवा स्त्री । आदम
 पैतृमैत्रक ।
 आदमकी पत्नी ।
 हौस—(सं स्त्री) उत्साह ।
 कामना । उत्साह ।
 हौसला—[सं पुं] उत्कृष्ट । उत्
 गाद्य ।
 कोई काम करने का उमंग ।
 उत्कर्ष । उत्साह ।
 हौ—[अव्य] ईश्वर ।
 यहाँ ।
 हूँ—(वि) दृष्ट । गरु । कम ।
 छोटा । नाटा । थोड़ा । नीचा ।
 हास—(सं पुं) हास, कम होना ।
 किसी वस्तुके गुणों, तत्त्वों आदि
 में कमी होना । कमी । उतार ।
 हौं—(अव्य) तात् ।
 वहाँ ।
 हूँ—[पुर्व कालिक] देख ।
 होकर ।

যুद्धি-পত্ৰ

| পৃষ্ঠ | কালম | পংক্তি | অযুদ্ধ | যুদ্ধ |
|-------|------|--------|------------|-------------|
| 1 | 1 | 13 | শিলঙাট | শিলঙাট । |
| 9 | 1 | 19 | বীজ | বীজ । |
| 42 | 2 | 21 | ভববা | ভাবনা |
| 48 | 2 | 4 | বড়বহ | বড়বহ |
| 53 | 2 | 15 | ছুবাব দাং | ছুবাব ডাং |
| 78 | 2 | 2 | গুৰীবে পবা | গুৰিবে পবা |
| 81 | 2 | 11 | ভুমুকি | ভুমুকি |
| 97 | 2 | 3 | ডাঠপোবৰ' | ডাঠ কাপোবৰ |
| 97 | 2 | 1 | কানমনা | কাপননা |
| 100 | 1 | 3 | ববমুণ | ববমুণ |
| 102 | 1 | 2 | চুড়া | চুড়া |
| 105 | 1 | 1 | লুচ | লোচ |
| 108 | 1 | 1 | আবোন | আবুল |
| 144 | 2 | 7 | আকাখা | আকাঙকা |
| 147 | 2 | 25 | বিহবাসঘাত | বিহবাস ঘাতক |
| 152 | 2 | 26 | বা | বাল্লা |
| 156 | 1 | 2 | দু'ডে | গু'ডে |
| 157 | 2 | 5 | কাই কুটি | কাইকুতি |
| 157 | 2 | 6 | ডাকুট কুনি | ডাকুটকুটনি |
| 165 | 1 | 15 | গাঁবড | গাঁবড |
| 168 | 2 | 20 | বপু | বহু |

| কৃষ্ণ | কর্ত্তম | পংক্তি | অনুদ্র | শ্রুত |
|-------|---------|--------|-------------------------|------------|
| 174 | 1 | 12 | ধন | ধন |
| 178 | 1 | 10 | দ্যানতা | দ্যানতা |
| 180 | 1 | 1 | ধেবিধবা | ধেবিধবা |
| 182 | 2 | 14 | ধেবীধবা | ধেবিধবা |
| 191 | 2 | 25 | নেদ | নেদ |
| 197 | 2 | 19 | লিড়বিড়া | লিড়বিড়া |
| 206 | 2 | 20 | খুঁটা | খুঁটা |
| 216 | 1 | 22 | বিয়াপি পাই | বিয়াপি |
| 224 | 1 | 16 | হুঙ্কারজ্য | হুঙ্কারজ্য |
| 272 | 1 | 4 | হুগুবা | হুগুবা |
| 272 | 1 | 10 | লুণীয়া | লুণীয়া |
| 279 | 2 | 24 | ভলা | ভাল |
| 284 | 2 | 16 | ভল্লন | ভকন |
| 294 | 2 | 25 | আদিত | আদিত |
| 301 | 1 | 8 | বুক্তি | বুতি |
| 307 | 2 | 16 | যাতো | যাতে |
| 311 | 1 | 1 | বশীভুত | বশীভুত |
| 340 | 2 | 14 | বাপতি সাহন, বাপতি সাহোন | |
| 355 | 2 | | বিচন। | বিহ্না |
| 385 | 1 | 21 | বহব | বহল |
| 395 | 1 | 12 | ধকা বাধা | হকা-বধা |
| 398 | 2 | 11 | ধান | ধীণ |
| 401 | 2 | 3 | বংচড়িয়া | বংচড়ীয়া |
| 406 | 2 | 12 | অন্তরনি | অন্তরনি |
| 438 | | 19 | শনা | শনা |

| ପୃଷ୍ଠ | କୌଣସି | ବନ୍ଧିତ | ଅନୁସୂଚି | ଶୁଦ୍ଧ |
|-------|-------|--------|------------|------------|
| 448 | 2 | 2 | ସୁକଳି ବୁରୋ | ସୁକଳିବୁରୋ |
| 453 | 2 | 24 | ଘାଣସୁନା | ଘାଣସୁନା |
| 455 | 2 | 16 | ବୁଝପଞ୍ଜି | ବୁଝପଞ୍ଜି |
| 465 | 1 | 19 | କବ | କବା |
| 465 | 2 | 1 | ନୁପୁର | ନୁପୁର |
| 469 | 2 | 12 | ସେବନ | ସେବକ |
| 470 | 1 | 20 | ବଢ଼ୋରୀ | ବଢ଼ୋରୀ |
| 477 | 2 | 12 | ଗିଞ୍ଜି | ଗିଞ୍ଜ |
| 494 | 2 | 10 | ଝୁକୁବା | ଝୁକୁବା |
| 516 | 2 | 3 | ଗଞ୍ଜାଲି | ଗଞ୍ଜୁଲି |
| 525 | 2 | 7 | କରନା | ମିଛାକରନା |
| 537 | 2 | 16 | ମିଠା | ମିଠି |
| 546 | 1 | 17 | ଟକା | ଟକା |
| 549 | 2 | 7 | ଜାମିନଦାର | ଜାମିନ |
| 549 | 2 | 10 | ଜାମିନଦାର | ଜାମିନର |
| 552 | 1 | 3 | ଝୁମ | ଝୁମ |
| 557 | 2 | 26 | ବଳକଳି | ବଳକଳି |
| 558 | 1 | 1 | କହି | କହି |
| 558 | 1 | 45 | ଛୁଞ୍ଚିନାମା | ଛୁଞ୍ଚିନାମା |
| 558 | 2 | 23 | ଅବହମାନ | ଅବହମାନ |
| 559 | 2 | 12 | ଅଗ୍ନିଗଣି | ଅଗ୍ନିଗଣି |
| 560 | 1 | 6 | ବାସ | ବାସ |
| 561 | 1 | 5 | ଅବିସ୍ତେ | ଅବିସ୍ତେ |
| 563 | 1 | 21 | ସୁବନ୍ଧିତ | ସୁବନ୍ଧିତ |

| পৃষ্ঠা | কালম | পংক্তি | অনুদ্র | মুদ্র |
|--------|------|--------|-----------|-----------|
| 576 | 2 | 20 | পপক | প্রবক |
| 580 | 2 | 16 | আঁচোবা | আঁচোবা |
| 591 | 2 | 7 | জোঁঠ | জোঁঠ |
| 609 | 1 | 24 | লেগাম | লেগাম |
| 612 | 1 | 19 | বায়ুব | বায়ুব |
| 643 | 1 | 19 | হুবাৰডাং | হুবাৰডাং |
| 658 | 2 | 15 | মুগু | মুগু |
| 669 | 1 | 16 | বস্ত | বস্ত |
| 680 | 1 | 22 | বা | বাবে |
| 686 | 1 | 5 | কাগ্ননিক | কাগ্ননিক |
| 695 | 1 | 2 | পটন্ত | পটন্ত |
| 719 | 2 | 20 | নোহোৰাটেক | নোহোৰাটেক |
| 723 | 2 | 23 | শক্ৰ | শক্ৰ |
| 733 | 1 | 13 | তুজ্জবা | তুজ্জবা |
| 736 | 1 | 2 | বস্ত | বস্ত |
| 740 | 2 | 18 | মান | মান |
| 745 | 2 | 15 | অলক | অলক |
| 752 | 2 | 13 | বক্ষা | বক্ষা |
| 754 | 2 | 2 | মুজ্জাব | মুজ্জাব |
| 754 | 2 | 10 | নেদীখা | নেদেখা |
| 754 | 2 | 11 | সময় | সময় |
| 755 | 1 | 24 | ওঁঠ, | ওঁঠত |
| 757 | 2 | 9 | চবণিয়া | চবণিয়া |
| 758 | 2 | 14 | প্রহিত | প্রহিত |
| 759 | 2 | 16 | বস্ত | বস্ত |

| পৃষ্ঠ | কোলাম | পংক্তি | অশুদ্ধ | শুদ্ধ |
|-------|-------|--------|---|----------|
| 766 | 1 | 8 | ঘূনা | ঘূনা |
| 766 | 1 | 8 | লনাম | লগাম |
| 766 | 2 | 23 | লালাটি | লালাটি |
| 768 | 1 | 1 | শূণ্য | শূণ্য |
| 768 | 2 | 4 | শূণ্যতা | শূণ্যতা |
| 768 | 1 | 17 | শত্রু | শত্রু |
| 774 | 1 | 27 | বেতী | বেতী |
| 775 | 1 | 8 | রন | রৈন |
| 776 | 1 | 3 | রোধী | রোধী |
| 779 | 2 | 14 | কড়া | কড়া |
| 782 | 1 | 1 | ছড়ি | ছবি |
| 782 | 2 | 24 | হোতী | হোতী |
| 785 | 2 | 20 | চঞ্চল | চঞ্চল |
| 791 | 2 | 6 | বমনীয় | বমনীয় |
| 793 | 1 | 14 | ঘোলকর | ঘোলকর |
| 793 | 2 | 21 | অলি উঠি হোবা ভূষিতা- অলি উঠা, ভূষিত হোবা | |
| 794 | 2 | 14 | লাহণ | লাহণ |
| 796 | 1 | 21 | দায়িত্ব | দায়িত্ব |
| 799 | 2 | 10 | সম্পূর্ণ | সম্পূর্ণ |
| 800 | 1 | 16 | গভীর | গভীর |
| 845 | 2 | 2 | বিমুঢ় | বিমুঢ় |

| ক্ৰম | কোলাম | পংক্তি | অনুবাদ | মুদ্ৰ |
|------|-------|--------|----------|----------|
| ৪৪৭ | ২ | ২৫ | বিচনা | বিহুনা |
| ৪৫৬ | ২ | ২০ | ভূষণ | ভূষণ |
| ৪৫৭ | ১ | ৪ | মুখৰ বধি | মুখৰ বধি |
| ৪৬২ | ২ | ১৫ | গোন | গোণ |
| ৪৬৬ | ২ | ১ | হলাধা | হলাধা |
| ৪৬৭ | ১ | ১৭ | বাস্তা | বাস্তা |
| ৪৭৭ | ১ | ১ | সূৰ | সূৰ |
| ৪৮১ | ১ | ১ | তৰ | তীৰ |
| ৪৮৭ | ২ | ২০ | সাজান | সাজোন |
| ৭১৫ | ১ | ২ | ভাবনা | ভাবনা |
| ৭১৭ | ১ | ১৭ | নিৰুপট | নিৰুপট |
| ৭১৫ | ১ | ৭ | দুখীয়া | দুখীয়া |
| ৭১৭ | ১ | ২৩ | ভীষ | ভীষ |

REFERENCE
 Nov 1 1944

